जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में क़ुरआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सो मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान

Siraatul Jinaan - Jild : 1 (Hindi)

सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन

पहली जिल्द
पारह 1..2..3

مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی
मुफ़स्सिर : शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर, अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी अ़त्तारी

www.dawateislami.net

जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में क़ुरआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सों मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान, नीज़ मुसल्मानों के अ़क़ाइद, दीने इस्लाम के औसाफ़ व ख़ुसूसिय्यात, अहले सुन्नत के नज़रिय्यात व मा'मूलात, इ़बादात, मुआ़मलात, अख़्लाक़िय्यात, बात़िनी अमराज़ और मुआ़शरती बुराइयों से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस अक़्वाले सह़ाबा व ताबेईन और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात की रोशनी में एक जामेअ़ तफ़्सीर मअ़ दो तरजमों के

कन्ज़ुल ईमान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन

अज़ : आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और

कन्ज़ुल इ़रफ़ान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन

मअ़

सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन

अज़ : शैख़ुल ह़दीस व तफ़्सीर, अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

नाशिर

मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

सिरातुल जिनान पर मक़ाला जात

क़ुरआने करीम **अल्लाह** तआ़ला का मुक़द्दस कलाम है जो सब से आख़िरी रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा और इस में क़ियामत तक के तमाम बनी नौए इन्सान के लिये हिदायत व रहनुमाई का सामान मौजूद है, इस की हिदायात व ता'लीमात से मुस्तफ़ीद होने के लिये ज़रूरी है कि आयाते क़ुरआनी के सह़ीह़ मत़ालिब व मआ़नी को समझा जाए ताकि उन पर अ़मल पैरा हो कर राहे हिदायत पर सफ़र इख़्तियार किया जा सके। फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक ता'दाद ऐसी है जो अ़रबी ज़बान और उ़लूमे दीनिया से ना वाक़िफ़ है यहां तक कि लाखों मुसल्मानों में गिने चुने अफ़राद ही ऐसे नज़र आते हैं जो अ़रबी ज़बान जानते, इस की बारीकियों और नज़ाकतों पर इत्तिलाअ़ रखते और उ़लूमे दीनिया की दौलत से मालामाल हैं। इन ह़ालात में वक़्त की अहम तरीन ज़रूरत थी कि अहले इल्म की त़रफ़ से क़ुरआने करीम की एक ऐसी तफ़्सीर मन्ज़रे आ़म पर आए जिसे अहले इल्म के साथ साथ आ़म मुसल्मान भी आसानी से पढ़ और समझ सकें ताकि उन्हें भी क़ुरआने पाक का फ़ह्म ह़ासिल हो और वोह क़ुरआने करीम के अह़कामात, मम्नूआ़त और दीगर ता'लीमात से वाक़िफ़िय्यत ह़ासिल कर सकें। इस ज़रूरत को पूरा करने में शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तफ़्सीर **"सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन"** ने इन्तिहाई अहम किरदार अदा किया है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه शुरूअ़ दिन से ही आ़म व ख़ास हर सत़ह़ के अफ़राद ने इस का मुत़ालआ़ शुरूअ़ किया और इस के आसान अन्दाज़े तफ़्हीम से फ़ाएदा उठाते हुए क़ुरआने पाक की समझ और इल्मो अ़मल की बरकतें ह़ासिल कीं। स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटी के त़ुलबा व त़ालिबात ने भी इसे ख़ूब सराहा और इस पर बा क़ाइदा मक़ाला जात लिखने शुरूअ़ किये, जिस की कुछ तफ़्सील यूं है :

शैख़ ज़ैद इस्लामिक सेन्टर लाहोर से मोह़तरम वलीद अह़मद साह़िब ने एम.ए का मक़ाला बनाम "तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान (निस्फ़े अव्वल) का मन्हजो उस्लूब एक तह़क़ीक़ी जाएज़ा" डॉक्टर मुह़म्मद ए'जाज़ साह़िब की निगरानी में लिखा जो अपनी तक्मील के मराह़िल से गुज़र कर पास भी हो चुका है।

यूनीवर्सिटी ऑफ़ सरगोधा से ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद आ'वान अ़त्त़ारी साह़िब एमफ़ील का मक़ाला बनाम "तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान का तह़क़ीक़ी व तन्क़ीदी जाएज़ा" डॉक्टर मुह़म्मद शहबाज़ मनज साह़िब की ज़ेरे निगरानी लिख रहे हैं।

अ़ल्लामा इक़्बाल ओपन यूनीवर्सिटी से बिन्ते अस्लम नक़्शबन्दी अ़त्त़ारिय्या "तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान का मन्हज : तह़क़ीक़ी व तजज़ियाती मुत़ालआ़" के नाम से डॉक्टर सनाउल्लाह साह़िब की ज़ेरे निगरानी एमफ़ील का मक़ाला लिख रही हैं।

इस के इलावा दीगर यूनीवर्सिटियों से भी **"सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन"** पर एमफ़ील वग़ैरा के मक़ाला जात लिखे जाने की इत्तिलाआ़त हैं। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि वोह अपने मुक़द्दस कलाम की तफ़्सीर **"सिरात़ुल जिनान"** को क़बूले आ़म अ़त़ा फ़रमाए और क़ुरआने मजीद को समझने के लिये इसे भी ज़रीआ़ बनाने और क़ुरआने पाक के अह़कामात व ता'लीमात पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

अबुल ह़सनैन ज़ुल क़रनैन अ़त्त़ारी अल मदनी
05-02-2018

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तफ़्सीर "सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल कुरआन" का मुतालआ करने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **"نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ"** मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।

(المعجم الكبير للطبرانی ٦/١٨٥ حديث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार तअव्वुज़ व **(2)** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा **(3)** रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ करूंगा **(4)** बा वुज़ू और **(5)** क़िब्ला रू मुतालआ करूंगा **(6)** कुरआनी आयात की दुरुस्त मख़ारिज के साथ तिलावत करूंगा। **(7)** हर आयत की तिलावत के साथ इस का तरजमा और तफ़्सीर पढ़ कर कुरआने करीम समझने की कोशिश करूंगा और दूसरों को इस की ता'लीम दूंगा। **(8)** अपनी तरफ़ से तफ़्सीर करने के बजाए उलमाए हक़्क़ा की लिखी गई तफ़ासीर पढ़ कर अपने आप को "अपनी राय से तफ़्सीर करने" की वईद से बचाऊंगा। **(9)** जिन कामों के करने का हुक्म है वोह करूंगा और जिन से मन्अ किया गया है उन से दूर रहूंगा। **(10)** अपने अक़ाइदो आ'माल की इस्लाह करूंगा और बद अक़ीदगी से खुद भी बचूंगा और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी बचाने की कोशिश करूंगा। **(11)** जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्आम हुवा उन की पैरवी करते हुए रिज़ाए इलाही पाने की कोशिश करता रहूंगा। **(12)** जिन क़ौमों पर इताब हुवा उन से इब्रत लेते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरूंगा। **(13)** शाने रिसालत में नाज़िल होने वाली आयात पढ़ कर उस का खूब चरचा कर के आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी महब्बतो अक़ीदत में मज़ीद इज़ाफ़ा करूंगा। **(14)** जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और **(15)** जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। **(16)** शरई मसाइल सीखूंगा **(17)** अगर कोई बात समझ न आई तो उलमाए किराम से पूछ लूंगा। **(18)** दूसरों को येह तफ़्सीर पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। **(19)** इस के मुतालए का सवाब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। **(20)** किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

कुछ सिरातुल जिनान के बारे में......

1422 सि.हि. (2002 ई.) की बात है जब मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज मुहम्मद फ़ारूक़ मदनी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الغَنِی "चल मदीना" के क़ाफ़िले में हमारे साथ थे और इस सफ़रे हज में मुझे उन को क़रीब से देखने का मौक़अ़ मिला था। बेहद कम गो, इन्तिहाई सन्जीदा और कसरत से तिलावते कुरआन करने वाली इस निहायत परहेज़ गार शख़्सिय्यत की अ़ज़मत मेरे दिल में घर कर गई। मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰه شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में हमारा मश्वरा हुवा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमए **कन्ज़ुल ईमान** की एक आसान सी तफ़्सीर होनी चाहिये जिस से कम पढ़े लिखे अ़वाम भी फ़ाएदा उठा सकें, اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی इस बा बरकत ख़िदमत के लिये बख़ुशी आमादा हो गए। मुजव्वज़ा तफ़्सीर का नाम **सिरातुल जिनान** (या'नी जन्नतों का रास्ता) तै हुवा। तबर्रुकन मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰه شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ही में इस अ़ज़ीम काम का आग़ाज़ कर दिया गया, अफ़्सोस ! मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की ज़िन्दगी ने उन का साथ न दिया, 6 पारों पर काम कर के वोह (बरोज़ जुमुआ़ 18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.) पर्दा फ़रमा गए।

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चूंकि येह काम इन्तिहाई अहम था लिहाज़ा मदनी मर्कज़ की दरख़्वास्त पर शैख़ुल ह़दीसे वत्तफ़्सीर ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज मुफ़्ती अबू सालेह़ **मुह़म्मद क़ासिम** क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ العَالِی ने इस काम का अज़ सरे नौ आग़ाज़ किया। अगर्चे इस नए मवाद में मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी के किये गए काम को शामिल न किया जा सका मगर चूंकि बुन्याद उन्ही ने

www.dawateislami.net

रखी थी और आग़ाज़ भी मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की पुर बहार फ़ज़ाओं में हुवा था और **"सिरातुल जिनान"** नाम भी वहीं तै किया गया था लिहाज़ा हुसूले बरकत के लिये येही नाम बाक़ी रखा गया है। **कन्ज़ुल ईमान** अगर्चे अपने दौर के ए'तिबार से निहायत फ़सीह़ तरजमा है ताहम इस के बे शुमार अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो अब हमारे यहां राइज न रहने के सबब अ़वाम की फ़ह्म से बाला तर हैं लिहाज़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के तरजमए क़ुरआन **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ को मिनो अ़न बाक़ी रखते हुए इसी से रोशनी ले कर दौरे ह़ाज़िर के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مدّ ظلّه ने مَاشَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक और तरजमे का भी इज़ाफ़ा फ़रमाया, इस का नाम **कन्ज़ुल इरफ़ान** रखा है। इस काम में दा'वते इस्लामी की मेरी अ़ज़ीज़ और प्यारी मजलिस, **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के **मदनी उ़लमा** ने भी ह़िस्सा लिया बिल ख़ुसूस मौलाना **ज़ुल क़रनैन** मदनी سَلَّمَهُ الْغَنِی ने ख़ूब मुआ़वनत फ़रमाई और इस त़रह़ **सिरातुल जिनान** की **3 पारों** पर मुश्तमिल पहली जिल्द आप के हाथों में है। **अल्लाह** तआ़ला अलह़ाज मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مدّ ظلّه समेत इस **कन्ज़ुल ईमान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन व सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन** के मुबारक काम में अपना ह़िस्सा मिलाने वालों को दुन्या व आख़िरत की ख़ूब ख़ूब भलाइयां इनायत फ़रमाए और तमाम आ़शिक़ाने रसूल के लिये येह तफ़्सीर नफ़्अ़ बख़्श बनाए। اٰمِین بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

9 जुमादल उख़्रा 1434 हि.
20-4-2013

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा
निय्यतें	1
कुछ सिरातुल जिनान के बारे में......	2
मुक़द्दमा	10
क़ुरआने मजीद का मुख़्तसर तआ़रुफ़	10
क़ुरआने अ़ज़ीम की अ़ज़्मत	11
क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल	15
क़ुरआने ह़कीम के मक़ासिद	17
क़ुरआने पाक के आदाब	18
क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करने और पढ़ाने के फ़ज़ाइल	19
क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ करने के फ़ज़ाइल	21
तिलावते क़ुरआन के आदाब	22
जम्ए़ क़ुरआन का तारीख़ी पस मन्ज़र	24
तफ़्सीरे क़ुरआन की तारीख़	26
तफ़्सीर और तावील की ता'रीफ़	31
तफ़्सीर और तावील का शरई़ हुक्म	31
मुफ़स्सिर के लिये ज़रूरी उ़लूम	32
तफ़्सीर के दरजात	33
क़ुरआने मजीद का अस्ली माख़ज़	34
तफ़्सीर की ज़रूरत व अहम्मिय्यत	35
"सिरातुल जिनान पर काम और इस की खुसूसिय्यात	36
पहला पारह	39
सूरए फ़ातिह़ा	39
मक़ामे नुज़ूल	39
रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	39
सूरए फ़ातिह़ा के अस्मा और इन की वज्हे तस्मिया	39
सूरए फ़ातिह़ा के फ़ज़ाइल	40
सूरए फ़ातिह़ा के मज़ामीन	41
सूरए फ़ातिह़ा से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ मसाइल	42
इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुनाज़रा	42
"بِسْمِ اللّٰہ" से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई़ मसाइल	44
ह़म्द और शुक्र की ता'रीफ़	45
अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना करने के फ़ज़ाइल	46
ह़म्द से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ हुक्म	46
अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये	47
किसी को रह़मान और रह़ीम कहने के बारे में शरई़ हुक्म	49
इ़बादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़	50
आयत "اِیَّاكَ نَعْبُدُ" से मा'लूम होने वाली अहम बातें	50
अल्लाह तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करने की बरकत	51
ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़ "या मुह़म्मद" से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी वज़ाह़त	51
अल्लाह तआ़ला की अ़ता से बन्दों का मदद करना **अल्लाह** तआ़ला ही का मदद करना होता है	53
सिराते़ मुस्तक़ीम का मा'ना	55
हिदायत ह़ासिल करने के ज़राएअ़	56
आयत "اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	56
आयत "صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	58
आयत "وَلَا الضَّآلِّیْنَ" से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ मस्अला	59
आमीन से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ मसाइल	59

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सूरए बक़रह	60
मक़ामे नुज़ूल	60
रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	60
"बक़रह" नाम रखे जाने की वज्ह	60
सूरए बक़रह के फ़ज़ाइल	60
"सूरए बक़रह" के मज़ामीन	61
सूरए फ़ातिह़ा के साथ मुनासबत	63
हुरूफ़े मुक़त्तआ़त का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और को ह़ासिल है या नहीं	64
तक़्वे का मा'ना	66
तक़्वे के फ़ज़ाइल	66
तक़्वे के मरातिब	67
ईमान और ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें	69
नमाज़ क़ाइम करने के फ़ज़ाइल और न करने की वई़दें	70
माल ख़र्च करने में मियाना रवी से काम लिया जाए	72
अल्लाह तआ़ला की किताबों वग़ैरा पर ईमान लाने का शर्ई़ हुक्म	73
अस्ल काम्याबी हर मुसल्मान को ह़ासिल है	75
कुफ़्र की ता'रीफ़ और अज़ली काफ़िरों को तब्लीग़ करने का हुक्म देने की वज्ह	76
बा'ज़ काफ़िर ईमान से मह़रूम क्यूं रहे ?	78
ज़ाहिरो बात़िन का तज़ाद बहुत बड़ा ऐ़ब है	80
रूह़ानी ज़िन्दगी के ख़त़रनाक अमराज़	81
झूट बोलने की वई़द और न बोलने का सवाब	82
नजात वाले कौन लोग हैं ?	84
सह़ाबए किराम की बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	84
बेदीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहा जाए	86
सह़ाबए किराम और उ़लमाए दीन का मज़ाक़ उड़ाने का शर्ई़ हुक्म	88
इ़बादत की ता'रीफ़	92
ए'जाज़े क़ुरआन की वुजूहात	95
एक अहम क़ाइ़दा	103
फ़िरिश्तों से मश्वरे के अन्दाज़ में कलाम करने का सबब	105
फ़िरिश्ते क्या हैं ?	106
इ़ल्म के फ़ज़ाइल	107
अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं	108
सज्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शर्ई़ अह़काम	112
तकब्बुर की मज़म्मत	113
ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इब्लीस के वाक़िए़ का ख़ुलासा	114
एक अहम मस्अला	115
अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ालिम कहने वाले का हुक्म	116
अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इ़स्मत का बयान	116
बारगाहे इलाही के मक़्बूल बन्दों के वसीले से दुआ़ मांगना जाइज़ है	119
तौबा का मफ़्हूम और इस के अरकान	119
उ़रूजो ज़वाल और इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत का फ़ल्सफ़ा	121
नेकी और बुराई की इब्तिदा करने वाले के बारे में एक उसूल	123
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुपाने वाले ग़ौर करें	124
बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल	126
क़ौलो फ़े'ल के तज़ाद का नुक़्सान	128

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
बे अ़मल भी नेकी की दा'वत दे	129
शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला कैसा है ?	133
फ़िरऔ़न का मुख़्तसर तआ़रुफ़	135
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर होने वाले	
इन्आ़म की यादगार क़ाइम करना सुन्नत है	137
मुरतद की सज़ा क़त्ल क्यूं है ?	140
बनी इसराईल पर **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल	140
अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़ज़मत	142
त़ाऊ़न के बारे में 3 अह़ादीस	145
उंग्लियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर	147
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से	
मदद त़लब करने का सुबूत	147
बड़ों से निस्बत रखने वाले को क्या करना चाहिये	150
बनी इसराईल की ज़िल्लतो ग़ुरबत से	
मुसल्मान भी नसीह़त ह़ासिल करें	151
अह़कामे क़ुरआन पर अ़मल की तरग़ीब	153
ह़ीला करने का हुक्म	155
गाय ज़ब्ह़ करने वाले वाक़िए़ से	
मा'लूम होने वाले मसाइल	159
दिल की सख़्ती का अन्जाम	163
आ़लिम का बिगड़ना ज़ियादा तबाह कुन है	164
इस्लाम में ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की अहम्मिय्यत	171
बनी इसराईल की बद अ़ह्दी को सामने रख कर	
मुसल्मान भी अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें	172
ग़ैरे ख़ुदा का मदद करना शिर्क नहीं	178
मख़्लूक़ की ह़ाजत रवाई का वसीला	182
ह़सद ईमान के लिये तबाह कुन है	183
आयत "وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا" से मा'लूम होने वाले अह़काम	185
क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का मत़लब	188
ईमानी क़ुव्वत मा'लूम करने का त़रीक़ा	188

उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुन्यवी ज़िन्दगी के ह़रीस कौन ?	192
क़ुरआने मजीद से मुतअ़ल्लिक़	
मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	197
फ़िरिश्तों की इ़स्मत का बयान	200
जादू की ता'रीफ़ और इस की मज़म्मत	200
आयत "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا" से	
मा'लूम होने वाले अह़काम	204
नस्ख़ के चन्द अह़काम	206
सह़ीह़ मक़्सद के बिग़ैर सुवाल करना मन्अ़ है	209
मन पसन्द हुक्म का मुत़ालबा करना	
यहूदियों का त़रीक़ा है	209
क़ुरआन पढ़ कर अ़मल न करने वाले	
मुसल्मानों को तम्बीह	216
क़ुरआने मजीद के ह़ुक़ूक़	226
तिलावते क़ुरआन के ज़ाहिरी आदाब	226
तिलावते क़ुरआन के बात़िनी आदाब	226
अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत की बरकत	231
मस्जिद ता'मीर करना आ'ला इ़बादत है	234
आयत "وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ" से	
मा'लूम होने वाले मसाइल	236
औलाद को सह़ीह़ अ़क़ाइद और नेक आ'माल की	
वसिय्यत करनी चाहिये	239
दूसरा पारह	250
दीनी मसाइल पर बे जा ए'तिराज़ात करने वाले	
बे वुक़ूफ़ हैं	251
ख़ानए का'बा और बैतुल मुक़द्दस किन ज़मानों में	
क़िब्ला बने	251
ज़बान की एह़तियात़ न करने का नुक़्सान	254
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही	
क़त़्ई व ह़त्मी है	255

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
मुनाफ़क़त की अ़लामत	256	बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	294
अस्लुल उसूल चीज़		ला'नत करने से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल	295
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी है	256	इस्मे आ'ज़म वाली आयात	297
नमाज़ की अहम्मिय्यत	257	साइन्सी उ़लूम भी **अल्लाह** तआ़ला की	
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद	259	मा'रिफ़त का ज़रीआ़ बनते हैं	299
इस्तिक़्बाले क़िब्ला से मुतअ़ल्लिक़		नेक आ'माल की ह़सरत करने वाले लोग	302
चन्द ज़रूरी मसाइल	261	**अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल की हुई चीज़ों को	
ह़सद इन्सान को ह़क़ से अन्धा कर देता है	263	ह़राम क़रार देना कैसा है ?	304
आ़लिम का गुनाह ज़ियादा ख़त़रनाक है	264	ह़लाल व त़य्यिब रिज़्क़ से क्या मुराद है ?	304
आ़लिम का जाहिलों की ख़ुशामद करना		रिज़्क़े ह़लाल के फ़ज़ाइल और	
तबाही का बाइ़स है ?	265	ह़राम रिज़्क़ की मज़म्मत	304
मुक़ाबला किस चीज़ में करना चाहिये	268	शैत़ान का काम क्या है ?	306
अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब		शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की	
हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिये	271	पैरवी करना कैसा ?	308
अल्लाह तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत	273	**अल्लाह** तआ़ला की ह़राम कर्दा	
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ सिखाते हैं	274	चार चीज़ों की तफ़्सील	310
ज़िक्र की अक़्साम	275	ईमान की तफ़्सील	318
ज़िक्र के फ़ज़ाइल	275	माल के मुस्तह़िक़ अफ़राद और उन्हें	
शुक्र की ता'रीफ़	277	माल देने के फ़ज़ाइल	319
शुक्र के फ़ज़ाइल और नाशुक्री की मज़म्मत	277	राहे ख़ुदा में कैसा माल देना चाहिये ?	322
सब्र की ता'रीफ़	279	क़िसास से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल	325
सब्र की अक़्साम	279	वसिय्यत के अह़काम	327
सब्र के फ़ज़ाइल	280	रोज़ा बहुत क़दीम इ़बादत है	330
ग़ैरे ख़ुदा से मदद त़लब करना शिर्क नहीं	280	रोज़े का मक़्सद	330
शुहदा के फ़ज़ाइल	282	रोज़े की रुख़्सत के चन्द अहम मसाइल	332
शहीद की ता'रीफ़ और इस के अह़काम	283	रोज़े के त़िब्बी फ़वाइद	333
आज़्माइशें और सब्र	284	रोज़े की बरकत से शिफ़ा मिली	334
"اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ने के फ़ज़ाइल	286	अ़ज़्मत वाली चीज़ से निस्बत की बरकत	335
मुसीबत पर सब्र के आदाब	288	सौमे विसाल का हुक्म	341
नेक लोगों से निस्बत की बरकत	291	ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल	341
दीनी मसाइल छुपाने की वई़दें	293	ए'तिकाफ़ के चन्द मसाइल	343

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा
मुमानअ़त के बिग़ैर किसी चीज़ को ना जाइज़ समझना कैसा ?	346
बदला लेने से मुतअ़ल्लिक़ दीने इस्लाम की ह़सीन ता'लीम	351
ह़ज की ता'रीफ़ और ह़ज व उ़म्रह के चन्द अह़काम	354
इस्लामी अह़काम सब के लिये बराबर हैं	361
दुन्या की बेहतरी त़लब करने का हुक्म	363
ईमानी कमज़ोरी की अ़लामत	370
आयत "يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	380
शराब और जूए की मज़म्मत	383
जूए के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम	384
यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़काम	387
ह़ैज़ के चन्द अह़काम	391
औलाद को शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखने की दुआ़	392
नेकी से बाज़ रहने की क़सम खाने वाले को क्या करना चाहिये	393
शौहर पर बीवी के हुक़ूक़	398
बीवी पर शौहर के हुक़ूक़	398
ख़ुलअ़ के चन्द अह़काम	401
तीन त़लाक़ों के बारे में एक अहम मस्अला	403
बच्चे को दूध पिलाने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	408
इ़द्दत के 3 अहम मसाइल	410
मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचाई जा सकती	418
जब क़ौम की ए'तिक़ादी और अ़मली ह़ालत ख़राब हो तो क्या होता है ?	422
बुज़दिल क़ौमों का वत़ीरा	423
त़ालूत को बादशाह बनाने के वाक़िए से मा'लूम होने वाले मसाइल	425
त़ालूत के पास ताबूते सकीना आने वाले वाक़िए से मा'लूम होने वाले मसाइल	427
त़ालूत, जालूत और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए से ह़ासिल होने वाला दर्स	431
तीसरा पारह	433
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल बयान करने में एह़तियात़	434
तीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल	434
आयतुल कुरसी के फ़ज़ाइल	439
आयत "لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	440
नूर की त़रफ़ जाने का सब से बड़ा ज़रीआ़	442
ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और नमरूद	443
अ़क़ाइद में मुनाज़रा करने का सुबूत	444
हर शख़्स मुनाज़रा न करे	445
ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ़	447
ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और चार परिन्दे	449
ह़ज़रते उ़ज़ैर और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त से ह़ासिल होने वाली मा'लूमात	451
नेकी की तमाम सूरतों में ख़र्च करना राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है	452
मजाज़ी निस्बत करना जाइज़ है	453
नेक आ'माल में यक्सानियत के बा वुजूद सवाब में फ़र्क़ होता है	453
अपने मा तह़तों की ख़त़ाओं से दर गुज़र करें	455
आयत "لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى" से मा'लूम होने वाले अह़काम	458
आयत "اَنْفِقُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	462

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
नज़्र की ता'रीफ़ और इस के चन्द अह्काम	465
सदक़ात के बेहतरीन मसरफ़	468
सूद को हराम किये जाने की हिक्मतें	472
दो गुनाहों पर ए'लाने जंग दिया गया	476
ज़ुल्म को ख़त्म करने की कोशिश की जाए	477
क़र्ज़दार को मोहलत देने और क़र्ज़ा मुआफ़ करने के फ़ज़ाइल	477
इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और मजूसी क़र्ज़दार	479
क़र्ज़ की अदाएगी के लिये दुआ	479
गवाही के अह्काम	484
गवाही देना फ़र्ज़ और छुपाना ना जाइज़ है	485
रह्न के चन्द मसाइल	486
सूरए बक़रह की आयत नम्बर 282 और 283 से मुतअ़ल्लिक़ अहम तम्बीह	487
कुफ़्र और गुनाह के अ़ज़्म का शरई हुक्म	489
शैतान की इन्सान दुश्मनी	489
सूरए आले इमरान का तआ़रुफ़	494
मक़ामे नुज़ूल	494
रुकूअ़ और आयत की ता'दाद	494
"आले इमरान" नाम रखे जाने की वज्ह	494
सूरए आले इमरान के फ़ज़ाइल	494
सूरए आले इमरान के मज़ामीन	495
सूरए बक़रह के साथ मुनासबत	496
"हय्य" और "क़य्यूम" का मा'ना	498
किसी को मुतशाबिहात का इल्म अ़ता हुवा या नहीं	503

उन्वान	सफ़्हा
अ़मल से मुंह फेर कर उम्मीद की दुन्या में घूमने का अन्जाम	519
उ़म्र और गुनाहों का हिसाब करने वाले बुज़ुर्ग	526
नींद से पाक रब तआ़ला हमें देख रहा है	526
रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी ज़रूरी है	528
नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़त की अहम्मिय्यत	531
आयत "هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ" से मा'लूम होने वाले दुआ के आदाब	538
क़ुरआ अन्दाज़ी के ज़रीए फ़ैसला करना	545
हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सिफ़ात	547
हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात की तफ़्सील	550
सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 49 से मा'लूम होने वाले अ़क़ाइद व मसाइल	552
लफ़्ज़ "मक्र" के मा'ना	557
मुबाहला किस में होना चाहिये	564
इख़्तिलाफ़ ख़त्म करने का उ़म्दा त़रीक़ा	565
बुज़ुर्गों पर होने वाले ए'तिराज़ात को दूर करना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है	566
इल्मे तारीख़ की अहम्मिय्यत	566
आयत "اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	568
झूट बोल कर माल हासिल करने की वईद	577
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बयान	582
मआख़िज़ो मराजेअ़	590
ज़िम्नी फ़ेहरिस्त	595

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

येह मुक़द्दमा क़ुरआने मजीद और इस की तफ़्सीर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम और ज़रूरी बातों पर मुश्तमिल है और इसे तीन अब्वाब में तक़्सीम किया गया है।

पहला बाब :

क़ुरआने करीम का तआ़रुफ़, इस की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत और तिलावत के फ़ज़ाइलो आदाब वग़ैरा का बयान

क़ुरआने मजीद का मुख़्तसर तआ़रुफ़

क़ुरआने करीम उस रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ का बे मिस्ल कलाम है जो अकेला मा'बूद, तन्हा ख़ालिक़ और सारी काएनात का ह़क़ीक़ी मालिक है, वोही तमाम जहानों को पालने वाला और पूरी काएनात के निज़ाम को मरबूत़ तरीन अन्दाज़ में चलाने वाला है, दुन्या व आख़िरत की हर भलाई ह़क़ीक़ी त़ौर पर उसी के दस्ते क़ुदरत में है और वोह जिसे जो चाहता है अ़त़ा करता है और जिसे जिस चीज़ से चाहे मह़रूम कर देता है, वोह जिसे चाहे इ़ज़्ज़त देता और जिसे चाहे ज़िल्लतो रुस्वाई से दो चार कर देता है। वोह जिसे चाहे हिदायत देता और जिसे चाहे गुमराह कर देता है और उस ने अपना येह कलाम रसूलों के सरदार, दो आ़लम के ताजदार, ह़बीबे बे मिसाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया ताकि इस के ज़रीए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाने और दीने ह़क़ की पैरवी करने की त़रफ़ बुलाएं और शिर्क व कुफ़्र व ना फ़रमानी के अन्जाम से डराएं, लोगों को कुफ़्रो शिर्क और गुनाहों के तारीक रास्तों से निकाल कर ईमान और इस्लाम के रोशन और मुस्तक़ीम रास्ते की त़रफ़ हिदायत दें और उन के लिये दुन्या व आख़िरत में फ़लाह़ो कामरानी की राहें आसान फ़रमाएं।

क़ुरआने मजीद नाज़िल होने की इब्तिदा रमज़ान के बा बरकत महीने में हुई और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में इसे लाने का शरफ़ रूहुल अमीन ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ासिल हुवा और शबे मे'राज कुछ आयात बिला वासित़ा भी अ़त़ा

www.dawateislami.net

हुई...... क़ुरआने मजीद को दुन्या की फ़सीह़ तरीन ज़बान या'नी अ़रबी ज़बान में नाज़िल किया गया ताकि लोग इसे समझ सकें और अ़रब के रहने वालों और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के लिये कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे और वोह येह न कह सकें कि हम उस कलाम को सुन कर क्या करेंगे जिसे हम समझ ही नहीं सकते...... क़ुरआने मजीद को तौरात व इन्जील की त़रह़ एक ही मरतबा नहीं उतारा गया बल्कि ह़ालात व वाक़िआ़त के ह़िसाब से थोड़ा थोड़ा कर के तक़रीबन 23 साल के अ़र्से में इसे नाज़िल किया गया ताकि इस के अह़काम पर अ़मल करना मुसल्मानों पर भारी न पड़े और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़्हर को मज़बूत़ी ह़ासिल हो, और येह **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर बहुत बड़ा एह़सान है...... क़ुरआने अ़ज़ीम के कसीर अस्मा हैं जो कि इस किताब की अ़ज़मतो शरफ़ की दलील है, उन में से छे मश्हूर अस्मा येह हैं :

(1) क़ुरआन **(2)** बुरहान **(3)** फ़ुरक़ान **(4)** किताब **(5)** मुस्ह़फ़ **(6)** नूर।

क़ुरआने अ़ज़ीम की अ़ज़मत

अल्लाह तआ़ला ने जो अ़ज़मतो शान क़ुरआने मजीद को अ़त़ा की है वोह किसी और कलाम को ह़ासिल नहीं, यहां इस की 11 अ़ज़मतें मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... क़ुरआने करीम **अल्लाह** तआ़ला की वाज़ेह़ दलील और उस का नाज़िल किया हुवा नूर है। इर्शादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आ गई और हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर नाज़िल किया।

(2)...... **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा और कोई इस कलाम को अपनी त़रफ़ से नहीं बना सकता, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस क़ुरआन की येह शान नहीं कि **अल्लाह** के नाज़िल किये बिग़ैर कोई इसे अपनी त़रफ़ से बना ले, हां येह अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ है और लौहे मह़फ़ूज़ की तफ़्सील है, इस में कोई शक नहीं है, येह रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से है।

1 ......النساء: ١٧٤.

2 ......يونس: ٣٧.

www.dawateislami.net

(3)...... तमाम जिन्नो इन्स मिल कर और एक दूसरे की मदद कर के भी क़ुरआने अ़ज़ीम जैसा कलाम नहीं ला सकते, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :

قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ ! अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि इस क़ुरआन की मानन्द ले आएं तो इस का मिस्ल न ला सकेंगे अगर्चे इन में एक दूसरे का मददगार हो।

(4)...... येह क़ुरआन बातिल की रसाई से दूर है कि इस के पास किसी त़रफ़ से बातिल नहीं आ सकता, जैसा कि **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

لَا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बातिल इस के सामने और इस के पीछे (किसी त़रफ़) से भी इस के पास नहीं आ सकता। वोह क़ुरआन उस की त़रफ़ से नाज़िल किया हुवा है जो हिक्मत वाला, ता'रीफ़ के लाइक़ है।

(5)...... येह कलाम सीधा और मुस्तक़ीम है और इस में किसी क़िस्म की कोई कजी, टेढ़ापन नहीं है बल्कि निहायत मो'तदिल और मसालेहे़ इबाद पर मुश्तमिल किताब है चुनान्चे **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًاؕ(۱) قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَ یُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने अपने बन्दे पर किताब नाज़िल फ़रमाई और इस में कोई टेढ़ नहीं रखी। लोगों की मस्लहतों को क़ाइम रखने वाली निहायत मो'तदिल किताब ताकि **अल्लाह** की त़रफ़ से सख़्त अ़ज़ाब से डराए और अच्छे आ'माल करने वाले मोमिनों को ख़ुश ख़बरी दे कि उन के लिये अच्छा सवाब है।

(1)...... بنی اسرائیل: ۸۸. (2)......حم السجدہ:۴۲. (3)...... کہف: ۱،۲.

www.dawateislami.net

(6)...... येह मह़फ़ूज़ किताब है और इस में किसी क़िस्म की कोई तब्दीली नहीं हो सकती क्यूं कि इस की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने लिया है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ [1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने इस क़ुरआन को नाज़िल किया है और बेशक हम ख़ुद इस की ह़िफ़ाज़त करने वाले हैं।

(7)...... येह जामिउ़ल उ़लूम किताब है कि अव्वलीनो आख़िरीन का इ़ल्म इस किताब में मौजूद है, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा जो हर चीज़ का रोशन बयान है।

और इर्शाद फ़रमाता है :

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ [3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : या'नी हम ने इस किताब में किसी शै की कोई कमी नहीं छोड़ी।

तिरमिज़ी की ह़दीस में है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**किताबुल्लाह** में तुम से पहले वाक़िआ़त की भी ख़बर है, तुम से बा'द के वाक़िआ़त की भी और तुम्हारे आपस के फ़ैसले हैं।"[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं "क़ुरआने मजीद हर नाफ़ेअ़ इ़ल्म पर मुश्तमिल है या'नी इस में गुज़श्ता वाक़िआ़त की ख़बरें और आयिन्दा होने वाले वाक़िआ़त का इ़ल्म मौजूद है, हर ह़लाल व ह़राम का हुक्म इस में मज़्कूर है, और इस में उन तमाम चीज़ों का इ़ल्म है जिन की लोगों को अपने दुन्यवी, दीनी, मआ़शी और उख़्रवी मुआ़मलात में ज़रूरत है।"[5]

(8)...... येह क़ुरआन उस रास्ते की त़रफ़ रहनुमाई करता है जो सब से ज़ियादा सीधा है, जैसा कि इर्शादे बारी तआ़ला है :

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ أَقْوَمُ [6]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक येह क़ुरआन वोह राह दिखाता है जो सब से सीधी है।

---

1 ......حجر: ۹. 2 ......نحل: ۸۹. 3 ......انعام: ۳۸.

4 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل القرآن، ۴/۴۱۴، الحدیث: ۲۹۱۵.

5 ......ابن کثیر، النحل، تحت الآیۃ: ۸۹، ۴/۵۱۰. 6 ......بنی اسرائیل: ۹.

www.dawateislami.net

(9)...... येह मुसल्मानों के लिये हिदायत, रह़मत, बिशारत, नसीह़त और शिफ़ा है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि

وَهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुसल्मानों के लिये हिदायत और रह़मत और बिशारत है।

और इर्शाद फ़रमाता है :

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह लोगों के लिये एक बयान और रहनुमाई है और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त है।

और इर्शाद फ़रमाता है :

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम क़ुरआन में वोह चीज़ उतारते हैं जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है और इस से ज़ालिमों को ख़सारा ही बढ़ता है।

(10)...... येह ख़ास त़ौर पर अहले अ़रब के लिये और उ़मूमी त़ौर पर पूरी उम्मत के लिये अ़ज़्मतो नामवरी का सबब है, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ (4)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ऐ ह़बीब !) बेशक येह क़ुरआन तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के लिये अ़ज़्मत का सबब है।

और इर्शाद फ़रमाता है :

لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (5)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में तुम्हारा चरचा है। तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?

(11)...... येह इन्तिहाई असर आफ़रीन किताब है जिसे सुन कर ख़ौफ़ो ख़शिय्यत के पैकर लोगों के दिल दहल जाते हैं और बदन पर बाल खड़े हो जाते हैं, **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

---

1 ......نحل: ٨٩. 2 ......ال عمران: ١٣٨. 3 ......بنی اسرائیل: ٨٢.
4 ......زخرف: ٤٤. 5 ......انبياء: ١٠.

www.dawateislami.net

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ یَهْدِیْ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह ने सब से अच्छी किताब उतारी कि सारी एक जैसी है, बार बार दोहराई जाती है। इस से उन लोगों के बदन पर बाल खड़े होते हैं जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल **अल्लाह** की याद की त़रफ़ नर्म पड़ जाते हैं। येह **अल्लाह** की हिदायत है वोह जिसे चाहता है इस के ज़रीए हिदायत देता है और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।

अल ग़रज़ येह बड़ी बरकत वाली किताब है इस लिये सब मुसल्मानों को चाहिये कि इस की पैरवी करें और परहेज़ गार बन जाएं ताकि **अल्लाह** तआ़ला उन पर रह़्म करे, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَ اتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह (क़ुरआन) वोह किताब है जिसे हम ने नाज़िल किया है, बड़ी बरकत वाला है तो तुम इस की पैरवी करो और परहेज़ गार बनो ताकि तुम पर रह़्म किया जाए।

क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में क़ुरआने मजीद के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से **3** अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़न्क़रीब एक फ़ित्ना बरपा होगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, उस से बचने का त़रीक़ा क्या होगा ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला की किताब, जिस में तुम्हारे अगलों और पिछलों की ख़बरें हैं और तुम्हारे आपस के फ़ैसले हैं, क़ुरआन फ़ैसला कुन है और येह कोई मज़ाक़ नहीं है। जो ज़ालिम उसे छोड़ देगा **अल्लाह** तआ़ला उसे तबाह कर देगा और जो उस के ग़ैर में हिदायत ढूंडेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे गुमराह कर देगा, वोह **अल्लाह** तआ़ला की मज़बूत़ रस्सी और वोह ह़िक्मत वाला ज़िक्र है, वोह सीधा रास्ता है, क़ुरआन वोह है जिस की बरकत से ख़्वाहिशात

1 ......زمر: ۲۳.
2 ......انعام: ۱۵۵.

www.dawateislami.net

बिगड़ती नहीं और जिस के साथ दूसरी ज़बानें मिल कर उसे मुश्तबह व मश्कूक नहीं बना सकतीं, जिस से उ़लमा सैर नहीं होते, जो ज़ियादा दोहराने से पुराना नहीं पड़ता, जिस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होते, क़ुरआन ही वोह है कि जब उसे जिन्नात ने सुना तो येह कहे बिग़ैर न रह सके कि हम ने अ़जीब क़ुरआन सुना है जो अच्छाई की रहबरी करता है तो हम उस पर ईमान ले आए, जो क़ुरआन का क़ाइल हो वोह सच्चा है, जिस ने उस पर अ़मल किया वोह सवाब पाएगा और जो उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करेगा वोह मुन्सिफ़ होगा और जो उस की त़रफ़ बुलाएगा वोह सीधी राह की त़रफ़ बुलाएगा ।''(1)

(2)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है ''जिस को क़ुरआन ने मेरे ज़िक्र और मुझ से सुवाल करने से मश्ग़ूल रखा, उसे मैं उस से बेहतर दूंगा जो मांगने वालों को देता हूं और कलामुल्लाह की फ़ज़ीलत दूसरे कलामों पर ऐसी ही है जैसी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़ज़ीलत उस की मख़्लूक़ पर है ।''(2)

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन क़ुरआन को एक शख़्स की सूरत अ़त़ा की जाएगी, फिर उसे एक ऐसे शख़्स के पास लाया जाएगा जो क़ुरआन का आ़लिम होने के बा वुजूद उस के हुक्म की मुख़ालफ़त करता रहा, क़ुरआन उस की मुख़ालफ़त करते हुए कहेगा : ''ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, इस ने मेरा इ़ल्म ह़ासिल किया लेकिन येह बहुत बुरा आ़लिम है, इस ने मेरी हुदूद की ख़िलाफ़ वरज़ी की, मेरे फ़राइज़ को ज़ाएअ़ किया, मेरी ना फ़रमानी में लगा रहा और मेरी इत़ाअ़त को छोड़ दिया ।'' क़ुरआन उस पर दलाइल के साथ इल्ज़ामात लगाता रहेगा यहां तक कि कहा जाएगा : इस के बारे में तेरा मुआ़मला तेरे सिपुर्द है । क़ुरआन उस का हाथ पकड़ कर ले जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम में एक चटान पर औंधे मुंह गिरा देगा । फिर क़ुरआन को एक ऐसे नेक शख़्स के पास लाया जाएगा जो क़ुरआन का आ़लिम था और उस के हुक्म की बजा आवरी करता रहा । क़ुरआन उस के बारे में कहेगा : ''ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, इस ने मेरा इ़ल्म ह़ासिल किया और येह बेहतरीन आ़लिम है, इस ने मेरी हुदूद की ह़िफ़ाज़त की, मेरे फ़राइज़ पर अ़मल किया, मेरी ना फ़रमानी से

1 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل القرآن، ٤/٤١٤، الحدیث: ٢٩١٥.

2 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، ٢٥-باب، ٤/٤٢٥، الحدیث: ٢٩٣٥.

www.dawateislami.net

बचता रहा और मेरी इत़ाअ़त करता रहा।" क़ुरआन दलाइल के साथ उस की हि़मायत करता रहेगा यहां तक कि कहा जाएगा : इस के बारे में तेरा मुआ़मला तेरे सिपुर्द है, क़ुरआन उस का हाथ पकड़ कर उसे ले जाएगा और उसे मोटे रेशम का हुल्ला पहनाएगा, उस के सर पर बादशाही का ताज सजाएगा और उसे (जन्नती) शराब के जाम पिलाएगा।"(1)

क़ुरआने ह़कीम के मक़ासिद

यहां तक क़ुरआने मजीद का तआ़रुफ़, इस की अ़ज़्मतें और फ़ज़ाइल बयान हुए, अब क़ुरआने पाक नाज़िल करने के 4 मक़ासिद मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... पूरी उम्मत को अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से डराना। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल फ़रमाया है, पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है और इस लिये (उतरी) ताकि तुम इस के ज़रीए़ मर्कज़ी शह्र और उस के इर्द गिर्द वालों को डर सुनाओ।

(2)...... लोगों को कुफ़्रो जहालत के अंधेरों से ईमान के नूर की त़रफ़ निकालना। चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : الٓرٰ, येह एक किताब है जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल की है ताकि तुम लोगों को उन के रब के हुक्म से अंधेरों से उजाले की त़रफ़, उस (**अल्लाह**) के रास्ते की त़रफ़ निकालो जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है।

(3)...... लोगों तक अल्लाह तआ़ला के अह़कामात पहुंचाना और उन के इख़्तिलाफ़ का तस्फ़िया करना। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب فضائل القرآن، من قال: یشفع القرآن لصاحبه یوم القیامة، ۱۶۹/۷، الحدیث: ۱.

2 ......انعام: ۹۲.

3 ......ابراهیم: ۱.

www.dawateislami.net

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ येह क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया ताकि तुम लोगों से वोह बयान कर दो जो उन की त़रफ़ नाज़िल किया गया है और ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने तुम पर येह किताब इस लिये नाज़िल फ़रमाई है ताकि तुम लोगों के लिये वोह बात वाज़ेह़ कर दो जिस में उन्हें इख़्तिलाफ़ है और येह किताब ईमान वालों के लिये हिदायत और रह़मत है।

(4)...... इस की आयतों में ग़ौरो फ़िक्र कर के नसीह़त ह़ासिल करना । चुनान्चे रब तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (येह क़ुरआन) एक बरकत वाली किताब है जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल की है ताकि लोग इस की आयतों में ग़ौरो फ़िक्र करें और अ़क़्ल मन्द नसीह़त ह़ासिल करें।

क़ुरआने पाक के आदाब

उ़लमाए किराम ने क़ुरआने अ़ज़ीम के बहुत से आदाब बयान किये हैं, उन में से 6 आदाब येह हैं :

(1)...... क़ुरआने मजीद की किताबत निहायत ख़ुश ख़त़ और वाज़ेह़ ह़र्फ़ों में की जाए, काग़ज़ भी बहुत अच्छा, रोशनाई भी ख़ूब अच्छी हो कि देखने वाले को भला मा'लूम हो। बा'ज़ मक्तबों वाले निहायत मा'मूली काग़ज़ पर बहुत ख़राब किताबत व रोशनाई से छपवाते हैं येह हरगिज़ नहीं होना चाहिये।

(2)...... फ़ी ज़माना क़ुरआने मजीद के तराजिम भी छापने का रवाज है, अगर तरजमा सह़ीह़ हो तो क़ुरआने मजीद के साथ छापने में ह़रज नहीं, इस लिये कि इस से आयत का तरजमा जानने में सहूलत होती है मगर तन्हा तरजमा त़ब्अ़ न किया जाए।

1......نحل: ٤٤.
2......نحل: ٦٤.
3......ص: ٢٩.

www.dawateislami.net

(3)...... क़ुरआने मजीद का ह़ज्म छोटा करना मकरूह है। मसलन आज कल बा'ज़ मक्तबों वाले ता'वीज़ी क़ुरआने मजीद छपवाते हैं जिन का क़लम इतना बारीक है कि पढ़ने में भी नहीं आता, बल्कि गले में लटकाने के लिये भी क़ुरआने पाक न छपवाया जाए कि इस का ह़ज्म भी बहुत कम होता है।

(4)...... क़ुरआने मजीद पुराना बोसीदा हो गया और इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि उस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे, तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह दफ़्न कर दिया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये लह़द बनाई जाए, ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि उस पर मिट्टी न पड़े। मुस्ह़फ़ शरीफ़ बोसीदा हो जाए तो उस को जलाया न जाए।

(5)...... क़ुरआने मजीद के आदाब में से येह भी है कि उस की त़रफ़ पीठ न की जाए, न पाउं फैलाए जाएं, न पाउं को उस से ऊंचा करें, न येह कि ख़ुद ऊंची जगह पर हो और क़ुरआने मजीद नीचे हो।

(6)...... क़ुरआने मजीद को जुज़्दान व ग़िलाफ़ में रखना अदब है। सह़ाबा व ताबिईन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के ज़माने से इस पर मुसल्मानों का अ़मल है।[1]

क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करने और पढ़ाने के फ़ज़ाइल

क़ुरआने मजीद की तिलावत करने और पढ़ाने के बहुत से फ़ज़ाइल हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَتۡلُوۡنَ کِتٰبَ اللّٰہِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَ اَنۡفَقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ سِرًّا وَّ عَلَانِیَۃً یَّرۡجُوۡنَ تِجَارَۃً لَّنۡ تَبُوۡرَ ﴿ۙ۲۹﴾ لِیُوَفِّیَہُمۡ اُجُوۡرَہُمۡ وَ یَزِیۡدَہُمۡ مِّنۡ فَضۡلِہٖ ؕ اِنَّہٗ غَفُوۡرٌ شَکُوۡرٌ [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो **अल्लाह** की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से पोशीदा और ए'लानिया कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जो हरगिज़ तबाह नहीं होगी। ताकि **अल्लाह** उन्हें उन के सवाब भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़त़ा करे बेशक वोह बख़्शने वाला, क़द्र फ़रमाने वाला है।

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शांज़ दहुम, 3/494, 496, मुलख़्ख़सन।

2......فاطر: ۲۹، ۳۰.

www.dawateislami.net

और अह़ादीस में इस के जो फ़ज़ाइल बयान हुए उन में से 6 फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए ।"(1)

(2)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ुरआन पढ़ो क्यूं कि वोह क़ियामत के दिन अपने अस्ह़ाब के लिये शफ़ीअ़ हो कर आएगा ।"(2)

(3)...... ह़ज़रते उ़बैदा मुलैकी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ क़ुरआन वालो ! क़ुरआन को तक्या न बनाओ या'नी सुस्ती और ग़फ़्लत न बरतो औ रात और दिन में इस की तिलावत करो जैसा तिलावत करने का ह़क़ है और इस को फैलाओ और तग़न्नी करो या'नी अच्छी आवाज़ से पढ़ो या इस का मुआ़वज़ा न लो और जो कुछ इस में है उस पर ग़ौर करो ताकि तुम्हें फ़लाह़ मिले, इस के सवाब में जल्दी न करो क्यूं कि इस का सवाब बहुत बड़ा है ।"(3)

(4)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन दिलों में भी ज़ंग लग जाता है, जिस त़रह़ लोहे में पानी लगने से ज़ंग लगता है ।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इस की सफ़ाई किस चीज़ से होगी ? इर्शाद फ़रमाया : "कसरत से मौत को याद करने और तिलावते क़ुरआन करने से ।"(4)

(5)...... ह़ज़रते ऐफ़अ़ बिन अ़ब्दुल कलाई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : किसी ने पूछा, **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, क़ुरआन में सब से बड़ी सूरत कौन सी है ? इर्शाद फ़रमाया : "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ।" उस ने अ़र्ज़ की : क़ुरआन में सब से बड़ी आयत कौन सी है ? इर्शाद फ़रमाया : आयतुल कुरसी "اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ।" उस ने कहा, **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, कौन सी आयत (का फ़ाएदा व सवाब) आप को और आप की उम्मत को पहुंचना मह़बूब है ? इर्शाद फ़रमाया : "सूरए बक़रह के ख़ातिमे की आयत कि वोह रह़मते इलाही के ख़ज़ाने से अ़र्शे इलाही के नीचे से है, **अल्लाह** तआ़ला ने वोह आयत इस उम्मत को दी, दुन्या व

1 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من تعلّم القرآن وعلّمه، ۳/۴۱۰، الحدیث: ۵۰۲۷.

2 ......مسلم ، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب فضل قراء ة القرآن وسورة البقرة، ص۴۰۳، الحدیث: ۲۵۲(۸۰۴).

3 ......شعب الایمان،التاسع عشرمن شعب الایمان...الخ،فصل فی ادمان تلاوته،۲/۳۵۰-۳۵۱،الحدیث:۲۰۰۷و۲۰۰۹.

4 ......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان... الخ، فصل فی ادمان تلاوته، ۲/۳۵۲، الحدیث: ۲۰۱۴.

www.dawateislami.net

आख़िरत की कोई ख़ैर नहीं मगर येह उस पर मुश्तमिल है।''(1)

(6)...... ह़ज़रते जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ुरआन को उस वक़्त तक पढ़ो, जब तक तुम्हारे दिल को उल्फ़त और लगाव हो और जब दिल उचाट हो जाए, खड़े हो जाओ। या'नी तिलावत बन्द कर दो।''(2)

क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ करने के फ़ज़ाइल

क़ुरआने करीम को ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और येह सह़ाबा व ताबिईन और उ़लमाए दीने मतीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن की सुन्नत है और इस के फ़ज़ाइल ह़स्रो शुमार से बाहर हैं, तरग़ीब के लिये यहां तीन फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ुरआन वाला क़ियामत के रोज़ आएगा और क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, इसे ख़िल्अ़त अ़त़ा फ़रमा, तो उस शख़्स को करामत का ताज पहनाया जाएगा। क़ुरआन फिर अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, और ज़ियादा कर, तो उसे बुज़ुर्गी का हुल्ला पहनाया जाएगा। फिर अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, इस से राज़ी हो जा, तो **अल्लाह** तआ़ला उस से राज़ी हो जाएगा। फिर उस शख़्स से कहा जाएगा : पढ़ते रहो और (दरजात) चढ़ते जाओ, और हर आयत पर एक नेकी ज़ियादा की जाएगी।''(3)

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''साह़िबे क़ुरआन को हुक्म होगा कि पढ़ते रहो और (दरजात) चढ़ते जाओ और ठहर ठहर कर पढ़ो जैसे तुम इसे दुन्या में ठहर ठहर कर पढ़ते थे कि तुम्हारा मक़ाम उस आख़िरी आयत के नज़्दीक है जिसे तुम पढ़ोगे।''(4)

इस ह़दीसे पाक का ह़ासिल येह है कि हर आयत पर एक एक दरजा उस का जन्नत में बुलन्द होता जाएगा और जिस के पास जिस क़दर आयतें होंगी उसी क़दर दरजे उसे मिलेंगे।

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान का ख़ुलासा है कि ''ह़ाफ़िज़े क़ुरआन अगर रात को तिलावत करे तो उस की मिसाल

1 ......دارمی، ومن کتاب فضائل القرآن، باب فضل اول سورة البقرة وآية الكرسی، ۲/۵۴۰، الحدیث: ۳۳۸۰.

2 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرؤا القرآن ما ائتلفت عليه قلوبكم، ۳/۴۱۹، الحدیث: ۵۰۶۱.

3 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، ۱۸-باب، ۴/۴۱۹، الحدیث: ۲۹۲۴.

4 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، ۱۸-باب، ۴/۴۱۹، الحدیث: ۲۹۲۳.

www.dawateislami.net

उस तोशादान की है जिस में मुश्क भरा हुवा हो और उस की ख़ुश्बू तमाम मकानों में महके और जो रात को सो रहे और क़ुरआन उस के सीने में हो तो उस की मिसाल उस तोशादान की मानन्द है जिस में मुश्क है और उस का मुंह बांध दिया जाए।''(1)

येह क़ुरआने मजीद हिफ़्ज़ करने के फ़ज़ाइल हैं लिहाज़ा जिस मुसल्मान से बन पड़े वोह क़ुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर के इन फ़ज़ाइल को हासिल करने की कोशिश करे और जिन्हों ने क़ुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया है उन्हें चाहिये कि इसे रोज़ाना याद करते रहें ताकि हिफ़्ज़ भूल न जाए। आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक हदीसे पाक की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : ''या'नी जिस तरह बंधे हुए ऊंट छूटना चाहते हैं और अगर उन की मुहाफ़ज़त व एहतियात न की जाए तो रिहा हो जाएं इस से ज़ियादा क़ुरआन की कैफ़िय्यत है, अगर इसे याद न करते रहोगे तो वोह तुम्हारे सीनों से निकल जाएगा, पस तुम्हें चाहिये कि हर वक़्त इस का ख़याल रखो और याद करते रहो, इस दौलते बे निहायत को हाथ से न जाने दो।''

इसी तरह एक और हदीसे पाक की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : ''या'नी ऐ क़ुरआन वालो ! क़ुरआन को तक्या न बना लो कि पढ़ के याद कर के रख छोड़ा, फिर निगाह उठा कर न देखा बल्कि इसे पढ़ते रहो दिन रात की घड़ियों में जैसे इस के पढ़ने का हक़ है और इसे इफ़्शा करो कि ख़ुद पढ़ो, लोगों को पढ़ाओ, याद कराओ, इस के पढ़ने, याद करने की तरग़ीब दो न येह कि जो पढ़े और ख़ुदा उसे हिफ़्ज़ की तौफ़ीक़ दे उस को रोको और मन्अ़ करो।''

फिर फ़रमाते हैं : ''उस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे ख़ुदा ऐसी हिम्मत बख़्शे (कि वोह क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ कर ले) और वोह उसे अपने हाथ से खो दे ? अगर क़द्र इस की जानता और जो सवाब और दरजात इस पर मौऊ़द हैं उन से वाक़िफ़ होता तो इसे जानो दिल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखता।''(2)

तिलावते क़ुरआन के आदाब

जब भी क़ुरआने मजीद की तिलावत की जाए तो इस से पहले इन आदाब और शरई अहकाम का लिहाज़ रखा जाए :

(1)...... क़ुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब चीज़ें इबादत हैं।

1......ابن ماجه، كتاب السنة، باب فى فضل من تعلّم القرآن وعلمه، ١/١٤١، الحديث: ٢١٧.

2...... फ़तावा रज़विय्या, 23/642, 645

www.dawateislami.net

(2)...... मुस्तह़ब येह है कि बा वुज़ू क़िब्ला रू अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करे और तिलावत के शुरूअ़ में "अऊ़ज़ु" पढ़ना मुस्तह़ब है और सूरत की इब्तिदा में "बिस्मिल्लाह" पढ़ना सुन्नत है वरना मुस्तह़ब है।[1]

(3)...... क़ुरआने मजीद को निहायत अच्छी आवाज़ से पढ़ना चाहिये और अगर (पढ़ने वाले की) आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे। लह़्न के साथ पढ़ना कि हुरूफ़ में कमी बेशी हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं येह ना जाइज़ है, बल्कि पढ़ने में क़वाइदे तज्वीद की रिआ़यत करे।[2]

(4)...... लेट कर क़ुरआने मजीद पढ़ने में ह़रज नहीं, जब कि पाउं सिमटे हों और मुंह खुला हो, यूंही चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मक्रूह है।

(5)...... जब क़ुरआने मजीद ख़त्म हो तो तीन बार "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" पढ़ना बेहतर है, अगर्चे तरावीह़ में हो, अलबत्ता अगर फ़र्ज़ नमाज़ में ख़त्म करे तो एक बार से ज़ियादा न पढ़े।[3]

(6)...... मुसल्मानों में येह दस्तूर है कि क़ुरआने मजीद पढ़ते वक़्त अगर उठ कर कहीं जाते हैं तो बन्द कर देते हैं खुला हुवा छोड़ कर नहीं जाते, येह अदब की बात है, मगर बा'ज़ लोगों में येह मश्हूर है कि अगर खुला हुवा छोड़ दिया जाएगा तो शैत़ान पढ़ेगा, इस की अस्ल नहीं, मुम्किन है कि बच्चों को इस अदब की त़रफ़ तवज्जोह दिलाने के लिये येह बात बनाई गई हो।[4]

(7)...... जब बुलन्द आवाज़ से क़ुरआने मजीद पढ़ा जाए तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना फ़र्ज़ है जब कि वोह मज्मअ़ क़ुरआने मजीद सुनने की ग़रज़ से ह़ाज़िर हो वरना एक का सुनना काफ़ी है अगर्चे बाक़ी लोग अपने काम में मसरूफ़ हों।

(8)...... मज्मअ़ में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह ह़राम है। अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें।

(9)...... बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों बुलन्द आवाज़ से पढ़ना ना जाइज़ है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है अगर्चे काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढ़ना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस पर गुनाह है।

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए सिवुम, 1/550
2...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शांज़ दहुम, 3/496
3...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए सिवुम, 1/551
4...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शांज़ दहुम, 3/496

www.dawateislami.net

(10)...... जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते कि बताने की वज्ह से कीना व ह़सद पैदा न हो। इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ अपने पास आ़रियत है, अगर उस में किताबत की ग़लत़ी देखे तो बता देना वाजिब है।[1]

दूसरा बाब :

क़ुरआने मजीद के जम्अ़ व तरतीब और इस की तफ़्सीर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें

जम्ए़ क़ुरआन का तारीख़ी पस मन्ज़र

ह़क़ीक़ी त़ौर पर क़ुरआने अ़ज़ीम को जम्अ़ फ़रमाने वाला **अल्लाह** तआ़ला है, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक इस का जम्अ़ करना और इस का पढ़ना हमारे ज़िम्मे है।

हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस ज़माने में **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام के बयान के मुत़ाबिक़ क़ुरआने मजीद को लौहे़ मह़फ़ूज़ की तरतीब के मुत़ाबिक़ सह़ाबए किराम को बयान फ़रमाया और इस की सूरत येह थी कि क़ुरआने मजीद 23 साल के अ़र्से में ह़ालात व वाक़िआ़त के ह़िसाब से जुदा जुदा आयतें हो कर नाज़िल हुवा, किसी सूरत की कुछ आयतें नाज़िल होतीं फिर दूसरी सूरत की कुछ आयतें उतरतीं, फिर पहली सूरत की आयतें नाज़िल होतीं, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर बार इर्शाद फ़रमाते कि येह आयात फ़ुलां सूरत की हैं लिहाज़ा इसे फ़ुलां आयत के बा'द और फ़ुलां आयत से पहले रखा जाए, चुनान्चे वोह आयात उसी सूरत में और उसी जगह पर रख दी जातीं। इसी तरतीब के मुत़ाबिक़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुन कर सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم नमाज़ में और तिलावत के दौरान क़ुरआने मजीद पढ़ते।

उस दौर में सारा क़ुरआने अ़ज़ीम किताबी शक्ल में एक जगह जम्अ़ नहीं था बल्कि सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के सीनों में मह़फ़ूज़ था और मुतफ़र्रिक़ काग़ज़ों, पथ्थर की तख़्तियों, बकरी दुम्बे की खालों, ऊंटों के शानों और पस्लियों की हड्डियों वग़ैरा पर लिखा हुवा

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए सिवुम, 1/552, 553

2......قیامہ: ۱۷.

www.dawateislami.net

था। जब ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में नुबुव्वत के झूटे दा'वेदार मल्ऊ़न मुसैलमा कज़्ज़ाब से जंग हुई तो उस में बहुत से हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم शहीद हो गए। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर गुज़ारिश की, कि इस लड़ाई में बहुत से वोह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم शहीद हो गए हैं जिन के सीनों में क़ुरआने अ़ज़ीम था, अगर इसी त़रह़ जिहादों में हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم शहीद होते गए और क़ुरआने अ़ज़ीम को एक जगह जम्अ़ न किया गया तो क़ुरआने मजीद का बहुत सा ह़िस्सा मुसल्मानों के हाथ से जाते रहने का अन्देशा है। मेरी राय येह है कि आप इस बात का हुक्म दें कि क़ुरआने मजीद की सब सूरतें एक जगह जम्अ़ कर ली जाएं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो काम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया वोह हम कैसे करें ?" ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : अगर्चे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह काम न किया लेकिन ख़ुदा की क़सम ! येह काम भलाई का है। आख़िर कार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की राय पसन्द आ गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित अन्सारी और दीगर हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इस अ़ज़ीम और अहम तरीन काम का हुक्म दिया और कुछ ही अ़र्से में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सारा क़ुरआने अ़ज़ीम एक जगह जम्अ़ हो गया, हर सूरत एक जुदा सह़ीफ़े में थी और वोह सह़ीफ़े ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ीने ह़यात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रहे, उन के बा'द अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के बा'द उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रहे।

अ़रब में चूंकि बहुत से क़बीले रहते थे और हर क़ौम और क़बीले की ज़बान के बा'ज़ अल्फ़ाज़ का तलफ़्फ़ुज़ और लहजे मुख़्तलिफ़ थे और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस ज़माने में क़ुरआने अ़ज़ीम नया नया उतरा था और हर क़ौम व क़बीले को अपने मादरी लहजे और पुरानी आ़दात को यक्दम बदलना दुश्वार था, इस लिये **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से उन पर येह आसानी फ़रमा दी गई थी कि अ़रब में रहने वाली हर क़ौम अपनी त़र्ज़ और लहजे में क़ुरआने मजीद की क़िराअत करे अगर्चे क़ुरआने मजीद "लुग़ते क़ुरैश" पर नाज़िल हुवा था। ज़मानए नुबुव्वत के बा'द चन्द मुख़्तलिफ़ क़ौमों के बा'ज़ अफ़राद के ज़ेहनों में येह बात जम गई कि जिस लहजे और लुग़त में हम पढ़ते हैं उसी लहजे में क़ुरआने करीम नाज़िल हुवा है, इस त़रह़ कोई कहने लगा कि क़ुरआन इस लहजे में है और कोई कहने लगा नहीं बल्कि दूसरे लहजे में है यहां तक कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने

www.dawateislami.net

में येह नौबत आ गई कि लोग इस मुआ़मले में एक दूसरे से लड़ने के लिये तय्यार हो गए। जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात की ख़बर पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अभी से तुम में येह इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया है तो आयिन्दा तुम से क्या उम्मीद है ?" चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और दीगर अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मश्वरे के मुत़ाबिक़ येह त़ै पाया कि अब हर क़ौम को उस के लबो लहजे की इजाज़त में मस्लह़त न रही बल्कि इस से फ़ित्ना उठ रहा है लिहाज़ा पूरी उम्मत को ख़ास "लुग़ते क़ुरैश" पर जिस में क़ुरआने मजीद नाज़िल हुवा है जम्अ़ कर देना और बाक़ी लुग़तों से बाज़ रखना चाहिये और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो सह़ीफ़े जम्अ़ फ़रमाए थे वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मंगवा कर उन की नक़्लें ली जाएं और तमाम सूरतें एक मुस्ह़फ़ में जम्अ़ कर दी जाएं, फिर वोह मसाह़िफ़ इस्लामी शहरों में भेज दिये जाएं और सब को हुक्म दिया जाए कि वोह इसी लहजे की पैरवी करें और इस के ख़िलाफ़ अपने अपने त़र्ज़े अदा के मुत़ाबिक़ जो सह़ाइफ़ या मसाह़िफ़ बा'ज़ लोगों ने लिखे हैं फ़ित्ना ख़त्म करने के लिये वोह तलफ़ कर दिये जाएं। चुनान्चे इसी दुरुस्त राय की बिना पर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से वोह सह़ाइफ़ मंगवाए और उन की नक़्लें तय्यार कर के तमाम शहरों में भेज दी गईं। इसी अ़ज़ीम काम की वज्ह से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "जामिउ़ल क़ुरआन" कहा जाता है।(1)

तफ़्सीरे क़ुरआन की तारीख़

तफ़्सीरे क़ुरआन की तारीख़ तक़रीबन चार अदवार पर मुश्तमिल है जो कि दर्जे ज़ैल हैं :

पहला दौर :

क़ुरआने मजीद रोशन अ़रबी ज़बान में और लुग़ते अ़रब के उस्लूब और बयान के मुत़ाबिक़ नाज़िल हुवा, इस लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इस अ़ज़ीम कलाम को समझ लेते और उन्हें इस के अग़राज़ो मक़ासिद मा'लूम हो जाते लेकिन चूंकि तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इ़ल्मी और अ़क़्ली ए'तिबार से एक जैसे न थे बल्कि इ़ल्मो फ़ह्म के लिह़ाज़ से उन के मरातिब में फ़र्क़ था इस लिये जब किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ुरआने मजीद के किसी लफ़्ज़ के मा'ना समझने में दुश्वारी होती तो वोह बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1)...... फ़तावा रज़विय्या, 26/439, 452, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ कर देते और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के मा'ना बयान फ़रमा कर उन की तशफ़्फ़ी फ़रमा देते, इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद ही क़ुरआनी आयात के मा'ना बयान फ़रमा देते और येही वोह दौर है जिस में क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर बयान करने की इब्तिदा हुई।

इस मर्ह़ले में सब से पहले क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर और इस के मआ़नी **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बयान फ़रमाए क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला अपने कलाम की मुराद को सब से ज़ियादा जानता है और इस के बा'द ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के सामने क़ुरआने अ़ज़ीम की तफ़्सीर बयान फ़रमाई। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस मन्सब को बयान करते हुए फ़रमाता है :

وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الذِّكْرَ لِتُبَیِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیْهِمْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ येह क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया ताकि तुम लोगों से वोह बयान कर दो जो उन की त़रफ़ नाज़िल किया गया है।

और इर्शाद फ़रमाता है :

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही (**अल्लाह**) है जिस ने अनपढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा जो उन के सामने **अल्लाह** की आयतें तिलावत फ़रमाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और ह़िक्मत का इल्म अ़त़ा फ़रमाता है और बेशक वोह इस से पहले ज़रूर खुली गुमराही में थे।

दूसरा दौर :

जब सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाल फ़रमाया तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का मुक़द्दस ज़माना आया और येह वोह मुबारक हस्तियां हैं जिन्हों ने बराहे रास्त सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआने अ़ज़ीम की ता'लीम ह़ासिल की, इन में

1 ......نحل : ٤٤.

2 ......سورۂ جمعہ:٢.

www.dawateislami.net

से बा'ज़ सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ऐसे थे जिन्हों ने इस काम के लिये अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी थी। उन्हों ने अहले ज़बान होने और नुज़ूले क़ुरआन के माहोल से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ होने के बा वुजूद अपनी ज़बान दानी पर भरोसा नहीं किया बल्कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआने मजीद सीखा और इस के असरारो रुमूज़ की मा'लूमात ह़ासिल कीं। मश्हूर ताबेई आ़लिम ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से जो ह़ज़रात हमें क़ुरआने अ़ज़ीम की ता'लीम दिया करते थे उन्हों ने हमें बताया कि वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दस आयतें सीखते और उस वक़्त तक उन से आगे नहीं बढ़ते थे जब तक हम उन आयात की तमाम इ़ल्मी और अ़मली बातों का इ़ल्म ह़ासिल न कर लें।"(1)

और ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब कोई शख़्स (नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से) सूरए बक़रह और सूरए आले इ़मरान पढ़ लेता तो वोह हमारी नज़रों में बहुत क़ाबिले एह़तिराम हो जाता था।"(2)

उस दौर में जब लोगों को क़ुरआनी आयात के मा'ना समझने में मुश्किल हुई तो उन्हों ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم की बारगाह में ह़ाज़िरी दी और चश्मए रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़ैज़याब होने वाली इन हस्तियों से मत़ालिबे क़ुरआनी सीखे, अलबत्ता यहां एक बात याद रहे कि न तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूरे क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर बयान फ़रमाई और न ही सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने मुकम्मल क़ुरआने अ़ज़ीम की तफ़्सीर ज़िक्र की बल्कि उन की तफ़्सीर का मह़वर किसी लफ़्ज़ की वज़ाह़त, लुग़त से इस्तिश्हाद, शाने नुज़ूल का बयान और नासिख़ो मन्सूख़ वग़ैरा का ज़िक्र था और इस की एक बड़ी वज्ह येह थी कि वोह ख़ुद अहले ज़बान थे और लुग़ते अ़रब के उस्लूबो बयान से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ थे इस लिये उन्हें पूरे क़ुरआन की तफ़्सीर की ह़ाजत न थी।

मुफ़स्सिर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से चन्द मश्हूर मुफ़स्सिरीन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ। (2) ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم। (3) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا। (4) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ। (5) ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ। (6) ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب فضائل القرآن، فی تعلیم القرآن کم آیة، ۱۵۲/۷، الحدیث: ۱.

2 ......شرح السنه، کتاب الفضائل، باب علامات النبوة، ۷۶/۷، الحدیث: ۳۶۱۹.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । (7) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا । (8) हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । (9) हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

तीसरा दौर :

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बा'द ताबिई़न का ज़माना आया, उन के पास अगर्चे तफ़्सीरे क़ुरआन का एक मो'तद बिह ज़ख़ीरा था लेकिन वोह पूरे क़ुरआने अ़ज़ीम की तफ़्सीर न थी बल्कि बा'ज़ आयात की तफ़्सीर थी। उस दौर में इस्लाम अत़राफ़े आ़लम में फैल चुका था और जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم मौजूद थे वोह मुख़्तलिफ़ शहरों में दीने इस्लाम की ख़िदमत में मसरूफ़ थे, उसी दौर में मुख़्तलिफ़ फ़ितने उठे, लोगों की आराअ में इख़्तिलाफ़ हुवा और फ़तावा की कसरत हुई तो ताबिई़न ने ह़दीस, फ़िक़्ह और क़ुरआने मजीद के उ़लूम की तदवीन की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई। तफ़्सीरे क़ुरआन के सिल्सिले में उन्हों ने हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के त़रीक़े की पैरवी की, कि सब से पहले क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर क़ुरआनी आयात से बयान की, फिर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से बयान की और मज़ीद येह त़रीक़ा इख़्तियार किया कि जहां उन्हें क़ुरआने मजीद की आयात और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से क़ुरआनी आयात की तफ़्सीर न मिली वहां क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के आसार से बयान की और जहां उन्हें तफ़्सीरे क़ुरआन से मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के आसार नहीं मिले वहां उन्हों ने इज्तिहाद व इस्तिम्बात़ से काम लिया और उसी दौर में कुतुबे तफ़्सीर का एक ज़ख़ीरा मा'रिज़े वुजूद में आया।

मुफ़स्सिर ताबिई़न

ताबिई़न में से चन्द मश्हूर मुफ़स्सिरीन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रते इब्नुल मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (2) ह़ज़रते उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (3) ह़ज़रते सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (4) ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (5) ह़ज़रते सुलैमान बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (6) ह़ज़रते अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (7) ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (8) ह़ज़रते इब्ने शहाब ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (9) ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (10) ह़ज़रते मुजाहिद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (11) ह़ज़रते सई़द बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (12) ह़ज़रते अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (13) ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। (14) ह़ज़रते इमाम इब्ने सीरीन

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । (15) ह़ज़्रते इब्राहीम नख़ई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । (16) ह़ज़्रते इमाम शा'बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

चौथा दौर :

ताबिईन के बा'द उमवी और अ़ब्बासी ख़ुलफ़ा के दौर में तफ़्सीरे क़ुरआन पर बहुत काम हुवा और उस वक़्त से ले कर अब तक मुख़्तलिफ़ ज़बानों में और मुख़्तलिफ़ अक़्साम में कसीर तफ़ासीर लिखी गई हैं। उन में से अ़रबी ज़बान में चन्द मश्हूर तफ़ासीर येह हैं :

नम्बर शुमार	तफ़्सीर का नाम	मुसन्निफ़ का नाम
1	جَامِعُ الْبَیَان فِیْ تَأْوِیْلِ الْقُرْآن	अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
2	بَحْرُ الْعُلُوْم	फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुह़म्मद समर क़न्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
3	تَفْسِیْرُ الْقُرْآنِ الْعَظِیْم	ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुह़म्मद, इब्ने अबी ह़ातिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
4	تَاْوِیْلَاتُ اَھْلِ السُّنَّۃ	अबू मन्सूर मुह़म्मद बिन मुह़म्मद मातुरीदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
5	اَلنُّکَتُ وَالْعُیُوْن	अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
6	اَلْوَجِیْزُ فِیْ تَفْسِیْرِ الْکِتَابِ الْعَزِیْز	अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद वाह़िदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
7	اَحْکَامُ الْقُرْآن	अबू बक्र अह़मद बिन अ़ली जस्सास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
8	اَحْکَامُ الْقُرْآن	अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
9	اَحْکَامُ الْقُرْآن	अबू बक्र मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह, इब्ने अ़रबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
10	مَعَالِمُ التَّنْزِیْل فِیْ تَفْسِیْرِ الْقُرْآن	अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मस्ऊ़द बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
11	زَادُ الْمَسِیْرفِیْ عِلْمِ التَّفْسِیْر	इमाम जमालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
12	اَلتَّفْسِیْرُ الْکَبِیْر	अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
13	اَلْجَامِعُ لِاَحْکَامِ الْقُرْآن	अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
14	اَنْوَارُ التَّنْزِیْل وَاَسْرَارُ التَّاْوِیْل	नासिरुद्दीन अबू सईद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

15	مَدارِكُ التَّنزِيل وَحقَائِقُ التَّأوِيل	अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
16	لُبَابُ التَّأوِيل فِیْ مَعَانِي التَّنزِيل	अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
17	اَلْبَحْرُ الْمُحِيط	अबू ह़य्यान मुह़म्मद बिन यूसुफ़ उन्दुलुसी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
18	تَفْسِيرُ اللُّبَاب فِیْ عُلُوْمِ الْكِتَاب	अबू ह़फ़्स सिराजुद्दीन उ़मर बिन अ़ली दिमश्क़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
19	تَفْسِيرُ الْقُرآنِ الْعَظِيم	अबुल फ़िदा इस्माईल बिन उ़मर बिन कसीर दिमश्क़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
20	اَلدُّرُ الْمَنْثُور فِی التَّأوِيْلِ بِالْمَأثُوْر	अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र, जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
21	تَفْسِيرُ الْجَلَالَيْن	जलालुद्दीन मह़ल्ली व जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا
22	اِرْشَادُ الْعَقْلِ السَّلِيم	अबुस्सऊ़द मुह़म्मद बिन मुह़म्मद इ़मादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
23	رُوْحُ الْبَيَان	शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
24	رُوْحُ الْمَعَانِی	शहाबुद्दीन सय्यिद मह़मूद आलूसी बग़दादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
25	حَاشِيَةُ الْجُمَل عَلَى الْجَلَالَيْن	शैख़ सुलैमान अल जुमल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
26	حَاشِيَةُ الصَّاوِی عَلَى الْجَلَالَيْن	अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

तफ़्सीर और तावील की ता'रीफ़

मुफ़स्सिरीन ने तफ़्सीर और तावील की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात की हैं, उन में से तफ़्सीर की एक ता'रीफ़ येह है कि क़ुरआने मजीद के वोह अह़वाल बयान करना जो अ़क़्ल से मा'लूम न हो सकें बल्कि उन में नक़्ल की ज़रूरत हो जैसे आयात का शाने नुज़ूल या आयात का नासिख़ो मन्सूख़ होना बयान करना। तावीले क़ुरआन की एक ता'रीफ़ येह है कि क़ुरआनी आयात के मज़ामीन और उन की बारीकियां बयान की जाएं और सर्फ़ी व नह़वी क़वाइ़द और दीगर उ़लूम के ज़रीए़ क़ुरआनी आयात से त़रह़ त़रह़ के निकात निकाले जाएं।

तफ़्सीर और तावील का शरई ह़ुक्म

क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर अपनी राय से बयान करना ह़राम है और अपने इ़ल्मो मा'रिफ़त से क़ुरआन की जाइज़ तावील बयान करना अहले इ़ल्म के लिये जाइज़ और बाइ़से सवाब है। ह़ज़रते अ़ल्लामा सुलैमान जुमल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शराइत़ के साथ तावील बिर्राय या'नी राय से तावील के जवाज़ जब कि तफ़्सीर बिर्राय या'नी राय से तफ़्सीर के ना जाइज़

होने में राज़ येह है कि तफ़्सीर तो **अल्लाह** तआ़ला पर गवाही देना और इस बात का यक़ीन करना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस कलिमे के येह ही मा'ना मुराद लिये हैं और येह बिग़ैर बताए जाइज़ नहीं, इसी लिये इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़ैसला कर दिया कि सह़ाबी की तफ़्सीर मरफ़ूअ़ ह़दीस के हुक्म में है और तावील चन्द एह़तिमालात में से बा'ज़ को यक़ीन के बिग़ैर तरजीह़ देने का नाम है (इस लिये येह बिग़ैर बताए अहले इ़ल्म के लिये जाइज़ है)।''(1)

मुफ़स्सिर के लिये ज़रूरी उ़लूम

उ़लमाए किराम ने मुफ़स्सिर के लिये जिन उ़लूम को ज़रूरी क़रार दिया है उन में से चन्द येह हैं :

(1) लुग़त का इ़ल्म। **(2)** नह़्व का इ़ल्म। **(3)** सर्फ़ का इ़ल्म। **(4)** इश्तिक़ाक़ का इ़ल्म। **(5,6,7)** मआ़नी, बयान और बदीअ़ का इ़ल्म। **(8)** क़िराअतों का इ़ल्म। **(9)** उसूले दीन का इ़ल्म। **(10)** उसूले फ़िक़्ह का इ़ल्म। **(11)** अस्बाबे नुज़ूल का इ़ल्म। **(12)** नासिख़ और मन्सूख़ का इ़ल्म। **(13)** मुज्मल और मुब्हम की तफ़्सीर पर मब्नी अह़ादीस का इ़ल्म।

इन उ़लूम को सामने रखते हुए उन ख़्वातीन व ह़ज़रात को अपने त़र्ज़े अ़मल पर बड़ी सन्जीदगी से ग़ौर करने की ह़ाजत है जो क़ुरआने मजीद का सिर्फ़ उर्दू तरजमा और तफ़ासीर की उर्दू कुतुब पढ़ कर तरजमा व तफ़्सीर करना और इस के मआ़नी व मत़ालिब बयान करना शुरूअ़ कर देते हैं। येह बहुत ख़त़रनाक इक़्दाम है। इसे यूं समझिये कि अगर कोई शख़्स अज़ ख़ुद मेडीकल की किताबें पढ़ के अपना क्लीनिक खोल ले और मरीज़ों का इ़लाज करना और उन के ऑपरेशन करना शुरूअ़ कर दे तो इस का क्या नतीजा होगा ? इसी त़रह़ बल्कि इस से कहीं ज़ियादा नाज़ुक क़ुरआने मजीद के तरजमे और तफ़्सीर का मुआ़मला है कि इस में **अल्लाह** तआ़ला के कलाम का मा'ना व मफ़्हूम और उस की मुराद बयान करनी होती है और येह काम सीखे बिग़ैर करना और इ़ल्म के बिग़ैर करना जहन्नम में पहुंचा देगा। इस लिये अगर किसी को तफ़्सीर बयान करने का शौक़ है तो उसे चाहिये कि बा क़ाइदा उ़लूमे दीनिया सीख कर इस का अह्ल बने। इमाम ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : अ़जमियों को इस बात ने हलाक कर दिया कि उन में से कोई क़ुरआने मजीद की आयत पढ़ता है और वोह उस के मआ़नी से जाहिल होता है तो वोह अपनी उस जहालत की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तिरा बांधना शुरूअ़ कर देता है।(2)

---

(1) ......جمل، مقدمة، ۳/۱.

(2) ......البحر المحيط، مقدمة المؤلف، الترغيب فى تفسير القرآن، ۱/۱۱۸-۱۱۹.

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : “जिस शख़्स ने क़ुरआने मजीद में बिग़ैर इल्म कुछ कहा उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ समझ लेना चाहिये।”[(1)]

तफ़्सीर के दरजात

तफ़्सीरे क़ुरआन के मुतअ़द्दद दरजात हैं, मसलन

(1)...... **तफ़्सीरुल क़ुरआन बिल क़ुरआन ।** इस का मा'ना येह है कि क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर क़ुरआनी आयात से की जाए क्यूं कि क़ुरआने मजीद में बा'ज़ जगह एक हुक्म बयान किया जाता है और दूसरी जगह उस हुक्म की मुद्दत के इख़्तिताम का ज़िक्र होता है, इसी त़रह़ एक मक़ाम पर कोई बात मुब्हम ज़िक्र की जाती है और दूसरी जगह उस इब्हाम को दूर कर दिया जाता है, इस लिये तफ़्सीरे क़ुरआन का सब से आ'ला दरजा येह है कि क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर ख़ुद इस की आयात से की जाए।

(2)...... **तफ़्सीरुल क़ुरआन बिल ह़दीस ।** इस का मा'ना येह है कि क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से की जाए क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ुरआने मजीद के मआ़नी, अह़काम और तमाम असरारो रुमूज़ सिखा दिये हैं, इस लिये जब क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर क़ुरआनी आयत से न मिले तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से उन की तफ़्सीर बयान की जाए।

(3)...... **तफ़्सीरुल क़ुरआन बि आसारिस्सह़ाबा ।** इस का मा'ना येह है कि क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के अक़्वाल से की जाए क्यूं कि येह वोह ह़ज़रात हैं जिन्हों ने बराहे रास्त हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआने अ़ज़ीम की ता'लीम ह़ासिल की इस लिये जब क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर क़ुरआनी आयात और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से न मिले तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के अक़्वाल की रोशनी में आयाते क़ुरआनी की तफ़्सीर बयान की जाए।

(4)...... **तफ़्सीरुल क़ुरआन बि आसारित्ताबिईन ।** इस का मा'ना येह है कि क़ुरआने करीम की तफ़्सीर ताबिईन के अक़्वाल की रोशनी में की जाए क्यूं कि येह वोह लोग हैं जिन्हों ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर सीखी इस लिये जब क़ुरआनी आयात, अह़ादीस और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के अक़्वाल से तफ़्सीर न मिले तो ताबिईन के अक़्वाल से तफ़्सीर बयान की जाए अलबत्ता इस में येह लिह़ाज़ रहे कि ताबेई अगर किसी सह़ाबी

(1)......ترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ما جاء فی الذی یفسر القرآن برأیہ، ٤/٤٣٩، الحدیث: ٢٩٥٩.

www.dawateislami.net

से तफ़्सीर नक़्ल कर रहे हैं तो इस का हुक्म वोही है जो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की बयान कर्दा तफ़्सीर का है और अगर ताबिईन का इज्माई क़ौल है तो वोह हुज्जत है वरना नहीं।

(5)...... तफ़्सीरुल क़ुरआन बिल्लुग़तिल अ़रबिय्यह। क़ुरआने मजीद की बा'ज़ आयात ऐसी हैं जिन के मफ़्हूम में कोई उल्झन और पेचीदगी नहीं बल्कि उन का मफ़्हूम बिल्कुल वाज़ेह़ है, ऐसी आयात की तफ़्सीर के लिये अ़रबी लुग़त और अ़रबी क़वाइद ही काफ़ी हैं अलबत्ता वोह आयात जिन का मफ़्हूम वाज़ेह़ नहीं या जिन से फ़िक़्ही अह़काम अख़्ज़ किये जा रहे हों तो उन आयात की तफ़्सीर मा क़ब्ल मज़्कूर चारों मआख़िज़ से की जाएगी और इन के बा'द लुग़ते अ़रब को भी सामने रखा जाएगा क्यूं कि अ़रबी ज़बान में इस क़दर वुस्अ़त है कि इस में एक लफ़्ज़ के बसा अवक़ात कई कई मा'ना होते हैं।

क़ुरआने मजीद का अस्ली माख़ज़

क़ुरआने मजीद का अस्ली माख़ज़ और सरचश्मा **अल्लाह** तआ़ला का इल्म और उस की वह़ी है, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने एक अ़ज़ीम इल्म की बिना पर बड़ी तफ़्सील से बयान किया, (वोह) ईमान लाने वालों के लिये हिदायत और रह़मत है।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ؕ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ یُّوْحٰى (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह अपनी ख़्वाहिश से नहीं कहते। वोह वह़ी ही होती है जो उन्हें की जाती है।

इस लिये क़ुरआने मजीद की वोह इस्तिलाह़ात जिन के मा'ना व मफ़्हूम को क़ुरआन और साहि़बे क़ुरआन की वज़ाह़त के बिग़ैर समझना ना मुम्किन है जैसे ईमान, इस्लाम, निफ़ाक़, शिर्क, कुफ़्र, रूह़, नफ़्स, बअ़्स, सलात, ज़कात, ह़ज, सौम, रिबा, सदक़ा और इन्फ़ाक़ वग़ैरा, इन सब का मा'ना न तो अ़रबी लुग़त से मुतअ़य्यन किया जा सकता है और न ही समझा जा सकता है बल्कि इन के मा'ना व मफ़्हूम के तअ़य्युन के लिये हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुजूअ़ करना बहर सूरत लाज़िमी है और इन का जो मा'ना व मफ़्हूम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया है उसे बिला तरद्दुद तस्लीम करना ज़रूरी है और जो लोग क़ुरआने मजीد की

(1)......اعراف: ٥٢.
(2)......نجم: ٣، ٤.

www.dawateislami.net

इन इस्तिलाहात के मुआमले में सिराते मुस्तक़ीम से बहक गए उन के बहक्ने की बुन्यादी वज्ह येह थी कि उन्हों ने वहूये रब्बानी की बजाए लुग़ते अ़रब को कुरआने अ़ज़ीम का अस्ली माख़ज़ क़रार दिया और लुग़त में इन इस्तिलाहात का जो मा'ना मज़्कूर था वोही इन के लिये मुतअ़य्यन कर दिया।

तफ़्सीर की ज़रूरत व अहम्मिय्यत

इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जिस ज़माने में कुरआने मजीद अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुवा उस वक़्त अ़रबी की फ़साहतो बलाग़त के माहिरीन मौजूद थे, वोह इस के ज़ाहिर और इस के अहकाम को तो जानते थे लेकिन इस की बातिनी बारीकियां उन पर भी ग़ौरो फ़िक्र करने और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवालात करने के बा'द ही ज़ाहिर होती थीं जैसे जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई ''اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ'' तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ''हम में से ऐसा कौन है जो अपनी जान पर ज़ुल्म नहीं करता।'' नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर बयान की, कि यहां ज़ुल्म से मुराद शिर्क है और इस पर इस आयत ''اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ'' से इस्तिद्लाल फ़रमाया। इसी तरह जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया : ''مَنْ نُوْقِشَ الْحِسَابَ عُذِّبَ'' या'नी जिस से आ'माल के हिसाब के मुआमले में जह़ की गई तो वोह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा।'' तो हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन आयात ''فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا ۙ۸ وَّ یَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا'' के बारे में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह तो सिर्फ़ आ'माल का पेश होना है।'' (या'नी येह वोह मुनाक़शा नहीं है जो हदीस में फ़रमाया गया है) (जब मैदाने फ़साहतो बलाग़त के शह सुवारों को कुरआन के मआ़नी समझने के लिये अल्फ़ाज़े कुरआनी की तफ़्सीर की हाजत हुई) तो हम तो उस चीज़ के ज़ियादा मोहताज हैं जिस की उन्हें ज़रूरत पड़ी बल्कि हम तो सब लोगों से ज़ियादा उस चीज़ के मोहताज हैं क्यूं कि हमें बिग़ैर सीखे लुग़त के असरारो रुमूज़ और इस के मरातिब मा'लूम नहीं हो सकते।''(1)

कुरआन फ़हमी बहुत बड़ी इबादत व सआ़दत है, लिहाज़ा तिलावते कुरआन के साथ मुस्तनद तफ़ासीर के ज़रीए मआ़निये कुरआन भी समझने की कोशिश करनी चाहिये। हज़रते

1......الاتقان فی علوم القرآن، النوع السابع والسبعون، فصل واَمّا وجه الحاجة اليه... الخ، ٢/ ٥٤٦-٥٤٧، ملخصاً.

www.dawateislami.net

इयास बिन मुआ़विया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो लोग क़ुरआने मजीद पढ़ते हैं और वोह इस की तफ़्सीर नहीं जानते उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ है जिन के पास रात के वक़्त उन के बादशाह का ख़त़ आया और उन के पास चराग़ नहीं जिस की रोशनी में वोह उस ख़त़ को पढ़ सकें तो उन के दिल डर गए और उन्हें मा'लूम नहीं कि इस ख़त़ में क्या लिखा है ? और वोह शख़्स जो क़ुरआन पढ़ता है और इस की तफ़्सीर जानता है उस की मिसाल उस क़ौम की त़रह़ है जिन के पास क़ासिद चराग़ ले कर आया तो उन्हों ने चराग़ की रोशनी से ख़त़ में लिखा हुवा पढ़ लिया और उन्हें मा'लूम हो गया कि ख़त़ में क्या लिखा है ।(1)

अल्लाह तआ़ला तमाम मुसल्मानों को क़ुरआने मजीद समझ कर पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

तीसरा बाब :

"सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन" पर काम और इस की ख़ुसूसिय्यात का बयान

दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने वाले सब मुसल्मानों की ज़बान अ़रबी नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में रहने वाले मुसल्मान अपनी अपनी अ़लाक़ाई और मादरी ज़बानों में गुफ़्त्गू करते हैं और क़ुरआने मजीद की तफ़ासीर का ज़ियादा तर ज़ख़ीरा चूंकि अ़रबी ज़बान में है इस लिये अहले अ़रब के इ़लावा दीगर अ़लाक़ों में मुक़ीम मुसल्मानों की अक्सरिय्यत अ़रबी ज़बान से ना वाक़िफ़ होने की वज्ह से इन तफ़ासीर से इस्तिफ़ादा नहीं कर सकती, इसी ज़रूरतो ह़ाजत के पेशे नज़र मो'तबर उ़लमाए किराम ने अकाबिरीन की लिखी हुई अ़रबी तफ़ासीर और उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल दीगर क़ाबिले ए'तिमाद किताबों से कलाम अख़्ज़ कर के दीगर ज़बानों में तफ़ासीर की किताबें तरतीब दीं ताकि वहां के मुसल्मान भी क़ुरआने मजीद की रोशन ता'लीमात और इस के अह़कामात से आगाही ह़ासिल करें और इन्ही ह़ालात की वज्ह से पाक व हिन्द में भी फ़ारसी और उर्दू में बेशतर उ़लमाए किराम ने तफ़ासीर लिखीं जिन में से शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की फ़ारसी ज़बान में लिखी गई तफ़्सीर "फ़त्ह़ुल अ़ज़ीज़", सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की उर्दू ज़बान में लिखी गई मुख़्तसर तफ़्सीर "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" और ह़कीमुल

(1)......تفسیر قرطبی، باب ما جاء فی فضل تفسیر القرآن واھله، ۴۱/۱، الجزء الاول، ملخصاً.

www.dawateislami.net

उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की तफ़्सीर "नूरुल इरफ़ान" सरे फ़ेहरिस्त हैं, और अब इसी फ़ेहरिस्त में एक ख़ूब सूरत और अहम इज़ाफ़ा **"सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन"** के नाम से आप के हाथों में है। इस की चन्द ख़ुसूसिय्यात दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... क़ुरआने मजीद की हर आयत के तह़त दो तरजमे ज़िक्र किये गए हैं, एक आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का बे मिस्ल और शाहकार तरजमा "कन्ज़ुल ईमान" है और दूसरा मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ आसान उर्दू में किया गया तरजमा "कन्ज़ुल इरफ़ान" है जिस में ज़ियादा तर "कन्ज़ुल ईमान" से ही इस्तिफ़ादा किया गया है।

(2)...... क़दीम व जदीद तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल मो'तबर और क़ाबिले ए'तिमाद उ़लमाए किराम बिल ख़ुसूस आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की लिखी हुई कसीर किताबों से कलाम अख़्ज़ कर के सिवाए चन्द एक मक़ामात के बा ह़वाला कलाम लिखा गया, नीज़ इन बुज़ुर्गों के ज़िक्र कर्दा कलाम की रोशनी में बा'ज़ मक़ामात पर अपने अन्दाज़ और अल्फ़ाज़ में कलाम ज़िक्र किया गया है।

(3)...... कुतुबे तफ़ासीर से ह़वाला जात डालने में हर जगह बि ऐ़निही इ़बारतों का तरजमा करने का इल्तिज़ाम नहीं किया गया बल्कि बहुत सी जगहों पर ख़ुलासए कलाम नक़्ल करने पर इक्तिफ़ा किया गया है, और जहां एक बात कई तफ़्सीरों से नक़्ल की गई है वहां उस तफ़्सीर का ह़वाला दिया गया है जिस से ज़ियादा तर मवाद लिया गया हो।

(4)...... सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का शाहकार तफ़्सीरी ह़ाशिया "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" तक़रीबन पूरा ही इस तफ़्सीर में शामिल कर दिया गया है और उस के मुश्किल अल्फ़ाज़ को आसान अल्फ़ाज़ में बदल कर कलाम की तख़रीज और तह़क़ीक़ भी कर दी गई है। नीज़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ह़ाशिये "नूरुल इरफ़ान" से भी बहुत ज़ियादा मदद ली गई है और इस के भी अक्सरो बेश्तर ह़िस्से को मा'मूली तब्दीलियों के साथ शामिल किया गया है।

(5)...... फ़ी ज़माना अ़वामुन्नास बहुत त़वील और इ़ल्मी व फ़न्नी अब्ह़ास पर मुश्तमिल तफ़ासीर पढ़ने और समझने में बहुत दुश्वारी मह़सूस करते हैं, इसी त़रह़ मुख़्तसर ह़वाशी से भी उन्हें क़ुरआनी आयात का मा'ना व मफ़्हूम समझने में बड़ी दिक़्क़त का सामना होता है, उन की इस परेशानी को सामने रखते हुए **"सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन"** में इस बात का ख़ास लिहाज़ रखा गया है कि तफ़्सीर न ज़ियादा त़वील हो और न ही बहुत मुख़्तसर

www.dawateislami.net

बल्कि मुतवस्सित् और जामेअ् हो, नीज़ इस में उन इल्मी और फ़न्नी अब्ह़ास से गुरेज़ किया गया है जिन्हें जानने में अ़वामुन्नास का कोई ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा नहीं अलबत्ता जहां आयत की तफ़्हीम के लिये जिस इल्मी और फ़न्नी बह़स की ज़रूरत थी वहां उसे ह़त्तल इम्कान आसान अन्दाज़ में ज़िक्र करने की कोशिश ज़रूर की गई है।

(6)...... उर्दू की मुश्किल तराकीब की बजाए आसान अल्फ़ाज़ व तराकीब का इस्ति'माल किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे ह़ज़रात भी इस से आसानी के साथ इस्तिफ़ादा कर सकें और क़ुरआने मजीद की ता'लीमात और अह़काम को समझ कर उन पर अ़मल कर सकें।

(7)...... क़ुरआने मजीद में जहां शर्ई अह़काम व मसाइल का बयान हुवा वहां तफ़्सीर में ज़रूरी मसाइल आसान अन्दाज़ में बयान किये गए, जहां आ'माल की इस्लाह़ का ज़िक्र हुवा वहां इस्लाहे़ आ'माल की तरग़ीब व तरहीब, जहां मुआ़शरती बुराइयों का तज़्किरा हुवा वहां उन से मुतअ़ल्लिक़ और जहां जहन्नम के अ़ज़ाबात और जन्नत के इन्आ़मात का ज़िक्र हुवा वहां अ़ज़ाबे जहन्नम से बचने और जन्नती ने'मतों के ह़ुसूल की तरग़ीब पर मुश्तमिल मज़ामीन लिखे गए हैं, नीज़ बात़िनी अमराज़ से मुतअ़ल्लिक़ भी क़दरे तफ़्सील से कलाम किया गया है।

(8)...... इस्लामी ह़ुस्ने मुआ़शरत से मुतअ़ल्लिक़ उमूर जैसे वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों और पड़ोसियों वग़ैरा के साथ ह़ुस्ने सुलूक और सिलए रेह़मी करने से मुतअ़ल्लिक़ भी बहुत सा इस्लाह़ी मवाद शामिल किया गया है।

(9)...... मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अ़क़ाइदे अहले सुन्नत और मा'मूलाते अहले सुन्नत की दलाइल के साथ वज़ाह़त की गई है और मौक़अ् व मक़ाम की मुनासबत से मुआ़शरे में राइज बुराइयों की क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में मज़म्मत बयान की गई है।

(10)...... ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका ख़ास त़ौर पर बयान की गई और सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم की सीरत व वाक़िआ़त भी ज़िक्र किये गए हैं।

(11)...... आयात से ह़ासिल होने वाले निकात और मा'लूम होने वाली अहम और ज़रूरी बातों को ज़िक्र किया गया है।

दुआ़ है कि **अल्लाह** तआ़ला इस तफ़्सीर को अपनी बारगाह में शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाए और इसे तमाम मुसल्मानों के लिये दीनी और दुन्यवी दोनों ए'तिबार से नफ़्अ् बख़्श बनाए और इसे मुसन्निफ़ व मुआ़विनीन के लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए, आमीन।

www.dawateislami.net

الٓمّٓ

1

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

पारह नम्बर...... 1

سُوْرَةُ الْفَاتِحَة

सूरए फ़ातिह़ा का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

अक्सर उ़लमा के नज़्दीक ''सूरए फ़ातिह़ा'' मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई है। इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''सूरए फ़ातिह़ा'' मदीनए मुनव्वरह में नाज़िल हुई है और एक क़ौल येह है : ''सूरए फ़ातिह़ा'' दो मरतबा नाज़िल हुई, एक मरतबा ''मक्कए मुकर्रमा'' में और दूसरी मरतबा ''मदीनए मुनव्वरह'' में नाज़िल हुई है।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस सूरत में **1** रुकूअ़ और **7** आयतें हैं।

सूरए फ़ातिह़ा के अस्मा और इन की वज्हे तस्मिया

इस सूरत के मुतअ़द्दद नाम हैं और नामों का ज़ियादा होना इस की फ़ज़ीलत और शरफ़ की दलील है, इस के मश्हूर **15** नाम येह हैं :

(1)...... ''सूरए फ़ातिह़ा'' से क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ की जाती है और इसी सूरत से क़ुरआने पाक लिखने की इब्तिदा की जाती है इस लिये इसे ''फ़ातिह़तुल किताब'' या'नी किताब की इब्तिदा करने वाली कहते हैं।

(2)...... इस सूरत की इब्तिदा ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ'' से हुई, इस मुनासबत से इसे ''सूरतुल ह़म्द'' या'नी वोह सूरत जिस में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बयान की गई है, कहते हैं।

1 ......خازن، تفسیر سورۃ الفاتحۃ، ۱۲/۱.

www.dawateislami.net

(3,4)...... ‘‘सूरए फ़ातिह़ा’’ कुरआने पाक की अस्ल है, इस बिना पर इसे ‘‘उम्मुल कुरआन’’ और ‘‘उम्मुल किताब’’ कहते हैं ।

(5)...... येह सूरत नमाज़ की हर रक्अ़त में पढ़ी जाती है या येह सूरत दो मरतबा नाज़िल हुई है इस वज्ह से इसे ‘‘अस्सब्उ़ल मसानी’’ या'नी बार बार पढ़ी जाने वाली या एक से ज़ाइद मरतबा नाज़िल होने वाली सात आयतें, कहा जाता है ।

(6 ता 8)...... दीन के बुन्यादी उमूर का जामेअ़ होने की वज्ह से सूरए फ़ातिह़ा को ‘‘सूरतुल कन्ज़, सूरतुल वाफ़ियह’’ और ‘‘सूरतुल काफ़ियह’’ कहते हैं ।

(9,10)...... ‘‘शिफ़ा’’ का बाइस होने की वज्ह से इसे ‘‘सूरतुश्शिफ़ा’’ और ‘‘सूरतुश्शाफ़ियह’’ कहते हैं ।

(11 ता 15)...... ‘‘दुआ़’’ पर मुश्तमिल होने की वज्ह से इसे ‘‘सूरतुद्दुआ़, सूरतु ता'लीमिल मस्अलह, सूरतुस्सुवाल, सूरतुल मुनाजात’’ और ‘‘सूरतुत्तफ़्वीज़’’ भी कहा जाता है ।(1)

सूरए फ़ातिह़ा के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में इस सूरत के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से **4** फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू सई़द बिन मुअ़ल्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं नमाज़ पढ़ रहा था तो मुझे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बुलाया लेकिन मैं ने जवाब न दिया । (जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुवा तो) मैं ने अ़र्ज़ की : ‘‘**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं नमाज़ पढ़ रहा था ।’’ ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘क्या **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया : ‘‘اِسْتَجِیْبُوْا لِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ’’ **अल्लाह** और उस के रसूल की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाओ जब वोह तुम्हें बुलाएं ।’’(2) फिर इर्शाद फ़रमाया : ‘‘क्या मैं तुम्हें तुम्हारे मस्जिद से निकलने से पहले कुरआने करीम की सब से अ़ज़ीम सूरत न सिखाऊं ?’’ फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ लिया, जब हम ने निकलने का इरादा किया तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप ने फ़रमाया था कि मैं ज़रूर तुम्हें कुरआने मजीद की सब से अ़ज़मत वाली सूरत सिखाऊंगा । इर्शाद फ़रमाया : ‘‘वोह सूरत اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ’’ है, येही ‘‘सब्ए़ मसानी’’ और ‘‘कुरआने अ़ज़ीम’’ है जो मुझे अ़ता फ़रमाई गई ।’’(3)

---

1 ......خازن، تفسیرسورۃ الفاتحۃ، ۱/۱۲، مدارک، سورۃ فاتحۃ الکتاب، ص۱۰، روح المعانی، سورۃ فاتحۃ الکتاب، ۱/۵۱، ملتقطاً.

2 ......انفال: ۲٤.

3 ......بخاری، کتاب فضائل القراٰن، باب فاتحۃ الکتاب، ۳/٤۰٤، الحدیث:۵۰۰٦.

www.dawateislami.net

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक फ़िरिश्ता आस्मान से नाज़िल हुवा और उस ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश कर के अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप को उन दो नूरों की बिशारत हो जो आप के इ़लावा और किसी नबी को अ़त़ा नहीं किये गए और वोह दो नूर येह हैं : (1) "सूरए फ़ातिह़ा" (2) "सूरए बक़रह" की आख़िरी आयतें ।[1]

(3)...... ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने तौरात और इन्जील में "उम्मुल क़ुरआन" की मिस्ल कोई सूरत नाज़िल नहीं फ़रमाई ।"[2]

(4)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सूरए फ़ातिह़ा हर मरज़ के लिये शिफ़ा है ।"[3]

सूरए फ़ातिह़ा के मज़ामीन

इस सूरत में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

(1)...... इस सूरत में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना का बयान है ।

(2)...... **अल्लाह** तआ़ला के रब होने, उस के रह़मान और रह़ीम होने, नीज़ मख़्लूक़ के मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत के दिन उन के आ'माल की जज़ा मिलने का ज़िक्र है ।

(3)...... सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के इ़बादत का मुस्तह़िक़ होने और उस के ह़क़ीक़ी मददगार होने का तज़्किरा है ।

(4)...... दुआ़ के आदाब का बयान और **अल्लाह** तआ़ला से दीने ह़क़ और सिरात़े मुस्तक़ीम की त़रफ़ हिदायत मिलने, नेक लोगों के ह़ाल से मुवाफ़क़त और गुमराहों से इज्तिनाब की दुआ़ मांगने की ता'लीम है ।

येह चन्द वोह चीज़ें बयान की हैं जिन का "सूरए फ़ातिह़ा" में तफ़्सीली ज़िक्र है अलबत्ता इज्माली त़ौर पर इस सूरत में बे शुमार चीज़ों का बयान है । अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "अगर मैं चाहूं तो "सूरए

1 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فضل الفاتحۃ...الخ، ص٤٠٤، الحدیث: ٢٥٤(٨٠٦).
2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ (الحجر)، ٥/٨٧، الحدیث: ٣١٣٦.
3 ......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان...الخ، فصل فی فضائل السور والآیات، ٢/٤٥٠، الحدیث: ٢٣٧٠.

www.dawateislami.net

फ़ातिह़ा'' की तफ़्सीर से सत्तर ऊंट भरवा दूं।''(1)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''एक ऊंट कै (या'नी कितने ही) मन बोझ उठाता है और हर मन में कै (या'नी कितने) हज़ार अज्ज़ा (होते हैं, इन का ह़िसाब लगाया जाए तो येह) ह़िसाब से तक़रीबन पच्चीस लाख जुज़ बनते हैं, येह फ़क़त़ ''सूरए फ़ातिह़ा'' की तफ़्सीर है।''(2)

सूरए फ़ातिह़ा से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल

(1)...... नमाज़ में ''सूरए फ़ातिह़ा'' पढ़ना वाजिब है, इमाम और तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला अपनी ज़बान से ''सूरए फ़ातिह़ा'' पढ़ेगा जब कि मुक़्तदी इमाम के पीछे ख़ामोश रहेगा और जहरी नमाज़ में उस की क़िराअत भी सुनेगा और उस का येही अ़मल पढ़ने के हुक्म में है। **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने पाक में तिलावत के वक़्त मुक़्तदी को ख़ामोश रहने और क़िराअत सुनने का हुक्म देते हुए इर्शाद फ़रमाया :

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रह़्म किया जाए।

और ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब इमाम क़िराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो।''(4)

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स का कोई इमाम हो तो इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है।''(5)

इन के इ़लावा और बहुत सी अह़ादीस में इमाम के पीछे मुक़्तदी के ख़ामोश रहने के बारे में बयान किया गया है।

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मुनाज़रा

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरह के चन्द उ़लमा

1...... الاتقان فی علوم القرآن، النوع الثامن والسبعون...الخ، ٥٦٣/٢.
2...... फ़तावा रज़विय्या, 22/619
3...... اعراف:٢٠٤.
4...... ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب اذا قرء الامام فانصتوا، ٤٦٢/١، الحديث: ٨٤٧.
5...... ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب اذا قرء الامام فانصتوا، ٤٦٤/١، الحديث: ٨٥٠.

www.dawateislami.net

इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास इस ग़रज़ से आए कि वोह इमाम के पीछे मुक़्तदी की क़िराअत करने के मुआ़मले में उन से मुनाज़रा करें। इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से फ़रमाया : सब से मुनाज़रा करना मेरे लिये मुम्किन नहीं, आप ऐसा करें कि मुनाज़रे का मुआ़मला उस के सिपुर्द कर दें जो आप सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला है ताकि मैं उस के साथ मुनाज़रा करूं। उन्हों ने एक आ़लिम की त़रफ़ इशारा किया तो इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : क्या येह तुम सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला है ? उन्हों ने जवाब दिया : "हां।" इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : क्या मेरा इस के साथ मुनाज़रा करना तुम सब के साथ मुनाज़रा करने की त़रह़ है ? उन्हों ने कहा : "हां।" इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इस के ख़िलाफ़ जो दलील क़ाइम होगी वोह गोया कि तुम्हारे ख़िलाफ़ क़ाइम होगी ? उन्हों ने जवाब दिया : "हां।" इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अगर मैं इस के साथ मुनाज़रा करूं और दलील में इस पर ग़ालिब आ जाऊं तो वोह दलील तुम पर भी लाज़िम होगी ? उन्हों ने कहा : "हां।" इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने दरयाफ़्त किया : वोह दलील तुम पर कैसे लाज़िम होगी ? उन्हों ने जवाब दिया : "इस लिये कि हम इसे अपना इमाम बनाने पर राज़ी हैं तो इस की बात हमारी बात होगी।" इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : हम भी तो येही कहते हैं कि जब हम ने एक शख़्स को नमाज़ में अपना इमाम मान लिया तो उस का क़िराअत करना हमारा क़िराअत करना है और वोह हमारी त़रफ़ से नाइब है। इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की येह बात सुन कर सब ने इक़रार कर लिया (कि इमाम के पीछे मुक़्तदी क़िराअत नहीं करेगा)।(1)

(2)...... "नमाज़े जनाज़ा" में ख़ास दुआ़ याद न हो तो दुआ़ की निय्यत से "सूरए फ़ातिह़ा" पढ़ना जाइज़ है जब कि क़िराअत की निय्यत से पढ़ना जाइज़ नहीं।(2)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

1 ......تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآیة:٣٠، ١/٤١٢.

2 ......عالمگیری، کتاب الصلاة، الباب الحادی والعشرون، الفصل الخامس، ١/١٦٤.

www.dawateislami.net

﴿**بِسۡمِ اللّٰهِ : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ ।**﴾ अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कुरआने मजीद की इब्तिदा "बिस्मिल्लाह" से इस लिये की गई ताकि **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे इस की पैरवी करते हुए हर अच्छे काम की इब्तिदा "बिस्मिल्लाह" से करें।[(1)] और ह़दीसे पाक में भी (अच्छे और) अहम काम की इब्तिदा "बिस्मिल्लाह" से करने की तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस अहम काम की इब्तिदा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" से न की गई तो वोह अधूरा रह जाता है।"[(2)]

लिहाज़ा तमाम मुसल्मानों को चाहिये कि वोह हर नेक और जाइज़ काम की इब्तिदा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" से करें, इस की बहुत बरकत है।[(3)]

﴿**اَلرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ : जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला है ।**﴾ इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी ज़ात को रह़मान और रह़ीम फ़रमाया तो येह उस की शान से बईद है कि वोह रह़म न फ़रमाए। मरवी है कि एक साइल ने बुलन्द दरवाज़े के पास खड़े हो कर कुछ मांगा तो उसे थोड़ा सा दे दिया गया, दूसरे दिन वोह एक कुल्हाड़ा ले कर आया और दरवाज़े को तोड़ना शुरूअ़ कर दिया। उस से कहा गया कि तू ऐसा क्यूं कर रहा है ? उस ने जवाब दिया : तू दरवाज़े को अपनी अ़ता के लाइक़ कर या अपनी अ़ता को दरवाज़े के लाइक़ बना। ऐ हमारे **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, रह़मत के समुन्दरों को तेरी रह़मत से वोह निस्बत है जो एक छोटे से ज़र्रे को तेरे अ़र्श से निस्बत है और तू ने अपनी किताब की इब्तिदा में अपने बन्दों पर अपनी रह़मत की सिफ़त बयान की इस लिये हमें अपनी रह़मत और फ़ज़्ल से मह़रूम न रखना।[(4)]

"بِسۡمِ اللّٰهِ" से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई मसाइल

उ़लमाए किराम ने "بِسۡمِ اللّٰهِ" से मुतअ़ल्लिक़ बहुत से शरई मसाइल बयान किये हैं, उन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... जो "بِسۡمِ اللّٰهِ" हर सूरत के शुरूअ़ में लिखी हुई है, येह पूरी आयत है और जो "सूरए

1 ......صاوی، الفاتحة، ١/١٥.

2 ......كنزالعمال، كتاب الاذكار، الباب السابع فی تلاوة القراٰن وفضائله، الفصل الثانی...الخ، ١/٢٧٧، الجزء الاول، الحدیث:٢٤٨٨.

3 ...... बिस्मिल्लाह शरीफ़ के मजीद फ़ज़ाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तालीफ़ "फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

4 ......تفسیر کبیر، الباب الحادی عشرفی بعض النکت المستخرجة...الخ، ١/١٥٣.

www.dawateislami.net

नम्ल" की आयत नम्बर 30 में है वोह उस आयत का एक हिस्सा है।

(2)...... "बिस्मिल्लाह" हर सूरत के शुरूअ़ की आयत नहीं है बल्कि पूरे कुरआन की एक आयत है जिसे हर सूरत के शुरूअ़ में लिख दिया गया ताकि दो सूरतों के दरमियान फ़ासिला हो जाए, इसी लिये सूरत के ऊपर इम्तियाज़ी शान में "بِسۡمِ اللّٰہِ" लिखी जाती है आयात की तरह मिला कर नहीं लिखते और इमाम जहरी नमाज़ों में "بِسۡمِ اللّٰہِ" आवाज़ से नहीं पढ़ता, नीज़ हज़रते जिब्रील عَلَيۡهِ السَّلَام जो पहली वही लाए उस में "بِسۡمِ اللّٰہِ" न थी।

(3)...... तरावीह पढ़ाने वाले को चाहिये कि वोह किसी एक सूरत के शुरूअ़ में "بِسۡمِ اللّٰہِ" आवाज़ से पढ़े ताकि एक आयत रह न जाए।

(4)...... तिलावत शुरूअ़ करने से पहले "اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم" पढ़ना सुन्नत है, लेकिन अगर शागिर्द उस्ताद से कुरआने मजीद पढ़ रहा हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं।

(5)...... सूरत की इब्तिदा में "بِسۡمِ اللّٰہِ" पढ़ना सुन्नत है वरना मुस्तहब है।

(6)...... अगर "सूरए तौबह" से तिलावत शुरूअ़ की जाए तो "اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ" और "بِسۡمِ اللّٰہِ" दोनों को पढ़ा जाए और अगर तिलावत के दौरान सूरए तौबह आ जाए तो "بِسۡمِ اللّٰہِ" पढ़ने की हाजत नहीं।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है।

﴿اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ **: सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं।**﴾ या'नी हर तरह की हम्द और ता'रीफ़ का मुस्तहिक़ **अल्लाह** तआ़ला है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला कमाल की तमाम सिफ़ात का जामेअ़ है।

हम्द और शुक्र की ता'रीफ़

हम्द का मा'ना है किसी की इख़्तियारी ख़ूबियों की बिना पर उस की ता'रीफ़ करना और शुक्र की ता'रीफ़ येह है कि किसी के एहसान के मुक़ाबले में ज़बान, दिल या आ'ज़ा से उस की ता'ज़ीम करना और हम चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द आ़म तौर पर उस के एहसानात

www.dawateislami.net

के पेशे नज़र करते हैं इस लिये हमारी येह ह़म्द "शुक्र" भी होती है।

अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना करने के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना करने के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 3 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला बन्दे की इस बात से ख़ुश होता है कि वोह कुछ खाए तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करे और कुछ पिये तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करे।"(1)

(2)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ" है और सब से अफ़्ज़ल दुआ़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" है।"(2)

(3)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दे पर कोई ने'मत नाज़िल फ़रमाता है और वोह (ने'मत मिलने पर) "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहता है तो येह ह़म्द **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक उस दी गई ने'मत से ज़ियादा अफ़्ज़ल है।"(3)

ह़म्द से मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म

ख़ुत़्बे में ह़म्द "वाजिब", खाने के बा'द "मुस्तह़ब", छींक आने के बा'द "सुन्नत", ह़राम काम के बा'द "ह़राम" और बा'ज़ सूरतों में "कुफ़्र" है।

﴿لِلّٰہِ : **अल्लाह के लिये**।﴾ "**अल्लाह**" उस ज़ाते आ'ला का अ़ज़मत वाला नाम है जो तमाम कमाल वाली सिफ़तों की जामेअ़ है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस लफ़्ज़ के मा'ना भी बयान किये हैं जैसे इस का **एक मा'ना** है : "इबादत का मुस्तह़िक़" **दूसरा मा'ना** है : "वोह ज़ात

1 ......مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب استحباب حمد اللّٰہ...الخ، ص١٤٦٣، الحدیث: ٨٩(٢٧٣٤).
2 ......ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الحامدین، ٢٤٨/٤، الحدیث: ٣٨٠٠.
3 ......ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الحامدین، ٢٥٠/٤، الحدیث: ٣٨٠٥.

www.dawateislami.net

जिस की मा'रिफ़त में अ़क़्लें हैरान हैं" **तीसरा मा'ना** है : "वोह ज़ात जिस की बारगाह में सुकून ह़ासिल होता है" और **चौथा मा'ना** है : "वोह ज़ात कि मुसीबत के वक़्त जिस की पनाह तलाश की जाए।"(1)

﴿رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ : **जो सारे जहान वालों का मालिक है।**﴾ लफ़्ज़ "رَبِّ" के कई मा'ना हैं : जैसे सय्यिद, मालिक, मा'बूद, साबित, मुस्लेह़ और ब तदरीज मर्तबए कमाल तक पहुंचाने वाला। और **अल्लाह** तआ़ला के इलावा हर मौजूद चीज़ को आ़लम कहते हैं और इस में तमाम मख़्लूक़ात दाख़िल हैं।(2)

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत मेह्रबान रह़मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बहुत मेह्रबान रह़मत वाला।

﴿اَلرَّحْمٰنِ : **बहुत मेह्रबान।**﴾ रह़मान और रह़ीम **अल्लाह** तआ़ला के दो सिफ़ाती नाम हैं, रह़मान का मा'ना है : ने'मतें अ़ता करने वाली वोह ज़ात जो बहुत ज़ियादा रह़मत फ़रमाए और रह़ीम का मा'ना है : बहुत रह़मत फ़रमाने वाला।

याद रहे कि ह़क़ीक़ी तौर पर ने'मत अ़ता फ़रमाने वाली ज़ात **अल्लाह** तआ़ला की है कि वोही तन्हा ज़ात है जो अपनी रह़मत का बदला त़लब नहीं फ़रमाती, हर छोटी, बड़ी, ज़ाहिरी, बात़िनी, जिस्मानी, रूह़ानी, दुन्यवी और उख़्रवी ने'मत **अल्लाह** तआ़ला ही अ़ता फ़रमाता है और दुन्या में जिस शख़्स तक जो ने'मत पहुंचती है वोह **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत ही से है क्यूं कि किसी के दिल में रह़्म का जज़्बा पैदा करना, रह़्म करने पर क़ुदरत देना, ने'मत को वुजूद में लाना, दूसरे का उस ने'मत से फ़ाएदा उठाना और फ़ाएदा उठाने के लिये आ'ज़ा की सलामती अ़ता करना, येह सब **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ही है।

अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये

अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरत़ुबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने "رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" के बा'द अपने दो औसाफ़ रह़मान और रह़ीम बयान फ़रमाए, इस

1 ......بیضاوی، الفاتحة، ۱/۳۲.
2 ......صاوی، الفاتحة، تحت الآیة: ۱، ۱/۱٦، خازن، الفاتحة، تحت الآیة: ۱، ۱/۱۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

की वज्ह येह है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि वोह رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ है, तो इस से (सुनने और पढ़ने वाले के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत की वज्ह से उस का) ख़ौफ़ पैदा हुवा, तो इस के साथ ही **अल्लाह** तआ़ला के दो औसाफ़ रह़मान और रह़ीम ज़िक्र कर दिये गए जिन के ज़िम्न में (**अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करने की) तरग़ीब है यूं तरहीब और तरग़ीब दोनों का बयान हो गया ताकि बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करने की त़रफ़ अच्छी त़रह़ राग़िब हो और उस की ना फ़रमानी करने से रुकने की ख़ूब कोशिश करे।[1]

क़ुरआने मजीद में और मक़ामात पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत और उस के अ़ज़ाब दोनों को वाज़ेह़ त़ौर पर एक साथ ज़िक्र किया गया है, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

نَبِّئْ عِبَادِیْۤ اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۴۹﴾ وَ اَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِیْمُ [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मेरे बन्दों को ख़बर दो कि बेशक मैं ही बख़्शने वाला मेहरबान हूं। और बेशक मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है।

और इर्शाद फ़रमाया :

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِیْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِی الطَّوْلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَیْهِ الْمَصِیْرُ [3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त अ़ज़ाब देने वाला, बड़े इन्आ़म (अ़त़ा फ़रमाने) वाला है। उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी की त़रफ़ फिरना है।

नीज़ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर मोमिन जान लेता कि **अल्लाह** तआ़ला के पास कितना अ़ज़ाब है तो कोई भी उस की जन्नत की उम्मीद न रखता और अगर काफ़िर जान लेता कि **अल्लाह** तआ़ला के पास कितनी रह़मत है तो उस की जन्नत से कोई ना उम्मीद न होता।"[4]

लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान रहे और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत की वुस्अ़त देख कर गुनाहों पर बेबाक न हो और न ही **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब की शिद्दत देख कर उस की रह़मत से मायूस हो।

1 ......قرطبی، الفاتحة، تحت الآیة: ۲، ۱/۱۲۹، الجزء الاول.
2 ......حجر: ۴۹، ۵۰.
3 ......مومن: ۳.
4 ......مسلم، کتاب التوبة، باب فی سعة رحمة الله... الخ، ص۱۴۷۳، الحدیث: ۲۳(۲۷۵۵).

www.dawateislami.net

किसी को रह़मान और रह़ीम कहने के बारे में शरई ह़ुक्म

अल्लाह तआ़ला के इ़लावा किसी और को रह़मान कहना जाइज़ नहीं जब कि रह़ीम कहा जा सकता है जैसे क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी रह़ीम फ़रमाया है, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारे पास तुम में से वोह अ़ज़ीम रसूल तशरीफ़ ले आए जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना बहुत भारी गुज़रता है, वोह तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसल्मानों पर बहुत मेह्रबान, रह़मत फ़रमाने वाले हैं।

مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ﴿۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रोजे़ जज़ा का मालिक।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जज़ा के दिन का मालिक।

﴿مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ : **जज़ा के दिन का मालिक।**﴾ जज़ा के दिन से मुराद क़ियामत का दिन है कि उस दिन नेक आ'माल करने वाले मुसल्मानों को सवाब मिलेगा और गुनाहगारों और काफ़िरों को सज़ा मिलेगी जब कि "मालिक" उसे कहते हैं जो अपनी मिल्किय्यत में मौजूद चीज़ों में जैसे चाहे तसर्रुफ़ करे। **अल्लाह** तआ़ला अगर्चे दुन्या व आख़िरत दोनों का मालिक है लेकिन यहां "क़ियामत" के दिन को बत़ौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र किया ताकि उस दिन की अहम्मिय्यत दिल में बैठे। नीज़ दुन्या के मुक़ाबले में आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला के मालिक होने का ज़ुहूर ज़ियादा होगा क्यूं कि उस दिन किसी के पास ज़ाहिरी सल्त़नत भी न होगी जो **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्या में लोगों को अ़त़ा फ़रमाई थी, इस लिये यहां ख़ास त़ौर पर क़ियामत के दिन की मिल्किय्यत का ज़िक्र किया गया।

---

1 ......توبہ: ۱۲۸.

www.dawateislami.net

اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُؕ(۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।

﴿اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ﴾ **: हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।** इस से पहली आयात में बयान हुवा कि हर त़रह़ की ह़म्दो सना का ह़क़ीक़ी मुस्तह़िक़ **अल्लाह** तआ़ला है जो कि सब जहानों का पालने वाला, बहुत मेह़रबान और रह़्म फ़रमाने वाला है और इस आयत से बन्दों को सिखाया जा रहा है कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अपनी बन्दगी का इज़्हार यूं करो कि ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं क्यूं कि इबादत का मुस्तह़िक़ सिर्फ़ तू ही है और तेरे इलावा और कोई इस लाइक़ ही नहीं कि उस की इबादत की जा सके और ह़क़ीक़ी मदद करने वाला भी तू ही है। तेरी इजाज़त व मरज़ी के बिग़ैर कोई किसी की किसी क़िस्म की ज़ाहिरी, बात़िनी, जिस्मानी रूह़ानी, छोटी बड़ी कोई मदद नहीं कर सकता।

इबादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़

इबादत का मफ़्हूम बहुत वाज़ेह़ है, समझने के लिये इतना ही काफ़ी है कि किसी को इबादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना "इबादत" कहलाता है और अगर इबादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह़्ज़ "ता'ज़ीम" होगी इबादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इबादत है लेकिन येही नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर खड़ा होना उस्ताद, पीर या मां बाप के लिये हो तो मह़्ज़ ता'ज़ीम है इबादत नहीं और दोनों में फ़र्क़ वोही है जो अभी बयान किया गया है।

आयत "اِیَّاكَ نَعْبُدُ" से मा'लूम होने वाली अहम बातें

आयत में जम्अ़ के सीग़े हैं जैसे हम तेरी ही इबादत करते हैं इस से मा'लूम हुवा कि नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा करनी चाहिये और दूसरों को भी इबादत करने में शरीक करने का फ़ाएदा येह है कि गुनाहगारों की इबादतें **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह के मह़बूब और मक़्बूल बन्दों की इबादतों के साथ जम्अ़ हो कर क़बूलिय्यत का दरजा पा लेती हैं। नीज़ येह

www.dawateislami.net

भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अपनी ह़ाजत अ़र्ज़ करने से पहले अपनी बन्दगी का इज़्हार करना चाहिये। इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : इबादत को मदद त़लब करने से पहले ज़िक्र किया गया क्यूं कि ह़ाजत त़लब करने से पहले **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करना क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब है।[1]

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करने की बरकत

हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में किसी का वसीला पेश कर के अपनी ह़ाजात के लिये दुआ़ किया करे ताकि उस वसीले के सदक़े दुआ़ जल्द मक़्बूल हो जाए और **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करना क़ुरआनो ह़दीस से साबित है, चुनान्चे वसीले के बारे में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो।

और "सुनने इब्ने माजह" में है कि एक नाबीना सह़ाबी बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर दुआ़ के त़ालिब हुए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस त़रह़ दुआ़ मांगने का हुक्म दिया :

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْکَ بِمُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ یَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ قَدْ تَوَجَّهْتُ بِکَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰی اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ" ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ नबिय्ये रह़मत ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुतवज्जेह होता हूं ऐ मुह़म्मद ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ अपनी इस ह़ाजत में तवज्जोह की ताकि मेरी ह़ाजत पूरी कर दी जाए, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, पस तू मेरे लिये हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।[3]

ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़ "या मुह़म्मद" से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी वज़ाह़त

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "उ़लमा तसरीह़ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करनी ह़राम है। और (येह

1 ......مدارك، الفاتحة، تحت الآية: ٤، ص١٤.　2 ...... مائده: ٣٥.
3 ......ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ما جاء في صلاة الحاجة، ١٥٧/٢، الحديث: ١٣٨٥.

www.dawateislami.net

बात) वाक़ेई महल्ले इन्साफ़ है, जिसे उस का मालिको मौला तबारक व तआ़ला नाम ले कर न पुकारे (तो) ग़ुलाम की क्या मजाल कि (वोह) राहे अदब से तजावुज़ करे, बल्कि इमाम ज़ैनुद्दीन मराग़ी वग़ैरा मुहक़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : अगर येह लफ़्ज़ किसी दुआ़ में वारिद हो जो ख़ुद नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाई (हो) जैसे दुआ़ए ''يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیْ'' । ताहम उस की जगह **या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह** (कहना) चाहिये, हालां कि अल्फ़ाज़े दुआ़ में ह़त्तल वुस्अ़ तग़्यीर नहीं की जाती । येह मस्अलए मुहिम्मा (या'नी अहम तरीन मस्अला) जिस से अक्सर अहले ज़माना ग़ाफ़िल हैं वाजिबुल हिफ़्ज़ है ।''(1)

﴾وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ﴿ : **और तुझ ही से मदद चाहते हैं ।**﴾ इस आयत में बयान किया गया कि मदद त़लब करना ख़्वाह वासित़े के साथ हो या वासित़े के बिग़ैर हो हर त़रह़ से **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है और **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात ही ऐसी है जिस से ह़क़ीक़ी त़ौर पर मदद त़लब की जाए । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़क़ीक़ी मदद त़लब करने से मुराद येह है कि जिस से मदद त़लब की जाए उसे बिज़्ज़ात क़ादिर, मुस्तक़िल मालिक और ग़नी बे नियाज़ जाना जाए कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा के बिग़ैर ख़ुद अपनी ज़ात से उस काम (या'नी मदद करने) की क़ुदरत रखता है । **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और के बारे में येह अ़क़ीदा रखना हर मुसल्मान के नज़्दीक ''शिर्क'' है और कोई मुसल्मान **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और के बारे में ऐसा ''अ़क़ीदा'' नहीं रखता और **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दों के बारे में मुसल्मान येह अ़क़ीदा रखता है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह तक पहुंचने के लिये वासित़ा और ह़ाजात पूरी होने का वसीला और ज़रीआ़ हैं तो जिस त़रह़ ह़क़ीक़ी वुजूद कि किसी के पैदा किये बिग़ैर ख़ुद अपनी ज़ात से मौजूद होना **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है, इस के बा वुजूद किसी को मौजूद कहना उस वक़्त तक शिर्क नहीं जब तक वोही ह़क़ीक़ी वुजूद मुराद न लिया जाए, यूंही ह़क़ीक़ी इ़ल्म कि किसी की अ़त़ा के बिग़ैर ख़ुद अपनी ज़ात से हो और ह़क़ीक़ी ता'लीम कि किसी चीज़ की मोह़ताजी के बिग़ैर अज़ ख़ुद किसी को सिखाना **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है, इस के बा वुजूद दूसरे को आ़लिम कहना या उस से इ़ल्म त़लब करना उस वक़्त तक शिर्क नहीं हो सकता जब तक वोही अस्ली मा'ना मक़्सूद न हों तो इसी त़रह़ किसी से मदद त़लब करने का मुआ़मला है कि इस का ह़क़ीक़ी मा'ना **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है और वसीला व वासित़ा के मा'ना में **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा के लिये साबित है और ह़क़ है बल्कि येह मा'ना तो ग़ैरे ख़ुदा ही

1...... फ़तावा रज़विय्या, 30/157, 158

www.dawateislami.net

के लिये ख़ास हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला वसीला और वासित़ा बनने से पाक है, उस से ऊपर कौन है कि येह उस की त़रफ़ वसीला होगा और उस के सिवा ह़क़ीक़ी ह़ाजत रवा कौन है कि येह बीच में वासित़ा बनेगा।'' बद मज़्हबों की त़रफ़ से होने वाला एक ए'तिराज़ ज़िक्र कर के उस के जवाब में फ़रमाते हैं : ''येह नहीं हो सकता कि ख़ुदा से तवस्सुल कर के उसे किसी के यहां वसीला व ज़रीआ़ बनाया जाए, इस वसीला बनने को हम औलियाए किराम से मांगते हैं कि वोह दरबारे इलाही में हमारा वसीला, ज़रीआ़ और क़ज़ाए ह़ाजात का वासित़ा हो जाएं, उस बे वुक़ूफ़ी के सुवाल का जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयते करीमा में दिया है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म या'नी गुनाह कर के तेरे पास ह़ाज़िर हों और **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और मुआ़फ़ी मांगे उन के लिये रसूल, तो बेशक **अल्लाह** को तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान पाएंगे।

क्या **अल्लाह** तआ़ला अपने आप नहीं बख़्श सकता था फिर क्यूं येह फ़रमाया कि ऐ नबी ! तेरे पास ह़ाज़िर हों और तू **अल्लाह** से उन की बख़्शिश चाहे तो येह दौलतो ने'मत पाएं। येही हमारा मत़लब है जो क़ुरआन की आयत साफ़ फ़रमा रही है।''(2)

ज़ेरे तफ़्सीर आयते करीमा के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 21वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का रिसाला ''بَرَكَاتُ الْاِمْدَادِ لِاَهْلِ الْاِسْتِمْدَادِ (मदद त़लब करने वालों के लिये इमदाद की बरकतें)'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

अल्लाह तआ़ला की अ़त़ा से बन्दों का मदद करना अल्लाह तआ़ला ही का मदद करना होता है

याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों को दूसरों की मदद करने का इख़्तियार देता है और उस इख़्तियार की बिना पर उन बन्दों का मदद करना **अल्लाह** तआ़ला ही का मदद करना होता है, जैसे ग़ज़्वए बद्र में फ़िरिश्तों ने आ कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की मदद की, लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे।

1 ......النساء: ٦٤. 2 ...... फ़तावा रज़विय्या, 21/304, 305, मुलख़्ख़सन 3 ......ال عمران: ١٢٣.

www.dawateislami.net

यहां फ़िरिश्तों की मदद को **अल्लाह** तआला की मदद कहा गया, इस की वज्ह येही है कि फ़िरिश्तों को मदद करने का इख़्तियार **अल्लाह** तआला के देने से है तो ह़क़ीक़तन येह **अल्लाह** तआला ही की मदद हुई। येही मुआमला अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیھم का है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से मदद करते हैं और ह़क़ीक़तन वोह मदद **अल्लाह** तआला की होती है, जैसे ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने वज़ीर ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से तख़्त लाने का फ़रमाया और उन्हों ने पलक झपकने में तख़्त ह़ाज़िर कर दिया। इस पर उन्हों ने फ़रमाया : "هٰذَا مِنۡ فَضۡلِ رَبِّیۡ"
तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है।[1] और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका में मदद करने की तो इतनी मिसालें मौजूद हैं कि अगर सब जम्अ़ की जाएं तो एक ज़ख़ीम किताब मुरत्तब हो सकती है, उन में से चन्द मिसालें येह हैं :

(1)...... सह़ीह़ बुख़ारी में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने थोड़े से खाने से पूरे लश्कर को सेर किया।[2]

(2)...... आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध के एक पियाले से सत्तर सह़ाबा को सैराब कर दिया।[3]

(3)...... उंग्लियों से पानी के चश्मे जारी कर के चौदह सो (1400) या इस से भी ज़ाइद अफ़राद को सैराब कर दिया।[4]

(4)...... लुआ़बे दहन से बहुत से लोगों को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई।[5]

और येह तमाम मददें चूंकि **अल्लाह** तआला की अ़त़ा कर्दा त़ाक़त से थीं लिहाज़ा सब **अल्लाह** तआला की ही **मददें** हैं। इस बारे में मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के रिसाले "اَلْاَمْنُ وَالْعُلٰى لِنَاعِتِی الْمُصْطَفٰى بِدَافِعِ الْبَلَاءِ (मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दाफ़िउ़ल बला या'नी बलाएं दूर करने वाला कहने वालों के लिये इन्आ़मात)" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾

---

1 ......نمل: ٤٠.

2 ......بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق... الخ، ٣/٥١-٥٢، الحدیث: ٤١٠١، الخصائص الکبری، باب معجزاته صلی الله علیه وسلم فی تکثیر الطعام غیر ما تقدّم، ٢/٨٥.

3 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی... الخ، ٤/٢٣٤، الحدیث: ٦٤٥٢، عمدۃ القاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی... الخ، ١٥/٥٣٦.

4 ......بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیة، ٣/٦٩، الحدیث: ٤١٥٢-٤١٥٣.

5 ......الخصائص الکبری، باب آیاته صلی الله علیه وسلم فی ابراء المرضی... الخ، ٢/١١٥-١١٨.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम को सीधा रास्ता चला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हमें सीधे रास्ते पर चला।

﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ : **हमें सीधे रास्ते पर चला।**﴾ **अल्लाह** तआला की ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त के बा'द उस की इबादत और ह़क़ीक़ी मददगार होने का ज़िक्र किया गया और अब यहां से एक दुआ सिखाई जा रही है कि बन्दा यूं अ़र्ज़ करे : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, तू ने अपनी तौफ़ीक़ से हमें सीधा रास्ता दिखा दिया अब हमारी उस रास्ते की त़रफ़ हिदायत में इज़ाफ़ा फ़रमा और हमें इस पर साबित क़दम रख।

सिराते़ मुस्तक़ीम का मा'ना

सिराते़ मुस्तक़ीम से मुराद ''अ़क़ाइद का सीधा रास्ता'' है, जिस पर तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام चले या इस से मुराद ''इस्लाम का सीधा रास्ता'' है जिस पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ, बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم चले जैसा कि अगली आयत में मौजूद भी है और येह रास्ता **अहले सुन्नत** का है कि आज तक औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم सिर्फ़ इसी मस्लके अहले सुन्नत में गुज़रे हैं और **अल्लाह** तआला ने इन्ही के रास्ते पर चलने और इन्ही के साथ होने का फ़रमाया है। फ़रमाने बारी तआला है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।

और ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक मेरी उम्मत कभी गुमराही पर जम्अ़ नहीं होगी, और जब तुम (लोगों में) इख़्तिलाफ़ देखो तो तुम पर लाज़िम है कि सवादे आ'ज़म (या'नी मुसल्मानों के बड़े गुरौह) के साथ हो जाओ।''(2)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बनी इसराईल 72 फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो गए थे और

1 ......التوبة: ۱۱۹.

2 ......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب السواد الاعظم، ۳۲۷/۴، الحديث: ۳۹۵۰.

www.dawateislami.net

मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो जाएगी, उन में से एक के इलावा सब जहन्नम में जाएंगे।" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, नजात पाने वाला फ़िर्क़ा कौन सा है ? इर्शाद फ़रमाया : "(वोह उस त़रीक़े पर होगा) जिस पर मैं और मेरे सह़ाबा हैं।"[1]

हिदायत ह़ासिल करने के ज़राएअ़

याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला ने हिदायत ह़ासिल करने के बहुत से ज़राएअ़ अ़ता फ़रमाए हैं, उन में से चन्द येह हैं :

(1)...... इन्सान की ज़ाहिरी बात़िनी सलाह़िय्यतें जिन्हें इस्ति'माल कर के वोह हिदायत ह़ासिल कर सकता है।

(2)...... आस्मानों, ज़मीनों में **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो वह़्दानिय्यत पर दलालत करने वाली निशानियां जिन में ग़ौरो फ़िक्र कर के इन्सान हिदायत पा सकता है।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला की नाज़िल कर्दा किताबें, इन में से तौरात, इन्जील और ज़बूर क़ुरआने पाक नाज़िल होने से पहले लोगों के लिये हिदायत का बाइ़स थीं और अब क़ुरआने मजीद लोगों के लिये हिदायत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है।

(4)...... **अल्लाह** तआ़ला के भेजे हुए ख़ास बन्दे अम्बियाए किराम और मुरसलीने इ़ज़ाम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, येह अपनी अपनी क़ौमों के लिये हिदायत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ थे और हमारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत तक आने वाले तमाम लोगों के लिये हिदायत का ज़रीआ़ हैं।

आयत "اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से तीन बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... हर मुसल्मान को **अल्लाह** तआ़ला से सीधे रास्ते पर साबित क़दमी की दुआ़ मांगनी चाहिये क्यूं कि सीधा रास्ता मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचा देता है और टेढ़ा रास्ता मक़्सूद तक नहीं पहुंचाता। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है कि अ़क़्ल वाले इस त़रह़ दुआ़ मांगते हैं :

1 ......ترمذی، کتاب الایمان، باب ما جاء فی افتراق... الخ، ٤/٢٩١-٢٩٢، الحدیث: ٢٦٥٠.

www.dawateislami.net

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! तू ने हमें हिदायत अ़ता फ़रमाई है, इस के बा'द हमारे दिलों को टेढ़ा न कर और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता फ़रमा, बेशक तू बड़ा अ़ता फ़रमाने वाला है।

और ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से येह दुआ़ फ़रमाया करते थे : ''يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِکَ ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।'' तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम आप पर और जो कुछ आप लाए हैं उस पर ईमान रखते हैं तो क्या आप को हमारे बारे में कोई ख़ौफ़ है ? हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! बेशक दिल **अल्लाह** तआ़ला की (शान के लाइक़ उस की) उंग्लियों में से दो उंग्लियों के दरमियान हैं वोह जैसे चाहता है उन्हें फेर देता है।''(2)

(2)...... इबादत करने के बा'द बन्दे को दुआ़ में मश्ग़ूल होना चाहिये।

(3)...... सिर्फ़ अपने लिये दुआ़ नहीं मांगनी चाहिये बल्कि सब मुसल्मानों के लिये दुआ़ मांगनी चाहिये कि इस त़रह़ दुआ़ ज़ियादा क़बूल होती है।

ع٧

صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۬ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ۠ ع (٧)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रास्ता उन का जिन पर तू ने एह़सान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने एह़सान किया न कि उन का रास्ता जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।

﴿صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ : **उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने एह़सान किया।**﴾ येह जुम्ला इस से पहली आयत की तफ़्सीर है कि सिराते़ मुस्तक़ीम से मुराद उन लोगों का रास्ता है जिन पर **अल्लाह** तआ़ला ने एह़सान व इन्आ़म फ़रमाया और जिन लोगों पर **अल्लाह** तआ़ला ने अपना फ़ज़्लो एह़सान फ़रमाया है उन के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

1......ال عمران: ٨.

2......ترمذی، کتاب القدر، باب ما جاء انّ القلوب... الخ، ٤/٥٥، الحدیث: ٢١٤٧.

www.dawateislami.net

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓىِٕكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓىِٕكَ رَفِيْقًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** और रसूल की इत़ाअ़त करे तो वोह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिह़ीन और येह कितने अच्छे साथी हैं।

आयत ''صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से दो बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल रहा हो वोह सिराते़ मुस्तक़ीम में दाख़िल है।

(2)...... इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ''اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ'' के बा'द ''صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ'' को ज़िक्र करना इस बात की दलील है कि मुरीद हिदायत और मुकाशफ़े के मक़ामात तक उसी सूरत पहुंच सकता है जब वोह किसी ऐसे (कामिल) पीर की पैरवी करे जो दुरुस्त रास्ते की त़रफ़ उस की रहनुमाई करे, ग़लति़यों और गुमराहियों की जगहों से उसे बचाए क्यूं कि अक्सर लोगों पर नक़्स ग़ालिब है और उन की अ़क़्लें ह़क़ को समझने, सह़ीह़ और ग़लत़ में इम्तियाज़ करने से क़ासिर हैं तो एक ऐसे कामिल शख़्स का होना ज़रूरी है जिस की नाक़िस शख़्स पैरवी करे यहां तक कि इस कामिल शख़्स की अ़क़्ल के नूर से उस नाक़िस शख़्स की अ़क़्ल भी मज़बूत़ हो जाए तो इस सूरत में वोह सआ़दतों के दरजात और कमालात की बुलन्दियों तक पहुंच सकता है।(2)

﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ﴾ : **न कि उन का रास्ता जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।** जिन पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब हुवा उन से मुराद **यहूदी** और बहके हुओं से मुराद **ईसाई** हैं जैसा कि सुनने तिरमिज़ी, जिल्द 4, सफ़ह़ा 444, ह़दीस नम्बर 2964 में है और इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह भी लिखा है कि जिन पर ग़ज़ब हुवा उन से मुराद **बद अ़मल** हैं और बहके हुओं से मुराद **बद अ़क़ीदा** लोग हैं।(3)

हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह अ़क़ाइद, आ'माल, सीरत, सूरत हर ए'तिबार से यहूदियों, ईसाइयों और तमाम कुफ़्फ़ार से अलग रहे, न उन के त़ौर त़रीक़े अपनाए और न ही

1 ......النساء:٦٩.
2 ......تفسير كبير، الفاتحة، الباب الثالث، ١/١٦٤.
3 ......تفسير كبير، الفاتحة، تحت الآية: ٧، ١/٢٢٢-٢٢٣.

www.dawateislami.net

उन के रस्मो रवाज और फ़ेशन इख़्तियार करे और उन की दोस्तियों और सोहबतों से दूर रहते हुए अपने आप को कुरआनो सुन्नत के सांचे में ढालने में ही अपने लिये दोनों जहान की सआदत तसव्वुर करे।[1]

आयत "وَلَاالضَّآلِّيْنَ" से मुतअ़ल्लिक़ शरई मस्अला

बा'ज़ लोग "وَلَاالضَّآلِّيْنَ" को "وَ لَا الظَّآلِّيْن" पढ़ते हैं, उन का ऐसा करना हराम है। आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ز , ذ, ظ, ض सब हुरूफ़े मुतबाइना, मुतग़ाइरा (या'नी एक दूसरे से जुदा जुदा हुरूफ़) हैं, इन में से किसी को दूसरे से तिलावते कुरआन में क़स्दन बदलना, इस की जगह उसे पढ़ना, नमाज़ में हो ख़्वाह बैरूने नमाज़, हरामे क़त्ई व गुनाहे अ़ज़ीम, इफ़्तिरा अ़लल्लाह व तहरीफ़े किताबे करीम है।[2]

इस मस्अले के बारे में दलाइल के साथ तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये फ़तावा रज़विय्या की छटी जिल्द में मौजूद इन रसाइल का मुतालआ फ़रमाएं : (1) نِعْمَ الزَّادُ لِرَوْمِ الضَّادْ۔ (ضاد की अदाएगी का बेहतरीन त़रीक़ा)। (2) اِلْجَامُ الصَّادْ عَنْ سُنَنِ الضَّادْ۔ (ضاد की अदाएगी के ग़लत़ और सहीह त़रीक़ों का बयान)।

﴿**आमीन**﴾ इस का एक मा'ना है : ऐ **अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, तू क़बूल फ़रमा। दूसरा मा'ना है : ऐ **अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, तू ऐसा ही फ़रमा।

आमीन से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल

(1)...... येह कुरआने मजीद का कलिमा नहीं है।

(2)...... नमाज़ के अन्दर और नमाज़ से बाहर जब भी "सूरए फ़ातिहा" ख़त्म की जाए तो उस के बा'द आमीन कहना सुन्नत है।

(3)...... अहनाफ़ के नज़्दीक नमाज़ में आमीन बुलन्द आवाज़ से नहीं बल्कि आहिस्ता कही जाएगी।

---

❶...... अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक "दा'वते इस्लामी" से वाबस्ता हो जाना बेहद मुफ़ीद है।

❷...... फ़तावा रज़विय्या, 6/305

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ الْبَقَرَة

सूरए बक़रह का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के फ़रमान के मुत़ाबिक़ मदीनए मुनव्वरह में सब से पहले येही ''सूरए बक़रह'' नाज़िल हुई। (इस से मुराद है कि जिस सूरत की आयात सब से पहले नाज़िल हुईं।) (1)

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस सूरत में **40** रुकूअ़ और **286** आयतें हैं।

''बक़रह'' नाम रखे जाने की वज्ह

अ़रबी में गाय को ''**بَقَرَةٌ**'' कहते हैं और इस सूरत के आठवें और नवें रुकूअ़ की आयत नम्बर 67 ता 73 में बनी इसराईल की एक गाय का वाक़िआ़ बयान किया गया है, उस की मुनासबत से इसे ''**सूरए बक़रह**'' कहते हैं।

सूरए बक़रह के फ़ज़ाइल

अहादीस में इस सूरत के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 5 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ुरआने पाक की तिलावत किया करो क्यूं कि वोह क़ियामत के दिन अपनी तिलावत करने वालों की शफ़ाअ़त करेगा और दो रोशन सूरतें (या'नी) ''सूरए बक़रह'' और ''सूरए आले इमरान'' पढ़ा करो क्यूं कि येह दोनों क़ियामत के दिन इस त़रह आएंगी जिस त़रह दो बादल हों या दो साएबान हों या दो उड़ते हुए परिन्दों की क़ित़ारें हों और येह दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेंगी, ''सूरए बक़रह'' पढ़ा करो क्यूं कि इस को पढ़ते रहने में बरकत है और न पढ़ने में (सवाब से महरूम रह जाने पर) ह़सरत है और जादूगर इस का मुक़ाबला करने की त़ाक़त नहीं रखते।''(2)

1 ......خازن، تفسیر سورۃ البقرۃ، ۱/۱۹.

2 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، ص۴۰۳، الحدیث: ۲۵۲(۸۰۴).

www.dawateislami.net

(2)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ (या'नी अपने घरों में इबादत किया करो) और शैतान उस घर से भागता है जिस में ''सूरए बक़रह'' की तिलावत की जाती है।''(1)

(3)...... हज़रते अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स रात को सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयतें पढ़ लेगा तो वोह उसे (ना गहानी मसाइब से) काफ़ी होंगी।''(2)

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर चीज़ की एक बुलन्दी है और कुरआन की बुलन्दी ''सूरए बक़रह'' है, इस में एक आयत है जो कुरआन की (तमाम) आयतों की सरदार है और वोह (आयत) आयतुल कुर्सी है।''(3)

(5)...... हज़रते सह्ल बिन सा'द साइ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने दिन के वक़्त अपने घर में ''सूरए बक़रह'' की तिलावत की तो तीन दिन तक शैतान उस के घर के क़रीब नहीं आएगा और जिस ने रात के वक़्त अपने घर में सूरए बक़रह की तिलावत की तो तीन रातें उस घर में शैतान दाख़िल न होगा।''(4)

''सूरए बक़रह'' के मज़ामीन

येह कुरआने पाक की सब से बड़ी सूरत है और इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में बनी इसराईल पर किये गए इन्आ़मात, उन इन्आ़मात के मुक़ाबले में बनी इसराईल की नाशुक्री, बनी इसराईल के जराइम जैसे बछड़े की पूजा करना, सरकशी और इनाद की वज्ह से ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से त़रह़ त़रह़ के मुत़ालबात करना, **अल्लाह** तआ़ला की आयतों के साथ कुफ़्र करना, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नाह़क़ शहीद करना और अ़ह्द तोड़ना वग़ैरा, गाय ज़ब्ह़ करने का वाक़िआ़ और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में मौजूद यहूदियों के बात़िल अ़क़ाइदो नज़रिय्यात और उन की ख़बासतों को बयान किया गया है और मुसल्मानों को यहूदियों की धोका देही से आगाह किया गया है। इस के इलावा ''सूरए बक़रह'' में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

1 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب صلاۃ النافلۃ... الخ، ص٣٩٣، الحدیث:٢١٢(٧٨٠).

2 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب فضل البقرۃ، ٣/٤٠٥، الحدیث: ٥٠٠٩.

3 ......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل سورۃ البقرۃ... الخ، ٤/٤٠٢، الحدیث: ٢٨٨٧.

4 ......شعب الایمان، التاسع من شعب الایمان... الخ، فصل فی فضائل السور والآیات، ذکر سورۃ البقرۃ... الخ، ٢/٤٥٣، الحدیث: ٢٣٧٨.

www.dawateislami.net

(1)...... कुरआने पाक की सदाक़त, ह़क़्क़ानिय्यत और इस किताब के हर त़रह़ के शको शुबे से पाक होने को बयान किया गया है।

(2)...... कुरआने पाक से ह़क़ीक़ी हिदायत ह़ासिल करने वालों और उन के औसाफ़ का बयान, अज़ली काफ़िरों के ईमान से मह़रूम रहने और मुनाफ़िक़ों की बुरी ख़स्लतों का ज़िक्र किया गया है।

(3)...... कुरआने पाक में शक करने वाले कुफ़्फ़ार से कुरआने मजीद की सूरत जैसी कोई एक सूरत बना कर लाने का मुत़ालबा किया गया और उन के इस चीज़ से आ़जिज़ होने को भी बयान कर दिया गया।

(4)...... ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ का वाक़िआ़ बयान किया गया और फ़िरिश्तों के सामने इन की शान को ज़ाहिर किया गया है।

(5)...... ख़ानए का'बा की ता'मीर और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ का ज़िक्र किया गया है।

(6)...... इस सूरत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द की वज्ह से क़िब्ले की तब्दीली और इस तब्दीली पर होने वाले ए'तिराज़ात व जवाबात का बयान है।

(7)...... इबादात और मुआ़मलात जैसे नमाज़ क़ाइम करने, ज़कात अदा करने, रमज़ान के रोज़े रखने, ख़ानए का'बा का ह़ज करने, **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करने, दीनी मुआ़मलात में क़मरी महीनों पर ए'तिमाद करने, **अल्लाह** तआ़ला की राह में माल ख़र्च करने, वालिदैन और रिश्तेदारों के साथ सुलूक करने, यतीमों के साथ मुआ़मलात करने, निकाह़, त़लाक़, रज़ाअ़त, इ़द्दत, बीवियों के साथ ईला करने, जादू, क़त्ल, लोगों के माल नाह़क़ खाने, शराब, सूद, जूआ और ह़ैज़ की ह़ालत में बीवियों के साथ सोह़बत करने वग़ैरा के बारे में मुसल्मानों को एक शरई़ दस्तूर फ़राहम किया गया है।

(8)...... ताबूते सकीना, त़ालूत और जालूत में होने वाली जंग का बयान है।

(9)...... मुर्दों को ज़िन्दा करने के सुबूत पर ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात का वाक़िआ़ ज़िक्र किया गया है।

(10)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को चार परिन्दों के ज़रीए़ मुर्दों को ज़िन्दा करने पर **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत का नज़ारा करवाने का वाक़िआ़ बयान किया गया है।

(11)...... इस सूरत के आख़िर में **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में रुजूअ़ करने, गुनाहों से तौबा

www.dawateislami.net

करने और कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ मदद त़लब करने की त़रफ़ मुसल्मानों को तवज्जोह दिलाई गई है और मुसल्मानों को क़ियामत के दिन से डराया गया है।

सूरए फ़ातिह़ा के साथ मुनासबत

"सूरए बक़रह" की अपने से मा क़ब्ल सूरत "फ़ातिह़ा" के साथ मुनासबत येह है कि "सूरए फ़ातिह़ा" में मुसल्मानों को येह दुआ़ मांगने की ता'लीम दी गई थी "اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ" या'नी ऐ **अल्लाह** ! हम को सीधा रास्ता चला।(1) और "सूरए बक़रह" में कामिल ईमान वालों के औसाफ़, मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन की निशानियां, यहूदियों और ईसाइयों का त़र्ज़े अ़मल, नीज़ मुआ़शरती ज़िन्दगी के उसूल और अह़काम ज़िक्र कर के मुसल्मानों के लिये "सिराते़ मुस्तक़ीम" को बयान किया गया है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۚۛ فِيۡهِ ۚۛ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : الٓمّٓ। वोह बुलन्द रुत्बा किताब जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं। इस में डरने वालों के लिये हिदायत है।

﴿الٓمّٓ﴾ क़ुरआने पाक की **29** सूरतों के शुरूअ़ में इस त़रह़ के ह़ुरूफ़ हैं, इन्हें "ह़ुरूफ़े मुक़त़्त़आ़त" कहते हैं, इन के बारे में सब से क़वी क़ौल येह है कि येह ह़ुरूफ़ **अल्लाह** तआ़ला के राज़ हैं और मुतशाबिहात में से हैं, इन की मुराद **अल्लाह** तआ़ला जानता है और हम इन के ह़क़ होने पर ईमान लाते हैं।(2)

1 ......فاتحه:۵.

2 ......خازن،البقرة،تحت الآية:۱، ۱/۲۰،الاتقان فی علوم القرآن،النوع الثالث والاربعون،۲/۳۰۸،ملتقطاً.

मनाज़िल 1 / मअ़ानक़ा

www.dawateislami.net

हुरूफ़े मुक़त्तआत का इल्म अल्लाह तआला के इलावा किसी और को हासिल है या नहीं

यहां येह बात याद रहे कि **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी हुरूफ़े मुक़त्तआत का इल्म अता फ़रमाया है, जैसा कि आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ाज़ी बैज़ावी (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) "अन्वारुत्तन्ज़ील" में सूरतों के इब्तिदाइया या'नी हुरूफ़े मुक़त्तआत के बारे में फ़रमाते हैं : एक क़ौल येह है कि येह एक राज़ है जिसे **अल्लाह** तआला ने अपने इल्म के साथ मख़्सूस फ़रमाया है। तक़रीबन ऐसी ही रिवायात ख़ुलफ़ाए अर्बआ और दीगर सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم से भी (मन्क़ूल) हैं, और मुम्किन है कि सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने येह मुराद लिया हो कि येह हुरूफ़ **अल्लाह** तआला और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान राज़ो नियाज़ हैं और येह ऐसे असरारो रुमूज़ हैं जिन्हें दूसरे को समझाना मक़्सूद नहीं। अगर येह राज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम न हों तो फिर ग़ैर मुफ़ीद कलाम से ख़िताब करना लाज़िम आएगा और येह बईद है।(1)

इमाम ख़फ़ाजी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "(अन्वारुत्तन्ज़ील के) बा'ज़ नुस्ख़ों में "اِسْتَأْثَرَہُ اللّٰہُ بِعِلْمِہٖ" है और (اِسْتَأْثَرَہُ की) ज़मीर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये है और "بِا" मक्सूर पर दाख़िल है, या'नी **अल्लाह** तआला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने इल्म से (ख़ास कर के) मुअ़ज़्ज़ज़ो मुकर्रम फ़रमाया या'नी मुक़त्तआत का इल्म सिर्फ़ **अल्लाह** तआला और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हासिल है। इस मा'ना को अक्सर सलफ़ और मुहक़्क़िक़ीन ने पसन्द फ़रमाया है।"(2)

अ़ल्लामा महमूद आलूसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ग़ालिब गुमान येह है कि हुरूफ़े मुक़त्तआत मख़्फ़ी इल्म और सर बस्ता राज़ हैं जिन के इदराक से उ़लमा आ़जिज़ हैं जैसा कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया, और ख़यालात इस तक पहुंचने से क़ासिर हैं और इसी वज्ह से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : हर किताब के राज़ होते हैं और क़ुरआने मजीद के राज़ सूरतों की इब्तिदा में आने वाले हुरूफ़ हैं। और इमाम शअ़बी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह हुरूफ़ **अल्लाह** तआला के असरार हैं तो इन का खोज न लगाओ क्यूं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इन की मा'रिफ़त आप

1 ......تفسیر بیضاوی، البقرة، تحت الآية: ۱، ۱/۹۳.

2 ......عناية القاضی ، البقرة ، تحت الآية : ۱ ، ۱/۱۷۸ ، مختصراً، انباء الحی، مطلب المتشابهات معلومة النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم، ص۵۲-۵۳.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़लूम के वारिस औलियाए किराम को है, उन्हें इसी बारगाह से (इन असरार की) मा'रिफ़त ह़ासिल होती है और कभी येह ह़ुरूफ़ ख़ुद उन्हें अपना मा'ना बता देते हैं जैसे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथों में कंकरियों ने तस्बीह़ के ज़रीए़ कलाम किया और गोह और हिरन ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हम कलाम हुए जैसा कि हमारे आबाओ अज्दाद या'नी अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से येह बात (ह़ुरूफ़े मुक़त्त़आ़त का इ़ल्म होना) सिह़्ह़त से साबित है बल्कि जब कोई बन्दा क़ुर्बे नवाफ़िल के दरख़्त का फल चुनता है तो वोह इन ह़ुरूफ़ को और इस के इ़लावा के इ़ल्म को **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म के ज़रीए़ जान लेता है। और जहां तक इस बात का तअ़ल्लुक़ है कि बा'ज़ उ़लमा ने येह कहा है कि "अगर इन का कोई मफ़्हूम न हो तो इन के साथ ख़ित़ाब मोह्मल ख़ित़ाब की त़रह़ होगा।" येह बात ही मोह्मल है अगर्चे इसे कहने वाला कोई भी हो क्यूं कि अगर तमाम लोगों को समझाना मक़्सूद हो तो येह हम तस्लीम नहीं करते और अगर सिर्फ़ इन ह़ुरूफ़ के मुख़ात़ब को समझाना मक़्सूद हो और वोह यहां **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं तो इस में कोई मोमिन शक नहीं कर सकता (कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन का मा'ना जानते हैं) और अगर इस से बा'ज़ लोगों को समझाना मक़्सूद है तो अरबाबे ज़ौक़ को इन की मा'रिफ़त ह़ासिल है और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه उम्मते मुह़म्मदिय्यह में कसीर हैं और हम जैसों का इन की मुराद न जानना नुक़्सान देह नहीं क्यूं कि हम तो उन बहुत से अफ़्आ़ल की ह़िक्मत भी नहीं जानते जिन के हम मुकल्लफ़ हैं जैसे जमरात की रमी करना सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना, रमल और इज़्त़िबाअ़ वग़ैरा और इन जैसे अह़काम में इत़ाअ़त करना सरे तस्लीम ख़म करने की इन्तिहा पर दलालत करता है।(1)

﴿لَا رَیْبَ **कोई शक नहीं।**﴾ आयत के इस ह़िस्से में क़ुरआने मजीद का एक वस्फ़ बयान किया गया कि येह ऐसी बुलन्द शान और अ़ज़मतो शरफ़ वाली किताब है जिस में किसी त़रह़ के शको शुबे की कोई गुन्जाइश नहीं क्यूं कि शक उस चीज़ में होता है जिस की ह़क़्क़ानिय्यत पर कोई दलील न हो जब कि क़ुरआने पाक अपनी ह़क़्क़ानिय्यत की ऐसी वाज़ेह़ और मज़बूत़ दलीलें रखता है जो हर साह़िबे इन्साफ़ और अ़क़्ल मन्द इन्सान को इस बात का यक़ीन करने पर मजबूर कर देती हैं कि येह किताब ह़क़ है और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल हुई है, तो जैसे किसी अन्धे के इन्कार से सूरज का वुजूद मश्कूक नहीं होता ऐसे ही किसी बे अ़क़्ल मुख़ालिफ़ के शक और इन्कार करने से येह किताब मश्कूक नहीं हो सकती।

1 ......روح المعانی، البقرة، تحت الآية: ۱، ۱/۱۳۶-۱۳۷.

www.dawateislami.net

﴿ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ : **डरने वालों के लिये हिदायत है ।**﴾ आयत के इस हिस्से में क़ुरआने मजीद का एक और वस्फ़ बयान किया गया कि येह किताब उन तमाम लोगों को ह़क़ की त़रफ़ हिदायत देती है जो **अल्लाह** तआ़ला से डरते हैं और जो लोग नहीं डरते, उन्हें क़ुरआने पाक से हिदायत ह़ासिल नहीं होती। याद रहे कि क़ुरआने पाक की हिदायत व रहनुमाई अगर्चे मोमिन और काफ़िर हर शख़्स के लिये आ़म है जैसा की सूरए बक़रह की आयत नम्बर 185 में **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया "هُدًى لِّلنَّاسِ" या'नी क़ुरआने मजीद तमाम लोगों के लिये हिदायत है। लेकिन चूंकि क़ुरआने मजीद से ह़क़ीक़ी नफ़्अ़ सिर्फ़ मुत्तक़ी लोग ह़ासिल करते हैं इस लिये यहां "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" या'नी "मुत्तक़ीन के लिये हिदायत" फ़रमाया गया।[1]

तक़्वे का मा'ना

तक़्वे का मा'ना है : "नफ़्स को ख़ौफ़ की चीज़ से बचाना।" और शरीअ़त की इस्तिलाह़ में तक़्वे का मा'ना येह है कि नफ़्स को हर उस काम से बचाना जिसे करने या न करने से कोई शख़्स अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो जैसे कुफ़्रो शिर्क, कबीरा गुनाहों, बे ह़याई के कामों से अपने आप को बचाना, ह़राम चीज़ों को छोड़ देना और फ़राइज़ को अदा करना वग़ैरा और बुज़ुर्गाने दीन ने यूं भी फ़रमाया है कि तक़्वा येह है कि तेरा ख़ुदा तुझे वहां न पाए जहां उस ने मन्अ़ फ़रमाया है।[2]

तक़्वे के फ़ज़ाइल

क़ुरआने मजीद और अह़ादीस में तक़्वा ह़ासिल करने और मुत्तक़ी बनने की तरग़ीब और फ़ज़ाइल ब कसरत बयान किये गए हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और ज़रूर तुम्हें मौत सिर्फ़ इस्लाम की ह़ालत में आए।

और इर्शाद फ़रमाया :

1 ......ابو سعود، البقرة، تحت الآية: ۲، ۱/ ۳۲.

2 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ۲، ص۱۹، خازن، البقرة، تحت الآية: ۲، ۱/ ۲۲، ملتقطاً.

3 ......اٰل عمران: ۱۰۲.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और सीधी बात कहा करो । **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी काम्याबी पाई ।

हज़रते अ़तिय्या सा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई बन्दा उस वक़्त तक मुत्तक़ीन में शुमार नहीं होगा जब तक कि वोह नुक़्सान न देने वाली चीज़ को किसी दूसरी नुक़्सान वाली चीज़ के डर से न छोड़ दे ।" (या'नी किसी जाइज़ चीज़ के इरतिकाब से मम्नूअ़ चीज़ तक न पहुंच जाए ।)(2)

हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ एक है, तुम्हारा बाप एक है और किसी अ़रबी को अ़जमी पर फ़ज़ीलत नहीं है न अ़जमी को अ़रबी पर फ़ज़ीलत है, न गोरे को काले पर फ़ज़ीलत है, न काले को गोरे पर फ़ज़ीलत है मगर सिर्फ़ तक़्वे से ।"(3)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : इस बात का मुस्तह़िक़ मैं ही हूं कि मुझ से डरा जाए और जो मुझ से डरेगा तो मेरी शान येह है कि मैं उसे बख़्श दूं ।"(4)

तक़्वे के मरातिब

उ़लमा ने "तक़्वा" के मुख़्तलिफ़ मरातिब बयान फ़रमाए हैं जैसे आ़म लोगों का तक़्वा "ईमान ला कर कुफ़्र से बचना" है, मुतवस्सित़ लोगों का तक़्वा "अह़कामात की पैरवी करना" और "मम्नूआ़त से रुकना" है और ख़ास लोगों का तक़्वा "हर ऐसी चीज़ को छोड़ देना है जो **अल्लाह** तआ़ला से ग़ाफ़िल करे ।"(5)

---

1 ......احزاب: ٧٠-٧١.

2 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، ١٩-باب، ٢٠٤/٤، ٢٠٥، الحدیث: ٢٤٥٩.

3 ......معجم الاوسط، ٣٢٩/٣، الحدیث: ٤٧٤٩.

4 ......دارمی، کتاب الرقاق، باب فی تقوی اللّٰہ، ٣٩٢/٢، الحدیث: ٢٧٢٤.

5 ......جمل، البقرة، تحت الآیة: ٢، ١٧/١.

www.dawateislami.net

और आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के फ़रमान के मुताबिक़ तक़्वे की सात क़िस्में हैं : (1) कुफ़्र से बचना। (2) बद मज़्हबी से बचना। (3) कबीरा गुनाह से बचना। (4) सग़ीरा गुनाह से बचना। (5) शुबुहात से परहेज़ करना। (6) नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचना। (7) **अल्लाह** तआला से दूर ले जाने वाली हर चीज़ की तरफ़ तवज्जोह करने से बचना, और क़ुरआने अ़ज़ीम इन सातों मर्तबों की तरफ़ हिदायत देने वाला है।[1]

अल्लाह तआला हमें मुत्तक़ी और परहेज़ गार बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो बिग़ैर देखे ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से कुछ (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं।

﴿اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ : **वोह लोग जो बिग़ैर देखे ईमान लाते हैं।**﴾ यहां से ले कर "اَلْمُفْلِحُوْنَ" तक की 3 आयात मुख़्लिस मोमिनीन के बारे में हैं जो ज़ाहिरी और बातिनी दोनों तरह से ईमान वाले हैं, इस के बा'द दो आयतें उन लोगों के बारे में हैं जो ज़ाहिरी और बातिनी दोनों तरह से काफ़िर हैं और इस के बा'द 13 आयतें मुनाफ़िक़ीन के बारे में हैं जो कि बातिन में काफ़िर हैं और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। आयत के इस हिस्से में मुत्तक़ी लोगों का एक वस्फ़ बयान किया गया है कि **वोह लोग बिग़ैर देखे ईमान लाते हैं।** या'नी वोह उन तमाम चीज़ों पर ईमान लाते हैं जो उन की निगाहों से पोशीदा हैं और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के बारे में ख़बर दी है जैसे मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किया जाना, क़ियामत का क़ाइम होना, आ'माल का हिसाब होना और जन्नत व जहन्नम वग़ैरा। एक क़ौल येह भी है कि यहां ग़ैब से क़ल्ब या'नी दिल मुराद है, इस सूरत में आयत के मा'ना येह होंगे कि वोह दिल से ईमान लाते हैं।[2]

1...... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, अल बक़रह, तह्तल आयह : 2, स. 4, मुलख़्ख़सन

2......مدارك، البقرة، تحت الآية: ۳، ص ۲۰، تفسير بيضاوى، البقرة، تحت الآية: ۳، ۱/ ۱۱٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ईमान और ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें

इस आयत में ''ईमान'' और ''ग़ैब'' का ज़िक्र हुवा है इस लिये इन से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें याद रखें !

(1)...... ''ईमान'' इसे कहते हैं कि बन्दा सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जो ज़रूरिय्याते दीन (में दाख़िल) हैं और किसी एक ज़रूरते दीनी के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं।[1]

(2)...... ''अ़मल'' ईमान में दाख़िल नहीं होते इसी लिये क़ुरआने पाक में ईमान के साथ अ़मल का जुदागाना ज़िक्र किया जाता है जैसे इस आयत में भी ईमान के बा'द नमाज़ व सदक़े का ज़िक्र अ़लाहृदा तौर पर किया गया है।

(3)...... ''ग़ैब'' वोह है जो हम से पोशीदा हो और हम अपने ह़वास जैसे देखने, छूने वग़ैरा से और बदीही तौर पर अ़क़्ल से उसे मा'लूम न कर सकें।

(4)...... ग़ैब की दो क़िस्में हैं : (1) जिस के ह़ासिल होने पर कोई दलील न हो। येह इ़ल्मे ग़ैब ज़ाती है और **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है और जिन आयात में ग़ैरुल्लाह से इ़ल्मे ग़ैब की नफ़ी की गई है वहां येही इ़ल्मे ग़ैब मुराद होता है। (2) जिस के ह़ासिल होने पर दलील मौजूद हो जैसे **अल्लाह** तआ़ला की ज़ातो सिफ़ात, गुज़श्ता अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام और क़ौमों के अह़वाल नीज़ क़ियामत में होने वाले वाक़िआ़त वग़ैरा का इ़ल्म। येह सब **अल्लाह** तआ़ला के बताने से मा'लूम हैं और जहां भी ग़ैरुल्लाह के लिये ग़ैब की मा'लूमात का सुबूत है वहां **अल्लाह** तआ़ला के बताने ही से होता है।[2]

(5)...... **अल्लाह** तआ़ला के बताए बिग़ैर किसी के लिये एक ज़र्रे का इ़ल्मे ग़ैब मानना क़त़्ई कुफ़्र है।

(6)...... **अल्लाह** तआ़ला अपने मुक़र्रब बन्दों जैसे अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيۡهِم पर ''ग़ैब'' के दरवाज़े खोलता है जैसा कि ख़ुद क़ुरआन व ह़दीस में है। इस मौज़ूअ़ पर मज़ीद कलाम सूरए आले इमरान की आयत नम्बर **179** की तफ़्सीर में मज़्कूर है।

﴿وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ﴾ : **और नमाज़ क़ाइम करते हैं।**﴾ आयत के इस हिस्से में मुत्तक़ी लोगों का

[1] ...... बहारे शरीअ़त, 1/172

[2] ......تفسير صاوى، البقرة، تحت الآية: ٣، ١/٢٦، ملخصاً.

www.dawateislami.net

दूसरा वस्फ़ बयान किया गया कि वोह नमाज़ क़ाइम करते हैं। नमाज़ क़ाइम करने से मुराद येह है कि नमाज़ के ज़ाहिरी और बातिनी हुक़ूक़ अदा करते हुए नमाज़ पढ़ी जाए। नमाज़ के ज़ाहिरी हुक़ूक़ येह हैं कि हमेशा, ठीक वक़्त पर पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ी जाए और नमाज़ के फ़राइज़, सुनन और मुस्तहब्बात का ख़याल रखा जाए और तमाम मुफ़्सिदात व मकरूहात से बचा जाए जब कि बातिनी हुक़ूक़ येह हैं की आदमी दिल को ग़ैरुल्लाह के ख़याल से फ़ारिग़ कर के ज़ाहिरो बातिन के साथ बारगाहे हक़ में मुतवज्जेह हो और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ो नियाज़ और मुनाजात में मह्व हो जाए।(1)

नमाज़ क़ाइम करने के फ़ज़ाइल और न करने की वईदें

कुरआने मजीद और अहादीस में नमाज़ के हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ नमाज़ पढ़ने वालों के फ़ज़ाइल बयान किये गए और न पढ़ने वालों की मज़म्मत बयान की गई है चुनान्चे सूरए मुअमिनून में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَۙ(۱) الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَۙ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक (वोह) ईमान वाले काम्याब हो गए जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं।

इसी सूरत में ईमान वालों के मज़ीद औसाफ़ बयान करने के बा'द उन का एक वस्फ़ येह बयान फ़रमाया कि

وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَۘ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।

और इन औसाफ़ के हामिल ईमान वालों के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَۙ(۱۰) الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ (4)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही लोग वारिस हैं। येह फ़िरदौस की मीरास पाएंगे, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

नमाज़ में सुस्ती करने वालों और नमाज़ें ज़ाएअ़ करने वालों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

---

1 ......بیضاوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳، ۱/۱۱۵-۱۱۷، جمل، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳، ۱/۱۸، ملتقطاً.

2 ......مؤمنون: ۱-۲.   3 ......مؤمنون: ۹.   4 ......مؤمنون: ۱۰-۱۱.

www.dawateislami.net

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ هُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ یُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَ لَا یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیْلًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में **अल्लाह** को फ़रेब देना चाहते हैं और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो बड़े सुस्त हो कर लोगों के सामने रियाकारी करते हुए खड़े होते हैं और **अल्लाह** को बहुत थोड़ा याद करते हैं।

और इर्शाद फ़रमाया :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ یَلْقَوْنَ غَیًّا ﴿۵۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓىٕكَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا یُظْلَمُوْنَ شَیْــٴًـا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन के बा'द वोह ना लाइक़ लोग उन की जगह आए जिन्हों ने नमाज़ों को ज़ाएअ़ किया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की तो अन्क़रीब वोह जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी ग़य से जा मिलेंगे मगर जिन्हों ने तौबा की और ईमान लाए और नेक काम किये तो येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और इन पर कोई ज़ियादती नहीं की जाएगी।

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मेरे इस वुज़ू की त़रह़ वुज़ू किया फिर इस त़रह़ दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी कि उन में ख़यालात न आने दे तो उस के पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।''(3)

हज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो भी मुसल्मान अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करता है, फिर खड़े हो कर इस त़रह़ दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ता है कि अपने दिल और चेहरे से मुतवज्जेह हो कर येह दो रक्अ़तें अदा करता है तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।(4)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने नमाज़ पर मुदावमत की तो क़ियामत के दिन

1 ......النساء: ١٤٢.
2 ......مريم: ٥٩-٦٠.
3 ......بخارى، كتاب الوضوء، باب الوضوء ثلاثًا ثلاثًا، ٧٨/١، الحديث: ١٥٩.
4 ......مسلم، كتاب الطهارة، باب الذكر المستحبّ عقب الوضوء، ص١٤٤، الحديث: ١٧(٢٣٤).

www.dawateislami.net

वोह नमाज़ उस के लिये नूर, बुरहान और नजात होगी और जिस ने नमाज़ की मुहाफ़ज़त न की तो उस के लिये न नूर है, न बुरहान, न नजात और वोह क़ियामत के दिन क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।"(1)

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी तो जहन्नम के उस दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है जिस से वोह दाख़िल होगा।"(2)

﴿وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ﴾ : **और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से कुछ (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं।** आयत के इस हिस्से में मुत्तक़ी लोगों का तीसरा वस्फ़ बयान किया गया कि वोह **अल्लाह** तआला के दिये हुए रिज़्क़ में कुछ **अल्लाह** तआला की राह में ख़र्च करते हैं। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है जैसे कई जगहों पर नमाज़ के साथ ज़कात ही का तज़्किरा है या इस से मुराद तमाम क़िस्म के सदक़ात हैं जैसे ग़रीबों, मिस्कीनों, यतीमों, तलबा, उलमा और मसाजिद व मदारिस वग़ैरहा को देना नीज़ औलियाए किराम या फ़ौत शुदगान के ईसाले सवाब के लिये जो ख़र्च किया जाता है वोह भी इस में दाख़िल है कि वोह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं।

माल ख़र्च करने में मियाना रवी से काम लिया जाए

आयत में फ़रमाया गया कि जो हमारे दिये हुए में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं, इस से मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में ऐसा नहीं होना चाहिये कि इतना ज़ियादा माल ख़र्च कर दिया जाए कि ख़र्च करने के बा'द आदमी पछताए और न ही ख़र्च करने में कन्जूसी से काम लिया जाए बल्कि इस में ए'तिदाल होना चाहिये। इस चीज़ की ता'लीम देते हुए एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَجْعَلْ یَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَ لَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रखो और न पूरा खोल दो कि फिर मलामत में, हसरत में बैठे रह जाओ।

और कामिल ईमान वालों का वस्फ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

1 ......مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص، ۲/۵۷۴، الحديث: ۶۵۸۷.

2 ......حلية الاولياء، ۷/۲۹۹، الحديث: ۱۰۵۹۰.

3 ......بنی اسراء یل: ۲۹.

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग कि जब ख़र्च करते हैं तो न ह़द से बढ़ते हैं और न तंगी करते हैं और इन दोनों के दरमियान ए'तिदाल से रहते हैं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर यक़ीन रखें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया और जो तुम से पहले नाज़िल किया गया और वोह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

﴿وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ﴾ : **और वोह ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया।** इस आयत में अहले किताब के वोह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब पर और तमाम पिछली आस्मानी किताबों पर और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल होने वाली वह़्यों पर ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी ईमान लाए। इस आयत में "مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ" से तमाम क़ुरआने पाक और पूरी शरीअ़त मुराद है।(2)

अल्लाह तआ़ला की किताबों वग़ैरा पर ईमान लाने का शरई हुक्म

याद रखें कि जिस त़रह़ क़ुरआने पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर "फ़र्ज़" है इसी त़रह़ पहली किताबों पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो गुज़श्ता अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई अलबत्ता उन के जो अह़काम हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ हो गए उन पर अ़मल दुरुस्त नहीं मगर फिर भी ईमान ज़रूरी है मसलन पिछली कई शरीअ़तों में बैतुल मुक़द्दस क़िब्ला था लिहाज़ा इस पर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अ़मल या'नी नमाज़ में बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह करना जाइज़ नहीं, येह हुक्म मन्सूख़ हो चुका। नीज़ येह

1 ......فرقان: ٦٧.

2 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ٤، ١/١٩، مدارك، البقرة، تحت الآية: ٤، ص ٢١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

भी याद रखें कि कुरआने करीम से पहले जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला ने अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया उन सब पर इज्मालन ईमान लाना "फ़र्ज़े ऐन" है या'नी येह ए'तिक़ाद रखा जाए कि **अल्लाह** तआ़ला ने गुज़श्ता अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर किताबें नाज़िल फ़रमाईं और उन में जो कुछ बयान फ़रमाया सब ह़क़ है। कुरआन शरीफ़ पर यूं ईमान रखना फ़र्ज़ है कि हमारे पास जो मौजूद है उस का एक एक लफ़्ज़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है और बरह़क़ है बक़िय्या तफ़्सीलन जानना "फ़र्ज़े किफ़ाया" है लिहाज़ा अ़वाम पर इस की तफ़्सीलात का इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ नहीं जब कि उ़लमा मौजूद हों जिन्हों ने येह इल्म ह़ासिल कर लिया हो।

﴿وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ﴾ : **और वोह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।** या'नी मुत्तक़ी लोग क़ियामत पर और जो कुछ इस में जज़ा व ह़िसाब वग़ैरा है सब पर ऐसा यक़ीन रखते हैं कि इस में उन्हें ज़रा भी शको शुबा नहीं है। इस में इस बात की त़रफ़ भी इशारा है कि यहूदियों और ईसाइयों का आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा दुरुस्त नहीं क्यूं कि उन में से हर एक का येह अ़क़ीदा था कि उन के इ़लावा कोई जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जैसा कि सूरए बक़रह आयत **111** में है और ख़ुसूसन यहूदियों का अ़क़ीदा था कि हम अगर जहन्नम में गए तो चन्द दिन के लिये ही जाएंगे, इस के बा'द सीधे जन्नत में जैसा कि सूरए बक़रह आयत **80** में है।[1]

इस तरह़ के फ़ासिद और मन घड़त ख़यालात जब ज़ेहन में जम जाते हैं तो फिर उन की इस्लाह़ बहुत मुश्किल होती है।

اُولٰٓىٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْۗ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही मुराद को पहुंचने वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और येही लोग काम्याबी ह़ासिल करने वाले हैं।

﴿هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴾ : **वोही फ़लाह़ पाने वाले हैं।** या'नी जिन लोगों में बयान की गई सिफ़ात पाई जाती हैं वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा की गई हिदायत पर हैं और येही लोग जहन्नम

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ٤، ١/١٩، مدارك، البقرة، تحت الآية: ٤، ص ٢١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

से नजात पा कर और जन्नत में दाख़िल हो कर कामिल काम्याबी ह़ासिल करने वाले हैं।[1]

अस्ल काम्याबी हर मुसल्मान को ह़ासिल है

याद रहे कि इस आयत में फ़लाह़ से मुराद "कामिल फ़लाह़" है या'नी कामिल काम्याबी मुत्तक़ीन ही को ह़ासिल है हां अस्ले फ़लाह़ हर मुसल्मान को ह़ासिल है अगर्चे वोह कितना ही गुनाहगार क्यूं न हो क्यूं कि ईमान बज़ाते ख़ुद बहुत बड़ी काम्याबी है जिस की बरकत से बहर ह़ाल जन्नत का दाख़िला ज़रूर ह़ासिल होगा अगर्चे अ़ज़ाबे नार के बा'द हो।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَیْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है उन के लिये बराबर है कि आप उन्हें डराएं या न डराएं, येह ईमान नहीं लाएंगे।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَیْهِمْ﴾ **: बेशक वोह लोग जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है उन के लिये बराबर है।** चूंकि ठन्डक की पहचान गरमी से, दिन की पहचान रात से और अच्छाई की पहचान बुराई से होती है इसी लिये अहले ईमान के बा'द काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के अफ़्आ़ल और उन के अन्जाम का ज़िक्र किया गया है ताकि इन की पहचान भी वाज़ेह़ हो जाए और आदमी के सामने तमाम राहें नुमायां हो जाएं। इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह लोग जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है जैसे अबू जह्ल और अबू लहब वग़ैरा कुफ़्फ़ार, उन के लिये बराबर है कि आप उन्हें **अल्लाह** तआ़ला के अह़कामात की मुख़ालफ़त करने के अ़ज़ाब से डराएं या न डराएं, येह किसी सूरत ईमान नहीं लाएंगे क्यूं कि

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۵، ۱/ ۲۵.

www.dawateislami.net

इन के बारे में **अल्लाह** तआ़ला को पहले से ही मा'लूम है कि येह लोग ईमान से मह़रूम हैं।(1)

कुफ़्र की ता'रीफ़ और अज़ली काफ़िरों को तब्लीग़ करने का हुक्म देने की वज्ह

यहां दो बातें ज़ेहन नशीन रखें :

(1)...... ज़रूरिय्याते दीन में से किसी चीज़ का इन्कार या तह़क़ीर व इस्तिह्ज़ा करना कुफ़्र है और ज़रूरिय्याते दीन इस्लाम के वोह अह़काम हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत, नमाज़, रोज़े, ह़ज, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना वग़ैरहा। अ़वाम से मुराद वोह मुसल्मान हैं जो उ़लमा के त़बक़े में शुमार न किये जाते हों मगर उ़लमा की सोह़बत में बैठने वाले हों और इ़ल्मी मसाइल का ज़ौक़ रखते हों, इस से वोह लोग मुराद नहीं जो दूर दराज़ जंगलों पहाड़ों में रहने वाले हों जिन्हें सह़ीह़ कलिमा पढ़ना भी न आता हो कि ऐसे लोगों का ज़रूरिय्याते दीन से ना वाक़िफ़ होना इस दीनी ज़रूरी को ग़ैर ज़रूरी न कर देगा, अलबत्ता ऐसे लोगों के मुसल्मान होने के लिये येह बात ज़रूरी है कि वोह ज़रूरिय्याते दीन का इन्कार करने वाले न हों और येह अ़क़ीदा रखते हों कि इस्लाम में जो कुछ है ह़क़ है और उन सब पर इज्मालन ईमान लाए हों।(2)

(2)...... ईमान से मह़रूम कुफ़्फ़ार के बारे में मा'लूम होने के बा वुजूद उन्हें तब्लीग़ करने का हुक्म इस लिये दिया गया ताकि उन पर हुज्जत पूरी हो जाए और क़ियामत के दिन उन के लिये कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (हम ने) रसूल ख़ुश ख़बरी देते और डर सुनाते (भेजे) ताकि रसूलों (को भेजने) के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों के लिये कोई उ़ज़्र (बाक़ी) न रहे और **अल्लाह** ज़बर दस्त है, ह़िक्मत वाला है।

1......جلالين مع جمل، البقرة، تحت الآية: ٦، ١/٢٠-٢١.

2...... बहारे शरीअ़त, 1/172, 173, मुलख़्ख़सन

3......النساء: ١٦٥.

www.dawateislami.net

और इर्शाद फ़रमाया :

وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَیْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰیٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَ نَخْزٰى (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम उन्हें रसूल के आने से पहले किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो ज़रूर कहते : ऐ हमारे रब ! तू ने हमारी त़रफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा कि हम ज़लीलो रुस्वा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी करते ?

नीज़ उन्हें तब्लीग़ करने से एक फ़ाएदा येह भी ह़ासिल हुवा कि वोह अगर्चे ईमान नहीं लाए लेकिन हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन्हें तब्लीग़ करने का सवाब ज़रूर मिलेगा और येह बात हर मुबल्लिग़ को पेशे नज़र रखनी चाहिये कि उस का काम तब्लीग़ करना और रिज़ाए इलाही पाना है, लोगों को सीधी राह पर ला कर ही छोड़ना नहीं लिहाज़ा मुबल्लिग़ नेकी की दा'वत देता रहे और नताइज **अल्लाह** तआ़ला के ह़वाले कर दे और लोगों के नेकी की दा'वत क़बूल न करने से मायूस होने की बजाए उस सवाब पर नज़र रखे जो नेकी की दा'वत देने की सूरत में उसे आख़िरत में मिलने वाला है।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ عَلٰى سَمْعِهِمْؕ-وَ عَلٰۤى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ٘-وَّ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ۠(۷)

-٧٧-

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी और उन की आंखों पर घटाटोप है और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मोहर लगा दी है और उन की आंखों पर पर्दा पड़ा हुवा है और उन के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।

﴿خَتَمَ اللّٰهُ : **अल्लाह ने मोहर लगा दी।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि इन काफ़िरों का ईमान से मह़रूम रहने का सबब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन के दिलों और कानों पर मोहर लगा दी है जिस

1 ......طه: ١٣٤.

www.dawateislami.net

की बिना पर येह ह़क़ समझ सकते हैं न ह़क़ सुन सकते हैं और न ही इस से नफ़्अ़ उठा सकते हैं और इन की आंखों पर पर्दा पड़ा हुवा है जिस की वज्ह से येह **अल्लाह** तआ़ला की आयात और उस की वह़दानिय्यत के दलाइल देख नहीं सकते और इन के लिये आख़िरत में बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।[(1)]

बा'ज़ काफ़िर ईमान से मह़रूम क्यूं रहे ?

यहां येह बात याद रखें कि जो काफ़िर ईमान से मह़रूम रहे उन पर हिदायत की राहें शुरूअ़ से बन्द न थीं वरना तो वोह इस बात का बहाना बना सकते थे बल्कि अस्ल येह है कि उन के कुफ़्रो इनाद, सरकशी व बे दीनी, ह़क़ की मुख़ालफ़त और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़दावत के अन्जाम के तौ़र पर उन के दिलों और कानों पर मोहर लगी और आंखों पर पर्दे पड़ गए, येह ऐसे ही है जैसे कोई शख़्स त़बीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे क़ातिल खा ले और उस के लिये दवा फ़ाएदा मन्द न रहे और त़बीब कह दे कि अब येह तन्दुरुस्त नहीं हो सकता तो ह़क़ीक़त में इस ह़ाल तक पहुंचाने में उस आदमी की अपनी करतूतों का हाथ है न कि त़बीब के कहने का लिहाज़ा वोह ख़ुद ही मलामत का मुस्तह़िक़ है त़बीब पर ए'तिराज़ नहीं कर सकता।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۘ﴿۸﴾

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग कहते हैं कि हम **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कुछ लोग कहते हैं कि हम **अल्लाह** पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आए हैं ह़ालां कि वोह ईमान वाले नहीं हैं।

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ : **और कुछ लोग कहते हैं।**﴾ इस से पहली आयात में मुख़्लिस ईमान वालों का ज़िक्र किया गया जिन का ज़ाहिरो बात़िन दुरुस्त और सलामत था, फिर उन काफ़िरों का

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۷، ۱/۲۶.

www.dawateislami.net

ज़िक्र किया गया जो सरकशी और इनाद पर क़ाइम थे और अब यहां से ले कर आयत नम्बर 20 तक मुनाफ़िक़ों का ह़ाल बयान किया जा रहा है जो कि अन्दरूने ख़ाना काफ़िर थे और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते थे। इस आयत का ख़ुलासा येह है कि कुछ लोग अपनी ज़बानों से इस त़रह़ कहते हैं कि हम **अल्लाह** तआ़ला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आए हैं ह़ालां कि वोह ईमान लाने वाले नहीं हैं क्यूं कि उन का ज़ाहिर उन के बात़िन के ख़िलाफ़ है बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि वोह मुनाफ़िक़ हैं।[1]

इस आयत से चन्द बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... जब तक दिल में तस्दीक़ न हो उस वक़्त तक ज़ाहिरी आ'माल मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं।

(2)...... जो लोग ईमान का दा'वा करते हैं और कुफ़्र का ए'तिक़ाद रखते हैं सब मुनाफ़िक़ीन हैं।

(3)...... येह इस्लाम और मुसल्मानों के लिये खुले काफ़िरों से ज़ियादा नुक़्सान देह हैं।

﴿وَمِنَ النَّاسِ : **और कुछ लोग**।﴾ मुनाफ़िक़ों को "कुछ लोग" कहने में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि येह गुरोह बेहतर सिफ़ात और इन्सानी कमालात से ऐसा आ़री है कि इस का ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता बल्कि यूं कहा जाता है कि कुछ लोग हैं। इसी लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मह़ज़ इन्सान या सिर्फ़ बशर के लफ़्ज़ से ज़िक्र करने में इन के फ़ज़ाइलो कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है, लिहाज़ा इस से इज्तिनाब लाज़िम है। अगर आप क़ुरआने पाक का मुत़ालआ़ करें तो मा'लूम होगा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सिर्फ़ बशर के लफ़्ज़ से ज़िक्र करना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है जब कि मुसल्मान अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का तज़्किरा अ़ज़्मतो शान से करते हैं।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ؕ ۝۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रेब दिया चाहते हैं **अल्लाह** और ईमान वालों को और ह़क़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं।

[1]......روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۸، ۱/۵۱.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह लोग **अल्लाह** को और ईमान वालों को फ़रेब देना चाहते हैं हा़लां कि येह सिर्फ़ अपने आप को फ़रेब दे रहे हैं और इन्हें शुऊ़र नहीं।

﴿يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ : वोह अल्लाह को धोका देना चाहते हैं।﴾ **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उसे कोई धोका दे सके, वोह तमाम पोशीदा बातों का जानने वाला है। यहां मुराद येह है कि मुनाफ़िक़ों के त़र्ज़े अ़मल से यूं लगता है कि वोह ख़ुदा को फ़रेब देना चाहते हैं या येह कि ख़ुदा को फ़रेब देना येही है कि वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को धोका देना चाहते हैं क्यूं कि हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के नाइब और ख़लीफ़ा हैं और इन्हें धोका देने की कोशिश गोया ख़ुदा को धोका देने की त़रह़ है लेकिन चूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुनाफ़िक़ीन के अन्दरूनी कुफ़्र पर मुत्तलअ़ फ़रमाया तो यूं इन बे दीनों का फ़रेब न ख़ुदा पर चले, न रसूल पर और न मोमिनीन पर बल्कि दर ह़क़ीक़त वोह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं और येह ऐसे ग़ाफ़िल हैं कि इन्हें इस चीज़ का शुऊ़र ही नहीं।

ज़ाहिरो बात़िन का तज़ाद बहुत बड़ा ऐ़ब है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़ाहिरो बात़िन का तज़ाद बहुत बड़ा ऐ़ब है। येह मुनाफ़क़त ईमान के अन्दर हो तो सब से बदतर है और अगर अ़मल में हो तो ईमान में मुनाफ़क़त से तो कमतर है लेकिन फ़ी नफ़्सिही सख़्त ख़बीस है, जिस आदमी के क़ौल व फ़े'ल और ज़ाहिरो बात़िन में तज़ाद होगा तो लोगों की नज़र में वोह सख़्त क़ाबिले नफ़रत होगा। ईमान में मुनाफ़क़त मख़्सूस लोगों में पाई जाती है जब कि अ़मली मुनाफ़क़त हर सत़ह़ के लोगों में पाई जा सकती है।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًاۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿۱۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन के दिलों में बीमारी है तो **अल्लाह** ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है बदला उन के झूट का।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के दिलों में बीमारी है तो **अल्लाह** ने उन की बीमारी में और इज़ाफ़ा कर दिया और उन के लिये उन के झूट बोलने की वज्ह से दर्दनाक अ़ज़ाब है।

﴿فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ : **उन के दिलों में बीमारी है।**﴾ इस आयत में क़ल्बी मरज़ से मुराद मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़क़त और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ की बीमारी है। मा'लूम हुवा कि बद अ़क़ीदगी रूह़ानी ज़िन्दगी के लिये तबाह कुन है नीज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो शान से जलने वाला मरीज़ुल क़ल्ब या'नी दिल का बीमार है।

रूह़ानी ज़िन्दगी के ख़त़रनाक अमराज़

जिस त़रह़ जिस्मानी अमराज़ होते हैं इसी त़रह़ कुछ बात़िनी अमराज़ भी होते हैं, जिस्मानी अमराज़ ज़ाहिरी सिह़्ह़तो तन्दुरुस्ती के लिये सख़्त नुक़्सान देह होते हैं और बात़िनी अमराज़ ईमान और रूह़ानी ज़िन्दगी के लिये ज़हरे क़ातिल हैं। इन बात़िनी अमराज़ में सब से बदतर तो अ़क़ीदे की ख़राबी का मरज़ है और इस के इ़लावा तकब्बुर, ह़सद, कीना और रियाकारी वग़ैरा भी इन्तिहाई बुरे मरज़ हैं। हर मुसल्मान को चाहिये कि बात़िनी अमराज़ से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल कर के उन से नजात ह़ासिल करने की कोशिश करे और इस के लिये बत़ौरे ख़ास इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की मश्हूर किताब एह़याउल उ़लूम की तीसरी जिल्द का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

﴿فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا : **तो अल्लाह ने उन की बीमारी में और इज़ाफ़ा कर दिया।**﴾ मुफ़स्सिरीन ने इस इज़ाफ़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें बयान की हैं, उन में से 3 सूरतें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... रियासत छिन जाने की वज्ह से मुनाफ़िक़ों को बहुत क़ल्बी रन्ज पहुंचा और वोह दिन ब दिन हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साबित क़दमी और ग़लबा देख कर ह़सद की आग में जलने लगे तो जितना नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़लबा होता गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में मक़्बूल होते गए उतना ही **अल्लाह** तआ़ला ने मुनाफ़िक़ों के रन्जो ग़म में इज़ाफ़ा कर दिया।

(2)...... मुनाफ़िक़ों के दिल कुफ़्र, बद अ़क़ीदगी और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़दावत व दुश्मनी से भरे हुए थे, **अल्लाह** तआ़ला ने उन की इन चीज़ों में इस त़रह़ इज़ाफ़ा कर दिया कि उन के दिलों पर मोहर लगा दी ताकि कोई वा'ज़ो नसीह़त उन पर असर अन्दाज़ न हो सके।

www.dawateislami.net

(3)...... जैसे जैसे शर्ई अह्काम और नुज़ूले वह्यी में इज़ाफ़ा हुवा और मुसल्मानों की मददो नुसरत बढ़ती गई वैसे वैसे उन का कुफ़्र बढ़ता गया बल्कि उन का ह़ाल तो येह था कि कलिमए शहादत पढ़ना उन पर बहुत दुश्वार था और ऊपर से इबादात में इज़ाफ़ा हो गया और जुर्मों की सज़ाएं भी नाज़िल हो गईं जिस की वज्ह से येह लोग बहुत बेचैन हो गए थे।(1)

﴿وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌۢ ۙ بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ﴾ : **और उन के लिये उन के झूट बोलने की वज्ह से दर्दनाक अ़ज़ाब है।** ﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत पर ईमान लाने का झूटा दा'वा करने की वज्ह से उन के लिये जहन्नम का दर्दनाक अ़ज़ाब है।(2)

झूट बोलने की वईद और न बोलने का सवाब

इस आयत से मा'लूम हुवा कि झूट बोलना ह़राम है और इस पर दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद है लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह इस से बचने की ख़ूब कोशिश करे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सच्चाई को (अपने ऊपर) लाज़िम कर लो, क्यूं कि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है। आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूं कि झूट गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।"(3)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स झूट बोलना छोड़ दे और वोह बात़िल है (या'नी झूट छोड़ने की चीज़ ही है) उस के लिये जन्नत के कनारे में मकान बनाया जाएगा।"(4)

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ١٠، ١/٥٥.

2 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٠، ص٢٦.

3 ......مسلم، كتاب البر والصلة... الخ، باب قبح الكذب... الخ، ص١٤٠٥، الحديث: ١٠٥(٢٦٠٧).

4 ......ترمذى، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فى المراء، ٣/٤٠٠، الحديث: ٢٠٠٠.

www.dawateislami.net

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْۤا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾
اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَ لٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं। सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें शुऊ़र नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि ज़मीन में फ़साद न करो तो कहते हैं हम तो सिर्फ़ इस्लाह़ करने वाले हैं। सुन लो : बेशक येही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं मगर इन्हें (इस का) शुऊ़र नहीं।

﴿لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ﴾ **: ज़मीन में फ़साद न फैलाओ।** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि जब ईमान वालों की त़रफ़ से उन मुनाफ़िक़ों से कहा जाए कि बात़िन में कुफ़्र रख कर और सह़ीह़ ईमान लाने में पसो पेश कर के ज़मीन में फ़साद न करो तो वोह कहते हैं कि तुम हमें इस त़रह़ न कहो क्यूं कि हमारा मक़्सद तो सिर्फ़ इस्लाह़ करना है। ऐ ईमान वालो ! तुम जान लो कि अपनी उसी रविश पर क़ाइम रहने की वज्ह से येही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं मगर इन्हें इस बात का शुऊ़र नहीं क्यूं कि इन में वोह ह़िस बाक़ी नहीं रही जिस से येह अपनी इस ख़राबी को पहचान सकें।

मुनाफ़िक़ों के त़र्ज़े अ़मल से येह भी वाज़ेह़ हुवा कि आ़म फ़सादियों से बड़े फ़सादी वोह हैं जो फ़साद फैलाएं और उसे इस्लाह़ का नाम दें। हमारे मुआ़शरे में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो इस्लाह़ के नाम पर फ़साद फैलाते हैं और बद तरीन कामों को अच्छे नामों से ता'बीर करते हैं। आज़ादी के नाम पर बे ह़याई, फ़न के नाम पर ह़राम अफ़्आ़ल, इन्सानिय्यत के नाम पर इस्लाम को मिटाना और तहज़ीबो तमद्दुन का नाम ले कर इस्लाम पर ए'तिराज़ करना, तौह़ीद का नाम ले कर शाने रिसालत का इन्कार करना, क़ुरआन का नाम ले कर ह़दीस का इन्कार करना वग़ैरहा सब फ़साद की सूरतें हैं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ كَمَاۤ اٰمَنَ

www.dawateislami.net

السُّفَهَآءُ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं तो कहें क्या हम अह़मक़ों की त़रह़ ईमान ले आएं ? सुनता है ! वोही अह़मक़ हैं मगर जानते नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि तुम इसी त़रह़ ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए तो कहते हैं : क्या हम बे वुक़ूफ़ों की त़रह़ ईमान लाएं ? सुन लो ! बेशक येही लोग बे वुक़ूफ़ हैं मगर येह जानते नहीं।

﴿كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ : **जैसे और लोग ईमान लाए।**﴾ यहां "اَلنَّاسُ" से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और उन के बा'द उन की कामिल इत्तिबाअ़ करने वाले मुराद हैं।

नजात वाले कौन लोग हैं ?

इस आयत में बुज़ुर्गाने दीन की त़रह़ ईमान लाने के हुक्म से मा'लूम हुवा कि इन की पैरवी करने वाले नजात वाले हैं और इन के रास्ते से हटने वाले मुनाफ़िक़ीन के रास्ते पर हैं और येह भी मा'लूम हुवा कि इन बुज़ुर्गों पर ता'नो तश्नीअ़ करने वाले बहुत पहले से चलते आ रहे हैं। इस आयत की रोशनी में सह़ाबा व अइम्मा और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْهِم के मुतअ़ल्लिक़ अपना तर्ज़े अ़मल देख कर हर कोई अपना रास्ता समझ सकता है कि सह़ाबा के रास्ते पर है या मुनाफ़िक़ों के रास्ते पर ? नीज़ उ़लमा व सुलह़ा और दीनदार लोगों को चाहिये कि वोह लोगों की बद ज़बानियों से बहुत रन्जीदा न हों बल्कि समझ लें कि येह अहले बात़िल का क़दीम दस्तूर है। नीज़ दीनदारों को बे वुक़ूफ़ या दक़्यानूसी ख़यालात वाला कहने वाले ख़ुद बे वुक़ूफ़ हैं।

सह़ाबए किराम की बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह के ऐसे मक़्बूल बन्दे हैं कि इन की गुस्ताख़ी करने वालों को **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद जवाब दिया है। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के बारे में ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को गाली गलोच न करो, (उन का मक़ाम येह है कि) अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना (**अल्लाह** तआ़ला की राह में) ख़र्च करे तो उस का सवाब मेरे किसी सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के एक मुद (एक छोटी सी मिक़्दार) बल्कि आधा मुद ख़र्च करने के बराबर भी नहीं हो सकता।''(1)

और **अल्लाह** तआ़ला के औलिया के बारे में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान दे दिया।''(2)

इस से उन लोगों को नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिये जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की बे अदबी और गुस्ताख़ी करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला के औलिया के बारे में ग़लत़ अ़क़ाइदो नज़रिय्यात रखते हैं।

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰی شَیٰطِیْنِهِمْ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैत़ानों के पास अकेले हों तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं हम तो यूंही हंसी करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब येह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं : हम ईमान ला चुके हैं और जब अपने शैत़ानों के पास तन्हाई में जाते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ हंसी मज़ाक़ करते हैं।

﴿وَ اِذَا لَقُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا : **और जब येह ईमान वालों से मिलते हैं।**﴾ मुनाफ़िक़ीन का मुसल्मानों को बे वुक़ूफ़ कहना और कुफ़्फ़ार से इज़्हारे यक जहती करना अपनी निजी मह़फ़िलों में था जब कि मुसल्मानों से तो वोह येही कहते थे कि हम मुख़्लिस मोमिन हैं, इसी त़रह़ आज कल के गुमराह लोग मुसल्मानों से अपने फ़ासिद ख़यालात को छुपाते हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला उन की

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم: لو کنت متخذا خلیلاً، ۲/۵۲۲، الحدیث: ۳۶۷۳.

2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، الحدیث: ۶۵۰۲.

www.dawateislami.net

किताबों और तह़रीरों से उन के राज़ फ़ाश कर देता है।

बेदीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहा जाए

याद रहे कि इस आयत से मुसल्मानों को ख़बरदार किया जा रहा है कि वोह बेदीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहें और उन की चिक्नी चुपड़ी बातों से धोका न खाएं। एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ
دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًاؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْۚ
قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ
صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ
وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖۚ
وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا
عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِؕ قُلْ مُوْتُوْا
بِغَيْظِكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾
اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ٘ وَاِنْ تُصِبْكُمْ
سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَاؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا
لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْــٴًـاؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! ग़ैरों को राज़दार न बनाओ, वोह तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करेंगे। वोह तो चाहते हैं कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। बेशक (उन का) बुग़्ज़ तो उन के मुंह से ज़ाहिर हो चुका है और जो उन के दिलों में छुपा हुवा है वोह इस से भी बढ़ कर है। बेशक हम ने तुम्हारे लिये खोल कर आयतें बयान कर दीं अगर तुम अ़क़्ल रखते हो। ख़बरदार ! येह तुम ही हो जो उन्हें चाहते हो और वोह तुम्हें पसन्द नहीं करते ह़ालां कि तुम तमाम किताबों पर ईमान रखते हो और जब वोह तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान ला चुके हैं और जब तन्हाई में होते हैं तो गुस्से के मारे तुम पर उंग्लियां चबाते हैं। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो, अपने गुस्से में मर जाओ। बेशक **अल्लाह** दिलों की बात को ख़ूब जानता है। अगर तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगता है और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश होते हैं और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो उन का मक्रो फ़रेब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। बेशक **अल्लाह** उन के तमाम कामों को घेरे में लिये हुए है।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘**اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْنَكُمْ وَلَا يَفْتِنُوْنَكُمْ**

(1)......ال عمران: ۱۱۸-۱۲۰.

www.dawateislami.net

उन से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर करो कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डाल दें।''(1)

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुसल्मान का ईमान है कि **अल्लाह** व रसूल से ज़ियादा कोई हमारी भलाई चाहने वाला नहीं, (और **अल्लाह** व रसूल) جَلَّ وَعَلَا وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस बात की त़रफ़ बुलाएं यक़ीनन हमारे दोनों जहान का उस में भला है, और जिस बात से मन्अ़ फ़रमाएं बिला शुबा सरासर ज़रर व बला है। मुसल्मान सूरत में ज़ाहिर हो कर जो इन के हुक्म के ख़िलाफ़ की त़रफ़ बुलाए यक़ीन जान लो कि येह डाकू है, उस की तावीलों पर हरगिज़ कान न रखो, रहज़न जो जमाअ़त से बाहर निकाल कर किसी को ले जाना चाहता है ज़रूर चिक्नी चिक्नी बातें करेगा और जब येह धोके में आया और साथ हो लिया तो गरदन मारेगा, माल लूटेगा, शामत उस बकरी की, कि अपने राई (या'नी चराने वाले) का इर्शाद न सुने और भेड़िया जो किसी भेड़ की ऊन पहन कर आया उस के साथ हो ले, अरे ! मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें मन्अ़ फ़रमाते हैं वोह तुम्हारी जान से बढ़ कर तुम्हारे ख़ैर ख़्वाह हैं : ''حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ'' तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना उन के क़ल्बे अक़्दस पर गिरां है : ''عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ'' वल्लाह वोह तुम पर इस से ज़ियादा मेहरबान हैं जैसे निहायत चहीती मां इक्लौते बेटे पर : ''بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ'' अरे ! इन की सुनो, इन का दामन थाम लो, इन के क़दमों से लिपट जाओ।(2)

﴿وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰى شَیٰطِیْنِهِمْ﴾ : **और जब अपने शैत़ानों के पास तन्हाई में जाते हैं।** यहां शयात़ीन से कुफ़्फ़ार के वोह सरदार मुराद हैं जो दूसरों को गुमराह करने में मसरूफ़ रहते हैं। मुनाफ़िक़ जब उन से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं और मुसल्मानों से मिलना मह़ज़ इस्तिहज़ा के त़ौर पर है और हम उन से इस लिये मिलते हैं ताकि उन के राज़ मा'लूम हों और उन में फ़साद अंगेज़ी के मवाक़ेअ़ मिलें। इस से मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ जिन्नात में शयात़ीन होते हैं इसी त़रह़ इन्सानों में भी शयात़ीन होते हैं।

﴿اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ﴾ : **हम तो सिर्फ़ हंसी मज़ाक़ करते हैं।** मुनाफ़िक़ीन, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के सामने उन की ता'रीफ़ें करते और बा'द में उन का मज़ाक़ उड़ाते थे, इसी बात को बयान करने के लिये येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।

1 ......مسلم، المقدمة، باب النهی عن الروایة... الخ، ص٩، الحدیث: ٧ (٧).

2...... फ़तावा रज़विय्या, 15/105

www.dawateislami.net

सहाबए किराम और उलमाए दीन का मज़ाक़ उड़ाने का हुक्म

इस आयत से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और पेश्वायाने दीन का मज़ाक़ उड़ाना मुनाफ़िक़ों का काम है। आज कल भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो अपनी मजलिसों और मख़्सूस लोगों में "उलमा व सुलहा" और "दीनदारों" का मज़ाक़ उड़ाते और उन पर फब्तियां कसते हैं और जब उन के सामने आते हैं तो मुनाफ़क़त से भरपूर हो कर ख़ुशामद और चापलूसी करते हैं और ता'रीफ़ों के पुल बांधते हैं, यूंही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जिन्हें मज़हब और मज़्हबी नाम से नफ़रत है और मज़्हबी हुल्या और वज़्अ़ क़त्अ़ देख कर उन की तबीअ़त ख़राब हो जाती है। **अल्लाह** तआ़ला इन लोगों को हिदायत अ़ता फ़रमाए। याद रहे कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और दीन का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है, यूंही सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की बे अदबी गुमराही है, इसी तरह इल्म की वज्ह से उलमाए दीन का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है वरना हराम है।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है (जैसा उस की शान के लाइक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटक्ते रहें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** उन की हंसी मज़ाक़ का उन्हें बदला देगा और (अभी) वोह उन्हें मोहलत दे रहा है कि येह अपनी सरकशी में भटक्ते रहें।

﴿اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ : **अल्लाह उन की हंसी मज़ाक़ का उन्हें बदला देगा।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला इस्तिहज़ा और तमाम उ़यूब से पाक है यहां जो **अल्लाह** तआ़ला की तरफ़ इस्तिहज़ा की निस्बत है इस से मुराद मुनाफ़िक़ों के इस्तिहज़ा का बदला देना है और बदले के वक़्त अ़रबी (और उर्दू) में इसी तरह का लफ़्ज़ दोहरा दिया जाता है जैसे कहा जाए कि बुराई का बदला बुराई ही होता है हालां कि बुराई का बदला तो अ़दलो इन्साफ़ और आदमी का हक़ होता है।[1]

1 ......تفسیر قرطبی، البقرة، تحت الآیة: ۱۵، ۱/۱۸۳، الجزء الاول.

www.dawateislami.net

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी तो उन का सौदा कुछ नफ़्अ़ न लाया और वोह सौदे की राह जानते ही न थे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली तो उन की तिजारत ने कोई नफ़्अ़ न दिया और येह लोग राह जानते ही नहीं थे ।

﴾اِشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى﴿ **: येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली ।** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना या'नी "ईमान की बजाए कुफ़्र इख़्तियार करना" निहायत ख़सारे और घाटे का सौदा है । येह आयत या तो उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए या यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो पहले तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे मगर जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई तो मुन्किर हो गए, या येह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के बारे में नाज़िल हुई इस तौर पर कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़ित्रते सलीमा अ़ता फ़रमाई, हक़ के दलाइल वाज़ेह किये, हिदायत की राहें खोलीं लेकिन उन्हों ने अ़क़्लो इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की तो वोह सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले ताजिर हैं कि उन्हों ने नफ़्अ़ ही नहीं बल्कि अस्ल सरमाया भी तबाह कर लिया ।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۸﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत उस की त़रह़ है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का नूर ले गया और उन्हें अन्धेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता। बहरे गूंगे अन्धे तो वोह फिर आने वाले नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने आग रोशन की फिर जब उस आग ने उस के आस पास को रोशन कर दिया तो **अल्लाह** उन का नूर ले गया और उन्हें तारीकियों में छोड़ दिया, उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा। बहरे, गूंगे, अन्धे हैं पस येह लौट कर नहीं आएंगे।

﴿مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِی اسْتَوْقَدَ نَارًا﴾ **: उन की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने आग रोशन की।** येह उन लोगों की मिसाल है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ हिदायत दी या उस पर क़ुदरत बख़्शी फिर उन्हों ने उसे ज़ाएअ़ कर दिया और अबदी दौलत को ह़ासिल न किया, उन का अन्जाम ह़स्रतो अफ़्सोस और ह़ैरतो ख़ौफ़ है इस में वोह मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्हों ने इज़्हारे ईमान किया और दिल में कुफ़्र रख कर इक़रार की रोशनी को ज़ाएअ़ कर दिया और वोह भी जो मोमिन होने के बा'द मुरतद हो गए और वोह भी जिन्हें फ़ित़्रते सलीमा अ़त़ा हुई और दलाइल की रोशनी ने ह़क़ को वाज़ेह़ किया मगर उन्हों ने इस से फ़ाएदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब ह़क़ को सुनने, मानने, कहने और देखने से मह़रूम हो गए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं।

اَوْ كَصَیِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِیْهِ ظُلُمٰتٌ وَّ رَعْدٌ وَّ بَرْقٌۚ یَجْعَلُوْنَ
اَصَابِعَهُمْ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِؕ وَ اللّٰهُ مُحِیْطٌۢ
بِالْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۹﴾ یَكَادُ الْبَرْقُ یَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْؕ كُلَّمَاۤ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا
فِیْهِۗۙ وَ اِذَاۤ اَظْلَمَ عَلَیْهِمْ قَامُوْاؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

www.dawateislami.net

ربع ٢

وَ اَبۡصَارِهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ ؑ﴿۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अन्धेरियां हैं और गरज और चमक अपने कानों में उंग्लियां ठूंस रहे हैं कड़क के सबब मौत के डर से और **अल्लाह** काफ़िरों को घेरे हुए है। बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक ले जाएगी जब कुछ चमक हुई उस में चलने लगे और जब अंधेरा हुवा खड़े रह गए और **अल्लाह** चाहता तो उन के कान और आंखें ले जाता बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : या (उन की मिसाल) आस्मान से उतरने वाली बारिश की त़रह़ है जिस में तारीकियां और गरज और चमक है। येह ज़ोरदार कड़क की वज्ह से मौत के डर से अपने कानों में उंग्लियां ठूंस रहे हैं ह़ालां कि **अल्लाह** काफ़िरों को घेरे हुए है। बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक कर ले जाएगी। (ह़ालत येह कि) जब कुछ रोशनी हुई तो उस में चलने लगे और जब उन पर अंधेरा छा गया तो खड़े रह गए और अगर **अल्लाह** चाहता तो उन के कान और आंखें सल्ब कर लेता। बेशक **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

﴿اَوۡ كَصَیِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ : **या जैसे आस्मान से बारिश।**﴾ हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की येह दूसरी मिसाल बयान की गई है और येह उन मुनाफ़िक़ीन का ह़ाल है जो दिल से इस्लाम क़बूल करने और न करने में मुतरद्दद रहते थे उन के बारे में फ़रमाया कि जिस त़रह़ अंधेरी रात और बादल व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतह़य्यर होता है, जब बिजली चमक्ती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है तो खड़ा रह जाता है इसी त़रह़ इस्लाम के ग़लबे और मो'जिज़ात की रोशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की त़रफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं और येही मक़ाम अपने और बेगाने, मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ के पहचान का होता है। मुनाफ़िक़ों की इसी त़रह़ की ह़ालत सूरए नूर आयत नम्बर **48** और **49** में भी बयान की गई है।

﴿عَلٰى كُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ : **अल्लाह तआ़ला हर शै पर क़ादिर है।**﴾ शै उसी को कहते हैं जिसे **अल्लाह** तआ़ला चाहे और जो मशिय्यत या'नी चाहने के तह़्त आ सके। हर मुम्किन चीज़ शै

www.dawateislami.net

में दाख़िल है और हर शै **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत में है और जो मुम्किन नहीं बल्कि वाजिब या मुहा़ल है उस से **अल्लाह** तआ़ला के इरादे और क़ुदरत का तअ़ल्लुक़ ही नहीं होता जैसे **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिये क़ुदरत के तह़त दाख़िल नहीं मसलन येह नहीं हो सकता है कि **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो अपना इ़ल्म ख़त्म कर के बे इ़ल्म हो जाए या مَعَاذَاللہ झूट बोले। याद रहे कि इन चीज़ों का **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत के तह़त न आना उस की क़ुदरत में नक़्स व कमी की वज्ह से नहीं बल्कि येह उन चीज़ों का नक़्स है कि उन में येह सलाहि़य्यत नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से मुतअ़ल्लिक़ हो सकें।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ लोगो ! अपने रब की इ़बादत करो जिस ने तुम्हें और तुम से पहले लोगों को पैदा किया। येह उम्मीद करते हुए (इ़बादत करो) कि तुम्हें परहेज़ गारी मिल जाए।

﴾ **يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ : ऐ लोगो !**﴿ सूरए बक़रह के शुरूअ़ में बताया गया कि येह किताब मुत्तक़ीन की हिदायत के लिये नाज़िल हुई, फिर मुत्तक़ीन के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए, इस के बा'द इस से मुन्ह़रिफ़ होने वाले फ़िर्क़ों का और उन के अह़वाल का ज़िक्र फ़रमाया ताकि सआ़दत मन्द इन्सान हिदायत व तक़्वा की त़रफ़ राग़िब हो और ना फ़रमानी व बग़ावत से बचे, अब तक़्वा ह़ासिल करने का त़रीक़ा बताया जा रहा है और वोह त़रीक़ा इ़बादत और इत़ाअ़ते इलाही है। "يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ" के ज़रीए़ तमाम इन्सानों से ख़ित़ाब है और इस बात का इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी तक़्वा ह़ासिल करे और **अल्लाह** तआ़ला का बन्दा बने।

इ़बादत की ता'रीफ़

इ़बादत उस इन्तिहाई ता'ज़ीम का नाम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दिय्यत या'नी बन्दा होने

www.dawateislami.net

और मा'बूद की उलूहिय्यत या'नी मा'बूद होने के ए'तिक़ाद और ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए। यहां इ़बादत तौह़ीद और इस के इ़लावा अपनी तमाम क़िस्मों को शामिल है। काफ़िरों को इ़बादत का हुक्म इस मा'ना में है कि वोह सब से बुन्यादी इ़बादत या'नी ईमान लाएं और इस के बा'द दीगर आ'माल बजा लाएं।

﴿لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ﴾ **: ताकि तुम्हें परहेज़ गारी मिले।** इस से मा'लूम हुवा कि इ़बादत का फ़ाएदा आ़बिद ही को मिलता है जब कि **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस को इ़बादत या और किसी चीज़ से नफ़्अ़ ह़ासिल हो।

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को इ़मारत बनाया और आस्मान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो **अल्लाह** के लिये जान बूझ कर बराबर वाले न ठहराओ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को छत बनाया और उस ने आस्मान से पानी उतारा फिर उस पानी के ज़रीए़ तुम्हारे खाने के लिये कई फल पैदा किये तो तुम जान बूझ कर **अल्लाह** के शरीक न बनाओ।

﴿الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً﴾ **: जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को छत बनाया।** इस आयत और इस से ऊपर वाली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी इन ने'मतों को बयान फ़रमाया है :

(1)...... मख़्लूक़ को अ़दम से वुजूद में लाना।

(2)...... आस्मान व ज़मीन को पैदा करना।

(3)...... आस्मान व ज़मीन से मख़्लूक़ के रिज़्क़ का मुहय्या करना।

(4)...... आस्मान से बारिश उतारना और ज़मीन से नबातात उगाना।

www.dawateislami.net

जब आदमी की ज़िन्दगी का एक एक लम्हा और एक एक पल **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों में डूबा हुवा है तो उस मालिके ह़क़ीक़ी को छोड़ कर किसी और का इ़बादत गुज़ार बनना किस क़दर नाशुक्री है ! यूंही ऐसे करीम ख़ुदा की याद से ग़फ़्लत भी कितनी बड़ी नाशुक्री है ।

وَ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَ ادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने इन ख़ास बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ और **अल्लाह** के सिवा अपने सब ह़िमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम्हें इस किताब के बारे में कोई शक हो जो हम ने अपने ख़ास बन्दे पर नाज़िल की है तो तुम इस जैसी एक सूरत बना लाओ और **अल्लाह** के इ़लावा अपने सब मददगारों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो ।

﴾وَ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ : **और अगर तुम्हें कुछ शक हो ।**﴿ इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो वह़दानिय्यत का बयान हुवा और यहां से हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के **अल्लाह** तआ़ला की बे मिस्ल किताब होने की वोह क़ाहिर दलील बयान फ़रमाई जा रही है जो त़ालिबे सादिक़ को इत़्मीनान बख़्शे और मुन्किरों को आ़जिज़ कर दे । **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत की सब से बड़ी दलील मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत की सब से बड़ी दलील क़ुरआन है लिहाज़ा इस रुकूअ़ में तरतीब से इन सब को बयान किया गया है ।

﴾عَلٰى عَبْدِنَا : **अपने ख़ास बन्दे पर ।**﴿ इस आयत में ख़ास बन्दे से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं ।(1)

यहां इस अन्दाज़े ता'बीर में नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबिय्यत की त़रफ़ भी इशारा है । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या ख़ूब

(1) ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ۲۳، ص ۳۵.

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं :

लेकिन रज़ा ने ख़त्मे सुख़न इस पे कर दिया   ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

﴾فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ﴿ **: तो तुम इस जैसी एक सूरत बना लाओ ।** आयत के इस हिस्से और इस के बा'द वाली आयत में क़ुरआन के बे मिस्ल होने पर दो टोक अल्फ़ाज़ में एक खुली दलील दी जा रही है कि अपनी फ़साहतो बलाग़त पर नाज़ करने वालों को चेलेन्ज है कि अगर तुम क़ुरआन को **अल्लाह** तआ़ला की किताब नहीं बल्कि किसी इन्सान की तस्नीफ़ समझते हो तो चूंकि तुम भी इन्सान हो लिहाज़ा इस जैसी एक सूरत बना कर ले आओ जो फ़साह़तो बलाग़त, हुस्ने तरतीब, ग़ैब की ख़बरें देने और दीगर उमूर में क़ुरआने पाक की मिस्ल हो और अगर ऐसी कोई सूरत बल्कि आयत तक न बना सको तो समझ लो कि क़ुरआन **अल्लाह** तआ़ला की किताब है और **अल्लाह** तआ़ला की किताब का इन्कार करने वालों का अन्जाम दोज़ख़ है जो बतौरे ख़ास काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है ।

नोट : येह चेलेन्ज क़ियामत तक तमाम इन्सानों के लिये है, आज भी क़ुरआन को मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्नीफ़ कहने वाले कुफ़्फ़ार तो बहुत हैं मगर क़ुरआन की मिस्ल एक आयत बनाने वाला आज तक कोई सामने नहीं आया और जिस ने इस का दा'वा किया, उस का पोल ख़ुद ही चन्द दिनों में खुल गया ।

ए'जाज़े क़ुरआन की वुजूहात

क़ुरआने मजीद वोह बे मिस्ल किताब है कि लोग अपने तमाम तर कमालात के बा वुजूद क़ुरआने पाक जैसा कलाम बनाने से आ़जिज़ हैं और जिन्नो इन्स मिल कर भी इस की आयात जैसी एक आयत भी नहीं बना सकते, इस की बुन्यादी वज्ह येह है कि क़ुरआने मजीद **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है और मख़्लूक़ में किसी के पास इतनी त़ाक़त नहीं कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के कलाम की मिस्ल कलाम बना सके और येही वज्ह है कि सदियां गुज़रने के बा वुजूद आज तक कोई भी क़ुरआने मजीद के दिये हुए चेलेन्ज का जवाब नहीं दे सका और न ही क़ियामत तक कोई दे सकेगा । क़ुरआने पाक के बे मिस्ल होने की बहुत सी वुजूहात हैं जिन्हें उ़लमा व मुफ़स्सिरीन ने अपनी किताबों में बहुत शर्हो बस्त़ के साथ बयान फ़रमाया है, हम यहां पर उन में से सिर्फ़ तीन वुजूहात बयान करते हैं । तफ़्सील के लिये बड़ी तफ़ासीर की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं ।

(1)...... फ़साह़तो बलाग़त

अ़रब के लोग फ़साह़तो बलाग़त के मैदान के शह सुवार थे और उन की सफ़ों में बहुत

www.dawateislami.net

से ऐसे लोग मौजूद थे जो कि बलाग़त के फ़न में आ'ला तरीन मन्सब रखने वाले, उ़म्दा अल्फ़ाज़ बोलने वाले, छोटे और बड़े जुम्लों को बड़ी फ़साह़त से तय्यार करने वाले थे और थोड़े कलाम में बेहतरीन तसर्रुफ़ कर लेते थे, अपनी मुराद को बड़े उ़म्दा अन्दाज़ में बयान करते, कलाम में फ़साह़तो बलाग़त के तमाम फ़ुनून की रिआ़यत करते और ऐसे माहिर थे कि फ़साह़तो बलाग़त के जिस दरवाज़े से चाहते दाख़िल हो जाते थे, अल ग़रज़ दुन्या में हर त़रफ़ उन की फ़साह़तो बलाग़त का डंका बजता था और लोग फ़साह़तो बलाग़त में उन का मुक़ाबला करने की ताब न रखते थे।

उन अहले अ़रब को फ़साह़तो बलाग़त के मैदान में अगर किसी ने आ़जिज़ किया है तो वोह कलाम क़ुरआने मजीद है, इस मुक़द्दस किताब की फ़साह़तो बलाग़त ने अहले अ़रब की अ़क़्लों को ह़ैरान कर दिया और अपनी मिस्ल लाने से आ़जिज़ कर दिया।

(2)...... तिलावते क़ुरआन की तासीर

क़ुरआने मजीद के बे मिस्ल होने की एक दलील येह भी है कि इसे पढ़ने और सुनने वाला कभी सेर नहीं होता और न ही इस से उक्ताता है बल्कि वोह इस की जितनी ज़ियादा तिलावत करता है उतनी ही ज़ियादा शीरीनी और लज़्ज़त पाता है और बार बार इस की तिलावत करने से इस की मह़ब्बत दिल में रासिख़ होती जाती है और इस के इ़लावा कोई और कलाम अगर्चे वोह कितनी ही ख़ूबी वाला और कितना ही फ़सीह़ो बलीग़ क्यूं न हो उसे बार बार पढ़ने से दिल उक्ता जाता है और जब उसे दोबारा पढ़ा जाए तो त़बीअ़त बेज़ार हो जाती है। क़ुरआने मजीद की इस शान के बारे में ह़ज़रते ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ुरआन वोह है जिस की बरकत से ख़्वाहिशात बिगड़ती नहीं और जिस से दूसरी ज़बानें मुश्तबह नहीं होती, उ़लमा इस से सेर नहीं होते, येह बार बार दोहराए जाने से पुराना नहीं होता और इस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होते।"(1)

नीज़ क़ुरआने मजीद की आयात में रो'ब, क़ुव्वत और जलाल है कि जब कोई इन की तिलावत करता है या इन्हें किसी से सुनता है तो उस के दिल पर हैबत त़ारी हो जाती है ह़त्ता कि जिसे क़ुरआने पाक की आयात के मआ़नी समझ में न आ रहे हों और वोह आयात की तफ़्सीर भी न जानता हो, उस पर भी रिक़्क़त त़ारी हो जाती है, जब कि क़ुरआने मजीद के इ़लावा और किसी किताब में येह वस्फ़ नहीं पाया जाता अगर्चे वोह कैसे ही अन्दाज़ में क्यूं न लिखी गई हो।

(1) ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل القرآن، ٤/٤١٤-٤١٥، الحدیث: ٢٩١٥.

www.dawateislami.net

(3)...... ग़ैब की ख़बरें

क़ुरआने पाक में मुस्तक़्बिल के मुतअ़ल्लिक़ जो ख़बरें दी गईं वोह तमाम की तमाम पूरी हुईं मसलन ज़मानए नबवी में रूमियों के ईरानियों पर ग़ालिब आने की ख़बर दी गई और वोह सो फ़ीसद पूरी हुई।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर तुम येह न कर सको और तुम हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। वोह काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है।

﴿وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ : **उस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।**﴾ इस आयत में आदमी से काफ़िर और पथ्थर से वोह बुत मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार पूजते हैं और उन की महब्बत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्कार करते हैं। पथ्थरों का जहन्नम में जाना उन पथ्थरों की सज़ा नहीं बल्कि उन के पुजारियों की सज़ा के लिये होगा या'नी पुजारियों को उन पथ्थरों के साथ सज़ा दी जाएगी।

﴿اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ : **वोह काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है।**﴾ इस से मा'लूम हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है क्यूं कि यहां माज़ी के अल्फ़ाज़ हैं नीज़ "काफ़िरों के लिये" फ़रमाने में येह भी इशारा है कि मोमिनीन **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से जहन्नम में हमेशा दाख़िले से महफ़ूज़ रहेंगे क्यूं कि जहन्नम बतौरे खास काफ़िरों के लिये पैदा की गई है।

وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا

www.dawateislami.net

الْاَنْهٰرُؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًاۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِیْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُۙ وَ اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًاؕ وَ لَهُمْ فِیْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌۗۙ وَّ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़ुश ख़बरी दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा सूरत देख कर कहेंगे येह तो वोही रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था और वोह सूरत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उन के लिये बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं और वोह उन में हमेशा रहेंगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों को ख़ुश ख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किये कि उन के लिये ऐसे बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे, येह तो वोही रिज़्क़ है जो हमें पहले दिया गया था हा़लां कि उन्हें मिलता जुलता फल (पहले) दिया गया था और उन (जन्नतियों) के लिये उन बाग़ों में पाकीज़ा बीवियां होंगी और वोह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे।

﴾وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ﴿ **: और उन लोगों को ख़ुश ख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किये ।** ﷻ **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत येह है कि क़ुरआन में तरहीब या'नी डराने के साथ तरग़ीब भी ज़िक्र फ़रमाता है, इसी लिये कुफ़्फ़ार और उन के आ'माल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के बा'द मोमिनीन और उन के आ'माल व सवाब का ज़िक्र फ़रमाया और उन्हें जन्नत की बिशारत दी। **सालिहा़त** या'नी नेकियां वोह अ़मल हैं जो शर्अ़न अच्छे हों, इन में फ़राइज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं। यहां भी ईमान और अ़मल को जुदा जुदा बयान किया जिस से मा'लूम हुवा कि अ़मल ईमान का जुज़्व नहीं हैं।[1]

1 ......تفسیر مدارک، البقرة، تحت الآیة: ۲۵، ص ۳۸.

www.dawateislami.net

﴿وَ اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا﴾ : **और उन्हें मिलता जुलता फल दिया गया ।** जन्नत के फल रंगत में आपस में मिलते जुलते होंगे मगर ज़ाएक़े में जुदा जुदा होंगे, इस लिये एक दफ़्आ़ मिलने के बा'द जब दोबारा फल मिलेंगे तो जन्नती कहेंगे कि येह फल तो हमें पहले भी मिल चुका है मगर जब वोह खाएंगे तो उस से नई लज़्ज़त पाएंगे और उन का लुत्फ़ बहुत ज़ियादा हो जाएगा। इस का येह भी मा'ना बयान किया गया है कि उन्हें दुन्यवी फलों से मिलते जुलते फल दिये जाएंगे ताकि वोह उन फलों से मानूस रहें लेकिन जन्नती फल ज़ाएक़े में दुन्यवी फलों से बहुत आ'ला होंगे।

﴿اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ﴾ : **पाकीज़ा बीवियां ।** जन्नती बीवियां ख़्वाह हूरें हों या और सब की सब तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबर्रा होंगी, न जिस्म पर मैल होगा न कोई और गन्दगी। इस के साथ ही वोह बद मिज़ाजी और बद ख़ुल्क़ी से भी पाक होंगी।[1]

﴿وَ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ﴾ : **वोह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे ।** जन्नती न कभी फ़ना होंगे और न जन्नत से निकाले जाएंगे। लिहाज़ा जन्नत और अहले जन्नत के लिये फ़ना नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَسْتَحْیٖۤ اَنْ یَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا
الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا فَیَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَ اَمَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا
فَیَقُوْلُوْنَ مَا ذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ یُضِلُّ بِهٖ كَثِیْرًا ۙ وَّ یَهْدِیْ بِهٖ
كَثِیْرًا ؕ وَ مَا یُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۶﴾ۙ

वक़्फ़े लाज़िम

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** इस से ह़या नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए मच्छर हो या इस से बढ़ कर तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में **अल्लाह** का क्या मक़्सूद है, **अल्लाह** बहुतेरों को इस से गुमराह करता है और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं।

[1] ......تفسیر مدارك، البقرة، تحت الآية: ۲۵، ص ۳۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** इस से ह़या नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने के लिये कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए, मच्छर हो या इस से बढ़ कर। बहर ह़ाल ईमान वाले तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है और रहे काफ़िर तो वोह कहते हैं, इस मिसाल से **अल्लाह** की मुराद क्या है ? **अल्लाह** बहुत से लोगों को इस के ज़रीए गुमराह करता है और बहुत से लोगों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाता है और वोह इस के ज़रीए सिर्फ़ ना फ़रमानों ही को गुमराह करता है।

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَسْتَحْیٖۤ : **बेशक अल्लाह इस से ह़या नहीं फ़रमाता।**﴾ जब **अल्लाह** तआ़ला ने "सूरए बक़रह" (के दूसरे रुकूअ़) में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाईं तो मुनाफ़िक़ों ने येह ए'तिराज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला की शान इस से बुलन्द तर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के मा'बूदों की कमज़ोरी को मकड़ी के जालों वग़ैरा की मिसालों से बयान फ़रमाया तो काफ़िरों ने इस पर ए'तिराज़ किया। उस के रद में येह आयत नाज़िल हुई।(1)

चूंकि मिसालों का बयान ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ और मज़्मून को दिल नशीन करने वाला होता है और माहिरीने कलाम का येह त़रीक़ा है इस लिये मिसाल बयान करने पर ए'तिराज़ ग़लत़ है।

﴿یُضِلُّ بِهٖ كَثِیْرًا : **अल्लाह बहुत से लोगों को इस के ज़रीए गुमराह करता है।**﴾ इन अल्फ़ाज़ से काफ़िरों को जवाब दिया गया कि मिसालें बयान करने से **अल्लाह** तआ़ला का क्या मक़्सूद है नीज़ मोमिनों और काफ़िरों के मक़ूले इस की दलील हैं कि क़ुरआनी मिसालों के ज़रीए बहुत से लोग गुमराह होते हैं जिन की अ़क़्लों पर जहालत का ग़लबा होता है और जिन की आ़दत सिर्फ़ ज़िद, मुक़ाबला बाज़ी, इन्कार और मुख़ालफ़त होती है और कलाम के बिल्कुल मा'क़ूल, मुनासिब और मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ होने के बा वुजूद वोह इस का इन्कार करते हैं और इन्ही मिसालों के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला बहुत से लोगों को हिदायत देता है जो ग़ौर व तह़क़ीक़ के आ़दी होते हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते, जो जानते हैं कि ह़िक्मत येही है कि अ़ज़ीमुल मर्तबा चीज़ की मिसाल किसी क़द्रो क़ीमत वाली चीज़ से और ह़क़ीर चीज़ की मिसाल किसी अदना शै से दी जाती है जैसा कि ऊपर आयत नम्बर 17 में ह़क़ की मिसाल नूर से और बात़िल की मिसाल तारीकी से दी गई है। नुज़ूले क़ुरआन का अस्ल मक़्सद तो हिदायत है लेकिन चूंकि बहुत से लोग अपनी कम फ़हमी की वज्ह से क़ुरआन को सुन कर गुमराह भी होते हैं लिहाज़ा इस ए'तिबार से फ़रमाया कि क़ुरआन के ज़रीए बहुत से लोग गुमराह होते हैं।

(1)......تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآیة: ٢٦، ١/٣٦١، طبری، البقرة، تحت الآیة: ٢٦، ١/٢١٣-٢١٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

﴿وَمَا یُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِیْنَ : **और वोह इस के ज़रीए सिर्फ़ ना फ़रमानों ही को गुमराह करता है।**﴾ शरीअ़त में "फ़ासिक़" उस ना फ़रमान को कहते हैं जो कबीरा गुनाह का मुरतकिब हो। फ़िस्क़ के तीन दरजे हैं **एक तग़ाबी** वोह येह कि आदमी इत्तिफ़ाक़िया किसी कबीरा गुनाह का मुरतकिब हो जाए और उस को बुरा ही जानता रहा। **दूसरा इन्हिमाक** कि कबीरा गुनाहों का आ़दी हो गया और इस से बचने की परवा नहीं करता। **तीसरा जुहूद** कि ह़राम को अच्छा जान कर इरतिकाब करे इस दरजे वाला ईमान से मह़रूम हो जाता है। पहले दो दरजों में जब तक सब से बड़े कबीरा गुनाह या'नी कुफ़्रो शिर्क का इरतिकाब न करे वोह मोमिन व मुसल्मान है। मज़्कूरा आयत में फ़ासिक़ीन से वोही ना फ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो गए।(1)

اَلَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ
اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** के अ़ह्द को तोड़ देते हैं पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो **अल्लाह** के वा'दे को पुख़्ता होने के बा'द तोड़ डालते हैं और उस चीज़ को काटते हैं जिस के जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं तो येही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

﴿اَلَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ : **वोह जो अल्लाह का अ़ह्द तोड़ते हैं।**﴾ इस से वोह अ़ह्द मुराद है जो **अल्लाह** तआ़ला ने गुज़श्ता आस्मानी किताबों में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था। एक क़ौल येह है कि अ़ह्द तीन हैं :

पहला अ़ह्द वोह जो **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उस की रबूबिय्यत का इक़रार करें, इस का बयान सूरए आ'राफ़, आयत 172 में है। **दूसरा अ़ह्द** अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ मख़्सूस है कि रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाएं और

(1) ......روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶، ۱/۸۸.

www.dawateislami.net

दीन क़ाइम करें, इस का बयान सूरए अह़ज़ाब आयत 7 में है। **तीसरा अ़ह्द** उ़लमा के साथ ख़ास है कि ह़क़ को न छुपाएं, इस का बयान सूरए आले इ़मरान आयत 187 में है।

﴾مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖ : **जिस चीज़ का अल्लाह ने हुक्म दिया।**﴿ जिन चीज़ों के मिलाने का हुक्म दिया गया वोह येह हैं : **(1)** रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात जोड़ना, **(2)** मुसल्मानों के साथ दोस्ती व मह़ब्बत करना, **(3)** तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मानना, **(4)** तमाम किताबों की तस्दीक़ करना और ह़क़ पर जम्अ़ होना। इन को क़त्अ़ करने का मा'ना है रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न मानना और **अल्लाह** तआ़ला की किताबों की तस्दीक़ न करना।[1]

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : भला तुम क्यूंकर ख़ुदा के मुन्किर होगे ह़ालां कि तुम मुर्दा थे उस ने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की त़रफ़ पलट कर जाओगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम कैसे **अल्लाह** के मुन्किर हो सकते हो ह़ालां कि तुम मुर्दा थे तो उस ने तुम्हें पैदा किया फिर वोह तुम्हें मौत देगा फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा फिर उसी की त़रफ़ तुम्हें लौटाया जाएगा।

﴾كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ : **तुम कैसे अल्लाह के मुन्किर हो सकते हो।**﴿ तौह़ीद व नुबुव्वत के दलाइल और कुफ़्र व ईमान की जज़ा व सज़ा ज़िक्र करने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी ख़ास व आ़म ने'मतों का और क़ुदरत की अ़जीब निशानियों का ज़िक्र फ़रमाया और कुफ़्र की ख़राबी और बुराई को काफ़िरों के दिलों में बिठाने के लिये उन्हें ख़िताब किया कि तुम किस त़रह़ ख़ुदा के मुन्किर होते हो ह़ालां कि तुम्हारा अपना ह़ाल **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाने का तक़ाज़ा करता है क्यूं कि तुम बदन में रूह़ डाले जाने से पहले तमाम मराह़िल में मुर्दा थे या'नी कुछ न थे या बेजान जिस्म थे फिर उस ने तुम में रूह़ डाल कर तुम्हें ज़िन्दगी दी फिर ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, इस से या तो क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सुवाल के लिये होगी या क़ियामत की, फिर तुम ह़िसाब किताब और जज़ा के लिये

1 ......تفسیر بیضاوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷، ۱/۲۶۶.

www.dawateislami.net

उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे तो अपने इस ह़ाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अ़जीब है। इस आयत में ग़ौर करें तो हम मुसल्मानों के लिये भी नसीह़त है कि हम भी कुछ न थे लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने हमें ज़िन्दगी अ़त़ा की और ज़िन्दगी गुज़ारने के लवाज़िमात और ने'मतों से नवाज़ा तो उस की अ़त़ाओं से फ़ाएदा उठा कर उस की याद से ग़ाफ़िल होना और नाशुक्री और ग़फ़्लत की ज़िन्दगी गुज़ारना किसी त़रह़ हमारे शायाने शान नहीं है।

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًاۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍؕ وَ هُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ۠ (۲۹)

ع ۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन में है फिर आस्मान की त़रफ़ इस्तिवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह सब कुछ जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही है जिस ने जो कुछ ज़मीन में है सब तुम्हारे लिये बनाया फिर उस ने आस्मान के बनाने का क़स्द फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह हर शै का ख़ूब इ़ल्म रखता है।

﴿هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ : **वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया।**﴾ तमाम इन्सानों को फ़रमाया गया कि ज़मीन में जो कुछ दरिया, पहाड़, कानें, खेती, समुन्दर वग़ैरा हैं सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे दीनी व दुन्यावी फ़ाएदे के लिये बनाया है। **दीनी फ़ाएदा** तो येह है कि ज़मीन के अ़जाइबात देख कर तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मतो क़ुदरत की मा'रिफ़त नसीब हो और **दुन्यावी फ़ाएदा** येह कि दुन्या की चीज़ों को खाओ पियो और अपने कामों में लाओ जब तक **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कोई मुमानअ़त न हो। तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला का इन्कार कर सकते हो ?

एक अहम क़ाइदा

इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया वोह हमारे लिये मुबाह़ व ह़लाल है।[1]

1 ......تفسير روح المعانى، البقرة، تحت الآية: ۲۹، ۱/۲۹۱.

www.dawateislami.net

﴿وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ﴾ : **और वोह हर शै का ख़ूब इल्म रखता है।** काएनात की तख़्लीक़ और इसे वुजूद में लाना **अल्लाह** तआ़ला के कामिल इल्म की दलील है क्यूं कि ऐसी ह़िक्मत से भरी मख़्लूक़ का पैदा करना एक एक शै का इल्म रखे बिग़ैर मुम्किन और मुतसव्वर नहीं। काफ़िर मरने के बा'द ज़िन्दा होने को ना मुम्किन समझते थे, इन आयतों में काफ़िरों के इस अ़क़ीदे के ग़लत़ व बात़िल होने पर एक अ़ज़ीम दलील क़ाइम की गई है कि जब **अल्लाह** तआ़ला क़ुदरत व इल्म वाला है और जिस्म ह़यात की सलाह़िय्यत भी रखता है तो मौत के बा'द दोबारा ज़िन्दा करना कैसे ना मुम्किन हो सकता है ?

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةًؕ قَالُوْۤا
اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَۚ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं बोले क्या ऐसे को नाइब करेगा जो उस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया : मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : क्या तू ज़मीन में उसे नाइब बनाएगा जो उस में फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहाएगा ह़ालां कि हम तेरी ह़म्द करते हुए तेरी तस्बीह़ करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। फ़रमाया : बेशक मैं वोह जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

﴿وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىٕكَةِ﴾ : **और जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया।** ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और फ़िरिश्तों के वाक़िआ़त पर ज़िम्नी तब्सिरे से पहले एक मरतबा आयात की रोशनी में वाक़िआ़ ज़ेहन नशीन कर लें। **वाक़िए का ख़ुलासा : अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ से पहले फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं। इस पर फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू ज़मीन में उस को

www.dawateislami.net

नाइब बनाएगा जो उस में फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहाएगा ह़ालां कि हम हर वक़्त तेरी तस्बीह़ व तह़मीद करते हैं (या'नी तेरी ख़िलाफ़त के मुस्तह़िक़ हम हैं) । **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : जो मुझे मा'लूम है वोह तुम्हें मा'लूम नहीं फिर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ के बा'द उन्हें तमाम चीज़ों के नाम सिखा दिये और फिर उन चीज़ों को फ़िरिश्तों के सामने पेश कर के फ़रमाया कि अगर तुम इस बात में सच्चे हो कि तुम ही ख़िलाफ़त के मुस्तह़िक़ हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ । फ़िरिश्तों ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें तो सिर्फ़ इतना इल्म है जितना तू ने हमें सिखा दिया, सारी इल्मो ह़िक्मत तो तेरे पास है । फिर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम इन्हें इन तमाम अश्या के नाम बता दो । जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन्हें उन अश्या के नाम बता दिये तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ फ़िरिश्तो ! क्या मैं ने तुम्हें न कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की तमाम छुपी चीज़ें जानता हूं और मैं तुम्हारी ज़ाहिर और पोशीदा बातों को जानता हूं ।

﴿اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً﴾ : **मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं ।** ख़लीफ़ा उसे कहते हैं जो अह़कामात जारी करने और दीगर इख़्तियारात में अस्ल का नाइब होता है । अगर्चे तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ा हैं लेकिन यहां ख़लीफ़ा से ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मुराद हैं और फ़िरिश्तों को ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िलाफ़त की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन के ख़लीफ़ा बनाए जाने की ह़िक्मत दरयाफ़्त करें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर हो कि उन को पैदाइश से पहले ही ख़लीफ़ा का लक़ब अ़ता कर दिया गया है और आस्मान वालों को उन की पैदाइश की बिशारत दी गई ।

फ़िरिश्तों से मश्वरे के अन्दाज़ में कलाम करने का सबब

याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस को किसी से मश्वरे की ह़ाजत हो, अलबत्ता यहां ख़लीफ़ा बनाने की ख़बर फ़िरिश्तों को ज़ाहिरी तौ़र पर मश्वरे के अन्दाज़ में दी गई । इस से इशारतन मा'लूम होता है कि कोई अहम काम करने से पहले अपने मा तह़्त अफ़राद से मश्वरा कर लिया जाए ताकि उस काम से मुतअ़ल्लिक़ उन के ज़ेहन में कोई ख़लिश हो तो उस का इज़ाला हो जाए या कोई ऐसी मुफ़ीद राय मिल जाए जिस से वोह काम मज़ीद बेहतर अन्दाज़ से हो जाए ।

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से मश्वरा करने का हुक्म दिया, जैसा कि सूरए आले इमरान में इर्शादे बारी तआ़ला है : "وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ" और कामों में उन से मश्वरा लेते रहो।(1)

और अन्सार सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم का वस्फ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ" और उन का काम उन के बाहमी मश्वरे से (होता) है।(2)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस्तिख़ारा किया वोह ना मुराद नहीं होगा और जिस ने मश्वरा किया वोह नादिम नहीं होगा और जिस ने मियाना रवी की वोह कंगाल नहीं होगा।"(3)

﴿اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا : **क्या तू ज़मीन में उसे नाइब बनाएगा जो उस में फ़साद फैलाएगा।**﴾ इस कलाम से फ़िरिश्तों का मक़्सद ए'तिराज़ करना न था बल्कि इस से अपने तअ़ज्जुब का इज़्हार और ख़लीफ़ा बनाने की ह़िक्मत दरयाफ़्त करना था और इन्सानों की त़रफ़ फ़साद फैलाने की जो उन्हों ने निस्बत की तो इस फ़साद का इ़ल्म उन्हें या तो सराह़त के साथ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से दिया गया था या उन्हों ने लौहे़ मह़फ़ूज़ से पढ़ा था और या उन्हों ने जिन्नात पर क़ियास किया था क्यूं कि वोह ज़मीन पर आबाद थे और वहां फ़सादात करते थे।(4)

फ़िरिश्ते क्या हैं ?

फ़िरिश्ते नूरी मख़्लूक़ हैं, गुनाहों से मा'सूम हैं, **अल्लाह** तआ़ला के मुअ़ज़्ज़ज़ मुकर्रम बन्दे हैं, खाने पीने और मर्द या औ़रत होने से पाक हैं। फ़िरिश्तों के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द नम्बर 1 के सफ़्ह़ा 90 से "मलाएका का बयान" मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴿اِنِّىْۤ اَعْلَمُ : **बेशक मैं ज़ियादा जानता हूं।**﴾ फ़िरिश्तों के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि जो मैं जानता हूं वोह तुम नहीं जानते क्यूं कि ख़लीफ़ा बनाने में मेरी ह़िक्मतें तुम पर ज़ाहिर नहीं। बात येह है कि इन्ही इन्सानों में अम्बिया भी होंगे, औलिया भी और उ़लमा भी और येह ह़ज़रात इ़ल्मी व अ़मली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ़ होंगे।

1......ال عمران: ١٥٩. 2......شورى: ٣٨.
3......معجم الاوسط، من اسمه محمد، ٥/٧٧، الحديث: ٦٦٢٧.
4......بيضاوى، البقرة، تحت الآية: ٣٠، ١/٢٨٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓىٕكَةِۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ(۳۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए फिर सब अश्या मलाएका पर पेश कर के फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखा दिये फिर उन सब अश्या को फ़िरिश्तों के सामने पेश कर के फ़रमाया : अगर तुम सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ।

﴾وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا﴿ **: और अल्लाह तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखा दिये।** **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर तमाम अश्या पेश फ़रमाईं और बतौरे इल्हाम के आप को उन तमाम चीज़ों के नाम, काम, सिफ़ात, ख़ुसूसिय्यात, उसूली उ़लूम और सन्अ़तें सिखा दीं।[1]

﴾اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ﴿ **: मुझे इन के नाम बताओ।** तमाम चीज़ें फ़िरिश्तों के सामने पेश कर के उन से फ़रमाया गया कि अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि तुम से ज़ियादा इल्म वाली कोई मख़्लूक़ नहीं और ख़िलाफ़त के तुम ही मुस्तहिक़ हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्यूं कि ख़लीफ़ा का काम इख़्तियार इस्ति'माल करना, कामों की तदबीर करना और अ़दलो इन्साफ़ करना है और येह बिग़ैर इस के मुम्किन नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों का इल्म हो जिन पर उसे इख़्तियार दिया गया है और जिन का उसे फ़ैसला करना है।

इल्म के फ़ज़ाइल

इस आयत में **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़िरिश्तों पर अफ़्ज़ल होने का सबब "इल्म" ज़ाहिर फ़रमाया : इस से मा'लूम हुवा कि इल्म ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इबादत से अफ़्ज़ल है। हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ, तुम्हारा इस हाल

[1] ......بیضاوی، البقرة، تحت الآية: ٣١، ١/٢٨٥-٢٨٦.

www.dawateislami.net

में सुब्ह़ करना कि तुम ने **अल्लाह** तआ़ला की किताब से एक आयत सीखी हो, येह तुम्हारे लिये 100 रक्अ़तें नफ़्ल पढ़ने से बेहतर है और तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने इ़ल्म का एक बाब सीखा हो जिस पर अ़मल किया गया हो या न किया गया हो, तो येह तुम्हारे लिये 1000 नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है।''(1)

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इ़ल्म की फ़ज़ीलत इ़बादत की फ़ज़ीलत से ज़ियादा है और तुम्हारे दीन की भलाई तक़्वा (इख़्तियार करने में) है।''(2)

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं

वाक़िअ़ए आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं, और येह अ़क़ीदा कई दलाइल से साबित है, उन में से 6 दलाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने अपना ख़लीफ़ा बनाया और येह इस बात की दलील है कि वोह फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि हर शख़्स येह बात अच्छी त़रह़ जानता है बादशाह के नज़्दीक लोगों में सब से बड़े मर्तबे वाला वोह शख़्स होता है जो विलायत और तसर्रुफ़ में बादशाह का क़ाइम मक़ाम हो।

(2)...... ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से ज़ियादा इ़ल्म रखने वाले हैं और जिसे ज़ियादा इ़ल्म हो वोह अफ़्ज़ल होता है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : क्या इ़ल्म वाले और बे इ़ल्म बराबर हैं ?

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरिश्तों को येह हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सज्दा करें, इस से मा'लूम हुवा कि वोह फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि सज्दे में इन्तिहाई तवाज़ोअ़ होती है और किसी के सामने इन्तिहाई तवाज़ोअ़ वोही करेगा जो उस से कम मर्तबे वाला हो।

1 ......ابن ماجه، كتاب السنّة، باب فى فضل من تعلّم القرآن وعلّمه، ١/١٤٢، الحديث: ٢١٩.

2 ......معجم الاوسط، من اسمه على، ٣/٩٢، الحديث: ٣٩٦٠.

3 ......زمر: ٩.

www.dawateislami.net

(4)...... **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने आदम और नूह़ और इब्राहीम की औलाद और इमरान की औलाद को सारे जहान वालों पर चुन लिया।

इस का मा'ना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तमाम मख़्लूक़ात पर चुन लिया और चूंकि मख़्लूक़ात में फ़िरिश्ते भी दाख़िल हैं इस लिये इन पर भी उन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को चुना गया लिहाज़ा वोह फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हुए।

(5)...... **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने तुम्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर ही भेजा।

और चूंकि आ़लमीन में फ़िरिश्ते भी दाख़िल हैं इस लिये रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के लिये भी रह़मत हुए और जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़िरिश्तों के लिये रह़मते मुत़्लक़ हैं तो यक़ीनन इन से अफ़्ज़ल भी हैं।

(6)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे दो वज़ीर आस्मानों में हैं और दो वज़ीर ज़मीन में हैं। आस्मानों में मेरे दो वज़ीर ह़ज़रते जिब्राईल और ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं और ज़मीन में मेरे दो वज़ीर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا हैं।''(3)

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बादशाह की त़रह़ हैं और ह़ज़रते जिब्राईल और ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام दोनों इन के वज़ीरों की त़रह़ हैं और चूंकि बादशाह वज़ीर से अफ़्ज़ल होता है इस लिये साबित हुवा कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं।(4)

1......ال عمران: ٣٣.

2......انبياء: ١٠٧.

3......مستدرك، كتاب التفسير، من سورة البقرة، ٢/٦٥٣-٦٥٤، الحديث: ٣١٠٠-٣١٠١.

4......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ٣٤، ١/٤٤٥.

www.dawateislami.net

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَاؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इ़ल्म नहीं मगर जितना तू ने हमें सिखाया बेशक तू ही इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (फ़िरिश्तों ने) अ़र्ज़ की : (ऐ **अल्लाह**!) तू पाक है। हमें तो सिर्फ़ इतना इ़ल्म है जितना तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही इ़ल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।

﴿لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا﴾ **: हमें सिर्फ़ इतना इ़ल्म है जितना तू ने हमें सिखा दिया।** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़ल्मी फ़ज़्लो कमाल को देख कर फ़िरिश्तों ने बारगाहे इलाही में अपने इ़ज्ज़ का ए'तिराफ़ किया और इस बात का इज़्हार किया कि उन का सुवाल ए'तिराज़ करने के लिये न था बल्कि ह़िक्मत मा'लूम करने के लिये था और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और इस की पैदाइश की ह़िक्मत मा'लूम हो गई जिस को वोह पहले न जानते थे। इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इ़ल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ता'लीम की निस्बत करना सह़ीह़ है अगर्चे उस को मुअ़ल्लिम न कहा जाएगा क्यूं कि मुअ़ल्लिम पेशावर ता'लीम देने वाले को कहते हैं।

قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۙ وَ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (फिर **अल्लाह** ने) फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम इन्हें अश्या के नाम बता दो । तो जब आदम ने उन्हें उन अश्या के नाम बता दिये तो (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : (ऐ फ़िरिश्तो !) क्या मैं ने तुम्हें न कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की तमाम छुपी चीज़ें जानता हूं और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो ।

﴿ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ : **मैं तुम्हारी ज़ाहिरी व पोशीदा बातों को जानता हूं ।**﴾ फ़िरिश्तों ने जो बात ज़ाहिर की थी वोह येह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी और ख़ूनरेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वोह येह थी कि ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ वोह ख़ुद हैं और **अल्लाह** तआला उन से ज़ियादा इल्मो फ़ज़्ल वाली कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा । आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि फ़िरिश्तों के उ़लूमो कमालात में ज़ियादती होती है ।[(1)]

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ۗ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के इलावा सब ने सज्दा किया । उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया और काफ़िर हो गया ।

﴿ اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ : **आदम को सज्दा करो ।**﴾ **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को तमाम मौजूदात का नमूना और आ़लमे रूहानी व जिस्मानी का मज्मूआ़ बनाया और फ़िरिश्तों के लिये हुसूले कमालात का वसीला बनाया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सज्दा करें क्यूं कि इस में ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की फ़ज़ीलत का ए'तिराफ़ और अपने मक़ूले "اَتَجْعَلُ فِیْهَا" की मा'ज़िरत भी है । बहर ह़ाल तमाम फ़िरिश्तों को सज्दे का हुक्म

1 ......بيضاوى، البقرة، تحت الآية: ٣٣، ١/٢٩٠-٢٩١.

www.dawateislami.net

दिया गया और मलाइकए मुक़र्रबीन समेत तमाम फ़िरिश्तों ने सज्दा किया लेकिन शैत़ान ने सज्दा करने से इन्कार कर दिया और तकब्बुर के त़ौर पर येह समझता रहा कि वोह ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अफ़्ज़ल है और इस जैसे इन्तिहाई इबादत गुज़ार, फ़िरिश्तों के उस्ताद और मुक़र्रबे बारगाहे इलाही को सज्दे का हुक्म देना ह़िक्मत के ख़िलाफ़ है। अपने इस बात़िल अ़क़ीदे, हुक्मे इलाही से इन्कार और ता'ज़ीमे नबी से तकब्बुर की वज्ह से वोह काफ़िर हो गया। ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इब्लीस का वाक़िआ़ क़ुरआने पाक की सात सूरतों में बयान किया गया है।

सज्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम

इस आयत में सज्दे का ज़िक्र है इस मुनासबत से यहां सज्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम बयान किये जाते हैं :

(1)...... सज्दे की दो क़िस्में हैं : (1) इबादत का सज्दा (2) ता'ज़ीम का सज्दा। "इबादत का सज्दा" किसी को मा'बूद समझ कर किया जाता है और "ता'ज़ीम का सज्दा" वोह होता है जिस से मस्जूद (या'नी जिसे सज्दा किया जाए उस) की ता'ज़ीम मक़्सूद होती है।

(2)...... येह क़त़ई अ़क़ीदा है कि "सज्दए इबादत" **अल्लाह** तआ़ला के लिये ख़ास है किसी और के लिये नहीं हो सकता और न किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ हुवा।

(3)...... फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ता'ज़ीमी सज्दा किया था और वोह बा क़ाइदा पेशानी ज़मीन पर रखने की सूरत में था, सिर्फ़ सर झुकाना न था।

(4)...... ता'ज़ीमी सज्दा पहली शरीअ़तों में जाइज़ था हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ कर दिया गया अब किसी के लिये जाइज़ नहीं है। लिहाज़ा किसी पीर या वली या मज़ार को ता'ज़ीमी सज्दा करना ह़राम है लेकिन येह याद रहे कि ता'ज़ीमी सज्दा करने वालों पर येह बोहतान बांधना कि येह मा'बूद समझ कर सज्दा करते हैं येह उस ता'ज़ीमी सज्दे से बड़ा जुर्म है क्यूं कि येह मुसल्मानों को मुश्रिक व काफ़िर कहना है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن ने ग़ैरुल्लाह को ता'ज़ीमी सज्दा करने के ह़राम होने पर एक अ़ज़ीम किताब लिखी है जिस का नाम है : "اَلزُّبۡدَةُ الزَّكِيَّة فِیۡ تَحۡرِيۡمِ سُجُوۡدِ التَّحِيَّة (ग़ैरुल्लाह के लिये सज्दए ता'ज़ीमी के ह़राम होने का बयान)" येह किताब फ़तावा रज़विय्या की 22वीं जिल्द में मौजूद है और इस का मुत़ालआ़ करना इन्तिहाई मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तकब्बुर की मज़म्मत

इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि तकब्बुर ऐसा ख़तरनाक अ़मल है कि येह बा'ज़ अवक़ात बन्दे को कुफ़्र तक पहुंचा देता है, इस लिये हर मुसलमान को चाहिये कि वोह तकब्बुर करने से बचे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तकब्बुर ह़क़ की मुख़ालफ़त करने और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।"(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि इसी तकब्बुर ने शैत़ान को इस बात पर उभारा था कि वोह ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सज्दा न करे।"(2)

ह़ज़रते सलमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी दूसरे लोगों के मुक़ाबले में अपनी ज़ात को बुलन्द समझता रहता है यहां तक कि उसे तकब्बुर करने वालों में लिख दिया जाता है, फिर उसे वोही अ़ज़ाब पहुंचेगा जो तकब्बुर करने वालों को पहुंचा।"(3)

وَ قُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ
شِئْتُمَا ۪ وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۵﴾
فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे मगर इस पेड़ के पास न जाना कि ह़द से बढ़ने वालों में हो जाओगे। तो शैत़ान ने जन्नत से उन्हें लग़्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से

1 ......مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص ٦١، الحدیث: ١٤٧(٩١).
2 ......ابن عساکر، حرف القاف، ذکر من اسمه قابیل، ٤٩/٤٠.
3 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الکبر، ٤٠٣/٣، الحدیث: ٢٠٠٧.

www.dawateislami.net

उन्हें अलग कर दिया और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरत्ना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और बिग़ैर रोक टोक के जहां तुम्हारा जी चाहे खाओ अलबत्ता इस दरख़्त के क़रीब न जाना वरना हद से बढ़ने वालों में शामिल हो जाओगे। तो शैतान ने उन दोनों को जन्नत से लग़्ज़िश दी पस उन्हें वहां से निकलवा दिया जहां वोह रहते थे और हम ने फ़रमाया : तुम नीचे उतर जाओ। तुम एक दूसरे के दुश्मन बनोगे और तुम्हारे लिये एक ख़ास वक़्त तक ज़मीन में ठिकाना और (ज़िन्दगी गुज़ारने का) सामान है।

﴿يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ﴾ : **ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो।** यहां से हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इब्लीस का वाक़िआ बयान किया गया है उस का ख़ुलासा दर्जे ज़ैल है :

हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इब्लीस के वाक़िए का ख़ुलासा

हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सज्दा न करने की वज्ह से शैतान मरदूद हुवा था लिहाज़ा वोह हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नुक़्सान पहुंचाने की ताक में रहा। **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और हज़रते हव्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाया कि जन्नत में रहो और जहां दिल करे बे रोक टोक खाओ अलबत्ता इस दरख़्त के क़रीब न जाना। शैतान ने उन्हें वस्वसा डाला और कहने लगा कि तुम्हें तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने इस दरख़्त से इस लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम फ़िरिश्ते न बन जाओ या तुम हमेशा ज़िन्दा रहने वाले न बन जाओ और इस के साथ शैतान ने क़सम खा कर कहा कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं। इस पर उन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है, इस ख़याल से हज़रते हव्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उस में से कुछ खाया फिर हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दिया तो उन्हों ने भी खा लिया और येह ख़याल किया कि **अल्लाह** तआला की मुमानअ़त तह़रीमी न थी बल्कि तन्ज़ीही थी या'नी ह़राम क़रार देने के लिये न थी बल्कि एक ना पसन्दीदगी का इज़्हार था। यहां हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इज्तिहाद में ख़ता हुई और ख़ताए इज्तिहादी गुनाह नहीं होती। चुनान्चे शैतान के धोके की वज्ह से उन्हों ने उस मम्नूआ़ दरख़्त का फल खा लिया और फल खाते ही उन के पर्दे के मक़ाम बे पर्दा हो गए और वोह उसे छुपाने के लिये उन पर पत्ते

www.dawateislami.net

डालने लगे। उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या मैं ने तुम्हें इस दरख़्त से मन्अ़ नहीं किया था ? और मैं ने तुम से येह न फ़रमाया था कि शैत़ान तुम्हारा खुला दुश्मन है ? इस के बा'द हुक्मे इलाही हुवा कि तुम ज़मीन पर उतर जाओ। अब तुम्हारी औलाद आपस में एक दूसरे की दुश्मन होगी और तुम एक ख़ास वक़्त तक ज़मीन में रहोगे। ज़मीन पर तशरीफ़ आवरी के बा'द ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक अ़र्से तक अपनी लग़्ज़िश की मुआ़फ़ी मांगते रहे ह़त्ता कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से चन्द कलिमात सिखाए गए, फिर जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन कलिमात के साथ तौबा व मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त की तो वोह क़बूल हुई।

एक अहम मस्अला

यहां एक अहम मस्अला याद रखना ज़रूरी है क्यूं कि आज कल बेबाकी का दौर है और जिस का जो जी चाहता है बोल देता है यहां तक कि मज़्हबी मुआ़मलात में और अहम अ़क़ाइद में भी ज़बान की बे एह़तियात़ियां शुमार से बाहर हैं, इस में सब से ज़ियादा बेबाकी जिस मस्अले में देखने में आती है वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का जन्नती मम्नूआ़ दरख़्त से फल खाना है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ग़ैरे तिलावत में अपनी त़रफ़ से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ ना फ़रमानी व गुनाह की निस्बत **ह़राम** है। अइम्मए दीन ने इस की तसरीह़ फ़रमाई बल्कि एक जमाअ़ते उ़लमाए किराम ने इसे **कुफ़्र** बताया (है)।(1) लिहाज़ा अपने ईमान और क़ब्रो आख़िरत पर तर्स खाते हुए इन मुआ़मलात में ख़ास त़ौर पर अपनी ज़बान पर क़ाबू रखें।

﴿وَلَا تَقْرَبَا : **और क़रीब न जाना** ﴾ आयत में अस्ल मुमानअ़त दरख़्त का फल खाने की है लेकिन इस के लिये फ़रमाया कि क़रीब न जाना। इस त़र्ज़े ख़ित़ाब से उ़लमा ने येह मस्अला निकाला है कि अस्ल फ़े'ल के इरतिकाब से बचाने के लिये उस के क़रीब जाने से भी रोकना चाहिये जैसे बच्चे के सीढ़ियों से गिरने का अन्देशा होता है तो उसे सिर्फ़ सीढ़ियों पर खड़ा होने से मन्अ़ नहीं करते बल्कि सीढ़ियों के क़रीब भी नहीं जाने देते। इसी त़रह़ बीसियों कामों में उ़लमाए किराम इसी अन्देशे से मन्अ़ फ़रमाते हैं कि कोई फ़े'ल बज़ाते ख़ुद मन्अ़ नहीं होता लेकिन अगर लोग उस के क़रीब जाएंगे तो मम्नूअ़ का इरतिकाब कर बैठेंगे जैसे औ़रतों को क़ब्रिस्तान जाने से मन्अ़ करने में येही ह़िक्मत है। इसी से पीर और मशाइख़ के फ़े'ल का इस्तिद्लाल हो सकता है कि वोह मुरीदों की तरबियत के लिये बा'ज़ अवक़ात किसी जाइज़ काम से भी रोक देते हैं क्यूं कि वोह जाइज़ काम किसी बुराई तक पहुंचने का ज़रीआ़ बन सकता है।

1...... फ़तावा रज़विय्या, 1/823

www.dawateislami.net

﴿فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾ **: वरना तुम ज़ियादती करने वालों से हो जाओगे।** ''ज़ुल्म'' का मा'ना है ''किसी शै को उस की अपनी जगह के इलावा किसी और जगह रखना'' और यहां आयत में ज़ुल्म ख़िलाफ़े औला के मा'ना में है।

अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़ालिम कहने वाले का हुक्म

याद रहे कि अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़ालिम कहना गुस्ताख़ी और तौहीन है और जो अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़ालिम कहे वोह काफ़िर है। **अल्लाह** तआ़ला मालिक और मौला है, वोह अपने मक़्बूल बन्दों के बारे में जो चाहे फ़रमाए, किसी दूसरे की क्या मजाल कि वोह अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ कोई ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाए और **अल्लाह** तआ़ला के इस त़रह़ के ख़ित़ाबात को अपनी जुरअतो बेबाकी की दलील बनाए। इस बात को यूं समझें कि बादशाह के मां बाप बादशाह को डांटें और येह देख कर शाही मह़ल का जमा'दार भी बादशाह को उन्ही अल्फ़ाज़ में डांटने लगे तो उस अह़मक़ का क्या अन्जाम होगा ? हमें तो अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और मह़बूबाने ख़ुदा की ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदबो इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया है और हम पर येही लाज़िम है।

अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इस्मत का बयान

येह भी याद रहे कि अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मा'सूम होते हैं और इन से कोई गुनाह सरज़द नहीं होता, इन के मा'सूम होने पर बीसियों दलाइल हैं। यहां पर सिर्फ़ 3 दलाइल दर्ज किये जाते हैं :

(1)...... अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के चुने हुए और मुख़्लिस बन्दे हैं, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में वाज़ेह़ त़ौर पर इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने इन्हें एक खरी बात से चुन लिया वोह उस (आख़िरत के) के घर की याद है।

---

(1)......ص: ٤٦.

www.dawateislami.net

और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह हमारे चुने हुए बन्दों में से है।

और जो **अल्लाह** तआला के मुख़्लिस बन्दे हैं शैतान उन्हें गुमराह नहीं कर सकता, जैसा कि इस का येह ए'तिराफ़ ख़ुद क़ुरआने मजीद में मौजूद है :

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِیَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۸۲﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने कहा : तेरी इज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा। मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं।

इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर शैतान का दाव नहीं चलता कि वोह उन से गुनाह या कुफ़्र करा दे।

(2)...... गुनाह करने वाला मज़म्मत किये जाने के लाइक़ है, जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में **अल्लाह** तआला ने मुत़्लक़न इर्शाद फ़रमा दिया कि

وَ اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَیْنَ الْاَخْیَارِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक वोह हमारे नज़्दीक बेहतरीन चुने हुए बन्दों में से हैं।

(3)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं और जब फ़िरिश्तों से गुनाह सादिर नहीं होता तो ज़रूरी है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से भी गुनाह सादिर न हो क्यूं कि अगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से भी गुनाह सादिर हो तो वोह फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल नहीं रहेंगे।

فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

1 ......یوسف: ٢٤. 2 ......ص: ٨٢-٨٣. 3 ......ص: ٤٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमात सीख लिये तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की। बेशक वोही बहुत तौबा क़बूल करने वाला बड़ा मेहरबान है।

﴿فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ﴾ **: फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमात सीख लिये।** हज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी दुआ़ में येह कलिमात अ़र्ज़ किये :

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ

"ऐ हमारे रब ! हम ने अपनी जानों पर ज़ियादती की और अगर तू ने हमारी मग़्फ़िरत न फ़रमाई और हम पर रह़्म न फ़रमाया तो ज़रूर हम नुक़्सान वालों में से हो जाएंगे।"

और इस के साथ येह रिवायत भी है जो ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इज्तिहादी ख़ता हुई तो (अ़र्सए दराज़ तक ह़ैरानो परेशान रहने के बा'द) उन्हों ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, मुझे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में मुआ़फ़ फ़रमा दे। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को कैसे पहचाना ह़ालां कि अभी तो मैं ने इसे पैदा भी नहीं किया ? ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तू ने मुझे पैदा कर के मेरे अन्दर रूह़ डाली और मैं ने अपने सर को उठाया तो मैं ने अ़र्श के पायों पर "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" लिखा देखा, तो मैं ने जान लिया कि तू ने अपने नाम के साथ उस का नाम मिलाया है जो तुझे तमाम मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा मह़बूब है। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ आदम ! तू ने सच कहा, बेशक वोह तमाम मख़्लूक़ में मेरी बारगाह में सब से ज़ियादा मह़बूब है। तुम उस के वसीले से मुझ से दुआ़ करो मैं तुम्हें मुआ़फ़ कर दूंगा और अगर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) न होते तो मैं तुम्हें पैदा न करता।"[1]

1 ......مستدرك، ومن كتاب آيات رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم التى فى دلائل النبوة، استغفار آدم عليه السلام بحق محمد صلى اللّٰه عليه وسلم، ٥١٧/٣، الحديث: ٤٢٨٦، معجم الاوسط، من اسمه محمد، ٣٦/٥، الحديث: ٦٥٠٢، دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب غزوة تبوك، باب ماجاء فى تحديث رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم... الخ، ٤٨٩/٦.

www.dawateislami.net

बारगाहे इलाही के मक़्बूल बन्दों के वसीले से दुआ मांगना जाइज़ है

इस रिवायत से येह भी साबित हुवा कि मक़्बूलाने बारगाह के वसीले से, बहक़्क़े फुलां और बजाहे फुलां के अल्फ़ाज़ से दुआ मांगना जाइज़ और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है। येह याद रहे कि **अल्लाह** तआला पर किसी का ह़क़ वाजिब नहीं होता लेकिन वोह अपने मक़्बूलों को अपने फ़ज़्लो करम से ह़क़ देता है और इसी फ़ज़्लो करम वाले ह़क़ के वसीले से दुआ की जाती है। इस त़रह़ का ह़क़ सह़ीह़ अह़ादीस से साबित है जैसे बुख़ारी में है : ''مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّدْخِلَهُ الْجَنَّةَ'' जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान रखे और नमाज़ क़ाइम करे और रमज़ान के रोज़े रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जन्नत में दाख़िल करे।(1)

तौबा का मफ़्हूम और इस के अरकान

आयत में तौबा का लफ़्ज़ है। येह लफ़्ज़ जब **अल्लाह** तआला के लिये आए तो इस का मा'ना **अल्लाह** तआला का अपनी रह़मत के साथ बन्दे पर रुजूअ़ करना है या बन्दे की तौबा क़बूल करना है और येह लफ़्ज़ जब बन्दे के लिये आए तो दूसरे मफ़्हूम में है। तौबा का अस्ल मफ़्हूम **अल्लाह** तआला की त़रफ़ रुजूअ़ करना है। इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम का ख़ुलासा है कि तौबा की तीन शराइत़ हैं : **(1)** गुनाह से रुक जाना, **(2)** गुनाह पर शरमिन्दा होना, **(3)** गुनाह को छोड़ देने का पुख़्ता इरादा करना। अगर गुनाह की तलाफ़ी और तदारुक हो सकता हो तो वोह भी ज़रूरी है।(2)

जैसे अगर किसी ने नमाज़ें छोड़ी हों तो इस की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। यूंही किसी ने दूसरे का माल चोरी या ग़स्ब या रिश्वत के त़ौर पर लिया है तो तौबा के लिये माल वापस करना भी ज़रूरी है।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ
هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسير، باب درجات المجاهدين فی سبيل الله... الخ، ٢/٢٥٠، الحديث: ٢٧٩٠.
2 ......رياض الصالحين، باب التوبة، ص٥.

www.dawateislami.net

وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ۠ (۳۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने फ़रमाया तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा उसे न कोई अन्देशा न कुछ ग़म। और वोह जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुटलाएंगे वोह दोज़ख़ वाले हैं उन को हमेशा उस में रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम ने फ़रमाया : तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उन्हें न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे। और वोह जो कुफ़्र करेंगे और मेरी आयतों को झुटलाएं वोह दोज़ख़ वाले होंगे, वोह हमेशा उस में रहेंगे।

﴿فَمَنْ تَبِعَ هُدَایَ : **तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करें।**﴾ हिदायते इलाही के पैरव कारों के लिये बिशारत है कि उन्हें न तो क़ियामत की बड़ी घबराहट का ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे बल्कि बे ग़म जन्नत में दाख़िल होंगे। यहां जम्अ़ के सीग़े के साथ सब को उतरने का फ़रमाया, इस में ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ इन की औलाद भी मुराद है जो अभी ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्त में थी।

یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِیْۤ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْۚ وَاِیَّایَ فَارْهَبُوْنِ (۴۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ या'क़ूब की औलाद याद करो मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा और ख़ास मेरा ही डर रखो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ या'क़ूब की औलाद! याद करो मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा और सिर्फ़ मुझ से डरो।

﴿یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ : **ऐ बनी इसराईल।**﴾ "**इस्राअ**" का मा'ना "अ़ब्द" या'नी बन्दा और "**ईल**" से मुराद "**अल्लाह**" तो इसराईल का मा'ना हुवा "अ़ब्दुल्लाह" या'नी **अल्लाह** का

www.dawateislami.net

बन्दा । येह इबरानी ज़बान का लफ़्ज़ है और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का लक़ब है ।(1)

उ़रूजो ज़वाल और इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत का फ़ल्सफ़ा

यहां आयत नम्बर **40** से ले कर आयत नम्बर **150** तक की अक्सर आयात में बनी इसराईल के उ़रूजो ज़वाल, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत, इक़्बालो इदबार, जज़ा व सज़ा और क़ौमी व इज्तिमाई़ अच्छे बुरे किरदार का तज़्किरा है । फिर इसी बयान को कुरआने पाक में बार बार दोहराया गया है । इस बार बार के तकरार में एक बड़ी ह़िक्मत क़ौमों के उ़रूजो ज़वाल और इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत का फ़ल्सफ़ा समझाना और मुसल्मानों को इस से इ़ब्रत दिलाना है कि जिस त़रह़ बनी इसराईल पैग़म्बरों की औलाद होने, जलीलुल क़द्र अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्मत होने और तौरात जैसी किताब रखने के बा वुजूद अपने ए'तिक़ाद व अ़मल के बिगाड़ पर ज़लीलो रुस्वा और मग़्लूबो मक़्हूर हुई जब कि तौबा व रुजूअ़ और नबी व किताब की ता'लीमात पर अ़मल करने की सूरत में मुअ़ज़्ज़ज़ व ग़ालिब हुई इसी त़रह़ उम्मते मुस्लिमा भी अपने उ़रूजो ज़वाल के अस्बाब को इसी आईने में देख सकती है । आज सब पूछते हैं कि मुसल्मान मग़्लूबिय्यत, ज़िल्लत और पस्ती का शिकार क्यूं हैं ? कुरआन में बयान कर्दा बनी इसराईल का क़ौमी और इज्तिमाई़ किरदार और मौजूदा दौर के मुसल्मानों का क़ौमी और इज्तिमाई़ किरदार सामने रख कर मुवाज़ना कर लें । ख़ुद ही समझ आ जाएगा कि अगर बनी इसराईल को कांटे बोने पर कांटे मिलते थे तो हमें कांटे बोने के बदले आम क्यूं मिलेंगे ?

﴿اُذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ : **मेरा एह़सान याद करो ।**﴾ इस आयत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने के यहूदियों को मुख़ात़ब कर के उन से फ़रमाया गया : ऐ बनी इसराईल ! मेरे वोह एह़सान याद करो जो मैं ने तुम्हारे आबाओ अज्दाद पर किये जैसे उन्हें फ़िरऔ़न से नजात दी, उन के लिये दरिया में गुज़र गाह बना दी, बादल को उन पर साएबान बना दिया, खाने के लिये उन पर मन्न व सल्वा उतारा, उन के लिये पानी के चश्मे जारी किये, उन्हें त़ाक़त वर क़ौमों पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई और तौरैत जैसी अ़ज़ीम किताब उन्हें अ़त़ा फ़रमाई और मेरा वोह एह़सान याद करो जो मैं ने तुम पर किया कि तुम्हें अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़माना अ़त़ा किया जिन की आमद की बिशारत तौरात और इन्जील में दी गई है ।(2)

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٤٠، ص٤٨.

2 ......جلالين مع صاوى، البقرة، تحت الاية: ٤٠، ١/٥٦-٥٧، مدارك، البقرة، تحت الآية: ٤٠، ص٤٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ख़याल रहे कि यहां याद करने से मुराद सिर्फ़ ज़बान से तज़्किरा करना नहीं है बल्कि इस से मुराद येह है कि वोह **अल्लाह** तआला की इताअतो बन्दगी कर के इन ने'मतों का शुक्र बजा लाएं क्यूं कि किसी ने'मत का शुक्र न करना उस को भुला देने के मुतरादिफ़ है।

﴿وَاَوْفُوْا بِعَهْدِیْ﴾ : **और मेरा अह़्द पूरा करो।** ﴾ या'नी ऐ बनी इसराईल ! तुम मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ला कर वोह अह़्द पूरा करो जो तुम ने मुझ से किया और मैं उस के सवाब के तौर पर तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर के तुम्हारे साथ किया हुवा अह़्द पूरा करूंगा और अपने अह़्द को पूरा करने के मुआमले में किसी और से डरने की बजाए सिर्फ़ मुझ से डरो।

इस आयत में जिस अह़्द का ज़िक्र है उस के बारे में **एक क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह अह़्द है जो सूरए माइदह में यूं मज़्कूर है :

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَیْ عَشَرَ نَقِیْبًاؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مَعَكُمْؕ لَىٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَیْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَ اَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने बनी इसराईल से अह़्द लिया और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये और **अल्लाह** ने फ़रमाया : बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात देते रहो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम से तुम्हारे गुनाह मिटा दूंगा और ज़रूर तुम्हें उन बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं तो इस (अह़्द) के बा'द तुम में से जिस ने कुफ़्र किया तो वोह ज़रूर सीधी राह से भटक गया।

दूसरा क़ौल येह है कि इस से वोह अह़्द मुराद है जो **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़रीए बनी इसराईल से लिया कि मैं आख़िरी ज़माने में ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में एक नबी को भेजने वाला हूं तो जिस ने उन की पैरवी की और उस नूर की तस्दीक़ की जिसे वोह ले कर आए तो मैं उस के गुनाह बख़्श दूंगा और उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और उसे दुगना सवाब अ़ता करूंगा।(2)

1 ......المائدہ: ١٢.

2 ......جلالین، البقرة، تحت الآیة: ٤٠، ص٨-٩، خازن، البقرة، تحت الآیة: ٤٠، ١/٤٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَ لَا تَكُوْنُوْۤا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۪ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا٘ وَّ اِیَّایَ فَاتَّقُوْنِ ﴿۴۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक़ करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से पहले उस के मुन्किर न बनो और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो और मुझी से डरो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ईमान लाओ उस (किताब) पर जो मैं ने उतारी है वोह तुम्हारे पास मौजूद किताब की तस्दीक़ करने वाली है और सब से पहले उस का इन्कार करने वाले न बनो और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत न वुसूल करो और मुझ ही से डरो।

﴾وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ﴿ **: और उस पर ईमान लाओ जिसे मैं ने नाज़िल किया।** ﴾ या'नी ऐ बनी इसराईल के उ़लमा ! इस क़ुरआन पर ईमान लाओ जो मैं ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया है और वोह तुम्हारे पास मौजूद किताब तौरात व इन्जील की तस्दीक़ करता है और तुम अहले किताब में से क़ुरआने मजीद और मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से अव्वलीन मुन्किर न बनो वरना जो लोग तुम्हारे पीछे लग कर कुफ़्र इख़्तियार करेंगे तो उन का वबाल भी तुम पर होगा।

नेकी और बुराई की इब्तिदा करने वाले के बारे में एक उसूल

याद रहे कि नेकी और बदी के हर काम में येही उसूल नाफ़िज़ है कि उस की इब्तिदा करने वालों को पैरवी करने वालों के अ़मल का सवाब या अ़ज़ाब भी मिलेगा। ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस्लाम में कोई अच्छा त़रीक़ा ईजाद किया तो उस के लिये उस त़रीक़े को ईजाद करने का सवाब होगा और उस के बा'द जो लोग उस त़रीक़े पर अ़मल करेंगे उन का सवाब भी उस (ईजाद करने वाले) को मिलेगा और उन (अ़मल करने वालों) के अपने सवाब में भी कोई कमी न होगी, और जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा ईजाद किया तो उस पर इस का गुनाह होगा और इस के बा'द जो लोग उस पर अ़मल करेंगे उन का गुनाह भी इसे होगा और इन (अ़मल करने वालों) के अपने

गुनाह में भी कोई कमी न होगी।"(1)

﴿وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا﴾ **: और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत वुसूल न करो।** इस आयत में दुन्या के ह़क़ीर व ज़लील माल के बदले **अल्लाह** तआ़ला की आयात बेचने से मन्अ़ किया गया है और यहां उन आयात से तौरैत व इन्जील की वोह आयात मुराद हैं जिन में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ो अ़लामात का बयान है। कुरआने पाक की येह आयात उन यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुईं जिन्हें अपनी क़ौम से नज़राने और वज़ाइफ़ मिलते थे और उन्हें डर था की अगर क़ौम को मा'लूम हो गया कि तौरात में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह निशानियां बयान की गई हैं तो वोह इन सरदारों को छोड़ कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएंगे और यूं इन के नज़राने बन्द हो जाएंगे। इसी को फ़रमाया जा रहा है कि दुन्या के क़लील माल के बदले **अल्लाह** तआ़ला की आयतें बेचते हैं।

अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छुपाने वाले ग़ौर करें

इस आयत और इस के बा'द वाली आयत से मा'लूम हुवा कि यहूदी उ़लमा अपने बात़िल मफ़ादात, नफ़्सानी ख़्वाहिशात और जाहिलाना तवह्हुमात की बिना पर अपनी किताबों में मौजूद उन आयात को छुपाते थे जिन में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान और इन के औसाफ़ बयान किये गए और अगर कभी कोई आयत बयान भी की तो उस के साथ बा'ज़ बात़िल बातें मिला कर बयान करते थे ह़ालां कि उ़लमा का मन्सब तो ह़क़ बात का ए'लान करना, ह़क़ और बात़िल को जुदा करना, माली व ज़ाती मफ़ादात को दीन पर कुरबान करना और दीन का मुह़ाफ़िज़ बनना है। यहूदियों के बयान कर्दा त़र्ज़े अ़मल और उ़लमा के मन्सब को सामने रखते हुए उन लोगों को अपनी ह़ालत पर ग़ौर करने की ह़ाजत है जिन का हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान बयान करने के मुआ़मले में सिल्सिला कहीं और ही जा कर मिलता है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़क़ से बात़िल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता ह़क़ न छुपाओ।

1 ......مسلم، كتاب العلم، باب من سنّ سنّة حسنة او سيئة... الخ، ص١٤٣٧، الحديث: ١٥(١٠١٧).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ह़क़ को बात़िल के साथ न मिलाओ और जान बूझ कर ह़क़ न छुपाओ।

﴿وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ﴾ **: और ह़क़ को बात़िल से न मिलाओ।** यहूदी उ़लमा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत व नुबुव्वत से मुतअ़ल्लिक़ तौरात की आयतें छुपाते भी थे और कभी कुछ बयान करते तो उन के साथ अपनी त़रफ़ से कुछ बात़िल बातें भी मिला दिया करते थे मसलन अपने पैरव कारों से कहते कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबी तो हैं लेकिन हमारे लिये नहीं बल्कि दूसरों के लिये हैं। यहूदी उ़लमा ने इस त़रह़ की कई बातें घड़ी हुई थीं जिन के ज़रीए़ वोह जान बूझ कर ह़क़ छुपाने और ह़क़्क़ो बात़िल को मिला कर धोका देने के त़रीक़े इख़्तियार किये हुए थे। अ़ल्लामा अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि हर एक को चाहिये कि वोह ह़क़ को बात़िल से न मिलाए और न ही ह़क़ को छुपाए क्यूं कि इस में फ़साद और नुक़्सान है और येह भी मा'लूम हुवा कि ह़क़ बात जानने वाले पर उसे ज़ाहिर करना वाजिब है और ह़क़ बात को छुपाना उस पर ह़राम है।[1]

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात अदा करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।

﴿وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ﴾ **: और नमाज़ क़ाइम रखो।** इस से पहली आयात में यहूदियों को ईमान लाने का हुक्म दिया गया, फिर उन्हें ह़क़ को बात़िल के साथ मिलाने और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दलाइल छुपाने से मन्अ़ किया गया, अब उन के सामने वोह शरई अह़काम बयान किये जा रहे हैं जो ईमान क़बूल करने के बा'द उन पर लाज़िम हैं, चुनान्चे फ़रमाया गया कि ऐ यहूदियो! तुम ईमान क़बूल कर के मुसल्मानों की त़रह़ पांच नमाज़ें उन के हुक़ूक़ और शराइत़ के साथ अदा करो और जिस त़रह़ मुसल्मान अपने मालों की ज़कात अदा करते हैं इसी त़रह़ तुम भी अपने मालों की ज़कात दो और मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٤٢، ١/٤٩.

www.dawateislami.net

और उन के सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करो ।(1)

बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल

इस आयत में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने की तरग़ीब भी है और अह़ादीस में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने के कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ।''(2)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने कामिल वुज़ू किया, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये चला और इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।''(3)

ह़ज़रत अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के मस्जिद को जाए और लोगों को इस ह़ालत में पाए कि वोह नमाज़ पढ़ चुके हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उसे भी जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने वालों की मिस्ल सवाब देगा और उन के सवाब से कुछ कम न होगा ।''(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुनाफ़िक़ीन पर सब से ज़ियादा भारी इ़शा और फ़ज्र की नमाज़ है और वोह जानते कि इस में क्या है ? तो घिसटते हुए आते और बेशक मैं ने इरादा किया कि नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म दूं फिर किसी को हुक्म फ़रमाऊं कि लोगों को नमाज़ पढ़ाए और मैं अपने हमराह कुछ लोगों को जिन के पास लकड़ियों के गठ्ठे हों उन के पास ले कर जाऊं जो नमाज़ में ह़ाज़िर नहीं होते और उन के घर उन पर आग से जला दूं ।''(5)

---

1 ......تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ:۴۳، ۱/۴۸۵، روح البیان، البقرۃ،تحت الآیۃ: ۴۳، ۱/۱۲۱، خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۴۲، ۱/۴۹، ملتقطاً۔

2 ......بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ۱/۲۳۲، الحدیث: ۶۴۵.

3 ......شعب الایمان، باب العشرون من شعب الایمان وھو باب فی الطھارۃ، ۳/۹، الحدیث: ۲۷۲۷.

4 ......ابو داؤد، کتاب الصلاۃ، باب فیمن خرج یرید الصلاۃ فسبق بھا، ۱/۲۳۴، الحدیث: ۵۶۴.

5 ......مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ... الخ، ص۳۲۷، الحدیث: ۲۵۲(۶۵۱).

www.dawateislami.net

बुज़ुर्गाने दीन के नज़्दीक बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की अहम्मिय्यत किस क़दर थी इस का अन्दाज़ा इन दो हिकायात से लगाया जा सकता है :

(1)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने एक बाग़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, जब वापस हुए तो लोग नमाज़े अ़स्र अदा कर चुके थे, येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा और इर्शाद फ़रमाया : "मेरी अ़स्र की जमाअ़त फ़ौत हो गई है, लिहाज़ा मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मेरा बाग़ मसाकीन पर सदक़ा है ताकि येह उस काम का कफ़्फ़ारा हो जाए।"[1]

(2)...... ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मेरी नमाज़ की जमाअ़त फ़ौत हो गई तो ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के इलावा किसी ने मेरी ता'ज़ियत न की और अगर मेरा बच्चा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार **(10,000)** से ज़ियादा अफ़राद मुझ से ता'ज़ियत करते क्यूं कि लोगों के नज़्दीक दीनी नुक़्सान दुन्यवी नुक़्सान से कमतर है।"[2]

अल्लाह तआ़ला सब मुसल्मानों को बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ह़ालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपने आप को भूलते हो ह़ालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، باب صلاة الجماعة، الكبيرة الخامسة والثمانون، ١/٣١١.

2 ......احياء علوم الدين، كتاب اسرار الصلاة ومهماتها، الباب الاول فى فضائل الصلاة والسجود... الخ، ١/٢٠٣.

www.dawateislami.net

﴿اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ : **क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो ?**﴾ येह आयते मुबारका उन यहूदी उ़लमा के बारे में है जिन से उन के मुसल्मान रिश्तेदारों ने दीने इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा : तुम इस दीन पर क़ाइम रहो, मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीन ह़क़ और कलाम सच्चा है। या उन यहूदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुश्रिकीने अ़रब को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मब्ऊ़स होने की ख़बर दी थी और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करने की हिदायत की थी, फिर जब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए तो येह हिदायत करने वाले ह़सद से ख़ुद काफ़िर हो गए तो उन्हें फ़रमाया गया कि लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और ख़ुद को भुलाते हो।(1)

याद रहे कि इस आयत का शाने नुज़ूल ख़ास होने के बा वुजूद आ़म है और हर नेकी का हुक्म देने वाले के लिये इस में ताज़ियानए इ़ब्रत है।

क़ौलो फ़े'ल के तज़ाद का नुक़्सान

यहां एक बात ज़ेहन नशीन रखें कि मा'मूली फ़साद उस वक़्त बहुत बड़े फ़ितने और तबाही की शक्ल इख़्तियार कर लेता है जब उस का इरतिकाब करने वाले ख़ुद वोह लोग हों जो दूसरों को तो भलाई का हुक्म देते हों लेकिन जब उन के अ़मल से पर्दा उठे तो मा'लूम हो कि गुनाहों के सब से बड़े मरीज़ येही हैं, उन्हें याद रखना चाहिये कि क़ौलो फ़े'ल का तज़ाद और ख़ल्वतो जल्वत का फ़र्क़ दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये बहुत नुक़्सान देह है, दुन्या में तो येह इस क़दर नुक़्सान देह होता है कि एक मरतबा किसी के मुतअ़ल्लिक़ येह तज़ाद साबित हो जाए तो लोग ज़िन्दगी भर उसे मुंह लगाना पसन्द नहीं करते बल्कि ऐसों के अ़मल को देख कर न जाने कितने लोग हमेशा के लिये दीन ही से मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और आख़िरत में इस का नुक़्सान कितना ज़ियादा है इस का अन्दाज़ा इस रिवायत और ह़िकायत से ख़ुद ही लगा लीजिये, चुनान्चे

ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ ले जाने का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंच कर उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे, उस के मह़ल्लात और उस में अहले जन्नत के लिये **अल्लाह** तआ़ला की तय्यार कर्दा ने'मतें देख लेंगे, तो निदा दी जाएगी : इन्हें जन्नत से लौटा दो क्यूं कि इन का जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं। (येह निदा सुन कर) वोह ऐसी ह़सरत

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٤٤، ١/٥٠.

www.dawateislami.net

के साथ लौटेंगे कि इस जैसी ह़सरत के साथ उन से पहले लोग न लौटे होंगे, फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपना सवाब और अपने औलिया के लिये तय्यार कर्दा ने'मतें दिखाने से पहले ही हमें जहन्नम में दाख़िल कर देता तो येह हम पर ज़ियादा आसान होता।" **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : "मैं ने इरादतन तुम्हारे साथ ऐसा किया है (और इस की वज्ह येह है कि) जब तुम तन्हाई में होते तो बड़े बड़े गुनाह कर के मेरे साथ ए'लाने जंग करते और जब लोगों से मिलते तो आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ मिलते थे, तुम लोगों को अपनी वोह ह़ालत दिखाते थे जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये नहीं होती थी, तुम लोगों से डरते और मुझ से नहीं डरते थे, तुम लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते थे, तुम लोगों की वज्ह से बुरा काम करना छोड़ देते लेकिन मेरी वज्ह से बुराई न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने सवाब से मह़रूम करने के साथ साथ अपने अ़ज़ाब का मज़ा भी चखाऊंगा।"(1)

और ह़ज़रते इब्राहीम तैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं मौत और (मरने के बा'द हड्डियों की) बोसीदगी को याद करने के लिये कसरत से क़ब्रिस्तान में आता जाता था, एक रात मैं क़ब्रिस्तान में था कि मुझ पर नींद ग़ालिब आ गई और मैं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में एक खुली हुई क़ब्र देखी और एक कहने वाले को येह कहते हुए सुना : "येह ज़न्जीर पकड़ो और इस के मुंह में दाख़िल कर के इस की शर्मगाह से निकालो" तो वोह मुर्दा कहने लगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या मैं ने क़ुरआन नहीं पढ़ा ? क्या मैं ने तेरे ह़ुरमत वाले घर का ह़ज नहीं किया ?" फिर वोह इसी त़रह़ एक के बा'द दूसरी नेकी गिनवाने लगा तो मैं ने सुना "तू लोगों के सामने येह आ'माल किया करता था लेकिन जब तू तन्हाई में होता तो ना फ़रमानियों के ज़रीए़ मुझ से मुक़ाबला करता और तुम ने मेरा कुछ ख़याल न किया।(2)"

बे अ़मल भी नेकी की दा'वत दे

याद रहे कि इस आयत की मुराद वा'ज़ो नसीह़त करने वालों को तक़्वा व परहेज़ गारी पर उभारना है, बे अ़मल को वा'ज़ से मन्अ़ करना मक़्सूद नहीं, या'नी येह फ़रमाया है कि जब दूसरों को वा'ज़ो नसीह़त करते हो तो ख़ुद भी अ़मल करो, येह नहीं फ़रमाया कि जब अ़मल नहीं करते तो वा'ज़ो नसीह़त क्यूं करते हो ? क्यूं कि अ़मल करना एक वाजिब है और दूसरों को बुराई से रोकना दूसरा वाजिब है। अगर एक वाजिब पर अ़मल नहीं तो दूसरे से क्यूं रुका

1 ......معجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ٤/١٣٥-١٣٦، الحديث: ٥٤٧٨.
2 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، خاتمة فى التحذير من جملة المعاصى... الخ، ١/٣١.

www.dawateislami.net

जाए।[1]

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हम उस वक़्त तक (दूसरों को) नेक आ'माल करने की दा'वत न दें जब तक हम ख़ुद तमाम आ'माल न करने लग जाएं और हम उस वक़्त तक (लोगों को) बुरे कामों से मन्अ़ न करें जब तक हम ख़ुद तमाम बुरे कामों से रुक न जाएं ? हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(ऐसा न करो) बल्कि तुम नेक आ'माल करने का हुक्म दो अगर्चे तुम ख़ुद तमाम नेक आ'माल नहीं करते और बुरे आ'माल करने से मन्अ़ करो अगर्चे तुम तमाम बुरे आ'माल से बाज़ नहीं आए।"[2]

وَ اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِیْنَۙ(۴۵)
الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ۠(۴۶)

ع ۵ | ۵ | ۷

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं। जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की त़रफ़ फिरना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सब्र और नमाज़ से मदद ह़ासिल करो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं। जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उन्हें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।

﴿وَ اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ : **और सब्र और नमाज़ से मदद ह़ासिल करो।**﴾ इस आयत की **एक तफ़्सीर** येह है कि इस से पहली आयात में बनी इसराईल को सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने, इन की शरीअ़त पर अ़मल करने, सरदारी तर्क करने और मन्सब व माल की मह़ब्बत दिल से निकाल देने का हुक्म दिया गया और इस आयत में उन से फ़रमाया जा रहा है कि ऐ बनी इसराईल ! अपने नफ़्स को लज़्ज़तों से रोकने के लिये सब्र से मदद चाहो और अगर सब्र के साथ साथ नमाज़ से भी मदद ह़ासिल करो तो सरदारी और

1 ......بیضاوی، البقرة، تحت الآیة: ٤٤، ١/٣١٦.
2 ......معجم الاوسط، باب المیم، من اسمه محمد، ٥/٧٧، الحدیث: ٦٦٢٨.

www.dawateislami.net

मन्सब व माल की महब्बत दिल से निकालना तुम्हारे लिये आसान हो जाएगा, बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है अलबत्ता उन लोगों पर भारी नहीं जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं। **दूसरी तफ़्सीर** येह है कि ऐ मुसल्मानो ! तुम रिज़ाए इलाही के हुसूल और अपनी ह़ाजतों की तक्मील में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो।(1)

سُبْحٰنَ اللہ ! क्या पाकीज़ा ता'लीम है। सब्र की वज्ह से क़ल्बी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा है और नमाज़ की बरकत से **अल्लाह** तआला से तअ़ल्लुक़ मज़बूत होता है और येह दोनों चीज़ें परेशानियों को बरदाश्त करने और उन्हें दूर करने में सब से बड़ी मुआ़विन हैं।

﴿وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِیْنَ﴾ **: बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं।** आयत के इस हिस्से और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि गुनाहों और ख़्वाहिशात से भरे हुए दिलों पर नमाज़ बहुत बोझल होती है और इ़श्क़ो महब्बते इलाही से लबरेज़ और ख़ौफ़े ख़ुदा से झुके हुए दिलों पर नमाज़ बोझ नहीं बल्कि नमाज़ उन के लिये लज़्ज़तो सुरूर और रूह़ानी व क़ल्बी मे'राज का सबब बनती है और येह वोह लोग हैं जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पर यक़ीन रखते हैं और उस मौला करीम के दीदार की तड़प रखते हैं।

इस में बिशारत है कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की ने'मत नसीब होगी, नीज़ **अल्लाह** तआला से मुलाक़ात और उस की त़रफ़ रुजूअ़ में तरग़ीब व तरहीब दोनों हैं और इन दोनों को पेशे नज़र रखना नमाज़ में ख़ुशूअ़ पैदा होने का ज़रीआ है, गोया नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ क़ाइम रखने का हुक्म भी दिया और इस के हुसूल का त़रीक़ा भी बता दिया।

يٰبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَ اَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ औलादे या'क़ूब याद करो मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और येह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ या'क़ूब की औलाद ! याद करो मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और येह कि मैं ने तुम्हें इस सारे ज़माने पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٤٥، ١/٥٠.

www.dawateislami.net

﴿ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْ ﴾ **: ऐ या'कूब की औलाद ! मेरा एह़सान याद करो ।** यहां से एक बार फिर बनी इसराईल को **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात याद करने का हुक्म दिया गया है ताकि वोह **अल्लाह** तआ़ला के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त तर्क करने से डरें और उन पर हुज्जत पूरी हो जाए ।(1)

याद रहे कि इन आयात में बनी इसराईल के उन लोगों से ख़ित़ाब किया जा रहा है जो सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस ज़माने में मौजूद थे और उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की जो ने'मतें याद करने का हुक्म दिया जा रहा है वोह येह हैं :

(1).......... तमाम अहले ज़माना पर फ़ज़ीलतो बरतरी, **(2)**.......... दरिया में रास्ता बन जाना, **(3)**.......... फ़िरऔ़न से नजात, **(4)**.......... तौरात का अ़त़ा होना, **(5)**.......... बछड़े की पूजा पर मुआ़फ़ी मिल जाना, **(6)**.......... एक गुरोह का मरने के बा'द ज़िन्दा किया जाना, **(7)**.......... बादलों से साया मिलना, **(8)**.......... मन्न व सल्वा नाज़िल होना, **(9)**.......... पानी के बारह चश्मे जारी हो जाना, **(10)**.......... ज़मीनी अनाज अ़त़ा किया जाना वग़ैरा, येह तमाम ने'मतें उन के आबाओ अज्दाद को अ़त़ा की गई थीं और चूंकि जो ने'मत आबाओ अज्दाद को मिली हो वोह उन की औलाद के ह़क़ में भी ने'मत होती है इस लिये उन से फ़रमाया जा रहा है कि ऐ या'क़ूब की औलाद ! मेरा वोह एह़सान याद करो जो मैं ने तुम पर किया और मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी कर के और इन के दीन में दाख़िल हो कर मेरी उन ने'मतों का शुक्र अदा करो । बनी इसराईल की ने'मतों को सामने रख कर उम्मते मुह़म्मदिय्यह पर होने वाले इन्आ़मात को शुमार करें तो हम समझ सकते हैं कि शुक्र गुज़ारी का तक़ाज़ा हम से किस क़दर मत़लूब है ।

﴿ اَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴾ **: मैं ने तुम्हें तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई ।** इस से मुराद येह है कि बनी इसराईल को उन के ज़माने में तमाम लोगों पर फ़ज़ीलत अ़त़ा की गई, और जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद हुई तो येह फ़ज़ीलत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को सब उम्मतों से अफ़्ज़ल बना दिया जैसा कि इर्शाद फ़रमाया :

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٤٥، ١/٥٠.

www.dawateislami.net

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ मुसल्मानो !) तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों (की हिदायत) के लिये ज़ाहिर की गई ।

وَ اتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْــٴًـا وَّ لَا یُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ
وَّ لَا یُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ ले कर उस की जान छोड़ी जाए और न उन की मदद हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरे की त़रफ़ से बदला न देगी और न कोई सिफ़ारिश मानी जाएगी और न उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा और न उन की मदद की जाएगी ।

﴿لَا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْــٴًـا : **कोई जान किसी दूसरे की त़रफ़ से बदला न देगी ।**﴾ या'नी ऐ बनी इसराईल ! क़ियामत के उस दिन से डरो जिस दिन कोई भी शख़्स किसी काफ़िर की त़रफ़ से बदला न देगा और न काफ़िर के बारे में किसी की कोई सिफ़ारिश मानी जाएगी और न उस काफ़िर से जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात के बदले कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा और न उन कुफ़्फ़ार से **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब दूर कर के उन की मदद की जाएगी ।(2)

शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला कैसा है ?

इस से मा'लूम हुवा कि क़ियामत के दिन काफ़िर को न कोई काफ़िर नफ़्अ़ पहुंचा सकेगा और न कोई मुसल्मान, उस दिन शफ़ाअ़त सिर्फ़ मुसल्मान के लिये होगी जैसा कि दीगर आयात में बयान हुवा अलबत्ता येह बात याद रखनी चाहिये कि शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला ऐसा ही है जैसे अच्छे डॉक्टर के मिल जाने की उम्मद पर कोई ज़हर खा ले या हड्डियों के माहिर डॉक्टर के मिलने की उम्मीद पर गाड़ी के नीचे आ कर सारे बदन की हड्डियां तुड़वा ले ।

1 ......ال عمران: ۱۱۰. 2 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ۴۸، ۱/۱۲۶-۱۲۷.

www.dawateislami.net

وَ اِذْ نَجَّیْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ یُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَ یَسْتَحْیُوْنَ نِسَآءَكُمْؕ وَ فِیْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَظِیْمٌ ﴿۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि तुम पर बुरा अ़ज़ाब करते थे तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते और उस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से बड़ी बला थी या बड़ा इन्आ़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़नियों से नजात दी जो तुम्हें बहुत बुरा अ़ज़ाब देते थे, तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देते और उस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से बड़ी आज़्माइश थी।

﴾وَ اِذْ نَجَّیْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ﴿ : **और जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़नियों से नजात दी।** इस से पहली आयात में बनी इसराईल पर की गई ने'मतों का इज्माली त़ौर पर ज़िक्र हुवा और अब यहां से उन ने'मतों को तफ़्सील के साथ बयान किया जा रहा है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल ! मेरी वोह ने'मत याद करो कि जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़न की पैरवी करने वालों से नजात दी जो तुम्हें बहुत बुरा अ़ज़ाब देते थे। फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल पर निहायत बेदर्दी से मेह़नतो मशक़्क़त के दुश्वार काम लाज़िम कर रखे थे, पथ्थरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उन की कमरें और गरदनें ज़ख़्मी हो गई थीं, ग़रीबों पर टेक्स मुक़र्रर किये हुए थे जो ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल जब्रन वुसूल किये जाते थे और जो टेक्स न दे पाता उसे सख़्त सज़ाएं मिलती थीं।(1)

इस फ़िरऔ़नियत का कुछ नमूना उन मुसल्मान ममालिक में देखा जा सकता है जहां कुफ़्फ़ार ने पन्जे गाड़ कर मुसल्मानों पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़ रखे हैं और मुसल्मानों के लिये उ़क़ूबत ख़ाने और ख़ुसूसी जेलें बना रखी हैं।

1 ......تفسیر كبیر، البقرة، تحت الآیة: ۴۹، ۱/۵۰۴-۵۰۵.

www.dawateislami.net

फ़िरऔन का मुख़्तसर तआरुफ़

जिस त़रह़ फ़ारस के बादशाह का लक़ब किस्रा, रूम के बादशाह का क़ैसर और ह़बशा के बादशाह का लक़ब नजाशी था इसी त़रह़ क़िब्त़ी और अ़मालिक़ा क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले, मिस्र के बादशाहों का लक़ब फ़िरऔ़न होता था। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने के फ़िरऔ़न का नाम वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रयान था और इस आयत में उसी का ज़िक्र है। उस की उ़म्र चार सो साल से ज़ियादा हुई, नीज़ इस आयत में आले फ़िरऔ़न से उस के पैरव कार मुराद हैं।

﴿يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ : **वोह तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते थे।**﴾ फ़िरऔ़न ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ से एक आग आई और उस ने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्त़ियों को जला डाला जब कि बनी इसराईल को कोई नुक़्सान नहीं हुवा। इस ख़्वाब से उसे बड़ी वह़शत हुई, काहिनों ने ता'बीर दी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरी हलाकत और तेरी सल्त़नत की तबाही का सबब बनेगा। येह सुन कर फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लड़का पैदा हो उसे क़त्ल कर दिया जाए।(1) यूं हज़ारों की ता'दाद में बच्चे क़त्ल किये गए। क़ुदरते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द मरने लगे तो क़िब्त़ी सरदारों ने घबरा कर फ़िरऔ़न से शिकायत की, कि एक त़रफ़ बनी इसराईल में मौत की कसरत हो गई है और दूसरी त़रफ़ उन के बच्चे भी क़त्ल किये जा रहे हैं, अगर येही सूरते ह़ाल रही तो हमें ख़िदमत गार कहां से मिलेंगे? इस पर फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़ दिये जाएं तो जो साल छोड़ने का था उस में ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए और क़त्ल के साल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादत हुई। येह वाक़िआ़ सूरए क़सस के पहले रुकूअ़ में काफ़ी तफ़्सील से बयान किया गया है।

﴿وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ : **और उस में आज़्माइश थी।**﴾ "बला" इम्तिह़ान व आज़्माइश को कहते हैं और आज़्माइश ने'मत से भी होती है और शिद्दतो मेह़नत से भी। ने'मत से बन्दे की शुक्र गुज़ारी और मेह़नतो मशक़्क़त से उस के सब्र का ह़ाल ज़ाहिर होता है। इस आयत में अगर "ذٰلِكُمْ" का इशारा फ़िरऔ़न के मज़ालिम की त़रफ़ हो तो "बला" से मेह़नतो मुसीबत मुराद होगी और अगर इन मज़ालिम से नजात देने की त़रफ़ इशारा हो तो "बला" से ने'मत मुराद होगी।

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٤٩، ١/١٢٩.

www.dawateislami.net

وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝۵۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔ़न वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया को फाड़ दिया तो हम ने तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔ़नियों को तुम्हारी आंखों के सामने ग़र्क़ कर दिया।

﴿وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ : **और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया।**﴾ येह दूसरी ने'मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्मो सितम से नजात दी और फ़िरऔ़न को उस की क़ौम समेत उन के सामने ग़र्क़ कर दिया जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हुक्मे इलाही पर रात के वक़्त बनी इसराईल को ले कर मिस्र से रवाना हुए। सुब्ह़ को फ़िरऔ़न उन की जुस्तजू में एक भारी लश्कर ले कर निकला और उन्हें दरिया के किनारे पर पा लिया, बनी इसराईल ने फ़िरऔ़न के लश्कर को देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रियाद की, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से दरिया पर अपना अ़सा मारा। इस की बरकत से ऐ़न दरिया में बारह ख़ुश्क रास्ते पैदा हो गए और पानी दीवारों की त़रह़ खड़ा हो गया और उन आबी दीवारों में जाली की मिस्ल रोशन दान बन गए। बनी इसराईल की हर जमाअ़त उन रास्तों में एक दूसरी को देखती और बाहम बातें करती गुज़र गई। फ़िरऔ़न भी अपने लश्कर समेत उन दरियाई रास्तों में दाख़िल हो गया लेकिन जब उस का तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया अपनी अस्ली ह़ालत पर आया और तमाम फ़िरऔ़नी उस में ग़र्क़ हो गए और बनी इसराईल दरिया के किनारे फ़िरऔ़नियों के ग़र्क़ का मन्ज़र देख रहे थे।(1)

1 ......قرطبی، البقرة، تحت الآية: ٥١، ١/٣١٨-٣١٩، بيضاوی، البقرة، تحت الآية: ٥١، ١/٣٢٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर होने वाले इन्आम की यादगार क़ाइम करना सुन्नत है

फ़िरऔ़नियों का ग़र्क़ होना मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को हुवा और ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस दिन शुक्र का रोज़ा रखा। सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम में है, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो आप ने देखा कि यहूदी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह क्या है ? यहूदियों ने अ़र्ज़ की : येह नेक दिन है, येह वोह दिन है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल को उन के दुश्मन से नजात दी तो ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस दिन रोज़ा रखा था। रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारी निस्बत मूसा से मेरा तअ़ल्लुक़ ज़ियादा है।" चुनान्चे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस दिन रोज़ा रखा और इस दिन रोज़ा रखने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया।[(1)]

अलबत्ता सिर्फ़ दस मुहर्रम का रोज़ा न रखा जाए बल्कि इस के साथ आगे या पीछे एक रोज़ा मिलाया जाए जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो, आ़शूरा के दिन से पहले या बा'द में एक दिन का रोज़ा रखो।[(2)]

इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर जो इन्आ़मे इलाही हो उस की यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना सुन्नत है अगर्चे कुफ़्फ़ार भी उस यादगार को क़ाइम करते हों।

وَ اِذۡ وٰعَدۡنَا مُوۡسٰۤی اَرۡبَعِیۡنَ لَیۡلَۃً ثُمَّ اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِہٖ وَ اَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۵۲﴾

1 ......بخاری، کتاب الصوم، باب صیام یوم عاشوراء، ۱/۶۵۶، الحدیث: ۲۰۰۴، مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ص۵۷۲، الحدیث: ۱۲۸(۱۱۳۰).

2 ......مسند امام احمد، ۱/۵۱۸، الحدیث: ۲۱۵۴.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वा'दा फ़रमाया फिर उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम ज़ालिम थे। फिर इस के बा'द हम ने तुम्हें मुआ़फ़ी दी कि कहीं तुम एह़सान मानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वा'दा फ़रमाया फिर उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम वाक़ेई ज़ालिम थे। फिर इस के बा'द हम ने तुम्हें मुआ़फ़ी अ़ता फ़रमाई ताकि तुम शुक्र अदा करो।

﴿وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِیْنَ لَیْلَةً﴾ **: और जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वा'दा फ़रमाया।** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में बनी इसराईल पर की गई जो ने'मत बयान हुई, उस का खुलासा येह है कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की हलाकत के बा'द जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की त़रफ़ लौटे तो उन की दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने तौरात अ़ता फ़रमाने का वा'दा फ़रमाया और इस के लिये तीस दिन और फिर दस दिन का इज़ाफ़ा कर के चालीस दिन की मुद्दत मुक़र्रर हुई जैसा कि सूरए आ'राफ़ आयत 142 में है। उन चालीस दिनों में ज़ुल क़ा'दह का पूरा महीना और दस दिन ज़ुल ह़िज्जा के शामिल थे। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ौम पर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपना नाइब बना कर तौरात ह़ासिल करने कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए, चालीस दिन रात वहां ठहरे और इस अ़र्से में किसी से बातचीत न की। **अल्लाह** तआ़ला ने तख़्तियों पर तह़रीरी सूरत में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तौरात अ़ता फ़रमाई।

दूसरी त़रफ़ सामिरी ने जवाहिरात से मुज़य्यन सोने का एक बछड़ा बना कर क़ौम से कहा कि येह तुम्हारा मा'बूद है। वोह लोग एक महीने तक ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन्तिज़ार करने के बा'द सामिरी के बहकाने से बछड़े की पूजा करने लगे, उन पूजा करने वालों में तमाम बनी इसराईल शामिल थे, सिर्फ़ ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप के बारह हज़ार साथी इस शिर्क से दूर व नुफ़ूर रहे। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वापस तशरीफ़ लाए तो क़ौम की ह़ालत देख कर उन्हें तम्बीह की और उन्हें उन के गुनाह का कफ़्फ़ारा बताया, चुनान्चे जब उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ तौबा की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मुआ़फ़ कर दिया। उन मुरतद होने वालों की तौबा का बयान आयत नम्बर 53 के बा'द आ रहा है।

www.dawateislami.net

وَ اِذْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और ह़क़ व बाति़ल में तमीज़ कर देना कि कहीं तुम राह पर आओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और ह़क़ व बाति़ल में फ़र्क़ करना ताकि तुम हिदायत पा जाओ।

﴿اَلْفُرْقَانَ : **फ़र्क़ कना।**﴾ फ़ुरक़ान के कई मआ़नी किये गए हैं : **(1)** फ़ुरक़ान से मुराद भी तौरात ही है। **(2)** कुफ़्र व ईमान में फ़र्क़ करने वाले मो'जिज़ात जैसे अ़सा और यदे बैज़ा वग़ैरा। **(3)** ह़लाल व ह़राम में फ़र्क़ करने वाली शरीअ़त मुराद है।[1]

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ یٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْۤا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىٕكُمْؕ فَتَابَ عَلَیْكُمْؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बना कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़े (को मा'बूद) बना कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया लिहाज़ा (अब) अपने पैदा करने वाले की बारगाह में तौबा करो (यूं) कि तुम अपने लोगों को क़त्ल करो। येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वोही बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान है।

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٥٣، ص ٥٢.

www.dawateislami.net

﴿فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ : **कि तुम अपने लोगों को क़त्ल करो।**﴾ बनी इसराईल को बछड़ा पूजने के गुनाह से यूं मुआफ़ी मिली कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ौम से फ़रमाया : तुम्हारी तौबा की सूरत येह है कि जिन्हों ने बछड़े की पूजा नहीं की है वोह पूजा करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम राज़ी ख़ुशी सुकून के साथ क़त्ल हो जाएं। वोह लोग इस पर राज़ी हो गए। और सुब्ह़ से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए, तब ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गिड़गिड़ाते हुए बारगाहे ह़क़ में उन की मुआफ़ी की इल्तिजा की। इस पर वह़ी आई कि जो क़त्ल हो चुके वोह शहीद हुए और बाक़ी बख़्श दिये गए, क़ातिल व मक़्तूल सब जन्नती हैं।[1]

मुरतद की सज़ा क़त्ल क्यूं है ?

इस आयत से मा'लूम हुवा कि शिर्क करने से मुसल्मान मुरतद हो जाता है और मुरतद की सज़ा क़त्ल है क्यूं कि येह **अल्लाह** तआ़ला से बग़ावत कर रहा है और जो **अल्लाह** तआ़ला का बाग़ी हो उसे क़त्ल कर देना ही ह़िक्मत और मस्लह़त के ऐन मुत़ाबिक़ है। दुन्या के तक़रीबन तमाम ममालिक में येह क़ानून नाफ़िज़ है कि जो उस मुल्क के बादशाह से बग़ावत करे उसे क़त्ल कर दिया जाए। इस क़ानून को इन्सानिय्यत के तमाम अ़लम बरदार तस्लीम करते हैं और इस के ख़िलाफ़ किसी त़रह़ की कोई आवाज़ बुलन्द नहीं करते, जब दुन्यवी बादशाह के बाग़ी को क़त्ल कर देना इन्सानिय्यत पर ज़ुल्म नहीं तो जो सब बादशाहों के बादशाह **अल्लाह** तआ़ला का बाग़ी हो जाए उसे क़त्ल कर दिया जाना किस त़रह़ ज़ुल्म हो सकता है।

बनी इसराईल पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल

बछड़ा बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे :

(1)...... मुजस्समा साज़ी जो ह़राम है।

(2)...... ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ना फ़रमानी।

(3)...... बछड़े की पूजा कर के मुश्रिक हो जाना।

येह ज़ुल्म आले फ़िरऔ़न के मज़ालिम से भी ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि येह अफ़्आ़ल उन से बा'दे ईमान सरज़द हुए, इस वज्ह से वोह मुस्तह़िक़ तो इस के थे कि अ़ज़ाबे इलाही उन्हें मोहलत न दे और फ़िलफ़ौर हलाक कर के कुफ़्र पर उन का ख़ातिमा कर दे लेकिन ह़ज़रते मूसा

1...... तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), अल बक़रह, तह़्त आयह : 54, 1/439, 442, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते हारून عَلَيۡهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तुफ़ैल उन्हें तौबा का मौक़अ़ दिया गया, येह **अल्लाह** तआ़ला का बड़ा फ़ज़्ल है और येह क़त्ल उन के लिये कफ़्फ़ारा था।

وَ اِذۡ قُلۡتُمۡ یٰمُوۡسٰی لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَکَ حَتّٰی نَرَی اللّٰہَ جَہۡرَۃً فَاَخَذَتۡکُمُ الصّٰعِقَۃُ وَ اَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿۵۵﴾ ثُمَّ بَعَثۡنٰکُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَوۡتِکُمۡ لَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ ﴿۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अ़लानिया ख़ुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे। फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एह़सान मानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब तुम ने कहा : ऐ मूसा ! हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे जब तक ए'लानिया ख़ुदा को न देख लें तो तुम्हारे देखते ही देखते तुम्हें कड़क ने पकड़ लिया। फिर तुम्हारी मौत के बा'द हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया ताकि तुम शुक्र अदा करो।

﴿لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَکَ : **हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे।**﴾ जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारे में अपनी जानें भी दे दीं तो **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन्हें इस गुनाह की मा'ज़िरत पेश करने के लिये ह़ाज़िर करें चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब कर के तूर पर ले गए, वहां जा कर वोह कहने लगे : ऐ मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ! हम आप का यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को अ़लानिया न देख लें, इस पर आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वोह सब मर गए। ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गिड़गिड़ा कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की, कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा ? इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन सत्तर अफ़राद को ज़िन्दा फ़रमा दिया।(1)

(1)......جمل، البقرة، تحت الآية: ۵۵، ۱/ ۸۰، تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآية: ۵۵، ۱/ ۵۱۹، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अ़ज़मत

इस वाक़िए़ से शाने अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से "हम आप का यक़ीन नहीं करेंगे" कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए और इसी से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइ़स होता है लिहाज़ा इस से डरते रहें। इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला अपने मक़्बूलाने बारगाह की दुआ़ से मुर्दे भी ज़िन्दा फ़रमा देता है।

وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡغَمَامَ وَاَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى ؕ كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ ؕ وَمَا ظَلَمُوۡنَا وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया और तुम पर मन्न और सल्वा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और उन्हों ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने तुम्हारे ऊपर बादल को साया बना दिया और तुम्हारे ऊपर मन्न और सल्वा उतारा (कि) हमारी दी हुई पाकीज़ा चीज़ें खाओ और उन्हों ने हमारा कुछ न बिगाड़ा बल्कि अपनी जानों पर ही ज़ुल्म करते रहे।

﴿وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡغَمَامَ : **और हम ने तुम्हारे ऊपर बादल को साया बना दिया।**﴾ फ़िरऔ़न के ग़र्क़ होने के बा'द बनी इसराईल दोबारा मिस्र में आबाद हो गए। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की औलाद का मदफ़न है और उसी में बैतुल मुक़द्दस है, उसे अ़मालिक़ा क़बीले से आज़ाद कराने के लिये जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर वहीं वत़न बनाओ। मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल के लिये बड़ा तक्लीफ़ देह था। शुरूअ़ में तो उन्हों ने टाल मटोल की लेकिन जब मजबूर हो कर ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَيۡهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मइय्यत में रवाना होना ही पड़ा तो रास्ते में जो कोई सख़्ती और दुश्वारी पेश आती तो ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से

www.dawateislami.net

शिकायतें करते । जब उस सह्रा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था, न साया और न ग़ल्ला, तो वहां पहुंच कर ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से धूप की, गरमी और भूक की शिकायत करने लगे । ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ फ़रमाई और **अल्लाह** तआला ने उस दुआ की बरकत से एक सफ़ेद बादल को उन पर साएबान बना दिया जो रात दिन उन के साथ चलता और उन पर एक नूरी सुतून नाज़िल फ़रमाया जो कि आस्मान की जानिब से उन के क़रीब हो गया और उन के साथ चलता और जब रात के वक़्त चांद की रोशनी न होती तो वोह उन के लिये चांद की त़रह़ रोशन होता । उन के कपड़े मैले और पुराने न होते, नाख़ुन और बाल न बढ़ते ।(1)

﴿وَاَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى : **और तुम पर मन्न और सल्वा उतारा ।**﴾ उस सह्रा में ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बरकत से उन के खाने का इन्तिज़ाम यूं हुवा कि उन्हें मन्न व सल्वा मिलना शुरूअ़ हो गया । मन्न व सल्वा के बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं :

"मन्न" के बारे में सह़ीह़ क़ौल येह है कि येह तुरन्ज्बीन की त़रह़ एक मीठी चीज़ थी जो रोज़ाना सुब्ह़े सादिक़ से त़ुलूए आफ़्ताब तक हर शख़्स के लिये एक साअ़ (या'नी तक़रीबन चार किलो) की ब क़दर उतरती और लोग उस को चादरों में ले कर दिन भर खाते रहते । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक "मन्न" से मुराद वोह तमाम चीज़ें हैं जो **अल्लाह** तआला ने अपने बन्दों को किसी मशक़्क़त और काश्त कारी के बिग़ैर अ़त़ा कर के उन पर एह़सान फ़रमाया । "सल्वा" के बारे में सह़ीह़ क़ौल येह है कि येह एक छोटा परिन्दा था, और इस के बारे में एक क़ौल येह है कि येह परिन्दा भुना हुवा बनी इसराईल के पास आता था और एक क़ौल येह है कि जुनूबी हवा उस परिन्दे को लाती और बनी इसराईल उस का शिकार कर के खाते । येह दोनों चीज़ें हफ़्ते को बिल्कुल न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं, जुमुआ को दुगनी आतीं और हुक्म येह था कि जुमुआ को हफ़्ते के लिये भी जम्अ़ कर लो मगर एक दिन से ज़ियादा का जम्अ़ न करो । बनी इसराईल ने इन ने'मतों की नाशुक्री की और ज़ख़ीरे जम्अ़ किये, वोह सड़ गए और उन की आमद बन्द कर दी गई । येह उन्हों ने अपना ही नुक़्सान किया कि दुन्या में ने'मत से मह़रूम हुए और आख़िरत में सज़ा के मुस्तह़िक़ हुए ।(2)

وَ اِذۡ قُلۡنَا ادۡخُلُوۡا هٰذِهِ الۡقَرۡيَةَ فَكُلُوۡا مِنۡهَا حَيۡثُ شِئۡتُمۡ رَغَدًا

(1)......تفسير جمل ، البقرة، تحت الآية: ٥٧، ١/ ٨١، روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٥٧، ١/ ١٤١-١٤٢.

(2)......خازن، البقرة، تحت الآية: ٥٧، ١/ ٥٦، روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٥٧، ١/ ١٤٢.

www.dawateislami.net

وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ फिर उस में जहां चाहो बे रोकटोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हों हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब हम ने उन्हें कहा कि उस शहर में दाख़िल हो जाओ फिर उस में जहां चाहो बे रोकटोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल होना और कहते रहना, हमारे गुनाह मुआफ़ हों, हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और अ़न्क़रीब हम नेकी करने वालों को और ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे।

﴿وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ﴾ : **और जब हम ने कहा उस शहर में दाख़िल हो जाओ।** उस शहर से "बैतुल मुक़द्दस" मुराद है या अरीहा जो बैतुल मुक़द्दस के क़रीब है जिस में अ़मालिक़ा आबाद थे और वोह उसे ख़ाली कर गए थे, वहां ग़ल्ले मेवे ब कसरत थे। उस बस्ती के दरवाज़े में दाख़िल होने का फ़रमाया गया और येह दरवाज़ा उन के लिये का'बे की त़रह़ था और उस में दाख़िल होना और उस की त़रफ़ सज्दा करना गुनाहों की मुआफ़ी का सबब था। बनी इसराईल को हुक्म येह था कि दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से "حِطَّةٌ" कहते जाएं (येह कलिमए इस्तिग़फ़ार था)। उन्हों ने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की और सज्दा करते हुए दाख़िल होने की बजाए सुरीनों के बल घिसटते हुए दाख़िल हुए और तौबा व इस्तिग़फ़ार का कलिमा पढ़ने की बजाए मज़ाक़ के त़ौर पर "حَبَّةٌ فِیْ شَعْرَةٍ" कहने लगे जिस का मा'ना था : बाल में दाना। इस मज़ाक़ और ना फ़रमानी की सज़ा में उन पर त़ाऊ़न मुसल्लत़ किया गया जिस से हज़ारों इसराईली हलाक हो गए।(1)

1...تفسیر خازن، البقرة، تحت الآیة: ۵۸، ۱/۵۶، مدارك، البقرة، تحت الآیة: ۵۸، ص۵۳، तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), 1/456, 457 मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा तो हम ने आस्मान से उन पर अ़ज़ाब उतारा बदला उन की बे हुक्मी का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उन ज़ालिमों ने जो उन से कहा गया था उसे एक दूसरी बात से बदल दिया तो हम ने आस्मान से उन ज़ालिमों पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दिया क्यूं कि येह ना फ़रमानी करते रहे थे।

﴾فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ﴿ : **तो हम ने आस्मान से उन ज़ालिमों पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दिया।** बनी इसराईल पर ताऊ़न का अ़ज़ाब मुसल्लत़ किया गया और उस की वज्ह से एक क़ौल के मुताबिक़ एक साअ़त में 70,000 अफ़्राद हलाक हो गए थे और दूसरे क़ौल के मुताबिक़ 24,000 अफ़्राद हलाक हो गए थे।[(1)]

ताऊ़न के बारे में 3 अह़ादीस

यहां ताऊ़न का ज़िक्र हुवा, इस मुनासबत से ताऊ़न से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक येह ताऊ़न एक अ़ज़ाब है जिसे तुम से पहले लोगों पर मुसल्लत़ किया गया था लिहाज़ा जब किसी जगह ताऊ़न हो (और तुम वहां मौजूद हो) तो तुम ताऊ़न से भाग कर वहां से न निकलो और जब किसी जगह ताऊ़न हो तो तुम वहां न जाओ।''[(2)]

(2)...... एक और रिवायत में है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ताऊ़न पिछली उम्मतों के अ़ज़ाब का बक़िय्या है जब तुम्हारे शहर में ताऊ़न वाक़ेअ़ हो तो वहां से न भागो और दूसरे शहर में वाक़ेअ़ हो तो वहां न जाओ।''[(3)]

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۵۹، ۵٦/۱.

2 ......مسلم، كتاب السلام، باب الطاعون والطيرة والكهانة ونحوها، ص۱۲۱٦، الحديث: ۹۴-۹۵(۲۲۱۸).

3 ......مسلم، كتاب السلام، باب الطاعون والطيرة والكهانة ونحوها، ص۱۲۱۷، الحديث: ۹۷(۲۲۱۸).

www.dawateislami.net

(3)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से त़ाऊ़न के बारे में अ़र्ज़ की तो उन्हों ने मुझे बताया कि त़ाऊ़न एक अ़ज़ाब है, **अल्लाह** तआ़ला जिस पर चाहता है येह अ़ज़ाब भेज देता है और **अल्लाह** तआ़ला ने इसे अहले ईमान के लिये रह़मत बनाया है, कोई मोमिन ऐसा नहीं जो त़ाऊ़न में फंस जाए लेकिन अपने शहर ही में सब्र से ठहरा रहे और येह समझे कि जो **अल्लाह** तआ़ला ने लिख दी है उस के सिवा कोई तक्लीफ़ मुझे नहीं पहुंच सकती, तो उसे शहीद के बराबर सवाब मिलेगा।[1]

وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًاؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ۝۶۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया उस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले हर गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो ख़ुदा का दिया और ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो, जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी त़लब किया तो हम ने फ़रमाया कि पथ्थर पर अपना अ़सा मारो, तो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले (और) हर गुरौह ने अपने पानी पीने की जगह को पहचान लिया (और हम ने फ़रमाया कि) **अल्लाह** का रिज़्क़ खाओ और पियो और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो।

﴾وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ﴿ **: और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा।** जब मैदाने तियह में बनी इसराईल ने पानी न पाया तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में फ़रियाद की। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हुक्म हुवा कि अपना अ़सा पथ्थर पर मारो, चुनान्चे आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़सा मारा तो उस पथ्थर से पानी के बारह चश्मे जारी हो गए और बनी इसराईल के बारह गुरौहों ने अपने अपने घाट को पहचान लिया।

1 ......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ٥٦ باب، ٢/٤٦٨، الحدیث: ٣٤٧٤.

www.dawateislami.net

उंगलियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर

यहां एक नुक्ता क़ाबिले ज़िक्र है कि पथ्थर से चश्मा जारी करना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़ज़ीम मो'जिज़ा था जब कि हमारे आक़ा, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक उंग्लियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमाए और येह उस से भी बढ़ कर मो'जिज़ा था। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह मो'जिज़ा कि वोह पथ्थर से पानी रवां फ़रमा देते और पथ्थर से चश्मा बरआमद करते तो हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अंगुश्तहाए मुबारक से चश्मा जारी फ़रमा दिया। पथ्थर तो ज़मीन ही की जिन्स से है और उस से चश्मे बहा करते हैं लेकिन इस के बर ख़िलाफ़ गोश्त पोस्त से पानी का चश्मा जारी करना ह़द दरजा अ़ज़ीम है।[1]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

उंग्लियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर   नद्दियां पन्जाबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मदद त़लब करने का सुबूत

इस आयत में लोगों का अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में इस्तिआ़नत करने और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन की मुश्किल कुशाई फ़रमाने का सुबूत भी है। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका में ऐसे कई वाक़िआ़त हैं जिन में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर लोगों ने अपनी मुश्किलात अ़र्ज़ कीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की मुश्किल कुशाई फ़रमाई, उन में से दो वाक़िआ़त दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : (मेरे वालिद) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़राम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वफ़ात पा गए और उन पर क़र्ज़ था "**فَاسْتَعَنْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى غُرَمَائِهٖ اَنْ يَضَعُوْا مِنْ دَيْنِهٖ**" तो मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उन के क़र्ज़ ख़्वाहों से मुतअ़ल्लिक़ मदद त़लब की, कि वोह उन का क़र्ज़ा कुछ कम कर दें। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बारे में उन से बात की तो उन्हों ने ऐसा न किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : तुम जाओ और हर

1 ......مدارج النبوة، باب پنجم درذکر فضائل وی صلی اللّٰہ علیه وسلم، ۱/ ۱۱۰.

www.dawateislami.net

क़िस्म की खजूरों की अलग अलग ढेरियां बनाओ और फिर मुझे पैग़ाम भेज देना। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ढेरियां बना दीं और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पैग़ाम भेज दिया, आप उन ढेरियों के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए और इर्शाद फ़रमाया : तुम माप कर लोगों को देते जाओ। मैं ने खजूरें माप कर लोगों को देना शुरूअ़ कर दीं यहां तक कि सब का क़र्ज़ा उतर गया और मेरी खजूरें ऐसे लग रही थीं जैसे उन में से एक खजूर भी कम नहीं हुई।(1)

(2)...... ह़ज़रते सालिम बिन अबी जा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुदैबिया के दिन लोगों को प्यास लगी और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने चमड़े का एक थैला था जिस (में मौजूद पानी) से वुज़ू फ़रमा रहे थे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द ह़ल्क़ा डाल कर खड़े हो गए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या बात है ?'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे पास पानी नहीं है जिस से हम वुज़ू करें और उसे पी सकें, सिर्फ़ वोही पानी है जो आप के सामने मौजूद है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस थैले में रख दिया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियों से पानी चश्मों की त़रह़ जोश मारने लगा, फिर हम ने पानी पिया और वुज़ू भी किया। ह़ज़रते सालिम बिन अबी जा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : आप उस वक़्त कुल कितने आदमी थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर हम एक लाख भी होते तो वोह पानी हमें किफ़ायत कर जाता लेकिन हम उस वक़्त सिर्फ़ 1500 थे।(2)

इन्सानों के इलावा ह़ैवानात ने भी अपनी तकालीफ़ अ़र्ज़ कीं तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की तकालीफ़ दूर फ़रमाईं और जमादात ने भी अपनी मुरादें अ़र्ज़ कीं तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की मुरादें भी पूरी फ़रमाईं जैसा कि अह़ादीस और सीरत की किताबों में तफ़्सील के साथ मज़्कूर है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद, हां यहीं चाहती हैं हरनी दाद
इसी दर पर शुतराने नाशाद गिलए रन्जो अ़ना करते हैं

---

1 ......بخاری، کتاب البیوع، باب الکیل علی البائع والمعطی، ۲/۲۶، الحدیث: ۲۱۲۷.

2 ......بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ۲/۴۹۳-۴۹۴، الحدیث: ۳۵۷۶.

www.dawateislami.net

﴿ **كُلُوْا وَاشْرَبُوْا** : **खाओ और पियो ।**﴾ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम से फ़रमाया गया कि आस्मानी त़आ़म मन्न व सल्वा खाओ और इस पथ्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही से बिग़ैर मेह़नत के मुयस्सर है और इस बात का ख़याल रखो कि फ़ितना व फ़साद से बचो और गुनाहों में न पड़ो । हर उम्मत को येही हुक्म था कि **अल्लाह** तआ़ला का रिज़्क़ खाओ लेकिन फ़साद न फैलाओ । या'नी रिज़्क़ के इस्ति'माल से मन्अ़ नहीं फ़रमाया बल्कि ह़राम कमाने, ह़राम खाने, खा कर ख़ुदा की नाशुक्री व ना फ़रमानी से मन्अ़ किया गया है ।

وَ اِذْ قُلْتُمْ یٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ
یُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ قِثَّآىٕهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا
وَ بَصَلِهَاؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِیْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِیْ هُوَ خَیْرٌؕ اِهْبِطُوْا
مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْؕ وَ ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُۗ
وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ
وَ یَقْتُلُوْنَ النَّبِیّٖنَ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ (٦١) ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम से तो एक खाने पर हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो अच्छा मिस्र या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा जो तुम ने मांगा और उन पर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी और ख़ुदा के ग़ज़ब में लौटे येह बदला था इस का कि वोह **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते और अम्बिया को नाह़क़ शहीद करते येह बदला था उन की ना फ़रमानियों और ह़द से बढ़ने का ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम ने कहा : ऐ मूसा ! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते । लिहाज़ा आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये वोह चीज़ें निकाले जो ज़मीन उगाती है जैसे साग और ककड़ी और गन्दुम और मसूर की दाल और पियाज़ । फ़रमाया : क्या तुम

www.dawateislami.net

बेहतर चीज़ के बदले में घटिया चीजें मांगते हो। (अच्छा फिर) मुल्के मिस्र या किसी शहर में क़ियाम करो, वहां तुम्हें वोह सब कुछ मिलेगा जो तुम ने मांगा है और उन पर ज़िल्लत और ग़ुरबत मुसल्लत् कर दी गई और वोह ख़ुदा के ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हो गए। येह ज़िल्लतो ग़ुरबत इस वज्ह से थी कि वोह **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते थे और अम्बिया को नाह़क़ शहीद करते थे। (और) येह इस वज्ह से थी कि उन्हों ने ना फ़रमानी की और वोह मुसल्सल सरकशी कर रहे थे।

﴿لَنۡ نَّصۡبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ﴾ **: हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं करेंगे।** बा'ज़ लोगों की त़बीअ़त में कम हिम्मती, ना लाइक़ी और नीचपन होता है। आप उन्हें पकड़ कर भी ऊपर करना चाहें तो वोह कमतर और नीचे रहने को तरजीह़ देते हैं। ऐसे लोग उ़मूमन ज़िन्दगी की लज़्ज़तों और ने'मतों से फ़ाएदा नहीं उठा पाते। बुलन्द हिम्मत और बेहतर से बेहतर के त़ालिब ही ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के हां पसन्दीदा होते हैं। बनी इसराईल पर ने'मतों के ज़िक्र के बा'द यहां से उन की कम हिम्मती और ना लाइक़ी व ना फ़रमानी के कुछ वाक़िआत बयान फ़रमाए जाते हैं। उन में से **एक वाक़िआ़ येह है :** बनी इसराईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुत़ालबा किया कि हम एक ही क़िस्म के खाने पर सब्र नहीं कर सकते, आप दुआ़ करें कि हमें ज़मीन की तरकारियां और दालें वग़ैरा मिलें। ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें समझाया कि तुम्हें इतना अच्छा खाना बिग़ैर मेह़नत के मिल रहा है, क्या उस की जगह अदना क़िस्म का खाना लेना चाहते हो ? लेकिन जब वोह न माने तो ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की। इस पर हुक्म हुवा कि ऐ बनी इसराईल ! अगर तुम्हारा येही मुत़ालबा है तो फिर मिस्र जाओ वहां तुम्हें वोह चीज़ें मिलेंगी जिन का तुम मुत़ालबा कर रहे हो। मिस्र से मुराद या तो मुल्के मिस्र या मुत़्लक़न कोई भी शहर है।

बड़ों से निस्बत रखने वाले को क्या करना चाहिये

यहां इस बात का ख़याल रखें कि साग ककड़ी वग़ैरा जो चीज़ें बनी इसराईल ने मांगीं उन का मुत़ालबा गुनाह न था लेकिन "मन्न व सल्वा" जैसी ने'मते बे मेह़नत छोड़ कर इन की त़रफ़ माइल होना पस्त ख़याली है। हमेशा उन लोगों का मैलाने त़ब्अ़ पस्ती ही की त़रफ़ रहा और ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَيۡهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ऐसे जलीलुल क़द्र, बुलन्द हिम्मत अम्बिया के बा'द तो बनी इसराईल के नीचपन और कम हौसलगी का पूरा ज़ुहूर हुवा। जब बड़ों से निस्बत हो तो दिलो दिमाग़ और सोच भी बड़ी बनानी चाहिये और मुसल्मानों को तो

www.dawateislami.net

बनी इसराईल से ज़ियादा इस बात पर ग़ौर करना चाहिये कि इन की निस्बत सब से बड़ी है। ﴿ضُرِبَتۡ عَلَيۡهِمُ الذِّلَّةُ وَالۡمَسۡكَنَةُ﴾ : **उन पर ज़िल्लतो ग़ुरबत मुसल्लत़ कर दी गई।** ﴾ या'नी यहूदियों पर उन के घटिया किरदार की वज्ह से ज़िल्लतो ग़ुरबत मुसल्लत़ कर दी गई। उन पर ग़ज़बे इलाही की सूरत येह हुई कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सुलह़ा की बदौलत जो रुत्बे उन्हें ह़ासिल हुए थे वोह उन से मह़रूम हो गए, इस ग़ज़ब का बाइ़स सिर्फ़ येही नहीं था कि उन्हों ने आस्मानी गिज़ाओं के बदले ज़मीनी पैदावार की ख़्वाहिश की या ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में उसी त़रह़ की और ख़त़ाएं कीं बल्कि अ़हदे नुबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से उन की दीनी सलाहि़य्यतें बाति़ल हो गईं, **अल्लाह** तआ़ला की आयतों के साथ कुफ़्र का रास्ता इख़्तियार किया, उन्हों ने ह़ज़रते ज़करिय्या, ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते शअ़या عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद किया और ऐसा नाह़क़ क़त्ल किया कि इस की वज्ह ख़ुद येह क़ातिल भी नहीं बता सकते, उन्हों ने ना फ़रमानी और सरकशी का रास्ता इख़्तियार किया। अल ग़रज़ उन के अ़ज़ीम जराइम और क़बीह़ तरीन अफ़्आ़ल की वज्ह से उन पर **अल्लाह** तआ़ला की ला'नत हुई, उन पर ज़िल्लतो ग़ुरबत मुसल्लत़ की गई और वोह ग़ज़बे इलाही के मुस्तह़िक़ हुए।

बनी इसराईल की ज़िल्लतो ग़ुरबत से मुसल्मान भी नसीह़त ह़ासिल करें

बनी इसराईल बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ होने के बा'द जिन वुजूहात की बिना पर ज़िल्लतो ग़ुरबत की गहरी खाई में गिरे, काश ! उन वुजूहात को सामने रखते हुए इ़ब्रत और नसीह़त के लिये एक मरतबा मुसल्मान भी अपने आ'माल व अफ़्आ़ल का जाएज़ा ले लें और अपने माज़ी व ह़ाल का मुशाहदा करें कि जब तक मुसल्मानों ने **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात की पैरवी को अपना सब से अहम मक़्सद बनाए रखा और इस राह में आने वाली हर रुकावट को जड़ से उखाड़ कर छोड़ा तब तक दुन्या के कोने कोने में इन के नाम का डंका बजता रहा और जब से इन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात से ना फ़रमानी और सरकशी वाला रास्ता इख़्तियार किया तब से दुन्या भर में जो ज़िल्लतो रुस्वाई मुसल्मानों की हुई है और हो रही है वोह सब के सामने है।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِيۡنَ هَادُوۡا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيۡنَ مَنۡ اٰمَنَ

www.dawateislami.net

بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَیْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ईमान वाले नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वोह कि सच्चे दिल से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं और नेक काम करें उन का सवाब उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म। और जब हम ने तुम से अ़ह्द लिया और तुम पर तूर को ऊंचा किया लो जो कुछ हम तुम को देते हैं ज़ोर से और उस के मज़्मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ईमान वालों नीज़ यहूदियों और ईसाइयों और सितारों की पूजा करने वालों में से जो भी सच्चे दिल से **अल्लाह** पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आएं और नेक काम करें तो उन का सवाब उन के रब के पास है और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे। और याद करो जब हम ने तुम से अ़ह्द लिया और तुम्हारे सरों पर तूर पहाड़ को मुअ़ल्लक़ कर दिया (और कहा कि) मज़्बूती से थामो उस (किताब) को जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और जो कुछ उस में बयान किया गया है उसे याद करो इस उम्मीद पर कि तुम परहेज़ गार बन जाओ।

﴾وَاِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ : **और याद करो जब हम ने तुम से अ़ह्द लिया।**﴿ इस आयत में यहूदियों से फ़रमाया जा रहा है कि वोह वक़्त याद करो कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि वोह तौरैत को मानेंगे और उस पर अ़मल करेंगे लेकिन फिर उन्हों ने उस के अह्काम को बोझ समझ कर क़बूल करने से इन्कार कर दिया हालां कि उन्हों ने खुद बड़ी इल्तिजा कर के ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ऐसी आस्मानी किताब की दरख़्वास्त की थी जिस में क़वानीने शरीअ़त और आईने इ़बादत मुफ़स्सल मज़्कूर हों और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से बार बार उस के क़बूल करने और उस पर अ़मल करने का अ़ह्द लिया था और जब वोह किताब अ़ता हुई तो उन्हों ने उसे क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अ़ह्द पूरा न किया।

www.dawateislami.net

जब बनी इसराईल ने **अल्लाह** तआ़ला से किया हुवा अ़ह्द तोड़ा तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से तूर पहाड़ को उठा कर उन के सरों के ऊपर हवा में मुअ़ल्लक़ कर दिया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया : "तुम या तो अ़ह्द क़बूल कर लो वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे।" इस में सूरतन अ़ह्द पूरा करने पर मजबूर करना पाया जा रहा है लेकिन दर ह़क़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअ़ल्लक़ कर देना **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत की क़वी दलील है जिस से दिलों को इत़्मीनान ह़ासिल होता है कि बेशक ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं और इन की इत़ाअ़त **अल्लाह** तआ़ला को मत़्लूब है और येह इत़्मीनान उन को मानने और अ़ह्द पूरा करने का अस्ल सबब है। याद रहे कि दीन क़बूल करने पर जब्र नहीं किया जा सकता अलबत्ता दीन क़बूल करने के बा'द इस के अह़काम पर अ़मल करने पर मजबूर किया जाएगा। इस की मिसाल यूं समझें कि किसी को अपने मुल्क में आने पर हुकूमत मजबूर नहीं करती लेकिन जब कोई मुल्क में आ जाए तो हुकूमत उसे क़ानून पर अ़मल करने पर ज़रूर मजबूर करेगी।

अह़कामे क़ुरआन पर अ़मल की तरग़ीब

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं "**अल्लाह** तआ़ला की किताबों से मक़्सूद उन के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है न फ़क़त़ ज़बान से बित्तरतीब उन की तिलावत करना। इस की मिसाल येह है कि जब कोई बादशाह अपनी सल्त़नत के किसी हुक्मरान की त़रफ़ कोई ख़त़ भेजे और उस में हुक्म दे कि फ़ुलां फ़ुलां शह्र में उस के लिये एक मह़ल ता'मीर कर दिया जाए और जब वोह ख़त़ उस हुक्मरान तक पहुंचे तो वोह उस में दिये गए हुक्म के मुत़ाबिक़ मह़ल ता'मीर न करे अलबत्ता उस ख़त़ को रोज़ाना पढ़ता रहे, तो जब बादशाह वहां पहुंचेगा और मह़ल न पाएगा तो ज़ाहिर है कि वोह हुक्मरान इ़ताब बल्कि सज़ा का मुस्तह़िक़ होगा क्यूं कि उस ने बादशाह का हुक्म पढ़ने के बा वुजूद उस पर अ़मल नहीं किया तो क़ुरआन भी इसी ख़त़ की त़रह़ है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों को हुक्म दिया कि वोह दीन के अरकान जैसे नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा की ता'मीर करें और बन्दे फ़क़त़ क़ुरआने मजीद की तिलावत करते रहें और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म पर अ़मल न करें तो उन का फ़क़त़ क़ुरआने मजीद की तिलावत करते रहना ह़क़ीक़ी त़ौर पर फ़ाइदा मन्द नहीं।"(1)

(1) ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٦٤، ١/١٥٥، ملخصاً.

www.dawateislami.net

येही बात इमाम गज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी मुतअ़द्दद जगह इर्शाद फ़रमाई है।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर इस के बा'द तुम फिर गए तो अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर न होती तो तुम टोटे वालों में हो जाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस के बा'द फिर तुम ने रूगर्दानी इख़्तियार की तो अगर तुम पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत न होती तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाते।

﴿فَضْلُ اللّٰهِ : **अल्लाह का फ़ज़्ल**।﴾ यहां फ़ज़्ल व रह़मत से या तो तौबा की तौफ़ीक़ मुराद है कि उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई और या अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना मुराद है या'नी बनी इसराईल पर अ़ज़ाब नाज़िल न हुवा बल्कि उन्हें मज़ीद मोहलत दी गई।(1)

एक क़ौल येह है कि फ़ज़्ले इलाही और रह़मते ह़क़ से ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते पाक मुराद है मा'ना येह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुजूद की दौलत न मिलती और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अन्जाम हलाक व ख़ुसरान होता।(2)

इस से मा'लूम हुवा कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ पर **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल भी हैं और रह़मत भी हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ۚ﴿٦٥﴾

(1) مدارك، البقرة، تحت الآية: ٦٤، ص٥٦.
(2) بيضاوى، البقرة،تحت الآية: ٦٤، ١/٣٣٦، روح المعانى، البقرة، تحت الآية: ٦٤، ١/٣٨٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की तो हम ने उन से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यक़ीनन तुम्हें मा'लूम हैं वोह लोग जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में सरकशी की। तो हम ने उन से कहा कि धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ।

﴾الَّذِیْنَ اعْتَدَوْا : **जिन्हों ने सरकशी की।**﴿ शह्र ऐला में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि हफ़्ते का दिन इबादत के लिये ख़ास कर दें और इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें। उन के एक गुरौह ने येह चाल चली कि वोह जुमुआ़ के दिन शाम के वक़्त दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और हफ़्ते के दिन उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए़ पानी के साथ आकर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं और इतवार के दिन उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से हफ़्ते के दिन तो नहीं निकालते, येह कह कर वोह अपने दिल को तसल्ली दे लेते। चालीस या सत्तर साल तक उन का येही अ़मल रहा और जब ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत का ज़माना आया तो आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन्हें इस से मन्अ़ किया और फ़रमाया कि क़ैद करना ही शिकार है जो तुम हफ़्ते ही को कर रहे हो। जब वोह बाज़ न आए तो आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत फ़रमाई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नौ जवान बन्दरों की शक्ल में और बूढ़े ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ हो गए, उन की अ़क़्ल और ह़वास तो बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई और बदनों से बदबू निकलने लगी, वोह अपने इस ह़ाल पर रोते रहे यहां तक कि तीन दिन में सब हलाक हो गए, उन की नस्ल बाक़ी न रही और येह लोग सत्तर हज़ार के क़रीब थे।[1]

इस वाक़िए़ की मज़ीद तफ़्सील सूरए आ'राफ़ की आयत 163 ता 166 में आएगी।

ह़ीला करने का हुक्म

याद रहे कि हुक्मे शर्ई को बात़िल करने के लिये ह़ीला करना ह़राम है जैसा कि यहां

1...... روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۶۵، ۱/۱۵۶-۱۵۷, तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), 2/492, 494, मुल्तक़तन

www.dawateislami.net

मज़्कूर हुवा और हुक्मे शर्ई को किसी दूसरे शर्ई त़रीक़े से ह़ासिल करने के लिये ह़ीला करना जाइज़ है जैसा कि क़ुरआने पाक में ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस त़रह़ का अ़मल सूरए ص आयत 44 में मज़्कूर है।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने (उस बस्ती का) येह वाक़िआ़ उस के आगे और पीछे वालों के लिये इ़ब्रत कर दिया और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो हम ने येह वाक़िआ़ उस वक़्त के लोगों और उन के बा'द वालों के लिये इ़ब्रत और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त बना दिया।

﴿نَكَالًا : **इ़ब्रत**।﴾ इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआने पाक में अ़ज़ाब के वाक़िआ़त हमारी इ़ब्रतो नसीह़त के लिये बयान किये गए हैं लिहाज़ा क़ुरआने पाक के ह़ुक़ूक़ में से है कि इस त़रह़ के वाक़िआ़त व आयात पढ़ कर अपनी इस्लाह़ की त़रफ़ भी तवज्जोह की जाए।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةًؕ
قَالُوْۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًاؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ یُبَیِّنْ لَّنَا مَا هِیَؕ قَالَ اِنَّهٗ یَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا
فَارِضٌ وَّ لَا بِكْرٌؕ عَوَانٌۢ بَیْنَ ذٰلِكَؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ یُبَیِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَاؕ قَالَ اِنَّهٗ یَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ
فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِیْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ یُبَیِّنْ لَّنَا مَا هِیَ ۙ

www.dawateislami.net

إِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَإِنَّآ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝٧٠

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह़ करो बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं फ़रमाया ख़ुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से होउं। बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाय कैसी कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है न बूढ़ी और न औसर बल्कि इन दोनों के बीच में तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है। बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये हमें बता दे उस का रंग क्या है कहा वोह फ़रमाता है वोह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती देखने वालों को ख़ुशी देती। बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को शुबा पड़ गया और **अल्लाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह़ करो तो उन्हों ने कहा कि क्या आप हमारे साथ मज़ाक़ करते हैं ? मूसा ने फ़रमाया, मैं **अल्लाह** की पनाह मांगता हूं कि मैं जाहिलों में से हो जाऊं। उन्हों ने कहा कि आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे कि वोह गाय कैसी है ? फ़रमाया : **अल्लाह** फ़रमाता है कि वोह एक ऐसी गाय है जो न तो बूढ़ी है और न बिल्कुल कम उ़म्र बल्कि इन दोनों के दरमियान दरमियान हो। तो वोह करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है। उन्हों ने कहा : आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे उस गाय का रंग क्या है ? फ़रमाया कि **अल्लाह** फ़रमाता है कि वोह पीले रंग की गाय है जिस का रंग बहुत गहरा है। वोह गाय देखने वालों को ख़ुशी देती है। उन्हों ने कहा : आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये वाज़ेह़ तौर पर बयान कर दे कि वोह गाय कैसी है ? क्यूं कि बेशक गाय हम पर मुश्तबह हो गई है और अगर **अल्लाह** चाहेगा तो यक़ीनन हम राह पा लेंगे।

﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى : **और जब मूसा ने फ़रमाया।**﴿ इन आयात में यहूदियों को जो वाक़िआ़ याद दिलाया जा रहा है उस का ख़ुलासा येह है कि बनी इसराईल में एक मालदार शख़्स आ़मील को उस के अ़ज़ीज़ ने ख़ुफ़्या तौर पर क़त्ल कर के दूसरे महल्ले में डाल दिया ताकि उस की मीरास भी ले और ख़ूनबहा भी और फिर दा'वा कर दिया कि मुझे ख़ूनबहा दिलवाया जाए। क़ातिल का पता न चलता था। वहां के लोगों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरख़्वास्त की, कि आप दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल ज़ाहिर फ़रमाए, इस पर हुक्म हुवा

www.dawateislami.net

कि एक गाय ज़ब्ह़ कर के उस का कोई ह़िस्सा मक़्तूल के मारें, वोह ज़िन्दा हो कर क़ातिल के बारे में बता देगा । लोगों ने हैरानी से कहा कि क्या आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हम से मज़ाक़ कर रहे हैं क्यूं कि मक़्तूल का ह़ाल मा'लूम होने और गाय के ज़ब्ह़ करने में कोई मुनासबत मा'लूम नहीं होती । इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जवाब दिया, "मैं इस बात से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं कि मैं मज़ाक़ कर के जाहिलों में से हो जाऊं ।" जब बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़ब्ह़ करना मज़ाक़ नहीं बल्कि बा क़ाइदा हुक्म है तो उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उस के औसाफ़ दरयाफ़्त किये और बार बार सुवाल कर के वोह लोग क़ैदें बढ़ाते गए और बिल आख़िर येह हुक्म हुवा कि ऐसी गाय ज़ब्ह़ करो जो न बूढ़ी हो और न बहुत कम उ़म्र बल्कि दरमियानी उ़म्र की हो, बदन पर कोई दाग़ न हो, एक ही रंग की हो, रंग आंखों को भाने वाला हो, उस गाय ने कभी खेतीबाड़ी की हो न कभी खेती को पानी दिया हो । आख़िरी सुवाल में उन्हों ने कहा कि अब हम اِنْ شَآءَ الله राह पा लेंगे । बहर ह़ाल जब सब कुछ तै़ हो गया तो उन की तसल्ली हो गई फिर उन्हों ने गाय की तलाश शुरूअ़ कर दी ।

उन के अत़राफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी, उस का ह़ाल येह था कि बनी इसराईल में एक सालेह़ शख़्स थे उन का एक छोटा बच्चा था और उन के पास एक गाय के बच्चे के इ़लावा और कुछ न रहा था, उन्हों ने उस की गरदन पर मोह्र लगा कर **अल्लाह** तआ़ला के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे ह़क़ में अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिये तेरे पास वदीअ़त रखता हूं ताकि जब येह फ़रज़न्द बड़ा हो तो येह उस के काम आए । उस नेक शख़्स का तो इन्तिक़ाल हो गया लेकिन वोह बछिया जंगल में **अल्लाह** तआ़ला की ह़िफ़ाज़त में परवरिश पाती रही, येह लड़का जब बड़ा हुवा तो सालेह़ व मुत्तक़ी बना और मां का फ़रमां बरदार था । एक दिन उस की वालिदा ने कहा : ऐ नूरे नज़र ! तेरे बाप ने तेरे लिये फ़ुलां जंगल में ख़ुदा के नाम एक बछिया छोड़ी थी वोह अब जवान हो गई होगी, **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ कर कि वोह तुझे अ़त़ा फ़रमाए और तू उसे जंगल से ले आ । लड़का जंगल में गया और उस ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अ़लामतें उस में पाईं और उस को **अल्लाह** तआ़ला की क़सम दे कर बुलाया तो वोह ह़ाज़िर हो गई । वोह जवान उस गाय को वालिदा की ख़िदमत में लाया । वालिदा ने बाज़ार में ले जा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और येह शर्त़ की, कि सौदा होने पर फिर उस की इजाज़त ह़ासिल की जाए, उस ज़माने में गाय की क़ीमत उन अत़राफ़ में तीन दीनार ही थी । जवान जब उस

www.dawateislami.net

गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़िरिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उस ने गाय की क़ीमत छे दीनार लगा दी मगर येह शर्त़ रखी कि जवान अपनी वालिदा से इजाज़त नहीं लेगा। जवान ने येह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा, उस की वालिदा ने छे दीनार क़ीमत मन्ज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बेचने में फिर दोबारा अपनी मरज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त़ लगा दी। जवान फिर बाज़ार में आया, इस मरतबा फ़िरिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न रखो। जवान ने न माना और वालिदा को इत्तिलाअ़ दी वोह साहिबे फ़िरासत औ़रत समझ गई कि येह ख़रीदार नहीं कोई फ़िरिश्ता है जो आज़्माइश के लिये आया है। बेटे से कहा कि अब की मरतबा उस ख़रीदार से येह कहना कि आप हमें इस गाय के फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं ? लड़के ने येही कहा तो फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि अभी इस को रोके रहो, जब बनी इसराईल ख़रीदने आएं तो इस की क़ीमत येह मुक़र्रर करना कि इस की खाल में सोना भर दिया जाए। जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्त्जू करते हुए उस के मकान पर पहुंचे तो येही क़ीमत तै़ की और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़मानत पर वोह गाय बनी इसराईल के सिपुर्द की।[1]

गाय ज़ब्ह़ करने वाले वाक़िए़ से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस वाक़िए़ से कई चीज़ें मा'लूम हुईं :

(1)...... नबी के फ़रमान पर बिग़ैर हिचकिचाहट अ़मल करना चाहिये और अ़मल करने की बजाए अ़क़्ली ढकोस्ले बनाना बे अदबों का काम है।

(2)...... पैग़म्बर झूट, दिल लगी और किसी का मज़ाक़ उड़ाना वग़ैरा ऐ़बों से पाक हैं अलबत्ता ख़ुश त़ब्ई एक मह़मूद सिफ़त है येह इन में पाई जा सकती है।

(3)...... शरई़ अह़कामात से मुतअ़ल्लिक़ बेजा बह़्स मशक़्क़त का सबब है। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बह़्स न निकालते तो जो गाय ज़ब्ह़ कर देते वोही काफ़ी हो जाती।[2]

(4)...... اِنْ شَآءَاللہ कहने की बहुत बरकत है। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर बनी इसराईल وَ اِنَّاۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ न कहते तो कभी वोह गाय न पाते।[3]

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٦٧، ١/٦٠-٦١.

2 ......در منثور، البقرة، تحت الآية: ٧٠، ١/١٨٩.

3 ......كشف الخفاء، حرف الشين المعجمة، ٢/٧، رقم: ١٥٢٨.

www.dawateislami.net

(5)...... जो अपने इयाल को **अल्लाह** तआ़ला के सिपुर्द करे **अल्लाह** तआ़ला उस की उ़म्दा परवरिश फ़रमाता है।

(6)...... जो अपना माल **अल्लाह** तआ़ला के भरोसे पर उस की अमानत में दे **अल्लाह** तआ़ला उस में बरकत देता है।

(7)...... वालिदैन की फ़रमां बरदारी **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है।

(8)...... मां बाप की ख़िदमतो इत़ाअ़त करने वालों को दोनों जहानों में सिला मिलता है।

قَالَ اِنَّهٗ یَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِیْرُ الْاَرْضَ وَ لَا تَسْقِی
الْحَرْثَۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِیَةَ فِیْهَاؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّؕ
فَذَبَحُوْهَا وَ مَا كَادُوْا یَفْعَلُوْنَ۠(۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐ़ब है जिस में कोई दाग़ नहीं बोले अब आप ठीक बात लाए तो उसे ज़ब्ह़ किया और ज़ब्ह़ करते मा'लूम न होते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (मूसा ने) फ़रमाया : **अल्लाह** फ़रमाता है कि वोह एक ऐसी गाय है जिस से येह ख़िदमत नहीं ली जाती कि वोह ज़मीन में हल चलाए और न वोह खेती को पानी देती है। बिल्कुल बे ऐ़ब है, उस में कोई दाग़ नहीं। (येह सुन कर) उन्हों ने कहा : अब आप बिल्कुल सह़ीह़ बात लाए हैं। फिर उन्हों ने उस गाय को ज़ब्ह़ किया ह़ालां कि वोह ज़ब्ह़ करते मा'लूम न होते थे।

﴿وَمَا كَادُوْا یَفْعَلُوْنَ : **और वोह ज़ब्ह़ करते मा'लूम न होते थे।**﴾ बनी इसराईल के मुसलसल सुवालात और अपनी रुस्वाई के अन्देशे और गाय की गिरानी क़ीमत से येह ज़ाहिर होता था कि वोह ज़ब्ह़ करने का क़स्द नहीं रखते मगर जब उन के सुवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़ब्ह़ करना ही पड़ा।

وَ اِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِیْهَاؕ وَ اللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ

www.dawateislami.net

تَكْتُمُوْنَ ﴿۷۲﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उस की तोहमत डालने लगे और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब तुम ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया फिर उस का इल्ज़ाम किसी दूसरे पर डालने लगे हालां कि **अल्लाह** ज़ाहिर करने वाला था उस को जिसे तुम छुपा रहे थे।

﴿وَ اِذْ قَتَلْتُمْ **: और जब तुम ने क़त्ल किया।**﴾ यहां उसी पहले क़त्ल का बयान है जिस का ऊपर वाक़िआ़ गुज़रा।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो **अल्लाह** यूंही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अ़क़्ल हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो हम ने फ़रमाया (कि) उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो। इसी त़रह़ **अल्लाह** मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। और वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझ जाओ।

﴿فَقُلْنَا **: तो हम ने फ़रमाया।**﴾ बनी इसराईल ने गाय ज़ब्ह़ कर के उस के किसी उ़ज़्व से मुर्दा को मारा वोह ब हुक्मे इलाही ज़िन्दा हो गया, उस के ह़ल्क़ से ख़ून का फ़व्वारा जारी था, उस ने अपने चचाज़ाद भाई के बारे में बताया कि उस ने मुझे क़त्ल किया अब उस को भी इक़्रार करना पड़ा और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस पर क़िसास का हुक्म फ़रमाया। इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तआ़ला ने मुर्दे को ज़िन्दा करने के इस वाक़िए से क़ियामत के दिन उठाए जाने पर दलील क़ाइम की, कि तुम समझ लो कि जैसे **अल्लाह** तआ़ला ने इस मुर्दे को ज़िन्दा किया इसी त़रह़ वोह क़ियामत के दिन भी मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा क्यूं कि वोह मुर्दे ज़िन्दा

www.dawateislami.net

करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना हक़ है।

ثُمَّ قَسَتۡ قُلُوۡبُكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ فَهِىَ كَالۡحِجَارَةِ اَوۡ اَشَدُّ قَسۡوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الۡحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنۡهُ الۡاَنۡهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنۡهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخۡرُجُ مِنۡهُ الۡمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنۡهَا لَمَا يَهۡبِطُ مِنۡ خَشۡيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर इस के बा'द तुम्हारे दिल सख़्त हो गए तो वोह पथ्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा कर्रे और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं कि **अल्लाह** के डर से गिर पड़ते हैं और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों से बे ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर इस के बा'द तुम्हारे दिल सख़्त हो गए तो वोह पथ्थरों की त़रह् हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा सख़्त हैं और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं और कुछ वोह हैं कि जब फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो **अल्लाह** के डर से गिर पड़ते हैं और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल से हरगिज़ बे ख़बर नहीं।

﴿ثُمَّ قَسَتۡ قُلُوۡبُكُمۡ : **फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गए।**﴾ इस आयत की **एक तफ़्सीर** येह है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में मौजूद यहूदियों को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया गया कि अपने आबाओ अज्दाद के इब्रत अंगेज़ वाक़िआत सुनने के बा'द तुम्हारे दिल ह़क़ बात को क़बूल करने के मुआमले में सख़्त हो गए और वोह शिद्दतो सख़्ती में पथ्थरों की त़रह् हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा सख़्त हैं क्यूं कि पथ्थर भी असर क़बूल करते हैं कि कुछ पथ्थरों से नदियां बह निकलती हैं और कुछ ऐसे हैं कि जब फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो **अल्लाह** तआ़ला के डर से ऊपर से निचे गिर पड़ते हैं जब कि तुम्हारे दिल इत़ाअ़त के लिये झुकते हैं न नर्म होते हैं, न **अल्लाह** तआ़ला से डरते हैं और न ही वोह काम

करते हैं जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है और याद रखो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे आ'माल से हरगिज़ बे ख़बर नहीं बल्कि वोह तुम्हें एक ख़ास वक़्त तक के लिये मोहलत दे रहा है।[(1)]

दूसरी तफ़्सीर येह है कि इस आयत में बनी इसराईल के वोह लोग मुराद हैं जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में मौजूद थे, उन के बारे में फ़रमाया गया कि बड़ी बड़ी निशानियां और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात देख कर भी उन्हों ने इ़ब्रत ह़ासिल न की, उन के दिल पथ्थरों की त़रह़ हो गए बल्कि उन से भी ज़ियादा सख़्त क्यूं कि पथ्थर भी असर क़बूल करते हैं कि उन में किसी से नदियां बह निकलती हैं, कोई पथ्थर फट जाता है तो उस से पानी बहता है और कोई ख़ौफ़े इलाही से गिर जाता है जैसे **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर होता है लेकिन इन्सान जिसे बे पनाह इदराक व शुऊ़र दिया गया है, ह़वास क़वी हैं, अ़क़्ल कामिल है, दलाइल ज़ाहिर हैं, इ़ब्रतो नसीह़त के मवाक़ेअ़ मौजूद हैं लेकिन फिर भी **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व बन्दगी की त़रफ़ नहीं आता।

दिल की सख़्ती का अन्जाम

इस से मा'लूम हुवा कि दिल की सख़्ती बहुत ख़त़रनाक है। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖؕ فَوَیْلٌ لِّلْقٰسِیَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِؕ اُولٰٓىٕكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिये खोल दिया तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है (उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है) तो ख़राबी है उन के लिये जिन के दिल **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ से सख़्त हो गए हैं। वोह खुली गुमराही में हैं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के इलावा ज़ियादा कलाम न किया करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के इलावा कलाम की कसरत दिल को सख़्त कर देती

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٧٤، ١/١٦٣-١٦٤، جلالين، البقرة، تحت الآية: ٧٤، ص١٢، ملتقطاً.
2 ......زمر: ٢٢.

www.dawateislami.net

है और लोगों में **अल्लाह** तआ़ला से सब से ज़ियादा दूर वोह शख़्स होता है जिस का दिल सख़्त हो।''(1)

दिल की सख़्ती से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद कलाम सूरए ह़दीद की आयत नम्बर 16, 17 के तह़्त मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ یُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ یَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ یُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ मुसल्मानो क्या तुम्हें येह त़मअ़ है कि येह यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और इन में का तो एक गुरौह वोह था कि **अल्लाह** का कलाम सुनते फिर समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐ मुसल्मानो ! क्या तुम येह उम्मीद रखते हो कि येह तुम्हारी वज्ह से ईमान ले आएंगे ह़ालां कि इन में एक गुरौह वोह था कि वोह **अल्लाह** का कलाम सुनते थे और फिर उसे समझ लेने के बा'द जान बूझ कर बदल देते थे।

﴿اَفَتَطْمَعُوْنَ **: क्या तुम्हें येह उम्मीद है।**﴾ अन्सार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को इस बात की बहुत ह़िर्स थी कि यहूदी इस्लाम क़बूल कर लें क्यूं कि वोह यहूदियों के ह़लीफ़ थे और उन के पड़ोसी भी थे, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ मुसल्मानो ! क्या तुम येह उम्मीद रखते हो कि येह यहूदी तुम्हारा यक़ीन करेंगे या तुम्हारी तब्लीग़ की वज्ह से ईमान ले आएंगे ह़ालां कि इन में एक गुरौह वोह था जो सिर्फ़ उ़लमा पर मुश्तमिल था, वोह **अल्लाह** तआ़ला का कलाम या'नी तौरात सुनते थे और फिर उसे समझ लेने के बा'द जान बूझ कर बदल देते थे, इसी त़रह़ इन यहूदियों ने भी तौरात में तह़रीफ़ की और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त बदल डाली, तो ऐसे लोग कहां ईमान लाएंगे ? लिहाज़ा तुम इन के ईमान की उम्मीद न रखो।(2)

आ़लिम का बिगड़ना ज़ियादा तबाह कुन है

इस से मा'लूम हुवा कि आ़लिम का बिगड़ना अ़वाम के बिगड़ने से ज़ियादा तबाह कुन है क्यूं कि अ़वाम उ़लमा को अपना हादी और रहनुमा समझते हैं, वोह उ़लमा के अक़्वाल पर

1 ......ترمذی، کتاب الزھد، ٦٢-باب منه، ١٨٤/٤، الحدیث: ٢٤١٩.

2 ......قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ٧٥، ٣/١-٤، الجزء الثانی، بیضاوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ٧٥، ٣٤٧/١-٣٤٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अ़मल करते और उन के अफ़्आ़ल को दलील बनाते हैं और जब उ़लमा ही के अ़क़ाइदो आ'माल में बिगाड़ पैदा हो जाए तो अ़वाम राहे हिदायत पर किस त़रह़ चल सकती है, और कई जगह पर शायद येह आ़लिम कहलाने वालों की बद अ़मली का नतीजा है कि आज लोग दीनदार त़बके़ से मुतनफ़्फ़िर हो रहे हैं और इन के ख़िलाफ़ अपनी ज़बाने त़ा'न दराज़ कर रहे हैं। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : अइम्मए दीन फ़रमाते हैं : "ऐ गुरौहे उ़लमा ! अगर तुम मुस्तह़ब्बात छोड़ कर मुबाह़ात की त़रफ़ झुकोगे (तो) अ़वाम मक्रूहात पर गिरेंगे, अगर तुम मक्रूह करोगे (तो) अ़वाम ह़राम में पड़ेंगे, अगर तुम ह़राम के मुरतकिब होगे (तो) अ़वाम कुफ़्र में मुब्तला होंगे।" येह इर्शाद नक़्ल करने के बा'द फ़रमाया : "भाइयो ! लिल्लाह अपने ऊपर रह़्म करो, अपने ऊपर रह़्म न करो (तो) उम्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़्म करो, चरवाहे कहलाते हो भेड़िये न बनो।"(1)

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْۤا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ لِیُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَ لَا یَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسِرُّوْنَ وَ مَا یُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मुसल्मानों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब आपस में अकेले हों तो कहें वोह इल्म जो **अल्लाह** ने तुम पर खोला मुसल्मानों से बयान किये देते हो कि इस से तुम्हारे रब के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं। क्या नहीं जानते कि **अल्लाह** जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब येह मुसल्मानों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ला चुके हैं और जब आपस में अकेले होते हैं तो कहते हैं : क्या इन के सामने वोह इल्म बयान करते हो जो **अल्लाह** ने तुम्हारे ऊपर खोला है ? ताकि इस के ज़रीए़ येह तुम्हारे रब की बारगाह में तुम्हारे

1...... फ़तावा रज़विय्या, 24/132, 133

www.dawateislami.net

ऊपर हुज्जत क़ाइम करें। क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं ? क्या येह इतनी बात नहीं जानते कि **अल्लाह** जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

﴿وَاِذَا لَقُوْا : **और जब वोह मिलते हैं।**﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : यहूदी मुनाफ़िक़ जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ से मिलते तो उन से कहते कि जिस पर तुम ईमान लाए उस पर हम भी ईमान लाए, तुम ह़क़ पर हो और तुम्हारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सच्चे हैं, उन का क़ौल ह़क़ है, हम उन की ना'त व सिफ़त अपनी किताब तौरैत में पाते हैं। जब येह अपने सरदारों के पास जाते तो वोह इन मुनाफ़िक़ों को मलामत करते हुए कहते : क्या तुम मुसल्मानों के सामने उन के आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में वोह बातें बयान करते हो जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी किताब में बयान फ़रमाई हैं ताकि वोह उस के ज़रीए़ दुन्या व आख़िरत में तुम्हारे ऊपर हुज्जत क़ाइम कर दें कि जब हमारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नबिय्ये बरह़क़ होना तुम्हारी किताबों में मौजूद है तो तुम ने उन की पैरवी क्यूं न की ? क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं कि तुम्हें येह काम नहीं करना चाहिये।[1]

इस से मा'लूम हुवा कि ह़क़पोशी और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ को छुपाना और इन के कमालात का इन्कार करना यहूदियों का त़रीक़ा है।

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾

النصف

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना या कुछ अपनी मन घड़त और वोह निरे गुमान में हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना या कुछ अपनी मन घड़त और येह सिर्फ़ ख़याल व गुमान में पड़े हुए हैं।

﴿اُمِّيُّوْنَ : **अनपढ़।**﴾ यहां से यहूदियों के दूसरे गुरौह का तज़्किरा है, फ़रमाया गया कि अब यहूदियों के दूसरे गुरौह की सुनिये कि उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब या'नी तौरात को खुद तो नहीं जानते बल्कि अपने मफ़ाद परस्त सरदारों के बयानात पर ही उलटे सीधे ख़याल व

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٧٦، ٦٥/١.

www.dawateislami.net

गुमान में पड़े हुए हैं कि इन की तो बख़्शिश हो ही जाएगी। येह इन्ही मन घड़त ख़यालात में खुश हैं।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَ وَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ख़राबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें येह खुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम हासिल करें तो ख़राबी है उन के लिये। उन के हाथों के लिखे से और ख़राबी उन के लिये उस कमाई से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो बरबादी है उन लोगों के लिये जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं : येह खुदा की त़रफ़ से है कि इस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत हासिल कर लें तो उन लोगों के लिये उन के हाथों के लिखे हुए की वज्ह से हलाकत है और उन के लिये उन की कमाई की वज्ह से तबाही व बरबादी है।

﴾**فَوَيْلٌ : तो बरबादी है।**﴿ जब सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उ़लमाए तौरैत और सरदाराने यहूद को क़वी अन्देशा हो गया कि उन की रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्यूं कि तौरैत में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुल्या और औसाफ़ मज़्कूर हैं, जब लोग हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस के मुत़ाबिक़ पाएंगे तो फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने उ़लमा और सरदारों को छोड़ देंगे, इस अन्देशे से उन्हों ने तौरैत में तह़रीफ़ व तग़्यीर कर डाली और हुल्या शरीफ़ बदल दिया। मसलन तौरैत में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ येह लिखे थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ूब सूरत हैं, बाल ख़ूब सूरत, आंखें सुर्मगीं, क़द दरमियाना है। इस को मिटा कर उन्हों ने येह बताया कि वोह बहुत दराज़ क़द हैं, आंखें कुन्जी नीली, बाल उलझे हुए हैं। येही अ़वाम को सुनाते येही किताबे इलाही का मज़्मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूरे अकरम

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस के ख़िलाफ़ पाएंगे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाएंगे बल्कि हमारे गिरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़र्क़ न आएगा।[1] इस पर फ़रमाया गया कि बरबादी है उन लोगों के लिये जो अपने हाथों से तौरात में मन घड़त बातें लिखते हैं और फिर कहते हैं कि येह भी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, और येह **अल्लाह** तआ़ला की किताब में तह़रीफ़ सिर्फ़ इस लिये करते हैं कि इस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत ह़ासिल कर लें। तो उन लोगों के लिए उन के हाथों के लिखे हुए की वज्ह से और उन की कमाई की वज्ह से तबाही व बरबादी है।

وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَیَّامًا مَّعْدُوْدَةًؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ یُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗۤ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर गिनती के दिन तुम फ़रमा दो क्या ख़ुदा से तुम ने कोई अ़ह्द ले रखा है जब तो **अल्लाह** हरगिज़ अपना अ़ह्द ख़िलाफ़ न करेगा या ख़ुदा पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बोले : हमें तो आग हरगिज़ न छूएगी मगर गिनती के चन्द दिन। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो : क्या तुम ने ख़ुदा से कोई वा'दा लिया हुवा है ? (अगर ऐसा है, फिर) तो **अल्लाह** हरगिज़ वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करेगा बल्कि तुम **अल्लाह** पर वोह बात कह रहे हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं।

﴿لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ : **हमें तो हरगिज़ आग न छूएगी।**﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि यहूदी कहते थे कि वोह दोज़ख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये जितने अ़र्से उन के आबाओ अज्दाद ने बछड़े को पूजा था (इस के बा'द वोह अ़ज़ाब से छूट जाएंगे) और वोह मुद्दत चालीस दिन हैं। बा'ज़ यहूदियों के नज़्दीक सात दिन

[1] ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۷۹، ۱/۱۰۳-۱۰۴، خازن، البقرة، تحت الآية: ۷۹، ۱/۶۶.

www.dawateislami.net

हैं ।[1] इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई । चुनान्चे इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में फ़रमाया गया कि ऐ हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तुम इन से फ़रमा दो कि क्या तुम ने **अल्लाह** तआ़ला से कोई वा'दा लिया हुवा है कि वोह तुम्हें चन्द दिन के लिये ही जहन्नम में डालेगा ? अगर ऐसा कोई अ़ह्द है, फिर तो **अल्लाह** तआ़ला हरगिज़ वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करेगा लेकिन ऐसा कुछ है नहीं बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि तुम **अल्लाह** तआ़ला पर झूट बांध रहे हो और **अल्लाह** तआ़ला तुम से ऐसा वा'दा क्यूं करेगा कि तुम जहन्नम में ज़ियादा अ़र्से के लिये नहीं रहोगे ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला का क़ानून येह है कि जिस ने गुनाह का इरतिकाब किया और उस के गुनाह ने उसे हर त़रह़ से घेर लिया या'नी वोह कुफ़्र में जा पड़ा तो वोह जहन्नम में जाएगा और हमेशा हमेशा वहां रहेगा ।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِیْٓــٴَـتُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ(۸۱) وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ۠(۸۲)

٩ ع ٩

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हां क्यूं नहीं जो गुनाह कमाए और उस की ख़त़ा उसे घेर ले वोह दोज़ख़ वालों में है उन्हें हमेशा उस में रहना । और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा उस में रहना ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्यूं नहीं, जिस ने गुनाह कमाया और उस की ख़त़ा ने उस का घेराव कर लिया तो वोही लोग जहन्नमी हैं, वोह हमेशा उस में रहेंगे । और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा उस में रहना ।

﴿بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِیْٓــٴَـتُهٗ﴾ : **क्यूं नहीं, जिस ने गुनाह कमाया और उस की ख़त़ा ने उस का घेराव कर लिया ।** इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इह़ात़ा करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्रो शिर्क ही पर उस को मौत

1 ......قرطبی، البقرة، تحت الآية: ۸۰، ۱/۱۰، الجزء الثانی، ابو سعود، البقرة، تحت الآية: ۸۰، ۱/۱۴۵، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

आए क्यूं कि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिये कि ईमान जो सब से बड़ी नेकी है वोह इस के साथ है ।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ۫ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَؕ ثُمَّ تَوَلَّیْتُمْ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْكُمْ وَ اَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ(۸۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए मगर तुम में के थोड़े और तुम रूगर्दान हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी की इ़बादत न करो और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ (अच्छा सुलूक करो) और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो (लेकिन) फिर तुम में से चन्द आदमियों के इ़लावा सब फिर गए और तुम (वैसे ही **अल्लाह** के अह़काम से) मुंह मोड़ने वाले हो ।

﴾وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ﴿ : **और याद करो जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया ।** या'नी ऐ यहूदियो ! वोह वक़्त याद करो जब हम ने बनी इसराईल से तौरात में येह अ़ह्द लिया कि तुम **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी की इ़बादत न करो क्यूं कि उस के इ़लावा और कोई इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं और अपने मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ अच्छा सुलूक करो और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो लेकिन इसे क़बूल करने के बा'द उन में से चन्द आदमियों के इ़लावा सब इस अ़ह्द से फिर गए और तुम भी अपने आबाओ अज्दाद की त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम

www.dawateislami.net

से मुंह मोड़ने वाले हो।[1]

इस से मा'लूम हुवा कि बनी इसराईल की आदत ही **अल्लाह** तआला के अहकाम से ए'राज़ करना और उस के अहद से फिर जाना है।

﴿وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا﴾ **: और वालिदैन के साथ भलाई करो।** **अल्लाह** तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन के साथ भलाई येह है कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जो उन के लिये बाइसे तक्लीफ़ हो और अपने बदन और माल से उन की ख़ूब ख़िदमत करे, उन से महब्बत करे, उन के पास उठने बैठने, उन से गुफ़्तगू करने और दीगर तमाम कामों में उन का अदब करे, उन की ख़िदमत के लिये अपना माल उन्हें ख़ुशदिली से पेश करे, और जब उन्हें ज़रूरत हो उन के पास हाज़िर रहे। उन की वफ़ात के बा'द उन के लिये ईसाले सवाब करे, उन की जाइज़ वसिय्यतों को पूरा करे, उन के अच्छे तअल्लुक़ात को क़ाइम रखे। वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों के आदी हों या किसी बद मज़्हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को नरमी के साथ इस्लाह व तक़्वा और सहीह अक़ाइद की तरफ़ लाने की कोशिश करता रहे।[2]

हुक़ूक़े वालिदैन की तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 24वीं जिल्द में मौजूद आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का रिसाला ''اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق (वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़)'' का मुतालआ फ़रमाएं।[3]

﴿وَ ذِی الْقُرْبٰى﴾ **: और रिश्तेदारों से।** हुक़ूक़ुल इबाद में सब से मुक़द्दम मां बाप का हक़ है फिर दूसरे रिश्तेदारों का और फिर ग़ैरों का। ग़ैरों में बेकस यतीम सब से मुक़द्दम है फिर दूसरे मसाकीन।

इस्लाम में हुक़ूक़ुल इबाद की अहम्मिय्यत

इस आयत में वालिदैन और दीगर लोगों के हुक़ूक़ बयान करने से येह भी मा'लूम हुवा कि दीने इस्लाम में हुक़ूक़ुल इबाद की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है, बल्कि अहादीस में यहां तक है कि हुक़ूक़ुल्लाह पूरा करने के बा वुजूद बहुत से लोग हुक़ूक़ुल इबाद में कमी की वज्ह

1 ......جلالین مع صاوی، البقرة، تحت الآية: ٨٣، ١/٨١-٨٢، ملخصاً.

2 ......تفسیر خازن، البقرة، تحت الآية: ٨٣، ١/٦٦، تفسیر عزیزی (مترجم)، ٢/٥٥٧-٥٥٨، ملتقطاً.

3 ...... नीज़ अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला ''समुन्दरी गुम्बद'' (मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) पढ़ना भी बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

से जहन्नम के मुस्तहिक़ होंगे, जैसा कि सहीह़ मुस्लिम में है, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : हम में मुफ़्लिस वोह है जिस के पास दिरहम और साज़ो सामान न हो। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात (वग़ैरा आ'माल) ले कर आए और उस का ह़ाल येह हो कि उस ने (दुन्या में) किसी को गाली दी थी, किसी पर तोहमत लगाई थी, किसी का माल खाया था, किसी का ख़ून बहाया था और किसी को मारा था तो इन में से हर एक को उस की नेकियां दे दी जाएंगी और उन के हु़क़ूक़ पूरे होने से पहले अगर उस की नेकियां (उस के पास से) ख़त्म हो गईं तो उन के गुनाह इस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा[1]।"[2]

﴿وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا : **और लोगों से अच्छी बात कहो।**﴾ अच्छी बात से मुराद नेकी की दा'वत और बुराइयों से रोकना है। नेकी की दा'वत में इस के तमाम त़रीक़े दाख़िल हैं, जैसे बयान करना, दर्स देना, वा'ज़ो नसीह़त करना वग़ैरा। नीज़ अच्छी बात कहने में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत, हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान, औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِم के मक़ामो मर्तबे का बयान और नेकियों और बुराइयों के मुतअ़ल्लिक़ समझाना सब शामिल हैं।[3]

﴿اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْكُمْ : **मगर तुम में से थोड़े।**﴾ बनी इसराईल की अक्सरिय्यत **अल्लाह** तआ़ला से अ़ह्दो पैमान करने के बा'द अपने अ़ह्द से फिर गई और गुनाहों के रास्ते पर चल पड़ी, अलबत्ता कुछ लोग सहीह़ रास्ते पर साबित क़दम रहे और उसी गुरौह वाले हमारे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़माना पा कर ईमान ले आए।

बनी इसराईल की बद अ़ह्दी को सामने रख कर मुसल्मान भी अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें

इस आयत में बनी इसराईल की जो ह़ालत बयान की गई अफ़्सोस कि फ़ी ज़माना मुसल्मानों की ह़ालत भी इस से कुछ मुख़्तलिफ़ नहीं। काश कि हम भी ग़ौर करें कि मुसल्मान

---

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٤، الحدیث: ٥٩ (٢٥٨١).

2 ...... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का इस मौज़ूअ़ पर रिसाला "ज़ुल्म का अन्जाम" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखता है।

3 ...... नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये "दा'वते इस्लामी" के मदनी माहोल से वाबस्ता होने में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है।

www.dawateislami.net

होने की हैसिय्यत से कलिमा पढ़ कर हम ने नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, इताअ़ते इलाही, इताअ़ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी की पाबन्दी का जो अ़हद **अल्लाह** तआ़ला के साथ किया हुवा है क्या हम भी उसे पूरा करते हैं या नहीं ?

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَ لَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِیَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَ اَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने तुम से अ़हद लिया कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुम ने इस का इक़रार किया और तुम गवाह हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने तुम से अ़हद लिया कि आपस में किसी का ख़ून न बहाना और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुम ने इक़रार भी कर लिया और तुम (ख़ुद इस के) गवाह हो ।

﴿وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ : **और याद करो जब हम ने तुम से अ़हद लिया ।**﴾ या'नी ऐ यहूदियो ! वोह वक़्त याद करो जब हम ने तुम्हारे आबाओ अज्दाद से तौरात में येह अ़हद लिया कि तुम आपस में किसी का ख़ून न बहाना और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से न निकालना, फिर उन्हों ने इस अ़हद का इक़रार कर लिया और तुम ख़ुद भी अपने आबाओ अज्दाद के इस इक़रार के गवाह हो ।(1)

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِیْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِیَارِهِمْ٘ تَظٰهَرُوْنَ عَلَیْهِمْ بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِؕ وَ اِنْ یَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَ هُوَ مُحَرَّمٌ عَلَیْكُمْ اِخْرَاجُهُمْؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٨٤، ١٧٤/١.

www.dawateislami.net

الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا
خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰۤى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۸۵ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
بِالْاٰخِرَةِ ۫ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝۸۶ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर येह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे और अपने में एक गुरौह को उन के वत़न से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह और ज़ियादती में और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उन का निकालना तुम पर ह़राम है तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते और कुछ से इन्कार करते हो तो जो तुम में ऐसा करे उस का बदला क्या है मगर येह कि दुन्या में रुस्वा हो और क़ियामत में सख़्त तर अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों से बे ख़बर नहीं। येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली तो न उन पर से अ़ज़ाब हलका और न उन की मदद की जाए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर येह तुम ही हो जो अपने लोगों को क़त्ल (भी) करने लगे और अपने में से एक गुरौह को उन के वत़न से (भी) निकालने लगे, तुम उन के ख़िलाफ़ गुनाह और ज़ियादती के कामों में मदद (भी) करते हो और अगर वोही क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो तुम मुआ़वज़ा दे कर उन्हें छुड़ा लेते हो ह़ालां कि तुम्हारे ऊपर तो उन का निकालना ही ह़राम है। तो क्या तुम **अल्लाह** के बा'ज़ अह़कामात को मानते हो और बा'ज़ से इन्कार करते हो ? तो जो तुम में ऐसा करे उस का बदला दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़िल्लतो रुस्वाई के सिवा और क्या है और क़ियामत के दिन उन्हें शदीद तरीन अ़ज़ाब की त़रफ़ लौटाया जाएगा और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं। येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी ख़रीद ली तो उन से न तो अ़ज़ाब हलका किया जाएगा और न ही उन की मदद की जाएगी।

﴾ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ **: फिर येह जो तुम हो**﴿ इस आयत में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस ज़माने में मौजूद यहूदियों के अ़जीबो ग़रीब त़र्ज़े अ़मल का बयान है, इस का पस मन्ज़र

www.dawateislami.net

येह है कि तौरात में बनी इसराईल को तीन हुक्म दिये गए थे : (1) एक दूसरे को क़त्ल न करना। (2) एक दूसरे को जला वत़न न करना। (3) अगर वोह अपनी क़ौम के किसी मर्द या औ़रत को इस ह़ाल में पाएं कि उसे ग़ुलाम या लौंडी बना लिया गया है तो उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दें। नस्ल दर नस्ल येह अ़ह्द चलता रहा यहां तक कि मदीनए मुनव्वरह के गिर्दो नवाह़ में आबाद यहूदियों के दो क़बाइल बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर में मुन्तक़िल हुवा, उस वक़्त मदीने शरीफ़ में मुश्रिकों के दो क़बीले औस और ख़ज़रज रहते थे, बनी क़ुरैज़ा औस क़बीले के ह़लीफ़ थे और बनी नज़ीर ख़ज़रज क़बीले के ह़लीफ़ थे और हर एक क़बीले ने अपने ह़लीफ़ के साथ क़सम उठा रखी थी कि अगर हम में से किसी पर कोई ह़म्ला आवर हो तो दूसरा उस की मदद करेगा। जब औस और ख़ज़रज के दरमियान जंग होती तो बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नज़ीर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे और अपने ह़लीफ़ के साथ हो कर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते और बनी क़ुरैज़ा बनी नज़ीर को और वोह बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते, उन के घर वीरान कर देते और उन्हें उन की रिहाइश गाहों से निकाल देते थे, लेकिन जब उन की क़ौम के लोगों को उन के ह़लीफ़ क़ैद कर लेते तो वोह उन को माल दे कर छुड़ा लेते थे, मसलन अगर बनी नज़ीर का कोई शख़्स औस क़बीले के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस क़बीले को माली मुआ़वज़ा दे कर उस को छुड़ा लेते ह़ालां कि अगर वोही शख़्स लड़ाई के वक़्त उन के हाथ आ जाता तो उसे क़त्ल करने में हरगिज़ दरेग़ न करते थे। लोगों ने उन से कहा कि तुम भी अ़जीब लोग हो कि एक दूसरे को क़त्ल भी करते हो और फ़िदया दे कर छुड़ा भी लेते हो। यहूदियों ने कहा : हमें तौरात में येह हुक्म दिया गया है कि हम अपने क़ैदियों को फ़िदया दे कर छुड़ा लें, इस पर उन से कहा गया कि फिर तुम एक दूसरे को क़त्ल क्यूं करते हो ह़ालां कि तौरात में तुम्हें इस चीज़ से भी तो मन्अ़ किया गया है। यहूदियों ने कहा : जंग के दौरान एक दूसरे को क़त्ल करने से अगर्चे हमारा **अल्लाह** तआ़ला के साथ किया हुवा अ़ह्द टूट जाता है लेकिन हमें इस बात से शर्म आती है कि हमारे ह़लीफ़ ज़लील हों क्यूं कि अगर हम ने एक दूसरे को क़त्ल और जला वत़न न किया तो इस में हमारे ह़लीफ़ों की ज़िल्लत है और चूंकि फ़िदया दे कर छुड़ा लेने में उन की ज़िल्लत नहीं है इस लिये हम इस अ़ह्द को पूरा कर देते हैं। यहूदियों की इस ह़रकत पर उन्हें इस आयत में मलामत की जा रही है कि जब तुम ने अपनों की ख़ूं रेज़ी न करने, उन को बस्तियों से न निकालने और उन के असीरों को छुड़ाने का अ़ह्द किया था तो येह क्या दो रंगी है कि तुम एक दूसरे को क़त्ल और जला वत़न करने में तो हरगिज़ दरेग़ नहीं करते और जब कोई गिरिफ़्तार हो जाए तो उसे फ़िदया दे कर छुड़ा लेते हो और जिन बातों का तुम ने अ़ह्द किया था उन में से कुछ बातों को मानना

www.dawateislami.net

और कुछ को न मानना क्या मा'ना रखता है ! जब तुम एक दूसरे को क़त्ल और जला वत़न करने से बाज़ न रहे तो तुम ने अ़ह्द शिकनी की और ह़राम के मुरतकिब हुए।

﴿اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ : **क्या किताब के कुछ ह़िस्से पर ईमान रखते हो।**﴾ बनी इसराईल का अ़मली ईमान नाक़िस था कि कुछ ह़िस्से पर अ़मल करते थे और कुछ पर नहीं, इस पर फ़रमाया गया कि क्या तुम किताब के कुछ ह़िस्से पर ईमान रखते हो और कुछ से इन्कार करते हो। इस आयत से मा'लूम हुवा कि शरीअ़त के तमाम अह़काम पर ईमान रखना ज़रूरी है और तमाम ज़रूरी अह़काम पर अ़मल करना भी ज़रूरी है। कोई शख़्स किसी वक़्त भी शरीअ़त की पाबन्दी से आज़ाद नहीं हो सकता और ख़ुद को त़रीक़त का नाम ले कर या किसी भी त़रीक़े से शरीअ़त से आज़ाद कहने वाले काफ़िर हैं। इस की तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 21वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَعُلَمَاءَ (उ़लमा और शरीअ़त की अ़ज़मत पर अहले मा'रिफ़त का कलाम)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं। याद रहे कि अ़ज़मते तौह़ीद को मानना लेकिन अ़ज़मते रिसालत से इन्कार करना भी इसी ज़ुम्रे में आता है कि क्या तुम किताब के कुछ ह़िस्से को मानते हो और कुछ ह़िस्से का इन्कार करते हो।

﴿خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا : **दुन्या की ज़िन्दगी में रुस्वाई।**﴾ बनी इसराईल की दुन्या में तो येह रुस्वाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा 3 हिजरी में मारे गए और बनी नज़ीर इस से पहले ही जला वत़न कर दिये गए। इस से मा'लूम हुवा कि किसी की त़रफ़ दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना उख़रवी अ़ज़ाब के इ़लावा दुन्या में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइ़स होता है। दुन्या के बड़े बड़े मुआ़मलात को इस आयत के तह़त देखा जा सकता है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि कभी गुनाहों की शामत से दुन्यावी आफ़ात भी आ जाती हैं।

﴿وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ : **और अल्लाह ग़ाफ़िल नहीं।**﴾ इस त़रह़ की आयात जिन में येह मफ़्हूम हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे आ'माल से ग़ाफ़िल नहीं उन में ना फ़रमानों के लिये शदीद वई़द होती है कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे अफ़्आ़ल से बे ख़बर नहीं है, तुम्हारी ना फ़रमानियों पर शदीद अ़ज़ाब देगा। यूंही ऐसी आयात में मोमिनीन व सालिह़ीन के लिये ख़ुश ख़बरी होती है कि उन्हें आ'माले ह़सना की बेहतरीन जज़ा मिलेगी।[1]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ؗ وَاٰتَيْنَا

1 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ٨٥، ٥٩٤/١، روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٨٥، ١٧٥/١-١٧٦، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

عِیۡسَی ابۡنَ مَرۡیَمَ الۡبَیِّنٰتِ وَ اَیَّدۡنٰہُ بِرُوۡحِ الۡقُدُسِ ؕ اَفَکُلَّمَا جَآءَکُمۡ
رَسُوۡلٌۢ بِمَا لَا تَہۡوٰۤی اَنۡفُسُکُمُ اسۡتَکۡبَرۡتُمۡ ۚ فَفَرِیۡقًا کَذَّبۡتُمۡ ۫ وَ فَرِیۡقًا
تَقۡتُلُوۡنَ ﴿۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता की और उस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे और हम ने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां अ़ता फ़रमाईं और पाक रूह़ से उस की मदद की तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वोह ले कर आए जो तुम्हारे नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन में एक गुरौह को तुम झुटलाते और एक गुरौह को शहीद करते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता की और उस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे और हम ने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां अ़ता फ़रमाईं और पाक रूह़ के ज़रीए़ उन की मदद की तो (ऐ बनी इसराईल !) क्या (तुम्हारा येह मा'मूल नहीं है ? कि) जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसे अह़काम ले कर तशरीफ़ लाया जिन्हें तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते थे तो तुम तकब्बुर करते थे फिर उन (अम्बिया में से) एक गुरौह को तुम झुटलाते थे और एक गुरौह को शहीद कर देते थे।

﴾وَلَقَدۡ اٰتَیۡنَا مُوۡسَی الۡکِتٰبَ : **हम ने मूसा को किताब दी।**﴿ यहां से बनी इसराईल को दी गई मज़ीद ने'मतें बयान की जा रही हैं, इस आयत में किताब से तौरैत मुराद है जिस में **अल्लाह** तआ़ला के तमाम अ़ह्द मज़्कूर थे। उन में सब से अहम अ़ह्द येह थे कि हर ज़माने के पैग़म्बरों की इताअ़त करना, उन पर ईमान लाना और उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना जैसा कि सूरए माइदह आयत 21 में मज़्कूर है।

﴾وَقَفَّیۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِہٖ بِالرُّسُلِ : **और उस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे।**﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक मुतवातिर अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आते रहे, उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई है, येह सब ह़ज़रात ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शरीअ़त के मुह़ाफ़िज़ और उस के अह़काम जारी करने वाले थे और चूंकि हमारे आक़ा, ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस

www.dawateislami.net

लिये शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह की ह़िफ़ाज़तो इशाअ़त की ख़िदमत उ़लमाए रब्बानी और मुजद्दिदीन को अ़ता हुई।

﴿اٰتَیْنَا عِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ الْبَیِّنٰتِ : **ईसा बिन मरयम को हम ने निशानियां दीं।**﴾ इन निशानियों से मुराद ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात हैं जैसे मुर्दों को ज़िन्दा करना, अन्धों और बरस वालों को सिह़ह़त देना, परिन्दों की सूरतों में जान डाल देना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरा जैसा कि सूरए आले इमरान आयत 49 में है।

﴿وَاَیَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ : **और पाक रूह़ के ज़रीए़ उस की मदद की।**﴾ रूहुल क़ुदुस से ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام मुराद हैं कि वोह रूह़ानी हैं और ऐसी वह़ी लाते हैं जिस से दिलों को ह़यात या'नी ज़िन्दगी मिलती है। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ रहने का हुक्म था। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आस्मान पर उठाए जाने तक ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सफ़रो ह़ज़र में कभी आप से जुदा न हुए और ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की ताईद ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है। हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'ज़ उम्मतियों को भी रूहुल क़ुदुस की ताईद मुयस्सर हुई चुनान्चे बुख़ारी, अबू दावूद और मो'जमे कबीर की ह़दीस है कि ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये मिम्बर बिछाया जाता और वोह ना'त शरीफ़ पढ़ते। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये दुआ़ फ़रमाते ''اَللّٰھُمَّ اَیِّدْہُ بِرُوْحِ الْقُدُس'' ऐ **अल्लाह**! रूहुल क़ुदुस के ज़रीए़ ह़स्सान की मदद फ़रमा।(1)

ग़ैरे ख़ुदा का मदद करना शिर्क नहीं

इस तफ़्सीर से येह भी मा'लूम हुवा कि ग़ैरे ख़ुदा की मदद शिर्क नहीं, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मदद ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के ज़रीए़ फ़रमाई और जब ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام मदद कर सकते हैं तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी **अल्लाह** तआ़ला की अ़ता की हुई त़ाक़तो क़ुदरत से यक़ीनन मदद फ़रमा सकते हैं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपनी ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में मदद फ़रमाने का तो कसीर अह़ादीस में ज़िक्र है, अलबत्ता हम यहां 2 ऐसे वाक़िआ़त ज़िक्र करते हैं जिन से येह साबित

(1) ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب الشعر فی المسجد، ۱/۱۷۲، الحدیث: ۴۵۳، ابو داؤد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الشعر، ۴/۳۹۴-۳۹۵، الحدیث: ۵۰۱۵، معجم الکبیر، ۴/۳۷، الحدیث: ۳۵۸۰، واللفظ للمعجم.

www.dawateislami.net

होता है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी के बा'द अपनी बारगाह में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद करने वालों की मदद फ़रमाई ।

(1)...... मश्हूर मुह़द्दिसीन इमाम अबू बक्र बिन मक़री, अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी और इमाम अबू शैख़ رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہِم ने मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर भूक की फ़रियाद की तो रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अ़लवी के ज़रीए़ उन्हें खाना भिजवाया और उस अ़लवी ने कहा : आप लोगों ने बारगाहे रिसालत में फ़रियाद की थी तो मुझे ख़्वाब में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई और हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं आप लोगों तक खाना पहुंचा दूं ।[1]

(2)...... अबू क़ासिम साबित बिन अह़मद बग़दादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहरे अक़्दस मदीनए मुनव्वरह में एक शख़्स को देखा कि उस ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के क़रीब सुब्ह़ की अज़ान दी और जब उस ने "**اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ**" कहा तो येह सुन कर मस्जिदे नबवी के ख़ादिमों में से एक ख़ादिम आया और इस ने उसे थप्पड़ मार दिया । वोह शख़्स रोने लगा और उस ने फ़रियाद की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप की मौजूदगी में इस शख़्स ने मेरे साथ ऐसा किया है । (उस की फ़रियाद जैसे ही ख़त्म हुई) तो उस ख़ादिम पर फ़ालिज गिरा और लोग उसे उठा कर उस के घर ले गए, तीन दिन बा'द वोह ख़ादिम मर गया ।[2]

याद रहे कि अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन अह़मद समहूदी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मश्हूर किताब "**وَفَاءُ الْوَفَاءِ بِاَخْبَارِ دَارِ الْمُصْطَفٰی**" के चौथे ह़िस्से में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہِم के ऐसे कई वाक़िआ़त बयान फ़रमाए हैं जिन में येह ज़िक्र है कि उन्हों ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अपनी ह़ाजत बयान की और रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की मदद करते हुए उन की ह़ाजत पूरी फ़रमा दी और इमाम मुह़म्मद बिन मूसा बिन नो'मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तो इस मौज़ूअ़ पर "**مِصْبَاحُ الظَّلَامِ فِی الْمُسْتَغِیْثِیْنَ بِخَیْرِ الْاَنَامِ**" के नाम से बा क़ाइदा एक किताब भी लिखी है ।

---

1 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الفصل الثالث، ۲/۱۳۸۰، الجزء الرابع.

2 ......ابن عساکر، حرف الثاء، ذکر من اسمہ ثابت، ۱۱/۱۰۴.

www.dawateislami.net

﴿لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُكُمُ : **तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते**।﴾ यहूदी लोग, पैग़म्बरों के अह़काम अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पा कर उन्हें झुटलाते और मौक़अ़ पाते तो उन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़त्ल कर डालते थे जैसा कि उन्हों ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते यह्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इन के इ़लावा बहुत से अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद किया, ह़त्ता कि हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भी दर पै रहे, कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू किया, कभी ज़हर दिया और इन के इ़लावा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद करने के लिये त़रह़ त़रह़ के फ़रेब करते रहे। आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि अह़कामे इलाही पर अपनी ख़्वाहिशात को तरजीह़ देना यहूदियों जब कि हुक्मे इलाही के सामने अपने नफ़्स को कुचल देना कामिलुल ईमान लोगों की निशानी है।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूदी बोले हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदियों ने कहा : हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र की वज्ह से उन पर ला'नत कर दी है तो उन में से थोड़े लोग ही ईमान लाते हैं।

﴿قُلُوْبُنَا غُلْفٌ : **हमारे दिलों पर पर्दे हैं**।﴾ यहूदियों ने मज़ाक़ उड़ाने के त़ौर पर कहा था कि हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं। उन की मुराद येह थी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिदायत उन के दिलों तक नहीं पहुंचती। **अल्लाह** तआ़ला ने इस का रद फ़रमाया कि येह झूटे हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने दिलों को फ़ित़रत पर पैदा फ़रमाया और इन में ह़क़ क़ुबूल करने की सलाह़िय्यत रखी है। यहूदियों का ईमान न लाना उन के कुफ़्र की शामत है कि उन्हों ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पहचान लेने के बा'द इन्कार किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर ला'नत फ़रमाई, इस का येह असर है कि वोह क़ुबूले ह़क़ की ने'मत से मह़रूम हो गए।(1)

आज भी ऐसे लोग हैं कि जिन के दिलों पर अ़ज़मते रिसालत समझने से पर्दे पड़े हुए हैं।

1 ......جلالین مع جمل، البقرة، تحت الآیة: ۸۸، ۱/۱۱۴-۱۱۵.

www.dawateislami.net

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है और इस से पहले वोह इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब आई जो उन के पास (मौजूद) किताब की तस्दीक़ करने वाली है और इस से पहले येह इसी नबी के वसीले से काफ़िरों के ख़िलाफ़ फ़त्ह़ मांगते थे तो जब उन के पास वोह जाना पहचाना नबी तशरीफ़ ले आया तो उस के मुन्किर हो गए तो **अल्लाह** की ला'नत हो इन्कार करने वालों पर ।

﴿مُصَدِّقٌ﴾ **: तस्दीक़ करने वाली ।** क़ुरआने पाक गुज़श्ता किताबों की तस्दीक़ करने वाली किताब है कि वोह किताबें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हैं । नीज़ उन किताबों ने क़ुरआन के नाज़िल होने की ख़बर दी थी, क़ुरआन के आने से वोह ख़बरें सच्ची हो गईं ।

﴿مَا عَرَفُوْا﴾ **: जाना पहचाना नबी ।** **शाने नुज़ूल :** इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी और क़ुरआने करीम के नुज़ूल से पहले यहूदी अपनी ह़ाजात के लिये हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे पाक के वसीले से दुआ़ करते और काम्याब होते थे और इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : ''اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا وَانْصُرْنَا بِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ या रब ! हमें नबिय्ये उम्मी के सदक़े में फ़त्ह़ो नुसरत अ़त़ा फ़रमा ।'' इस आयत में यहूदियों को वोह वाक़िआ़त याद दिलाए जा रहे हैं कि पहले तुम उन के नाम के त़ुफ़ैल दुआ़एं मांगते थे, अब जब वोह नबी तशरीफ़ ले आए तो तुम इन के मुन्किर हो गए ।[1]

1 ......تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآية: ۸۹، ۱/۵۹۸-۵۹۹، جلالین مع جمل، البقرة، تحت الآية: ۸۹، ۱/۱۱۵، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मख़्लूक़ की ह़ाजत रवाई का वसीला

इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में तशरीफ़ आवरी से पहले ही हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से दुआ़एं मांगी जाती थीं और हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से पहले ही मख़्लूक़ की ह़ाजत रवाई होती थी। येह सिल्सिला आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के बा'द ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में भी जारी रहा कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़एं मांगते थे बल्कि अपने वसीले से दुआ़ मांगने की ता'लीम ख़ुद हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم को दी, और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم का येह मा'मूल रहा और सलफ़ सालिह़ीन का येह त़रीक़ा तब से अब तक जारी है और اِنْ شَآءَ الله हमेशा जारी रहेगा। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

है ख़लीलुल्लाह को ह़ाजत रसूलुल्लाह की   वोह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़्नी हुवा

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ یَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْیًا اَنْ یُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍؕ وَ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ (۹۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : किस बुरे मोलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि **अल्लाह** के उतारे से मुन्किर हों इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे वह़ी उतारे तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन्हों ने अपनी जानों का कितना बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** ने जो नाज़िल फ़रमाया है उस का इन्कार कर रहे हैं इस ह़सद की वज्ह से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहता है वह़ी नाज़िल फ़रमाता है तो येह लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हो गए और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

﴿بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ﴾ **: उन्हों ने अपनी जानों का कितना बुरा सौदा किया।** यहूदियों ने

www.dawateislami.net

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की बजाए कुफ़्र इख़्तियार किया और ईमान की जगह कुफ़्र ख़रीदना ख़सारे का सौदा है। इसी से हर आदमी नसीहत हासिल करे कि ईमान की जगह कुफ़्र, नेकियों की जगह गुनाह, इताअत की जगह ना फ़रमानी, रिज़ाए इलाही की जगह **अल्लाह** तआला के ग़ज़ब का सौदा बहुत ख़सारे का सौदा है।

﴿بَغْيًا : **हसद की वज्ह से।**﴾ यहूदियों की ख़्वाहिश थी ख़त्मे नुबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता, लेकिन जब उन्हों ने देखा कि वोह इस मन्सब से महरूम रहे और बनी इस्माईल को येह मन्सब मिल गया तो वोह हसद की वज्ह से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन पर नाज़िल होने वाली **अल्लाह** तआला की किताब क़ुरआने मजीद के मुन्किर हो गए। इस से मा'लूम हुवा कि मन्सबो मर्तबे की तलब इन्सान के दिल में हसद पैदा होने का एक सबब है और येह भी मा'लूम हुवा कि हसद ऐसा ख़बीस मरज़ है जो इन्सान को कुफ़्र तक भी ले जा सकता है।

हसद ईमान के लिये तबाह कुन

हसद की ता'रीफ़ येह है कि किसी मुसल्मान भाई को मिलने वाली ने'मत छिन जाने की आरज़ू की जाए, और ऐसी आरज़ू की बुराई मोहताजे बयान नहीं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "आदमी के दिल में ईमान और हसद जम्अ़ नहीं होते।"(1)

हज़रते मुआविया बिन हैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "हसद ईमान को इस तरह तबाह कर देता है जैसे सबिर (या'नी एक दरख़्त का इन्तिहाई कड़वा निचोड़) शहद को तबाह कर देता है।"(2)

याद रहे कि हसद हराम है और इस बातिनी मरज़ के बारे में इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है। इस से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मशहूर किताब "एहयाउल उ़लूम" की तीसरी जिल्द में मौजूद हसद से मुतअ़ल्लिक़ बयान मुतालआ़ फ़रमाएं।

﴿فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ : **तो येह लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए।**﴾ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं: यहूदी तौरात को ज़ाएअ़ करने और उस

1 ......سنن نسائی، کتاب الجهاد، فضل من عمل فی سبیل الله... الخ، ص٥٠٥، الحدیث: ٣٦١٠.

2 ......جامع صغیر، حرف الحاء، ص٢٣٢، الحدیث: ٣٨١٩.

www.dawateislami.net

के अह्‌कामात को तब्दील करने की वज्ह से पहले ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हुए और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र करने की वज्ह से दूसरे ग़ज़ब के ह़क़दार ठहरे। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन्जील का इन्कार करने की वज्ह से यहूदी पहले ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हुए और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कुरआने मजीद का इन्कार कर के दूसरे ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हो गए।(1)

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا وَ یَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِیَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۹۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए कि **अल्लाह** के उतारे पर ईमान लाओ तो कहते हैं वोह जो हम पर उतरा उस पर ईमान लाते हैं और बाक़ी से मुन्किर होते हैं ह़ालां कि वोह ह़क़ है उन के पास वाले की तस्दीक़ फ़रमाता हुवा तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यूं शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब पर ईमान था।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि उस पर ईमान लाओ जो **अल्लाह** ने नाज़िल फ़रमाया है तो कहते हैं : हम उसी पर ईमान लाते हैं जो हमारे ऊपर नाज़िल किया गया और वोह तौरात के इलावा दीगर का इन्कार करते हैं ह़ालां कि वोह (कुरआन) भी ह़क़ है उन के पास मौजूद (किताब) की तस्दीक़ करने वाला है। ऐ मह़बूब ! तुम फ़रमा दो कि (ऐ यहूदियो !) अगर तुम ईमान वाले थे तो फिर पहले तुम **अल्लाह** के नबियों को क्यूं शहीद करते थे ?

﴾وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ : **और जब उन से कहा जाए।**﴿ इस आयत में यहूदियों का एक और क़बीह़ फ़े'ल बयान किया जा रहा है कि जब उन से कहा जाए कि **अल्लाह** तआ़ला की नाज़िल की हुई तमाम किताबों पर ईमान लाओ तो इस के जवाब में वोह कहते हैं : हम सिर्फ़ तौरात पर ईमान लाएंगे जो कि हम पर नाज़िल हुई है। इस से उन का मक़्सद दीगर आस्मानी किताबों और कुरआने मजीद का इन्कार करना था चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने उन का रद करते हुए

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٩٠، ٦٩/١.

www.dawateislami.net

फ़रमाया कि कुरआन भी हक़ है और येह उन यहूदियों के पास मौजूद तौरात की तस्दीक़ करने वाला है और जब तौरात में हज़रत मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के बारे में ख़बरें मौजूद हैं और तुम तौरात पर ईमान लाने के दा'वेदार हो तो फिर मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और उन पर नाज़िल की गई किताब कुरआने मजीद का इन्कार क्यूं करते हो और ऐ हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इन यहूदियों से फ़रमाएं कि अगर तुम तौरात पर ईमान लाने के इतने ही बड़े दा'वेदार हो तो येह बताओ कि पहले तुम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क्यूं शहीद करते थे हालां कि तौरात में तो अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद करने से मन्अ़ किया गया था।(1)

आयत "وَ اِذَا قِیْلَ لَہُمْ" से मा'लूम होने वाले अह़काम

(1)...... इस आयत से मा'लूम हुवा कि तमाम आस्मानी किताबों पर और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमानों पर ईमान लाना ज़रूरी है और इन में से एक का भी इन्कार कुफ़्र है, यूंही तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाना ज़रूरी है और इन में से एक का भी इन्कार करना कुफ़्र है।

(2)...... अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीम ईमान का रुक्ने आ'ला है और इन की तौहीन करना कुफ़्र है।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला के नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद करना कुफ़्र है।

(4)...... कुफ़्र से राज़ी होना भी कुफ़्र है क्यूं कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने के बनी इसराईल ने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद न किया था मगर चूंकि वोह क़ातिलों की इस हरकत से राज़ी थे और उन को अपना बड़ा मानते थे और उन्हें अ़ज़मत से याद करते थे इस लिये इन्हें भी क़ातिलों में शामिल किया गया। आज कल भी अगर कोई बज़ाते ख़ुद गुस्ताख़ी न भी करे लेकिन गुस्ताख़ों को अच्छा समझे, उन्हें अपना बड़ा माने तो वोह उन्हीं में शामिल है और वोह भी गुस्ताख़ ही है। हज़रते उ़रस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब ज़मीन में गुनाह किया जाए तो जो वहां मौजूद है मगर उसे बुरा जानता है, वोह उस की मिस्ल है जो वहां नहीं है और जो वहां नहीं मगर उस पर राज़ी है, वोह

1 ......تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۹۱، ۱/۶۰۲-۶۰۴، خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۹۱، ۱/۶۹-۷۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

उस की मिस्ल है जो वहां ह़ाज़िर है।"(1)

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَیِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां ले कर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने उस के बा'द बछड़े को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक तुम्हारे पास मूसा रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए फिर तुम ने उस के बा'द बछड़े को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे।

﴿اِتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ : **बछड़े को मा'बूद बना लिया।**﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बनी इसराईल के पास रोशन मो'जिज़ात ले कर तशरीफ़ लाए और जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द बनी इसराईल ने सामिरी के बहकाने से गाय को मा'बूद बना लिया और गाय की पूजा कर के उन्हों ने कुफ़्र किया। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रोशन निशानियां देख कर बनी इसराईल बछड़े की पूजा में मुब्तला हो गए तो इन यहूदियों का सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र करना इन के लिये कौन सी बड़ी बात है ?(2)

इस आयत से मा'लूम हुवा कि गाय की इ़बादत क़दीम अ़र्से से चलती आ रही है। मुसल्मानों को गाय ज़ब्ह़ करने का हुक्म है, इस की ता'ज़ीम की इजाज़त नहीं कि इस में काफ़िरों से मुशाबहत है और काफ़िरों से मुशाबहत मम्नूअ़ है। नीज़ याद रहे कि इस से पहले आयत नम्बर 51 में इस वाक़िए का इज्माली ज़िक्र गुज़र चुका है और यहां दोबारा इज्माली तौर पर इस लिये ज़िक्र किया गया ताकि यहूदियों पर क़ाइम की गई हुज्जत मुअक्कद हो जाए। सूरए طٰهٰ की आयत 85 ता 98 में येह वाक़िआ़ तफ़्सील से मज़्कूर है।

1 ......ابو داود، كتاب الملاحم، باب الامر والنهى، ١٦٦/٤، الحديث: ٤٣٤٥.
2 ......جلالين مع جمل، البقرة، تحت الآية: ٩٢، ١١٨/١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَیْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اسْمَعُوْاؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ عَصَیْنَاۗ وَ اُشْرِبُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْؕ قُلْ بِئْسَمَا یَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِیْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर बुलन्द किया, लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना और उन के दिलों में बछड़ा रच रहा था उन के कुफ़्र के सबब तुम फ़रमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (याद करो) जब हम ने तुम से अ़हद लिया और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर बुलन्द कर दिया (और फ़रमाया) मज़बूती से थाम लो उस को जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और सुनो। उन्हों ने कहा : हम ने सुना और न माना और उन के कुफ़्र की वज्ह से उन के दिलों में तो बछड़ा रचा हुवा था। ऐ मह़बूब ! तुम फ़रमा दो : अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितना बुरा हुक्म देता है।

﴿وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ : **और जब हम ने तुम से अ़हद लिया।**﴾ या'नी ऐ यहूदियो ! वोह वक़्त याद करो जब **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से तौरात पर अ़मल करने का अ़हद लिया लेकिन उन्हों ने ह़स्बे आ़दत ना फ़रमानी की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर कोहे तूर को हवा में बुलन्द कर दिया और उन से फ़रमाया कि चलो अब मज़बूती से इस तौरात को थाम लो जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और हमारे अह़काम ध्यान से सुनो। बनी इसराईल ने डर के मारे दोबारा इता़अ़त का इक़रार तो कर लिया लेकिन उन के दिल की ह़ालत पहले जैसी ही रही और शरीअ़त का हुक्म चूंकि ज़ाहिर पर होता है दिल पर नहीं, इस लिये बनी इसराईल के ज़बानी इक़रार करने पर उन से कोहे तूर को हटा लिया गया अगर्चे उन के दिल में वोही इन्कार था और दर ह़क़ीक़त उन के कुफ़्र की वज्ह से उन के दिलों में तो बछड़े की मह़ब्बत घुसी हुई थी। ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप इन से फ़रमाएं कि ऐ यहूदियो ! तुम अपने अस्लाफ़ की इस ह़रकत को जानते हो लेकिन तुम न इस से नफ़रत का इज़्हार करते हो और न ही इस से अपनी बराअत ज़ाहिर करते हो तो ख़ुद बताओ कि क्या तौरात पर ईमान लाने के येह तक़ाज़े हैं ? अगर

www.dawateislami.net

इस के येही तक़ाज़े हैं तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितना बुरा हुक्म देता है।

क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का मत़लब

इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला की किताब पर ईमान लाने का मत़लब येह है कि उस के तमाम अह़काम और सब तक़ाज़ों पर अ़मल किया जाए और उन की ख़िलाफ़ वरज़ी न की जाए। इस चीज़ को सामने रखते हुए हर मुसल्मान को ग़ौर करना चाहिये कि वोह अपनी ज़बान से क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का जो दा'वा कर रहा है, क्या इस की अ़मली ह़ालत इस दा'वे की तस्दीक़ कर रही है या नहीं। ज़रा ग़ौर करें कि क़ुरआने मजीद में मुसल्मानों को नमाज़ पढ़ने, रमज़ान के रोज़े रखने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया गया लेकिन आज मुसल्मानों की अक्सरिय्यत नमाज़ों से दूर है, फ़र्ज़ रोज़े न रखने के मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहाने तराश रही है और अपने माल से ज़कात अदा करना उन पर बहुत भारी है। क़ुरआने पाक में मुसल्मानों को बात़िल और ना जाइज़ त़रीक़े से किसी मुसल्मान का माल खाने से मन्अ़ किया गया, लेकिन आज माल बटोरने का कौन सा ऐसा ना जाइज़ त़रीक़ा है जो मुसल्मानों में किसी न किसी त़रह़ राइज नहीं। क़ुरआने ह़कीम ने किसी को नाह़क़ क़त्ल करने से मन्अ़ किया लेकिन आज मुसल्मानों में नाह़क़ क़त्लो ग़ारत गरी ऐसी आ़म है कि न मरने वाले को पता है कि मुझे क्यूं मारा गया और न मारने वाले को पता है कि मैं ने क्यूं मारा। क़ुरआन शरीफ़ में मुसल्मान औ़रतों को घरों में रहने और पर्दा करने का हुक्म दिया गया लेकिन आज हमारे मुआ़शरे का वोह कौन सा त़बक़ा है जिस में मुसल्मान औ़रत सज संवर कर अजनबी मर्दों के सामने नहीं आ रही बल्कि आज मुसल्मानों में ही कुछ लोग औ़रत के पर्दा करने को दक़्यानूसी सोच और तंग ज़ेह्नी क़रार दे रहे हैं। ऐ काश कि हम भी अपने ज़बानी ईमान व मह़ब्बत के दा'वों और बे अ़मली व बद अ़मली के दरमियान का तज़ाद और फ़र्क़ समझने में काम्याब हो जाएं और हमें भी इस बात पर ग़ौर करना नसीब हो जाए कि हमारे जैसे आ'माल हैं क्या हमारा ईमान हमें इन आ'माल का हुक्म देता है या हमारे ईमान के तक़ाज़े कुछ और हैं ?

ईमानी क़ुव्वत मा'लूम करने का त़रीक़ा

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि जब तक दिल में बुराई की लज़्ज़तो ह़लावत मौजूद रहती है तब तक ईमान और नेक आ'माल की शीरीनी उस में दाख़िल नहीं हो सकती और गुनाहों पर इसरार ईमान की मिठास और इ़बादत की लज़्ज़त मह़सूस नहीं होने देता। याद

www.dawateislami.net

रहे कि नेकों और नेकियों से महब्बत ईमान की अलामत है जब कि बुरों और बुराइयों से महब्बत ईमान की कमज़ोरी की अलामत है, लिहाज़ा हर शख़्स को चाहिये कि वोह अपनी ईमानी कुव्वत को अपने क़ल्बी मैलान से मा'लूम करे क्यूं कि जिन दिलों में फ़िल्मों, ड्रामों, बे हयाइयों और गानों की महब्बत हो उन दिलों में नमाज़, ज़िक्र, दुरूद और तिलावत की महब्बत नहीं समा सकती ।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۹۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर **अल्लाह** के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ महबूब ! तुम फ़रमा दो : अगर दूसरे लोगों को छोड़ कर आख़िरत का घर **अल्लाह** के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे ही लिये है तो अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना तो करो ।

﴿خَالِصَةً : **ख़ालिस तुम्हारे लिये ।**﴾ यहूदियों का एक बातिल दा'वा येह था कि जन्नत में सिर्फ़ वोही जाएंगे जैसा कि सूरए बक़रह की आयत 111 में येह दा'वा मज़्कूर है इस का रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे गुमान में जन्नत तुम्हारे लिये ख़ास है और आख़िरत की त़रफ़ से तुम्हें इत्मीनान है, आ'माल की हाजत नहीं तो जन्नती ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्यवी मसाइब क्यूं बरदाश्त करते हो, मौत की तमन्ना करो ताकि ऐशो आराम वाली जन्नत में पहुंच जाओ और अगर तुम ने मौत की तमन्ना न की तो येह तुम्हारे झूटा होने की दलील है ।(1)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर यहूदी मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता ।"(2)

﴿فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ : **तो मौत की तमन्ना करो ।**﴾ मौत की महब्बत और **अल्लाह** तआला की मुलाक़ात का शौक़ मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है । हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ (हर नमाज़

1 ......البحر المحيط، البقرة، تحت الآية: ٩٤-٩٥، ١/٤٧٨.

2 ......تفسير بغوى، البقرة، تحت الآية: ٩٤، ١/٦٠.

www.dawateislami.net

के बा'द) दुआ फ़रमाते ''اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی شَھَادَۃً فِی سَبِیْلِکَ وَاجْعَلْ مَوْتِی فِی بَلَدِ رَسُوْلِکَ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم'' या रब मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शह्र में मुझे वफ़ात नसीब फ़रमा।(1)

उ़मूमी त़ौर पर तमाम अकाबिर सह़ाबा और बिल ख़ुसूस शुहदाए बद्रो उहुद व अस्ह़ाबे बैअ़ते रिज़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم राहे ख़ुदा में मौत से मह़ब्बत रखते थे, ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईरान वालों को जो ख़त़ भेजा उस में तह़रीर फ़रमाया था : ''اِنَّ مَعِیَ قَوْمًا یُّحِبُّوْنَ الْقَتْلَ فِیْ سَبِیْلِ اللہِ کَمَا یُحِبُّ الْفَارِسُ الْخَمْرَ'' या'नी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो **अल्लाह** तआ़ला की राह में शहीद हो जाने को इतना मह़बूब रखती है जितना ईरानी लोग शराब से मह़ब्बत रखते हैं।(2)

एक दूसरी रिवायत में है कि इस त़रह़ का ख़त़ ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईरानी लश्कर के सिपह सालार रुस्तम बिन फ़ुर्रुख़ ज़ाद के पास भेजा था और उस में तह़रीर फ़रमाया था : ''اِنَّ مَعِیَ قَوماً یُّحِبُّوْنَ الْمَوْتَ کَمَا یُحِبُّ الْفَارِسُ الْخَمْرَ'' या'नी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मह़बूब रखती है जितना अ़जमी शराब को मरग़ूब रखते हैं।(3)

इस में लत़ीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को मह़ब्बते दुन्या के दीवाने पसन्द करते हैं और **अल्लाह** वाले मौत को मह़बूबे ह़क़ीक़ी के विसाल का ज़रीआ समझ कर मह़बूब जानते हैं। ख़ुलासए कलाम येह कि अहले ईमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर लम्बी उ़म्र की तमन्ना भी करें तो वोह इस लिये होती है कि नेकियां करने के लिये कुछ और अ़र्सा मिल जाए जिस से आख़िरत के लिये ज़ख़ीरए सआ़दत ज़ियादा कर सकें और अगर गुज़श्ता ज़िन्दगी में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें अलबत्ता दुन्यवी मसाइब से तंग कर आ कर वोह कभी मौत की तमन्ना नहीं करते। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे और अगर मौत की तमन्ना करने के सिवा कोई चारा न हो तो यूं दुआ करे कि ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, जब तक ज़िन्दा रहना मेरे लिये बेहतर है उस वक़्त तक मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये वफ़ात बेहतर हो उस वक़्त मुझे वफ़ात दे दे।''(4)

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، ۱۳-باب، ۱/۶۲۲، الحدیث: ۱۸۹۰.

2 ......معجم الکبیر، باب من اسمہ خالد، ۴/۱۰۵، الحدیث: ۳۸۰۶.

3 ...... तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), अल बक़रह, तह़तल आयह : 94, 2/603

4 ......بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی الموت، ۴/۱۳، الحدیث: ۵۶۷۱.

www.dawateislami.net

और दर हक़ीक़त दुन्यवी परेशानियों से तंग आ कर मौत की दुआ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ है और ना जाइज़ है।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ कभी इस की आरज़ू न करेंगे उन बद आ'मालियों के सबब जो आगे कर चुके और **अल्लाह** ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी बद आ'मालियों की वज्ह से येह हरगिज़ कभी मौत की तमन्ना न करेंगे और **अल्लाह** ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

﴾وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ﴿ **: और हरगिज़ मौत की तमन्ना न करेंगे।** ﴾ येह ग़ैब की ख़बर और मो'जिज़ा है कि यहूदी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इस्लाम की शदीद मुख़ालफ़त के बा वुजूद भी मौत की तमन्ना का लफ़्ज़ ज़बान पर न ला सके।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों से एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये और वोह उसे अज़ाब से दूर न करेगा इतनी उम्र दिया जाना और **अल्लाह** उन के कौतक देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों में से एक (गुरौह) तमन्ना करता है कि काश उसे हज़ार साल की ज़िन्दगी दे दी जाए हालां कि इतनी उम्र का दिया जाना भी उसे अज़ाब से दूर न कर सकेगा और **अल्लाह** उन के तमाम आ'माल को ख़ूब देख रहा है।

www.dawateislami.net

﴿ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ : **लोगों में सब से ज़ियादा जीने की हवस** ।﴾ मुश्रिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं "زِہ ہزار سال" या'नी हज़ार बरस जियो। उन के इस क़ौल के पेशे नज़र आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं और यहूदी इन से भी बढ़ गए कि उन्हें जीने की हवस सब से ज़ियादा है ह़ालां कि इतनी उ़म्र का दिया जाना भी उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से दूर न कर सकेगा और **अल्लाह** तआ़ला उन के तमाम आ'माल को ख़ूब देख रहा है और उन का कोई ह़ाल **अल्लाह** तआ़ला से छुपा हुवा नहीं।[1]

दुन्यवी ज़िन्दगी के ह़रीस कौन ?

याद रहे कि कुफ़्फ़ार दुन्यावी ज़िन्दगी पर ह़रीस होते हैं और मौत से बहुत भागते हैं जब कि मोमिन की शान येह है कि वोह अगर ज़िन्दगी चाहता है तो सिर्फ़ इस लिये कि ज़ियादा नेकियां करे, आख़िरत का तोशा जम्अ़ करे और आख़िरत का ज़ादे राह जम्अ़ करने के लिये ज़िन्दगी चाहना अच्छा है कि येह ज़िन्दगी की हवस नहीं बल्कि आख़िरत की तय्यारी है। नीज़ लम्बी उ़म्र और ज़ियादा माल **अल्लाह** तआ़ला के राज़ी होने की अ़लामत नहीं बल्कि येह तो बा'ज़ अवक़ात वबाल का ज़रीआ़ बन जाते हैं। ह़ज़रते अबू बकरह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, लोगों में सब से बेहतरीन कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "जिस की उ़म्र लम्बी हो और अ़मल नेक हो।" उस शख़्स ने फिर अ़र्ज़ की : लोगों में सब से बुरा कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : जिस की उ़म्र लम्बी हो और अ़मल बुरा हो।[2]

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۷﴾

1 ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۹۶، ۱/۷۱.

2 ......ترمذی، کتاب الزھد عن رسول اللّٰہ، باب منه، ۴/۱۴۸، الحدیث: ۲۳۳۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो जो कोई जिब्रील का दुश्मन हो तो उस ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह कुरआन उतारा अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत व बिशारत मुसल्मानों को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ महबूब ! तुम फ़रमा दो : जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो (तो हो) पस बेशक उस ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह उतारा है, जो अपने से पहले मौजूद किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है और ईमान वालों के लिये हिदायत और बिशारत है ।

﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا﴾ **: जो दुश्मन हो ।** **शाने नुज़ूल :** यहूदियों के एक गुरौह ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : आप के पास आस्मान से कौन फ़िरिश्ता आता है ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे पास हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام आते हैं ।'' इब्ने सूरिय्या यहूदी पेशवा ने कहा : वोह हमारा दुश्मन है, अज़ाब, शिद्दत और ज़मीन में धंसाना वोही उतारता है और पहले भी कई मरतबा हम से दुश्मनी कर चुका है अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हज़रते मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام आते तो हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आते ।[1]

यहूदियों की येह बात सरासर जहालत थी क्यूं कि हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام तो जो चीज़ भी लाए वोह **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से थी तो ह़क़ीक़त में येह **अल्लाह** तआ़ला से दुश्मनी थी, बल्कि अगर यहूदी इन्साफ़ करते तो हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام से महब्बत करते और उन के शुक्र गुज़ार होते कि वोह ऐसी किताब लाए जिस से उन की किताबों की तस्दीक़ होती है ।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓىِٕكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो कोई दुश्मन हो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो **अल्लाह** दुश्मन है काफ़िरों का ।

1 ......قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۹۷، ۱/ ۲۸، الجزء الثانی، خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۹۷، ۱/ ۷۱.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो कोई **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्राईल और मीकाईल का दुश्मन हो तो **अल्लाह** काफ़िरों का दुश्मन है।

﴾مَنْ كَانَ عَدُوًّا : **जो कोई दुश्मन हो।**﴿ इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और फ़िरिश्तों से दुश्मनी कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और महबूबाने ह़क़ से दुश्मनी खुदा عَزَّوَجَلَّ से दुश्मनी करना है। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ादिम हैं, इन का दुश्मन रब तआला का दुश्मन है। येह भी मा'लूम हुवा कि एक फ़िरिश्ते से अ़दावत सारे फ़िरिश्तों से अ़दावत है। येही ह़ाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم से अ़दावत रखने का है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : कि **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया : "जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान कर दिया।"(1)

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍۚ وَمَا یَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें उतारीं और इन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें नाज़िल कीं और इन का इन्कार सिर्फ़ ना फ़रमान ही करते हैं।

﴾وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ : **और बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें नाज़िल कीं।**﴿ इब्ने सूरिय्या ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि आप कोई ऐसी चीज़ ले कर नहीं आए जिसे हम पहचानते हों और आप पर ऐसी कोई रोशन आयत नाज़िल नहीं हुई जिस की वज्ह से हम आप की पैरवी करें। **अल्लाह** तआला ने इस का रद करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने आप की त़रफ़ रोशन आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं जिन में ह़लाल, ह़राम और हुदूद वग़ैरा के अह़काम वाज़ेह़ और तफ़्सील से बयान किये गए हैं और इन आयतों का इन्कार वोही करता है जो हमारे अह़कामात की इत़ाअ़त नहीं करता।(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۲۴۸/۴، الحدیث: ۶۵۰۲.

2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۹۹، ۷۲/۱.

www.dawateislami.net

याद रहे कि यहां फ़ासिक़ों से मुराद काफ़िर और मुनाफ़िक़ हैं।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या जब कभी कोई अ़ह्द करते हैं उन में एक फ़रीक़ उसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब कभी उन्हों ने कोई अ़ह्द किया तो उन में से एक गुरौह ने उस अ़ह्द को फेंक दिया बल्कि उन में से अक्सर मानते ही नहीं।

﴿عٰهَدُوْا عَهْدًا : उन्हों ने अ़ह्द किया।﴾ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहूदियों को **अल्लाह** तआ़ला के वोह अ़ह्द याद दिलाए जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ थे तो मालिक बिन सैफ़ ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! आप के बारे में हम से कोई अ़ह्द नहीं लिया गया। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि यहूदियों ने जब कभी कोई अ़ह्द किया तो उन में से एक गुरौह ने उस अ़ह्द को वैसे ही पीठ पीछे फेंक दिया बल्कि उन में से अक्सर यहूदियों को तौरात पर ईमान ही नहीं इसी लिये वोह अ़ह्द तोड़ने को गुनाह नहीं समझते और न ही इस बात की कोई परवाह करते हैं।[1]

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहूदियों ने येह अ़ह्द किया था कि जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ुहूर होगा तो हम उन पर ज़रूर ईमान लाएंगे और अ़रब के मुश्रिकों के ख़िलाफ़ हम ज़रूर उन के साथ होंगे, लेकिन जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो यहूदियों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की बजाए इन्कार कर दिया। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[2]

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۰۰، ۱/۷۲، روح البيان، البقرة، تحت الآية: ۱۰۰، ۱/۱۸۹، ملتقطاً.

2 ......قرطبی، البقرة، تحت الآية: ۱۰۰، ۱/۳۱، الجزء الثانی.

www.dawateislami.net

وَ لَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास तशरीफ़ लाया **अल्लाह** के यहां से एक रसूल उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता तो किताब वालों से एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब पीठ पीछे फेंक दी गोया वोह कुछ इल्म ही नहीं रखते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक रसूल तशरीफ़ लाया जो उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है तो अहले किताब में से एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब को पीठ पीछे यूं फेंक दिया गोया वोह कुछ जानते ही नहीं हैं।

﴿جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ : **उन के पास रसूल आया।**﴾ यहां रसूल से मुराद सरकारे दो आ़लम, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और चूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तौरैत, ज़बूर वग़ैरा की तस्दीक़ फ़रमाते थे और ख़ुद उन की किताबों में भी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ व अह़वाल का बयान था इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वजूदे मुबारक ही उन किताबों की तस्दीक़ है, लिहाज़ा इस बात का तक़ाज़ा तो येह था कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़ियादा पुख़्ता होता मगर इस के बर अ़क्स उन्हों ने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया। मश्हूर मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई तो यहूदियों ने तौरैत और क़ुरआन का तक़ाबुल किया और जब दोनों को एक दूसरे के मुत़ाबिक़ पाया तो उन्हों ने तौरैत को भी छोड़ दिया।(1)

﴿وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ : **अपनी पुश्तों की पीछे।**﴾ पीठ पीछे फेंकने से मुराद है उस किताब की त़रफ़ बे इल्तिफ़ाती करना। ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का फ़रमान है कि यहूदियों ने

(1) ......در منثور، البقرة، تحت الآية: ۱۰۱، ۱/۲۳۳.

www.dawateislami.net

तौरैत को रेशमी गि़लाफ़ों में सोने चांदी के साथ मुज़य्यन कर के रख लिया और उस के अह़काम को न माना ।(1)

कु़रआने मजीद से मुतअ़ल्लिक़ मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की किताब पर अ़मल न करना इसे पीठ पीछे फेंकने के मुतरादिफ़ है अगर्चे इसे रोज़ पढ़े और अच्छे कपड़ों में लपेट कर रखे जैसे यहूदी तौरैत की बहुत ता'ज़ीम करते थे मगर हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो उस पर अ़मल न किया गया गोया उसे पसे पुश्त डाल दिया। आज के मुसल्मानों का ह़ाल भी इस से बहुत मुशाबेह है कि कु़रआने पाक के उ़म्दा से उ़म्दा और नफ़ीस नुस्ख़े घरों और मस्जिदों में अल्मारियों की ज़ीनत तो हैं, रेशमी गि़लाफ़ भी उन पर मौजूद हैं लेकिन पढ़ने, समझने और अ़मल करने की ह़ालत येह है कि उन अल्मारियों और रेशमी गि़लाफ़ों पर गर्द की तह जम चुकी है और ह़क़ीक़तन वोह गर्द उन गि़लाफ़ों पर नहीं बल्कि मुसल्मानों के दिलों पर जमी हुई है। आज कहां हैं वोह मुसल्मान जिन्हें कु़रआन के ह़लाल व ह़राम का इ़ल्म हो ? जिन्हें इस्लामी अख़्लाक़ का पता हो ? जिन के दिल **अल्लाह** तआ़ला की आयात सुन कर डर जाते हों और उन के आ'ज़ा **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से कांप उठते हों ? जिन के दिलो दिमाग़ पर कु़रआन के अन्वार छाए हुए हों। अफ़्सोस !

वोह ज़माने में मुअ़ज़्ज़ज़ थे मुसल्मां हो कर   और हम ख़्वार हुए तारिके कु़रआं हो कर

इस आयत से इशारतन मा'लूम हुवा कि कु़रआन शरीफ़ की त़रफ़ पीठ नहीं करनी चाहिये कि येह बेरुख़ी और बे तवज्जोही की अ़लामत है और येह भी मा'लूम हुवा कि बे अ़मल आदमी जाहिल की त़रह़ होता है बल्कि इस से भी बदतर है।

وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّیٰطِیْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَیْمٰنَ ۚ وَ مَا كَفَرَ سُلَیْمٰنُ
وَ لٰكِنَّ الشَّیٰطِیْنَ كَفَرُوْا یُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَ مَاۤ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَیْنِ
بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَ مَارُوْتَ ؕ وَ مَا یُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى یَقُوْلَاۤ
اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَیَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا یُفَرِّقُوْنَ بِهٖ

(1)......تفسیر جمل، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۰۱، ۱/۱۲۷.

www.dawateislami.net

بَیْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖؕ وَ مَا هُمْ بِضَآرِّیْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِؕ
وَ یَتَعَلَّمُوْنَ مَا یَضُرُّهُمْ وَ لَا یَنْفَعُهُمْؕ وَ لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ
مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ۫ؕ وَ لَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْؕ
لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ(۱۰۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस के पैरव हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सल्तनते सुलैमान के ज़माने में और सुलैमान ने कुफ़्र न किया हां शैतान काफ़िर हुए लोगों को जादू सिखाते हैं और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़िरिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो तो उन से सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औ़रत में और उस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ़ न देगा और बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह जिस के बदले उन्हों ने अपनी जानें बेचीं किसी त़रह़ उन्हें इ़ल्म होता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह सुलैमान के अ़हदे हुकूमत में उस जादू के पीछे पड़ गए जो शयात़ीन पढ़ा करते थे और सुलैमान ने कुफ़्र न किया बल्कि शैत़ान काफ़िर हुए जो लोगों को जादू सिखाते थे और (येह तो उस जादू के पीछे भी पड़ गए थे) जो बाबिल शहर में दो फ़िरिश्तों हारूत व मारूत पर उतारा गया था और वोह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो सिर्फ़ (लोगों का) इम्तिह़ान हैं तो (ऐ लोगो ! तुम) अपना ईमान ज़ाएअ़ न करो। वोह लोग उन फ़िरिश्तों से ऐसा जादू सीखते जिस के ज़रीए मर्द और उस की बीवी में जुदाई डाल दें ह़ालां कि वोह उस के ज़रीए किसी को **अल्लाह** के हुक्म के बिग़ैर कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते थे और येह ऐसी चीज़ सीखते थे जो उन्हें नुक़्सान दे और उन्हें नफ़्अ़ न दे और यक़ीनन उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया है आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं और उन्हों ने अपनी जानों का कितना बुरा सौदा किया है, क्या ही अच्छा होता अगर येह जानते।

www.dawateislami.net

﴿وَاتَّبَعُوْا﴾ : **वोह जादू के पीछे पड़ गए ।** **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में बनी इसराईल जादू सीखने में मश्ग़ूल हुए तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़्न कर दीं । ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात के बा'द शयात़ीन ने वोह किताबें निकाल कर लोगों से कहा कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इसी के ज़ोर से सल्त़नत करते थे । बनी इसराईल के नेक लोगों और उ़लमा ने तो इस का इन्कार किया लेकिन उन के जाहिल लोग जादू को ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इ़ल्म मान कर उस के सीखने पर टूट पड़े, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की किताबें छोड़ दीं और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मलामत शुरूअ़ की । हमारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने तक येही ह़ाल रहा और **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जादू से बराअत का इज़्हार फ़रमाया ।[1]

﴿وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ﴾ : **और सुलैमान ने कुफ़्र न किया ।** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों से दुश्मनों के इल्ज़ाम दूर करना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है जैसा कि लोगों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर जादूगरी की तोहमत लगाई और **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में इस तोहमत को दूर फ़रमाया । नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि जादू करना कभी कुफ़्र भी होता है जब कि उस में कुफ़्रिय्या अल्फ़ाज़ हों ।

﴿هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ﴾ : **हारूत और मारूत ।** हारूत, मारूत दो फ़िरिश्ते हैं जिन्हें बनी इसराईल की आज़्माइश के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने भेजा था । इन के बारे में ग़लत़ क़िस्से बहुत मश्हूर हैं और वोह सब बात़िल हैं ।[2]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने हारूत और मारूत के बारे में जो कलाम फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि "हारूत और मारूत का वाक़िआ़ जिस त़रह़ अ़वाम में मश्हूर है अइम्मए किराम इस का शदीद और सख़्त इन्कार करते हैं, इस की तफ़्सील शिफ़ा शरीफ़ और इस की शुरूह़ात में मौजूद है, यहां तक कि इमामे अजल क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "हारूत और मारूत के बारे में येह ख़बरें यहूदियों की किताबों और उन की घड़ी हुई बातों में से हैं । और राजेह़ येही है कि हारूत और मारूत दो फ़िरिश्ते हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने मख़्लूक़ की आज़्माइश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया कि जो जादू सीखना चाहे उसे नसीह़त करें कि "اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ" हम तो आज़्माइश ही के लिये मुक़र्रर हुए हैं तो कुफ़्र न कर ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٢، ٧٣/١.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٢، ٧٥/١.

www.dawateislami.net

और जो उन की बात न माने वोह अपने पाउं पे चल के ख़ुद जहन्नम में जाए, येह फ़िरिश्ते अगर उसे जादू सिखाते हैं तो वोह फ़रमां बरदारी कर रहे हैं न कि ना फ़रमानी कर रहे हैं।''(1)

फ़िरिश्तों की इस्मत का बयान

फ़िरिश्तों के बारे में अ़क़ीदा येह है कि येह गुनाहों से मा'सूम होते हैं। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَا یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह (फ़िरिश्ते) **अल्लाह** के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ یَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और फ़िरिश्ते ग़ुरूर नहीं करते। वोह अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''इस आयत से साबित हुवा कि फ़िरिश्ते तमाम गुनाहों से मा'सूम हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमाना कि वोह ग़ुरूर नहीं करते इस बात की दलील है कि फ़िरिश्ते अपने पैदा करने वाले और बनाने वाले के इताअ़त गुज़ार हैं और वोह किसी बात और किसी काम में भी **अल्लाह** तआ़ला की मुख़ालफ़त नहीं करते।''(4)

﴿فَلَا تَكْفُرْ : **तो कुफ़्र न कर।**﴾ हारूत व मारूत के पास जो शख़्स जादू सीखने आता तो येह सिखाने से पहले उसे नसीहत करते हुए फ़रमाते कि जादू सीख कर और उस पर अ़मल कर के और उस को जाइज़ व ह़लाल समझ कर अपना ईमान ज़ाएअ़ न कर। अगर वोह उन की बात न मानता तो येह उसे जादू सिखा देते।

जादू की ता'रीफ़ और इस की मज़म्मत

उ़लमाए किराम ने जादू की कई ता'रीफ़ें बयान की हैं, उन में से एक येह है कि किसी शरीर और बदकार शख़्स का मख़्सूस अ़मल के ज़रीए़ आ़म आ़दत के ख़िलाफ़ कोई काम

(1) ......الشفاء، فصل فی القول فی عصمة الملائكة، ص۱۷۵-۱۷۶، الجزء الثانی, फ़तावा रज़विय्या, किताबुश्शत्ता, 26/397
(2) ......تحریم: ۶. (3) ......نحل: ۴۹-۵۰. (4) ......تفسیر کبیر، النحل، تحت الآیة: ۵۰، ۷/۲۱۷-۲۱۸.

www.dawateislami.net

करना जादू कहलाता है।[1]

जादू फ़रमां बरदार और ना फ़रमान लोगों के दरमियान इम्तियाज़ करने और लोगों की आज़्माइश के लिये नाज़िल हुवा है, जो इस को सीख कर इस पर अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा बशर्ते कि उस जादू में ईमान के ख़िलाफ़ कलिमात और अफ़्आ़ल हों और अगर कुफ़्रिय्या कलिमात व अफ़्आ़ल न हों तो कुफ़्र का हुक्म नहीं है।

यहां मज़ीद तीन मस्अले याद रखें :

(1)...... जो जादू कुफ़्र है उस का आ़मिल अगर मर्द हो तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा।

(2)...... जो जादू कुफ़्र नहीं मगर उस से जानें हलाक की जाती हैं तो उस का आ़मिल डाकू के हुक्म में है मर्द हो या औ़रत। या'नी इस की सज़ा भी क़त्ल है।

(3)...... अगर जादूगर तौबा करे तो उस की तौबा क़बूल है।[2]

अह़ादीस में जादू की बहुत मज़म्मत की गई है, चुनान्चे ह़ज़रते उ़स्मान बिन अबी आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "**अल्लाह** तआ़ला के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रात की एक घड़ी अपने घर वालों को बेदार करते और इर्शाद फ़रमाते : "ऐ आले दावूद ! उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि इस घड़ी **अल्लाह** तआ़ला जादूगर और (नाह़क़) टेक्स लेने वाले के इ़लावा हर एक की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है।"[3]

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शराब का आ़दी, जादू पर यक़ीन रखने वाला और क़त्ए़ रेह़्मी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"[4]

याद रहे कि यहां जादूगर के बारे में जो सज़ाएं बयान की गईं येह सज़ाएं देना सिर्फ़ इस्लामी हु़कूमत का काम है, अ़वामुन्नास को क़ानून अपने हाथ में लेने की इजाज़त नहीं, अलबत्ता हर एक को चाहिये कि जादू करने वालों से दूर रहे। नीज़ जादू से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" की दूसरी जिल्द का मुताल़आ़ फ़रमाएं।

1 ......شرح المقاصد، المقصد السادس، الفصل الاول فی النبوۃ، ٥/٧٩.

2 ......مدارک، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١٠٢، ص ٦٩.

3 ......مسند امام احمد، مسند المدنیین، حدیث عثمان بن ابی العاص الثقفی، ٥/٤٩٢، الحدیث: ١٦٢٨١.

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الکھانۃ و السحر، ٧/٦٤٨، الحدیث: ٦١٠٤.

www.dawateislami.net

﴿ وَمَاهُمۡ بِضَآرِّيۡنَ : **और वोह नुक़्सान पहुंचाने वाले नहीं।**﴾ इस आयत से चन्द मसाइल मा'लूम हुए :

(1)...... मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** तआ़ला है और अस्बाब की तासीर **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत या'नी चाहने के तह़्त है। या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो ही कोई शै असर कर सकती है, अगर **अल्लाह** तआ़ला न चाहे तो आग जला न सके, पानी प्यास न बुझा सके और दवा शिफ़ा न दे सके।

(2)...... जादू में असर है अगर्चे उस में कुफ़्रिय्या कलिमे हों।

(3)...... जब जादू में नुक़्सान की तासीर है तो क़ुरआनी आयात में ज़रूर शिफ़ा की तासीर है। यूंही जब कुफ़्फ़ार जादू से नुक़्सान पहुंचा सकते हैं तो ख़ुदा के बन्दे भी करामत के ज़रीए नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं। जैसे ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बीमारों, अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा बख़्शना ख़ुद क़ुरआने मजीद में मौजूद है।

وَلَوۡ اَنَّهُمۡ اٰمَنُوۡا وَاتَّقَوۡا لَمَثُوۡبَةٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ خَيۡرٌ ؕ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۳﴾ ع

ع ۱۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वोह ईमान लाते और परहेज़ गारी करते तो **अल्लाह** के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी त़रह़ उन्हें इ़ल्म होता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर वोह ईमान लाते और परहेज़ गारी इख़्तियार करते तो **अल्लाह** के यहां का सवाब बहुत अच्छा है, अगर येह जानते।

﴿ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ اٰمَنُوۡا : **अगर वोह ईमान लाते।**﴾ फ़रमाया गया कि अगर यहूदी ह़ुज़ूर सय्यिदे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और क़ुरआने पाक पर ईमान लाते तो **अल्लाह** तआ़ला के हां का सवाब उन के लिये बहुत अच्छा होता क्यूं कि आख़िरत की थोड़ी सी ने'मत दुन्या की बड़ी से बड़ी ने'मत से आ'ला है।

www.dawateislami.net

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَ قُوْلُوا انْظُرْنَا وَ اسْمَعُوْاؕ وَ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۰۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

﴾لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا : **राइना न कहो** ﴿ **शाने नुज़ूल :** जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को कुछ ता'लीम व तल्क़ीन फ़रमाते तो वोह कभी कभी दरमियान में अ़र्ज़ किया करते : "رَاعِنَا یَارَسُوْلَ اللّٰہ" इस के येह मा'ना थे कि **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हमारे ह़ाल की रिआ़यत फ़रमाइये या'नी कलामे अक़्दस को अच्छी त़रह़ समझ लेने का मौक़अ़ दीजिये। यहूदियों की लुग़त में येह कलिमा बे अदबी का मा'ना रखता था और उन्हों ने उसी बुरी निय्यत से कहना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यहूदियों की इस्तिलाह़ से वाक़िफ़ थे। आप ने एक रोज़ येह कलिमा उन की ज़बान से सुन कर फ़रमाया : ऐ दुश्मनाने ख़ुदा ! तुम पर **अल्लाह** की ला'नत, अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से येह कलिमा सुना तो उस की गरदन उड़ा दूंगा। यहूदियों ने कहा : हम पर तो आप बरहम होते हैं जब कि मुसल्मान भी तो येही कहते हैं, इस पर आप रन्जीदा हो कर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए ही थे कि येह आयत नाज़िल हुई जिस में "رَاعِنَا" कहने की मुमानअ़त फ़रमा दी गई और इस मा'ना का दूसरा लफ़्ज़ "اُنْظُرْنَا" कहने का हुक्म हुवा।(1)

1...... قرطبی، البقرة، تحت الآية: ١٠٤، ١/٤٤-٤٥، الجزء الثانی، تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآية: ١٠٤، ١/٦٣٤,
तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), 2/669, मुल्तक़तन

www.dawateislami.net

आयत ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا'' से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीमो तौक़ीर और इन की जनाब में अदब का लिहाज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अदब का मा'मूली सा भी अन्देशा हो वोह ज़बान पर लाना मम्नूअ़ है। ऐसे अल्फ़ाज़ के बारे में हुक्मे शरई येह है कि जिस लफ़्ज़ के दो मा'ना हों अच्छे और बुरे वोह लफ़्ज़ बोलने में उस के बुरे मा'ना की त़रफ़ भी ज़ेह्न जाता हो तो वोह भी **अल्लाह** तआ़ला और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इस्ति'माल न किये जाएं। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह का अदब रब्बुल आ़लमीन खुद सिखाता है और ता'ज़ीम के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम को खुद जारी फ़रमाता है।

﴾وَاسْمَعُوْا﴿ : **और गौर से सुनो।** ﴾ या'नी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कलाम फ़रमाने के वक़्त हमातन गोश हो जाओ ताकि येह अ़र्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तवज्जोह फ़रमाएं क्यूं कि दरबारे नुबुव्वत का येही अदब है।

﴾وَلِلْكٰفِرِيْنَ﴿ : **और काफ़िरों के लिये।** ﴾ या'नी जो यहूदी सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन कर रहे हैं और उन के बारे में बे अदबी वाले अल्फ़ाज़ इस्ति'माल कर रहे हैं उन यहूदियों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।(1)

याद रहे कि इस आयत में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ١٠٤، ١/ ٩٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक वोह नहीं चाहते कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से और **अल्लाह** अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ मुसल्मानो !) न तो अहले किताब के काफ़िर चाहते हैं और न ही मुश्रिक कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की त़रफ़ से कोई भलाई उतारी जाए ह़ालां कि **अल्लाह** जिसे चाहता है अपनी रह़मत के साथ ख़ास फ़रमा लेता है और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

﴾مَا یَوَدُّ﴿ **: काफ़िर नहीं चाहते।** **शाने नुज़ूल :** यहूदियों की एक जमाअ़त मुसल्मानों के साथ दोस्ती और ख़ैर ख़्वाही का इज़्हार करती थी उन की तक्ज़ीब में येह आयत नाज़िल हुई और मुसल्मानों को बताया गया कि येह कुफ़्फ़ार ख़ैर ख़्वाही के दा'वे में झूटे हैं।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰیَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَیْرٍ مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَاؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۰۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमाएं या भुला दें तो उस से बेहतर या उस जैसी ले आएंगे क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब हम कोई आयत मन्सूख़ करते हैं या लोगों को भुला देते हैं तो उस से बेहतर या उस जैसी और आयत ले आते हैं। (ऐ मुख़ात़ब !) क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

﴾مَا نَنْسَخْ﴿ **: हम जो मन्सूख़ फ़रमाएं।** नस्ख़ का मा'ना है : साबिक़ा हुक्म को किसी बा'द वाली दलीले शर्ई से उठा देना।[1] और येह ह़क़ीक़त में साबिक़ा हुक्म की मुद्दत की इन्तिहा का बयान होता है। इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि क़ुरआने करीम ने गुज़श्ता शरीअ़तों और किताबों को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार को बड़ी वह़शत हुई और उन्हों ने इस पर ए'तिराज़ात किये, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है और नासिख़ भी, दोनों ऐने ह़िक्मत हैं और नासिख़ कभी

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٦، ١/٧٧.

www.dawateislami.net

मन्सूख़ से ज़ियादा आसान और नफ़्अ़ बख़्श होता है लिहाज़ा क़ुदरते इलाही पर यक़ीन रखने वाले को इस में तरद्दुद की कोई गुन्जाइश नहीं। काएनात में मुशाहदा किया जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला दिन से रात को, गरमा से सरमा को, जवानी से बचपन को, बीमारी से तन्दुरुस्ती को, बहार से ख़ज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है। येह तमाम नस्ख़ो तब्दील उस की क़ुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअ़ज्जुब ? नस्ख़ ह़क़ीक़त में साबिक़ा हुक्म की मुद्दत का बयान होता है कि वोह हुक्म इस मुद्दत के लिये था और अब वोह मुद्दत पूरी हो गई। सिर्फ़ येह था कि हमें वोह मुद्दत मा'लूम न थी और नासिख़ के आने से मा'लूम हो गई। कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ तो जहालत व ना समझी की वज्ह से था लेकिन अहले किताब को तो किसी भी सूरत येह ए'तिराज़ नहीं करना चाहिये था क्यूं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त के बहुत से अह़काम तो वोह भी मन्सूख़ मानते हैं जैसे बहन भाई का आपस में निकाह़, यूंही यहूदियों से पहले हफ़्ते के दिन दुन्यवी काम ह़राम न थे, इन पर ह़राम हुए, नीज़ तौरैत में है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्मत के लिये तमाम जानवर ह़लाल थे जब कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बहुत से ह़राम कर दिये गए। इन तमाम चीज़ों के होते हुए नस्ख़ का इन्कार किस त़रह़ मुम्किन है।

नस्ख़ के चन्द अह़काम

(1)...... जिस त़रह़ कोई आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है इसी त़रह़ ह़दीसे मुतवातिर से भी आयत मन्सूख़ होती है।

(2)...... कभी सिर्फ़ तिलावत मन्सूख़ होती है और कभी सिर्फ़ हुक्म मन्सूख़ होता है और कभी तिलावत व हुक्म दोनों मन्सूख़ होते हैं। बैहक़ी शरीफ़ में है कि एक अन्सारी सह़ाबी रात को तहज्जुद के लिये उठे और सूरए फ़ातिह़ा के बा'द जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उस को पढ़ना चाहा लेकिन वोह बिल्कुल याद न आई और सिवाए बिस्मिल्लाह के कुछ न पढ़ सके। सुब्ह़ को दूसरे अस्ह़ाब से इस का ज़िक्र किया तो उन ह़ज़रात ने फ़रमाया : हमारा भी येही ह़ाल है, वोह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे ह़ाफ़िज़े में भी न रही। सब ने बारगाहे रिसालत में वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज रात वोह सूरत उठा ली गई। उस के हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए जिन काग़ज़ों पर वोह लिखी गई थी उन पर नक़्श तक बाक़ी न रहे।(1)

(1)......دلائل النبوه للبيهقى، باب ما جاء فى تأليف القرآن... الخ، ١٥٧/٧، ملخصاً.

www.dawateislami.net

﴿نَاْتِ بِخَیْرٍ : **हम बेहतर ले आएंगे ।**﴾ फ़रमाया कि हम किसी आयत को मन्सूख़ फ़रमा दें या भुला दें तो उस की जगह ज़ियादा आसान और ज़ियादा सवाब वाला या कम अज़् कम पहले वाले हुक्म के बराबर हुक्म ले आएंगे। पहले से ज़ियादा सहूलत वाले की मिसाल है जैसे पहले दस गुना तक के लश्कर से जिहाद का हुक्म था फिर सिर्फ़ दो गुना तक के लश्कर से जिहाद में डटे रहने का हुक्म नाज़िल हुवा। ज़ियादा सवाब की मिसाल है जैसे पहले एक क़ौल के मुताबिक़ रोज़े की ताक़त रखने वाले को भी फ़िदया देने की इजाज़त थी लेकिन बा'द में उस पर रोज़े का हुक्म ही मुतअय्यन कर दिया जो फ़िदये से ज़ियादा सवाब वाला हुक्म है। सहूलत में बराबर के हुक्म की मिसाल है जैसे बैतुल मुक़द्दस से फेर कर ख़ानए का'बा को क़िब्ला बना दिया गया हालां कि दोनों की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने में बराबर दरजे की सहूलत है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۱۰۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा न कोई हिमायती न मददगार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुझे मा'लूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाही **अल्लाह** ही के लिये है और **अल्लाह** के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई हिमायती है और न ही मददगार।

﴿لَهٗ مُلْكُ : **उसी की बादशाही है ।**﴾ **अल्लाह** तआला को इख़्तियार है कि अपने मुल्क में जो चाहे जब चाहे क़ानून जारी करे, जब काएनात में तब्दीली होती रहती है, दिन जाता है रात आती है और सारे जहान में हर तरह तब्दीली होती रहती है तो शरई क़ानून में भी तब्दीली हो सकती है और येह तब्दीली मख़्लूक़ की मस्लहत की वज्ह से है।

﴿مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ : **अल्लाह के मुक़ाबले में ।**﴾ **अल्लाह** तआला के मुक़ाबले में कोई किसी की मदद नहीं कर सकता। हां **अल्लाह** तआला की इजाज़त और इख़्तियार देने से मदद हो सकती है, क़ुरआनो हदीस में इस की कई मिसालें मौजूद हैं जैसे हज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बीमारों, कोढ़ियों और नाबीनाओं की मदद करते थे। फ़िरिश्तों ने ग़ज़्वए बद्र और ग़ज़्वए हुनैन में मुसल्मानों की मदद की। हज़रते सुलैमान عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वज़ीर ने तख़्ते बिल्क़ीस ला कर

www.dawateislami.net

मदद की । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सेंकड़ों मरतबा सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की खाने, पीने, बीमारियों और परेशानियों में मदद की । हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهِم का मदद करना लाखों लोगों के तजरिबात और तवातुर से साबित है ।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝۱۰۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या येह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सुवाल करो जो पहले मूसा से हुवा था और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले वोह ठीक रास्ता बहक गया ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम येह चाहते हो कि तुम अपने रसूल से वैसे ही सुवाल करो जैसे इस से पहले मूसा से किये गए और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार करे तो वोह सीधे रास्ते से भटक गया ।

﴾كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى﴿ **: जैसे मूसा से सुवाल किया गया ।** इस आयत की **एक तफ़्सीर** येह है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : जिस त़रह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरात ले कर आए थे इसी त़रह आप भी हमारे पास एक ही मरतबा सारा क़ुरआन ले आएं । बा'ज़ ने यूं कहा कि हम आप पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएंगे जब तक आप **अल्लाह** तआ़ला और फ़िरिश्तों को हमारे सामने नहीं ले आते । उन सुवालात के जवाब में उन से फ़रमाया गया : क्या तुम येह चाहते हो कि तुम अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वैसे ही सुवाल करो जैसे मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से किये गए थे । ऐ यहूदियो ! जब मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का दुरुस्त होना दलाइल और मो'जिज़ात से साबित हो चुका तो फिर ऐसे लाया'नी सुवाल क्यूं कर रहे हो और ऐ ईमान वालो ! बेशक यहूदी धोकेबाज़ और तुम से ह़सद करने वाले हैं और इन की तमन्ना येह है कि मुसलमान किसी न किसी मुश्किल में मुब्तला हों लिहाज़ा इन की कोई ऐसी बात क़बूल न करो जो ब ज़ाहिर नसीह़त लग रही हो और याद रखो कि जो

www.dawateislami.net

ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार कर के अपने दीन से फिर गया तो वोह सीधे रास्ते से भटक गया।(1)

दूसरी तफ़्सीर येह है कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप सारा क़ुरआन एक ही मरतबा ले आएं, किसी ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला (और फ़िरिश्ते) हमारे सामने ए'लानिया आ जाएं, किसी ने कहा कि कोहे सफ़ा को सोने का बना दें। उन सुवालात के जवाब में उन से फ़रमाया गया कि तुम भी अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इसी त़रह़ फ़ुज़ूल सुवाल कर रहे हो जिस त़रह़ इन से पहले ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम ने उन से कहा था कि हमें ए'लानिया ख़ुदा दिखा दो, ह़ालां कि आयाते क़ुरआनिया के नुज़ूल के बा'द दूसरी निशानियों का मुत़ालबा करना सीधी राह से भटकना है।(2)

सह़ीह़ मक़्सद के बिग़ैर सुवाल करना मन्अ़ है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि किसी सह़ीह़ मक़्सद के बिग़ैर सुवाल करना मम्नूअ़ है नीज़ फ़ुज़ूल सुवाल करना भी मम्नूअ़ है। लिहाज़ा अ़वामुन्नास को चाहिये कि इस बात को पेशे नज़र रखें कि उ़लमा और मुफ़्तियाने किराम से वोही सुवाल किये जाएं जिन की ह़ाजत हो, ज़मीन पर बैठ कर ख़्वाह म ख़्वाह चांद पर रिहाइश के सुवाल न किये जाएं। बा'ज़ लोग उ़लमा को परेशान करने या उन का इम्तिह़ान लेने या उन की ला इ़ल्मी ज़ाहिर करने के लिये सुवाल करते हैं, येह सब ना जाइज़ है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें जिस काम से मन्अ़ करूं उस से रुक जाओ और जिस काम का हुक्म दूं उसे अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ करो, तुम से पहले लोगों को मह़ज़ उन के सुवालात की कसरत और अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इख़्तिलाफ़ करने ने हलाक किया।"(3)

मन पसन्द हुक्म का मुत़ालबा करना यहूदियों का त़रीक़ा है

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि मस्अला मा'लूम कर के अ़मल करने की बजाए

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٨، ٧٩/١.

2 ......طبری ، البقرة، تحت الآية: ١٠٨، ٥٣٠/١، در منثور، البقرة، تحت الآية: ١٠٨، ٢٦٠/١-٢٦١، جلالين مع صاوى، البقرة، تحت الآية: ١٠٨، ٩٩/١-١٠٠، ملتقطاً.

3 ......مسلم، كتاب الفضائل، باب توقيره صلى الله عليه وسلم... الخ، ص ١٢٨٢، الحديث: ١٣٠ (١٣٣٧).

www.dawateislami.net

ख़्वाह म ख़्वाह बाल की खाल उतारते रहना और अपने मन पसन्द हुक्म का मुत़ालबा करना यहूदियों और मुश्रिकों का त़रीक़ा है। हमारे मुआ़शरे में भी लोगों की एक ता'दाद ऐसी है जिन की येह ख़्वाहिश होती है कि मुआ़मलात या इ़बादात में जो सूरत उन्हें दरपेश है उस में फ़तवा उन की मरज़ी और पसन्द के ऐन मुत़ाबिक़ मिले और अगर उन्हें कहीं से कोई एक ऐसी दलील मिल जाती है जो उन के मक़्सद व मफ़ाद को पूरा कर रही होती है तो वोह उसी पर अड़ जाते हैं अगर्चे उस के ख़िलाफ़ हज़ार दलाइल मौजूद हों लेकिन वोह चूंकि उन की मुराद के ख़िलाफ़ होते हैं इस लिये उन्हें क़बूल करने पर तय्यार नहीं होते और उन के बारे में त़रह़ त़रह़ की उलटी सीधी तावीलें पेश करना शुरूअ़ कर देते हैं। **अल्लाह** तआ़ला ऐसे लोगों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَ اصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से बा'द इस के कि ह़क़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अहले किताब में से बहुत से लोगों ने इस के बा'द कि उन पर ह़क़ ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है अपने दिली ह़सद की वज्ह से येह चाहा कि काश वोह तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें। तो तुम (उन्हें) छोड़ दो और (उन से) दर गुज़र करते रहो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

﴿ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ : **बहुत से अहले किताब ने चाहा** ﴾ जंगे उहुद के बा'द यहूदियों की एक जमाअ़त ने ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को مَعَاذَ اللّٰه

www.dawateislami.net

मुरतद होने की दा'वत दी । इन बुज़ुर्गों ने सख़्ती से रद कर दिया और फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस वाक़िए की ख़बर दी । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ने बेहतर किया और फ़लाह पाई ।" इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।(1)

﴿حَسَدًا : **हसद की वज्ह से ।**﴾ इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत जानने के बा'द यहूदियों का मुसल्मानों के कुफ़्रो इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से महरूम हो जाएं हसद की वज्ह से था । इस से मा'लूम हुवा कि हसद बहुत बड़ा ऐब है और इस की वज्ह से इन्सान न सिर्फ़ ख़ुद भलाई से रुक जाता है बल्कि दूसरों को भी भलाई से रोकने की कोशिश में मसरूफ़ हो जाता है लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह इस से बचने की ख़ूब कोशिश करे । हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हसद से दूर रहो क्यूं कि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग ख़ुश्क लकड़ियों को ।" या फ़रमाया : "घास को खा जाती है ।"(2)

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हसद से बचो, क्यूं कि येह पहला गुनाह है जिस के ज़रीए आस्मान में **अल्लाह** तआला की ना फ़रमानी की गई और येही पहला गुनाह है जिस के ज़रीए ज़मीन में **अल्लाह** तआला की ना फ़रमानी की गई ।(3)

याद रहे कि हसद हराम है अलबत्ता अगर कोई शख़्स अपने मालो दौलत या असरो वजाहत से गुमराही और बेदीनी फैलाता हो तो उस के फ़ितने से महफ़ूज़ रहने के लिये उस की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना हसद में दाख़िल नहीं और हराम भी नहीं ।(4)

﴿فَاعْفُوْا : **तो तुम मुआफ़ करो ।**﴾ कुफ़्फ़ार के साथ जंग के ज़रीए बदले लेने की बजाए नरमी की तमाम आयात का येह हुक्म है कि वोह जिहाद की आयतों से मन्सूख़ हैं जैसा इस हुक्म के आख़िर में ख़ुद फ़रमा दिया : "**यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए**" और वोह हुक्म जिहाद व क़िताल का है ।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٩، ١/ ٧٩.
2 ......ابو داؤد، كتاب الادب، باب فى الحسد، ٤/ ٣٦١، الحديث: ٤٩٠٣.
3 ......تنبيه المغترين، الباب الثالث فى جملة اخرى من الاخلاق، و من اخلاقهم رضى الله تعالى عنهم عدم الحسد لاحد من المسلمين...الخ، ص١٨٨.
4 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٠٩، ١/ ٧٩-٨٠.

www.dawateislami.net

تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ۱۱۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के यहां पाओगे बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिये जो भलाई तुम आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के यहां पाओगे बेशक **अल्लाह** तुम्हारे सब काम देख रहा है।

﴾وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ﴿ : **और नमाज़ क़ाइम करो।**﴾ यहां मुसल्मानों को अपनी इस्लाहे़ नफ़्स का हुक्म दिया जा रहा है। इस से मा'लूम हुवा कि आदमी किसी भी दीनी या दुन्यवी अहम काम में मसरूफ़ हो उसे अपने नफ़्स की इस्लाह़ से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये। ऐन ह़ालते जिहाद में भी नमाज़े ख़ौफ़ का हुक्म मौजूद है। त़लाक़ के मसाइल बयान करते हुए भी **अल्लाह** तआ़ला ने नमाज़ और तक़्वे के अह़काम बयान फ़रमाए हैं। लिहाज़ा अगर कोई नेकी की दा'वत में या इल्मे दीन के हुसूल या किसी दूसरे अहम दीनी काम में मश्ग़ूल है तो उसे अपनी इस्लाह़ से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये।

وَقَالُوْا لَنْ یَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِیُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۱۱۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अहले किताब बोले, हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वोह जो यहूदी या नसरानी हो येह उन की ख़याल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील अगर सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अहले किताब ने कहा : हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होगा मगर वोही जो यहूदी हो या ईसाई। येह उन की मन घड़त तमन्नाएं हैं। तुम फ़रमा दो : अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ।

﴾لَنْ یَّدْخُلَ الْجَنَّةَ﴿ : **हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होंगे।**﴾ यहूदी मुसल्मानों से कहते थे कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी जाएंगे और ईसाई कहते थे कि सिर्फ़ वोही जन्नत में दाख़िल होंगे। येह

www.dawateislami.net

गुफ़्त्गू मुसल्मानों को बहकाने के लिये थी, उन की तरदीद में येह आयते करीमा नाज़िल हुई, जिस में फ़रमाया गया कि उन की येह बात उन की अपनी राय से है, तौरैत व इन्जील में ऐसा कुछ नहीं फ़रमाया गया, अगर वोह सच्चे हैं तो अपनी इस बात पर कोई दलील लाएं।

﴿اَمَانِیُّهُمْ : उन की मन घड़त तमन्नाएं।﴾ बिग़ैर किसी बुन्याद के जन्नत में दाख़िले के ज़बानी दा'वे करना जहालत व ह़माक़त है। एक उम्मीद है जिसे अ़रबी में "रजा" कहते हैं और एक ख़ाम ख़याली है जिसे अ़रबी में "उम्निय्यह" कहते हैं। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस मौज़ूअ़ पर बड़ा प्यारा कलाम इर्शाद फ़रमाया है। उस का ख़ुलासा मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : रजा या'नी उम्मीद दिल की उस राह़त का नाम है जो मह़बूब चीज़ के इन्तिज़ार से ह़ासिल होती है लेकिन येह मह़बूब जिस की तवक़्क़ोअ़ की जा रही है उस का कोई सबब होना चाहिये लिहाज़ा अगर उस का इन्तिज़ार अक्सर अस्बाब के साथ है तो इसे "रजा" या'नी उम्मीद कहते हैं और अगर अस्बाब बिल्कुल न हों या इज़्तिराब के साथ हों तो इसे उम्मीद नहीं बल्कि धोका और बे वुक़ूफ़ी कहा जाएगा और अगर अस्बाब के होने या न होने का इल्म न हो तो उस इन्तिज़ार को "तमन्ना" कहते हैं। अहले दिल ह़ज़रात जानते हैं कि दुन्या आख़िरत की खेती है और दिल ज़मीन की त़रह़ है, ईमान इस में बीज की ह़ैसिय्यत रखता है और इ़बादत ज़मीन को उलट पलट करने, साफ़ करने और नहरें खोदने और उन ज़मीनों में पानी जारी करने की त़रह़ हैं और दिल जो दुन्या में ग़र्क़ और डूबा हुवा है उस बन्जर ज़मीन की त़रह़ है जिस में बीज कोई फल नहीं लाता और क़ियामत का दिन फ़स्ल काटने का दिन है और हर शख़्स वोही काटेगा जो उस ने बोया होगा और खेती का बढ़ना ईमान के बीज के बिग़ैर ना मुम्किन है और जब दिल में ख़बासत और बुरे अख़्लाक़ हों तो ईमान बहुत कम नफ़अ़ देता है जैसे बन्जर ज़मीन में बीज से फ़स्ल पैदा नहीं होती तो मुनासिब येही है कि आदमी के मग़्फ़िरत की उम्मीद रखने को खेती वाले पर क़ियास किया जाए या'नी जो शख़्स अच्छी ज़मीन ह़ासिल करता है और उस में उ़म्दा बीज डालता है जो न तो ख़राब होता है और न ही बदबूदार और फिर उस की तमाम ज़रूरिय्यात को पूरा करता है। ज़रूरिय्यात से मुराद वक़्त पर पानी देना, ज़मीन को कांटों और घास फूंस नीज़ उन तमाम ख़राबियों से पाक करना जो बीज को बढ़ने से रोकती हैं या ख़राब कर देती हैं। तो जो येह सब काम करे फिर **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल का मुन्तज़िर हो कर बैठ जाए कि वोह ज़मीन को बिजली की गरज और दीगर आफ़ात से बचाएगा यहां तक कि खेती अपनी तक्मील को पहुंच जाए तो इस इन्तिज़ार को रजा या'नी उम्मीद कहते हैं और अगर सख़्त ज़मीन में बीज डाले जो शोर ज़ियादा हो और बुलन्दी

www.dawateislami.net

पर हो जिस तक पानी नहीं पहुंच सकता और बीज की परवा भी न करे और फिर उस के कटने का इन्तिज़ार करे तो इस इन्तिज़ार को बे वुक़ूफ़ी और धोका कहते हैं उम्मीद नहीं कहते और अगर अच्छी ज़मीन में बीज डाला लेकिन उस में पानी नहीं है अब वोह बारिश के इन्तिज़ार में है और येह ऐसा वक़्त है जिस में आ़म तौ़र पर बारिश नहीं बरस्ती तो इस इन्तिज़ार को तमन्ना कहते हैं "रजा" नहीं कहते तो गोया रजा का लफ़्ज़ किसी ऐसी पसन्दीदा चीज़ के इन्तिज़ार पर सादिक़ आता है जिस के लिये वोह तमाम अस्बाब तय्यार कर दिये गए हों जो बन्दे के इख़्तियार में हैं, सिर्फ़ वोही अस्बाब बाक़ी रह गए जो बन्दे के इख़्तियार में नहीं हैं और वोह **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल है जिस की वज्ह से तमाम नुक़्सान देह और फ़ासिद करने वाले अस्बाब खेती से दूर हो जाते हैं पस जब बन्दा ईमान का बीज डालता है और उस को इबादात का पानी पिलाता है, दिल को बद अख़्लाक़ी के कांटों से पाक करता है और **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल का मरते दम तक मुन्तज़िर रहता है, मग़्फ़िरत तक पहुंचाने वाले अच्छे ख़ातिमे का इन्तिज़ार करता है तो येह इन्तिज़ार ह़क़ीक़ी रजा (उम्मीद) है येह ज़ाती तौ़र पर क़ाबिले ता'रीफ़ है और अगर ईमान के बीज को इबादात का पानी न दिया जाए या दिल को बुरे अख़्लाक़ से मुलव्वस छोड़ दिया जाए और दुन्यावी लज़्ज़त में मुन्हमिक हो जाए और फिर मग़्फ़िरत का इन्तिज़ार करे तो उस का इन्तिज़ार एक बे वुक़ूफ़ और धोके में मुब्तला शख़्स का इन्तिज़ार है । नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَلْاَحْمَقُ مَنِ اتَّبَعَ نَفْسَهٗ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ الْاَمَانِيَّ" बे वुक़ूफ़ वोह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के पीछे लाता है और (इस के बा वुजूद) **अल्लाह** तआ़ला से तमन्नाएं करता है (कि वोह बड़ा करीम और ग़फ़ूरो रह़ीम है, इस से और इस के आ'माल से बे परवाह है इस लिये **अल्लाह** तआ़ला इसे कोई सज़ा नहीं देगा बल्कि जन्नत में दाख़िल कर देगा और वोह इस की मन चाही चीज़ें इसे देगा) ।(1)

بَلٰى ۗ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हां क्यूं नहीं जिस ने अपना मुंह झुकाया **अल्लाह** के लिये और वोह निकोकार है तो उस का नेग उस के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म ।

(1)......فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۲/۴۴۵، تحت الحدیث:۲۰۲۵، احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان حقیقۃ الرجاء، ۴/۱۷۵.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हां क्यूं नहीं ? जिस ने अपना चेहरा **अल्लाह** के लिये झुका दिया और वोह नेकी करने वाला भी हो तो उस का अज्र उस के रब के पास है और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे ।

﴿بَلٰى : **क्यूं नहीं ।**﴾ जन्नत में दाख़िले का ह़क़ीक़ी मे'यार ईमाने सह़ीह़ और अ़मले सालेह़ है और किसी भी ज़माने और किसी भी नस्ल व क़ौम का आदमी अगर सह़ीह़ ईमान व अ़मल रखता है तो वोह जन्नत में जाएगा । अलबत्ता येह याद रहे कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'लाने नुबुव्वत के बा'द आप की नुबुव्वत न मानने वाले का ईमान क़त्अ़न सह़ीह़ नहीं हो सकता और कोई भी अ़मल ईमान के बिग़ैर सालेह़ नहीं हो सकता, गोया जो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान रखे और अ़मले सालेह़ करे वोह जन्नत का मुस्तह़िक़ है । चूंकि यहूदियों और ईसाइयों ने कहा था कि उन के सिवा कोई जन्नत में दाख़िल नहीं होगा तो इस के जवाब में फ़रमाया गया कि उन के इ़लावा कोई जन्नत में क्यूं दाख़िल नहीं होगा जब कि **अल्लाह** तआ़ला का क़ानून येह है कि जो भी ईमाने सह़ीह़ और अ़मले सालेह़ ले कर आएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَیْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَیْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूदी बोले नसरानी कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं ह़ालां कि वोह किताब पढ़ते हैं इसी त़रह़ जाहिलों ने उन की सी बात कही तो **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदियों ने कहा : ईसाई किसी शै पर नहीं और ईसाइयों ने कहा : यहूदी किसी शै पर नहीं ह़ालां कि येह किताब पढ़ते हैं इसी त़रह़ जाहिलों ने उन (पहलों) जैसी बात

www.dawateislami.net

कही तो **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन में इस बात का फ़ैसला कर देगा जिस में येह झगड़ रहे हैं।

﴾قَالَتِ الْيَهُوْدُ : **यहूदी बोले।**﴿ एक बार नजरान के ईसाइयों और (मदीनए मुनव्वरह) के यहूदियों के उ़लमा की बारगाहे मुस्त़फ़वी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में आपस में बह़स हो गई। बह़स के दौरान दोनों ने ख़ूब शोर मचाया। यहूदी कहते थे कि ईसाइयों का दीन कुछ नहीं और ईसाई कहते थे कि यहूदियों का दीन कुछ नहीं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

﴾يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ : **वोह किताब पढ़ते हैं।**﴿ या'नी इ़ल्म होने के बा वुजूद यहूदो नसारा ने ऐसी जाहिलाना गुफ़्त्गू की ह़ालां कि इन्जील शरीफ़ जिस को नसारा मानते हैं उस में तौरैत शरीफ़ और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत की तस्दीक़ है और तौरैत जिस को यहूदी मानते हैं उस में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत और उन तमाम अह़काम की तस्दीक़ है जो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से अ़त़ा हुए।

क़ुरआन पढ़ कर अ़मल न करने वाले मुसल्मानों को तम्बीह

यहूदियों और ईसाइयों की इस रविश के बयान में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के उन मुसल्मानों के लिये भी तम्बीह है कि जो क़ुरआने मजीद पढ़ते हैं और इस में बयान किये गए अह़काम से आगाह भी हैं और इस के बा वुजूद उन अह़काम पर अ़मल नहीं करते और अगर अ़मल करते भी हैं तो फ़क़त़ उन अह़काम पर जो उन की ख़्वाहिशात के मुवाफ़िक़ हों और जो अह़काम उन की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ नहीं उन पर अ़मल नहीं करते।

ह़ज़रते ज़ियाद बिन लबीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी बात का तज़्किरा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : "येह उस वक़्त होगा जब कि इ़ल्म उठ जाएगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इ़ल्म कैसे उठ जाएगा ह़ालां कि हम क़ुरआन पढ़ते हैं और अपनी औलाद को पढ़ाते हैं और वोह अपनी औलाद को पढ़ाएंगे, इसी त़रह़ येह सिल्सिला क़ियामत तक चलता रहेगा। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ज़ियाद ! तेरी मां तुझे गुम पाए, मैं तुम्हें मदीने के फ़हीम लोगों में शुमार करता था क्या यहूदी और ईसाई तौरात और इन्जील नहीं पढ़ते लेकिन इन में से कोई भी उस पर अ़मल नहीं करता।" (इसी त़रह़ मुसल्मान क़ुरआन तो पढ़ेंगे लेकिन उस पर अ़मल नहीं करेंगे और जो अपने

(1) تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۳، ۲/۹.

www.dawateislami.net

इ़ल्म पर अ़मल न करे वोह और जाहिल दोनों बराबर हैं) [1]

अल्लाह तआ़ला मुसल्मानों को क़ुरआने मजीद की तिलावत करने, इसे समझने और इस के अह़काम व ता'लीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन।

﴿كَذٰلِكَ قَالَ : **इसी त़रह़ कहा।**﴾ अहले किताब के उ़लमा की त़रह़ जाहिल बुत परस्तों और आतश परस्तों ने हर दीन को झुटलाना शुरूअ़ कर दिया और कहने लगे कि दीन कुछ नहीं। इन्हीं जाहिलों में से मुश्रिकीने अ़रब भी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के दीन के बारे में ऐसे ही कलिमात कहे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِیْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ یَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآىٕفِیْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ وَّ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और उन की वीरानी में कोशिश करे उन को न पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और उन के लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो **अल्लाह** की मस्जिदों को इस बात से रोके कि उन में **अल्लाह** का नाम लिया जाए और उन को वीरान करने की कोशिश करे। उन्हें मस्जिदों में दाख़िल होना मुनासिब न था मगर डरते हुए। उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और उन के लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ : **और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन।**﴾ येह आयत बैतुल मुक़द्दस की बे ह़ुरमती के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि रूम के ईसाइयों ने यहूदियों पर ह़म्ला कर के उन के जंगजूओं को क़त्ल कर दिया, उन के बीवी बच्चों को क़ैद कर लिया, तौरैत को जला दिया, बैतुल मुक़द्दस को वीरान कर दिया, उस में नजासतें डालीं, ख़िन्ज़ीर ज़ब्ह़ किये, यूं बैतुल मुक़द्दस ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी तक इसी वीरानी में रहा। आप

1 ......ابن ماجه، کتاب الفتن، باب ذهاب القرآن والعلم، ۳۸۳/۴، الحديث: ۴۰۴۸.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़ह्द मुबारक में मुसल्मानों ने इसे बनाया। एक क़ौल येह भी है कि येह आयत मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को का'बे में नमाज़ पढ़ने से रोका था और सुल्ह़े हु़दैबिया के वक़्त इस में नमाज़ व ह़ज से मन्अ़ किया था।(1)

﴿اَنْ یُّذْكَرَ : **कि ज़िक्र किया जाए।**﴾ ज़िक्र में नमाज़, ख़ुत़्बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ और सालिह़ीन के ह़ालात का बयान सब दाख़िल हैं। ज़िक्रुल्लाह को मन्अ़ करना हर जगह ही बुरा है लेकिन मस्जिदों में ख़ुसूसन ज़ियादा बुरा है कि वोह तो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं। मस्जिद को किसी भी त़रह़ वीरान करने वाला ज़ालिम है। बिला वज्ह लोगों को मस्जिद में आने या मस्जिद की ता'मीर से रोकने वाला, मस्जिद या उस के किसी ह़िस्से पर क़ब्ज़ा करने वाला, मस्जिद को ज़ाती इस्ति'माल में ले लेने वाला, मस्जिद के किसी ह़िस्से को मस्जिद से ख़ारिज करने वाला येह सब लोग इस आयत की वईद में दाख़िल हैं। तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ के किताबुल वक़्फ़ का मुत़ालआ़ करें। अलबत्ता येह याद रहे कि जुनुबी (या'नी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो), मुंह की बदबू वाले, लह्सन पियाज़ वग़ैरा बदबूदार चीज़ों की बू जिस के मुंह से आ रही हो उसे रोकना इस में दाख़िल नहीं कि येह ह़क़ीक़त में मस्जिद से तक्लीफ़ देह या ना मुनासिब चीज़ों को दूर करने के हुक्म में आता है। येह भी याद रहे कि मस्जिद के नज़्दीक दूसरी मस्जिद इस निय्यत से बनाना कि पहली मस्जिद वीरान हो जाए ह़राम है कि येह भी मस्जिद की वीरानी में कोशिश करना है अलबत्ता अगर कोई मस्जिद बनाए तो उस की निय्यत पर हम हुक्म नहीं लगा सकते हैं कि इस ने बुरी निय्यत से ही मस्जिद बनाई है।

﴿اِلَّا خَآىٕفِیْنَ : **मगर डरते हुए।**﴾ मस्जिद में अदबो ता'ज़ीम और ख़ौफ़े ख़ुदा के साथ दाख़िल होना चाहिये, निडर व बेबाक हो कर और आदाबे मस्जिद को पामाल करते हुए दाख़िल होना मुसल्मान का काम नहीं।

﴿فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ : **दुन्या में रुस्वाई।**﴾ बैतुल मुक़द्दस वीरान करने वालों को दुन्या में येह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरिफ़्तार हुए, जला वत़न किये गए। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी व उ़स्मानी में मुल्के शाम उन के क़ब्ज़े से निकल गया और बैतुल मुक़द्दस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए। मस्जिदों और मस्जिदों से तअ़ल्लुक़ रखने वालों से नफ़्रत करने वालों को येह वईद अपने पेशे नज़र रखनी चाहिये।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١١٤، ١/٨١.

www.dawateislami.net

وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और पूरब पश्चिम सब **अल्लाह** ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह (ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है बेशक **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और मशरिक़ व मग़रिब सब **अल्लाह** ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर ही **अल्लाह** की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह है। बेशक **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

﴿وَ لِلّٰهِ **: और अल्लाह ही के लिये है।**﴾ इस आयत के बहुत से शाने नुज़ूल बयान किये गए हैं :

(1)...... एक मरतबा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم तारीक रात में सफ़र में थे, क़िब्ले की सम्त मा'लूम न हो सकी, हर शख़्स ने जिस त़रफ़ उस का दिल जमा, नमाज़ पढ़ ली, सुब्ह़ को बारगाहे रिसालत में ह़ाल अ़र्ज़ किया तो येह आयत नाज़िल हुई।(1)

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं येह उस मुसाफ़िर के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सुवारी पर नफ़्ल अदा करे, उस की सुवारी जिस त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए (उस त़रफ़ उस की नमाज़ दुरुस्त है)।(2)

(3)...... जब ख़ानए का'बा को क़िब्ला बनाया गया तो यहूदियों ने मुसल्मानों पर ए'तिराज़ात किये। उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि मशरिक़ व मग़रिब सब **अल्लाह** तआ़ला का है जिस त़रफ़ चाहे क़िब्ला मुअ़य्यन फ़रमाए किसी को ए'तिराज़ का क्या ह़क़ है।(3)

(4)...... जब आयते दुआ़ (4)اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ नाज़िल हुई तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कि किस त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ की जाए ? इस के जवाब में येह आयत

---

1 ......ترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ البقرۃ، ٤/٤٤٥، الحدیث: ٢٩٦٨.

2 ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١١٥، ١/٨٢.

3 ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١١٥، ١/٨٢.

4 ......المؤمن: ٦٠.

www.dawateislami.net

नाज़िल हुई ।[1]

शाने नुज़ूल के मुतअ़ल्लिक़ इन के इलावा और भी कई अक़्वाल हैं ।

﴾فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا﴿ : **तो तुम जिधर मुंह फेरो ।** मा'लूम हुवा कि क़िब्ले की सम्त मा'लूम न हो सके तो जिस त़रफ़ दिल जमे कि ख़ानए का'बा इसी सम्त होगा तो उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े । इस बारे में तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 3 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं । येह याद रहे कि ख़ानए का'बा ही क़िब्ला है, यहां जो इजाज़त है वोह मख़्सूस सूरतों में है ।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले ख़ुदा ने अपने लिये औलाद रखी पाकी है उसे बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुश्रिकों ने कहा : **अल्लाह** ने अपने लिये औलाद बना रखी है, वोह पाक ज़ात है बल्कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उसी की मिल्किय्यत में है । सब उस के हुज़ूर गरदन झुकाए हुए हैं ।

﴾سُبْحٰنَهٗ﴿ : **अल्लाह पाक है ।** यहूदियों ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को और ईसाइयों ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ुदा का बेटा माना जब कि मुश्रिकीने अ़रब ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां क़रार दिया जैसा कि तीनों चीज़ें क़ुरआने पाक में मज़्कूर हैं । इन सब के रद में येह आयत नाज़िल हुई ।

﴾لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ﴿ : **उसी का है जो आस्मानों में है ।** किसी की औलाद उस की मिल्किय्यत नहीं हो सकती और जब आस्मानों और ज़मीन की हर चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की मिल्किय्यत है तो उस की औलाद कैसे हो सकती है ? नीज़ औलाद ह़क़ीक़त में मां बाप का जुज़ होती है और आदमी अपने जुज़ का मालिक नहीं होता ।

1 ......الطبری، البقرة، تحت الآیة: ۱۱۵، ۱/۵۵۳، رقم: ۱۸۴۹.

www.dawateislami.net

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ-وَ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ(۱۱۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (वोह) बिग़ैर किसी साबिक़ा मिसाल के आस्मानों और ज़मीन को नया पैदा करने वाला है और जब वोह किसी काम (को वुजूद में लाने) का फ़ैसला फ़रमाता है तो उस से सिर्फ़ येह फ़रमाता है कि "हो जा" तो वोह फ़ौरन हो जाता है।

﴾بَدِیْعُ : **बिग़ैर मिसाल के बनाने वाला।**﴿ बदीअ़ का मा'ना है किसी चीज़ को बिग़ैर किसी साबिक़ा मिसाल के नए त़ौर पर बनाने वाला। **अल्लाह** तआ़ला के आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने से पहले न कोई आस्मान था और न ज़मीन तो **अल्लाह** तआ़ला नए त़ौर पर इसे अ़दम से वुजूद में लाया। **अल्लाह** तआ़ला तमाम मख़्लूक़ के ए'तिबार से ही बदीअ़ है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर चीज़ को ख़ुद ही वुजूद बख़्शा है, पहले किसी शै की मिसाल मौजूद न थी।

﴾وَ اِذَا قَضٰۤى : **और जब फ़ैसला फ़रमाता है।**﴿ फ़ैसला फ़रमाने से मुराद इरादा करना है जैसा कि एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَیْــٴًـا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस का काम तो येही है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उस से फ़रमाता है, "हो जा" तो वोह फ़ौरन हो जाती है।

और इस आयत से अस्ल मुराद येह है कि ऐसा होना मुम्किन नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला किसी शै का इरादा फ़रमाए और वोह न हो बल्कि **अल्लाह** तआ़ला का इरादा क़त़्ई त़ौर पर नाफ़िज़ होता है और किसी शै को वुजूद में लाने के लिये **अल्लाह** तआ़ला को इन्सानों की त़रह मेहनतो मशक़्क़त की कोई ज़रूरत नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला का उस चीज़ के वुजूद का

(1) ...... یٰس: ۸۲.

www.dawateislami.net

इरादा फ़रमा लेना ही काफ़ी है। याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला किसी भी काम में किसी का मोह़ताज नहीं और **अल्लाह** तआ़ला का मुख़्तलिफ़ कामों के लिये फ़िरिश्तों को मुक़र्रर करना ह़िक्मत है ह़ाजत नहीं।

وَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ لَوْ لَا یُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِیْنَاۤ اٰیَةٌؕ-كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْؕ-تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْؕ-قَدْ بَیَّنَّا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ(۱۱۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जाहिल बोले **अल्लाह** हम से क्यूं नहीं कलाम करता या हमें कोई निशानी मिले इन से अगलों ने भी ऐसी ही कही इन की सी बात इन के उन के दिल एक से हैं बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यक़ीन वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जाहिलों ने कहा **: अल्लाह** हम से क्यूं नहीं कलाम करता या हमारे पास कोई निशानी क्यूं नहीं आ जाती। इन से पहले लोगों ने भी ऐसी ही बात कही थी तो इन के दिल आपस में एक जैसे हो गए। बेशक हम ने यक़ीन करने वालों के लिये निशानियां खोल कर बयान कर दीं।

﴿اَلَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ **: जो नहीं जानते।**﴾ इस आयत की **एक तफ़्सीर** येह है कि यहूदियों ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि अगर आप अपने क़ौल के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं तो **अल्लाह** तआ़ला से फ़रमाइये कि वोह हम से कलाम करे ताकि हम ख़ुद उस का फ़रमान सुन लें। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि इन से पहले यहूदियों ने भी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ऐसी ही बात कही थी। **दूसरी तफ़्सीर** येह है कि मुश्रिकीने मक्का ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि **अल्लाह** तआ़ला जिस त़रह़ फ़िरिश्तों और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाता है इस त़रह़ ख़ुद इन से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ क्यूं कलाम नहीं फ़रमाता ताकि हमें यक़ीन हो जाए कि आप नबी हैं और हम आप पर ईमान ले आएं या हमारे पास कोई ऐसी निशानी क्यूं

www.dawateislami.net

नहीं आ जाती जिस से हमें आप की सदाक़त मा'लूम हो जाए। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि इन मुश्रिकों से पहले कुफ़्फ़ार ने भी अपने रसूलों से ऐसी ही बात कही थी।[1]

येह उन का कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी कि उन्हों ने अपने आप को अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और मलाएका के बराबर समझा।

﴾تَشَابَهَتۡ قُلُوۡبُهُمۡ﴿ : इन के दिल आपस में मिल गए। यहूदो नसारा और मुश्रिकीन के अक़्वाल का गुज़श्ता मुन्किरीन के अक़्वाल के मुताबिक़ होना इन के दिलों की सख़्ती और कुफ़्र के एक दूसरे से मुशाबेह होने की अ़लामत है। इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई कि आप जाहिलों की सरकशी और मुआ़निदाना इन्कार से रन्जीदा न हों। पिछले कुफ़्फ़ार भी अपने अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ ऐसा ही करते थे, जैसे यहूदियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा था कि हम आप की बात न मानेंगे जब तक **अल्लाह** तआ़ला को ए'लानिया न देख लें। याद रहे कि कुफ़्फ़ार से मुआ़शरत, लिबास और वज़्अ़ क़त़्अ़ में भी मुशाबहत करना मन्अ़ है कि ज़ाहिर बात़िन की अ़लामत होता है और ज़ाहिर का बात़िन पर असर होता है। लिहाज़ा कुफ़्फ़ार के त़ौर त़रीक़े से बिल्कुल दूरी इख़्तियार की जाए ताकि उन का ज़ाहिर मुसल्मान के बात़िन को मुतअस्सिर न करे।

> إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗاۖ وَلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلۡجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें ह़क़ के साथ भेजा ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख़ वालों का सुवाल न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! बेशक हम ने तुम्हें ह़क़ के साथ ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर की ख़बरें देने वाला बना कर भेजा और आप से जहन्नमियों के बारे में सुवाल नहीं किया जाएगा।

---

1 ......در منثور، البقرة، تحت الآية : ۱۱۸، ۱/۲۷۱، روح البيان، البقرة، تحت الآية: ۱۱۸، ۱/۲۱۵، قرطبی، البقرة، تحت الآية: ۱۱۸، ۱/۷۱، الجزء الثانی، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

﴿اَرْسَلْنٰكَ : **हम ने आप को भेजा ।**﴾ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत की खुश ख़बरी देने वाले और दोज़ख़ से डराने की ख़बरें देने वाले हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ के बा वुजूद अगर कोई जहन्नम की राह जाता है तो उस के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल न होगा कि वोह क्यूं ईमान न लाया, इस लिये कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना फ़र्ज़े तब्लीग़ पूरे तौर पर अदा फ़रमा दिया ।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَىٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِیْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۱۲۰﴾

वक़्फ़ मन्ज़िल

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ तुम से यहूद और नसारा राज़ी न होंगे जब तक तुम उन के दीन की पैरवी न करो तुम फ़रमा दो **अल्लाह** ही की हिदायत हिदायत है और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशों का पैरव हुवा बा'द इस के कि तुझे इ़ल्म आ चुका तो **अल्लाह** से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदी और ईसाई हरगिज़ आप से राज़ी न होंगे जब तक आप उन के दीन की पैरवी न कर लें । तुम फ़रमा दो : **अल्लाह** की हिदायत ही ह़क़ीक़ी हिदायत है और (ऐ मुख़ात़ब !) अगर तेरे पास इ़ल्म आ जाने के बा'द भी तू उन की ख़्वाहिशात की पैरवी करेगा तो तुझे **अल्लाह** से कोई बचाने वाला न होगा और न कोई मददगार होगा ।

﴿وَلَنْ تَرْضٰى : **और हरगिज़ राज़ी न होंगे ।**﴾ फ़रमाया जा रहा है कि ऐ ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! यहूदी और ईसाई हरगिज़ आप से राज़ी न होंगे जब तक आप उन के दीन की पैरवी न कर लें और यक़ीनन येह बात ना मुम्किन है कि आप उन के दीन की पैरवी करें क्यूं कि वोह बात़िल हैं । उन के मुक़ाबले में आप जवाब दें कि **अल्लाह** तआ़ला की हिदायत ही ह़क़ीक़ी हिदायत है जो उस ने मुझे अ़त़ा फ़रमा रखी है । इस आयत से येह भी समझ आता है कि कुफ़्फ़ार ब हैसिय्यते मज्मूई मुसल्मानों से कभी राज़ी नहीं हो सकते अगर्चे ज़ाहिरी त़ौर पर कभी ह़ालात

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ हो जाएं। अफ़्सोस कि हज़ारों तजरिबात के बा'द भी मुसलमान सबक़ नहीं सीखते।

﴾وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ﴿ **: और अगर तुम ने पैरवी की।** येह ख़िताब उम्मते मुहम्मदिय्यह को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाए तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं।(1)

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ اُولٰٓىِٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖؕ وَ مَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۠ ﴿۱۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हें हम ने किताब दी है वोह जैसी चाहिये उस की तिलावत करते हैं वोही उस पर ईमान रखते हैं और जो उस के मुन्किर हों तो वोही ज़ियांकार हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब दी है तो वोह उस की तिलावत करते हैं जैसा तिलावत करने का हक़ है येही लोग उस पर ईमान रखते हैं और जो उस का इन्कार करें तो वोही नुक़्सान उठाने वाले हैं।

﴾یَتْلُوْنَهٗ﴿ **: वोह उस की तिलावत करते हैं।** हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो हज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए थे, उन की ता'दाद चालीस थी, बत्तीस अहले ह़बशा और आठ शामी राहिब थे, उन में बह़ीरा राहिब भी थे जिन्हों ने बचपन में सफ़रे शाम में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचाना था।(2)

आयत का मत़लब येह है कि ह़क़ीक़त में तौरैत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वोही हैं जो उस की तिलावत का ह़क़ अदा करते हैं और बिग़ैर तह़रीफ़ो तब्दील किये पढ़ते हैं और उस के मा'ना को समझते और मानते हैं और उस में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर आप पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुन्किर होते हैं वोह तौरैत पर ईमान नहीं रखते।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٢٠، ١/٨٤.

2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٢١، ١/٨٤-٨٥.

www.dawateislami.net

क़ुरआने मजीद के हुक़ूक़

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किताबुल्लाह के बहुत से हुक़ूक़ भी हैं। क़ुरआन का हक़ येह है कि इस की ता'ज़ीम की जाए, इस से महब्बत की जाए, इस की तिलावत की जाए, इसे समझा जाए, इस पर ईमान रखा जाए, इस पर अ़मल किया जाए और इसे दूसरों तक पहुंचाया जाए। तरग़ीब के लिये यहां हम तिलावते क़ुरआन के चन्द ज़ाहिरी और बातिनी आदाब ज़िक्र करते हैं ताकि मुसल्मान क़ुरआने अ़ज़ीम की इस त़रह़ तिलावत करें जैसा तिलावत करने का ह़क़ है।

तिलावते क़ुरआन के ज़ाहिरी आदाब

क़ुरआने मजीद की तिलावत करने वाले को दर्जे ज़ैल 6 ज़ाहिरी चीज़ों का ख़याल रखना चाहिये।

(1)...... बा वुज़ू हो कर, क़िब्ला रू हो कर, मुअद्दब हो कर और इज्ज़ो इन्किसारी के साथ बैठे।

(2)...... आहिस्ता पढ़े और इस के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करे, तिलावते क़ुरआन करने में जल्द बाज़ी से काम न ले।

(3)...... दौराने तिलावत रोना भी चाहिये और अगर रोना न आए रोने जैसी शक्ल बना ले।

(4)...... हर आयत की तिलावत का ह़क़ बजा लाए।

(5)...... अगर क़िराअत से रियाकारी का अन्देशा हो या किसी की नमाज़ में ख़लल पड़ता हो तो आहिस्ता आहिस्ता तिलावत करे।

(6)...... जहां तक मुम्किन हो क़ुरआने पाक को ख़ुश इल्ह़ानी के साथ पढ़े।

तिलावते क़ुरआन के बातिनी आदाब

क़ुरआने करीम की तिलावत करने वाले को दर्जे ज़ैल 6 बातिनी चीज़ों का भी ख़याल रखना चाहिये।

(1)...... क़ुरआने मजीद की अ़ज़्मत दिल में बिठाए।

(2)...... क़ुरआने मजीद पढ़ने से पहले **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मत दिल में बिठाए और ख़याल करे कि येह किस अ़ज़ीम ज़ात का कलाम है और मैं किस भारी काम के लिये बैठा हूं।

(3)...... क़ुरआने करीम की तिलावत करते वक़्त दिल को ह़ाज़िर रखे, इधर उधर ख़याल न

www.dawateislami.net

करे, बुरे ख़यालात से दिल को आलूदा न करे और जो बे ख़याली में पढ़ चुका उसे अज़ सरे नौ तवज्जोह से पढ़े।

(4)...... हर हुक्म के मा'ना में ग़ौरो फ़िक्र करे, अगर समझ में न आए तो उसे बार बार पढ़े और अगर किसी आयत के पढ़ने से लज़्ज़त महसूस हो तो उसे फिर पढ़े कि येह दोबारा पढ़ना ज़ियादा तिलावत करने से बेहतर है।

(5)...... जिस त़रह़ आयात का मज़्मून तब्दील होता रहे इसी त़रह़ मज़्मून के मुत़ाबिक़ दिल की कैफ़िय्यत भी बदलती रहे और क़ुरआन के रंग में रंगती जाए।

(6)...... क़ुरआने मजीद की तिलावत इस त़रह़ करे कि गोया येह क़ुरआन **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह से सुन रहा है और ख़याल करे कि अभी उस ज़ात की जानिब से सुन रहा हूं।[1]

يٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَ اَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ औलादे या'क़ूब याद करो मेरा एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ या'क़ूब की औलाद ! मेरा एह़सान याद करो जो मैं ने तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई।

﴿يٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ : **ऐ बनी इसराईल।**﴾ यहां से एक बार फिर बनी इसराईल को **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें याद दिलाई जा रही हैं ताकि इन पर क़ाइम की गई ह़ुज्जत मज़ीद मज़बूत़ हो जाए। इस आयत से दो मस्अले मा'लूम हुए :

(1)...... नबी की औलाद होना बाइ़से इ़ज़्ज़त है और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत है।

(2)...... **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का चरचा करना, ज़िक्र करना शुक्र की एक क़िस्म है। लिहाज़ा ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका का तज़्किरा करना या इस की मह़फ़िल करना इसी क़िस्म में दाख़िल है।

---

1 ......كيمياء سعادت، كتاب اركانِ مسلمانى، اصل هشتم قرآن خواندن، آدابِ تلاوت، ٢٤١-٢٤٧، ملخصاً.

www.dawateislami.net

﴿اَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ : **बेशक मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ।**﴾ बनी इसराईल अपने ज़माने में तमाम लोगों से अफ़्ज़ल थे क्यूं कि येह नबियों की औलाद थे और इन में सालिहीन बहुत थे, अब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्कार कर के और सरकशी कर के ज़लील हो गए। इस से मा'लूम हुवा कि इज़्ज़त हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दम से वाबस्ता है, जो इन का हो गया इज़्ज़त पा गया और जो इन से फिर गया ज़लील हो गया। आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

बख़ुदा ख़ुदा का येही है दर, नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहां से हो यहीं आ के हो, जो यहां नहीं वोह वहां नहीं

وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْــٴًـا وَّ لَا یُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّ لَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से कि कोई जान दूसरे का बदला न होगी और न उस को कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़्अ़ दे और न उन की मदद हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान की त़रफ़ से कोई बदला न देगी और न उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा और न काफ़िर को सिफ़ारिश नफ़्अ़ देगी और न ही उन की मदद की जाएगी।

﴿لَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ : **न काफ़िर को सिफ़ारिश नफ़्अ़ देगी ।**﴾ यहां बुन्यादी त़ौर पर उन यहूदियों का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बड़े बुज़ुर्ग थे वोह हमें शफ़ाअ़त कर के छुड़ा लेंगे। उन्हें फ़रमाया जा रहा है कि शफ़ाअ़त काफ़िर के लिये नहीं है। गोया यहां काफ़िर का बयान है कि काफ़िर की त़रफ़ से कोई बदला न बनेगा और न उस से कोई मुआ़वज़ा ले कर उसे छोड़ा जाए और न कोई उस की शफ़ाअ़त करेगा और बिल्फ़र्ज़ अगर कोई करे तो काफ़िर के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल नहीं की जाएगी और न काफ़िरों की मदद की जाएगी। काफ़िरों के मुक़ाबले में मुसल्मानों की शफ़ाअ़त भी होगी जैसे क़ुरआन में बीसियों जगह है और मुसल्मानों की मदद

www.dawateislami.net

भी होगी जैसे बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत में जगह जगह अपने उम्मतियों की मदद फ़रमाएंगे।

وَ اِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّؕ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًاؕ قَالَ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْؕ قَالَ لَا یَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ (۱۲۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आज़्माया तो उस ने वोह पूरी कर दिखाईं फ़रमाया मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाने वाला हूं अ़र्ज़ की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अ़ह्द ज़ालिमों को नहीं पहुंचता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब इब्राहीम को उस के रब ने चन्द बातों के ज़रीए आज़्माया तो उस ने उन्हें पूरा कर दिया (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाने वाला हूं। (इब्राहीम ने) अ़र्ज़ की और मेरी औलाद में से भी। फ़रमाया : मेरा अ़ह्द ज़ालिमों को नहीं पहुंचता।

﴾وَ اِذِ ابْتَلٰۤى : **और जब आज़्माया**﴿ यहूदो नसारा और मुश्रिकीने अ़रब सब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़ज़्लो शरफ़ के मो'तरिफ़ और आप की नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वोह ह़ालात बयान फ़रमाए हैं जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्यूं कि जो चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वाजिब कीं वोह इस्लाम की ख़ुसूसिय्यात में से हैं। **इब्तिला** आज़्माइश को कहते हैं, ख़ुदाई आज़्माइश येह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उस के खरे खोटे होने का इज़्हार कर दिया जाए। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आज़्माइश में बहुत से शर्ई अह़काम भी थे और राहे ख़ुदा में आप की हिजरत, बीवी बच्चों का बयाबान में तन्हा छोड़ना, फ़रज़न्द की क़ुरबानी वग़ैरा सब शामिल हैं।(1)

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٢٤، ١/٨٥-٨٦.

www.dawateislami.net

आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम इम्तिहानों में पूरा उतरे और **अल्लाह** तआ़ला ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को लोगों का पेश्वा बना दिया, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **ख़लीलुल्लाह** क़रार पाए, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाप हुए, तमाम दीनों में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का तज़्किरा हुवा, सब के नज़्दीक महबूब हुए। इस से मा'लूम हुवा कि शर्ई अह़काम और तकालीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आज़्माइश होती हैं और जो इन आज़्माइशों में पूरा उतरता है वोह दुन्या व आख़िरत के इन्आ़मात का मुस्तह़िक़ क़रार पाता है।

﴿لِلنَّاسِ اِمَامًا **: लोगों के लिये पेश्वा।**﴾ यहां इमामत से मुराद नुबुव्वत नहीं। क्यूं कि नुबुव्वत तो पहले ही मिल चुकी थी। तब ही तो आप का इम्तिह़ान लिया गया बल्कि इस इमामत से मुराद दीनी पेश्वाई है जैसा कि जलालैन में इस की तफ़्सीर "قُدْوَةً فِی الدِّیْنِ या'नी दीन में पेश्वाई" से की गई है।[1]

﴿وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ **: और मेरी औलाद में से।**﴾ जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इमामत का मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से अपनी औलाद के लिये भी अ़र्ज़ किया। इस पर फ़रमाया गया कि आप की औलाद में जो ज़ालिम होंगे वोह इमामत का मन्सब न पाएंगे। काफ़िर हुए तो दीनी पेश्वाई न मिलेगी और फ़ासिक़ हुए तो नुबुव्वत न मिलेगी और क़ाबिल हुए तो **अल्लाह** तआ़ला अपने करम से जिसे जो चाहेगा अ़त़ा फ़रमाएगा। इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर मुसल्मानों का पेश्वा नहीं हो सकता और मुसल्मानों को उस की इत्तिबाअ़ जाइज़ नहीं। येह भी मा'लूम हुवा कि अपनी औलाद के लिये दुआ़ए ख़ैर करना सुन्नते अम्बिया है, येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला कोई ने'मत अ़त़ा फ़रमाए तो औलाद के लिये भी उस की ख़्वाहिश करनी चाहिये।

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤی اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَالْعٰكِفِیْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾

---

1 ......جلالين مع جمل، البقرة، تحت الآية: ١٢٤، ١/١٥٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने इस घर को लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (याद करो) जब हम ने इस घर को लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया और (ऐ मुसल्मानो !) तुम इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ और हम ने इब्राहीम व इस्माईल को ताकीद फ़रमाई कि मेरा घर त़वाफ़ करने वालों और ए'तिकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ व सुजूद करने वालों के लिये ख़ूब पाक साफ़ रखो।

﴾وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ﴿ **: और जब हम ने इस घर को बनाया।** बैत से का'बा शरीफ़ मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल है। "مَثَابَةً" से मुराद बार बार लौटने की जगह है। यहां मुसल्मान बार बार लौट कर ह़ज व उ़म्रह व ज़ियारत के लिये जाते हैं और जो न जा सके वोह इस की तमन्ना ज़रूर करते हैं और अम्न बनाने से येह मुराद है कि ह़रमे का'बा में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते बल्कि छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून हो जाता है। ह़रम को ह़रम इस लिये कहा जाता है कि इस में क़त्ल, ज़ुल्म और शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है, अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां उसे कुछ न कहा जाएगा।[1]

﴾وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى﴿ **: और तुम इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ।** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ता'मीर फ़रमाई और उस में आप के क़दम मुबारक का निशान था, इसे नमाज़ का मक़ाम बनाना मुस्तह़ब है। एक क़ौल येह भी है कि इस नमाज़ से त़वाफ़ के बा'द पढ़ी जाने वाली दो वाजिब रक्अ़तें मुराद हैं।[2]

अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत की बरकत

इस से मा'लूम हुवा कि जिस पथ्थर को नबी की क़दम बोसी ह़ासिल हो जाए वोह

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٢٥، ٨٧/١، مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٢٥، ص٧٧، ملتقطاً.

2 ......بيضاوى، البقرة، تحت الآية: ١٢٥، ٣٩٨/١-٣٩٩.

www.dawateislami.net

अ़ज़्मत वाला हो जाता है । येह भी मा'लूम हुवा कि नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीम तौह़ीद के मुनाफ़ी नहीं क्यूं कि मक़ामे इब्राहीम का एह़तिराम तो ऐ़न नमाज़ में होता है, लिहाज़ा ऐ़न नमाज़ में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम नमाज़ को नाक़िस न करेगी बल्कि कामिल बनाएगी । येह भी मा'लूम हुवा कि जब पथ्थर नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दम लगने से अ़ज़्मत वाला हो गया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात, अहले बैत और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की अ़ज़्मत का क्या कहना । इस से तबर्रुकात की ता'ज़ीम का भी सुबूत मिलता है । बुज़ुर्गाने दीन के आसार व तबर्रुकात की ता'ज़ीम और उन की ज़ियारत के सिल्सिले में तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 21वीं जिल्द में मौजूद रिसाला "بَدْرُ الْاَنْوَار فِیْ آدَابِ الْآثَار (तबर्रुकात के बारे में मुफ़ीद रिसाला)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

﴿اَنْ طَهِّرَا﴾ **: कि पाक साफ़ रखो ।** ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बैतुल्लाह शरीफ़ को पाको साफ़ रखने का हुक्म दिया गया । इस से मा'लूम हुवा कि ख़ानए का'बा और मस्जिदे ह़राम शरीफ़ को ह़ाजियों, उ़म्रह करने वालों, त़वाफ़ करने वालों, ए'तिकाफ़ करने वालों और नमाज़ियों के लिये पाको साफ़ रखा जाए, येही हुक्म मस्जिदों को पाको साफ़ रखने का है, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए, येह सुन्नते अम्बिया है, येह भी मा'लूम हुवा कि ए'तिकाफ़ इ़बादत है और गुज़श्ता उम्मतों में राइज था नीज़ पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ़ सुजूद दोनों थे । येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिदों का मुतवल्ली होना चाहिये और मुतवल्ली सालेह़ इन्सान और मस्जिद की सह़ीह़ ख़िदमत करने वाला हो ।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ قَالَ وَ مَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِیْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह़ त़रह़ के फलों से रोज़ी दे जो उन में से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं फ़रमाया और जो काफ़िर हुवा थोड़ा बरत्ने को उसे भी दूंगा फिर उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ मजबूर करूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है पलटने की ।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब इस शहर को अम्न वाला बना दे और इस में रहने वाले जो **अल्लाह** और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों उन्हें मुख़्तलिफ़ फलों का रिज़्क़ अ़ता फ़रमा । (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : और जो काफ़िर हो तो मैं उसे भी थोड़ी सी मुद्दत के लिये नफ़्अ़ उठाने दूंगा फिर उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब की त़रफ़ मजबूर कर दूंगा और वोह पलटने की बहुत बुरी जगह है ।

﴾وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ : **और जब इब्राहीम ने कहा ।**﴿ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ता'मीरे का'बा के बा'द मुतअ़द्दद दुआ़एं मांगीं । इस से मा'लूम हुवा कि नेकी कर के क़बूलिय्यत की दुआ़ करना सुन्नते ख़लील है । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने औलाद के लिये इमामत मांगी थी तो फ़रमाया गया कि ज़ालिमों को नहीं मिलेगी इस लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बा'द में जब येह दुआ़ की तो इस में मोमिनीन को ख़ास फ़रमाया कि मोमिनों को रिज़्क़ दे और येही अदब का तक़ाज़ा था । **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया, दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा मोमिन को भी और काफ़िर को भी लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है या'नी सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी में उसे मिलेगा । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ानए का'बा के लिये रिज़्क़ की फ़रावानी की दुआ़ मांगी थी, उस दुआ़ की क़बूलिय्यत हर शख़्स अपनी आंखों से देख सकता है कि दुन्या भर के फल और खाने यहां ब कसरत मिलते हैं ।

وَ اِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَیْتِ وَ اِسْمٰعِیْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۱۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उठाता था इब्राहीम उस घर की नीवें और इस्माईल येह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब इब्राहीम और इस्माईल उस घर की बुन्यादें बुलन्द कर रहे थे (येह दुआ़ करते हुए) ऐ हमारे रब ! हम से क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है ।

www.dawateislami.net

﴿وَاِذۡ يَرۡفَعُ﴾ : और जब बुलन्द कर रहे थे । पहली मरतबा ख़ानए का'बा की बुन्याद ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रखी और तूफ़ाने नूह़ के बा'द फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसी बुन्याद पर ता'मीर फ़रमाया । येह ता'मीर ख़ास आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक से हुई, इस के लिये पथ्थर उठा कर लाने की ख़िदमत व सआ़दत ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुयस्सर हुई, दोनों ह़ज़रात ने उस वक़्त येह दुआ़ की, कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, हमारी येह ताअ़त व ख़िदमत क़बूल फ़रमा । अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बुख़ारी की शर्ह़ में तह़रीर फ़रमाया है कि ख़ानए का'बा की ता'मीर दस मरतबा की गई ।(1)

इसे नक़्ल करने के बा'द अ़ल्लामा सुलैमान जुमल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि 1039 हिजरी के बा'द भी बा'ज़ बादशाहों ने ता'मीरे का'बा की जैसा कि इसे बा'ज़ तारीख़ दानों ने नक़्ल किया है ।(2)

मस्जिद ता'मीर करना आ'ला इबादत है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि मस्जिदों की ता'मीर निहायत आ'ला इबादत और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है । सह़ीह़ बुख़ारी में है कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ की ता'मीर में बज़ाते ख़ुद ह़िस्सा लिया था ।(3)

मस्जिद ता'मीर करने के फ़ज़ाइल सूरए तौबह आयत नम्बर 18 की तफ़्सीर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

رَبَّنَا وَاجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَیۡنِ لَکَ وَمِنۡ ذُرِّیَّتِنَاۤ اُمَّۃً مُّسۡلِمَۃً لَّکَ ۪ وَ
اَرِنَا مَنَاسِکَنَا وَتُبۡ عَلَیۡنَا ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ التَّوَّابُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे ह़ुज़ूर गरदन रखने वाले और हमारी औलाद में से एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें हमारी इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमा बेशक तू ही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान ।

1 ......ارشاد السارى، كتاب الحج، باب فضل مكة وبنيانها... الخ، ١٠٣/٤، تحت الحديث: ١٥٨٢.
2 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ١٢٧، ١٦٠/١.
3 ......بخارى، كتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبى صلى الله عليه وسلم واصحابه الى المدينة، ٥٩٥/٢، الحديث: ٣٩٠٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! और हम दोनों को अपना फ़रमां बरदार रख और हमारी औलाद में से एक ऐसी उम्मत बना जो तेरी फ़रमां बरदार हो और हमें हमारी इबादत के त़रीक़े दिखा दे और हम पर अपनी रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमा बेशक तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह़रबान है।

﴿وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ﴾ **: और हमें फ़रमां बरदार रख ।** سُبْحٰنَ اللّٰہ ! वोह ह़ज़रात **अल्लाह** तआ़ला के मुत़ीओ़ मुख़्लिस बन्दे थे फिर भी येह दुआ़ इस लिये मांग रहे हैं कि मज़ीद इत़ाअ़त व इ़बादत व इख़्लास और कमाल नसीब हो। ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मा'सूम हैं, आप की त़रफ़ से तौबा तवाज़ोअ़ या'नी आ़जिज़ी है और **अल्लाह** वालों के लिये ता'लीम है। ख़ानए का'बा और इस का क़ुर्ब क़बूलिय्यत का मक़ाम है, यहां दुआ़ और तौबा करना सुन्नते इब्राहीमी है।

﴿وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا﴾ **: और हमें हमारी इबादत के त़रीक़े दिखा ।** मा'लूम हुवा कि इ़बादत के त़रीक़े सीखना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है। इस के लिये दुआ़ भी करनी चाहिये और कोशिश भी। बिग़ैर त़रीक़ा सीखे इ़बादत करना अक्सर इ़बादत को ज़ाएअ़ करता है। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर मुसल्मान पर इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है।"[1] फ़र्ज़ इ़बादत का त़रीक़ा व मसाइल सीखना भी इसी में दाख़िल है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِكَ وَیُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَیُزَكِّیْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۲۹﴾ ع

ركوع ۱۵ / ۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और भेज इन में एक रसूल इन्हीं में से कि इन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इ़ल्म सिखाए और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे बेशक तू ही है ग़ालिब ह़िक्मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! और इन के दरमियान इन्हीं में से एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतों की तिलावत फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इ़ल्म सिखाए और इन्हें ख़ूब पाकीज़ा फ़रमा दे। बेशक तू ही ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

1 ......ابن ماجه، كتاب السنّة، باب فضل العلماء... الخ، ١٤٦/١، الحديث: ٢٢٤.

www.dawateislami.net

﴿رَبَّنَا وَابْعَثْ : ऐ हमारे रब ! और भेज ।﴾ ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये थी । ख़ानए का'बा की ता'मीर की अ़ज़ीम ख़िदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिग़फ़ार करने के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ़ की, कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, अपने ह़बीब, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और येह शरफ़ हमें इनायत फ़रमा । येह दुआ़ क़बूल हुई और इन दोनों बुज़ुर्गों की नस्ल में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई । इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की, कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मैं **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक ख़ातमुन्नबिय्यीन लिखा हुवा था हालां कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़मीर तय्यार हो रहा था, मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए ह़ाल की ख़बर दूं, मैं दुआ़ए इब्राहीम हूं, बिशारते ईसा हूं, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ता'बीर हूं जो उन्हों ने मेरी विलादत के वक़्त देखा और उन के लिये एक बुलन्द नूर ज़ाहिर हुवा जिस से मुल्के शाम के ऐवान और मह़ल्लात उन के लिये रोशन हो गए ।''[1]

इस ह़दीस में दुआ़ए इब्राहीम से येही दुआ़ मुराद है जो इस आयत में मज़्कूर है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया ।[2] اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ۔

﴿وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ : **और इन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए** ।﴾ आयत में किताब से मुराद कुरआने पाक और इस की ता'लीम से इस के ह़क़ाइक़ व मआ़नी का सिखाना मुराद है । और ह़िक्मत में सुन्नत, अह़कामे शरीअ़त और असरार वग़ैरा सब दाख़िल हैं । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी दुआ़एं मांगीं जो रब तआ़ला ने लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ क़बूल फ़रमाईं । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिन जमाअ़त में, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पैदा हुए, रसूल हुए, साह़िबे किताब हुए, आयात की तिलावत फ़रमाई, उम्मत को किताबुल्लाह सिखाई, ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई, इन के नफ़्सों का तज़्किया किया, असरारे इलाही पर मुत्तलअ़ किया ।

आयत ''وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की भी शान मा'लूम हुई कि हुज़ूरे अकरम

1 ......شرح السنة، كتاب الفضائل، باب فضائل سيد الاولين والآخرين محمد صلى الله عليه وسلم، ١٣/٧، الحديث: ٣٥٢٠.

2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٢٩، ٩١/١.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन को किताब व ह़िक्मत सिखाई और जिन्हें पाको साफ़ किया इन के अव्वलीन मिस्दाक़ सह़ाबा ही तो थे। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि पूरा कु़रआन आसान नहीं वरना इस की ता'लीम के लिये हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न भेजे जाते। जो कहे कि कु़रआन समझना बहुत आसान है उसे किसी बड़े आ़लिम के पास ले जाएं, पन्दरह मिनट में ह़ाल ज़ाहिर हो जाएगा। येह भी मा'लूम हुवा कि कु़रआन के साथ ह़दीस की भी ज़रूरत है। "اَلْحِكْمَةَ" का एक मा'ना सुन्नत भी किया गया है जैसा कि मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ह़िक्मत सुन्नत ही है।[1]

﴾وَيُزَكِّيْهِمْ : **और इन्हें ख़ूब पाकीज़ा फ़रमा दे।**﴿ सुथरा करने के येह मा'ना हैं कि नफ़्स को गुनाहों की आलूदगियों, शहवात व ख़्वाहिशात की आलाइशों और अरवाह़ की कदूरतों से पाको साफ़ कर के आईनए दिल को तजल्लियात व अन्वारे इलाहिय्यह देखने के क़ाबिल कर दें ताकि असरारे इलाही और अन्वारे बारी तआ़ला इस में जल्वा गर हो सकें। तमाम ग़ौस, कु़त़्ब, अब्दाल, औलिया, अस्फ़िया, सूफ़िया, फु़क़हा व उ़लमा का तज़्किया इसी मुक़द्दस बारगाह से होता है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान   साह़िबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे सिवा उस के जो दिल का अह़मक़ है और बेशक ज़रूर हम ने दुन्या में उसे चुन लिया और बेशक वोह आख़िरत में हमारे ख़ास कु़र्ब की क़ाबिलिय्यत वालों में है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इब्राहीम के दीन से वोही मुंह फेरेगा जिस ने ख़ुद को अह़मक़ बना रखा हो और बेशक हम ने उसे दुन्या में चुन लिया और बेशक वोह आख़िरत में हमारा ख़ास कु़र्ब पाने वालों में से है।

﴾وَمَنْ يَّرْغَبُ : **और जो मुंह फेरे।**﴿ उ़लमाए यहूद में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۲۹، ۱/ ۹۲.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्लाम लाने के बा'द अपने दो भतीजों मुहाजिर व सलमा को इस्लाम की दा'वत दी और उन से फ़रमाया कि तुम को मा'लूम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तौरैत में फ़रमाया है कि मैं औलादे इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिन का नाम अह़मद होगा, जो उन पर ईमान लाएगा वोह काम्याब है और जो ईमान न लाएगा वोह मल्ऊ़न है। येह सुन कर सलमा ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुद उस रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मब्ऊ़स होने की दुआ़ फ़रमाई तो जो उन के दीन से फिरे वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन से फिरा। इस में यहूदो नसारा और मुश्रिकीने अ़रब पर इशारतन कलाम है जो अपने आप को फ़ख़्र के त़ौर पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मन्सूब करते थे कि जब येह लोग दीने इब्राहीमी से फिर गए तो फिर इन की अ़ज़्मतो शराफ़त कहां रही।[1]

येह भी मा'लूम हुवा कि सच्चे दीन की पहचान येह है कि वोह सलफ़ सालिह़ीन का दीन हो, येह ह़ज़रात हिदायत की दलील हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम की दलील यहां दी कि वोह मिल्लते इब्राहीमी है।

﴿اِصْطَفَيْنٰهُ: **हम ने उसे चुन लिया।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को रिसालत व ख़ुल्लत के लिये चुन लिया या'नी आप को अपना रसूल और ख़लील बनाया।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِیْهِ وَ یَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿ؕ۱۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब कि उस से उस के रब ने फ़रमाया गरदन रख अ़र्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिये जो रब है सारे जहान का। और इसी दीन की वसिय्यत की इब्राहीम ने अपने बेटों को और या'क़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो बेशक **अल्लाह** ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना मगर मुसल्मान।

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۱۳۰، ۱/۱۶۱-۱۶۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो जब उस के रब ने उसे फ़रमाया : फ़रमां बरदारी कर, तो उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने फ़रमां बरदारी की उस की जो तमाम जहानों का पालने वाला है। और इब्राहीम और या'क़ूब ने अपने बेटों को इसी दीन की वसिय्यत की, कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक **अल्लाह** ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया है तो तुम हरगिज़ न मरना मगर इस ह़ाल में कि तुम मुसल्मान हो।

﴾وَوَصّٰی : **और वसिय्यत की ।**﴿ ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी औलाद को दीने ह़क़ पर साबित क़दमी की वसिय्यत फ़रमाई।

औलाद को सह़ीह़ अ़क़ाइद और नेक आ'माल की वसिय्यत करनी चाहिये

इस से मा'लूम हुवा कि वालिदैन को सिर्फ़ माल के मुतअ़ल्लिक़ ही वसिय्यत नहीं करनी चाहिये बल्कि औलाद को अ़क़ाइदे सह़ीह़ा, आ'माले सालिह़ा, दीन की अ़ज़्मत, दीन पर इस्तिक़ामत, नेकियों पर मुदावमत और गुनाहों से दूर रहने की वसिय्यत भी करनी चाहिये। औलाद को दीन सिखाना और उन की सह़ीह़ तरबियत करते रहना वालिदैन की ज़िम्मादारी है। जैसा कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपनी औलाद के साथ नेक सुलूक करो और उन्हें अच्छे अदब सिखाने की कोशिश करो।"(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : "अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करो क्यूं कि तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने उस की कैसी तरबियत की और तुम ने उसे क्या सिखाया।"(2)

ह़ज़रते अय्यूब बिन मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से और वोह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी बाप ने अपने बच्चे को ऐसा अ़तिय्या नहीं दिया जो अच्छे अदब से बेहतर हो।"(3)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अच्छे अदब से मुराद बच्चे को दीनदार, मुत्तक़ी, परहेज़ गार बनाना है औलाद के लिये इस से अच्छा अ़तिय्या क्या हो सकता है कि येह चीज़ दीनो दुन्या में काम आती है। मां बाप को चाहिये कि औलाद को सिर्फ़ मालदार बना कर दुन्या से न जाएं उन्हें दीनदार बना कर जाएं जो ख़ुद इन्हें भी क़ब्र में

1 ......ابن ماجه، كتاب الادب، باب بر الوالد والاحسان الى البنات، ١٨٩/٤-١٩٠، الحديث: ٣٦٧١.

2 ......شعب الايمان، الستون من شعب الايمان وهو باب فى حقوق الاولاد والاهلين، ٤٠٠/٦، الحديث: ٨٦٦٢.

3 ......ترمذى، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فى ادب الولد، ٣٨٣/٣، الحديث: ١٩٥٩.

www.dawateislami.net

काम आवे कि ज़िन्दा औलाद की नेकियों का सवाब मुर्दे को क़ब्र में मिलता है।''(1)

नीज़ वफ़ात के वक़्त अपनी औलाद को सहीह़ अ़क़ाइद और नेक आ'माल की वसिय्यत करना हमारे बुज़ुर्गाने दीन का त़रीक़ा रहा है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते वलीद बिन उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मिला और उन से पूछा कि आप के वालिद ने विसाल के वक़्त क्या वसिय्यत फ़रमाई ? ह़ज़रते वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''(मेरे वालिद ने) मुझे बुला कर फ़रमाया। ''ऐ बेटे ! **अल्लाह** तआ़ला से डर और येह बात जान ले कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस वक़्त तक डरने वाला नहीं बनेगा जब तक **अल्लाह** तआ़ला पर और हर ख़ैरो शर के **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मुक़द्दर होने पर ईमान न लाएगा अगर तू इस के ख़िलाफ़ पर मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा। मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** तआ़ला ने सब से पहले क़लम को पैदा किया और फिर फ़रमाया : ''लिख।'' क़लम ने अ़र्ज़ की : क्या लिखूं ? इर्शाद फ़रमाया : ''तक़्दीर को लिख जो हो चुका और जो अब तक होगा।''(2)

जब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मुझे कुछ वसिय्यत कीजिये। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूं कि तुम **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहो, ज़ियादा वक़्त अपने घर में रहो, अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करो और अपनी ख़त़ाओं पर रोया करो।''(3)

ह़ज़रते अ़ल्क़मा अ़त़ारदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी वफ़ात के वक़्त अपने बेटे को वसिय्यत करते हुए फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! जब तुम्हें लोगों की मजलिस इख़्तियार करना पड़े तो ऐसे आदमी की सोह़बत इख़्तियार कर कि जब तू उस की ख़िदमत करे तो वोह तेरी ह़िफ़ाज़त करे, अगर तू उस की मजलिस इख़्तियार करे तो वोह तुझे ज़ीनत दे, अगर तुझे कोई मशक़्क़त पेश आए तो वोह बरदाश्त करे, उस आदमी की सोह़बत इख़्तियार कर कि जब तू भलाई के साथ अपना हाथ फैलाए तो वोह भी उसे फैलाए, अगर वोह तुम में कोई अच्छाई देखे तो उसे शुमार करे और अगर बुराई देखे तो उसे रोके। उस आदमी से दोस्ती कर कि जब तू उस से

1 ......مراۃ المناجیح، باب الشفقۃ والرحمۃ علی الخلق، الفصل الثانی، ۶/۴۲۰، تحت الحدیث: ۴۷۵۶۔

2 ......ترمذی، کتاب القدر، ۱۷- باب، ۴/۶۲، الحدیث: ۲۱۶۲.

3 ......شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان وھو باب فی الخوف من اللّٰہ تعالی، ۱/۵۰۳، الحدیث: ۸۴۴.

www.dawateislami.net

मांगे तो वोह तुझे दे और अगर ख़ामोश रहे तो ख़ुद बख़ुद दे, अगर तुझे कोई परेशानी लाहिक़ हो तो वोह ग़म ख़्वारी करे। उस आदमी की सोहबत इख़्तियार करो कि जब तुम बात कहो तो वोह तुम्हारी बात की तस्दीक़ करे, अगर तुम किसी काम का इरादा करो तो वोह अच्छा मश्वरा दे और अगर तुम दोनों में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो वोह तुम्हारी बात को तरजीह दे।''(1)

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ یَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِیْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآىٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि तुम में के ख़ुद मौजूद थे जब या'क़ूब को मौत आई जब कि उस ने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बा'द किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आप का और आप के वालिदों इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ का एक ख़ुदा और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ यहूदियो !) क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब या'क़ूब के विसाल का वक़्त आया, जब उन्हों ने अपने बेटों से फ़रमाया : (ऐ बेटो !) मेरे बा'द तुम किस की इबादत करोगे ? तो उन्हों ने कहा : हम आप के मा'बूद और आप के आबाओ अज्दाद इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के मा'बूद की इबादत करेंगे जो एक मा'बूद है और हम उस के फ़रमां बरदार हैं।

﴿اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ﴾ **: क्या तुम मौजूद थे ?** येह आयत यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने कहा था कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसिय्यत की थी **अल्लाह** तआला ने उन के इस बोहतान के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमाई।(2)

आयत के मा'ना येह हैं कि ऐ बनी इसराईल ! क्या तुम्हारे पहले लोग हज़रते या'क़ूब

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفة والاخوة... الخ، ۲/۲۱٤.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآیة: ۱۳۳، ۱/۹۳.

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आख़िरी वक़्त उन के पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्हों ने अपने बेटों को बुला कर उन से इस्लाम व तौह़ीद का इक़रार लिया था और येह इक़रार लिया था जो आयत में मज़्कूर है।

﴾وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ : **और तुम्हारे बाप दादा के मा'बूद ।**﴿ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते या'कूब عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आबाअ या'नी बापों में दाख़िल किया ह़ालां कि आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते या'कूब عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़क़ीक़ी वालिद न थे। येह इस लिये है कि आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन के चचा हैं और चचा ब मन्ज़िला बाप के होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है और आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वज्ह से है, एक तो येह कि आप ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से चौदह साल बड़े हैं दूसरा इस लिये कि आप सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आबाअ में से हैं।

تِلۡكَ اُمَّةٌ قَدۡ خَلَتۡ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَلَكُمۡ مَّا كَسَبۡتُمۡ ۚ وَلَا تُسۡـَٔلُوۡنَ عَمَّا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक उम्मत है कि गुज़र चुकी उन के लिये है जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिये है जो तुम कमाओ और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह एक उम्मत है जो गुज़र चुकी है। उन के आ'माल उन के लिये हैं और तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये हैं और तुम से उन के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा।

﴾تِلۡكَ اُمَّةٌ : **वोह एक उम्मत है ।**﴿ जब यहूदी दलाइल में आ़जिज़ हो जाते तो आख़िर कार कह देते थे कि अगर हमारे अ़क़ाइदो आ'माल ग़लत़ भी हुए तो हमारे बाप दादाओं के आ'माल हमारे काम आ जाएंगे और उन से हमारी नजात हो जाएगी, उन की तरदीद में येह आयत आई कि वोह सब गुज़र चुके। उन के आ'माल उन के लिये हैं और तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये। तुम्हें उन के आ'माल काम न आएंगे। इस से मा'लूम हुवा कि आख़िरत में अपने आ'माल काम आएंगे और अगर अ़क़ीदा ख़राब हो तो किसी को दूसरे के अ़मल से फ़ाएदा न होगा।

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِیْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिकों से न थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अहले किताब ने कहा : यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा जाओगे। तुम फ़रमाओ : (हरगिज़ नहीं) बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन इख़्तियार करते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और वोह मुश्रिकों में से न थे।

﴿كُوْنُوْا : **हो जाओ।**﴾ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत मदीने के यहूदी सरदारों और नजरान के ईसाइयों के जवाब में नाज़िल हुई। यहूदियों ने तो मुसल्मानों से येह कहा था कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़ल हैं और तौरैत तमाम किताबों से अफ़्ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अद्यान से आ'ला है, इस के साथ उन्हों ने हज़रत सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इन्जील शरीफ़ और क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र कर के मुसल्मानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ इसी त़रह़ नसरानियों ने भी अपने ही दीन को ह़क़ बता कर मुसल्मानों से नसरानी होने को कहा था इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

﴿بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ : **बल्कि इब्राहीम का दीन।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप यहूदियों और ईसाइयों को जवाब दे दें कि जब किसी की पैरवी ज़रूरी है तो हम हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दीन की पैरवी करते हैं जो कि तमाम फ़ज़ाइल का जामेअ़ है और हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हर बातिल से जुदा थे और वोह मुश्रिकों में से न थे। इस में इशारतन यहूदियों, ईसाइयों और उन तमाम लोगों का रद कर दिया गया जो मुश्रिक होने के बा वुजूद मिल्लते इब्राहीमी की पैरवी का दा'वा करते थे कि येह लोग अपने आप को इब्राहीमी

1 ......روح المعانی، البقرة، تحت الآیة: ۱۳۵، ۱/۵۳۵-۵۳۶.

www.dawateislami.net

भी कहते हैं और शिर्क भी करते हैं हा़लां कि इब्राहीमी वोह है जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन पर हो और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुश्रिक न थे जब कि तुम मुश्रिक हो तो इब्राहीमी कैसे हो गए।(1)

इस से दो मस्अले मा'लूम हुए, **एक** येह कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को रब तआ़ला ने वोह मक्बूलिय्यते आ़म्मा बख़्शी है कि हर दीन वाला इन की निस्बत पर फ़ख्र करता है। **दूसरा** येह कि सिर्फ़ बड़ों की औलाद होना काफ़ी नहीं जब तक बड़ों के से काम न करे।

قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ وَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى وَ عِیْسٰى وَ مَاۤ اُوْتِیَ النَّبِیُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْۚ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ٘ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ(۱۳۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : यूं कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब और इन की औलाद पर और जो अ़त़ा किये गए मूसा व ईसा और जो अ़त़ा किये गए बाक़ी अम्बिया अपने रब के पास से हम इन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम **अल्लाह** के हु़ज़ूर गरदन रखे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ मुसल्मानो !) तुम कहो ! हम **अल्लाह** पर और जो हमारी त़रफ़ नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उस पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन की औलाद की त़रफ़ नाज़िल किया गया और मूसा और ईसा को दिया गया और जो बाक़ी अम्बिया को उन के रब की त़रफ़ से अ़त़ा किया गया। हम ईमान लाने में इन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते और हम **अल्लाह** के हु़ज़ूर गरदन रखे हुए हैं।

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۳۵، ۱/۹۴، ملخصاً.

www.dawateislami.net

قُوْلُوْا : तुम कहो । यहां अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातें याद रखें :

(1)...... तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और तमाम किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी है, जो किसी एक नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام या एक किताब का भी इन्कार करे वोह काफ़िर है, अलबत्ता अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'दाद मुक़र्रर न की जाए क्यूं कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'दाद किसी क़त्ई दलील से साबित नहीं ।

(2)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरजों में फ़र्क़ है जैसा कि तीसरे पारे के शुरूअ़ में है मगर इन की नुबुव्वत में फ़र्क़ नहीं ।

(3)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में फ़र्क़ करने से मन्अ़ किया गया है वोह इस त़रह़ है कि बा'ज़ नबियों को मानें और बा'ज़ का इन्कार करें ।

(4)...... येह भी मा'लूम हुवा कि सारे नबी नुबुव्वत में यक्सां हैं, कोई आ़रिज़ी, ज़िल्ली या बरौज़ी नबी नहीं जैसे क़ादियानी कहते हैं बल्कि सब अस्ली नबी हैं ।

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में हैं तो ऐ मह़बूब अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है सुनता जानता ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर वोह भी यूंही ईमान ले आएं जैसा तुम ईमान लाए हो जब तो वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह सिर्फ़ मुख़ालफ़त में पड़े हुए हैं । तो ऐ ह़बीब ! अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें काफ़ी होगा और वोही सुनने वाला जानने वाला है ।

بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ : तुम्हारे ईमान की त़रह़ । यहूदियों को सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم की

www.dawateislami.net

तरह ईमान लाने का फ़रमाया, इस से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का ईमान बारगाहे इलाही में मो'तबर और दूसरों के लिये मिसाल है।

﴿ فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ : **तो अन्क़रीब अल्लाह तुम्हें उन की तरफ़ से किफ़ायत फ़रमाएगा।**﴾ येह **अल्लाह** तआला की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वोह अपने हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़लबा अता फ़रमाएगा और इस में ग़ैबी ख़बर भी है कि आयिन्दा हासिल होने वाली फ़ुतूहात का पहले से इज़्हार फ़रमाया। चुनान्चे **अल्लाह** तआला का येह ज़िम्मा पूरा हुवा और येह ग़ैबी ख़बर सादिक़ हो कर रही, कुफ़्फ़ार के हसद व दुश्मनी और उन की मक्कारियों से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई ज़रर न पहुंचा। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़त्ह नसीब हुई, बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए जब कि बनी नज़ीर जला वतन किये गए और यहूदो नसारा पर जिज़्या मुक़र्रर हुवा।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّ نَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने **अल्लाह** की रेनी ली और **अल्लाह** से बेहतर किस की रेनी और हम उसी को पूजते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम ने **अल्लाह** का रंग अपने ऊपर चढ़ा लिया और **अल्लाह** के रंग से बेहतर किस का रंग है ? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं।

﴿ صِبْغَةَ اللّٰهِ : **अल्लाह का रंग।**﴾ जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिरो बातिन में सरायत कर जाता है इस तरह **अल्लाह** तआला के दीन के सच्चे अक़ाइद हमारे रगो पै में समा गए हैं, हमारा ज़ाहिरो बातिन उस के रंग में रंग गया है। हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह नुफ़ूस को पाक करता है। ज़ाहिर में इस के आसार हमारे आ'माल से नुमूदार होते हैं। ईसाइयों का तरीक़ा था कि जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को ग़ोता देते और कहते कि अब येह सच्चा ईसाई हो गया। इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِی اللّٰهِ وَ هُوَ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ۚ وَ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ

www.dawateislami.net

اَعۡمَالُكُمۡۚ وَنَحۡنُ لَهٗ مُخۡلِصُوۡنَ ﴿۱۳۹﴾ۙ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के बारे में हम से झगड़ते हो ह़ालां कि वोह हमारा भी मालिक और तुम्हारा भी और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : क्या तुम **अल्लाह** के बारे में हम से झगड़ते हो ह़ालां कि वोह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी और हमारे आ'माल हमारे लिये हैं और तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये हैं और हम ख़ालिस उसी के हैं।

﴿اَتُحَآجُّوۡنَنَا : **क्या तुम हम से झगड़ते हो।**﴾ यहूदियों ने मुसल्मानों से कहा कि हम पहली किताब वाले हैं, हमारा क़िब्ला पुराना है, हमारा दीन क़दीम है, अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हम में से हुए हैं लिहाज़ा अगर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबी होते तो हम में से ही होते। इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई,(1) और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए उन से फ़रमाया गया कि हमारा और तुम्हारा सब का रब **अल्लाह** तआ़ला है, उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अ़रब में से हो या दूसरों में से।

﴿وَنَحۡنُ لَهٗ مُخۡلِصُوۡنَ : **और हम ख़ालिस उसी के हैं।**﴾ या'नी हम किसी दूसरे को **अल्लाह** तआ़ला के साथ शरीक नहीं करते और इ़बादत व त़ाअ़त ख़ालिस उसी के लिये करते हैं तो इ़ज़्ज़त के मुस्तह़िक़ हैं। नीज़ ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला का वोही होता है जो उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हो जाए और जो रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हो गया वोह **अल्लाह** तआ़ला का हो गया। रब तआ़ला फ़रमाता है :

مَنۡ يُّطِعِ الرَّسُوۡلَ فَقَدۡ اَطَاعَ اللّٰهَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की।

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं :

---

1 ......خازن،البقرة،تحت الآية:۱۳۹، ۱/۹۶، روح المعانی،البقرة،تحت الآية:۱۳۹، ۱/۵۴۲،ملتقطاً.

2 ......النساء: ۸۰.

www.dawateislami.net

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰىؕ-قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُؕ-وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِؕ-وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ(۱۴۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि तुम तो यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'कूब और इन के बेटे यहूदी या नसरानी थे, तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़ियादा है या **अल्लाह** को और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस के पास **अल्लाह** की त़रफ़ की गवाही हो और वोह उसे छुपाए और ख़ुदा तुम्हारे कौतकों से बे ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ अहले किताब !) क्या तुम येह कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन की औलाद यहूदी या नसरानी थे। तुम फ़रमाओ : क्या तुम ज़ियादा जानते हो या **अल्लाह** ? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस के पास **अल्लाह** की त़रफ़ से कोई गवाही हो और वोह उसे छुपाए और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

﴿اَمْ تَقُوْلُوْنَ : **क्या तुम कहते हो।**﴾ यहूदी कहते थे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام यहूदी थे और ईसाई कहते थे कि ईसाई थे उन की तरदीद में येह आयत उतरी कि यहूदिय्यत व ईसाइय्यत तो उन के बा'द दुन्या में आई वोह कैसे इस दीन पर हुए ?

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ : **और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ?**﴾ **अल्लाह** तआ़ला की गवाही को छुपाने वाला बड़ा ज़ालिम है और येह यहूदियों का ह़ाल है जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की शहादतें छुपाईं जो तौरैत शरीफ़ में मज़्कूर थीं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के नबी हैं और उन के येह औसाफ़ हैं और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुसल्मान हैं और दीने मक़्बूल इस्लाम है न कि यहूदिय्यत व नसरानिय्यत। अब भी बहुत से लोग हैं जो क़ुरआन पढ़ते

www.dawateislami.net

हैं लेकिन हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान की आयतों को छुपाते हैं, और उन्हें अ़वाम के सामने बयान नहीं करते।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْــٴَـلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह एक गुरौह है कि गुज़र गया उन के लिये उन की कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह एक उम्मत है जो गुज़र चुकी है। उन के आ'माल उन के लिये हैं और तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये हैं और तुम से उन के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा।

﴿تِلْكَ اُمَّةٌ : **वोह एक उम्मत है।**﴾ इस आयत में यहूदियों को एक बार फिर तम्बीह की गई कि तुम अपने अस्लाफ़ की फ़ज़ीलत पर भरोसा न करो क्यूं कि हर एक से उसी के आ'माल की पूछगछ की जाएगी।[1]

इस में उन मुसल्मानों के लिये भी नसीहत है जो अपने मां बाप या पीरो मुर्शिद वग़ैरा के नेक आ'माल पर भरोसा कर के ख़ुद नेकियों से दूर और गुनाहों में मसरूफ़ हैं।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٤١، ١/٩٦.

www.dawateislami.net

سَيَقُولُ

2

पारह नम्बर......2

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अब कहेंगे बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसल्मानों को इन के उस क़िब्ले से जिस पर थे ? तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम सब **अल्लाह** ही का है, जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अब बे वुक़ूफ़ लोग कहेंगे, इन मुसल्मानों को इन के उस क़िब्ले से किस ने फेर दिया जिस पर येह पहले थे ? तुम फ़रमा दो : मशरिक़ो मग़रिब सब **अल्लाह** ही का है, वोह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की त़रफ़ हिदायत देता है।

﴾سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ : **अब बे वुक़ूफ़ लोग कहेंगे।**﴿ इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में मुफ़स्सिरीन का **एक क़ौल** येह है कि येह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई कि जब बैतुल मुक़द्दस की जगह ख़ानए का'बा को क़िब्ला बनाया गया तो इस पर उन्हों ने ए'तिराज़ किया क्यूं कि येह तब्दीली उन्हें ना गवार थी। **दूसरा क़ौल** येह है कि येह आयत मक्का के मुश्रिकीन के बारे में नाज़िल हुई कि जब क़िब्ला तब्दील हुवा तो उन्हों ने आपस में कहा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपने दीन के बारे में तरद्दुद का शिकार हैं और अभी तक उन के दिल में अपनी विलादत गाह या'नी मक्कए मुकर्रमा का इश्तियाक़ मौजूद है, लिहाज़ा जब उन्हों ने तुम्हारे शहर की त़रफ़ तवज्जोह कर ली है तो हो सकता है कि वोह तुम्हारे दीन की त़रफ़ भी लौट आएं। **तीसरा क़ौल** येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में नाज़िल हुई क्यूं कि उन्हों ने इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते हुए क़िब्ले की तब्दीली पर ए'तिराज़ किया था। **चौथा क़ौल** येह है कि येह आयत मुश्रिकीन, मुनाफ़िक़ीन और यहूदी तीनों के बारे में हो सकती है क्यूं कि क़िब्ले की तब्दीली पर त़ा'नो तश्नीअ़ करने में सब शरीक थे।(1)

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٤٢، ١/٩٦.

www.dawateislami.net

इस आयते मुबारका में ग़ैब की ख़बर भी है कि पहले से फ़रमा दिया गया कि बे वुक़ूफ़ व जाहिल लोग क़िब्ले की तब्दीली पर ए'तिराज़ करेंगे, चुनान्चे वैसा ही वाक़ेअ़ हुवा कि लोगों ने इस पर ए'तिराज़ किया।

﴿اَلسُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ : **बे वुक़ूफ़ लोग।**﴾ क़िब्ले की तब्दीली पर ए'तिराज़ करने वालों को बे वुक़ूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह एक वाज़ेह़ बात पर ए'तिराज़ कर रहे थे क्यूं कि साबिक़ा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस में आप का लक़ब "ज़ुल क़िब्लतैन" या'नी दो क़िब्लों वाला होना भी ज़िक्र फ़रमाया था और क़िब्ले की तब्दीली तो इस बात की दलील थी कि येह वोही नबी हैं जिन की पहले अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़बर देते आए हैं तो सदाक़त की दलील को तस्लीम करने की बजाए उसी पर ए'तिराज़ करना ह़माक़त है इस लिये उन्हें बे वुक़ूफ़ कहा गया, जैसे कोई धूप के रोशन होने को सूरज के तुलूअ़ होने की दलील बनाने की बजाए, तुलूअ़ न होने की दलील बनाए तो उसे बे वुक़ूफ़ के सिवा और क्या कहा जाएगा।

दीनी मसाइल पर बे जा ए'तिराज़ात करने वाले बे वुक़ूफ़ हैं

इस आयत में बैतुल मुक़द्दस के बा'द ख़ानए का'बा को क़िब्ला बनाए जाने पर ए'तिराज़ करने वालों को बे वुक़ूफ़ कहा गया, इस से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स दीनी मसाइल की ह़िक्मतें न समझ सके और उन पर बे जा ए'तिराज़ करे वोह अह़मक़ और बे वुक़ूफ़ है अगर्चे दुन्यवी कामों में वोह कितना ही चालाक हो। आज कल भी ऐसे बे वुक़ूफ़ों की कमी नहीं है चुनान्चे मौजूदा दौर में भी मुसल्मान कहला कर शराब, सूद, पर्दे, ह़या, इस्लामी निज़ामे विरासत और ह़ुदूदे इस्लाम पर ए'तिराज़ात करने वाले लोग मौजूद हैं और ऐसे अफ़राद क़ुरआने मजीद के ह़ुक्म के मुताबिक़ बे वुक़ूफ़ हैं।

﴿مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا عَلَیْهَا : **इन मुसल्मानों को इन के उस क़िब्ले से किस ने फेर दिया जिस पर येह पहले थे ?**﴾ **क़िब्ला** उस जिहत को कहते हैं जिस की त़रफ़ इन्सान मुंह करता है और चूंकि मुसल्मानों को ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ अदा करने का ह़ुक्म दिया गया है इस लिये ख़ानए का'बा मुसल्मानों का क़िब्ला है।

ख़ानए का'बा और बैतुल मुक़द्दस किन ज़मानों में क़िब्ला बने

याद रहे कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तक

www.dawateislami.net

का'बा ही क़िब्ला रहा, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तक बैतुल मुक़द्दस क़िब्ला रहा और मुसल्मान भी मदीनए मुनव्वरह में आने के बा'द तक़रीबन सोलह, सतरह माह तक बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते रहे और इस के बा'द नमाज़े ज़ोहर की अदाएगी के दौरान मस्जिदे क़िब्लतैन में क़िब्ले की तब्दीली का वाक़िआ़ हुवा। नीज़ येह भी याद रहे कि ह़ज हमेशा का'बे ही का हुवा है, बैतुल मुक़द्दस का ह़ज कभी नहीं हुवा।

﴿قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ﴾ : **तुम फ़रमा दो ! मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह ही का है।** क़िब्ले पर ए'तिराज़ करने वाले तमाम लोगों को एक ही जवाब दिया कि उन्हें कह दो : मशरिक़ो मग़रिब सब **अल्लाह** तआ़ला का है, उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाए, किसी को ए'तिराज का क्या ह़क़ है ? बन्दे का काम फ़रमां बरदारी करना है। गोया फ़रमाया कि ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप फ़रमा दो : हम मशरिक़ो मग़रिब के पुजारी नहीं कि सम्तों पर अड़े रहें बल्कि हम तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने वाले हैं, वोह जिधर मुंह करने का हमें हुक्म फ़रमाए हम उधर ही मुंह कर के नमाज़ पढ़ते हैं और पढ़ते रहेंगे।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ كُنْتَ عَلَيْهَاۤ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर गवाह हो और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह और ऐ मह़बूब तुम पहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की और **अल्लाह** की शान नहीं कि तुम्हारा ईमान अकारत करे, बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत

www.dawateislami.net

मेह्रबान, मेह्र वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इसी त़रह़ हम ने तुम्हें बेहतरीन उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और येह रसूल तुम्हारे निगह्बान व गवाह हों और ऐ ह़बीब ! तुम पहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है और बेशक वोह लोग जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत दी थी उन के इ़लावा (लोगों) पर येह बहुत भारी थी और **अल्लाह** की येह शान नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाएअ़ कर दे बेशक **अल्लाह** लोगों पर बहुत मेह्रबान, रह़म वाला है।

﴿وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا﴾ : **और इसी त़रह़ हम ने तुम्हें बेहतरीन उम्मत बनाया।** या'नी ऐ मुसल्मानो ! जिस त़रह़ हम ने तुम्हें हिदायत दी और ख़ानए का'बा को तुम्हारा क़िब्ला बनाया इसी त़रह़ हम ने तुम्हें बेहतरीन उम्मत बनाया। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत ज़माने के लिह़ाज़ से सब से पीछे है और मर्तबे के लिह़ाज़ से सब से आगे या'नी अफ़्ज़ल है। अफ़्ज़ल के लिये यहां "वस्त़" का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया गया है और अ़रबी में "बेहतरीन" के लिये भी "वस्त़" का लफ़्ज़ इस्ति'माल होता है।

﴿لِتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ﴾ : **ताकि तुम गवाह हो जाओ।** मुसल्मान दुन्या व आख़िरत में गवाह हैं, दुन्या में तो इस त़रह़ कि मुसल्मान की गवाही मोमिन व काफ़िर सब के बारे में शर्अ़न मो'तबर है और काफ़िर की गवाही मुसल्मान के ख़िलाफ़ मो'तबर नहीं। नीज़ **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से मुर्दों के ह़क़ में भी इस उम्मत की गवाही मो'तबर है और रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो उन्हों ने उस की ता'रीफ़ की। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वाजिब हो गई।" फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने उस की बुराई बयान की। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वाजिब हो गई।" ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क्या चीज़ वाजिब हो गई ? इर्शाद फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की, उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई और दूसरे की तुम ने बुराई बयान की, उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। तुम ज़मीन में **अल्लाह** तआ़ला के गवाह हो।(1)

और आख़िरत में इस उम्मत की गवाही येह है कि जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन

1 ......بخاری، کتاب الجنائز، باب ثناء الناس علی المیت، ١/٤٦٠، الحدیث: ١٣٦٧.

www.dawateislami.net

जम्अ़ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि क्या तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से डराने और अह़काम पहुंचाने वाले नहीं आए ? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कि कोई नहीं आया। ह़ज़राते अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेंगे कि येह झूटे हैं, हम ने इन्हें तब्लीग़ की है। इस बात पर अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से काफ़िरों पर हुज्जत क़ाइम करने के लिये दलील त़लब की जाएगी, वोह अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह हमारी गवाह है। चुनान्चे येह उम्मत पैग़म्बरों के ह़क़ में गवाही देगी कि इन ह़ज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई। इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे, उम्मते मुह़म्मदिय्यह को क्या मा'लूम ? येह तो हम से बा'द में आए थे। चुनान्चे उम्मते मुह़म्मदिय्यह से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा कि "तुम कैसे जानते हो ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे, या रब ! عَزَّوَجَلَّ, तू ने हमारी त़रफ़ अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा, क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए़ से हम क़त़्ई़ व यक़ीनी त़ौर पर जानते हैं कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कामिल त़रीक़े से फ़र्ज़े तब्लीग़ अदा किया, फिर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आप की उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे।[1]

ज़बान की एह़तियात़ न करने का नुक़्सान

यहां येह बात याद रहे कि येह तमाम गवाहियां उम्मत के सालिह़ीन और अहले सिद्क़ ह़ज़रात के साथ ख़ास हैं और उन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाश्त शर्त़ है, जो लोग ज़बान की एह़तियात़ नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शर्अ़ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाह़क़ ला'नत करते हैं सह़ीह़ ह़दीसों के मुत़ाबिक़ रोज़े क़ियामत न वोह शफ़ाअ़त करेंगे और न वोह गवाह होंगे।[2]

﴿وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا : **रसूल तुम पर गवाह होंगे।**﴾ अ़ल्लामा इस्माई़ल ह़क़्क़ी رَحۡمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : "हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही येह है कि आप हर एक के दीनी रुत्बे और उस के दीन की ह़क़ीक़त पर मुत्तलअ़ हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस चीज़ से वाक़िफ़ हैं जो किसी का दीनी रुत्बा बढ़ने में रुकावट है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों के गुनाह मा'लूम हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के ईमान की ह़क़ीक़त, आ'माल,

1 ......بغوی، البقرة، تحت الآية: ۱۴۳، ۱/ ۳۸.

2 ......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب النهى عن لعن الدواب وغيرها، ص ۱۴۰۰، الحديث: ۸۵ (۲۰۹۸).

www.dawateislami.net

नेकियां, बुराइयां, इख़्लास और निफ़ाक़ वग़ैरा को नूरे ह़क़ से जानते हैं।''(1)

ऐसा ही कलाम शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तफ़्सीर **''फ़त्हुल अ़ज़ीज़''** में भी ज़िक्र फ़रमाया है।

याद रहे कि हर नबी عَلَيْهِ السَّلَام को उन की उम्मत के आ'माल पर मुत्तलअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़ियामत उन पर गवाही दे सकें और चूंकि हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहादत सब उम्मतों को आ़म होगी इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम उम्मतों के अह़्वाल पर मुत्तलअ़ हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही क़त़्ई व ह़त्मी है

येह बात ह़क़ीक़त है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही क़त़्ई व ह़त्मी है। हमारे पास क़ुरआन के कलामे इलाही होने की सब से बड़ी दलील हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही है और जैसे येह गवाही क़त़्ई त़ौर पर मक़्बूल है इसी त़रह़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही दुन्या में अपनी उम्मत के ह़क़ में मक़्बूल है, लिहाज़ा हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ज़माने के ह़ाज़िरीन के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया मसलन : सह़ाबए किराम, अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अहले बैते किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के फ़ज़ाइलो मनाक़िब या ग़ैर मौजूद लोगों जैसे ह़ज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه या बा'द वालों के लिये जैसे ह़ज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरा के लिये जो कुछ फ़रमाया उन सब को तस्लीम करना लाज़िम है।

﴾لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ : **ताकि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है।**﴿ क़िब्ले की तब्दीली की एक येह ह़िक्मत इर्शाद हुई कि इस से मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाएगा कि कौन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म पर क़िब्ला तब्दील करता है और कौन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी करता है। चुनान्चे क़िब्ले की तब्दीली पर बहुत से कमज़ोर ईमान वाले इस्लाम से फिर गए, मुनाफ़िक़ीन ने इस्लाम पर ए'तिराज़ शुरूअ़ कर दिये जब कि पुख़्ता ईमान वाले इस्लाम पर क़ाइम रहे।(2)

﴾وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً : **अगर्चे तब्दीली बड़ी गिरां है।**﴿ क़िब्ले की तब्दीली को कामिलुल ईमान लोगों ने तो बड़ी ख़ुशदिली से क़बूल किया लेकिन मुनाफ़िक़ों पर येह तब्दीली बड़ी गिरां गुज़री।

1 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ١٤٣، ٢٤٨/١.

2 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ١٤٣، ٩٠/٢.

www.dawateislami.net

मुनाफ़क़त की अ़लामत

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म मा'लूम होने के बा'द क़बूल करने से दिल में तंगी महसूस करना मुनाफ़क़त की अ़लामत है। हमारे मुआ़शरे में भी लोगों की एक ता'दाद ऐसी है जिन में येह मरज़ बड़ी शिद्दत इख़्तियार किये हुए है और इसी मरज़ की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम पर अ़मल करना उन के लिये बहुत दुश्वार हो चुका है ह़ालां कि कामिल मुसल्मान की शान तो येह है कि जब उसे **अल्लाह** तआ़ला का कोई हुक्म मा'लूम हो जाए तो वोह उस के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दे और अपने नफ़्स से उठने वाली वोह आवाज़ वहीं दबा दे जो **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करने के मुआ़मले में उसे रोक रही हो या उस के दिल में तंगी पैदा कर रही हो। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को हिदायत अ़ता फ़रमाए।

﴿وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ﴾ : **और अल्लाह की येह शान नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाएअ़ कर दे।** क़िब्ले की तब्दीली यहूदियों को हज़्म नहीं हो रही थी और येह त़रह़ त़रह़ से मुसल्मानों को इस के ख़िलाफ़ भड़काने की कोशिशें कर रहे थे, चुनान्चे कुछ यहूदियों ने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के पढ़ी गई नमाज़ों के बारे में मुसल्मानों के सामने चन्द ए'तिराज़ात किये और बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने वफ़ात पाई उन की नमाज़ों के दरुस्त होने पर मुसल्मानों से दलील मांगी तो उन के रिश्तेदारों ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उन की नमाज़ों का हुक्म दरयाफ़्त किया कि वोह नमाज़ें हुई या नहीं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन्हें इत़्मीनान दिलाया गया कि उन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم की नमाज़ें ज़ाएअ़ नहीं हुईं, उन पर उन्हें सवाब मिलेगा। याद रहे कि इस आयते मुबारका में ईमान से मुराद नमाज़ है।(1)

अस्लुल उसूल चीज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी है

क़िब्ले की तब्दीली से पहले मुसल्मानों ने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के जितनी नमाज़ें पढ़ी थीं उन्हें सह़ीह़ क़रार दिया गया, क्यूं कि बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के जो नमाज़ें पढ़ी गईं वोह भी इत्तिबाए़ रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ही थीं और अब जो ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के पढ़ते हैं येह भी इत़ाअ़ते रसूल में पढ़ते हैं लिहाज़ा इन सब की नमाज़ें दुरुस्त हैं। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٤٣، ٩٨/١، ملخصاً.

www.dawateislami.net

पढ़ें और कोई उस वक़्त ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े वोह भी मरदूद है और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ें और कोई उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के पढ़े वोह भी मरदूद है कि अस्लुल उसूल चीज़ तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ है। इसी को फ़रमाया :

لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ताकि देखें कि कौन रसूल की पैरवी करता है।

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं   अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

नमाज़ की अहम्मिय्यत

इस आयत से मा'लूम हुवा कि नमाज़ की बहुत अहम्मिय्यत है कि क़ुरआन में इसे ईमान फ़रमाया गया है क्यूं कि इसे अदा करना और बा जमाअ़त पढ़ना कामिल ईमान की दलील है। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कुफ़्र और ईमान के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ का छोड़ना है।"(1)

ह़ज़रते बुरीदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हमारे और उन (काफ़िरों) के दरमियान अ़ह्द नमाज़ ही है, जिस ने इसे छोड़ा तो उस ने कुफ़्र किया।"(2)

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस्लाम की निशानी नमाज़ है, तो जिस ने नमाज़ के लिये दिल को फ़ारिग़ किया और नमाज़ के तमाम अरकान व शराइत़, इस के वक़्त और इस की सुन्नतों के साथ इस पर मुदावमत की तो वोह (कामिल) मोमिन है।"(3)

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪

1 ......ترمذی، کتاب الایمان، باب ما جاء فی ترک الصلاۃ، ٢٨١/٤، الحدیث: ٢٦٢٧.

2 ......ترمذی، کتاب الایمان، باب ما جاء فی ترک الصلاۃ، ٢٨١/٤، الحدیث: ٢٦٣٠.

3 ......کنز العمال، حرف الصاد، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الفصل الاول، ١١٣/٤، الجزء السابع، الحدیث: ١٨٨٦٦.

www.dawateislami.net

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो और वोह जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है और **अल्लाह** उन के कौतकों से बे ख़बर नहीं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम तुम्हारे चेहरे का आस्मान की त़रफ़ बार बार उठना देख रहे हैं तो ज़रूर हम तुम्हें उस क़िब्ले की त़रफ़ फेर देंगे जिस में तुम्हारी ख़ुशी है तो अभी अपना चेहरा मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ फेर दो और ऐ मुसल्मानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ कर लो और बेशक वोह लोग जिन्हें किताब अ़त़ा की गई है वोह ज़रूर जानते हैं कि येह तब्दीली उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है और **अल्लाह** उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं ।

﴾ **قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ : बेशक हम तुम्हारे चेहरे का आस्मान की त़रफ़ बार बार उठना देख रहे हैं ।**﴿ जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह में तशरीफ़ लाए तो उन्हें बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया गया और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म की पैरवी करते हुए उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ें अदा करना शुरूअ़ कर दीं । अलबत्ता हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़्हर की ख़्वाहिश येह थी कि ख़ानए का'बा को मुसल्मानों का क़िब्ला बना दिया जाए, इस की वज्ह येह नहीं थी कि बैतुल मुक़द्दस को क़िब्ला बनाया जाना हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ना पसन्द था बल्कि इस की एक वज्ह येह थी कि ख़ानए का'बा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन के इ़लावा कसीर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क़िब्ला था और एक वज्ह येह थी कि बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर नमाज़ पढ़ने की वज्ह से यहूदी फ़ख़्रो ग़ुरूर में मुब्तला

www.dawateislami.net

हो गए और यूं कहने लगे थे कि मुसल्मान हमारे दीन की मुख़ालफ़त करते हैं लेकिन नमाज़ हमारे क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के पढ़ते हैं। चुनान्चे एक दिन नमाज़ की ह़ालत में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस उम्मीद में बार बार आस्मान की त़रफ़ देख रहे थे कि क़िब्ले की तब्दीली का हु़क्म आ जाए, इस पर नमाज़ के दौरान येह आयते करीमा नाज़िल हुई जिस में हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा को रिज़ाए इलाही क़रार देते हुए और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के ह़सीन अन्दाज़ को क़ुरआन में बयान करते हुए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश और ख़ुशी के मुत़ाबिक़ ख़ानए का'बा को क़िब्ला बना दिया गया। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ ही में ख़ानए का'बा की त़रफ़ फिर गए, मुसल्मानों ने भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ उसी त़रफ़ रुख़ किया और ज़ोहर की दो रक्अ़तें बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ हुईं और दो रक्अ़तें ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के अदा की गईं।

ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद

इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला को अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा बहुत पसन्द है और **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा को पूरा फ़रमाता है। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वज्ह से क़िब्ला तब्दील फ़रमाया और इस आयत में यूं नहीं फ़रमाया कि हम तुम्हें उस क़िब्ले की त़रफ़ फेर देंगे जिस में मेरी रिज़ा है बल्कि यूं इर्शाद फ़रमाया :

فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ज़रूर हम तुम्हें उस क़िब्ले की त़रफ़ फेर देंगे जिस में तुम्हारी ख़ुशी है।

तो गोया कि इर्शाद फ़रमाया : ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हर कोई मेरी रिज़ा का त़लब गार है और मैं दोनों जहां में तेरी रिज़ा चाहता हूं।(1)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बिला शुब्हा हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी के ताबेअ़ हैं और बिला शुब्हा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई बात **अल्लाह** तआ़ला के हु़क्म के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाते और बिला

1 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ١٤٣، ٨٢/٢.

www.dawateislami.net

शुब्हा **अल्लाह** तआला हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा चाहता है। (जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो) **अल्लाह** तआला का हुक्म येह था कि बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ी जाए, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताबेए़ फ़रमान थे और येह हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से **अल्लाह** तआला की रिज़ाजोई थी मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ल्बे अक्दस येह चाहता था कि का'बे की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ी जाए, **अल्लाह** तआला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़िये मुबारक के लिये अपना वोह हुक्म मन्सूख़ फ़रमा दिया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो चाहते थे क़ियामत तक के लिये वोही क़िब्ला मुक़र्रर फ़रमा दिया, येह **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाजोई है, इन में से जिस का इन्कार होगा तो वोह क़ुरआने अ़ज़ीम का इन्कार है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ करती हैं **''مَا اُرٰی رَبَّکَ اِلَّا یُسَارِعُ فِیْ هَوَاکَ''** में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ को देखती हूं कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश पूरी करने में जल्दी फ़रमाता है।(1)

ह़दीसे रोज़े मह़शर में है, रब عَزَّوَجَلَّ अव्वलीनो आख़िरीन को जम्अ़ कर के हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाएगा : **''كُلُّهُمْ يَطْلُبُوْنَ رِضَائِیْ وَ اَنَا اَطْلُبُ رِضَاکَ يَا مُحَمَّدُ''** येह सब मेरी रिज़ा चाहते हैं और ऐ मह़बूब ! मैं तुम्हारी रिज़ा चाहता हूं।''(2)

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम — ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद

नीज़ जिस त़रह़ **अल्लाह** तआला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये ता क़ियामत का'बे को मुसल्मानों का क़िब्ला बना दिया, इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये आप की उम्मत पर पचास नमाज़ों को कम कर के पांच फ़र्ज़ की गईं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये बद्र व हुनैन में फ़िरिश्ते उतरे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये मे'राज की सैर कराई गई। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये उम्मतियों के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ौज़े कौसर अ़त़ा हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी के लिये

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب ترجی من تشاء منهن... الخ، ٣/ ٣٠٣، الحدیث: ٤٧٨٨.

2...... फ़तावा रज़विय्या, 14/275, 276, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

उम्मतियों की नेकियों के पलड़े भारी होंगे, पुल सिरात् से सलामती से गुज़रेंगे और जन्नत में दाखि़ल होंगे। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَسَوۡفَ يُعۡطِيكَ رَبُّكَ فَتَرۡضَىٰٓ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें   कि ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा

और फ़रमाते हैं :

रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये   कि है रब्बे सल्लिम सदाए मुह़म्मद

﴿وَحَيۡثُ مَا كُنتُمۡ فَوَلُّواْ وُجُوهَكُمۡ شَطۡرَهُۥ﴾ **: और ऐ मुसल्मानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ कर लो।** ﴾ या'नी ऐ मुसल्मानो ! तुम ज़मीन के जिस ह़िस्से में भी हो और वहां नमाज़ पढ़ने लगो तो अपना मुंह ख़ानए का'बा की त़रफ़ कर लो।(2)

इस्तिक़्बाले क़िब्ला से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल

इस आयत में मुसल्मानों को क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करने का हुक्म दिया गया, इस लिये यहां नमाज़ में इस्तिक़्बाले क़िब्ला से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल ज़िक्र किये जाते हैं :

(1)...... नमाज़ में का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह करना शर्त़ है।

(2)...... जो शख़्स ऐ़न का'बे की सम्ते ख़ास मा'लूम कर सकता है, अगर्चे का'बा आड़ में हो जैसे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के मकानों में जब कि मसलन छत पर चढ़ कर का'बे को देख सकते हैं तो ऐ़न का'बे की त़रफ़ मुंह करना फ़र्ज़ है, जिहत (की त़रफ़ मुंह करना) काफ़ी नहीं और जो शख़्स ऐ़न का'बे की सम्ते ख़ास मा'लूम नहीं कर सकता अगर्चे वोह ख़ास मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हो उस के लिये का'बे की जिहत की त़रफ़ मुंह करना काफ़ी है।

(3)...... का'बे की जिहत की त़रफ़ मुंह होने का मा'ना येह है कि मुंह की सत़ह़ का कोई जुज़ का'बे की सम्त में वाक़ेअ़ हो।

---

1 ......الضحى:٥.

2 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٤٤، ص ٨٤.

www.dawateislami.net

(4)...... अगर किसी शख़्स को किसी जगह क़िब्ले की शनाख़्त न हो, न कोई ऐसा मुसल्मान हो जो बता दे, न वहां मस्जिदें मेह़राबें हैं, न चांद, सूरज, सितारे निकले हों या निकले तो हों मगर उस को इतना इल्म नहीं कि उन से क़िब्ले की सम्त मा'लूम कर सके, तो ऐसे के लिये हुक्म है कि वोह सोचे और जिधर क़िब्ला होना दिल पर जमे उधर ही मुंह करे, उस के ह़क़ में वोही क़िब्ला है।[1]

मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के तीसरे हिस्से का मुत़ालआ़ करें।

﴾لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ﴿ **: वोह ज़रूर जानते हैं कि येह तब्दीली उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है।** या'नी क़िब्ले की इस तब्दीली के बारे में अहले किताब जानते हैं कि येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ह़क़ है क्यूं कि उन की किताबों में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ के सिल्सिले में येह भी मज़्कूर था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैतुल मुक़द्दस से का'बे की त़रफ़ फिरेंगे और उन के अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बिशारतों के साथ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह निशानी बताई थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैतुल मुक़द्दस और का'बा दोनों क़िब्लों की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ेंगे।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले कर आओ वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करेंगे और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चला बा'द इस के कि तुझे इल्म मिल चुका तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार होगा।

1...... बहारे शरीअ़त, नमाज़ की शर्तों का बयान, 1/487, 489

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले आओ तो भी वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करेंगे और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं हैं और (ऐ सुनने वाले !) अगर तेरे पास इ़ल्म आ जाने के बा'द तू उन की ख़्वाहिशों पर चला तो उस वक़्त तू ज़रूर ज़ियादती करने वाला होगा ।

﴿وَلَىِٕنْ اَتَیْتَ : **और अगर तुम ले आओ ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जिन अहले किताब के दिलों में इ़नाद और सरकशी है, आप उन के पास क़िब्ले की तब्दीली के मुआ़मले में अपनी सच्चाई पर दलालत करने वाली हर निशानी ले आएं तो भी वोह आप के क़िब्ले की पैरवी नहीं करेंगे क्यूं कि उन का आप की पैरवी न करना किसी शुब्हे की वज्ह से नहीं जिसे दलील बयान कर के ज़ाइल किया जा सके बल्कि वोह आप से इ़नाद रखने और ह़सद करने की वज्ह से ऐसा कर रहे हैं ह़ालां कि वोह अपनी किताबों में मौजूद आप की येह शान जानते हैं कि (क़िब्ले की तब्दीली के मुआ़मले में) आप ह़क़ पर हैं ।(1)

ह़सद इन्सान को ह़क़ से अन्धा कर देता है

इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद बड़ी ख़बीस शै है कि इस के होते हुए आदमी ह़क़ से अन्धा हो जाता है और जिस के सीने में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कीना है वोह इस के होते हुए तो कभी मर कर भी हिदायत नहीं पा सकता, ऐसे शख़्स को क़ुरआनो ह़दीस, मो'जिज़ात और अ़क़्ली व नक़्ली दलाइल कुछ भी मुफ़ीद नहीं हो सकते क्यूं कि दिल का दरवाज़ा खुलता ही तब है जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में दिल साफ़ हो और जिस का दिल ही इस चीज़ से साफ़ न हो तो उसे हिदायत किस त़रह़ मिल सकती है ।

﴿وَمَاۤ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ : **और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो ।**﴾ इस आयत में यहूदियों के क़िब्ले की पैरवी से मन्अ़ किया गया, इस से येह भी मा'लूम हो गया कि अब क़िब्ला मन्सूख़ न होगा लिहाज़ा अहले किताब को अब येह उम्मीद नहीं रखनी चाहिये कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन में से किसी के क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करेंगे ।

﴿وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ : **और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं हैं ।**﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अहले किताब आप की मुख़ालफ़त करने में तो मुत्तफ़िक़ हैं लेकिन क़िब्ले के मुआ़मले में येह ख़ुद भी एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हैं और जिस त़रह़ उन

(1) ......روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۱/۲۵۱-۲۵۲، مدارک، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ص۸۵، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

से येह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वोह आप से मुत्तफ़िक़ हो जाएं इसी तरह उन के आपस में मुत्तफ़िक़ होने की भी कोई उम्मीद नहीं की जा सकती ।(1)

याद रहे कि यहूदो नसारा दोनों बैतुल मुक़द्दस को क़िब्ला मानते हैं मगर यहूदी सख़्रा को और ईसाई इस के मशरिक़ी मकान को क़िब्ला मानते हैं ।(2)

﴿وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ﴾ : **और अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चला ।** येह उम्मत को ख़िताब है कि ख़ानए का'बा के क़िब्ला होने के बा'द अगर किसी ने बैतुल मुक़द्दस को क़िब्ला बनाया तो वोह ज़ालिम है ।

आ़लिम का गुनाह ज़ियादा ख़तरनाक है

इस से मा'लूम हुवा कि आ़लिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़ियादा ख़तरनाक है क्यूं कि यहां बतौरे ख़ास इल्म के बा'द ना फ़रमानी पर वईद बयान की गई है । हज़रते ज़ियाद बिन हुदैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझ से हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या जानते हो कि इस्लाम को क्या चीज़ ढाती (या'नी इस्लाम की इ़ज़्ज़त लोगों के दिल से दूर करती) है ?" मैं ने कहा : नहीं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस्लाम को आ़लिम की लग़्ज़िश, मुनाफ़िक़ का क़ुरआन में झगड़ना और गुमराह कुन सरदारों की हुकूमत तबाह करेगी ।"(3)

इस ह़दीस की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जब उ़लमा आराम त़लबी की बिना पर कोताहियां शुरूअ़ कर दें, मसाइल की तह़क़ीक़ में कोशिश न करें और ग़लत़ मस्अले बयान करें, बे दीन उ़लमा की शक्ल में नुमूदार हो जाएं, बिद्अ़तों को सुन्नतें क़रार दें, क़ुरआने करीम को अपनी राय के मुत़ाबिक़ बनाएं और गुमराह लोगों के ह़ाकिम बनें और लोगों को अपनी इत़ाअ़त पर मजबूर करें तब इस्लाम की हैबत दिलों से निकल जाएगी जैसा कि आज हो रहा है । बा'ज़ ने फ़रमाया कि आ़लिम की लग़्ज़िश से मुराद उन का फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला हो जाना है ।"(4)

---

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٤٥، ص٨٥.

2 ...... तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), अल बक़रह, तह़तल आयह : 145, 2/861, 862

3 ......دارمی، باب فی کراهیة اخذ الرأی، ١/٨٢، الحدیث: ٢١٤.

4 ......مراٰۃ المناجیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، ۱/۲۱۱، تحت الحدیث: ۲۵۰۔

www.dawateislami.net

आ़लिम का जाहिलों की ख़ुशामद करना तबाही का बाइ़स है ?

नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि आ़लिम का जाहिलों की ख़ुशामद करना और उन का ताबेअ़ बन जाना तबाही का बाइ़स है। उ़लमा को उमरा से दूर ही रहना चाहिये ताकि उन की ख़ुशामद न करनी पड़े। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "मेरी उम्मत के कुछ लोग दीन सीखेंगे और क़ुरआन पढ़ेंगे और कहेंगे कि हम अमीरों के पास जाएंगे और उन की दुन्या ले आएंगे अलबत्ता अपना दीन बचा लेंगे लेकिन ऐसा न हो सकेगा जैसे बबूल के दरख़्त से कांटे ही चुने जाते हैं ऐसे ही अमीरों के क़ुर्ब से नुक़्सान ही होगा।"(1)

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنْهُمْ لَیَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

وقف منزل

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है और बेशक उन में एक गुरोह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई है वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे वोह अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उन में एक गुरौह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं।

﴿یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ﴾ **: वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे वोह अपने बेटों को पहचानते हैं।** मुराद येह है कि गुज़श्ता आस्मानी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ ऐसे वाज़ेह़ और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उ़लमाए अहले किताब को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ातमुल अम्बिया होने में कुछ शको शुबा बाक़ी नहीं रह सकता और वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस मन्सबे आ़ली को कामिल यक़ीन के साथ जानते हैं। यहूदी उ़लमा में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए तो ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से दरयाफ़्त

1 ......ابن ماجه، كتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، ١/١٦٦، الحديث: ٢٥٥.

www.dawateislami.net

किया कि इस आयत में जो मा'रिफ़त बयान की गई है इस का क्या मत्लब है ? उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो बिग़ैर किसी शको शुबे के फ़ौरन पहचान लिया और मेरा हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहचानना अपने बेटों को पहचानने से ज़ियादा कामिल व मुकम्मल था। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा, वोह कैसे ? उन्हों ने कहा कि सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ तो हमारी किताब तौरैत में **अल्लाह** तआ़ला ने बयान फ़रमाए हैं जब कि बेटे को बेटा समझना तो सिर्फ़ औ़रतों के कहने से है। (या'नी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पहचान तो **अल्लाह** तआ़ला ने कराई लिहाज़ा वोह तो क़त़्ई व यक़ीनी है जब कि औलाद की पहचान तो औ़रतों के कहने से होती है।) ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर उन का सर चूम लिया।[1]

इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि ग़ैरे मह़ल्ले शह्वत में दीनी मह़ब्बत से पेशानी चूमना जाइज़ है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिर्फ़ पहचान ईमान नहीं बल्कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मानना ईमान है। जैसे यहूदी पहचानते तो थे लेकिन मानते न थे इस लिये काफ़िर ही रहे।

﴿وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنْهُمْ لَیَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ﴾ : **और बेशक उन में एक गुरौह ह़क़ छुपाते हैं।** अहले किताब उ़लमा का एक गुरौह तौरैत व इन्जील में मज़्कूर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त को अपने बुग़्ज़ो ह़सद की वज्ह से जान बूझ कर छुपाता था, यहां उन्ही का बयान है। इस से मा'लूम हुवा कि ह़क़ को छुपाना मा'सियत व गुनाह है और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान को छुपाना यहूदियों का त़रीक़ा है।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿۱۴۷﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ सुनने वाले) येह ह़क़ है तेरे रब की त़रफ़ से (या ह़क़ वोही है जो तेरे रब की त़रफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ सुनने वाले !) ह़क़ वोही है जो तेरे रब की त़रफ़ से हो। पस तू हरगिज़ शक करने वालों में से न होना।

ع ۱۷

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٤٦، ١/١٠٠.

www.dawateislami.net

﴿اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ﴾ : **हक़ वोही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो ।** क़िब्ले की तब्दीली **अल्लाह** तआला की तरफ़ से है लिहाज़ा हक़ है तो इस में शक न किया जाए। यूंही **अल्लाह** तआला की तरफ़ से आने वाला हर हुक्म हक़ है अगर्चे उस की हिक्मत हमें समझ आए या न आए लेकिन हक़ वोही होगा और मुसल्मान का काम उसे मानना और उस पर अ़मल करना है, किसी भी तरह के हालात में उस में शक करने की गुन्जाइश नहीं।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ۟ اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا یَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِیْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हर एक के लिये तवज्जोह की एक सम्त है कि वोह उसी तरफ़ मुंह करता है तो येह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो **अल्लाह** तुम सब को इकठ्ठा ले आएगा बेशक **अल्लाह** जो चाहे करे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हर एक के लिये तवज्जोह की एक सम्त है जिस की तरफ़ वोह मुंह करता है तो तुम नेकियों में आगे निकल जाओ। तुम जहां कहीं भी होगे **अल्लाह** तुम सब को इकठ्ठा कर लाएगा। बेशक **अल्लाह** हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है।

﴿وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ﴾ : **और हर एक के लिये तवज्जोह की एक सम्त है।** इस आयत में तब्दीलिये क़िब्ला की एक और हिक्मत बयान की गई है कि हर उम्मत के लिये एक क़िब्ला मुक़र्रर किया गया तो जब उम्मते मुहम्मदिय्यह एक उम्मत है और सब से अफ़्ज़ल उम्मत है तो इन के ख़ुसूसी इम्तियाज़ के लिये इन का क़िब्ला दूसरों से जुदागाना बनाया गया और इस में ख़ुसूसिय्यत येह है कि इन का येह क़िब्ला हमेशा के लिये रहेगा कभी तब्दील न होगा।

﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ﴾ : **तो नेकियों में आगे निकल जाओ।** या'नी क़िब्ले का मौज़ूअ़ तै हो गया लिहाज़ा अब सिर्फ़ इसी बहस में न रहो बल्कि **अल्लाह** तआला की इबादतो इताअ़त और दीन के कामों में एक दूसरे से सब्क़त ले जाने की कोशिश करो।

www.dawateislami.net

मुक़ाबला किस चीज़ में करना चाहिये

यहां आयते मुबारका में एक बड़ी ही प्यारी बात समझाई गई है कि मालो दौलत, ओ़हदा व मन्सब, शोहरत व मक़्बूलिय्यत और दुन्यादारी ऐसी चीज़ नहीं कि इस में एक दूसरे से मुक़ाबला किया जाए बल्कि येह सब तो आज़्माइश और मह्‌ज़ दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़ीनत, धोके का सामान और फ़ना होने वाली कमाई है, जब कि बाक़ी रहने वाली और मुक़ाबले के क़ाबिल चीज़ तो **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत, उस की इत़ाअ़त, जन्नत और उस की रिज़ा है जिस की त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने बार बार बुलाया है। सहा़बए किराम رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की सीरत में नेकियों में मुक़ाबले और सब्क़त ले जाने के ब कसरत नज़ारे देखे जा सकते हैं जैसे ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए तबूक में घर का आधा माल ख़ैरात करने के लिये लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ घर का सारा सामान ले आए।[1]

सहा़बए किराम رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم में बाप बेटे में जिहाद में शिर्कत के लिये बह़स होती, हर कोई कहता कि मैं शिर्कत करूंगा तुम घर पर रहो, ह़त्ता कि मा'ज़ूर सहा़बए किराम رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी राहे ख़ुदा में शहादत के लिये बे क़रार रहते।[2]

ग़ुरबत व बे कसी की वज्ह से राहे ख़ुदा में सफ़र न कर सकने वाले रोते थे।[3]

एक सहा़बी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर आधी रात इ़बादत करता तो दूसरा पूरी रात, एक अगर तिहाई क़ुरआन की तिलावत करता तो दूसरा आधे क़ुरआन की। **अल्लाह** तआ़ला हमें भी नेकियों में एक दूसरे से सब्क़त ले जाने की तौफ़ीक़ और जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए।[4]

﴿اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا : **तुम जहां कहीं भी होगे।**﴾ या'नी ऐ मुसल्मानो और अहले किताब ! तुम जहां कहीं भी होगे, क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला तुम सब को इकठ्ठा कर लाएगा और वोह इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों को सवाब देगा और ना फ़रमानों को अ़ज़ाब में मुब्तला कर देगा। बेशक **अल्लाह** तआ़ला हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है तो वोह मख़्लूक़ को मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा करने, इत़ाअ़त गुज़ारों को सवाब देने और सज़ा के मुस्तह़िक़ अफ़राद को अ़ज़ाब देने पर

1 ......شرح الزرقانی، کتاب المغازی، ثم غزوة تبوک، ٤/٦٩.

2 ......مدارج النبوہ، کارزارھائے صحابہ در جنگ احد، الجزء الثانی، ص١٢٤.

3 ......التوبة: ٩٢.

4 ...... नेकियों का जज़्बा पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र बेहद मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

भी क़ादिर है ।[1]

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और वोह ज़रूर तुम्हारे रब की त़रफ़ से ह़क़ है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ऐ ह़बीब !) तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और बेशक येह यक़ीनन तुम्हारे रब की त़रफ़ से ह़क़ है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं ।

﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ﴾ **: और तुम जहां से आओ ।** या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप ख़्वाह किसी शह्‌र से सफ़र के लिये निकलें बहर ह़ाल नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे ह़राम (या'नी का'बे) की त़रफ़ करें, क्यूं कि जिस त़रह़ ह़ालते इक़ामत में का'बे की त़रफ़ मुंह करने का हुक्म है इसी त़रह़ सफ़र में भी येही हुक्म है और बेशक का'बे को क़िब्ला बनाया जाना ज़रूर आप के रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ह़क़ और ह़िक्मत के ऐन मुवाफ़िक़ है और ऐ मुसल्मानो ! **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे आ'माल से ग़ाफ़िल नहीं, इस लिये वोह तुम्हें इस अ़मल की बेहतरीन जज़ा देगा ।[2]

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٤٨، ١/١٠١.
2 ......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ١٤٩، ١/٢٥٤.

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब ! तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और ऐ मुसल्मानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ़ करो कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें तो उन से न डरो और मुझ से डरो और येह इस लिये है कि मैं अपनी ने'मत तुम पर पूरी करूं और किसी तरह तुम हिदायत पाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ हबीब ! तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और ऐ मुसल्मानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ़ करो ताकि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे मगर जो उन में से ना इन्साफ़ी करें तो उन से न डरो और मुझ से डरो और ताकि मैं अपनी ने'मत तुम पर मुकम्मल कर दूं और ताकि तुम हिदायत पाओ।

﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ : **और तुम जहां से आओ।**﴾ इस रुकूअ़ में तीन मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसल्मानों को मस्जिदे हराम या'नी का'बे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया गया है, इस से ब ज़ाहिर ऐसा लगता है कि येह तकरार है लेकिन दर हक़ीक़त येह तकरार नहीं क्यूं कि हर बार के हुक्म की इ़ल्लत जुदा है, **पहली बार** जब नमाज़ में मस्जिदे हराम की तरफ़ मुंह करने का हुक्म दिया गया तो उस की इ़ल्लत येह बयान हुई कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाजोई के लिये मस्जिदे हराम को क़िब्ला बनाया और नमाज़ में इस की तरफ़ मुंह करने का हुक्म दिया। **दूसरी मरतबा** जब मस्जिदे हराम की तरफ़ मुंह करने का हुक्म दिया गया तो उस की इ़ल्लत येह बयान फ़रमाई कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर उम्मत का अलग अलग क़िब्ला बनाया है जिस की तरफ़ मुंह कर के वोह नमाज़ पढ़ते हैं, और जब उम्मते मुहम्मदिय्यह भी एक उम्मत है तो इन का क़िब्ला मस्जिदे हराम को बनाया और इस की तरफ़ मुंह कर के इन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया गया। **तीसरी मरतबा** जब येह हुक्म दिया गया तो उस की येह इ़ल्लत बयान फ़रमाई कि क़िब्ले के मुआ़मले में यहूदी मुसल्मानों के ख़िलाफ़ हुज्जत क़ाइम न कर सकें।(1)

﴿وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ : **और ऐ मुसल्मानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ़ करो।**﴾ इस आयत में मज्मूई तौर पर लोगों से फ़रमा दिया गया कि तुम हालते सफ़र

1 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ١٥٠، ٢/١١٩، ملخصاً.

www.dawateislami.net

में हो या ह़ालते इक़ामत में, जंगल व बयाबान में हो या शहर में, हर जगह हर ह़ालत में और हर वक़्त तुम सब ने नमाज़ में ख़ानए का'बा ही की त़रफ़ मुंह करना है ताकि यहूदियों को इस ए'तिराज़ का ह़क़ न रहे कि उन की किताबों में तो क़िब्ले की तब्दीली का लिखा हुवा था लेकिन इस नबी ने तो ऐसा किया ही नहीं, या वोह येह ए'तिराज़ न कर सकें कि येह नबी हमारे दीन की तो मुख़ालफ़त करते हैं लेकिन क़िब्ला हमारे वाला ही मानते हैं और मुश्रिकीन को येह ए'तिराज़ करने का मौक़अ़ न मिले कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरैश की मुख़ालफ़त में ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क़िब्ला भी छोड़ दिया ह़ालां कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन की औलाद में से हैं और इन की अ़ज़्मतो बुज़ुर्गी मानते भी हैं।(1)

﴿ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ : **मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें।**﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से तो हुज्जत पूरी हो चुकी, अब भी अगर कोई ए'तिराज़ करता है तो वोह ख़ुद ज़ालिम है। याद रहे कि दीन की राह में त़ा'ने सुनना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत रही है।

﴿ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِیْ : **तो उन से न डरो और मुझ से डरो।**﴾ इस आयत में मुसल्मानों को हुक्म दिया जा रहा है कि तुम का'बे की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने की वज्ह से कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से होने वाले ए'तिराज़ात से न डरो, उन के त़ा'ने तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते और तुम मेरे हुक्म को पूरा करने के मुआ़मले में मुझ से डरो और मेरे हुक्म की मुख़ालफ़त न करो, बेशक मैं तुम्हारा मददगार हूं।(2)

अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिये

इस आयत से मा'लूम हुवा कि इन्सान को हर वक़्त **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब पेशे नज़र रखना चाहिये और किसी भी काम को करने या न करने से पहले इस बात पर ग़ौर ज़रूर कर लेना चाहिये कि येह काम करने या न करने से **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा ह़ासिल होगी या इस का नतीजा **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की सूरत में ज़ाहिर होगा। मरवी है कि जब ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे। उन से पूछा गया कि आप को किस चीज़ ने रुलाया ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मौत की घबराहट से रो रहा हूं और न ही दुन्या से रुख़्सती

(1)......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٥٠، ١/١٠١.
(2)......روح البيان، البقرة، تحت الآية: ١٥٠، ١/٢٥٥.

www.dawateislami.net

के ग़म में आंसू बहा रहा हूं, बल्कि मैं तो इस लिये रोता हूं कि मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना कि "दो मुठ्ठियां हैं, एक जहन्नम में जाएगी और दूसरी जन्नत में।" और मुझे नहीं मा'लूम कि मैं कौन सी मुठ्ठी में होउंगा।"(1)

हज़रते हसन बसरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि "क़ियामत के दिन उन लोगों का हिसाब आसान होगा जो आज दुन्या में **अल्लाह** तआला की रिज़ा के लिये अपना मुहासबा करते हैं, वोह इस तरह कि उन्हें जब भी कोई काम दरपेश हो तो पहले उस पर ग़ौर करते हैं, फिर अगर वोह काम **अल्लाह** तआला की रिज़ा के लिये हो तो उसे कर गुज़रते हैं और अगर इस के बर ख़िलाफ़ नज़र आए तो उस से रुक जाते हैं।" फिर फ़रमाया : "और बरोज़े क़ियामत उन लोगों का हिसाब कठिन होगा जो आज दुन्या में अ़मल करते वक़्त ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और किसी क़िस्म का मुहासबा किये बिग़ैर वोह काम कर डालते हैं। ऐसे लोग देखेंगे कि **अल्लाह** तबारक व तआला ने उन का छोटे से छोटा अ़मल शुमार कर रखा है।" फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कहेंगे : हाए हमारी ख़राबी ! इस नामए आ'माल को क्या है कि इस ने हर छोटे और बड़े गुनाह को घेरा हुवा है।(3)

﴿وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِیْ عَلَیْكُمْ : **और ताकि मैं तुम पर अपनी ने'मत पूरी करूं।**﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ मुसल्मानो ! जिस तरह **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तुम्हारा रसूल बनाया जो कि तुम्हारे सामने हक़ की तरफ़ हिदायत देने वाली आयतें तिलावत फ़रमाते हैं, रुश्दो हिदायत के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करते हैं, **अल्लाह** तआला की वहदानिय्यत और उस की अ़ज़ीम क़ुदरत पर क़त्ई दलाइल क़ाइम करते हैं, तुम्हें बुत परस्ती की नजासत से पाक करते हैं और तुम्हें वोह चीज़ सिखाते हैं जिन से तुम अपने नफ़्सों को पहचान सको और उन का तज़्किया कर सको, इसी तरह मुस्तक़िल तौर पर तुम्हारे लिये बैतुल्लाह को क़िब्ला बना दिया ताकि **अल्लाह** तआला तुम पर अपनी ने'मत पूरी करे।(4)

गोया जैसे मुसल्मानों का नबी जुदागाना था ऐसे ही इन का क़िब्ला भी जुदागाना हो गया।

---

1 ......شعب الایمان، الحادی عشرمن شعب الایمان وھو باب فی الخوف من اللّٰہ تعالٰی، ۱/۵۰۲، الحدیث: ۸۴۱.

2 ...... کھف:۴۹.

3 ......ذم الھوی، الباب الثالث فی ذکر مجاھدۃ النفس ومحاسبتھا وتوبیخھا، ص۵۱، رقم: ۱۲۲-۱۲۳.

4 ......تفسیر منیر، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۵۰، ۱/۳۳، الجزء الثانی.

www.dawateislami.net

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ یَتْلُوْا عَلَیْكُمْ اٰیٰتِنَا وَ یُزَكِّیْكُمْ وَ یُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ یُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

معانقة ۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जैसा कि हम ने तुम्हारे दरमियान तुम में से एक रसूल भेजा जो तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और तुम्हें किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जो तुम्हें मा'लूम नहीं था।

﴿ كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ : **जैसा कि हम ने तुम्हारे दरमियान तुम में से एक रसूल भेजा।**﴾ ख़ानए का'बा की तब्दीली **अल्लाह** तआला की बहुत बड़ी ने'मत थी अब इस से बड़ी ने'मत या'नी हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान है। जैसे ख़ानए का'बा को हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत है ऐसे ही हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत है। का'बा हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'मीर का नतीजा है और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस ता'मीर के बा'द की दुआ का समरा हैं।

अल्लाह तआला की सब से बड़ी ने'मत

याद रहे कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआला की सब से बड़ी ने'मत हैं। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआला ख़ुद अपना एह़सान क़रार देता है जैसे फ़रमाया :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने ईमान वालों पर बड़ा एह़सान फ़रमाया जब उन में एक रसूल मब्ऊ़स फ़रमाया।

और वोह रसूल भी कैसे हैं ? क़ुरआन, इल्मे क़ुरआन, फ़हमे क़ुरआन, असरारे क़ुरआन, ह़िक्मत, त़हारते नफ़्स, तज़्कियए क़ल्ब, इस्लाहे ज़ाहिरो बात़िन और दुन्या व आख़िरत

1 ......ال عمران: ١٦٤.

www.dawateislami.net

की सारी भलाइयां देने वाले हैं। इसी तत्हीर व तज़्किये को एक और जगह **अल्लाह** तआ़ला बयान फ़रमाता है :

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! तुम इन के माल से ज़कात वुसूल करो जिस से तुम इन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो।

﴿وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ﴾ : **और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जो तुम्हें मा'लूम नहीं।** कुरआन और अह़कामे इलाहिय्यह जो हम नहीं जानते थे वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें सिखाते हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ सिखाते हैं

और ह़क़ीक़त येह है कि सिर्फ़ ज़ाहिरी मज़ामीने कुरआन और **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम ही नहीं बल्कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ सिखाते हैं। क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अव्वलीनो आख़िरीन के उ़लूम के जामेअ़ हैं। क़सीदए बुर्दा में इमाम बूसीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

فَاقَ النَّبِيِّيْنَ فِيْ خَلْقٍ وَّ فِيْ خُلُقٍ　　　وَلَمْ يُدَانُوْهُ فِيْ عِلْمٍ وَّلَا كَرَمٍ

या'नी आप हुस्नो जमाल और अख़्लाक़ में तमाम नबियों पर फ़ाइक़ हैं और इ़ल्मो करम में कोई आप के बराबर नहीं।

बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा हमारे दरमियान खड़े हुए और हम को (मख़्लूक़ की) इब्तिदाए पैदाइश की ख़बरें देने लगे ह़त्ता कि यहां तक बयान किया कि जन्नती लोग अपनी मन्ज़िलों में पहुंच गए और जहन्नमी अपनी मन्ज़िलों में, जिस ने याद रखा उस ने याद रखा और जो भूल गया वोह भूल गया। (या'नी तमाम काएनात की ख़बरें इर्शाद फ़रमा दीं।) (2)

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर क़ौल व फ़े'ल में वोह इ़ल्मो ह़िक्मत है कि दुन्या आज तक वोह तमाम इ़ल्मो ह़िक्मत मा'लूम नहीं कर सकी।

---

1 ......التوبة: ۱۰۳.

2 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ما جاء فی قول اللّٰه تعالی: وهو الذی یبدء الخلق... الخ، ۲/۳۷۵، الحدیث: ۳۲۹۲.

www.dawateislami.net

فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِیْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ۠ ﴿۱۵۲﴾ ع ۱۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा और मेरा ह़क़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो।

﴿فَاذْكُرُوْنِیْۤ : **तो तुम मेरी याद करो।**﴾ काएनात की सब से बड़ी ने'मत हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करने के बा'द अब ज़िक्रे इलाही और ने'मते इलाही पर शुक्र करने का फ़रमाया जा रहा है।

ज़िक्र की अक़्साम

ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1) ज़बानी। (2) क़ल्बी। (3) आ'ज़ाए बदन के साथ। **ज़बानी ज़िक्र** में तस्बीह़ो तक़्दीस, ह़म्दो सना, तौबा व इस्तिग़्फ़ार, ख़ुत़्बा व दुआ़ और नेकी की दा'वत वग़ैरा शामिल हैं। **क़ल्बी ज़िक्र** में **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों को याद करना, उस की अ़ज़्मतो किब्रियाई और उस की अ़ज़ीम क़ुदरत के दलाइल में ग़ौर करना दाख़िल है नीज़ उ़लमा का शरई मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। **आ'ज़ाए बदन के ज़िक्र** से मुराद है कि अपने आ'ज़ा से **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी न की जाए बल्कि आ'ज़ा को इत़ाअ़ते इलाही के कामों में इस्ति'माल किया जाए।(1)

ज़िक्र के फ़ज़ाइल

ब कसरत अह़ादीस में **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करने के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 10 अह़ादीस का ख़ुलासा दर्जे ज़ैल है।

(1)...... **अल्लाह** का ज़िक्र ईमाने कामिल की निशानी है।(2)

(2)...... ज़िक्रुल्लाह दुन्या व आख़िरत की हर भलाई पाने का ज़रीआ़ है।(3)

---

1 ......صاوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۱/۱۲۸.

2 ......مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث معاذ بن جبل، ۸/۲۶۶، الحدیث: ۲۲۱۹۱.

3 ...... مشكاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب القصد فی العمل، الفصل الثانی، ۱/۲۴۵، الحدیث: ۱۲۵۰.

www.dawateislami.net

(3)...... ज़िक्रे इलाही अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला है।(1)

(4)......ज़िक्र करने वाले क़ियामत के दिन बुलन्द दरजे में होंगे।(2)

(5)...... ज़िक्र के ह़ल्क़े जन्नत की क्यारियां हैं।(3)

(6)...... ज़िक्र करने वालों को फ़िरिश्ते घेर लेते और रह़मत ढांप लेती है।(4)

(7)...... शबे क़द्र में **अल्लाह** का ज़िक्र करने वाले को ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام दुआ़एं देते हैं।(5)

(8)...... ज़िक्र करने वालों की सोह़बत में बैठने वाला भी मह़रूम नहीं रहता।(6)

(9)...... **अल्लाह** का ज़िक्र करने से शैत़ान दिल से हट जाता है।(7)

(10)...... **अल्लाह** के ज़िक्र से दिल की सफ़ाई होती है।(8)

﴿اَذْكُرْكُمْ : **मैं तुम्हें याद करूंगा।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला इत़ाअ़त से याद करने वालों को अपनी मग़्फ़िरत के साथ, शुक्र के साथ याद करने वालों को अपनी ने'मत के साथ, मह़ब्बत के साथ याद करने वालों को अपने क़ुर्ब के साथ याद फ़रमाता है। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हूरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के नज़्दीक होता हूं जो वोह मुझ से रखे और जब वोह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूं, अगर बन्दा मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अकेला ही याद करता हूं और अगर वोह मुझे मज्मअ़ में याद करता है तो मैं उसे बेहतर मज्मअ़ में याद करता हूं और अगर वोह बालिश्त भर मेरे क़रीब होता है तो मैं गज़ भर उस से क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह गज़ भर मेरे क़रीब होता है तो मैं दोनों हाथों के फैलाव के बराबर उस से क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह चल कर मेरी त़रफ़ आता है तो मैं दौड़ कर उस की त़रफ़ जाता हूं (या'नी जैसे **अल्लाह** की शायाने शान है या मुराद येह है कि **अल्लाह** की रह़मत उस की त़रफ़ ज़ियादा तेज़ी से मुतवज्जेह

1......مؤطا امام مالك، كتاب القرآن، باب ما جاء فى ذكر اللّٰه تبارك وتعالٰى، ۱/۲۰۰، الحديث: ۵۰۱.
2......شرح السنّه، كتاب الدعوات، باب فضل ذكر اللّٰه عزوجلّ ومجالس الذكر، ۳/۶۷، الحديث: ۱۲۳۹.
3......ترمذى، كتاب الدعوات، ۸۲-باب، ۵/۳۰۴، الحديث: ۳۵۲۱.
4......ترمذى، كتاب الدعوات، باب ما جاء فى القوم يجلسون... الخ، ۵/۲۴۶، الحديث: ۳۳۸۹.
5......شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون، فى ليلة العيد ويومهما، ۳/۳۴۳، الحديث: ۳۷۱۷.
6......مسند امام احمد، مسند المكثرين من الصحابة، مسند ابى هريرة، ۳/۵۶، الحديث: ۷۴۲۸.
7......بخارى، كتاب التفسير، سورة قل اعوذ برب الناس، ۳/۳۹۵.
8......مشكاة المصابيح، كتاب الدعوات، باب ذكر اللّٰه عزوجل والقرب اليه، الفصل الثالث، ۱/۴۲۷، الحديث: ۲۲۸۶.

www.dawateislami.net

होती है ।) (1)

﴿وَاشْكُرُوْا لِيْ﴾ : **और मेरा शुक्र करो ।** जब कुफ़्र का लफ़्ज़ शुक्र के मुक़ाबले में आए तो इस का मा'ना नाशुक्री और जब इस्लाम या ईमान के मुक़ाबिल हो तो इस का मा'ना बे ईमानी होता है । यहां आयत में कुफ़्र से मुराद नाशुक्री है ।

शुक्र की ता'रीफ़

शुक्र का मत़लब है कि किसी के एह़सान व ने'मत की वज्ह से ज़बान, दिल या आ'ज़ा के साथ उस की ता'ज़ीम की जाए । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह !** मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूं कि मेरा शुक्र करना भी तो तेरी एक ने'मत है । **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : जब तू ने येह जान लिया कि हर ने'मत मेरी त़रफ़ से है और इस पर राज़ी रहा तो येह शुक्र अदा करना है ।(2)

शुक्र के फ़ज़ाइल और नाशुक्री की मज़म्मत

कु़रआनो ह़दीस में शुक्र के कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए और नाशुक्री की मज़म्मत की गई है चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़ियादा अ़त़ा करूंगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है ।

और ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दे पर कोई ने'मत नाज़िल फ़रमाता है और वोह कहता है : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ'' तो येह कलिमा **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक उसे ने'मत देने से बेहतर होता है ।''(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला जब किसी क़ौम से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उन की उ़म्र

1 ......بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ تعالی: ویحذرکم اللّٰہ نفسہ، ٤/٥٤١، الحدیث: ٧٤٠٥.
2 ......احیاء علوم الدین، کتاب الصبر والشکر، الشطر الثانی، بیان طریق کشف الغطاء ... الخ، ٤/١٠٥.
3 ......ابراھیم: ٧.
4 ......ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الحامدین، ٤/٢٥٠، الحدیث: ٣٨٠٥.

www.dawateislami.net

दराज़ करता है और उन्हें शुक्र का इल्हाम फ़रमाता है।''(1)

हज़रते का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआला दुन्या में किसी बन्दे पर इन्आम करे फिर वोह उस ने'मत का **अल्लाह** तआला के लिये शुक्र अदा करे और उस ने'मत की वज्ह से **अल्लाह** तआला के लिये तवाज़ोअ़ करे तो **अल्लाह** तआला उसे दुनया में उस ने'मत से नफ़्अ़ देता है और उस की वज्ह से उस के आख़िरत में दरजात बुलन्द फ़रमाता है और जिस पर **अल्लाह** तआला ने दुन्या में इन्आम फ़रमाया और उस ने शुक्र अदा न किया और न **अल्लाह** तआला के लिये उस ने तवाज़ोअ़ की तो **अल्लाह** तआला दुन्या में उस ने'मत का नफ़्अ़ उस से रोक लेता है और उस के लिये जहन्नम का एक त़बक़ खोल देता है, फिर अगर **अल्लाह** तआला चाहेगा तो उसे (आख़िरत में) अ़ज़ाब देगा या उस से दर गुज़र फ़रमाएगा।(2)

शुक्र से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये सूरए इब्राहीम की आयत नम्बर 7 के तह़त तफ़्सीर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है।

﴿ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا : **ऐ ईमान वालो।**﴾ इस से पहली आयात में ज़िक्र और शुक्र का बयान हुवा और इस आयत में सब्र और नमाज़ का ज़िक्र किया जा रहा है क्यूं कि नमाज़, ज़िक्रुल्लाह और सब्रो शुक्र पर ही मुसल्मान की ज़िन्दगी कामिल होती है। इस आयत में फ़रमाया गया कि सब्र और नमाज़ से मदद मांगो। सब्र से मदद त़लब करना येह है कि इबादात की अदाएगी, गुनाहों से रुकने और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा न करने पर सब्र किया जाए और नमाज़ चूंकि तमाम इबादात की अस्ल और अहले ईमान की मे'राज है और सब्र करने में बेहतरीन मुआ़विन है इस

1 ......فردوس الاخبار، باب الالف، جماع الفصول منه فی معانی شتی... الخ، ١/١٤٨، الحدیث: ٩٥٤.
2 ......رسائل ابن ابی الدنیا، التواضع والخمول، ٣/٥٥٥، رقم: ٩٣.

www.dawateislami.net

लिये इस से भी मदद त़लब करने का हुक्म दिया गया और इन दोनों का बत़ौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र किया गया कि बदन पर बात़िनी आ'माल में सब से सख़्त सब्र और ज़ाहिरी आ'माल में सब से मुश्किल नमाज़ है।(1)

हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी नमाज़ से मदद चाहते थे जैसा कि ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते।''(2)

इसी त़रह़ नमाज़े इस्तिस्क़ा और नमाज़े ह़ाजत भी नमाज़ से मदद चाहने ही की सूरतें हैं।

﴿اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ﴾ **: बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है।** ह़ज़रते अ़ल्लामा नस्र बिन मुह़म्मद समर क़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** तआ़ला (अपने इ़ल्मो क़ुदरत से) हर एक के साथ है लेकिन यहां सब्र करने वालों का बत़ौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र फ़रमाया ताकि उन्हें मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** तआ़ला उन की मुश्किलात दूर कर के आसानी फ़रमाएगा।''(3)

सब्र की ता'रीफ़

इस आयत में सब्र का ज़िक्र हुवा, सब्र का मा'ना है नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो।(4)

सब्र की अक़्साम

बुन्यादी त़ौर पर सब्र की दो क़िस्में हैं : (1)...... बदनी सब्र जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और उन पर साबित क़दम रहना (2) त़ब्ई ख़्वाहिशात और ख़्वाहिश के तक़ाज़ों से सब्र करना। पहली क़िस्म का सब्र जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है लेकिन मुकम्मल त़ौर पर ता'रीफ़ के क़ाबिल सब्र की दूसरी क़िस्म है।(5)

---

1 ......روح البیان، البقرة، تحت الآیة: ۱۵۳، ۱/۲۵۷، ملخصاً.

2 ......ابو داوٗد، کتاب التطوع، باب وقت قیام النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم من اللیل، ۲/۵۲، الحدیث: ۱۳۱۹.

3 ......تفسیر سمرقندی، البقرة، تحت الآیة: ۱۵۳، ۱/۱۶۹.

4 ......مفردات امام راغب، حرف الصاد، ص۴۷۴.

5 ......احیاء علوم الدین، کتاب الصبر والشکر، بیان الاسامی التی تتجدد للصبر...الخ، ۴/۸۲.

www.dawateislami.net

सब्र के फ़ज़ाइल

कुरआनो ह़दीस और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल में सब्र के बे पनाह फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, तरग़ीब के लिये उन में से 10 फ़ज़ाइल का ख़ुलासा दर्जे ज़ैल है :

(1)...... **अल्लाह** तआ़ला सब्र करने वालों के साथ है ।[1]

(2)...... सब्र करने वाले को उस के अ़मल से अच्छा अज्र मिलेगा ।[2]

(3)...... सब्र करने वालों को बे ह़िसाब अज्र मिलेगा ।[3]

(4)...... सब्र करने वालों की जज़ा देख कर क़ियामत के दिन लोग ह़सरत करेंगे ।[4]

(5)...... सब्र करने वाले, रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दुरूद व हिदायत और रह़मत पाते हैं ।[5]

(6)...... सब्र करने वाले, **अल्लाह** तआ़ला को मह़बूब हैं ।[6]

(7)...... सब्र आधा ईमान है ।[7]

(8)...... सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है ।[8]

(9)...... सब्र करने वाले की ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं ।[9]

(10)...... सब्र हर भलाई की कुन्जी है ।[10]

ग़ैरे ख़ुदा से मदद त़लब करना शिर्क नहीं

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि ग़ैरे ख़ुदा से मदद त़लब करना शिर्क नहीं है । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ख़ुदारा इन्साफ़ ! अगर

1......الانفال: ٤٦.

2......النحل: ٩٦.

3......الزمر: ١٠.

4......معجم الكبير، ١٢/١٤١، الحديث: ١٢٨٢٩.

5......البقرة: ١٥٧.

6......آل عمران: ١٤٦.

7......مستدرك، كتاب التفسير، الصبر نصف الايمان، ٣/٢٣٧، الحديث: ٣٧١٨.

8......احياء علوم الدين، كتاب الصبر والشكر، بيان فضيلة الصبر، ٤/٧٦.

9......ترمذى، كتاب الزهد، باب ماجاء فى الصبر على البلاء، ٤/١٧٩، الحديث: ٢٤٠٧.

10......شعب الايمان، السبعون من شعب الايمان، فصل فى ذكر ما فى الاوجاع...الخ، ٧/٢٠١، رقم: ٩٩٩٦.

www.dawateislami.net

आयए करीमा "اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ" में मुत्लक़ इस्तिआनत का ज़ाते इलाही جَلَّ وَعَلا में ह़स्र मक़्सूद हो तो क्या सिर्फ़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही से इस्तिआनत शिर्क होगी, क्या येही ग़ैरे ख़ुदा हैं, और सब अश्ख़ास व अश्या वहाबिया के नज़्दीक ख़ुदा हैं या आयत में ख़ास इन्हीं का नाम ले दिया है कि इन से शिर्क औरों से रवा है। नहीं नहीं, जब मुत्लक़न ज़ाते अह़दिय्यत से तख़्सीस और ग़ैर से शिर्क मानने की ठहरी तो कैसी ही इस्तिआनत किसी ग़ैरे ख़ुदा से की जाए हमेशा हर त़रह़ शिर्क ही होगी कि इन्सान हों या जमादात, अह़्या हों या अम्वात, ज़वात हों या सिफ़ात, अफ़्आल हों या ह़ालात, ग़ैरे ख़ुदा होने में सब दाख़िल हैं, अब क्या जवाब है आयए करीमा का कि रब جَلَّ وَعَلا फ़रमाता है :

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ [1] इस्तिआनत करो सब्र व नमाज़ से।

क्या सब्र ख़ुदा है जिस से इस्तिआनत का हुक्म हुवा है ? क्या नमाज़ ख़ुदा है जिस से इस्तिआनत को इर्शाद किया है। दूसरी आयत में फ़रमाता है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى [2] आपस में एक दूसरे की मदद करो भलाई और परहेज़ गारी पर।

क्यूं साह़िब ! अगर ग़ैरे ख़ुदा से मदद लेनी मुत्लक़न मुह़ाल है तो इस हुक्मे इलाही का ह़ासिल क्या, और अगर मुम्किन हो तो जिस से मदद मिल सकती है उस से मदद मांगने में क्या ज़हर घुल गया। ह़दीसों की तो गिनती ही नहीं ब कसरत अह़ादीस में साफ़ साफ़ हुक्म है कि (1) सुब्ह़ की इबादत से इस्तिआनत करो। (2) शाम की इबादत से इस्तिआनत करो। (3) कुछ रात रहे की इबादत से इस्तिआनत करो। (4) इल्म के लिखने से इस्तिआनत करो। (5) सह़री के खाने से इस्तिआनत करो। (6) दो पहर के सोने से इस्तिआनत व सदक़ा से इस्तिआनत करो। (7) ह़ाजत रवाइयों में ह़ाजतें छुपाने से इस्तिआनत करो।"[3]

मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या की 21वीं जिल्द में मौजूद रिसाला "بَرَكَاتُ الْاِمْدَادِ لِاَهْلِ الْاِسْتِمْدَادِ" का मुत़ालआ फ़रमाएं।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ

1 ......البقرة: ٤٥.

2 ......مائده: ٢.

3 ...... फ़तावा रज़विय्या, 21/305, 306

www.dawateislami.net

لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें इस का शुऊ़र नहीं।

﴿وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ﴾ **: और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो।** सब्र के ज़िक्र के बा'द अब सब्र करने वालों की एक अ़ज़ीम क़िस्म या'नी शहीदों का बयान किया जा रहा है। येह आयते करीमा शुहदा के ह़क़ में नाज़िल हुई। बा'ज़ लोग शुहदा की शहादत पर अफ़्सोस करते हुए कहते थे कि वोह लोग शहीद हो कर ने'मतों से मह़रूम हो गए। तब येह आयते करीमा नाज़िल हुई।(1) जिस में फ़रमाया गया कि उन्हों ने फ़ानी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला की राह में क़ुरबान कर के दाइमी ज़िन्दगी ह़ासिल कर ली है।

शुहदा के फ़ज़ाइल

इस आयत में शुहदा को मुर्दा कहने से मन्अ़ किया गया है, न ज़बान से उन्हें मुर्दा कहने की इजाज़त है और न दिल में उन्हें मुर्दा समझने की इजाज़त है, जैसा कि एक और मक़ाम पर फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** की राह में शहीद किये गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ख़याल न करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।

मौत के बा'द **अल्लाह** तआ़ला शुहदा को ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाता है, उन की अरवाह़ पर रिज़्क़ पेश किया जाता है, उन्हें राह़तें दी जाती हैं, उन के अ़मल जारी रहते हैं, उन का अज्रो सवाब बढ़ता रहता है, ह़दीस शरीफ़ में है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के बदन में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं।(3)

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٥٤، ١/١٠٣. 2 ......ال عمران:١٦٩.

3 ......شعب الايمان، السبعون من شعب الايمان، ٧/١١٥، الحديث: ٩٦٨٦.

www.dawateislami.net

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अहले जन्नत में से एक शख़्स को लाया जाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस से फ़रमाएगा : ऐ इब्ने आदम ! तू ने अपनी मन्ज़िल व मक़ाम को कैसा पाया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, बहुत अच्छी मन्ज़िल है । **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : "तू मांग और कोई तमन्ना कर ।" वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं तुझ से इतना सुवाल करता हूं कि तू मुझे दुन्या की त़रफ़ लौटा दे और मैं दस मरतबा तेरी राह में शहीद किया जाऊं । (वोह येह सुवाल इस लिये करेगा) कि उस ने शहादत की फ़ज़ीलत मुलाह़ज़ा कर ली होगी ।"(1)

शहीद की ता'रीफ़ और इस के अह़काम

शहीद वोह मुसल्मान, मुकल्लफ़, ताहिर है जो तेज़ हथियार से ज़ुल्मन मारा गया हो और उस के क़त्ल से माल भी वाजिब न हुवा हो या मा'रिकए जंग में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया और उस ने कुछ आसाइश न पाई । इस पर दुन्या में येह अह़काम हैं कि न उस को ग़ुस्ल दिया जाए न कफ़न, उसे उस के कपड़ों में ही रखा जाए, इसी त़रह़ उस पर नमाज़ पढ़ी जाए और उसी ह़ालत में दफ़्न किया जाए ।(2)

बा'ज़ शुहदा वोह हैं कि उन पर दुन्या के येह अह़काम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उन के लिये शहादत का दरजा है जैसे डूब कर या जल कर या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, त़लबे इल्म और सफ़रे ह़ज ग़रज़ राहे ख़ुदा में मरने वाला येह सब शहीद हैं । ह़दीसों में ऐसे शुहदा की ता'दाद चालीस से ज़ाइद है । मुकम्मल तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए चहारुम मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

﴿وَلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ : **लेकिन तुम्हें इस का शुऊ़र नहीं ।**﴾ या'नी येह बात तो क़त्ई है कि शुहदा ज़िन्दा हैं लेकिन उन की ह़यात कैसी है इस का हमें शुऊ़र नहीं इसी लिये उन पर शरई अह़काम आ़म मय्यित की त़रह़ ही जारी होते हैं जैसे क़ब्र, दफ़्न, तक़्सीमे मीरास, उन की बीवियों का इ़द्दत गुज़ारना, इ़द्दत के बा'द किसी दूसरे से निकाह़ कर सकना वग़ैरा ।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ
الْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾

1 ......سنن نسائی ، كتاب الجهاد، ما يتمنى اهل الجنة، ص ٥١٤، الحديث: ٣١٥٧.
2 ...... बहारे शरीअ़त, शहीद का बयान, 1/860

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर हम तुम्हें आज़्माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और खुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ज़रूर तुम्हें कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से आज़्माएंगे और सब्र करने वालों को खुश ख़बरी सुना दो ।

﴾وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ : **और हम तुम्हें ज़रूर आज़्माएंगे ।**﴿ आज़्माइश से फ़रमां बरदार और ना फ़रमान के ह़ाल का ज़ाहिर करना मुराद है । इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बक़ौल ख़ौफ़ से **अल्लाह** तआ़ला का डर, भूक से रमज़ान के रोज़े, मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना, जानों की कमी से अमराज़ के ज़रीए़ अम्वात होना, फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है क्यूं कि औलाद दिल का फल होती है, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह़ क़ब्ज़ की ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं कि "हां, या रब ! عَزَّوَجَلَّ," फिर फ़रमाता है : "तुम ने उस के दिल का फल ले लिया ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "हां, या रब ! عَزَّوَجَلَّ," **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : उस ने तेरी ह़म्द की और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "उस के लिये जन्नत में मकान बनाओ और उस का नाम बैतुल ह़म्द रखो ।"(1)

आज़्माइशें और सब्र

याद रहे कि ज़िन्दगी में क़दम क़दम पर आज़्माइशें हैं, **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों को कभी मरज़ से, कभी जान व माल की कमी से, कभी दुश्मन के डर ख़ौफ़ से, कभी किसी नुक़्सान से, कभी आफ़ातो बलिय्यात से और कभी नित नए फ़ितनों से आज़्माता है और राहे दीन और तब्लीग़े दीन तो खुसूसन वोह रास्ता है जिस में क़दम क़दम पर आज़्माइशें हैं, इसी से फ़रमां बरदार व ना फ़रमान, मह़ब्बत में सच्चे और मह़ब्बत के सिर्फ़ दा'वे करने वालों के दरमियान फ़र्क़ होता है । ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर अक्सर क़ौम का ईमान न लाना, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का आग में डाला जाना, फ़रज़न्द को क़ुरबान करना, ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बीमारी में मुब्तला किया जाना, इन की औलाद और अम्वाल को ख़त्म कर

1 ......ترمذی، کتاب الجنائز، باب فضل المصیبة اذا احتسب، ۳۱۳/۲، الحدیث: ۱۰۲۳.

www.dawateislami.net

दिया जाना, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मिस्र से मद्यन जाना, मिस्र से हिजरत करना, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सताया जाना और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का शहीद किया जाना येह सब आज़्माइशों और सब्र ही की मिसालें हैं और इन मुक़द्दस हस्तियों की आज़्माइशें और सब्र हर मुसल्मान के लिये एक नमूने की हैसिय्यत रखती हैं लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि उसे जब भी कोई मुसीबत आए और वोह किसी तक्लीफ़ या अज़िय्यत में मुब्तला हो तो सब्र करे और **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहे और बे सब्री का मुज़ाहरा न करे। सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बहुत मोटी सी बात है जो हर शख़्स जानता है कि कोई कितना ही ग़ाफ़िल हो मगर जब (उसे कोई तक्लीफ़ पहुंचती है या वोह किसी मुसीबत और) मरज़ में मुब्तला होता है तो किस क़दर ख़ुदा को याद करता और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है और येह तो बड़े रुत्बे वालों की शान है कि (वोह) तक्लीफ़ का भी इसी त़रह़ इस्तिक़्बाल करते हैं जैसे राह़त का (इस्तिक़्बाल करते हैं) मगर हम जैसे कम से कम इतना तो करें कि (जब कोई मुसीबत या तक्लीफ़ आए तो) सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लें और जज़अ़ व फ़ज़अ़ (या'नी रोना पीटना) कर के आते हुए सवाब को हाथ से न (जाने) दें और इतना तो हर शख़्स जानता है कि बे सब्री से आई हुई मुसीबत जाती न रहेगी फिर उस बड़े सवाब (जो अह़ादीस में बयान किया गया है) से मह़रूमी दोहरी मुसीबत है।"(1)

और कसीर अह़ादीस में मुसल्मान पर मुसीबत आने का जो सवाब बयान किया गया है उन में से चन्द अह़ादीस येह हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे तकालीफ़ में मुब्तला करता है।"(2)

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान को जो तक्लीफ़, रन्ज, मलाल और अज़िय्यतो ग़म पहुंचे, यहां तक कि उस के पैर में कोई कांटा ही चुभे तो **अल्लाह** तआ़ला इन के सबब उस के गुनाह मिटा देता है।"(3)

1...... बहारे शरीअ़त, किताबुल जनाइज़, बीमारी का बयान, 1/799

2......بخاری، کتاب المرضی، باب شدة المرض، ٤/٤، الحدیث: ٥٦٤٦.

3......بخاری، کتاب المرضی، باب ما جاء فی کفارة المرض، ٣/٤، الحدیث: ٥٦٤١.

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान मर्द व औ़रत के जानो माल और औलाद में हमेशा मुसीबत रहती है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल में मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता।''(1)

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन जब मुसीबत ज़दा लोगों को सवाब दिया जाएगा तो आराम व सुकून वाले तमन्ना करेंगे, काश ! दुन्या में इन की खालें क़ैंचियों से काट दी गई होतीं।''(2)

الَّذِیْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं : हम **अल्लाह** ही के हैं और हम उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं।

﴾الَّذِیْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ : **वोह लोग कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है।**﴿ इस से पहली आयत में मुसीबतों पर सब्र करने वालों को जन्नत की बिशारत दी गई और इस आयत में येह बताया गया कि सब्र करने वाले वोह लोग हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं : हम **अल्लाह** तआ़ला ही के मम्लूक और उसी के बन्दे हैं वोह हमारे साथ जो चाहे करे और आख़िरत में हमें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।(3)

''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ने के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ने के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 5 फ़ज़ाइल येह हैं :

(1)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने सय्यिदुल

1......ترمذی ، کتاب الزھد، باب ما جاء فی الصبر علی البلاء، ۱۷۹/۴، الحدیث: ۲۴۰۷.
2......ترمذی ، کتاب الزھد، ۵۹-باب، ۱۸۰/۴، الحدیث: ۲۴۱۰.
3......جلالین، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ص۲۲.

www.dawateislami.net

मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जिस मुसल्मान पर कोई मुसीबत आए और वोह **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' (पढ़े और येह दुआ़ करे) ''اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْهَا'' ऐ **अल्लाह** ! मेरी इस मुसीबत पर मुझे अज्र अ़ता फ़रमा और मुझे इस का बेहतर बदल अ़ता फ़रमा'' तो **अल्लाह** तआ़ला उस को उस से बेहतर बदल अ़ता फ़रमाएगा । ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ौत हो गए तो मैं ने सोचा कि मुसल्मानों में ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बेहतर कौन होगा ? वोह तो पहले घर वाले हैं जिन्हों ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत की । बहर ह़ाल मैं ने येह दुआ़ कह ली, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने उन के बदले मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ता फ़रमा दिये (जो कि ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बहुत बेहतर थे) ।(1)

(2)...... ह़ज़रते इमामे हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस मुसल्मान मर्द या औ़रत पर कोई मुसीबत पहुंची और वोह उसे याद कर के ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' कहे, अगर्चे मुसीबत का ज़माना दराज़ हो गया हो तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर नया सवाब अ़ता फ़रमाता है और वैसा ही सवाब देता है जैसा उस दिन दिया था जिस दिन मुसीबत पहुंची थी ।''(2)

(3)....... एक मरतबा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चराग़ बुझ गया तो आप ने ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ा । अ़र्ज़ की गई क्या येह भी मुसीबत है ? इर्शाद फ़रमाया : जी हां ! और हर वोह चीज़ जो मोमिन को अज़िय्यत दे वोह उस के लिये मुसीबत है और उस पर अज्र है ।(3)

(4)...... एक और ह़दीस शरीफ़ में है कि मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है ।(4)

(5)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत को एक ऐसी चीज़ दी गई है जो पहली उम्मतों में से किसी को नहीं दी गई, वोह चीज़ मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ना

1 ......مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المصیبۃ، ص٤٥٧، الحدیث: ٣(٩١٨).

2 ......مسند امام احمد، حدیث الحسین بن علی رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، ١/٤٢٩، الحدیث: ١٧٣٤.

3 ......در منثور، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١٥٦، ١/٣٨٠.

4 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، ٢/١٢٢، الجزء الثالث، الحدیث: ٦٦٤٦.

www.dawateislami.net

है ।"(1)

أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٞۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ١٥٧

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोग हैं जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह वोह लोग हैं जिन पर इन के रब की त़रफ़ से दुरूद हैं और रह़मत और येही लोग हिदायत याफ़्ता हैं ।

﴾أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٞ﴿ **: येह वोह लोग हैं जिन पर इन के रब की त़रफ़ से दुरूद हैं और रह़मत ।** सब्र करने वाले **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब होते हैं, इन के लिये बख़्शिश और हिदायत व रह़मत है ।

मुसीबत पर सब्र के आदाब

मुसीबत पर सब्र करने के कई आदाब हैं, उन में से 4 आदाब येह हैं जिन्हें अ़ल्लामा इब्ने क़ुदामा मक़्दसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी किताब "मुख़्तसर मिन्हाजुल क़ासिदीन" के सफ़ह़ा 277 पर ज़िक्र फ़रमाया है ।

(1)...... जब मुसीबत पहुंचे तो उसी वक़्त सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लिया जाए, जैसा कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब्र सदमे की इब्तिदा में होता है ।"(2)

(2)...... मुसीबत के वक़्त "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा जाए, जैसा कि ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का अ़मल ऊपर गुज़रा है कि उन्हों ने अपने शौहर के इन्तिक़ाल पर "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा ।

(3)...... मुसीबत आने पर ज़बान और दीगर आ'ज़ा से कोई ऐसा कलाम या फ़े'ल न किया

1 ......معجم الکبیر، ۱۲/۳۲، الحدیث: ۱۲۴۱۱.
2 ......بخاری، کتاب الجنائز، باب زیارۃ القبور، ۱/۴۳۳، الحدیث: ۱۲۸۳.

www.dawateislami.net

जाए जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो जैसे ज़बान से **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में शिक्वा व शिकायत के कलिमात बोलना, सीना पीटना और गिरेबान चाक कर लेना वग़ैरा।

(4)...... सब्र की सब से बेहतरीन सूरत येह है कि मुसीबत ज़दा पर मुसीबत के आसार ज़ाहिर न हों जैसा कि सहीह़ मुस्लिम में है, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बत़्न से ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक लड़का फ़ौत हो गया। ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने घर वालों से कहा : ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के बेटे के इन्तिक़ाल की ख़बर उस वक़्त तक न देना जब तक मैं ख़ुद उन्हें न बता दूं। जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन्हें शाम का खाना पेश किया, उन्हों ने खाना खाया और पानी पिया, फिर ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पहले की ब निस्बत ज़ियादा अच्छा बनाव सिंघार किया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से इज़्दिवाजी अ़मल किया जब ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने देखा कि वोह सैर हो गए और अपनी फ़ित़री ख़्वाहिश भी पूरी कर ली है तो फिर उन्हों ने कहा : ऐ अबू त़ल्ह़ा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, येह बताएं कि अगर कुछ लोग किसी को आ़रिय्यत के तौ़र पर कोई चीज़ दें फिर वोह अपनी चीज़ वापस ले लें तो क्या वोह उन को मन्अ़ कर सकते हैं ? ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : नहीं। ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा तो फिर आप अपने बेटे के मुतअ़ल्लिक़ येही गुमान कर लें (कि वोह हमारे पास **अल्लाह** तआ़ला की अमानत था जो उस ने वापस ले ली या'नी उस का इन्तिक़ाल हो चुका है।)।[1]

और ह़ज़रते मुत़र्रिफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बेटा फ़ौत हो गया। लोगों ने उन्हें बड़ा ख़ुश व ख़ुर्रम देखा तो कहा कि क्या बात है कि आप ग़मज़दा होने की बजाए ख़ुश नज़र आ रहे हैं। फ़रमाया : जब मुझे इस सदमे पर सब्र की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से दुरूदो रह़मत और हिदायत की बिशारत है तो मैं ख़ुश होउं या ग़मगीन ?[2]

और इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "एह़याउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते फ़त्ह़ मूसिली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा फिसल गईं तो उन का नाख़ुन टूट गया, इस पर वोह हंस पड़ीं, उन से पूछा गया कि क्या आप को दर्द नहीं हो रहा ? उन्हों ने फ़रमाया : इस के सवाब की लज़्ज़त ने मेरे दिल से दर्द की तल्ख़ी को ज़ाइल कर दिया है।[3]

1 ......مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل ابی طلحة الانصاری رضی اللّٰہ تعالی عنہ، ص۱۳۳۳، الحدیث:۱۰۷(۲۱۴۴).
2 ......مختصرمنهاج القاصدين، كتاب الصبر والشكر، فصل فى آداب الصبر، ص۲۷۷.
3 ......احياء علوم الدين، كتاب الصبر والشكر، بيان مظان الحاجة الى الصبر... الخ، ۹۰/۴.

www.dawateislami.net

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़म्रह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** की निशानियों में से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़म्रह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के चक्कर लगाए और जो कोई अपनी त़रफ़ से भलाई करे तो बेशक **अल्लाह** नेकी का बदला देने वाला, ख़बरदार है।

﴿اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِ : **बेशक सफ़ा और मर्वह अल्लाह की निशानियों में से हैं।**﴾ सब्र और साबिरीन के इज्माली बयान के बा'द अब सब्र का एक मश्हूर और अ़ज़ीम वाक़िआ़ बयान किया जा रहा है। इस की तफ़्सील कुछ यूं है कि सफ़ा व मर्वह मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के बिल मुक़ाबिल मशरिक़ी जानिब वाक़ेअ़ हैं, ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब इस मक़ाम पर जहां ज़मज़म का कूंवां है हुक्मे इलाही से सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई। उस वक़्त येह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था, न यहां सब्ज़ा था न पानी, न ख़ुर्दो नोश का कोई सामान। रिज़ाए इलाही के लिये इन मक़्बूल बन्दों ने सब्र किया। ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बहुत कम उ़म्र थे, इन्हें प्यास लगी और जब प्यास की शिद्दत बहुत ज़ियादा हो गई तो ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बेताब हो कर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गईं वहां भी पानी न पाया तो उतर कर नीचे के मैदान में दौड़ती हुई मर्वह तक पहुंचीं। इस त़रह़ सात चक्कर लगाए।(1) और **अल्लाह** तआ़ला ने "اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ **अल्लाह** तआ़ला सब्र करने वालों के साथ है" का जल्वा इस त़रह़ ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा ज़मज़म नुमूदार किया और इन के सब्रो इख़्लास की बरकत से इन के इत्तिबाअ़ में इन दोनों पहाड़ों के दरमियान दौड़ने वालों को मक़्बूले बारगाह क़रार दिया

1 ......صاوی، ابراهیم، تحت الآیة: ۳۷، ۳/۱۰۲۷-۱۰۲۸.

www.dawateislami.net

और इन दोनों पहाड़ों को क़ुबूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम बना दिया। इस वाक़िए़ का ज़िक्र सूरए इब्राहीम आयत 13 में भी मज़्कूर है।

﴾مِنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ : **अल्लाह की निशानियों में से हैं।**﴿ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ से दीन की निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वोह मकानात हों जैसे का'बा, अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा तीनों जमरात (जिन पर रमी की जाती है), सफ़ा, मर्वह, मिना, मसाजिद या वोह शआ़इर ज़माने हों जैसे रमज़ान, हुरमत वाले महीने, ई़दुल फ़ित्र व ई़दुल अज़्हा, यौमे जुमुआ़, अय्यामे तशरीक़ या वोह शआ़इर कोई दूसरी अ़लामात हों जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े बा जमाअ़त, नमाज़े जुमुआ़, नमाज़े ई़दैन, ख़तना येह सब शआ़इरे दीन हैं।[1]

नेक लोगों से निस्बत की बरकत

इस वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ को सालिह़ीन से निस्बत हो जाए वोह चीज़ अ़ज़मत वाली बन जाती है, जैसे सफ़ा मर्वह पहाड़ ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के क़दम की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला की निशानी बन गए और येह भी मा'लूम हुवा कि मुअ़ज़्ज़म चीज़ों की ता'ज़ीमो तौक़ीर दीन में दाख़िल है इसी लिये सफ़ा मर्वह की सई ह़ज में शामिल हुई।

﴾فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ : **तो उस पर कोई ह़रज नहीं।**﴿ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में सफ़ा व मर्वह पर दो बुत रखे थे, सफ़ा पर जो बुत था उस का नाम उसाफ़ और जो बुत मर्वह पर था उस का नाम नाइला था। कुफ़्फ़ार जब सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करते तो इन बुतों पर ता'ज़ीमन हाथ फेरते, ज़मानए इस्लाम में येह बुत तो तोड़ दिये गए लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार यहां मुश्रिकाना फ़े'ल करते थे इस लिये मुसल्मानों को सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना गिरां मह़सूस होता था क्यूं कि इस में कुफ़्फ़ार के मुश्रिकाना फ़े'ल के साथ कुछ मुशाबहत बनती है, इस आयत में उन का इत़्मीनान फ़रमा दिया गया।[2] कि चूंकि तुम्हारी निय्यत ख़ालिस इ़बादते इलाही की है लिहाज़ा तुम्हें मुशाबहत का अन्देशा नहीं करना चाहिये और जिस त़रह़ ख़ानए का'बा के अन्दर ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने बुत रखे थे अब अ़हदे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और का'बे शरीफ़ का त़वाफ़ दुरुस्त रहा और वोह शआ़इरे दीन में से रहा इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मर्वह के शआ़इरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया।

यहां एक मस्अला ज़ेह्न नशीन रखें कि ह़ज में सई (या'नी सफ़ा व मर्वह के सात चक्कर)

1 ......تفسیر بغوی، البقرة، تحت الآیة: ۱۵۸، ۹۱/۱، ملخصاً.
2 ......تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآیة: ۱۵۸، ۱۳۸/۲.

www.dawateislami.net

वाजिब है। इस के तर्क करने से दम देना या'नी कुरबानी वाजिब होती है। इस के बारे में तफ़्सीली अह्काम के लिये बहारे शरीअत हिस्सा 6 का मुतालआ फ़रमाएं।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह फ़रमा चुके उन पर **अल्लाह** की ला'नत है और ला'नत करने वालों की ला'नत। मगर वोह जो तौबा करें और संवारें और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल फ़रमाऊंगा और मैं ही हूं बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेह्रबान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं ह़ालां कि हम ने उसे लोगों के लिये किताब में वाज़ेह फ़रमा दिया है तो उन पर **अल्लाह** ला'नत फ़रमाता है और ला'नत करने वाले उन पर ला'नत करते हैं। मगर वोह लोग जो तौबा करें और इस्लाह़ कर लें और (छुपी हुई बातों को) ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल फ़रमाऊंगा और मैं ही बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेह्रबान हूं।

﴾إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ﴿ **: बेशक वोह लोग जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं।** येह आयत उन उ़लमाए यहूद के बारे में नाज़िल हुई जो तौरैत शरीफ़ के अह्काम और उस में मौजूद ना'ते मुस्त़फ़ा की आयतें छुपाते थे।(1)

दीनी मसाइल को छुपाना गुनाह है ख़्वाह इस त़रह़ कि ज़रूरत के वक़्त बताए न जाएं या इस त़रह़ कि ग़लत़ बताए जाएं बल्कि ग़लत़ बताने पर तो बहुत सख़्त वई़दें हैं। येह दोनों

1 ......صاوی، البقرة، تحت الآية: ١٥٩، ١/١٣٣.

www.dawateislami.net

गुनाह उलमाए यहूद करते थे कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त बताते न थे और ज़िना की सज़ा बदल देते थे कि बजाए रज्म के मुंह काला कराते थे।[1]

सूरए बक़रह की आयत नम्बर 79 में भी यहूदियों की इस तरह की हरकतों का बयान गुज़र चुका है।

दीनी मसाइल छुपाने की वईदें

अहादीस में दीनी मसाइल छुपाने की सख़्त वईदें बयान की गई हैं, चुनान्चे हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस से इल्म की कोई बात पूछी गई जिसे वोह जानता है लेकिन वोह उसे छुपाता है तो क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम दी जाएगी।"[2]

हज़रत अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो इल्म के बिग़ैर फ़तवा दे उस पर ज़मीनो आस्मान के फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं।"[3]

ग़लत़ मसाइल बयान करने वालों, बिग़ैर पढ़े आलिम व मुफ़्ती व मुहद्दिस व मुफ़स्सिर कहलाने वालों और कुरआनो हदीस की ग़लत़ तशरीहात व तौज़ीहात करने वालों की आज कल कमी नहीं और येह सब मज़्कूरा आयत व अहादीस की वईद में दाख़िल हैं। इस वईद में वोह लोग भी शामिल हैं जो हैं तो महज़ कोई आर्टीकल या कॉलिम लिखने वाले लेकिन दीन को भी अपने क़लम से तख़्तए मश्क़ बनाते हैं।

﴿يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ : **अल्लाह उन पर ला'नत फ़रमाता है।**﴾ इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़मत और शरीअत के अहकाम छुपाने वालों पर **अल्लाह** तआला की ला'नत है और दीगर हज़रात या'नी मलाएका व मोमिनीन की भी ला'नत है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۶۱﴾

1 ......تفسير قرطبی، البقرة، تحت الآية: ۱۵۹، ۱/ ۱۴۰.
2 ......ترمذی، كتاب العلم، باب ما جاء فی كتمان العلم، ۴/ ۲۹۵، الحديث: ۲۶۵۸.
3 ......ابن عساكر، محمد بن اسحاق بن ابراهيم... الخ، ۵۲/ ۲۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर ही मरे उन पर ला'नत है **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और आदमियों सब की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर ही मरे उन पर **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और इन्सानों की, सब की ला'नत है।

﴿وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ﴾ **: और जो हालते कुफ़्र में मरे।** सब से बद बख़्त आदमी कुफ़्र पर मरने वाला है अगर्चे उस की सारी ज़िन्दगी आ'ला दरजे की इबादतो रियाज़त और तब्लीग़ व ख़िदमते दीन में गुज़री हो। कुफ़्र पर मरने वालों पर **अल्लाह** तआ़ला की, फ़िरिश्तों की और तमाम इन्सानों की ला'नत है।

बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़

इस आयत से मा'लूम हुवा मरते वक़्त ईमान की दौलत से मह़रूम रह जाना सब से बड़ी बद बख़्ती है और उस वक़्त ईमान का सलामत रह जाना बहुत बड़ी सआ़दत है, लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह अगर्चे कितना ही नेक व पारसा, इबादत गुज़ार और परहेज़ गार क्यूं न हो अपने बुरे ख़ातिमे से ख़ौफ़ज़दा रहे। हमारे बुज़ुर्गाने दीन का भी येही त़र्ज़े अ़मल रहा है कि वोह सब से ज़ियादा बुरे ख़ातिमे के बारे में ख़ौफ़ज़दा रहते थे। चुनान्चे जब ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का वक़्ते विसाल आया तो आप ने रोना शुरूअ़ कर दिया, उन से कहा गया : आप उम्मीद रखिये, **अल्लाह** तआ़ला सब से बढ़ कर गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाने वाला है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : (तुम क्या समझते हो कि) क्या मैं अपने गुनाहों की वज्ह से आंसू बहा रहा हूं ? अगर मैं जानता कि **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत पर क़ाइम रहते हुए मरूंगा तो फिर मुझ पर पहाड़ों के बराबर भी गुनाह डाल दिये जाते तो मुझे कोई परवा न होती। (या'नी ईमान पर मौत हो जाए तो मुझे कुछ डर नहीं।) [(1)]

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इन्तिक़ाल के वक़्त जब आप के साहिब ज़ादे ने त़बीअ़त दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : “अभी जवाब का वक़्त नहीं है, बस दुआ़ करो कि **अल्लाह** तआ़ला मेरा ख़ातिमा ईमान पर कर दे क्यूं कि इब्लीसे लईन अपने सर पर ख़ाक डालते हुए मुझ से कह रहा है कि तेरा दुन्या से ईमान सलामत ले जाना मेरे लिये बाइ़से

1 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان الدواء الذى به يستجلب... الخ، ٤/٢١١.

www.dawateislami.net

मलाल है। और मैं उस से कह रहा हूं कि अभी नहीं, जब तक एक भी सांस बाक़ी है मैं ख़त़रे में हूं, मैं (तुझ से) पुर अम्न नहीं हो सकता।"(1)

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ औलिया के सरदार हैं लेकिन ख़ौफ़े ख़ुदा का जो आ़लम था इस का अन्दाज़ा आप की त़रफ़ मन्सूब इन अश्आ़र से लगाया जा सकता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ईद के दिन फ़रमाया :

خلق گوید کہ فردای روز عید است   خوشی در روحِ ہر مومن پدید است
دراں روزے کہ باایماں بمیرم   مرا در ملک خود آں روز عید است

या'नी लोग कह रहे हैं कि कल ईद है! कल ईद है! और सब ख़ुश हैं लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया मेरे लिये तो वोही दिन ईद होगा।

ला'नत करने से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल

यहां आयत में काफ़िरों पर ला'नत की गई है। येह मस्अला याद रखना चाहिये कि जिस शख़्स के कुफ़्र पर मरने का यक़ीन न हो उस पर ला'नत न की जाए नीज़ फ़ासिक़ का नाम ले कर ला'नत जाइज़ नहीं जैसे कहा जाए "फ़ुलां शख़्स पर ला'नत हो" अलबत्ता वस्फ़ के साथ ला'नत कर सकते हैं जैसे अह़ादीस में झूटों, सूदख़ोरों, चोरों और शराबियों वग़ैरा पर ला'नत की गई है। नीज़ वस्फ़ के ए'तिबार से ला'नत क़ुरआने पाक में भी की गई है जैसे झूटों के बारे में फ़रमाया गया कि

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत।

﴿وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ﴾ : **और तमाम लोगों की ला'नत है।** मोमिन तो काफ़िरों पर ला'नत करेंगे ही, बरोज़े क़ियामत काफ़िर भी एक दूसरे पर ला'नत करेंगे।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हमेशा रहेंगे उस में न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए।

1 ......تذکرۃ الاولیاء، ذکر امام احمد حنبل، ص١٩٩، الجزء الاول.
2 ......اٰل عمران:٦١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह हमेशा उस में रहेंगे, उन पर से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी।

﴾لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ : **उन पर से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा।**﴿ कुफ़्फ़ार को कभी अ़ज़ाब से छुटकारा न मिलेगा और न उन्हें नेक आ'माल की या तौबा की मोहलत दी जाएगी। काफ़िर का अ़मल उसे कुछ नफ़्अ़ नहीं देता अलबत्ता उ़लमा ने फ़रमाया है और अह़ादीस से समझ आता है कि जिस अ़मल का तअ़ल्लुक़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी से हो उस से काफ़िर को भी फ़ाएदा होता है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम में है कि अबू त़ालिब के अ़ज़ाब में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से कमी हुई और यूंही नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में अबू लहब ने अपनी लौंडी सुवैबा को आज़ाद किया तो जिस उंगली के इशारे से उस ने आज़ाद किया था उस से उसे कुछ सैराब किया जाता है। येही कलाम अ़ल्लामा ऐ़नी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अबू लहब वाली ह़दीस के तह़त उ़म्दतुल क़ारी जिल्द नम्बर 14 सफ़ह़ा 45 पर फ़रमाया है।

ع ١٩

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेहरबान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बड़ी रह़मत वाला, मेहरबान है।

﴾وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ : **और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है।**﴿ कुफ़्फ़ार ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** तआ़ला की शान व सिफ़त मा'लूम की तो येह आयते मुबारका नाज़िल हुई कि तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है।(1) न उस के अज्ज़ा हैं, न कोई उस की मिस्ल है, मा'बूद व रब होने में कोई उस का शरीक नहीं, वोह अपनी ज़ातो सिफ़ात और अफ़्आ़ल में यक्ता है, मख़्लूक़ को तन्हा उसी ने बनाया, वोह अपनी ज़ात में अकेला है।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٦٣، ١/١٠٨.

www.dawateislami.net

इस्मे आ'ज़म वाली आयात

हज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआला का इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है, एक येह आयत :

وَ اِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِيۡمُ

दूसरी सूरए आले इमरान की इब्तिदाई आयत :

"الٓمّٓ ۙ﴿۱﴾ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ"(1)

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ
الَّتِیۡ تَجۡرِیۡ فِی الۡبَحۡرِ بِمَا یَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡیَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِیۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪
وَّتَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَیۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ
لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की तब्दीली में और कश्ती में जो दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और उस पानी में जो **अल्लाह** ने आस्मान से उतारा फिर उस के साथ मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शी और ज़मीन में हर

1 ......ترمذی، کتاب الدعوات، ٦٤-باب، ٥/٢٩١، الحدیث: ٣٤٨٩.

www.dawateislami.net

क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल जो आस्मान और ज़मीन के दरमियान हुक्म के पाबन्द हैं इन सब में यक़ीनन अ़क़्ल मन्दों के लिये निशानियां हैं।

﴾اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ﴿ **: बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में (निशानियां हैं)।** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द मुश्रिकीन के तीन सो साठ बुत थे जिन्हें वोह मा'बूद मानते थे उन्हें येह सुन कर बड़ी ह़ैरत हुई कि मा'बूद सिर्फ़ एक ही है उस के सिवा मा'बूद नहीं। इस लिये उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ऐसी आयत त़लब की जिस से **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत साबित हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1] और उन्हें येह बताया गया कि आस्मान व ज़मीन की तख़्लीक़, आस्मान की बुलन्दी, उस में चमक्ते हुए सितारे, उस का बिग़ैर सुतूनों के क़ाइम होना, सूरज चांद, सितारों के ज़रीए़ उस की ज़ीनत सब **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत की निशानियां हैं। यूंही ज़मीन और इस की वुस्अ़त, इस में मौजूद पहाड़, मा'दिनिय्यात, जवाहिरात, इस में रवां समुन्दर, दरिया, चश्मे, इस से उगने वाले दरख़्त, सब्ज़ा, फल, फूल, नबातात, शबो रोज़ का आना जाना, दिन रात का छोटा बड़ा होना, समुन्दर में भारी बोझ के बा वुजूद कश्तियों का तैरना, लोगों का उस में सुवार होना, समुन्दरी अ़जाइबात, हवाओं का चलना, समुन्दर के ज़रीए़ मशरिक़ो मग़रिब में तिजारत करना, समुन्दर से बुख़ारात का उठना, बारिश की सूरत में बरसना, बारिश से ख़ुश्क और मुर्दा ज़मीन का सर सब्ज़ो शादाब हो जाना, उस पानी और उस के समरात से ज़िन्दगी में बाग़ो बहार आना, ज़मीन में करोड़ों क़िस्म के ह़ैवानात का होना, हवाओं की गर्दिश, इन के ख़वासो अ़जाइबात, येह तमाम चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला के इल्मो ह़िक्मत और उस की क़ुदरतो वह़दानिय्यत पर अ़ज़ीम दलीलें हैं। येह सारा तो एक क़िस्म का इज्माली बयान है। मज़्कूरा बाला चीज़ों में हर एक पर जुदागाना ग़ौरो फ़िक्र करें तो **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत के ऐसे ह़ैरत अंगेज़ करिश्मे नज़र आते हैं कि अ़क़्ले इन्सानी दंग रह जाती है। काएनात में इन्तिहाई कसरत से पाई जाने वाली हवा पर ही ग़ौर कर लें तो इस में न जाने कितनी गेसें, कितनी तासीरात और ज़रूरिय्याते इन्सानी की कितनी बुन्यादी चीज़ें हैं। सिर्फ़ येही देख लें कि अगर हवा न हो तो तमाम इन्सान दस मिनट के अन्दर अन्दर मर जाएं, ज़मीन के ऊपर और हवा में पाए जाने वाले जानवरों की ह़यात ख़त्म हो जाए। येह तो क़ुदरते इलाही की एक क़िस्म की सिर्फ़ एक तासीर है जब कि क़ुदरते इलाही की खरबों से ज़ाइद क़िस्मों में एक एक चीज़ में करोड़ों अ़जाइबात हैं। किसी ज़माने में आंख को सिर्फ़ देखने का एक आला समझा जाता था लेकिन इल्मी तरक़्क़ी के साथ साथ आंख के

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٦٤، ص٨٩، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ऐसे ऐसे ज़ाहिरी व बातिनी, जिस्मानी व रूहानी अ़जाइबात सामने आ रहे हैं कि अब सिर्फ़ आंख से मुतअ़ल्लिक़ा उ़लूम की अक़्साम न जाने कितनी हैं और लाखों लोग इस इ़ल्म के माहिर होने के बा वुजूद इस बात का दा'वा नहीं कर सकते कि हम ने आंख से मुतअ़ल्लिक़ हर चीज़ का इ़ल्म ह़ासिल कर लिया है।

साइन्सी उ़लूम भी अल्लाह तआ़ला की मा'रिफ़त का ज़रीआ़ बनते हैं

इस आयते मुबारका और इस की तफ़्सीर से येह भी मा'लूम हुवा कि साइन्सी उ़लूम भी मा'रिफ़ते इलाही का ज़रीआ़ बनते हैं। जितना साइन्सी इ़ल्म ज़ियादा होगा उतनी ही **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मतो क़ुदरत की पहचान ज़ियादा होगी, लिहाज़ा अगर कोई दीने इस्लाम की ख़िदमत और **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त की निय्यत से साइन्सी उ़लूम सीखता है तो येह भी अ़ज़ीम इ़बादत होगी नीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने जो काएनात में ग़ौरो फ़िक्र का हुक्म दिया है येह इस हुक्म की ता'मील भी क़रार पाएगी।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا یُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِؕ
وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِؕ وَلَوْ یَرَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اِذْ یَرَوْنَ
الْعَذَابَۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًاۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग **अल्लाह** के सिवा और मा'बूद बना लेते हैं कि उन्हें **अल्लाह** की त़रह़ मह़बूब रखते हैं और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की मह़ब्बत नहीं। और कैसी हो अगर देखें ज़ालिम वोह वक़्त जब कि अ़ज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिये कि सारा ज़ोर ख़ुदा को है और इस लिये कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कुछ लोग **अल्लाह** के सिवा और मा'बूद बना लेते हैं उन्हें **अल्लाह** की त़रह़ मह़बूब रखते हैं और ईमान वाले सब से ज़ियादा **अल्लाह** से मह़ब्बत करते हैं और अगर ज़ालिम देखते जब वोह अ़ज़ाब को आंखों से देखेंगे क्यूं कि तमाम क़ुव्वत **अल्लाह** ही की है और **अल्लाह** सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

www.dawateislami.net

﴾وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا﴿ : **और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और मा'बूद बना लेते हैं।** मुशिरकीन अपने बातिल मा'बूदों से इसी तरह महब्बत करते जैसे **अल्लाह** तआला से महब्बत होनी चाहिये। बुतों की इबादत करते, उन के लिये **अल्लाह** तआला की सिफ़ात साबित करते, उन के नाम पर जानवर ज़ब्ह करते, जो मुआमलात सिर्फ़ **अल्लाह** तआला के लिये ख़ास हैं वोह अपने बुतों के साथ करते, उन की ख़ातिर कट मरने को तय्यार रहते, येह सब बातिल व मरदूद था। याद रहे कि **अल्लाह** तआला के प्यारों से महब्बत **अल्लाह** तआला ही की वज्ह से होती है लिहाज़ा इस महब्बत को जुदा शुमार नहीं किया जा सकता जैसे हमें हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत है तो येह **अल्लाह** तआला ही की महब्बत है।

﴾وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ﴿ : **और ईमान वाले सब से ज़ियादा अल्लाह से महब्बत करते हैं।** **अल्लाह** तआला के मक्बूल बन्दे तमाम मख़्लूक़ात से बढ़ कर **अल्लाह** तआला से महब्बत करते हैं। महब्बते इलाही में जीना और महब्बते इलाही में मरना उन की हक़ीक़ी ज़िन्दगी होता है। अपनी ख़ुशी पर अपने रब की रिज़ा को तरजीह देना, नर्मो गुदाज़ बिस्तरों को छोड़ कर बारगाहे नियाज़ में सर ब सुजूद होना, यादे इलाही में रोना, रिज़ाए इलाही के हुसूल के लिये तड़पना, सर्दियों की त़वील रातों में क़ियाम और गर्मियों के लम्बे दिनों में रोज़े, **अल्लाह** तआला के लिये महब्बत करना, उसी की ख़ातिर दुश्मनी रखना, उसी की ख़ातिर किसी को कुछ देना और उसी की ख़ातिर किसी से रोक लेना, ने'मत पर शुक्र, मुसीबत में सब्र, हर हाल में ख़ुदा पर तवक्कुल, अपने हर मुआमले को **अल्लाह** तआला के सिपुर्द कर देना, अह़कामे इलाही पर अ़मल के लिये हमा वक़्त तय्यार रहना, दिल को ग़ैर की महब्बत से पाक रखना, **अल्लाह** तआला के महबूबों से महब्बत और **अल्लाह** तआला के दुश्मनों से नफ़रत करना, **अल्लाह** तआला के प्यारों का नियाज़ मन्द रहना, **अल्लाह** तआला के सब से प्यारे रसूल व महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिलो जान से महबूब रखना, **अल्लाह** तआला के कलाम की तिलावत, **अल्लाह** तआला के मुक़र्रब बन्दों को अपने दिलों के क़रीब रखना, इन से महब्बत रखना, महब्बते इलाही में इज़ाफ़े के लिये इन की सोहबत इख़्तियार करना, **अल्लाह** तआला की ता'ज़ीम समझते हुए इन की ता'ज़ीम करना, येह तमाम उमूर और इन के इलावा सेंकड़ों काम ऐसे हैं जो महब्बते इलाही की दलील भी हैं और इस के तक़ाज़े भी हैं।

﴾وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا﴿ : **और अगर ज़ालिम देखते।** आयत के इस हिस्से में काफ़िरों से मुतअ़ल्लिक़ कहा जा रहा है कि क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब का मन्ज़र अगर देख लें तो उन्हें मा'लूम होगा कि वोह कितना ख़ौफ़नाक मन्ज़र है।

www.dawateislami.net

إِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब बेज़ार होंगे पेश्वा अपने पैरवों से और देखेंगे अ़ज़ाब और कट जाएंगी उन की सब डोरें ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब पेश्वा अपने पैरवी करने वालों से बेज़ार होंगे और अ़ज़ाब देखेंगे और सब रिश्ते नाते कट जाएंगे ।

﴿إِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا﴾ **: जब पेश्वा बेज़ार होंगे ।** यहां क़ियामत के दिन की मन्ज़र कशी है जब मुश्रिकीन और उन के पेश्वा जिन्हों ने उन्हें कुफ़्र की तरग़ीब दी थी एक जगह जम्अ़ होंगे और अ़ज़ाब नाज़िल होता हुवा देखेंगे तो एक दूसरे से बेज़ारी व नफ़रत का इज़्हार करेंगे । पैरव कार तो कहेंगे, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, हम ने अपने इन सरदारों की पैरवी की और इन्हों ने हमें गुमराह कर दिया तो इन्हें दुगना अ़ज़ाब दे और इन पर बड़ी ला'नत कर, जब कि पेश्वा अपने पैरव कारों से नफ़रत व बेज़ारी का इज़्हार करेंगे । येह मज़्मून क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद जगहों पर बयान किया गया है मसलन सूरए अह़ज़ाब आयत 66 ता 68 और सूरए सबा आयत 31 ता 33 वग़ैरा ।

﴿وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ﴾ **: और सब रिश्ते नाते कट जाएंगे ।** या'नी क़ियामत के दिन काफ़िरों के वोह तमाम तअ़ल्लुक़ात जो दुन्या में उन के माबैन थे ख़्वाह वोह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां या बाहमी मुवाफ़क़त के अ़हद वोह सब ख़त्म हो जाएंगे और हर कोई अपने आ'माल का जवाब देह होगा, कोई किसी का मददगार न बन सकेगा । याद रहे कि क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार के रिश्ते तो टूट जाएंगे लेकिन औलिया व मुत्तक़ीन व सालिह़ीन के साथ मुसल्मानों का रिश्ता बाक़ी रहेगा जैसे क़ुरआने पाक में है :

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىِٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : परहेज़ गारों के इलावा उस दिन गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे ।

(1) الزخرف:٦٧.

www.dawateislami.net

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कहेंगे पैरव काश हमें लौट कर जाना होता (दुन्या में) तो हम इन से तोड़ देते जैसे इन्हों ने हम से तोड़ दी, यूंही **अल्लाह** उन्हें दिखाएगा उन के काम उन पर ह़स्रतें हो कर और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और पैरव कार कहेंगे अगर हमें एक मरतबा लौट कर जाना मिल जाए तो हम इन पेश्वाओं से ऐसे ही बेज़ार हो जाते जैसे येह हम से बेज़ार हुए हैं । **अल्लाह** इसी त़रह़ उन्हें उन के आ'माल उन पर ह़सरत बना कर दिखाएगा और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ।

﴿لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً﴾ **: अगर हमें एक मरतबा लौट कर जाना मिल जाता ।** काफ़िर इन्तिहाई तमन्ना करेंगे कि काश उन्हें एक मरतबा दुन्या में लौट कर जाना मिल जाए तो अव्वलन अपने पेश्वाओं से बेज़ारी का इज़्हार कर लें, मज़ीद अपने बात़िल मा'बूदों से बेज़ार हो जाएं और तीसरा ईमान ला कर नेक आ'माल कर लें । काफ़िरों की मौत के वक़्त भी ऐसी ही तमन्नाएं होती हैं जैसा कि सूरए मुअमिनून आयत **99** और **100** में है कि काफ़िर कहेगा, ऐ **अल्लाह** मुझे वापस लौटा दे ताकि मैं कुछ तो नेकी कर लूं । यूंही सूरए ज़ुमर आयत **58** में है कि काफ़िर कहेगा, ऐ काश कि मुझे एक मरतबा वापसी मिल जाए ताकि मैं नेकियां कर लूं । इस त़रह़ का मज़्मून पारह **24** सूरए ज़ुमर और सूरए मुअमिन में कसरत से बयान किया गया है ।

नेक आ'माल की ह़सरत करने वाले लोग

याद रहे कि ईमान और आ'माले सालिह़ा की अस्ल ह़सरत तो काफ़िर ही को होगी लेकिन मुसल्मान भी नेकियों की कमी और गुनाहों में मुलव्वस होने पर ह़सरत का इज़्हार करेंगे, जैसे ह़दीसे मुबारक है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर मरने वाले को अफ़्सोस व नदामत होगी । सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !**

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क्या नदामत होगी ? फ़रमाया : अगर नेक होगा तो ज़ियादा नेकियां न करने पर नादिम होगा और अगर गुनहगार होगा तो गुनाहों से बाज़ न आने पर नादिम होगा।(1)

ह़सरत की और भी सूरतें होंगी जैसे दूसरों पर ज़ुल्म करने और उन्हें तक्लीफ़ देने वालों को ढेरों ढेर नेकियों के बा वुजूद ह़सरत होगी क्यूं कि उन की नेकियां दूसरों को दे दी जाएंगी।(2)

जिसे त़लबे इ़ल्म का मौक़अ़ मिला लेकिन इ़ल्म ह़ासिल न किया उसे ह़सरत होगी।(3)

किसी जगह जम्अ़ होने वाले लोग **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र किये बिग़ैर उठ गए तो वोह मजलिस उन के लिये ह़सरत होगी।(4)

﴿كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ : **अल्लाह इसी त़रह़ उन्हें उन के आ'माल दिखाएगा।**﴾ क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला काफ़िरों के बुरे आ'माल उन के सामने करेगा तो उन्हें निहायत ह़सरत होगी कि उन्हों ने येह काम क्यूं किये थे। एक क़ौल येह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमां बरदारी करते तो येह तुम्हारे लिये थे, फिर जन्नत की वोह आ़लीशान मन्ज़िलें मोमिनीन को दे दी जाएंगी।(5)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में ह़लाल पाकीज़ा है और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो ! जो कुछ ज़मीन में ह़लाल पाकीज़ा है उस में से खाओ और शैत़ान के रास्तों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

1 ......ترمذی، کتاب الزھد، ٥٩-باب، ١٨١/٤، الحدیث: ٢٤١١.
2 ......مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٤، الحدیث: ٥٩ (٢٥٨١).
3 ......ابن عساکر، حرف المیم، محمد بن احمد بن جعفر... الخ، ١٣٧/٥١.
4 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزھد، کلام عبد الله بن عمرو رضی الله عنه، ١٨٩/٨، الحدیث: ٤.
5 ......خازن، البقرة، تحت الآیة: ١٦٧، ١١٠/١.

www.dawateislami.net

﴿كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا﴾ : **जो कुछ ज़मीन में ह़लाल पाकीज़ा है उस में से खाओ ।** मुशरिकीन ने अपनी त़रफ़ से बहुत से जानवरों को ह़राम क़रार दिया हुवा था, इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई कि ज़मीन में पैदा शुदा चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल की हैं और लोगों के नफ़्अ़ के लिये ही इन्हें पैदा किया है लिहाज़ा सिर्फ़ उन चीज़ों से बचो जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद मन्अ़ फ़रमा दिया और जिन चीज़ों से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया वोह सब ह़लाल हैं ।

अल्लाह तआ़ला की ह़लाल की हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना कैसा है ?

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल की हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना उस की रज़्ज़ाक़िय्यत से बग़ावत है मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जो माल मैं अपने बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता हूं वोह उन के लिये ह़लाल है । और इसी ह़दीस में है कि "मैं ने अपने बन्दों को बात़िल से बे तअ़ल्लुक़ पैदा किया फिर उन के पास शयात़ीन आए और उन्हों ने लोगों को दीन से बहकाया और जो मैं ने उन के लिये ह़लाल किया था उस को ह़राम ठहराया ।"(1)

ह़लाल व त़य्यिब रिज़्क़ से क्या मुराद है ?

ह़लाल व त़य्यिब से मुराद वोह चीज़ है जो बज़ाते ख़ुद भी ह़लाल है जैसे बकरे का गोश्त, सब्ज़ी, दाल वग़ैरा और हमें ह़ासिल भी जाइज़ ज़रीए़ से हो या'नी चोरी, रिश्वत, डकैती वग़ैरा के ज़रीए़ न हो ।

रिज़्क़े ह़लाल के फ़ज़ाइल और ह़राम रिज़्क़ की मज़म्मत

अह़ादीसे मुबारका में रिज़्क़े ह़लाल की बहुत फ़ज़ीलत और रिज़्क़े ह़राम की बहुत मज़म्मत बयान की गई है । उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात कर दे या'नी मेरी हर दुआ़ क़बूल हो । ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ सा'द ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, अपनी ख़ूराक पाक करो, मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे । उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते

---

(1)......مسلم، كتاب الجنة و صفة نعيمها و اهلها ، باب صفات التى يعرف بها فى الدنيا اهل الجنة و اهل النار ، ص ١٥٣٢، الحديث: ٦٣ (٢٨٦٥).

www.dawateislami.net

क़ुदरत में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़्मा डालता है तो चालीस दिन तक उस का कोई अ़मल क़बूल नहीं किया जाता और जिस बन्दे का गोश्त सूद और ह़राम ख़ोरी से उगा उस के लिये आग ज़ियादा बेहतर है।[1]

(2)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने ह़लाल माल कमाया फिर उसे ख़ुद खाया या उस कमाई से लिबास पहना और अपने इ़लावा **अल्लाह** तआ़ला की दीगर मख़्लूक़ (जैसे अपने अहलो इ़याल और दीगर लोगों) को खिलाया और पहनाया तो उस का येह अ़मल उस के लिये बरकत व पाकीज़गी है।''[2]

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है, जिस ने इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाया और उसे वहां ख़र्च किया जहां ख़र्च करने का ह़क़ था तो **अल्लाह** तआ़ला उसे (आख़िरत में) सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने दुन्या में ह़राम त़रीक़े से माल कमाया और उसे नाह़क़ जगह ख़र्च किया तो **अल्लाह** तआ़ला उसे ज़िल्लतो ह़क़ारत के घर (या'नी जहन्नम) में दाख़िल कर देगा और **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले कई लोगों के लिये क़ियामत के दिन जहन्नम होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : जब कभी बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।[4]

इन अह़ादीस को सामने रखते हुए हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह ह़लाल रोज़ी कमाए और ह़लाल रोज़ी से ही खाए और पहने इसी त़रह़ दूसरों को भी जो माल दे वोह ह़लाल माल में से ही दे। हमारे बुज़ुर्गाने दीन रिज़्क़ के ह़लाल होने में किस क़दर एह़तियात़ करते थे इस की एक झलक मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का ग़ुलाम आप की ख़िदमत में दूध लाया। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उसे पी लिया। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की, मैं पहले जब भी कोई चीज़ पेश करता तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उस के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाते थे लेकिन इस दूध के बारे में कुछ दरयाफ़्त नहीं फ़रमाया ? येह

1......معجم الاوسط، من اسمه محمد، ۳۴/۵، الحديث: ۶۴۹۵.
2......الاحسان بترتيب ابن حبان ، كتاب الرضاع ، باب النفقة ، ذكر كتبة اللّٰه جلّ و علا الصدقة للمنفق... الخ ، ۲۱۸/۴، الحديث: ۴۲۲۲، الجزء السادس.
3......بنی اسرائيل: ۹۷.
4......شعب الايمان، الثامن والثلاثون من شعب الايمان، ۳۹۶/۴، الحديث: ۵۵۲۷.

www.dawateislami.net

सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा, येह दूध कैसा है ? ग़ुलाम ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बीमार पर मन्तर फूंका था जिस के मुआवज़े में आज उस ने येह दूध दिया है। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह सुन कर अपने हल्क़ में उंगली डाली और वोह दूध उगल दिया। इस के बा'द निहायत आजिज़ी से दरबारे इलाही में अर्ज़ किया : "**या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, जिस पर मैं क़ादिर था वोह मैं ने कर दिया, इस दूध का थोड़ा बहुत हिस्सा जो रगों में रह गया है वोह मुआफ़ फ़रमा दे।"(1)

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो तुम्हें येही हुक्म देगा बदी और बे ह़याई का और येह कि **अल्लाह** पर वोह बात जोड़ो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बे ह़याई का हुक्म देगा और येह (हुक्म देगा) कि तुम **अल्लाह** के बारे में वोह कुछ कहो जो ख़ुद तुम्हें मा'लूम नहीं।

﴾إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ﴿ **: वोह तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बे ह़याई का हुक्म देगा।** سُوْء और فَحْشَاء को मुतरादिफ़ या'नी हम मा'ना भी क़रार दिया गया है और येह भी कहा गया है कि سُوْء से मुराद मुत़्लक़न गुनाह है और فَحْشَاء से मुराद कबीरा गुनाह हैं।(2)

शैत़ान का काम क्या है ?

शैत़ान का काम ही येह है कि वोह लोगों को बुराई की त़रफ़ बुलाए, कुफ़्रो शिर्क की त़रफ़, **अल्लाह** तआला के मुतअ़ल्लिक़ ग़लत़ अ़क़ाइद मन्सूब करने की त़रफ़ या उस के ह़लाल कर्दा को ह़राम कहने और उस के ह़राम कर्दा को ह़लाल कहने की त़रफ़, बुरे कामों मसलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बोहतान, लड़ाई फ़साद, ह़सद, बुग़्ज़ो कीना, तकब्बुरो अनानिय्यत, नफ़रतो अ़दावत, जंगो जदल, तज़्लीलो तह़क़ीर, इस्तिहज़ा व इल्ज़ाम तराशी वग़ैरा चीज़ों की त़रफ़ बुलाए। यूंही बे ह़याई के काम गाने, बाजे, फ़िल्में, ड्रामे, नाच,

1 ......منهاج العابدين، العقبة الثالثة، تقوى الاعضاء الخمسة، الفصل الخامس، ص٩٧.
2 ......صاوى، البقرة، تحت الآية: ١٦٩، ١/١٤٠.

www.dawateislami.net

मुजरे, बद निगाही, फ़ोह़्श गुफ़्त्गू, गन्दी बातें, ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ात, बुरी निय्यत से देखना, छूना, बदकारी वग़ैरा गुनाहों की त़रफ़ बुलाना शैत़ान का काम है। अफ़्सोस की बात है कि आज कल इन बुराइयों में से बहुत सी चीज़ों की त़रफ़ बुलाने में घर वालों और दोस्त अह़बाब, घर, बाज़ार, मुआ़शरा, अफ़्सर वग़ैरा का तआ़वुन या तरग़ीब होती है। कोई आदमी नेकियों की त़रफ़ आने का सोचता भी है तो मज़्कूरा बाला अफ़राद उसे खींच कर गुनाहों की त़रफ़ ले जाते हैं। ऐ काश हमें अच्छी सोह़बत, अच्छा मुत़ालआ़, अच्छा घराना और अच्छे दोस्त मिल जाएं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْــٴًـا وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए **अल्लाह** के उतारे पर चलो तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ अ़क़्ल रखते हों न हिदायत।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि उस की पैरवी करो जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया है तो कहते हैं : बल्कि हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ अ़क़्ल रखते हों न वोह हिदायत याफ़्ता हों ?

﴾وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ﴿ **: और जब उन से कहा जाए।** जब काफ़िरों से कहा जाता कि तौह़ीद व कुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को ह़लाल जानो जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल किया तो मुश्रिकीन इस का एक ही जवाब देते कि हम तो उसी राहो रस्म और त़ौर त़रीक़े पर चलेंगे जिस पर हमारे बाप दादा चलते आए हैं। उन्हें फ़रमाया गया कि जब बाप दादा दीन के उमूर को न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उन की पैरवी करना ह़माक़त व गुमराही है। बाप दादा चालीस साल की उ़म्र को पहुंच कर ख़ुदकुशी करते हों तो क्या औलाद भी चालीस साल की उम्र में ख़ुदकुशी करे ? वोह रोज़ाना कीचड़ में छलांग मारते हों तो क्या औलाद भी येही शुरूअ़ कर दे ? सीधी बात है कि सह़ीह़ बात में पैरवी की जाए और ग़लत़ में हरगिज़ नहीं।

www.dawateislami.net

शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की पैरवी करना कैसा ?

शरीअ़त के मुक़ाबले में गुमराह बाप दादा की पैरवी करना ह़राम है। यूंही गुनाह के कामों में बाप दादा की पैरवी ना जाइज़ है कि ब हुक्मे ह़दीस **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी के काम में किसी की इत़ाअ़त नहीं की जा सकती।(1)

हमारे हां शादी, मर्ग और दीगर कई मवाक़ेअ़ पर शरीअ़त पर चलने का कहा जाए तो लोग आगे से येही बाप दादा, ख़ानदान और बरादरी के रस्मो रवाज का उ़ज़्र पेश करते हैं येह भी सरासर ग़लत़ व बात़िल है। ख़ुलासए कलाम येह है कि बुरों की पैरवी बुरी है और अच्छों की पैरवी अच्छी जैसे हम बुज़ुर्गाने दीन, सह़ाबा, ताबिईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, औलिया व सालिह़ीन की पैरवी करते हैं तो येह बहुत अच्छी है कि इस का हुक्म ख़ुद क़ुरआन ने दिया है चुनान्चे फ़रमाया :

وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सच्चों के साथ हो जाओ।

हर नमाज़ में बुज़ुर्गों की पैरवी की दुआ़ मांगने का फ़रमाया चुनान्चे फ़रमाया :

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन लोगों के रास्ते पर चला जिन पर तू ने इन्आ़म किया।

अल्लाह तआ़ला हमें अच्छों की पैरवी करने और बुरों की पैरवी से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً
وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْیٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िरों की कहावत उस की सी है जो पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने, बहरे गूंगे अन्धे तो उन्हें समझ नहीं।

1 ......مسلم، كتاب الامارة، باب وجوب طاعة الامراء فى غير معصية... الخ، ص١٠٢٤، الحديث: ٣٩ (١٨٤٠).
2 ......التوبہ:١١٩. 3 ......الفاتحہ:٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और काफ़िरों की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो किसी ऐसे को पुकारे जो ख़ाली चीख़ो पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता। (येह कुफ़्फ़ार) बहरे, गूंगे, अन्धे हैं तो येह समझते नहीं।

﴿وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا﴾ **: और काफ़िरों की मिसाल।** हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم काफ़िरों को मुसल्सल दीने ह़क़ की दा'वत देते रहते। काफ़िर सुनते तो थे लेकिन उस से कुछ नफ़्अ़ ह़ासिल न करते या'नी ईमान न लाते। उन के इस सुनने की मिसाल बयान की गई कि जिस त़रह़ जानवरों का एक रेवड़ हो और उन का मालिक उन्हें आवाज़ दे तो वोह मह़ज़ एक आवाज़ तो सुनते हैं लेकिन मालिक के कलाम का मफ़्हूम नहीं समझते, यूंही काफ़िरों का ह़ाल है कि ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें ह़क़ की त़रफ़ बुलाते हैं, येह उन का कलाम सुनते हैं लेकिन जवाब में जानवरों जैसा त़र्ज़े अ़मल ज़ाहिर करते हैं। ऐसे आंख, कान, ज़बान का क्या फ़ाएदा जिस से कोई नफ़्अ़ न उठाया जा सके। इस ए'तिबार से तो येह बहरे, गूंगे और अन्धे हैं। इस आयत में कुछ दर्स हमारे लिये भी है कि दा'वतो तब्लीग़, वा'ज़ो नसीह़त, क़ुरआनो ह़दीस, इस्लाह़ो तफ़्हीम के बा वुजूद जो त़र्ज़े अ़मल हमारा है वोह भी कुछ सोचने का तक़ाज़ा करता है कि इस ए'तिबार से हमारे आंख, कान भी खुले हुए हैं या नहीं ?

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजें और **अल्लाह** का एह़सान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! हमारी दी हुई सुथरी चीजें खाओ और **अल्लाह** का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

﴿وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ﴾ **: और अल्लाह का शुक्र अदा करो।** **अल्लाह** तआ़ला ने हमें खाने से मन्अ़ नहीं फ़रमाया बल्कि कई मक़ामात पर रिज़्क़े इलाही खाने का बयान किया, जैसे सूरए बक़रह आयत 168, सूरए माइदह आयत 87, 88, सूरए आ'राफ़ आयत 31, 32 और सूरए नह़्ल आयत

www.dawateislami.net

114 वग़ैरा। अल ग़रज़ इस त़रह़ के बीसियों मक़ामात हैं जहां रिज़्क़े इलाही से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने की इजाज़त दी गई है। सिर्फ़ येह शर्त़ लगाई है कि ह़राम चीज़ें न खाओ, ह़राम ज़रीए से ह़ासिल कर के न खाओ, खा कर ग़ाफ़िल न हो जाओ, येह चीज़ें तुम्हें इत़ाअ़ते इलाही से दूर न कर दें, खा पी कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। चुनान्चे फ़रमाया : और **अल्लाह** का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इ़बादत करते हो।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने येही तुम पर ह़राम किये हैं मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया गया तो जो नाचार हो न यूं कि ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्‌रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जानवर ह़राम किये हैं जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलन्द किया गया तो जो मजबूर हो जाए ह़ालां कि वोह न ख़्वाहिश रखने वाला हो और न ज़रूरत से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्‌रबान है।

﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ : **तुम पर येही ह़राम किये।**﴾ कुफ़्फ़ार ने चूंकि अपनी त़रफ़ से बहुत से जानवरों को ह़राम क़रार दे रखा था जिन का बयान सूरए माइदह आयत 103 में आएगा। कुफ़्फ़ार की इस ह़रकत पर फ़रमाया गया कि जिन जानवरों को तुम ने ह़राम समझ रखा है जैसे बह़ीरा वग़ैरा वोह ह़राम नहीं, ह़राम सिर्फ़ वोह हैं जो हम ने फ़रमा दिये। येही मज़्मून मज़ीद तफ़्सील के साथ सूरए माइदह आयत **3** में भी मौजूद है।

अल्लाह तआ़ला की ह़राम कर्दा चार चीज़ों की तफ़्सील

यहां आयत में चार चीज़ों का बयान है : (1) मुर्दार, (2) ख़ून, (3) ख़िन्ज़ीर का गोश्त,

www.dawateislami.net

(4) ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाने वाला जानवर। इन की तफ़्सील येह है :

(1)...... मुर्दार : जो ह़लाल जानवर बिग़ैर ज़ब्ह़ किये मर जाए या उस को शर्ई त़रीक़े के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन मुसल्मान और किताबी के इलावा किसी ने ज़ब्ह़ किया हो या जान बूझ कर तक्बीर पढ़े बिग़ैर ज़ब्ह़ किया गया हो या गला घोंट कर या लाठी, पथ्थर, ढेले, ग़ुलेल की गोली से मार कर हलाक किया गया हो या वोह बुलन्दी से गिर कर मर गया हो या किसी जानवर ने उसे सींग मार कर मार दिया हो या किसी दरिन्दे ने हलाक किया हो उसे मुर्दार कहते हैं और इस का खाना ह़राम है अलबत्ता मुर्दार का दबाग़त किया हुवा चमड़ा काम में लाना और उस के बाल सींग हड्डी, पठ्ठे से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है।[1]

ज़िन्दा जानवर का वोह उ़ज़्व जो काट लिया गया हो वोह भी मुर्दार ही है।

(2)...... ख़ून : ख़ून हर जानवर का ह़राम है जब कि बहने वाला ख़ून हो। सूरए अन्आ़म आयत **145** में फ़रमाया : "اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا या बहने वाला ख़ून" ज़ब्ह़ के बा'द जो ख़ून गोश्त और रगों में बाक़ी रह जाता है वोह नापाक नहीं।

(3)...... ख़िन्ज़ीर : ख़िन्ज़ीर (या'नी सुअर) नजिसुल ऐन है इस का गोश्त पोस्त बाल नाख़ुन वग़ैरा तमाम अज्ज़ा नजिस व ह़राम हैं, किसी को काम में लाना जाइज़ नहीं चूंकि आयत में ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिये यहां सिर्फ़ गोश्त का ज़िक्र हुवा।

(4)...... ग़ैरुल्लाह के नाम का ज़बीह़ा : इस का मा'ना येह है कि जानवर ज़ब्ह़ करते वक़्त **अल्लाह** तआ़ला के इलावा किसी और का नाम लिया जाए और जिस जानवर को ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया जाए वोह ह़राम व मुर्दार है अलबत्ता अगर ज़ब्ह़ फ़क़त़ **अल्लाह** तआ़ला के नाम पर किया और इस से पहले या बा'द में ग़ैर का नाम लिया मसलन येह कहा कि अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का दुम्बा या जिस की त़रफ़ से वोह ज़बीह़ा है उसी का नाम लिया मसलन येह कहा कि अपने मां बाप की त़रफ़ से ज़ब्ह़ कर रहा हूं या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मक़्सूद है उन का नाम लिया तो येह जाइज़ है, इस में कुछ ह़रज नहीं और इस फ़े'ल को ह़राम कहना और ऐसे जानवर को मुर्दार कहना सरासर जहालत है क्यूं कि ज़ब्ह़ से पहले या ज़ब्ह़ के बा'द ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब करना ऐसा फ़े'ल नहीं जो कि ह़राम हो जैसे हम अपनी आ़म गुफ़्तगू में बहुत सी इ़बादात को ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब करते हैं, मसलन यूं कहते हैं कि ज़ोहर की नमाज़, जनाज़े की नमाज़, मुसाफ़िर की नमाज़, इमाम की नमाज़, मुक़्तदी की नमाज़, बीमार की नमाज़, पीर का रोज़ा, ऊंटों की ज़कात और का'बे का ह़ज वग़ैरा, जब येह

[1]......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٧٣، ص ٤٤.

www.dawateislami.net

निस्बतें ह़राम नहीं और इन निस्बतों की वज्ह से नमाज़, ज़कात और ह़ज वग़ैरा में कुफ़्रो शिर्क और ह़ुरमत तो दर किनार नाम को भी कराहत नहीं आती तो किसी वली या बुज़ुर्ग या किसी और की त़रफ़ मन्सूब कर के फ़ुलां की बकरी कहना कैसे ह़राम हो गया और इस से येह ख़ुदा के ह़लाल किये हुए जानवर क्यूं जीते जी मुर्दार और सुअर हो गए कि अब किसी सूरत ह़लाल नहीं हो सकते। जो लोग इन्हें मुर्दार कहते हैं वोह शरीअ़ते मुत़ह्हरा पर सख़्त जुरअत करते हैं। **याद रखें** कि कोई मुसल्मान **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और का नाम ले कर जानवर ज़ब्ह़ नहीं करता और किसी मुसल्मान के बारे में शरई़ सुबूत के बिग़ैर येह कहना कि उस ने ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर जानवर ज़ब्ह़ किया तो येह बद गुमानी है और किसी मुसल्मान पर बद गुमानी करना ह़राम है और ह़त्तल इम्कान उस के क़ौल और फ़े'ल को सह़ीह़ वज्ह पर मह़मूल करना वाजिब है और ज़ब्ह़ के मुआ़मले में दिल के इरादे पर उस वक़्त तक कोई हुक्म नहीं लगाया जा सकता जब तक क़ाइल अपने इरादे की तसरीह़ न कर दे और अगर बिल्फ़र्ज़ बा'ज़ ना समझ अह़मक़ों पर शरई़ सुबूत के साथ साबित हो भी जाए कि उन्हों ने ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया और उस ज़ब्ह़ से مَعَاذَ الله उन का मक़्सूद ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत है तो कुफ़्र का हुक्म सिर्फ़ उन्हीं पर होगा, उन की वज्ह से आ़म हुक्म लगा देना और बाक़ी लोगों की भी येही निय्यत समझ लेना बात़िल है। ख़ुलासा येह है कि मुसल्मान अपने रब तआ़ला का नाम ले कर ज़ब्ह़ कर रहा है तो उस पर बद गुमानी ह़राम व ना रवा है और ख़ुद से बनाए हुए ज़ेहनी तसव्वुरात पर किसी मुसल्मान को مَعَاذَ الله कुफ़्र का मुर्तकिब समझना **अल्लाह** तआ़ला के ह़लाल किये हुए को ह़राम कह देना है और तक्बीर के वक़्त जो **अल्लाह** तआ़ला का नाम लिया गया उसे बात़िल व बे असर ठहराना हरगिज़ सह़ीह़ होने की कोई वज्ह नहीं रखता। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हें क्या है कि तुम उस में से न खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम लिया गया है।

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हमें शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने ज़ाहिर पर अ़मल करने का हुक्म फ़रमाया है बात़िन की तक्लीफ़ न दी तो जब उस ने **अल्लाह** तआ़ला का नामे पाक ले कर ज़ब्ह़ किया तो जानवर का ह़लाल होना वाजिब है कि दिल का इरादा जान लेने की त़रफ़ हमें कोई राह नहीं।"[2]

1 ......انعام:۱۱۹. 2 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية:١٧٣، ٢/٢٠١.

www.dawateislami.net

इस मस्अले के बारे में मज़ीद तफ़्सील और दलाइल जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 20वीं जिल्द में मौजूद आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का रिसाला ''سُبُلُ الْاَصْفِيَاء فِيْ حُكْمِ ذَبَائِح لِلاَوْلِيَاء'' मुतालआ फ़रमाएं।

﴿فَمَنِ اضْطُرَّ : **तो जो मजबूर हो जाए।**﴾ मुज़्तर या'नी मजबूर जिसे हराम चीज़ें खाना हलाल है वोह है जो हराम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से जान चली जाने का ख़ौफ़ हो और कोई हलाल चीज़ मौजूद न हो ख़्वाह भूक या ग़ुरबत की वज्ह से येह हालत हो या कोई शख़्स हराम के खाने पर मजबूर करता हो और न खाने की सूरत में जान का अन्देशा हो ऐसी हालत में जान बचाने के लिये हराम चीज़ का क़दरे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि हलाकत का ख़ौफ़ न रहे बल्कि इतना खाना फ़र्ज़ है।[1]

﴿غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ : **बख़्शने वाला, मेहरबान।**﴾ हालते मजबूरी में हराम खाने की इजाज़त देना और इसे मुआफ़ रखना **अल्लाह** तआला की करम नवाज़ी की दलील है इस लिये आयत के आख़िर में मग़्फ़िरत व रहमत वाली सिफ़ात का तज़्किरा फ़रमाया।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो छुपाते हैं **अल्लाह** की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं और **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा और न उन्हें सुथरा करे, और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो **अल्लाह** की नाज़िल की हुई किताब को छुपाते हैं और उस के बदले ज़लील क़ीमत लेते हैं वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं और **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन से न कलाम फ़रमाएगा और न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۷۳، ۱/۱۱۳.

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ﴾**: बेशक वोह लोग जो अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब को छुपाते हैं।** काफ़िरों के एक गुरौह मुश्रिकीन के आ'माल का ज़िक्र करने के बा'द अब दूसरे गुरौह या'नी यहूदियों का तज़्किरा किया जा रहा है। पहला गुरौह **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ में कोताही करने वाला था और दूसरा गुरौह मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में कोताही करने वाला है। **शाने नुज़ूल :** यहूदियों के सरदार और उ़लमा येह उम्मीद रखते थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन में मब्ऊ़स होंगे, लेकिन जब इन्हों ने देखा कि सरकारे दो आ़लम, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूसरी क़ौम में से मब्ऊ़स फ़रमाए गए तो इन्हें येह अन्देशा हुवा कि लोग तौरैत व इन्जील में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ देख कर आप की फ़रमां बरदारी की त़रफ़ झुक पड़ेंगे और इन यहूदी सरदारों और उ़लमा के नज़राने, हदिय्ये, तोह़फ़े तह़ाइफ़ सब बन्द हो जाएंगे, हुकूमत जाती रहेगी तो इस ख़याल से उन्हें ह़सद पैदा हुवा और तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और आप के वक़्ते नुबुव्वत का बयान था इन्हों ने उस को छुपा दिया। इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।(1)

यहूदियों के इस त़रह़ के त़र्ज़े अ़मल पर फ़रमा दिया गया कि ज़ाती मफ़ादात, माले दुन्या और ऐ़शो आराम की ख़ात़िर **अल्लाह** तआ़ला की किताब और उस के अह़काम, अ़ज़्मतो शाने मुस्त़फ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुपाने वाले मालो दौलत से अपने ख़ज़ाने नहीं भर रहे बल्कि ह़क़ीक़त में अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं कि येह ह़रकात इन्हें जहन्नम में ले जाने का सबब होंगी, क़ियामत के दिन येह लोग **अल्लाह** तआ़ला से हम कलामी के शरफ़ से मह़रूम होंगे, रह़मते इलाही इन से दूर होगी, कुफ़्रो मा'सियत की गन्दगी में डूबे हुए होंगे और इन्हें किसी भी त़रह़ गुनाहों से पाक नहीं किया जाएगा बल्कि जहन्नम में फेंका जाएगा। याद रहे कि छुपाना येह भी है कि किताब के मज़्मून पर किसी को मुत्त़लअ़ न होने दिया जाए, न वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए और न दिखाया जाए और येह भी छुपाना है कि ग़लत़ तावीलें कर के मा'ना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मा'ना पर पर्दा डाला जाए। यहूदी हर त़रह़ की तावीलें करते थे और अभी तक बहुत से लोगों में इस त़रह़ का त़र्ज़े अ़मल जारी है क़ुरआन पढ़ कर तौह़ीदे इलाही की ग़लत़ तश्रीह़ करना, अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आयात को छुपाना, उन के मआ़नी बदलना, पर्दे और सूद वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ आयात के मआ़नी में तह़रीफ़ करना सब इसी फ़े'ले ह़राम में दाख़िल हैं।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٧٣، ١/١١٣.

www.dawateislami.net

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَ الْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब, तो किस दरजे उन्हें आग की सहार है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब ख़रीद लिया तो येह कितना आग को बरदाश्त करने वाले हैं।

﴿اَلَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى : **जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली।**﴾ या'नी जो हिदायत व मग़्फ़िरत येह लोग इख़्तियार कर सकते थे उस के छोड़ने को यहां फ़रमाया गया कि इन्हों ने हिदायत व मग़्फ़िरत की जगह ज़लालत व अ़ज़ाब ख़रीद लिया। येह नहीं कि इन के पास हिदायत व मग़्फ़िरत थी और फिर इन्हों ने उसे बेच दिया। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "दुन्या में सब से बेहतरीन चीज़ हिदायत और इ़ल्म है और सब से बुरी चीज़ गुमराही और जहालत है तो जब यहूदी उ़लमा ने दुन्या में हिदायत और इ़ल्म को छोड़ दिया और गुमराही व जहालत पर राज़ी हो गए तो इस बात में कोई शक न रहा कि वोह दुन्या में (अपनी जानों के साथ) इन्तिहाई ख़ियानत कर रहे हैं। नीज़ आख़िरत में सब से बेहतरीन चीज़ मग़्फ़िरत है और सब से ज़ियादा नुक़्सान देह चीज़ अ़ज़ाब है तो जब उन्हों ने मग़्फ़िरत को छोड़ दिया और अ़ज़ाब पर राज़ी हो गए तो बिला शुबा वोह आख़िरत में इन्तिहाई नुक़्सान उठाने वाले हैं और जब इन का ह़ाल येह है तो ला मुह़ाला दुन्या व आख़िरत में सब से बड़े ख़सारे में येह लोग हैं। इस आयत में यहूदी उ़लमा के बारे में फ़रमाया गया कि उन्हों ने मग़्फ़िरत के बदले अ़ज़ाब ख़रीद लिया, क्यूं कि वोह ह़क़ बात को जानते थे और उन्हें येह भी इ़ल्म था कि सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ ज़ाहिर करने में और इन के बारे में शुबुहात ज़ाइल करने में अ़ज़ीम सवाब है और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो शान छुपाने में और इन से मुतअ़ल्लिक़ लोगों के दिलों में शुबुहात डालने की सूरत में बड़ा अ़ज़ाब है, इस के बा वुजूद जब उन्हों ने ह़क़ को छुपाया तो ला मुह़ाला उन्हों ने मग़्फ़िरत

www.dawateislami.net

के बदले अ़ज़ाब ख़रीद लिया।"(1)

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ الَّذِیْنَ اخْتَلَفُوْا فِی الْكِتٰبِ لَفِیْ شِقَاقٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۱۷۶﴾ ع

ربع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये कि **अल्लाह** ने किताब ह़क़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ डालने लगे वोह ज़रूर परले सिरे के झगड़ालू हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह (सज़ा) इस लिये है कि **अल्लाह** ने ह़क़ के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और बेशक किताब में इख़्तिलाफ़ करने वाले दूर की मुख़ालफ़त व ज़िद में हैं।

﴿فِی الْكِتٰبِ : **किताब में।**﴾ किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है या तौरैत शरीफ़, पहली सूरत में इख़्तिलाफ़ से मुराद होगा न मानना और दूसरी सूरत में इस से मुराद होगा सह़ीह़ तौ़र पर न मानना क्यूं कि यहूदी क़ुरआन को तो बिल्कुल न मानते थे और तौरैत को मानने के दा'वेदार थे, मगर सह़ीह़ तौ़र पर न मानते थे, वरना ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आते। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस सूरत में किताब से क़ुरआन ही मुराद होगा और उन का इख़्तिलाफ़ येह था कि उन में से बा'ज़ क़ुरआन को शे'र कहते थे, बा'ज़ जादू और बा'ज़ कहानत कहा करते थे।(2)

لَیْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ ابْنَ

1 ......تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۲/ ۲۰۶.

2 ......تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۷۶، ۱/ ۱۸۱، الجزء الثانی.

www.dawateislami.net

السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآىِٕلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ कर वहां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और **अल्लाह** की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़ह्द करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और येही परहेज़ गार हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अस्ल नेकी येह नहीं कि तुम अपने मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ कर लो बल्कि अस्ली नेक वोह है जो **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और **अल्लाह** की मह़ब्बत में अ़ज़ीज़ माल रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों और साइलों को और (ग़ुलाम लौंडियों की) गरदनें आज़ाद कराने में ख़र्च करे और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और वोह लोग जो अ़ह्द कर के अपना अ़ह्द पूरा करने वाले हैं और मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र करने वाले हैं येही लोग सच्चे हैं और येही परहेज़ गार हैं।

﴾لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ﴿ **: अस्ल नेकी येह नहीं कि तुम अपने मुहं मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ कर लो।** ﴾ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत का ख़ास शाने नुज़ूल बयान करने के बा'द फ़रमाया है कि येह ख़ित़ाब अहले किताब और मोमिनीन सब को है और मा'ना येह हैं कि सिर्फ़ क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर लेना अस्ल नेकी नहीं जब तक अ़क़ाइद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे क़िब्ला की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो। येह बात भी ज़ेहन में रखनी चाहिये कि ज़रूरी आ'माल को बजा लाते हुए और दूसरों के अ़मल को ह़क़ीर और मा'मूली

www.dawateislami.net

न समझते हुए किसी ख़ास अ़मल को ज़ियादा रग़बतो मह़ब्बत और कसरत के साथ करना तो दुरुस्त है और इस में कोई ह़रज नहीं लेकिन ज़रूरी अ़मल मसलन फ़राइज़ो वाजिबात तर्क करने की सूरत में या अपने अ़मल और त़रीक़े के इलावा दूसरों के अ़मल और त़रीक़े को ह़क़ारत की निगाह से देखते हुए किसी एक अ़मल को ही अच्छा समझना सरासर बात़िल और ग़लत़ है। मसलन एक आदमी रोज़ों की कसरत करता है तो वोह रोज़े न रखने वाले को ह़क़ीर न समझे, यूंही ज़िक्रो दुरूद की कसरत करने वाला तब्लीग़े दीन में मश्ग़ूल आदमी को कमतर न समझे, यूंही वा'ज़ो नसीह़त करने वाला तह़रीरो तस्नीफ़ और तदरीस से दीन की ख़िदमत करने वाले को कमतर न समझे यहूदियों का रद इसी वज्ह से किया गया कि ईमाने सह़ीह़ और आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ तो आते न थे, रिश्वत, ह़राम ख़ोरी, सूद, फ़ैसला करने में ना इन्साफ़ी, बुग़्ज़ो कीना और दीगर गुनाहों में तो दिलेर थे और क़िब्ले के मस्अले में ह़क़ बात मा'लूम होने के बा वुजूद बिला वज्ह झगड़ते थे और एक ख़ास क़िब्ले वाला होने को काफ़ी समझते थे। आयत से मा'लूम हुवा कि आ'माल से ईमान मुक़द्दम है, पहले ईमान लाओ, फिर नेक अ़मल करो क्यूं कि जड़ शाख़ों से पहले होती है। ईमान जड़ है और आ'माल शाख़ें, ईमान में सब से अव्वल **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान है।

﴿مَنْ اٰمَنَ : **जो ईमान लाए।**﴾ आयत के इस ह़िस्से से ले कर आख़िर तक नेकी के छे अहम त़रीक़े इर्शाद फ़रमाए गए हैं : (1) ईमान लाना। (2) **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत में मुस्तह़िक़ अफ़राद को अपना पसन्दीदा माल देना। (3) नमाज़ क़ाइम करना। (4) ज़कात देना। (5) अ़ह्द पूरा करना। (6) मुसीबत, सख़्ती और जिहाद में सब्र करना। इन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

ईमान की तफ़्सील

ईमान की तफ़्सील येह है कि **एक तो अल्लाह तआ़ला** पर ईमान लाए कि वोह ह़य्यो क़य्यूम, अ़लीमो ह़कीम, समीओ़ बसीर, ग़नी व क़दीर, अज़ली व अबदी, वाह़िद, لاشریک لہ है।

दूसरा क़ियामत पर ईमान लाए कि वोह ह़क़ है, उस में बन्दों का ह़िसाब होगा, आ'माल की जज़ा दी जाएगी, मक़्बूलाने बारगाहे इलाही शफ़ाअ़त करेंगे, हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सआ़दत मन्दों को ह़ौज़े कौसर पर सैराब फ़रमाएंगे, पुल सिरात़ पर गुज़र होगा और उस रोज़ के तमाम अह़वाल जो क़ुरआन में आए या सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाए सब ह़क़ हैं।

www.dawateislami.net

तीसरा फ़िरिश्तों पर ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की मख़्लूक़ और फ़रमां बरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं न औरत, उन की ता'दाद **अल्लाह** तआ़ला जानता है। चार उन में से बहुत मुक़र्रब हैं : **(1)** ह़ज़रते जिब्रईल। **(2)** ह़ज़रते मीकाईल। **(3)** ह़ज़रते इसराफ़ील। **(4)** ह़ज़रते इज़्राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام ।

चौथा कुतुबे इलाहिय्यह पर ईमान लाना कि जो किताब **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई ह़क़ है उन में चार बड़ी किताबें हैं : **(1)** तौरैत जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई। **(2)** इन्जील जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई। **(3)** ज़बूर जो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई। **(4)** क़ुरआन, जो कि ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई और इस के इ़लावा ह़ज़रते शीस, ह़ज़रते इदरीस, ह़ज़रते आदम और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बहुत से सह़ीफ़े नाज़िल हुए।

पांचवां तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **पर ईमान** लाना कि वोह सब **अल्लाह** तआ़ला के भेजे हुए हैं और मा'सूम या'नी गुनाहों से पाक हैं। उन की सह़ीह़ ता'दाद **अल्लाह** तआ़ला जानता है उन में से तीन सो तेरह रसूल हैं।[1]

याद रहे कि ईमाने मुफ़स्सल जो बच्चों को सिखाया जाता है, इस की अस्ल येह आयत भी है और इस के इ़लावा दूसरी आयात भी हैं।

﴿وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ﴾ **: और अल्लाह की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे।** ﴾ इस से पहले ईमान का बयान हुवा और अब आ'माल का ज़िक्र किया जा रहा है और आयत के इस ह़िस्से में नेकी का दूसरा त़रीक़ा बयान किया गया है कि **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत में मुस्तह़िक़ अफ़राद को अपना पसन्दीदा माल दिया जाए।

माल के मुस्तह़िक़ अफ़राद और उन्हें माल देने के फ़ज़ाइल का बयान

इस आयत में माल देने के 6 मसरफ़ ज़िक्र फ़रमाए गए हैं :

(1)...... रिश्तेदारों पर ख़र्च करना। ह़ज़रते सलमान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रिश्तेदार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं एक सदक़ा करने का और एक सिलए रेह़मी करने का।''[2]

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम

1 ......تفسیرات احمدیه، البقرة، تحت الآیة: ١٧٧، ص٤٧-٤٨.
2 ......ترمذی، کتاب الزکاة، باب ما جاء فی الصدقة علی ذی القرابة، ٢/١٤٢، الحدیث: ٦٥٨.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से अफ़्ज़ल सदक़ा किनारा कशी इख़्तियार करने वाले मुख़ालिफ़ रिश्तेदार पर सदक़ा करना है।"(1)

(2)...... यतीमों पर ख़र्च करना। जिस ना बालिग़ शख़्स के बाप का इन्तिक़ाल हो चुका हो उसे यतीम कहते हैं। हज़रते सहल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "जो शख़्स यतीम की कफ़ालत करे, मैं और वोह कफ़ालत करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे।" हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कलिमे की उंगली और बीच की उंगली से इशारा किया और दोनों उंगलियों के दरमियान थोड़ा सा फ़ासिला किया।(2)

(3)...... मिस्कीनों पर ख़र्च करना। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिस्कीन वोह नहीं जो लोगों में घूमता रहता है और एक लुक़्मा या दो लुक़्मे और एक खजूर या दो खजूरें ले कर चला जाता है।" सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, फिर मिस्कीन कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : जिस के पास इतना माल न हो जो उस की ज़रूरिय्यात से उसे मुस्तग़्नी कर दे और न उस के आसार से मिस्कीनी और फ़क्र का पता चले ताकि उस पर सदक़ा किया जाए और न वोह लोगों से सुवाल करता हो।(3)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक लुक़्मा रोटी और एक मुठ्ठी खुरमा और इस की मिस्ल कोई और चीज़ जिस से मिस्कीन को नफ़्अ़ पहुंचे, उन की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला तीन शख़्सों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है, एक साहिबे ख़ाना जिस ने हुक्म दिया, दूसरी ज़ौजा कि उसे तय्यार करती है, तीसरे ख़ादिम जो मिस्कीन को दे कर आता है।" फिर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम्द है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमारे ख़ादिमों को भी न छोड़ा। (या'नी रह़मत से मह़रूम न छोड़ा।) (4)

(4)...... मुसाफ़िरों पर ख़र्च करना। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन को उस के अ़मल और नेकियों से मरने

1......معجم الکبیر، حکیم بن بشیر عن ابی ایوب، ۴/۱۳۸، الحدیث: ۳۹۲۳.
2......بخاری، کتاب الادب، باب فضل من یعول یتیمًا، ۴/۱۰۱، الحدیث: ۶۰۰۵.
3......مسلم، کتاب الزکاۃ، باب المسکین الذی لا یجد غنی... الخ، ص۵۱۷، الحدیث: ۱۰۱(۱۰۳۹).
4......معجم الاوسط، باب المیم، من اسمہ محمد، ۴/۸۹، الحدیث: ۵۳۰۹.

www.dawateislami.net

के बा'द भी येह चीज़ें पहुंचती रहती हैं। इल्म जिस की उस ने ता'लीम दी और इशाअ़त की। नेक औलाद जिसे छोड़ कर मरा है या मुस्ह़फ़ जिसे मीरास में छोड़ा या मस्जिद बनाई या मुसाफ़िर के लिये मकान बना दिया या नहर जारी कर दी या अपनी सिह़्ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल में से सदक़ा निकाल दिया जो उस के मरने के बा'द उस को मिलेगा।''(1)

(5)...... **साइलों को देना।** याद रहे कि सिर्फ़ उस साइल को अपना माल दे सकते हैं जिसे सुवाल करना शर्ई त़ौर पर जाइज़ हो जैसे मिस्कीन, जिहाद और इल्मे दीन ह़ासिल करने में मश्ग़ूल अफ़राद वग़ैरा, और जिसे सुवाल करना जाइज़ नहीं उस के सुवाल पर उसे देना भी ना जाइज़ है और देने वाला गुनहगार होगा, अलबत्ता बा'ज़ लोगों को सुवाल करना जाइज़ नहीं होता लेकिन ज़रूरत मन्द होते हैं उन्हें बिग़ैर मांगे देना जाइज़ है जैसे फ़क़ीर। सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''आज कल एक आ़म बला येह फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं, मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है, कौन मेह़नत करे मुसीबत झेले, बे मशक़्क़त जो मिल जाए तो तक्लीफ़ क्यूं बरदाश्त करे। ना जाइज़ त़ौर पर सुवाल करते और भीक मांग कर पेट भरते हैं और बहुत से ऐसे हैं कि मज़्दूरी तो मज़्दूरी, छोटी मोटी तिजारत को नंगो आ़र ख़याल करते और भीक मांगना कि ह़क़ीक़तन ऐसों के लिये बे इ़ज़्ज़ती व बे ग़ैरती है मायए इ़ज़्ज़त जानते हैं और बहुत सारों ने तो भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है, घर में हज़ारों रुपै हैं, सूद का लेन देन करते, ज़राअ़त वग़ैरा करते हैं मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते, उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह हमारा पेशा है वाह साह़िब वाह ! क्या हम अपना पेशा छोड़ दें। ह़ालां कि ऐसों को सुवाल ह़राम है और जिसे उन की ह़ालत मा'लूम हो, उसे जाइज़ नहीं कि उन को दे।''(2)

(6)...... **गरदनें छुड़ाने में ख़र्च करना।** गरदनें छुड़ाने से ग़ुलामों और लौंडियों को आज़ाद करना मुराद है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुसल्मान मर्द किसी मुसल्मान मर्द को आज़ाद करेगा, **अल्लाह** तआ़ला ग़ुलाम के हर उ़ज़्व के बदले में आज़ाद करने वाले के हर उ़ज़्व को जहन्नम से नजात देगा।'' ह़ज़रते सईद बिन मरजाना رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं : जब मैं ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से येह ह़दीस सुनी और मैं ने जा कर इस का ज़िक्र ह़ज़रते अ़ली बिन हु़सैन

1...... ابن ماجه، كتاب السنّة، باب ثواب معلّم الناس الخير، ١/١٥٧، الحديث: ٢٤٢.

2...... बहारे शरीअ़त, हि़स्सए पन्जुम, सुवाल किसे ह़लाल और किसे नहीं, 1/940, 941

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से किया तो उन्हों ने अपने एक ऐसे गुलाम को आज़ाद कर दिया जिस की ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दस हज़ार दिरहम या एक हज़ार दीनार क़ीमत दे रहे थे।[(1)]

यहां इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि अगर सदक़ाते वाजिबा हों तो इस के दीगर अह़काम का भी ख़याल रखना ज़रूरी है।

राहे ख़ुदा में कैसा माल देना चाहिये ?

अल्लाह तआ़ला की राह में रिज़ाए इलाही की ख़ातिर प्यारा माल देना चाहिये नीज़ ज़िन्दगी व तन्दुरुस्ती में दे जब ख़ुद इसे भी माल की ज़रूरत हो क्यूं कि उस वक़्त माल ज़ियादा प्यारा होता है। **अल्लाह** तआ़ला अपने नेक बन्दों का वस्फ़ बयान करते हुए एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाता है :

وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا ﴿۸﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِیْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا [(2)]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह **अल्लाह** की मह़ब्बत में मिस्कीन और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं (और कहते हैं कि) हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** की रिज़ा के लिये खाना खिलाते हैं, हम तुम से कोई बदला या शुक्रिय्या नहीं चाहते।

और इर्शाद फ़रमाता है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ [(3)]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम हरगिज़ भलाई को नहीं पा सकोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक आदमी नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, कौन सा सदक़ा सवाब के लिह़ाज़ से बड़ा है ? इर्शाद फ़रमाया : "जब कि तुम तन्दुरुस्ती की ह़ालत में सदक़ा दो और तुम्हें ख़ुद माल की ज़रूरत हो और तंगदस्ती का ख़ौफ़ भी हो और मालदारी का इश्तियाक़ भी। येह न हो कि जान गले में आ फंसे और कहे कि इतना फुलां

1 ......مسلم، کتاب العتق، باب فضل العتق، ص ۸۱۲، الحدیث: ۲۴ (۱۵۰۹).
2 ......دھر: ۸، ۹.
3 ......ال عمران: ۹۲.

www.dawateislami.net

के लिये और इतना फुलां के लिये हालां कि अब तो वोह फुलां का हो चुका।"(1)

﴾وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ : **और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे।**﴿ आयत के इस हिस्से में नेकी का तीसरा और चौथा त़रीक़ा बयान किया गया कि फ़र्ज़ नमाज़ें उन के अरकान व शराइत़ के साथ अदा करे और उस के माल में जो ज़कात वाजिब हो उसे अदा करे।

﴾وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ : **और अपने अ़ह्द पूरा करने वाले।**﴿ यहां नेकी के पांचवें त़रीक़े का बयान है और इस आयत में अ़ह्द से सारे जाइज़ वा'दे मुराद हैं ख़्वाह **अल्लाह** तआ़ला से किये हों या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से या अपने शैख़ से या निकाह़ के वक़्त बीवी से या किसी और से जैसे हुक्मरानों के वा'दे अ़वाम से, बशर्ते़ कि जाइज़ वा'दे हों, ना जाइज़ वा'दों को पूरा करने की इजाज़त नहीं।

﴾وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ : **और मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र करने वाले।**﴿ आयत के इस हिस्से में नेकी के छटे त़रीक़े का बयान है कि फ़क़्रो फ़ाक़ा और बीमारी वग़ैरा की मुसीबत व सख़्ती में और राहे ख़ुदा में होने वाली जंग में क़िताल के वक़्त सब्र किया जाए।(2)

याद रहे कि इस आयत में सब्र के चन्द मक़ामात बयान हुए, इन के इ़लावा भी सब्र के बहुत से मक़ामात हैं, नीज़ सब्र के फ़ज़ाइल सूरए बक़रह की आयत नम्बर **153** के तह़त गुज़र चुके हैं।

﴾اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ : **येही लोग सच्चे हैं और येही परहेज़ गार हैं।**﴿ या'नी सह़ीह़ अ़क़ाइद रखने वाले और नमाज़, ज़कात, सदक़ात के आ़मिल, सब्र के आ़दी, वा'दे के पाबन्द और नेक आ'माल करने वाले ही अपने दा'वए ईमान में कामिल त़ौर पर सच्चे हैं जो कुफ़्र और दीगर तमाम गुनाहों से बचने वाले हैं। **अल्लाह** तआ़ला हमें भी अपने ईमान का दा'वा परखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ

(1) ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب ایّ الصدقۃ افضل... الخ، ١/٤٧٩، الحدیث: ١٤١٩.
(2) ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١٧٧، ١/١١٥.

www.dawateislami.net

وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِیَ لَهٗ مِنْ اَخِیْهِ شَیْءٌ
فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَیْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِیْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर फ़र्ज़ है कि जो नाहक़ मारे जाएं उन के खून का बदला लो आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत तो जिस के लिये उस के भाई की तरफ़ से कुछ मुआफ़ी हुई तो भलाई से तक़ाज़ा हो और अच्छी तरह अदा येह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रहमत तो इस के बा'द जो ज़ियादती करे उस के लिये दर्दनाक अज़ाब है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर मक्तूलों के खून का बदला लेना फ़र्ज़ कर दिया गया, आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत, तो जिस के लिये उस के भाई की तरफ़ से कुछ मुआफ़ी दे दी जाए तो अच्छे तरीके से मुतालबा हो और वारिस को अच्छे तरीके से अदाएगी हो । येह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है । तो इस के बा'द जो ज़ियादती करे उस के लिये दर्दनाक अज़ाब है ।

﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى : **तुम पर मक्तूलों के खून का बदला लेना फ़र्ज़ कर दिया गया ।**﴾
येह आयत औस और खज़रज के बारे में नाज़िल हुई, इन में से एक क़बीला दूसरे से क़ुव्वत, ता'दाद, माल व शरफ़ में ज़ियादा था । उस ने क़सम खाई थी कि वोह अपने गुलाम के बदले दूसरे क़बीले के आज़ाद को और औरत के बदले मर्द को और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा, ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग इस क़िस्म की ज़ियादतियों के आदी थे । अहदे इस्लाम में येह मुआमला हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई और अद्लो मुसावात का हुक्म दिया गया । इस पर वोह लोग राज़ी हुए ।(1)

कुरआने करीम में क़िसास का मस्अला कई आयतों में बयान हुवा है, इस आयत में क़िसास और मुआफ़ी दोनों मस्अले हैं और **अल्लाह** तआला के इस एहसान का बयान है कि

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۱۷۸، ۱/۲۱۳.

www.dawateislami.net

उस ने अपने बन्दों को क़िसास और मुआ़फ़ी में इख़्तियार दिया है। इस आयते मुबारका और इस के शाने नुज़ूल से इस्लाम की नज़र में ख़ूने इन्सान की हुरमत का भी इल्म होता है।

खुलासए कलाम येह हुवा कि क़त्ले अ़मद की सूरत में क़ातिल पर क़िसास वाजिब है ख़्वाह उस ने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मर्द को क़त्ल किया हो या औ़रत को क्यूं कि आयत में "قَتْلٰى" का लफ़्ज़ जो क़तील की जम्अ़ है वोह सब को शामिल है। अलबत्ता कुछ अफ़्राद इस हुक्म से मुस्तस्ना हैं जिन की तफ़्सील फ़िक़्ही किताबों में देखी जा सकती है। नीज़ इस आयत में येह भी बताया गया कि जो क़त्ल करेगा वोही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या गुलाम, मर्द हो या औ़रत और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह़ नहीं किया जाएगा, उन में राइज था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वोह एक के बदले दो को क़त्ल करते, गुलामों में होती तो बजाए गुलाम के आज़ाद को मारते, औ़रतों में होती तो औ़रत के बदले मर्द को क़त्ल करते और मह़्ज़ क़ातिल के क़त्ल पर इक्तिफ़ा न करते बल्कि बा'ज़ अवक़ात बहुत बड़ी ता'दाद में क़त्लो गारत गरी का सिल्सिला जारी रखते। इन सब चीज़ों से मन्अ़ कर दिया गया।

﴿فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ﴾ : **तो जिस के लिये उस के भाई की त़रफ़ से कुछ मुआ़फ़ी दे दी जाए।**﴾ इस का मा'ना येह है कि जिस क़ातिल को मक़्तूल के औलिया कुछ मुआ़फ़ करें जैसे माल के बदले मुआ़फ़ करने का कहें तो यहां क़ातिल और औलियाए मक़्तूल दोनों को अच्छा त़रीक़ा इख़्तियार करने का फ़रमाया गया है। मक़्तूल के औलिया से फ़रमाया कि अच्छे अन्दाज़ में मुत़ालबा करें, शिद्दतो सख़्ती न करें और क़ातिल से फ़रमाया कि वोह ख़ूनबहा की अदाएगी में अच्छा त़रीक़ा इख़्तियार करे। आयत में क़ातिल और मक़्तूल के वारिस को भाई कहा गया इस से मा'लूम हुवा कि क़त्ल अगर्चे बड़ा गुनाह है मगर इस से ईमानी भाईचारा ख़त्म नहीं हो जाता। इस में ख़ारिजिय्यों के मज़्हब की तरदीद है जो कबीरा गुनाह के मुर्तकिब को काफ़िर कहते हैं। अहले सुन्नत का अ़क़ीदा येह है कि गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब फ़ासिक़ होता है काफ़िर नहीं।

क़िसास से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल

(1)...... मक़्तूल के वली को इख़्तियार है कि ख़्वाह क़ातिल को बिग़ैर इवज़ मुआ़फ़ कर दे या माल पर सुल्ह़ करे और अगर वोह इस पर राज़ी न हो और क़िसास चाहे तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा।[1]

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۱۷۸، ۱/۲۱۳.

www.dawateislami.net

(2)...... अगर माल पर सुल्ह़ करें तो क़िसास साक़ित़ हो जाता है और माल वाजिब होता है।[1]
मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा **17** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴿فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ : **तो जो इस के बा'द ज़ियादती करे।**﴾ या'नी दस्तूरे जाहिलिय्यत के मुत़ाबिक़ ग़ैरे क़ातिल को क़त्ल करे या दियत क़बूल करने और मुआ़फ़ करने के बा'द क़त्ल करे तो उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।[2]

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ अ़क़्ल मन्दो कि तुम कहीं बचो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ अ़क़्ल मन्दो ! ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ताकि तुम बचो।

﴿وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ : **ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है।**﴾ क़िसास में क़ौमों और लोगों की ह़यात बयान की गई है। जिस क़ौम में ज़ालिम की पर्दापोशी और ह़िमायत की जाए वोह तबाहो बरबाद हो जाती है और जहां ज़ालिम और मुजरिम को सज़ा दी जाए वहां जराइम ख़ुद ब ख़ुद कम हो जाते हैं। एक मह़ल्ले से ले कर आ़लमी सत़ह़ तक के मुजरिमों में येही एक फ़ल्सफ़ा कार फ़रमा है। आप ग़ौर करें तो मा'लूम हो जाएगा कि जिन ममालिक में जराइम पर सख़्त सज़ाएं नाफ़िज़ हैं वहां के जराइम की ता'दाद और जहां मुजरिमों को सज़ाएं नहीं दी जातीं वहां जराइम की ता'दाद कितनी है।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۚۖ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर फ़र्ज़ हुवा कि जब तुम में किसी को मौत आए अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िक़ दस्तूर येह

1 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٧٨، ص٥٢.
2 ......تفسير مدارك، البقرة، تحت الآية: ١٧٨، ص٩٥.

www.dawateislami.net

वाजिब है परहेज़ गारों पर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए (तो) अगर वोह कुछ माल छोड़े तो अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये अच्छे त़रीक़े से वसिय्यत कर जाए। येह परहेज़ गारों पर वाजिब है।

﴾كُتِبَ عَلَيْكُمْ﴿ **: तुम पर फ़र्ज़ किया गया है।** जब तक इस्लाम में मीरास के अह़काम नहीं आए थे उस वक़्त तक मरने वाले पर अपने माल के बारे में वसिय्यत करना वाजिब था क्यूं कि उस वक़्त सिर्फ़ वसिय्यत के मुताबिक़ माल तक़्सीम होता था जब मीरास के अह़काम आ गए तो वसिय्यत का हुक्मे वुजूब मन्सूख़ हो गया।(1)

वसिय्यत के अह़काम

याद रहे कि वसिय्यत वाजिब होने का हुक्म अगर्चे मन्सूख़ हो चुका लेकिन वसिय्यत का जवाज़ अब भी बाक़ी है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''किसी मुसल्मान के लिये मुनासिब नहीं कि उस के पास कुछ माल हो और वोह दो रातें इस त़रह़ गुज़ारे कि उस की वसिय्यत उस के पास लिखी हुई न हो।''(2)

अलबत्ता एक तिहाई तक वसिय्यत हो सकती है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वसिय्यत माल के तिहाई ह़िस्से में है और तिहाई बहुत है।''(3)

और येह भी याद रहे कि वारिस के लिये वसिय्यत दुरुस्त नहीं। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला ने हर ह़क़दार को उस का ह़क़ दिया है, ख़बरदार ! वारिस के लिये कोई वसिय्यत नहीं।''(4)

अलबत्ता अगर वुरसा राज़ी हों तो तिहाई से ज़ियादा में भी वसिय्यत हो सकती है और

1 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٨٠، ص٥٤.
2 ......بخارى، كتاب الوصايا، باب الوصايا وقول النبى صلى الله عليه وسلم: وصية الرجل... الخ، ٢/ ٢٣٠، الحديث: ٢٧٣٨.
3 ......بخارى، كتاب الوصايا، باب الوصية بالثلث، ٢/ ٢٣٢، الحديث: ٢٧٤٣.
4 ......ابن ماجه، كتاب الوصايا، باب لا وصية لوارث، ٣/ ٣١٠، الحديث: ٢٧١٣.

www.dawateislami.net

वारिस के लिये भी वसिय्यत हो सकती है। वसिय्यत करते हुए भी वुरसा का ख़याल रखना चाहिये चुनान्चे हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा अपने इयाल को ग़नी छोड़ना इस से बेहतर है कि तू उन्हें मोहताज छोड़े और वोह लोगों के आगे हाथ फैलाते रहें।''(1)

और येह भी याद रहे कि अगर माल कसीर हो तो वसिय्यत करना अफ़्ज़ल है और अगर माल क़लील हो तो वसिय्यत न करना अफ़्ज़ल है। यूंही वसिय्यत करने की सूरत में तिहाई से कम ही करना अफ़्ज़ल है।(2)

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِیْنَ یُبَدِّلُوْنَهٗؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌؕ ﴿۱۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो वसिय्यत को सुन सुना कर बदल दे उस का गुनाह उन्हीं बदलने वालों पर है बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जो वसिय्यत को सुनने के बा'द उसे तब्दील कर दे तो उस का गुनाह उन बदलने वालों पर ही है, बेशक **अल्लाह** सुनने वाला जानने वाला है।

﴿فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ : **फिर जो वसिय्यत को सुनने के बा'द उसे तब्दील कर दे।**﴾ वसिय्यत करने के बा'द ज़िन्दगी के अन्दर अन्दर वसिय्यत करने वाले को तो वसिय्यत तब्दील करने का इख़्तियार होता है लेकिन फ़ौत होने के बा'द किसी दूसरे शख़्स को वसिय्यत में तब्दीली की इजाज़त नहीं ख़्वाह वसी तब्दील करे या गवाह या कोई और। यूंही वसिय्यत के काग़ज़ात में तब्दीली की जाए या माल की तक़्सीम में। अफ़्सोस कि माल की महब्बत में लोग वसिय्यतों में बहुत हेर फेर करते हैं, वसिय्यत छुपा देते हैं, जा'ली वसिय्यत नामे बना लेते हैं, वसिय्यत में तब्दीली कर देते हैं, वसिय्यत पर अ़मल नहीं करते। **एक अहम मस्अला** येह भी याद रहे कि वसिय्यत के बारे में ज़रूरी है कि शरीअ़त ने जो क़वानीन बनाए हैं उन पर अ़मल किया जाए। उन से हट कर अ़मल की इजाज़त नहीं मसलन वुरसा राज़ी न हों फिर भी तिहाई माल से ज़ियादा की वसिय्यत कर दी जाए और उस पर अ़मल कर लिया जाए। येह सब ना जाइज़

1 ......بخاری، کتاب الوصایا، باب ان یترک ورثته اغنیاء خیر... الخ، ۲/۲۳۲، الحدیث: ۲۷۴۲.
2 ......عالمگیری، کتاب الوصایا، الباب الاول، ٦/٩٠.

www.dawateislami.net

व ह़राम है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जिसे अन्देशा हुवा कि वसिय्यत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या गुनाह किया तो उस ने उन में सुल्ह़ करा दी उस पर कुछ गुनाह नहीं बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्‌रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जिस को वसिय्यत करने वाले की त़रफ़ से जानिब दारी या गुनाह का अन्देशा हो तो वोह उन के दरमियान सुल्ह़ करा दे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्‌रबान है।

﴾فَمَنْ خَافَ : **तो जिसे अन्देशा हो।**﴿ अगर किसी आ़लिम या ह़ाकिम या वसी या रिश्तेदार वग़ैरा को मा'लूम हो कि मरने वाला वसिय्यत में किसी पर ज़ियादती कर रहा है या शरई अह़काम की पाबन्दी नहीं कर रहा तो मरने वाले को समझा बुझा कर वसिय्यत दुरुस्त करा दे तो येह शख़्स गुनहगार नहीं बल्कि अपने नेक अ़मल की वज्ह से सवाब का मुस्तह़िक़ होगा। यूंही अगर फ़ौत होने वाला तो ग़लत़ वसिय्यत कर गया लेकिन बा'द में कोई ह़ाकिम या आ़लिम या रिश्तेदार वग़ैरा येह लोग मूसा लह या'नी जिस के ह़क़ में वसिय्यत की गई उस में और वारिसों में शर्अ़ के मुवाफ़िक़ सुल्ह़ करा दे तो गुनहगार नहीं बल्कि मुस्तह़िक़े सवाब हो सकता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۱۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़ गार बन जाओ ।

﴾كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ : **तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए ।**﴿ इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है । "शरीअ़त में रोज़ा येह है कि सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक रोज़े की निय्यत से खाने पीने और हम बिस्तरी से बचा जाए ।"(1)

रोज़ा बहुत क़दीम इबादत है

इस आयत में फ़रमाया गया "जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ थे ।" इस से मा'लूम होता है कि रोज़ा बहुत क़दीम इबादत है । ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ले कर तमाम शरीअ़तों में रोज़े फ़र्ज़ होते चले आए हैं अगर्चे गुज़श्ता उम्मतों के रोज़ों के दिन और अह़काम हम से मुख़्तलिफ़ होते थे । याद रहे कि रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुए थे ।(2)

रोज़े का मक़सद

आयत के आख़िर में बताया गया कि रोज़े का मक़सद तक़्वा व परहेज़ गारी का ह़ुसूल है । रोज़े में चूंकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और खाने पीने की ह़लाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की मश्क़ होती है जिस से ज़ब्ते नफ़्स और ह़राम से बचने पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है और येही ज़ब्ते नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए आदमी गुनाहों से रुकता है । क़ुरआने पाक में है :

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰى (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो अपने रब के ह़ुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका । तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۸۳، ۱/۱۱۹.
2 ......در مختار، کتاب الصوم، ۳/۳۸۳.
3 ......نازعات: ۴۰، ۴۱.

www.dawateislami.net

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ जवानो ! तुम में जो कोई निकाह़ की इस्तित़ाअ़त रखता है वोह निकाह़ करे कि येह अजनबी औ़रत की त़रफ़ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वाला है और जिस में निकाह़ की इस्तित़ाअ़त नहीं वोह रोज़े रखे कि रोज़ा क़ात़ेए शह्वत है।''(1)

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : गिनती के दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो वोह बदला दें एक मिस्कीन का खाना फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : गिनती के चन्द दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में रखे और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो उन पर एक मिस्कीन का खाना फ़िद्या है फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है और अगर तुम जानो तो रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा बेहतर है।

﴾أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ﴿ **: गिनती के चन्द दिन हैं।** फ़र्ज़ रोज़े गिनती के दिन हैं या'नी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना है जो उन्तीस दिन का होगा या तीस दिन का। लिहाज़ा घबराने की ज़रूरत नहीं बल्कि येह ज़ेहन में रखो कि जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ग्यारह माह खिलाया पिलाया, वोह अगर एक माह सिर्फ़ दिन के वक़्त खाने पीने से मन्अ़ फ़रमा दे और इस फ़ाक़े में भी तुम्हारे जिस्म व रूह़, ज़ाहिरो बात़िन, दुन्या व आख़िरत का फ़ाएदा हो तो ज़रूर उस की इत़ाअ़त करो।

1 ......بخاری، کتاب النکاح، باب من لم یستطع الباءة فلیصم، ۳/۴۲۲، الحدیث: ۵۰٦٦.

www.dawateislami.net

﴿فَمَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ مَّرِيۡضًا﴾ : **तो तुम में जो कोई बीमार हो।** है ज़ो निफ़ास वाली औ़रत को तो रोज़ा रखने की इजाज़त ही नहीं वोह तो बा'द में क़ज़ा करेगी। इस के इ़लावा भी चन्द अफ़राद हैं जिन्हें रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है। आयत में बत़ौरे ख़ास बीमार और मुसाफ़िर को रुख़्सत दी गई है लेकिन येह याद रहे कि सफ़र से मुराद तीन दिन की मसाफ़त या'नी साढ़े सत्तावन मील या'नी बानवे किलो मीटर है। इस से कम सफ़र है तो रोज़ा छोड़ने की इजाज़त नहीं।(1)

मरीज़ को भी रुख़्सत है जब कि उसे रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक होने का अन्देशा हो तो येह रोज़ा छोड़ दे और बा'द में मम्नूअ़ अय्याम के इ़लावा और दिनों में रोज़ा रख ले।

अलबत्ता येह याद रहे कि मरीज़ को मह़ज़ ज़ियादा बीमारी के या हलाकत के सिर्फ़ वह्म की बिना पर रोज़ा छोड़ना जाइज़ नहीं बल्कि ज़रूरी है कि किसी दलील या साबिक़ा तजरिबे या किसी ऐसे त़बीब के कहने से ग़ालिब गुमान ह़ासिल हो जो त़बीब ज़ाहिरी त़ौर पर फ़ासिक़ न हो।(2)

रोज़े की रुख़्सत के चन्द अहम मसाइल

(1)...... जो फ़िलह़ाल बीमार न हो लेकिन मुसल्मान माहिर त़बीब येह कहे कि वोह रोज़े रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी रोज़ा छोड़ सकता है।

(2)...... ह़ामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़्त़ार जाइज़ है।

(3)...... जिस मुसाफ़िर ने तुलूए़ फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरूअ़ किया उस को तो रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है लेकिन जिस ने तुलूए़ फ़ज्र के बा'द सफ़र किया उस को उस दिन का रोज़ा छोड़ने की इजाज़त नहीं।(3)

﴿فِدۡيَةٌ طَعَامُ مِسۡكِيۡنٍ﴾ : **एक मिस्कीन का फ़िदया।** शैख़े फ़ानी या'नी वोह बूढ़ा जिस की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होता जाएगा, जब वोह रोज़ा रखने से आ़जिज़ हो या'नी न अब रख सकता है और न आयिन्दा ही उस में इतनी त़ाक़त आने की उम्मीद हो कि

1...... درّ مختار مع رد المحتار، کتاب الصوم، فصل فی العوارض المبیحة لعدم الصوم، ۳/۴۶۲-۴۶۳.

2...... رد المحتار، کتاب الصوم، فصل فی العوارض المبیحة لعدم الصوم، ۳/۴۶۴.

3...... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, अल बक़रह, तह़तल आयह : 184, स. 60, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए पन्जुम, 1/1003, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

रोज़ा रख सके, उस के लिये जाइज़ है कि रोज़ा न रखे और हर रोज़े के बदले फ़िदये के तौर पर निस्फ़ साअ़ या'नी अस्सी ग्राम कम दो किलो गन्दुम या उस का आटा दे दे या उस की क़ीमत दे दे और अगर फ़िदया जव से देना हो तो गन्दुम से दुगना देना होगा।[1]

येह भी याद रहे कि अगर फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की कुव्वत आ गई तो रोज़ा रखना लाज़िम हो जाएगा।[2]

मस्अला : अगर कोई शैखे़ फ़ानी ग़रीबो नादार हो और फ़िदया देने की कुदरत भी न रखता हो तो वोह **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करता रहे।[3]

﴿فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ﴾ **: फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है।**﴾ फ़िदये की मिक्दार तो मख़्सूस है लेकिन अगर कोई ज़ियादा देना चाहे तो बख़ुशी दे सकता है। जितना ज़ियादा देगा उतना ही सवाब बढ़ता जाएगा। जैसे बा'ज़ सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने नमाज़ के ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ में फ़र्क़ पड़ने पर पूरा बाग़ सदक़ा कर दिया। यहां येह मस्अला भी याद रहे कि मुसाफ़िर व मरीज़ को रोज़ा न रखने की अगर्चे इजाज़त है लेकिन ज़ियादा बेहतर व अफ़्ज़ल रोज़ा रखना ही है जैसा कि आयत के आख़िर में फ़रमाया :

وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारा रोज़ा रखना तुम्हारे लिये बेहतर है।

रोज़े के तिब्बी फ़वाइद

तिब्बी लिहाज़ से रोज़ों के बे शुमार फ़वाइद हैं, उन में से 6 फ़वाइद दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... रोज़ा रखने से मे'दे की तकालीफ़ और इस की बीमारियां ठीक हो जाती हैं और निज़ामे हज़्म बेहतर हो जाता है।

(2)...... रोज़ा शूगर लेवल, कोलेस्ट्रोल और ब्लड प्रेशर में ए'तिदाल लाता है और इस की वज्ह से दिल का दौरा पड़ने का ख़त़रा नहीं रहता।

(3)...... रोज़े के दौरान ख़ून की मिक्दार में कमी हो जाती है और इस की वज्ह से दिल को इन्तिहाई फ़ाएदा मन्द आराम पहुंचता है।

---

1 ......درّ مختار مع رد المحتار، کتاب الصوم، فصل فی العوارض المبیحة لعدم الصوم، ۳/۴۷۱-۴۷۲.

2 ......عالمگیری، کتاب الصوم، الباب الخامس، ۱/۲۰۷.

3 ......درّ مختار، کتاب الصوم، فصل فی العوارض المبیحة لعدم الصوم، ۳/۴۷۲.

www.dawateislami.net

(4)...... रोजे़ से जिस्मानी खिचाव, जे़हनी तनाव, डिप्रेशन और नफ़्सियाती अमराज़ का ख़ातिमा होता है ।

(5)...... रोज़ा रखने से मोटापे में कमी वाके़अ़ होती और इज़ाफ़ी चरबी ख़त्म हो जाती है ।

(6)...... रोज़ा रखने से बे औलाद ख़्वातीन के हां औलाद होने के इम्कानात कई गुना बढ़ जाते हैं ।

रोजे़ की बरकत से शिफ़ा मिली

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : अभी चन्द साल हुए माहे रजब में ह़ज़रत वालिदे माजिद قَدَّسَ اللّٰہُ سِرَّہُ الشَّرِیْف ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : अब की रमज़ान में मरजे़ शदीद होगा, रोज़ा न छोड़ना । वैसा ही हुवा और हर चन्द तृबीब वग़ैरा ने कहा (मगर) मैं ने بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی रोज़ा न छोड़ा और इसी की बरकत ने बि फ़ज़्लिही तआ़ला शिफ़ा दी कि ह़दीस में इर्शाद हुवा है : ''صُوْمُوْا تَصِحُّوْا रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे ।[1]''[2]

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ٘ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोजे़ रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोजे़ और दिनों में । **अल्लाह** तुम पर आसानी चाहता है

1 ......معجم الاوسط،باب الميم،من اسمه موسى،٦/١٤٦،الحديث:٨٣١٢.

2 ...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सए दुमुव, स. 206

www.dawateislami.net

और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और **अल्लाह** की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम ह़क़ गुज़ार हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : रमज़ान का महीना है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया जो लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई है और फ़ैसले की रोशन बातों (पर मुश्तमिल है।) तो तुम में जो कोई येह महीना पाए तो ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में रखे। **अल्लाह** तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और (येह आसानियां इस लिये हैं) ताकि तुम (रोज़ों की) ता'दाद पूरी कर लो और ताकि तुम इस बात पर **अल्लाह** की बड़ाई बयान करो कि उस ने तुम्हें हिदायत दी और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

﴿شَهْرُ رَمَضَانَ : **रमज़ान का महीना**।﴾ इस आयत में माहे रमज़ान की अ़ज़्मतो फ़ज़ीलत का बयान है और इस की दो अहम तरीन फ़ज़ीलतें हैं, पहली येह कि इस महीने में क़ुरआन उतरा और दूसरी येह कि रोज़ों के लिये इस महीने का इन्तिख़ाब हुवा। इस महीने में क़ुरआन उतरने के येह मआ़नी हैं :

(1)...... रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त के बारे में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा।

(2)...... क़ुरआने करीम के नाज़िल होने की इब्तिदा रमज़ान में हुई।[1]

(3)...... मुकम्मल क़ुरआने करीम रमज़ानुल मुबारक की शबे क़द्र में लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया और बैतुल इ़ज़्ज़त में रहा।[2]

येह उसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ जितना जितना **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर हुवा जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام लाते रहे और येह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्से में पूरा हुवा।

अ़ज़्मत वाली चीज़ से निस्बत की बरकत

रमज़ान वोह वाह़िद महीना है कि जिस का नाम क़ुरआने पाक में आया और क़ुरआने मजीद से निस्बत की वज्ह से माहे रमज़ान को अ़ज़्मतो शराफ़त मिली। इस से मा'लूम हुवा

1 ......تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآیة: ۱۸۵، ۲/۲۵۲-۲۵۳.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآیة: ۱۸۵، ۱/۱۲۱.

www.dawateislami.net

कि जिस वक़्त को किसी शरफ़ो अ़ज़्मत वाली चीज़ से निस्बत हो जाए वोह क़ियामत तक शरफ़ वाला है । इसी लिये जिस दिन और घड़ी को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत और मे'राज से निस्बत है वोह अ़ज़्मतो शराफ़त वाले हो गए, जैसे ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रोज़े जुमुआ़ पैदाइश पर जुमुआ़ का दिन अ़ज़्मत वाला हो गया ।[1]

ह़ज़रते यह़्या عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पैदाइश, विसाल और ज़िन्दा उठाए जाने के दिन पर क़ुरआन में सलाम फ़रमाया गया ।[2] इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अपनी पैदाइश, विसाल और ज़िन्दा उठाए जाने के दिन पर सलाम फ़रमाना क़ुरआन में मज़्कूर है ।[3]

﴿وَالْفُرْقَانِ : **और ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ करने वाला ।**﴾ ज़ेरे तफ़्सीर आयत में क़ुरआने मजीद की तीन शानें बयान हुईं :

(1)...... क़ुरआन हिदायत है, (2)...... रोशन निशानियों पर मुश्तमिल है और (3)...... ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ करने वाला है । क़ुरआन शरीफ़ के 23 नाम हैं और यहां क़ुरआने मजीद का दूसरा मश्हूर नाम फ़ुरक़ान ज़िक्र किया गया है ।

﴿یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ : **अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है ।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी इ़बादत हम पर फ़र्ज़ फ़रमाई लेकिन अपनी रह़मत से हम पर तंगी नहीं की बल्कि आसानी फ़रमाते हुए मुतबादिल भी अ़त़ा फ़रमा दिये । रोज़ा फ़र्ज़ किया लेकिन रखने की त़ाक़त न हो तो बा'द में रखने की इजाज़त दे दी, बा'ज़ सूरतों में फ़िदये की इजाज़त दे दी, खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की त़ाक़त न हो तो बैठ कर वरना लेट कर इशारे से पढ़ने की इजाज़त दे दी, एक महीने रोज़े का हुक्म फ़रमाया तो ग्यारह महीने दिन में खाने की इजाज़त दे दी और रमज़ान में भी रातों को खाने की इजाज़त दी बल्कि सह़री व इफ़्त़ारी के खाने पर सवाब का वा'दा फ़रमाया । गिनती के चन्द जानवरों का गोश्त ह़राम क़रार दिया तो हज़ारों जानवरों, परिन्दों का गोश्त ह़लाल फ़रमा दिया । कारोबार के चन्द एक त़रीक़ों से मन्अ़ किया तो हज़ारों त़रीक़ों की इजाज़त भी अ़त़ा फ़रमा दी । मर्द को रेशमी कपड़े से मन्अ़ किया तो बीसियों क़िस्म के कपड़े पहनने की इजाज़त दे दी । अल ग़रज़ यूं ग़ौर करें तो आयत का मा'ना रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर हो जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला हम पर आसानी चाहता है और वोह हम पर तंगी नहीं चाहता ।

---

1 ......مسلم، کتاب الجمعة، باب فضل یوم الجمعة، ص٤٢٥، الحدیث: ١٧(٨٥٤).

2 ......مریم: ١٥.

3 ......مریم: ٣٣.

www.dawateislami.net

﴿وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ﴾ : **और ताकि तुम गिनती पूरी करो ।** गिनती पूरी करने से मुराद रमज़ान के उन्तीस या तीस दिन पूरे करना है और तक्बीर कहने से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें अपने दीन के त़रीक़े सिखाए तो तुम इस पर **अल्लाह** तआ़ला की बड़ाई बयान करो और इन चीज़ों पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करो ।

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं दुआ़ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं राह पाएं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में सुवाल करें तो बेशक मैं नज़्दीक हूं, मैं दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब वोह मुझ से दुआ़ करे तो उन्हें चाहिये कि मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि हिदायत पाएं ।

﴿وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ﴾ : **और ऐ ह़बीब ! जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में सुवाल करें ।** इस आयत में त़ालिबाने ह़क़ की त़लबे मौला का बयान है । जिन्हों ने इ़श्क़े इलाही में अपनी ख़्वाहिशात को कुरबान कर दिया, वोह उसी के त़लब गार हैं । उन ह़ज़रात को क़ुर्बो विसाले इलाही की ख़ुश ख़बरी दी जा रही है । **शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की एक जमाअ़त ने जज़्बए इ़श्क़े इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब عَزَّوَجَلَّ कहां है ? इस पर बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला मकान से पाक है ।[1]

क्यूं कि जो चीज़ किसी से मकान के ए'तिबार से क़ुर्ब रखती हो वोह उस के दूर वाले से ज़रूर दूरी पर होती है और **अल्लाह** तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है । क़ुर्बे इलाही की

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٨٦، ١/١٢٣.

www.dawateislami.net

मनाज़िल तक रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़्लत दूर करने से मुयस्सर आती है। फ़ारसी का शे'र है :

دوست نزدیک تر از من بمن ست ویں عجب تر کہ من از وے دورم

तरजमा : मेरा दोस्त मुझ से भी ज़ियादा मेरे नज़्दीक है लेकिन तअ़ज्जुब की बात है कि मैं उस से दूर हूं।

﴿اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ **: मैं दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब वोह मुझ से दुआ़ करे।** दुआ़ का मा'ना है अपनी ह़ाजत पेश करना और इजाबत या'नी क़बूलिय्यत का मा'ना येह है कि परवरदगार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की दुआ़ पर ''لَبَّیْکَ عَبْدِیْ'' फ़रमाता है अलबत्ता जो मांगा जाए उसी का ह़ासिल हो जाना दूसरी चीज़ है। **अल्लाह** तआ़ला के करम से कभी मांगी हुई चीज़ फ़ौरन मिल जाती है और कभी किसी ह़िक्मत की वज्ह से ताख़ीर से मिलती है। कभी बन्दे की ह़ाजत दुन्या में पूरी कर दी जाती है और कभी आख़िरत में सवाब ज़ख़ीरा कर दिया जाता है और कभी बन्दे का नफ़अ़ किसी दूसरी चीज़ में होता है तो मांगी हुई चीज़ की बजाए वोह दूसरी अ़ता हो जाती है। कभी बन्दा मह़बूब होता है उस की ह़ाजत रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अ़र्से तक दुआ़ में मश्ग़ूल रहे। कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ो इख़्लास वग़ैरा क़बूलिय्यत की शराइत़ नहीं होतीं इस लिये मुंह मांगी मुराद नहीं मिलती। इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला के नेक और मक़्बूल बन्दों से दुआ़ कराई जाती है ताकि उन की दुआ़ के सदक़े गुनाहगारों की बिगड़ी भी संवर जाए। दुआ़ के बारे में तफ़्सील जानने के लिये ''फ़ैज़ाने दुआ़'' किताब का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।(1)

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ

(1)...... ''फ़ज़ाइले दुआ़'' (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ भी बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ
اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ
تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना तुम्हारे लिये ह़लाल हुवा वोह तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास, **अल्लाह** ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाया तो अब उन से सोह़बत करो और त़लब करो जो **अल्लाह** ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फट कर फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो और औ़रतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो येह **अल्लाह** की ह़दें हैं इन के पास न जाओ **अल्लाह** यूं ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़ गारी मिले ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम्हारे लिये रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना ह़लाल कर दिया गया, वोह तुम्हारे लिये लिबास हैं और तुम उन के लिये लिबास हो । **अल्लाह** को मा'लूम है कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया तो अब उन से हम बिस्तरी कर लो और जो **अल्लाह** ने तुम्हारे नसीब में लिखा हुवा है उसे त़लब करो और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये फ़ज्र से सफ़ेदी (सुब्ह़) का डोरा सियाही (रात) के डोरे से मुमताज़ हो जाए फिर रात आने तक रोज़ों को पूरा करो और औ़रतों से हम बिस्तरी न करो जब कि तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो । येह **अल्लाह** की ह़दें हैं तो इन के पास न जाओ । **अल्लाह** यूंही लोगों के लिये अपनी आयात खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि वोह परहेज़ गार हो जाएं ।

www.dawateislami.net

﴿اُحِلَّ لَكُمْ﴾ **: तुम्हारे लिये ह़लाल कर दिया गया।** **शाने नुज़ूल :** शुरूए इस्लाम में इफ़्त़ार के बा'द खाना पीना, जिमाअ़ करना नमाज़े इशा तक ह़लाल था, नमाज़े इशा का वक़्त शुरूअ़ होने के बा'द येह सब चीज़ें भी ह़राम हो जाती थीं, यूंही सोने के बा'द भी येह चीज़ें ह़राम हो जाती थीं अगर्चे अभी इशा का वक़्त शुरूअ़ न हुवा हो। बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रमज़ान की रातों में हम बिस्तरी का फ़े'ल सरज़द हुवा। इस पर वोह ह़ज़रात नादिम हुए और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की तो आयत उतरी।[1] और फ़रमा दिया गया कि आयिन्दा तुम्हारे लिये रमज़ान की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना ह़लाल कर दिया गया नीज़ **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते रहे हो लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया और आयिन्दा के लिये इजाज़त भी अ़त़ा फ़रमा दी। आयत में ख़ियानत से वोह हम बिस्तरी मुराद है जो इजाज़त से पहले रमज़ान की रातों में मुसल्मानों से सरज़द हुई थी।

﴿وَابْتَغُوْا﴾ **: और तलाश करो।** **अल्लाह** तआ़ला के लिखे हुए को त़लब करने से मुराद या तो येह है कि औ़रतों से हम बिस्तरी औलाद ह़ासिल करने की निय्यत से होनी चाहिये जिस से मुसल्मानों की अफ़रादी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा हो और दीन क़वी हो। एक क़ौल येह है कि इस से मुराद शरई त़रीक़े के मुत़ाबिक़ येह फ़े'ल करना है।[2]

और एक क़ौल येह भी है कि जो **अल्लाह** तआ़ला ने लिखा उस को त़लब करने के मा'ना हैं रमज़ान की रातों में कसरत से इ़बादत करना और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तजू करना।[3]

﴿وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا﴾ **: और खाओ और पियो।** येह आयत ह़ज़रते सरमा बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मेह़नती आदमी थे, एक दिन रोज़े की ह़ालत में दिन भर अपनी ज़मीन में काम कर के शाम को घर आए, बीवी से खाना मांगा, वोह पकाने में मसरूफ़ हो गईं और येह थके हुए थे इस लिये इन की आंख लग गई, जब बीवी ने खाना तय्यार कर के इन्हें बेदार किया तो इन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्यूं कि उस ज़माने में सो जाने के बा'द रोज़ादार पर खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था। चुनान्चे इसी ह़ालत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दूसरा रोज़ा रख लिया जिस से कमज़ोरी इन्तिहा को पहुंच गई और दो पहर के वक़्त बेहोश हो गए। ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इन का ह़ाल बयान किया गया

1 ......جلالین وصاوی، البقرة، تحت الآية: ١٨٧، ١/١٥٦، ١٥٧.
2 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٨٧، ص٦٩.
3 ......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ١٨٧، ٢/٢٧٢.

www.dawateislami.net

तो इन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई ।[1] और रमज़ान की रातों में खाना पीना मुबाह़ फ़रमा दिया गया। आयत में सफ़ेद और सियाह डोरे का तज़्किरा है। इस से रात को सियाह डोरे से और सुब्हे सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई है और मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्हे सादिक़ तक जाइज़ कर दिया गया।

सौमे विसाल का हुक्म

याद रहे कि बिग़ैर इफ़्तार किये अगला रोज़ा रख लेना और यूं मुसल्सल रोज़े रखना सौमे विसाल कहलाता है और येह मम्नूअ़ हैं। इस की इजाज़त सिर्फ़ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को थी और येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात में से है। सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को सौमे विसाल के रोज़े रखने से मन्अ़ फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : आप तो विसाल के रोज़े रखते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : तुम में मेरे जैसा कौन है मुझे तो मेरा रब عَزَّوَجَلَّ खिलाता और पिलाता है।[2]

﴿وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَۙ فِی الْمَسٰجِدِ﴾ : **जब कि तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो।** ﴾ इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिये बीवी से हम बिस्तरी ह़लाल है जब कि वोह मो'तकिफ़ न हो लेकिन ए'तिकाफ़ में औरतों से मियां बीवी वाले तअ़ल्लुक़ात ह़राम हैं।

ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल

इस आयत में ए'तिकाफ़ करने वाले के बारे में एक शरई मस्अले का बयान हुवा, इसी मुनासबत से हम यहां ए'तिकाफ़ के बारे में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़मले मुबारक, ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल और ए'तिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मसाइल बयान करते हैं। चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते थे, यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वफ़ात दी और आप के बा'द आप की अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ए'तिकाफ़ किया करतीं।[3]

1 ......خازن،البقرۃ،تحت الآیۃ:۱۸۷، ۱/۱۲۶، بخاری، کتاب الصوم، باب قول اللّٰہ جل ذکرہ: احلّ لکم... الخ، ۱/۶۳۱، الحدیث: ۱۹۱۵.

2 ......بخاری، کتاب المحاربین من اھل الکفر والردۃ، باب کم التعزیر والادب، ۴/۳۵۲، الحدیث: ۶۸۵۱.

3 ......بخاری، کتاب الاعتکاف، باب الاعتکاف فی العشر الاواخر... الخ، ۱/۶۶۴، الحدیث:۲۰۲۶.

www.dawateislami.net

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रमज़ानुल मुबारक के पहले अ़शरे में ए'तिकाफ़ किया, फिर एक तुर्की ख़ैमे में रमज़ान के दरमियानी अ़शरे में ए'तिकाफ़ किया जिस के दरवाज़े पर चटाई लगी हुई थी। आप ने अपने हाथ से वोह चटाई हटाई और ख़ैमे के एक कोने में कर दी, फिर ख़ैमे से सर बाहर निकाला और लोगों से फ़रमाया : "मैं इस रात (या'नी लैलतुल क़द्र) की तलाश में पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ करता था, फिर मैं दरमियानी अ़शरे में ए'तिकाफ़ बैठा, फिर मेरे पास कोई (फ़िरिश्ता) आया तो मेरी त़रफ़ वही की गई कि येह आख़िरी अ़शरे में है, तुम में से जिस शख़्स को पसन्द हो वोह ए'तिकाफ़ करे।" चुनान्चे लोगों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ए'तिकाफ़ किया।(1)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान के आख़िरी अ़शरे में ए'तिकाफ़ करते थे, एक साल ए'तिकाफ़ न कर सके, जब अगला साल आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीस दिन ए'तिकाफ़ किया।(2)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'तिकाफ़ करने वाले के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि वोह गुनाहों से बाज़ रहता है और नेकियों से उसे इस क़दर सवाब मिलता है जैसे उस ने तमाम नेकियां कीं।(3)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये एक दिन का ए'तिकाफ़ किया तो **अल्लाह** तआ़ला उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल कर देगा और हर ख़न्दक़ मशरिक़ो मग़रिब के माबैन फ़ासिले से भी ज़ियादा दूर होगी।"(4)

हज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रमज़ान में दस दिन का ए'तिकाफ़ कर लिया तो ऐसा है जैसे दो ह़ज और दो उ़म्रे किये।"(5)

---

1 ......مسلم، كتاب الصيام، باب فضل ليلة القدر... الخ، ص٥٩٤، الحديث: ٢١٥(١١٦٧).
2 ......ترمذى، كتاب الصوم، باب ما جاء فى الاعتكاف اذا خرج منه، ٢/٢١٢، الحديث: ٨٠٣.
3 ......ابن ماجه، كتاب الصيام، باب فى ثواب الاعتكاف، ٢/٣٦٥، الحديث: ١٧٨١.
4 ......معجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ٥/٢٧٩، الحديث: ٧٣٢٦.
5 ......شعب الايمان، الرابع والعشرين من شعب الايمان، ٣/٤٢٥، الحديث: ٣٩٦٦.

www.dawateislami.net

हज़रते हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ए'तिकाफ़ करने वाले को रोज़ाना एक हज का सवाब मिलता है।[1]

ए'तिकाफ़ के चन्द मसाइल

(1)...... मर्दों के ए'तिकाफ़ के लिये बा क़ाइदा शर्ई मस्जिद ज़रूरी है।

(2)...... मो'तकिफ़ को मस्जिद में खाना, पीना, सोना जाइज़ है।

(3)...... औ़रतों का ए'तिकाफ़ उन के घरों में मस्जिदे बैत में जाइज़ है और फ़ी ज़माना इन्हें मस्जिदों में ए'तिकाफ़ की इजाज़त नहीं।

(4)...... वाजिब और सुन्नते ए'तिकाफ़ में रोज़ा शर्त़ है। नफ़्ली ए'तिकाफ़ में रोज़ा ज़रूरी नहीं और नफ़्ली ए'तिकाफ़ चन्द मिनट का भी हो सकता है। जब मस्जिद में जाएं, नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लें।

(5)...... वाजिब व सुन्नते ए'तिकाफ़ में एक लम्हे के लिये बिला इजाज़त शर्ई मस्जिद से निकले तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा[2]।[3]

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ
لِتَاْكُلُوْا فَرِیْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ ع

रुकूअ़ २३

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास इन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल ना जाइज़ तौ़र पर खा लो जान बूझ कर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास इन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल ना जाइज़ तौ़र पर जान बूझ कर खा लो।

1 ......شعب الایمان، الرابع والعشرين من شعب الايمان، ٣/٤٢٥، الحديث: ٣٩٦٨.

2 ...... बहारे शरीअ़त, हिस्सए पन्जुम, ए'तिकाफ़ का बयान, 1/1020, 1026 मुलख़्ख़सन

3 ...... ए'तिकाफ़ के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल से "फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

﴿وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ﴾ **: और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ ।** इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना हराम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर हो या छीन कर, चोरी से या जूए से या हराम तमाशों या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले या रिश्वत या झूटी गवाही से येह सब मम्नूअ़ व हराम है ।[1]

मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि ना जाइज़ फ़ाएदे के लिये किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना ना जाइज़ व हराम है । इसी तरह अपने फ़ाएदे की ग़रज़ से दूसरे को ज़रर पहुंचाने के लिये हुक्काम पर असर डालना, रिश्वतें देना हराम है । हुक्काम तक रसाई रखने वाले लोग इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें । हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह शख़्स मल्ऊ़न है जो अपने मुसल्मान भाई को नुक़्सान पहुंचाए या उस के साथ धोका करे ।"[2]

येह भी मा'लूम हुवा कि झूटी गवाही, झूटी वकालत, झूटे मुक़द्दमे की पैरवी व कोशिश की उजरतें हराम हैं । हराम के बारे में आगे तफ़्सील से बयान आएगा ।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِیَ مَوَاقِیْتُ لِلنَّاسِ وَ الْحَجِّ ؕ وَ لَیْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰی ۚ وَ اْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से नए चांद को पूछते हैं तुम फ़रमा दो वोह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज के लिये और येह कुछ भलाई नहीं कि घरों में पच्छीत तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़ गारी है, और घरों में दरवाज़ों से आओ और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ ।

1 ......احکام القرآن، باب ما یحله حکم الحاکم وما لا یحله، ۱/۳۰٤.

2 ......تاریخ بغداد، باب محمد، محمد بن احمد بن محمد بن جابر... الخ، ۱/۳۶۰، رقم: ۲۶۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम से नए चांद के बारे में सुवाल करते हैं। तुम फ़रमा दो, येह लोगों और ह़ज के लिये वक़्त की अ़लामतें हैं और येह कोई नेकी नहीं कि तुम घरों में पिछली दीवार तोड़ कर आओ, हां अस्ल नेक तो परहेज़ गार होता है और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ﴾ : तुम से नए चांद के बारे में सुवाल करते हैं।﴾ शाने नुज़ूल : येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और एक दूसरे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जवाब में नाज़िल हुई, इन दोनों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से चांद के घटने बढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया, इस के जवाब में चांद के घटने बढ़ने के सबब की बजाए इस के फ़वाइद बयान फ़रमाए कि वोह वक़्त की अ़लामतें हैं।[1] और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुन्यवी काम इस से मुतअ़ल्लिक़ हैं, ज़राअ़त, तिजारत, लेन देन के मुआ़मलात, रोज़े और ईद के अवक़ात, औ़रतों की इ़द्दतें, ह़ैज़ के अय्याम, ह़म्ल और दूध पिलाने की मुद्दतें और दूध छुड़ाने के वक़्त और ह़ज के अवक़ात इस से मा'लूम होते हैं।[2]

क्यूं कि शुरूअ़ में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि इब्तिदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रोशन होता है तो मा'लूम हो जाता है कि येह महीने की दरमियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मा'लूम होता है कि महीना ख़त्म पर है, फिर महीनों से साल का ह़िसाब होता है। येह वोह क़ुदरती जन्तरी है जो आस्मान के सफ़ह़े पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब इस से अपना ह़िसाब मा'लूम कर लेते हैं। याद रहे कि बहुत से अह़काम में चांद का ह़िसाब रखना ज़रूरी है जैसे बालिग़ होने की उ़म्र के ए'तिबार से, यूंही रोज़ा, ईदैन, ह़ज के महीनों और दिनों के बारे में, यूंही ज़कात में जो साल गुज़रने का ए'तिबार है वोह भी चांद के ए'तिबार से है।

﴿وَلَیْسَ الْبِرُّ﴾ : और येह कोई नेकी नहीं।﴾ शाने नुज़ूल : ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह ह़ज के लिये एह़राम बांध लेते तो अपने मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पिछली दीवार तोड़ कर आते और इस को नेकी जानते। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि येह कोई नेकी नहीं कि तुम घरों के पीछे से आओ। अस्ल

1 ......تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ۱/۲۶۳، الجزء الثانی۔
2 ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ۱/۱۲۹۔

www.dawateislami.net

नेकी तक़्वा, ख़ौफ़े ख़ुदा और अह़कामे इलाही की इत़ाअ़त है।(1)

मुमानअ़त के बिग़ैर किसी चीज़ को ना जाइज़ समझना कैसा ?

इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज़ को बिग़ैर मुमानअ़त के ना जाइज़ समझना जुहला का काम है। अपनी त़रफ़ से ग़लत़ क़िस्म की रस्में और पाबन्दियां लगा लेना जाइज़ नहीं। बहुत से काम वैसे जाइज़ होते हैं लेकिन अपनी त़रफ़ से शरअ़न ज़रूरी समझ लेने से ना जाइज़ हो जाते हैं जैसे मुसल्मान फ़ौत शुदगान के ईसाले सवाब के लिये सिवुम, चालीसवां वग़ैरा करते हैं कि वैसे करें तो जाइज़ हैं लेकिन अगर येह समझ कर करें कि येह करना ज़रूरी है या दूसरे और चालीसवें दिन ही करना ज़रूरी है तो ना जाइज़ है, यूंही सिवुम और चालीसवां वग़ैरा जाइज़ है तो इन्हें अपनी त़रफ़ से ना जाइज़ कहना भी ह़राम है कुफ़्फ़ार के त़र्ज़े अ़मल की नक़्क़ाली है। बहर ह़ाल इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ से बचना ज़रूरी है और इस त़रह़ की चीज़ों की त़रफ़ ग़ौर करना चाहिये, शादी, मर्ग और ज़िन्दगी के दीगर मुआ़मलात में न जाने कैसी कैसी रस्में कहां से घुस आई हैं।

وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۱۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की राह में लड़ो उन से जो तुम से लड़ते हैं और ह़द से न बढ़ो **अल्लाह** पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** की राह में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ह़द से न बढ़ो, बेशक **अल्लाह** ह़द से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।

﴿وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ : **और अल्लाह की राह में लड़ो।**﴾ 6 हिजरी में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया, इस साल हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा से उ़म्रे के इरादे से मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए, मुश्रिकीन ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मक्कए

1 ......تفسیر مدارک، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ص ۱۰۱.

www.dawateislami.net

मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुल्ह़ हुई कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आयिन्दा साल तशरीफ़ लाएं तो आप के लिये तीन रोज़ के लिये मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा, चुनान्चे अगले साल 7 हिजरी में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्रे की क़ज़ा के लिये तशरीफ़ लाए। अब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक हज़ार चार सो सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم थे। मुसल्मानों को येह अन्देशा हुवा कि कुफ़्फ़ार ने अगर वा'दा पूरा न किया और ह़रमे मक्का में हुरमत वाले महीने ज़िल क़ा'दह में जंग की तो मुसल्मान चूंकि ह़ालते अह़राम में होंगे इस लिये इस ह़ालत में जंग करना उन के लिये बड़ा मुश्किल था क्यूं कि ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए इस्लाम तक न ह़रम में जंग जाइज़ थी और न हुरमत वाले महीनों में लिहाज़ा उन्हें तरद्दुद हुवा कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

आयत में इजाज़त का मा'ना या तो येह है कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की ह़िमायत और ए'ज़ाज़ के लिये लड़ो येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से क़िताल करना वाजिब हुवा ख़्वाह वोह इब्तिदा करें या न करें या येह मा'ना है कि उन से लड़ो जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं येह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्यूं कि वोह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसल्मानों के दुश्मन हैं ख़्वाह उन्हों ने किसी वज्ह से जंग न की हो लेकिन मौक़अ़ पाने पर चूकने वाले नहीं। येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदाने जंग में तुम्हारे मुक़ाबले पर आएं और वोह तुम से लड़ने की कुदरत और अहलिय्यत रखते हों तो उन से लड़ो। इस सूरत में ज़ईफ़, बूढ़े, बच्चे मजनून, अपाहज, अन्धे, बीमार और औ़रतें वग़ैरा जो जंग करने की कुदरत नहीं रखते (और वोह जंग में न तो शरीक हैं और न ही जंग करने वालों की किसी क़िस्म की मदद कर रहे हैं तो येह अफ़राद) इस हुक्म में दाख़िल न होंगे और इन्हें क़त्ल करना जाइज़ नहीं।(2)

﴿وَلَا تَعْتَدُوْا : **और ज़ियादती न करो।**﴾ इस से मुराद है कि जो जंग के क़ाबिल नहीं उन से न लड़ो या जिन से तुम ने अ़ह्द किया हो या बिग़ैर दा'वत के जंग न करो क्यूं कि शरई त़रीक़ा येह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दी जाए, अगर वोह इन्कार करें तो उन से जिज़्या त़लब किया जाए और अगर इस से भी इन्कार करें तब जंग की जाए। इस मा'ना पर आयत का हुक्म बाक़ी है मन्सूख़ नहीं।(3)

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۱۸۹، ۱/ ۱۳۰.

2 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ۱۹۰، ص ۸۰.

3 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ۱۹۰، ص ۸۱.

www.dawateislami.net

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ
اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ
فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िरों को जहां पाओ मारो और उन्हें निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था और उन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो जब तक वोह तुम से वहां न लड़ें और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो काफ़िरों की येही सज़ा है। फिर अगर वोह बाज़ रहें तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (दौराने जिहाद) काफ़िरों को जहां पाओ क़त्ल करो और उन्हें वहां से निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था और फ़ितना क़त्ल से ज़ियादा शदीद होता है और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो जब तक वोह तुम से वहां न लड़ें और अगर वोह तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो। काफ़िरों की येही सज़ा है। फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला, मेह्रबान है।

﴾ **وَاقْتُلُوْهُمْ : और उन्हें क़त्ल करो।** ﴿ आयते मुबारका में ऊपर बयान किये गए सियाक़ो सबाक़ में फ़रमाया गया कि चूंकि काफ़िरों ने तुम्हें मक्कए मुकर्रमा से बे दख़्ल किया था और अब भी तुम्हारे साथ आमादए क़िताल हैं तो तुम्हें दौराने जिहाद उन से लड़ने, उन्हें क़त्ल करने और उन्हें मक्कए मुकर्रमा से निकालने की इजाज़त है जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था। चुनान्चे फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम क़बूल न करने वालों को मक्कए मुकर्रमा से निकाल दिया गया। येह भी बताया गया कि इन के क़त्ल का हुक्म इन के जुर्म से ज़ियादा बड़ा नहीं क्यूं कि वोह लोग फ़ितना बरपा करने वाले हैं और उन का फ़ितना शिर्क है या मुसल्मानों को मक्कए मुकर्रमा से निकालना।(1)

1 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٩١، ص ٨١.

www.dawateislami.net

तो उन का फ़ितना उन को क़त्ल करने से भी बढ़ कर है। यहां येह हुक्म नहीं दिया जा रहा है कि काफ़िरों को क़त्ल करने में लगे रहो, अम्न हो या जंग, सुल्ह़ हो या लड़ाई हर ह़ाल में उन्हें क़त्ल करो बल्कि यहां सिर्फ़ दौराने जिहाद क़त्ल करने का हुक्म है। बहुत से इस्लाम दुश्मन लोग इस त़रह़ की आयात से ग़लत़ फ़हमियां पैदा करने की कोशिश करते हैं ऐसे लोगों की मक्कारियों से होशियार रहना चाहिये।

﴿وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾ **: और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो।** मस्जिदे ह़राम शरीफ़ के इर्द गिर्द कई किलो मीटर का अ़लाक़ा ह़रम कहलाता है। ह़रम की ह़ुदूद में मुसल्मानों को लड़ने से मन्अ़ कर दिया गया क्यूं कि येह ह़रम की ह़ुरमत के ख़िलाफ़ है लेकिन अगर कुफ़्फ़ार ही वहां मुसल्मानों से जंग की इब्तिदा करें तो उन्हें जवाब देने के लिये वहां पर भी उन से लड़ने और उन्हें क़त्ल करने की इजाज़त है। अलबत्ता अगर वोह कुफ़्र से बाज़ आ जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा कि इस्लाम तमाम गुनाहों को ख़त्म कर देता है।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक **अल्लाह** की पूजा हो फिर अगर वोह बाज़ आएं तो ज़ियादती नहीं मगर ज़ालिमों पर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन से लड़ते रहो यहां तक कि कोई फ़ितना न रहे और इ़बादत **अल्लाह** के लिये हो जाए फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो सिर्फ़ ज़ालिमों पर सख़्ती की सज़ा बाक़ी रह जाती है।

﴿حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ﴾ **: यहां तक कि फ़ितना न रहे।** अ़रब के काफ़िरों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि उन से तब तक लड़ो कि उन का फ़ितना या'नी शिर्क ख़त्म हो जाए और उन का दीन भी दीने इस्लाम हो जाए और सर ज़मीने अ़रब पर सिर्फ़ एक **अल्लाह** की इ़बादत हो। लिहाज़ा अगर वोह कुफ़्र व बात़िल परस्ती से बाज़ आ जाते हैं तो फिर उन पर कोई सख़्ती नहीं की जाएगी।

www.dawateislami.net

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَ الْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَیْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَیْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَیْكُمْ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۹۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : माहे ह़राम के बदले माहे ह़राम और अदब के बदले अदब है जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर ज़ियादती करो इतनी ही जितनी उस ने की और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** डर वालों के साथ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अदब वाले महीने के बदले अदब वाला महीना है और तमाम अदब वाली चीज़ों का बदला है। तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर इतनी ही ज़ियादती करो जितनी उस ने तुम पर ज़ियादती की हो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** डरने वालों के साथ है।

﴿اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ : **अदब वाले महीने के बदले अदब वाला महीना है।**﴾ मुसल्मानों को चूंकि ह़ुरमत वाले महीनों में लड़ना निहायत भारी लग रहा था इस लिये उन की मज़ीद तसल्ली के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया येह ह़ुरमत वाले महीने में जंग की इजाज़त **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है और येह इजाज़त कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से ह़ुरमत पामाल करने की वज्ह से दी गई है। उन्हों ने तुम्हें उ़म्रह करने और मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका लिहाज़ा अब अगर तुम उन से लड़ते हो और उन का ख़ून बहाते हो तो येह ह़रम और माहे ह़राम की बे ह़ुरमती नहीं होगी क्यूं कि येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इजाज़त के साथ होगा और येह सब लड़ाई अस्ल में ह़ुरमतों का बदला होगा या'नी काफ़िरों का ह़ुरमत वाले महीने में फ़ितना व फ़साद करना ह़ुरमतों को पामाल करना है और तुम्हारा जवाब देना अस्ल में ह़ुरमतों का बदला लेना है न कि ह़ुरमतों को पामाल करना। यूं समझ लें कि डाकू की गोली के जवाब में अगर पोलीस गोली चलाए तो पोलीस को मुजरिम नहीं कहेंगे बल्कि उन के फ़े'ल को ह़िफ़ाज़त व ज़िम्मेदारी कहा जाएगा। क़ातिल के क़त्ल को ज़ियादती नहीं कहेंगे बल्कि इसे क़िसास कहा जाएगा।

www.dawateislami.net

﴿فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ : **तो जो तुम पर ज़ियादती करे ।**﴾ काफ़िर मुसल्मानों पर ज़ुल्मो सितम ढाते रहे, शुरूए इस्लाम में दिन रात, सुब्हो शाम हर वक़्त मुसल्मानों को सताने में लगे रहे, किसी को शहीद किया, किसी को तपती रेत पर घसीटा, किसी को अंगारों पर लिटाया, किसी को कोड़े मारे, किसी का राह चलते मज़ाक़ उड़ाया, मुसल्मानों को उन के घरों से हिजरत पर मजबूर कर दिया, उन के कारोबार ख़त्म कर दिये, उन्हें उन के रिश्तेदारों से जुदा कर दिया। इन तमाम वाक़िआत की तल्ख़ियां मुसल्मानों के दिलों में मौजूद थीं, अब जब कि मुसल्मानों को बदला लेने का मौक़अ़ मिल रहा था तो इस बात का इम्कान था कि मुसल्मान भी बदला लेने में अपने जज़्बए इन्तिक़ाम को भरपूर त़रीक़े से पूरा करते और बदला लेने में ह़द से बढ़ जाते। लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने इस से पहले ही मुसल्मानों को समझा दिया कि तुम पर जिन्हों ने ज़ियादतियां की हैं तुम्हें उन से बदला लेने का इख़्तियार तो दिया जा रहा है लेकिन तुम उतना ही बदला ले सकते हो जितनी उन्हों ने तुम पर ज़ियादती की, इस से ज़ाइद की तुम्हें हरगिज़ इजाज़त नहीं। लिहाज़ा बदला लेने में भी तक़्वा और ख़ौफ़े ख़ुदा को पेशे नज़र रखो और येह जान लो कि **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब और मइय्यत उसी को नसीब होगी जो हर ह़ाल में तक़्वा इख़्तियार करेगा।

बदला लेने से मुतअ़ल्लिक़ दीने इस्लाम की ह़सीन ता'लीम

क्या ह़सीन ता'लीम है और क्या पाकीज़ा तरबियत है जिस वक़्त जज़्बात मचल रहे हों, जज़्बए इन्तिक़ाम जोश मार रहा हो, दुश्मन क़ब्ज़े में आने ही वाला हो, ग़लबा ह़ासिल हुवा ही चाहता हो उस वक़्त भी तक़्वे का, अ़दलो इन्साफ़ का दर्स दिया जा रहा है, ज़ियादती करने से मन्अ़ किया जा रहा है। क्या रूए ज़मीन पर कोई दूसरा ऐसा दीन, क़ानून है जो अपने मानने वालों को इस तरह़ के आ'ला अख़्लाक़ और पाकीज़ा किरदार का दर्स देता हो ? हरगिज़ नहीं। यक़ीनन येह सिर्फ़ इस्लाम ही है।

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۹۵﴾ مع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले **अल्लाह** के मह़बूब हैं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों ख़ुद को हलाकत में न डालो और नेकी करो बेशक **अल्लाह** नेकी करने वालों से महब्बत फ़रमाता है।

﴿وَ اَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ : **और अल्लाह की राह में ख़र्च करो।**﴾ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का अस्ल हुक्म तो माल के हवाले से है लेकिन अ़ल्लामा सावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस के मा'ना की मज़ीद वुस्अ़त को बयान किया है। फ़रमाते हैं कि आयत का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमां बरदारी और उस की रिज़ा के कामों में अपने जानो माल को सर्फ़ करो ख़्वाह जिहाद हो या रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक या **अल्लाह** तआ़ला के कमज़ोर और ग़रीब बन्दों की मदद की सूरत में हो।(1)

﴿وَ لَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ : **और अपने हाथों ख़ुद को हलाकत में न डालो।**﴾ ख़ुद को हलाकत में डालने की बहुत सी सूरतें हैं :

(1)...... सह़ीह़ बुख़ारी में है "येह आयत ख़र्च करने से मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई।"(2)

या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना बन्द कर के या कम कर के अपने आप को हलाकत में न डालो।

(2)...... ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "येह आयत हम अन्सार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बारे में नाज़िल हुई, जब **अल्लाह** तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया और इस के मददगार कसीर हो गए तो हम में से बा'ज़ ने बा'ज़ से सरगोशी करते हुए कहा : (जिहाद की मसरूफ़िय्यत में) हमारे माल ज़ाएअ़ हो गए लिहाज़ा अब **अल्लाह** तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया है तो (क्या ही अच्छा हो कि) अगर हम अपने अम्वाल में ठहरें और जो ज़ाएअ़ हुवा उस की दुरुस्ती कर लें, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और जो हम ने कहा उस का रद फ़रमाया कि हलाकत तो जिहाद छोड़ कर अपने अम्वाल की दुरुस्ती में लग जाना है।"(3)

(3)...... अन्सार जितना **अल्लाह** तआ़ला तौफ़ीक़ देता सदक़ा व ख़ैरात करते रहते। एक साल उन्हें तंगदस्ती का सामना हुवा तो उन्हों ने येह अ़मल रोक दिया इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(4)

1 ......صاوی، البقرة، تحت الآية: ١٩٥، ١٦٣/١.
2 ......بخاری، کتاب التفسير، باب وانفقوا فی سبيل الله... الخ، ١٧٨/٣، الحديث: ٤٥١٦.
3 ......ترمذی، کتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة البقرة، ٤٥٤/٤، الحديث: ٢٩٨٣.
4 ......معجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ١٨٩/٤، الحديث: ٥٦٧١.

www.dawateislami.net

(4)...... हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि कोई शख़्स गुनाह करता और कहता मेरी बख़्शिश न होगी इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।[(1)]

ख़ुलासए कलाम येह है कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को तर्क करना भी हलाकत का सबब है, फ़ुज़ूल ख़र्ची भी हलाकत है, जिहाद तर्क करना भी हलाकत है यूंही इस त़रह़ की हर वोह चीज़ जो हलाकत का बाइस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है ह़त्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी त़रह़ ख़ुदकुशी करना सब ह़राम है। चूंकि ख़ुदकुशी ख़ुद को हलाक करने की निहायत ही नुमायां सूरत है लिहाज़ा यहां इस की वईद बयान की जाती है, चुनान्चे ख़ुदकुशी के बारे में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने पहाड़ से गिर कर ख़ुदकुशी की वोह मुसल्सल जहन्नम में गिरता रहेगा और जिस ने ज़हर खा कर ख़ुदकुशी की (क़ियामत के दिन) वोह ज़हर उस के हाथ में होगा और जहन्नम की आग में उसे हमेशा खाता रहेगा और जिस ने छुरी के ज़रीए ख़ुद को क़त्ल किया, (क़ियामत के दिन) वोह छुरी उस के हाथ में होगी और दोज़ख़ की आग में हमेशा वोह छुरी अपने पेट में मारता रहेगा।"[(2)]

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَیْسَرَ مِنَ
الْهَدْیِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰی یَبْلُغَ الْهَدْیُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ
كَانَ مِنْكُمْ مَّرِیْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًی مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْیَةٌ مِّنْ صِیَامٍ
اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۫ وقفة فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَی الْحَجِّ
فَمَا اسْتَیْسَرَ مِنَ الْهَدْیِ ۚ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ ثَلٰثَةِ اَیَّامٍ
فِی الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ

1 ......معجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ١٨٩/٤، الحديث: ٥٦٧٢.

2 ......بخارى، كتاب الطب، باب شرب السمّ والدواء به... الخ، ٤٣/٤، الحديث: ٥٧٧٨.

www.dawateislami.net

لَمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِی الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़ज और उ़म्रह **अल्लाह** के लिये पूरा करो फिर अगर तुम रोके जाओ तो क़ुरबानी भेजो जो मुयस्सर आए और अपने सर न मुंडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है तो बदला दे रोज़े या ख़ैरात या क़ुरबानी फिर जब तुम इत़्मीनान से हो तो जो ह़ज से उ़म्रह मिलाने का फ़ाएदा उठाए उस पर क़ुरबानी है जैसी मुयस्सर आए फिर जिसे मक़्दूर न हो तो तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुए येह हुक्म उस के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ह़ज और उ़म्रह **अल्लाह** के लिये पूरा करो फिर अगर तुम्हें (मक्का से) रोक दिया जाए तो (ह़रम में) क़ुरबानी का जानवर भेजो जो मुयस्सर आए और अपने सर न मुंडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है तो रोज़े या ख़ैरात या क़ुरबानी का फ़िदया दे फिर जब तुम इत़्मीनान से हो तो जो ह़ज से उ़म्रह मिलाने का फ़ाएदा उठाए उस पर क़ुरबानी लाज़िम है जैसी मुयस्सर हो फिर जो (क़ुरबानी की क़ुदरत) न पाए तो तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे और सात रोज़े (उस वक़्त रखो) जब तुम अपने घर लौट कर जाओ, येह मुकम्मल दस हैं। येह हुक्म उस के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** शदीद अ़ज़ाब देने वाला है।

﴾وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ﴿ **: और ह़ज और उ़म्रह अल्लाह के लिये पूरा करो।**﴾ आयत में मुराद येह है कि ह़ज व उ़म्रह दोनों को इन के फ़राइज़ व शराइत़ के साथ ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये बिग़ैर सुस्ती और कोताही के मुकम्मल करो।

ह़ज की ता'रीफ़ और ह़ज व उ़म्रह के चन्द अह़काम

ह़ज नाम है एह़राम बांध कर नवीं ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के त़वाफ़ का। इस के लिये ख़ास वक़्त मुक़र्रर है जिस में येह अफ़्आ़ल किये जाएं

तो हज है। हज 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुवा, इस की फ़र्ज़िय्यत क़त्ई है, इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाला काफ़िर है।[1]

हज के फ़राइज़ येह हैं : (1)...... एहराम (2)...... वुक़ूफ़े अ़रफ़ा (3)...... तवाफ़े ज़ियारत।

हज की तीन क़िस्में हैं : (1)...... इफ़राद या'नी सिर्फ़ हज का एहराम बांधा जाए। (2)...... तमत्तोअ़ या'नी पहले उ़म्रे का एहराम बांधा जाए फिर उ़म्रह के एहराम से फ़ारिग़ होने के बा'द उसी सफ़र में हज का एहराम बांधा जाए। (3)...... क़िरान या'नी उ़म्रह और हज दोनों का इकठ्ठा एहराम बांधा जाए, इस में उ़म्रह करने के बा'द एहराम की पाबन्दियां ख़त्म नहीं होतीं बल्कि बर क़रार रहती हैं। उ़म्रह की तफ़्सील कुछ यूं है कि उ़म्रह में सिर्फ़ एहराम बांध कर ख़ानए का'बा का तवाफ़ और सफ़ा मर्वह की सई कर के हल्क़ करवाना होता है। हज व उ़म्रह दोनों के हर हर मस्अले में बहुत तफ़्सील है। इस के लिये बहारे शरीअ़त के हिस्सा 6 का मुतालआ़ करें।[2]

﴿فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ : **तो अगर तुम्हें रोक दिया जाए।**﴾ यहां से हज के एक अहम मस्अले का बयान है जिसे इह़सार कहते हैं। आयत का ख़ुलासए कलाम येह है कि अगर हज या उ़म्रह का एहराम बांध लेने के बा'द हज या उ़म्रे की अदाएगी में तुम्हें कोई रुकावट पेश आ जाए जैसे दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरा तो ऐसी हालत में तुम एहराम से बाहर आ जाओ और इस सूरत में हुदूदे ह़रम में क़ुरबानी का जानवर ऊंट या गाय या बकरी का ज़ब्ह करवाना तुम पर वाजिब है और जब तक क़ुरबानी का जानवर ज़ब्ह न हो जाए तब तक तुम सर न मुंडवाओ।

﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا : **फिर जो तुम में बीमार हो।**﴾ इह़सार के बा'द एक और मस्अले का बयान है वोह येह है कि हालते एहराम में बाल मुंडवाने की इजाज़त नहीं होती। यूंही लिबास, ख़ुश्बू वग़ैरा के ए'तिबार से काफ़ी पाबन्दियां होती हैं। अगर इन का ख़िलाफ़ करें तो दम या सदक़ा लाज़िम आता है लेकिन बा'ज़ सूरतें ऐसी हैं कि मजबूरी की वज्ह से एहराम की पाबन्दियों की मुख़ालफ़त करना पड़ती है। बिग़ैर उ़ज़्र के और उ़ज़्र की वज्ह से किये गए अफ़्आ़ल में शरीअ़त ने कुछ फ़र्क़ किया है। आयत में इस की कुछ सूरतों का बयान है। जान

❶...... बहारे शरीअ़त, हिस्सए शशुम, 1/1035, 1036

❷...... अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ की किताब "रफ़ीक़ुल हरमैन" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पढ़ना भी बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

बूझ कर एह़राम की पाबन्दियों की मुख़ालफ़त करेगा तो गुनाहगार भी होगा और कफ़्फ़ारा देना भी लाज़िम आएगा और मजबूरी की वज्ह से मुख़ालफ़त करे तो गुनाहगार न होगा लेकिन कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा अलबत्ता मजबूरी वाले को फ़िदये में कुछ रुख़्सतें भी दी गई हैं चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "जहां दम का हुक्म है वोह जुर्म अगर बीमारी या सख़्त गर्मी या शदीद सर्दी या ज़ख़्म या फोड़े या जूओं की सख़्त ईज़ा के बाइ़स होगा तो उसे जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी कहते हैं इस में इख़्तियार होगा कि दम (क़ुरबानी) के बदले छे मिस्कीनों को एक एक सदक़ा दे दे या दोनों वक़्त पेट भर खिलाए या तीन रोज़े रख ले। और अगर उस (जुर्म) में सदक़े का हुक्म है और ब मजबूरी किया तो इख़्तियार होगा कि सदक़े के बदले एक रोज़ा रख ले।"(1)

﴾فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ﴿ : **तो जो ह़ज से उ़म्रह मिलाने का फ़ाएदा उठाए।** जो शख़्स एक ही सफ़र में शराइत़ का लिह़ाज़ करते हुए ह़ज व उ़म्रह की सआ़दत ह़ासिल करे उस पर शुक्राने के त़ौर पर क़ुरबानी लाज़िम है और येह क़ुरबानी ईद के दिन वाली क़ुरबानी नहीं होती बल्कि जुदागाना होती है और अगर क़ुरबानी की क़ुदरत न हो तो उसे हुक्म है कि दस रोज़े रखे, उन में से तीन रोज़े ह़ज के दिनों में या'नी यकुम शव्वाल से नवीं ज़िल ह़िज्जा तक एह़राम बांधने के बा'द किसी भी तीन दिन में रख ले, इकठ्ठे रखे या जुदा जुदा दोनों का इख़्तियार है और सात रोज़े 13 ज़िल ह़िज्जा के बा'द रखे। मक्कए मुकर्रमा में भी रख सकते हैं लेकिन अफ़्ज़ल येह है कि घर वापस लौट कर रखे।(2)

﴾حَاضِرِی الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴿ : **मक्का के रहने वाले।** ह़ज्जे तमत्तोअ़ या ह़ज्जे क़िरान का जाइज़ होना सिर्फ़ आफ़ाक़ी या'नी मीक़ात से बाहर वालों के लिये है। ह़ुदूदे मीक़ात में और इस से अन्दर रहने वालों के लिये न तमत्तोअ़ की इजाज़त है और न क़िरान की, वोह सिर्फ़ ह़ज्जे इफ़राद कर सकते हैं।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِیْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَ لَا فُسُوْقَ ۙ وَ لَا جِدَالَ فِی الْحَجِّ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ یَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؔؕ وَ تَزَوَّدُوْا

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शशुम, जुर्म और उन के कफ़्फ़ारे का बयान, 1/1162

2...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शशुम, 1/1140 –1141 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى٘ وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ह़ज के कई महीने हैं जाने हुए तो जो उन में ह़ज की निय्यत करे तो न औ़रतों के सामने सोह़बत का तज़्किरा हो न कोई गुनाह, न किसी से झगड़ा ह़ज के वक़्त तक और तुम जो भलाई करो **अल्लाह** उसे जानता है और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है और मुझ से डरते रहो ऐ अ़क़्ल वालो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ह़ज चन्द मा'लूम महीने हैं तो जो उन में ह़ज की निय्यत करे तो ह़ज में न औ़रतों के सामने सोह़बत का तज़्किरा हो और न कोई गुनाह हो और न किसी से झगड़ा हो और तुम जो भलाई करो **अल्लाह** उसे जानता है और ज़ादे राह साथ लो पस सब से बेहतर ज़ादे राह यक़ीनन परहेज़ गारी है और ऐ अ़क़्ल वालो ! मुझ से डरते रहो।

﴿ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ : **ह़ज चन्द मा'लूम महीने हैं।**﴾ ह़ज के चन्द अह़काम बयान करने के बा'द यहां मजी़द ह़ज के अह़काम व आदाब बयान किये जा रहे हैं। फ़रमाया गया कि ह़ज के चन्द मश्हूरो मा'रूफ़ महीने हैं या'नी शव्वाल, ज़ुल क़ा'दा और ज़िल ह़िज्जा के दस दिन। ह़ज के अरकान सिर्फ़ आठवीं ज़िल ह़िज्जा से बारहवीं तक अदा होते हैं। मगर शव्वाल, ज़ी क़ा'दा को भी ह़ज के महीने इसी लिये कहा गया है कि इन में एह़राम बांधना बिला कराहत जाइज़ है और इन से पहले ह़ज का एह़राम बांधना मकरूह है।

﴿ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ : **तो जो उन में ह़ज को लाज़िम कर ले।**﴾ या'नी जो शख़्स एह़राम बांध कर या हदी का जानवर चला कर ह़ज को अपने ऊपर लाज़िम कर ले उस पर येह चीज़ें लाज़िम हैं :

(1)...... रफ़स से बचना। रफ़स से मुराद है : हम बिस्तरी करना या औ़रतों के सामने इस का ज़िक्र करना या फ़ोह़्श कलाम करना।[1] अलबत्ता निकाह़ कर सकता है।

(2)...... फ़ुसूक़ से बचना। फ़िस्क़ का मा'ना है गुनाह और बुराई के काम।

(3)...... जिदाल से बचना। जिदाल से मुराद है : अपने हम सफ़रों से या ख़ादिमों से या ग़ैरों के साथ झगड़ना।[2]

याद रहे कि गुनाह के काम और लड़ाई झगड़ा तो हर जगह ही मम्नूअ़ है लेकिन चूंकि

---

1 ......هدايه، كتاب الحج، باب الاحرام، ١/١٣٥.

2 ......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ١٩٧، ص٩٥.

www.dawateislami.net

हज एक अज़ीम और मुक़द्दस इबादत है इस लिये इस इबादत के दौरान इन से बचने की बतौरे ख़ास ताकीद की है ।

﴿وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ﴾ **: और तुम जो भलाई करो ।** बुराइयों की मुमानअ़त के बा'द नेकियों की तरग़ीब दी गई है कि बजाए फ़िस्क़ के तक़्वा और बजाए लड़ाई झगड़ा के अख़्लाक़े ह़मीदा इख़्तियार करो ।

﴿وَتَزَوَّدُوْا﴾ **: और ज़ादे राह लो ।** **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ यमनी लोग ह़ज के लिये बिग़ैर सामाने सफ़र के रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक्किल या'नी "तवक्कुल करने वाला" कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर लोगों से मांगना शुरूअ़ कर देते और कभी ग़स्ब और ख़ियानत के मुर्तकिब भी होते, उन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई ।[1]

और हुक्म हुवा कि सफ़र का सामान ले कर चलो, दूसरों पर बोझ न डालो और सुवाल न करो कि येह तमाम चीज़ें तवक्कुल और तक़्वा के ख़िलाफ़ हैं और तक़्वा बेहतरीन ज़ादे राह है । नीज़ येह भी समझा दिया गया कि जिस त़रह़ दुन्यवी सफ़र के लिये सामान सफ़र ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिये परहेज़ गारी का सामान लाज़िम है ।

﴿وَاتَّقُوْنِ﴾ **: और मुझ से डरो ।** अ़क़्ल वाले कह कर इस लिये मुख़ात़ब किया ताकि लोगों को समझ आ जाए कि अ़क़्ल का तक़ाज़ा ख़ौफ़े इलाही है । जो **अल्लाह** तआ़ला से न डरे वोह बे अ़क़्लों की त़रह़ है । अ़क़्ल वोही है जो **अल्लाह** तआ़ला से ख़ौफ़ पैदा करे और जिस अ़क़्ल से आदमी बेदीन हो वोह अ़क़्ल नहीं बल्कि बे अ़क़्ली है । अबू जह्ल बे अ़क़्ल था और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़क़्ल मन्द थे ।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो तो जब अ़रफ़ात से पलटो तो **अल्लाह** की याद करो मश्अ़रे ह़राम के पास और उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक तुम इस से पहले बहके हुए थे ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٩٧، ١٣٩/١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो, तो जब तुम अ़रफ़ात से वापस लौटो तो मश्अ़रे ह़राम के पास **अल्लाह** को याद करो और उस का ज़िक्र करो क्यूं कि उस ने तुम्हें हिदायत दी है अगर्चे इस से पहले तुम यक़ीनन भटके हुए थे।

﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ﴾ **: तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो।** **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मानों ने ख़याल किया कि राहे ह़ज में जिस ने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उस का ह़ज ही ज़ाएअ़ हो गया इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

इस से मा'लूम हुवा कि जब तक तिजारत से अफ़्आ़ले ह़ज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत की इजाज़त है। नीज़ यहां माल को रब عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल क़रार दिया है, इस से मा'लूम हुवा कि माल फ़ी नफ़्सिही बुरी चीज़ नहीं बल्कि इस का ग़लत़ इस्ति'माल बुरा है। हज़ारों नेकियां सिर्फ़ माल के ज़रीए़ ही की जा सकती हैं जैसे ज़कात व सदक़ात व ह़ज व उ़म्रह वग़ैरा।

﴿فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ﴾ **: तो जब तुम अ़रफ़ात से वापस लौटो।** अ़रफ़ात एक मक़ाम का नाम है जो ह़ज में वुक़ूफ़ (या'नी ठहरने) की जगह है। मश्हूर मुफ़स्सिर ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا जुदाई के बा'द 9 ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात के मक़ाम पर जम्अ़ हुए और दोनों ने एक दूसरे को पहचाना इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा और मक़ाम का नाम अ़रफ़ात हुवा।(2)

एक क़ौल येह है कि चूंकि इस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा है।(3)

ह़ाजी के लिये 9 ज़िल ह़िज्जा के ज़वाले आफ़्ताब से ले कर 10 ज़िल ह़िज्जा की सुब्ह़े सादिक़ से पहले तक कम अज़ कम एक लम्ह़े के लिये अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़र्ज़ है।(4)

और 9 तारीख़ को इतनी देर वुक़ूफ़ करना कि वहीं सूरज ग़ुरूब हो जाए येह वाजिब है।(5)

1 ......ابو داؤد، کتاب المناسك، باب الكرىّ، ١٩٨/٢، الحديث: ١٧٣٣.
2 ......تفسیرقرطبی،البقرة،تحت الآية:١٩٨، ٣٢٠/١،الجزء الثانی.
3 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٩٨، ١/ ١٤٠.
4 ...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शशुम, 1/1147
5 ......عالمگیری، کتاب المناسك، الباب الخامس، ٢٢٩/١.

www.dawateislami.net

﴿عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ: **मश्अ़रे ह़राम के पास।**﴾ मश्अ़रे ह़राम मुज़्दलिफ़ा में वोह जगह है जहां इमामे ह़ज वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा करता है। मुज़्दलिफ़ा में वाक़ेअ़ वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा वुक़ूफ़ का मक़ाम है। मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारना सुन्नत है और फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ होने से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब के दौरान कम अज़् कम एक लम्ह़े के लिये वहां ठहरना वाजिब है। बिग़ैर उ़ज़्र वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा तर्क करने से दम लाज़िम आता है और मश्अ़रे ह़राम के पास वुक़ूफ़ अफ़्ज़ल है। मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ के दौरान तल्बिया, तहलील व तक्बीर और सना व दुआ़ वग़ैरा में मश्ग़ूल रहना चाहिये। 9 ज़ुल ह़िज्जा को मुज़्दलिफ़ा में नमाज़े मग़रिब व इशा को मिला कर इशा के वक़्त में पढ़ना होता है।

﴿وَاذْكُرُوْهُ: **और उसे याद करो।**﴾ फ़रमाया गया कि तुम ज़िक्र व इबादत का त़रीक़ा न जानते थे, **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ तुम्हें इबादत के त़रीक़े सिखाए लिहाज़ा इस ने'मत पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करो।

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बात येह है कि ऐ क़ुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहां से लोग पलटते हैं और **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगो, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर (ऐ क़ुरैशियो !) तुम भी वहीं से पलटो जहां से दूसरे लोग पलटते हैं और **अल्लाह** से मग़्फ़िरत त़लब करो, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ: **फिर तुम भी वहीं से पलटो जहां से दूसरे लोग पलटते हैं।**﴾ क़ुरैश मुज़्दलिफ़ा में ठहरे रहते थे और सब लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ न करते, जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो येह मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते, इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि वोह भी सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ वापस लौटें।[1] येही ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ١٩٩، ١/١٤١.

www.dawateislami.net

इस्लामी अह्काम सब के लिये बराबर हैं

इस से मा'लूम हुवा कि इस्लामी अह्काम बिरादरियों के ए'तिबार से नहीं बदलते और न ही किसी के रुत्बे और मक़ाम की वज्ह से उन में तब्दीली होती है बल्कि अमीर व ग़रीब, गोरे काले, अ़रबी अ़जमी सब के लिये इस्लाम के अह्काम बराबर हैं। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : कुरैश एक मख़्ज़ूमी औ़रत के बारे में बहुत ही परेशान थे जिस ने चोरी की थी, लोग कहने लगे कि इस बारे में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू कौन करे ? बा'ज़ आदमियों ने कहा कि ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिवा ऐसी जुरअत और कौन कर सकता है क्यूं कि वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चहीते हैं। जब ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस बारे में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू की तो आप ने फ़रमाया : "क्या तुम **अल्लाह** तआ़ला की हुदूद के बारे में सिफ़ारिश कर रहे हो हो ?" फिर आप ने खड़े हो कर ख़ुत़्बा दिया और इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम से पहले लोग इसी लिये हलाक हुए थे कि जब कोई मालदार चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई ग़रीब आदमी चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम कर देते। ख़ुदा की क़सम ! अगर मुह़म्मद की बेटी फ़ात़िमा भी चोरी करती तो मैं उस के हाथ भी काट देता।"(1)

तारीख़े इस्लाम में मुसल्मान क़ाज़ियों के ऐसे बे शुमार वाक़िआत मौजूद हैं जिस में उन्हों ने किसी के रुत्बे और क़राबत दारी की परवा किये बिग़ैर शरीअ़त के अह्काम को नाफ़िज़ किया, उन्ही वाक़िआत में से एक वाक़िआ पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे ह़ज़रते सा'द बिन इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद की त़रफ़ से मदीनए मुनव्वरह के क़ाज़ी मुक़र्रर थे। एक मरतबा वलीद ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने पास मुल्के शाम में बुलाया, चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बा ए'तिमाद शख़्स को मदीनए मुनव्वरह में क़ाज़ी बना कर ख़ुद मुल्के शाम की जानिब चल दिये। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शाम की सरह़द पर पहुंचे तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को शहर से बाहर ही रोक दिया गया और काफ़ी अ़र्से तक दाख़िले की इजाज़त न मिली। एक रात आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिद में मसरूफ़े इबादत थे कि एक शख़्स को देखा कि नशे की ह़ालत में बद मस्त है और मस्जिद में घूम रहा है। येह देख कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : "येह शख़्स कौन है ?" लोगों ने बताया : येह ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद का मामूं है, इस ने शराब पी है और अब नशे की ह़ालत में मस्जिद के अन्दर घूम फिर रहा है। येह सुन कर आप

(1) ......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ٥٦-باب، ٢/٤٦٨، الحدیث: ٣٤٧٥.

www.dawateislami.net

رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه को बहुत जलाल आया कि येह कितनी दीदा दिलेरी से **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी कर रहा है और उस के पाक दरबार में ऐसी गन्दी ह़ालत में बे ख़ौफ़ घूम फिर रहा है। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने गुलाम को दुर्रा लाने का हुक्म फ़रमाया। गुलाम ने दुर्रा (कोड़ा) दिया। दुर्रा ले कर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने फ़रमाया : "मुझ पर लाज़िम है कि मैं इस पर शर्ई सज़ा नाफ़िज़ करूं चाहे येह कोई भी हो, इस्लाम में सब बराबर हैं।" चुनान्चे आप आगे बढ़े और मस्जिद में ही उस को 80 कोड़े मारे। वोह शख़्स 80 कोड़े खाने के बा'द निहायत ज़ख़्मी ह़ालत में ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद के पास पहुंचा। ख़लीफ़ा ने जब अपने मामूं की येह ह़ालत देखी तो बहुत ग़ज़बनाक हुवा और पूछा : "तुम्हारी येह ह़ालत किस ने की ? किस ने तुम्हें इतना शदीद ज़ख़्मी किया है ?" उस ने जवाब दिया : एक शख़्स मदीनए मुनव्वरह से आया हुवा था, उस ने मुझे 80 कोड़े सज़ा दी और कहा : "येह सज़ा देना और ह़द क़ाइम करना मुझ पर लाज़िम है।" ख़लीफ़ा ने जब येह सुना तो उस ने फ़ौरन हुक्म दिया कि हमारी सुवारी तय्यार की जाए, उसी वक़्त हुक्म की ता'मील हुई और ख़लीफ़ा कुछ सिपाहियों को ले कर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه के पास पहुंच गया और आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه से कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! तू ने मेरे मामूं के साथ येह सुलूक क्यूं किया, इसे इतनी दर्दनाक सज़ा क्यूं दी ?" ह़ज़रते सा'द बिन इब्राहीम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! तू ने मुझे क़ाज़ी बनाया ताकि मैं शरीअ़त के अह़काम नाफ़िज़ करूं और इस की ख़िलाफ़ वरज़ी करने वाले को सज़ा दूं। चुनान्चे जब मैं ने देखा कि सरे आ़म **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी की जा रही है और येह शख़्स नशे की ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में घूम फिर रहा है और कोई इसे पूछने वाला नहीं तो मेरी ग़ैरते ईमानी ने इस बात को गवारा न किया कि मैं **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी होती देखूं और तुम्हारी क़राबत दारी की वज्ह से चश्म पोशी करूं और शर्ई ह़ुदूद क़ाइम न करूं।"(1)

فَاِذَا قَضَیۡتُمۡ مَّنَاسِکَکُمۡ فَاذۡکُرُوا اللّٰهَ کَذِکۡرِکُمۡ اٰبَآءَکُمۡ اَوۡ اَشَدَّ ذِکۡرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّقُوۡلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا وَمَا لَهٗ فِی الۡاٰخِرَةِ مِنۡ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾

1 ......عيون الحكايات، الحكاية الرابعة والاربعون بعد المائة، ص١٦٣-١٦٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको तो **अल्लाह** का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में दे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर लो तो **अल्लाह** का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा (ज़िक्र करो) और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में दे दे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

﴿فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ﴾ **: तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे।** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब ह़ज के बा'द का'बे के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे।(1) इस्लाम में बताया गया कि येह शोहरत व ख़ुद नुमाई की बेकार बातें हैं, इस की बजाए ज़ौक़ो शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो। इस आयत से बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना और लोगों का इकठ्ठे मिल कर ज़िक्र करना दोनों साबित होते हैं क्यूं कि अ़रब लोग अपने बाप दादा का ज़िक्र बुलन्द आवाज़ से करते थे और मज्मअ़ में करते थे।

﴿فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ﴾ **: कुछ लोग कहते हैं।** आयत के इस ह़िस्से और इस के बा'द वाली आयत में दुआ़ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाई गई हैं। एक वोह काफ़िर जिन की दुआ़ में सिर्फ़ त़लबे दुन्या होती थी और आख़िरत पर उन का ए'तिक़ाद न था उन के बारे में इर्शाद हुवा कि आख़िरत में उन का कुछ ह़िस्सा नहीं। दूसरे वोह ईमानदार जो दुन्या व आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ़ करते हैं।

दुन्या की बेहतरी त़लब करने का हुक्म

याद रहे कि मोमिन अगर दुन्या की बेहतरी त़लब करता है तो वोह भी जाइज़ है और येह त़लबे दुन्या अगर दीन की ताईदो तक़्वियत के लिये हो तो येह दुआ़ भी उमूरे दीन से शुमार होगी। लेकिन येह याद रहे कि आख़िरत को अस्लन फ़रामोश कर के सिर्फ़ दुन्या मांगना बहर ह़ाल मुसल्मान के शायाने शान नहीं। दुन्या के त़लब गारों और आख़िरत के त़लब गारों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

1 ......صاوى، البقرة، تحت الآية: ٢٠٠، ١/١٧٠.

www.dawateislami.net

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो जल्दी वाली (दुन्या) चाहता है तो हम जिसे चाहते हैं उस के लिये दुन्या में जो चाहते हैं जल्द दे देते हैं फिर हम ने उस के लिये जहन्नम बना रखी है जिस में वोह मज़्मूम, मरदूद हो कर दाख़िल होगा। और जो आख़िरत चाहता है और इस के लिये ऐसी कोशिश करता है जैसी करनी चाहिये और वोह ईमान वाला भी हो तो येही वोह लोग हैं जिन की कोशिश की क़द्र की जाएगी।

नीज़ एक और मक़ाम पर सिर्फ़ दुन्या की रंगीनियों में मगन रहने वालों से और उस के बा'द जो **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक बेहतर और अफ़्ज़ल चीज़ है उस के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ وَ الْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोगों के लिये उन की ख़्वाहिशात की महब्बत को आरास्ता कर दिया गया या'नी औ़रतों और बेटों और सोने चांदी के जम्अ़ किये हुए ढेरों और निशान लगाए गए घोड़ों और मवेशियों और खेतियों को (उन के लिये आरास्ता कर दिया गया) येह सब दुन्यवी ज़िन्दगी का साज़ो सामान है और सिर्फ़ **अल्लाह** के पास अच्छा ठिकाना है। (ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमाओ, (ऐ लोगो !) क्या मैं तुम्हें इन चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूं ? (सुनो, वोह येह है कि) परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं उन जन्नतों में हमेशा रहेंगे और (वहां) पाकीज़ा बीवियां और **अल्लाह** की ख़ुशनूदी है और **अल्लाह** बन्दों को देख रहा है।

1 ......بنی اسرائیل:۱۸،۱۹.
2 ......ال عمران:۱٤،۱۵.

www.dawateislami.net

النصف

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा। ऐसों को उन की कमाई से भाग है और **अल्लाह** जल्द हिसाब करने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कोई यूं कहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई अ़ता फ़रमा और हमें आख़िरत में (भी) भलाई अ़ता फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। उन लोगों के लिये उन के कमाए हुए आ'माल से हिस्सा है और **अल्लाह** जल्द हिसाब करने वाला है।

﴿وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ : **और कोई यूं कहता है।**﴾ इस आयत में मज़्कूर मुसल्मान की दुआ़ बहुत जामेअ़ दुआ़ है और थोड़े अल्फ़ाज़ में दीनो दुन्या की तमाम भलाइयां इस में मांगी गई हैं। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे :

"اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ"(1)

दुन्या की भलाई में हर अच्छी और मुफ़ीद शै दाख़िल है ख़्वाह वोह किफ़ायत करने वाला रिज़्क़ हो या अच्छा घर या अच्छी बीवी या अच्छी सुवारी या अच्छा पड़ोस वग़ैरहा।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

1 ......بخاری، کتاب الدعوات، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم ربنا آتنا فی الدنیا حسنۃ... الخ، ٤/٢١٤، الحدیث: ٦٣٨٩.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की याद करो गिने हुए दिनों में तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस पर गुनाह नहीं परहेज़ गार के लिये और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और गिनती के दिनों में **अल्लाह** का ज़िक्र करो तो जो जल्दी कर के दो दिन में (मिना से) से चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो पीछे रह जाए तो उस पर (भी) कोई गुनाह नहीं। (येह बिशारत) परहेज़ गार के लिये है और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम उसी की त़रफ़ उठाए जाओगे।

﴿وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْۤ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ﴾ : **और गिनती के दिनों में अल्लाह का ज़िक्र करो।** गिनती के दिनों से मुराद अय्यामे तशरीक़ हैं और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बा'द और जमरात की रमी के वक़्त तक्बीर कहना मुराद है।[1] और मुराद येह है कि मिना में क़ियाम के दौरान **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहो।

﴿فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ﴾ : **तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए।** दस, ग्यारह, बारह और तेरह ज़ुल ह़ज, इन चार दिनों में मिना में जमरात पर रमी की जाती है। दस तारीख़ को सिर्फ़ एक जमरे की और बक़िय्या तारीख़ों में तीनों जमरात की। तेरह तारीख़ को भी रमी तो है लेकिन अगर कोई शख़्स बारह तारीख़ की रमी कर के मिना से वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह नहीं अगर्चे तेरह को रमी कर के वापस आना अफ़्ज़ल है।[2]

यहां दो दिनों में रमी कर के चले जाने से मुराद दस ज़ुल हिज्जा के बा'द दो दिन हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي

1 ...... صاوی، البقرة، تحت الآية: ۲۰۳، ۱/۱۷۱.
2 ...... تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية: ۲۰۳، ص۹۸.

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَ يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَ النَّسْلَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे और अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है। और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और **अल्लाह** फ़साद से राज़ी नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और लोगों में से कोई वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुम्हें बहुत अच्छी लगती है और वोह अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को गवाह बनाता है हालां कि वोह सब से ज़ियादा झगड़ा करने वाला है। और जब पीठ फेर कर जाता है तो कोशिश करता है कि ज़मीन में फ़साद फैलाए और खेत और मवेशी हलाक करे और **अल्लाह** फ़साद को पसन्द नहीं करता।

﴿مَنْ یُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ﴾ **: जिस की गुफ़्त्गू तुझे अच्छी लगती है।** **शाने नुज़ूल :** येह आयत अख़्नस बिन शरीक़ मुनाफ़िक़ के बारे में नाज़िल हुई जो कि हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत लजाजत से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत का दा'वा करता और इस पर क़समें खाता और दरपर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था। उस ने मुसल्मानों के मवेशियों को हलाक किया और इन की खेतियों को आग लगाई थी।(1)

यहां मज्मूई तौर पर जो ख़राबियां बयान की गई हैं वोह येह हैं :

(1)...... ज़ाहिरी तौर पर बड़ी अच्छी बातें करना, **(2)**...... अपनी ग़लत़ बातों पर **अल्लाह** को गवाह बनाना, **(3)**...... झगड़ालू होना, **(4)**...... फ़साद फैलाना, **(5)**...... लोगों के अम्वाल बरबाद करना, **(6)**...... नसीहत की बात सुन कर क़बूल करने की बजाए तकब्बुर करना।

यहां आयते मुबारका में अगर्चे एक ख़ास मुनाफ़िक़ का तज़्किरा है लेकिन येह आयत

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٠٤، ١/١٤٤-١٤٥.

www.dawateislami.net

बहुत से लोगों को समझाने के लिये काफ़ी है। हमारे मुआ़शरे में भी बहुत से लोग ऐसे हैं जिन की ज़बान बड़ी मीठी है, गुफ़्तगू बड़ी नरमी से करते हैं, बड़ी आ़जिज़ी का इज़्हार करते हैं लेकिन दरपर्दा दीन के मसाइल में या लोगों में या ख़ानदानों में फ़साद बरपा करते हैं और हलाकत व बरबादी का ज़रीआ़ बनते हैं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** से डरो तो उसे ज़िद मज़ीद गुनाह पर उभारती है तो ऐसे को जहन्नम काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा ठिकाना है।

﴿وَ اِذَا قِيْلَ لَهُ : **और जब उस से कहा जाए।**﴾ मुनाफ़िक़ आदमी की एक अ़लामत येह होती है कि अगर उसे समझाया जाए तो अपनी बात पर अड़ जाता है, दूसरे की बात मानना अपने लिये तौहीन समझता है, नसीह़त किये जाने को अपनी इ़ज़्ज़त का मस्अला बना लेता है। अफ़्सोस कि हमारे हां ऐसे लोगों की भरमार है, घरों में देख लें तो लड़की वाले लड़के या उस के घर वालों को नहीं समझा सकते, छोटे ख़ानदान वाले बड़े ख़ानदान वालों को नहीं समझा सकते, आ़म आदमी किसी चौधरी को नहीं समझा सकता, अ़वाम किसी दुन्यवी मन्सब वाले को नहीं समझा सकते, मस्जिदों में कोई नौ जवान आ़लिम या दीनी मुबल्लिग़ किसी पुराने बूढ़े को नहीं समझा सकता, जिसे समझाया वोही गले पड़ जाता है। दीनी शो'बे में भी इस ख़राबी की कुछ कमी नहीं। **अल्लाह** तआ़ला हमारे ह़ाल की इस्लाह़ फ़रमाए।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और लोगों में से कोई वोह है जो **अल्लाह** की रिज़ा तलाश करने के लिये अपनी जान बेच देता है और **अल्लाह** बन्दों पर बड़ा मेह्रबान है।

﴿مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ﴾ **: जो अपनी जान बेचता है।** ﴾ **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत कर के हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ रवाना हुए, मुश्रिकीने कुरैश की एक जमाअ़त ने आप का तआ़क़ुब किया तो आप सुवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ कुरैश ! तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूं और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूंगा और अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में मदफ़ून है तो मैं तुम्हें उस का पता बता देता हूं, तुम मेरा रास्ता न रोको। वोह इस पर राज़ी हो गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तमाम माल का पता बता दिया, जब आप हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो येह आयत नाज़िल हुई। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आयत तिलावत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारी येह जां फ़रोशी बड़ी नफ़्अ़ बख़्श तिजारत है।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो और शैत़ान के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ और शैत़ान के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

1 ......ابن عساكر، صهيب بن سنان بن مالك... الخ، ۲۲۸/۲٤.

www.dawateislami.net

﴿اُدْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً﴾ : **इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ ।** **शाने नुज़ूल :** अहले किताब में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के अस्ह़ाब, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के बा'द शरीअ़ते मूसवी के बा'ज़ अह़काम पर क़ाइम रहे, हफ़्ते के दिन की ता'ज़ीम करते, इस रोज़ शिकार से लाज़िमन इज्तिनाब जानते और ऊंट के दूध और गोश्त से भी परहेज़ करते और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में सिर्फ़ मुबाह़ या'नी जाइज़ हैं, इन का करना ज़रूरी तो नहीं जब कि तौरैत में इन से इज्तिनाब लाज़िम किया गया है तो इन के तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअ़ते मूसवी पर अ़मल भी हो जाता है । इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अह़काम का पूरा इत्तिबाअ़ करो या'नी तौरैत के अह़काम मन्सूख़ हो गए अब उन की त़रफ़ तवज्जोह न दो ।[1]

ईमानी कमज़ोरी की अ़लामत

याद रखें कि दाढ़ी मुंडवाना, मुश्रिकों का सा लिबास पहनना, अपनी मुआ़शरत बेदीनों जैसी करना भी सब ईमानी कमज़ोरी की अ़लामत है जब मुसल्मान हो गए तो सीरतो सूरत, ज़ाहिरो बातिन, इ़बादातो मुआ़मलात, रहन सहन, मेल बरताव, ज़िन्दगी मौत, तिजारतो मुलाज़मत सब में अपने दीन पर अ़मल करो । नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मान का दूसरे मज़ाहिब या दूसरे दीन वालों की रिआ़यत करना शैत़ानी धोके में आना है । ऊंट का गोश्त खाना इस्लाम में फ़र्ज़ नहीं मगर यहूदिय्यत की रिआ़यत के लिये न खाना बड़ा सख़्त जुर्म है । काफ़िरों को राज़ी करने के लिये गाय की क़ुरबानी बन्द करना भी इसी में दाख़िल है । यूंही किसी जगह अज़ान बन्द करना या अज़ान आहिस्ता आवाज़ से देना सब इसी में दाख़िल है ।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَیِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۰۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर इस के बा'द भी बिचलो कि तुम्हारे पास रोशन हुक्म आ चुके तो जान लो कि **अल्लाह** ज़बर दस्त ह़िक्मत वाला है ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآیة: ٢٠٨، ١/١٤٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम अपने पास रोशन दलाइल आ जाने के बा'द भी लग़्ज़िश खाओ तो जान लो कि **अल्लाह** ज़बर दस्त हिक्मत वाला है।

﴿فَاِنْ زَلَلْتُمْ : **फिर अगर तुम फिसलो ।**﴾ इस से मुराद येह है कि वाज़ेह दलीलों के बा वुजूद इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल होने से दूर रहो और इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो तो येह तुम्हारा सख़्त जुर्म है। इल्म के बा वुजूद बे अ़मली जहालत है।

هَلْ یَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ یَّاْتِیَهُمُ اللّٰهُ فِیْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ قُضِیَ الْاَمْرُؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ۠ ﴿۲۱۰﴾ ع ٢٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर येही कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़िरिश्ते उतरें और काम हो चुके और सब कामों की रुजूअ़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोग तो इसी चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि बादलों के सायों में उन के पास **अल्लाह** का अ़ज़ाब और फ़िरिश्ते आ जाएं और फ़ैसला कर दिया जाए और **अल्लाह** ही की त़रफ़ सब काम लौटाए जाते हैं।

﴿هَلْ یَنْظُرُوْنَ : **किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हैं ।**﴾ फ़रमाया जा रहा है कि दीने इस्लाम छोड़ने और शैत़ान की फ़रमां बरदारी करने वाले किस चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं ? क्या इस का कि **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उतर आएं और उन का क़िस्सा तमाम कर दिया जाए।

سَلْ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ كَمْ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ اٰیَةٍۭ بَیِّنَةٍؕ وَ مَنْ یُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बनी इसराईल से पूछो हम ने कितनी रोशन निशानियां उन्हें दीं और जो **अल्लाह** की आई हुई ने'मत को बदल दे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बनी इसराईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी रोशन निशानियां दीं और जो **अल्लाह** की ने'मत को अपने पास आने के बा'द बदल दे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

﴿كَمْ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ اٰیَةٍۭ بَیِّنَةٍ : **हम ने उन्हें कितनी रोशन निशानियां दीं।**﴾ फ़रमाया गया कि बनी इसराईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी रोशन निशानियां अ़ता फ़रमाईं, उन के अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात को उन की नुबुव्वत की सदाक़त की दलील बनाया, उन के इर्शाद और उन की किताबों को दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का गवाह बनाया। याद रहे कि येह पूछना ह़क़ीक़त में उन्हें क़ाइल करने और शरमिन्दा करने के लिये है और उन की अपनी ना फ़रमानियों के बा वुजूद **अल्लाह** तआ़ला की मेहरबानियों का इक़रार कराने के लिये है।

﴿وَمَنْ یُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ : **और जो अल्लाह की ने'मत को बदल दे।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत से आयाते इलाहिय्यह मुराद हैं जोह हिदायत का सबब हैं और उन की बदौलत गुमराही से नजात ह़ासिल होती है उन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत का बयान है और यहूदो नसारा का अपनी किताबों में तह़रीफ़ करना इस ने'मत को तब्दील करना है।

زُیِّنَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَ یَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ وَ اللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता की गई और मुसल्मानों से हंसते हैं और डर वाले उन से ऊपर होंगे क़ियामत के दिन और ख़ुदा जिसे चाहे बे गिनती दे।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी को ख़ुशनुमा बना दिया गया और वोह मुसल्मानों पर हंसते हैं और (**अल्लाह** से) डरने वाले क़ियामत के दिन उन काफ़िरों से ऊपर होंगे और **अल्लाह** जिसे चाहता है बे हिसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।

﴿زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا﴾ : **काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी को ख़ुशनुमा बना दिया गया।** काफ़िरों के लिये दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता कर दी गई या'नी उन्हें येही ज़िन्दगी पसन्द है, वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं। दुन्या की ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो और जो तोशए आख़िरत जम्अ़ करने में ख़र्च हो वोह बि फ़ज़्लिही तआ़ला दीनी ज़िन्दगी है। इस आयत में वोह लोग दाख़िल हैं जो आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं।

﴿وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ : **और वोह मुसल्मानों पर हंसते हैं।** कुफ़्फ़ार ग़रीब मुसल्मानों का मज़ाक़ उड़ाते थे और दुन्यावी साज़ो सामान से उन की बे रग़बती देख कर उन की तह़क़ीर करते थे जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर, ह़ज़रते सुहैब और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को देख कर कुफ़्फ़ार मज़ाक़ उड़ाया करते थे और दौलते दुन्या के ग़ुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे।(1) इन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ईमानदार इन काफ़िरों से बुलन्दो बाला होंगे क्यूं कि बरोज़े क़ियामत मोमिनीन क़ुर्बे इलाही में होंगे और कुफ़्फ़ार जहन्नम में ज़लीलो ख़्वार होंगे। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि ग़रीब मुसल्मानों का मज़ाक़ उड़ाना या किसी मोमिन को ज़लील या कमीना जानना काफ़िरों का त़रीक़ा है। फ़ासिक़ व काफ़िर अगर्चे मालदार हो ज़लील है और मोमिन अगर्चे ग़रीब हो, किसी भी क़ौम से हो इ़ज़्ज़त वाला है बशर्ते कि मुत्तक़ी हो।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪
وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢١٢، ١/١٥٠.

www.dawateislami.net

بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लोग एक दीन पर थे फिर **अल्लाह** ने अम्बिया भेजे ख़ुश ख़बरी देते और डर सुनाते और उन के साथ सच्ची किताब उतारी कि वोह लोगों में उन के इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला कर दे और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी बा'द इस के कि उन के पास रोशन हुक्म आ चुके आपस की सरकशी से तो **अल्लाह** ने ईमान वालों को वोह ह़क़ बात सुझा दी जिस में झगड़ रहे थे अपने हुक्म से, और **अल्लाह** जिसे चाहे सीधी राह दिखाए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तमाम लोग एक दीन पर थे तो **अल्लाह** ने अम्बिया भेजे ख़ुश ख़बरी देते हुए और डर सुनाते हुए और उन के साथ सच्ची किताब उतारी ताकि वोह लोगों के दरमियान उन के इख़्तिलाफ़ात में फ़ैसला कर दे और जिन लोगों को किताब दी गई उन्हों ने ही अपने बाहमी बुग़्ज़ो ह़सद की वज्ह से किताब में इख़्तिलाफ़ किया (येह इख़्तिलाफ़) इस के बा'द (किया) कि उन के पास रोशन अह़काम आ चुके थे तो **अल्लाह** ने ईमान वालों को अपने हुक्म से उस ह़क़ बात की हिदायत दी जिस में लोग झगड़ रहे थे और **अल्लाह** जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है।

﴾كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً : **तमाम लोग एक दीन पर थे।**﴿ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़हद तक सब लोग एक दीन और एक शरीअ़त पर थे, फिर उन में इख़्तिलाफ़ हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, येह बि'सत में पहले रसूल हैं।(1)

रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा। नीज़ लोगों की हिदायत के लिये बहुत से अम्बिया और रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को किताबें और सह़ीफ़े अ़त़ा किये गए जैसे ह़ज़रते आदम, ह़ज़रते शीस और ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर सह़ीफ़े और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौरैत, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ज़बूर, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢١٣، ١/١٥٠.

www.dawateislami.net

इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरआन नाज़िल फ़रमाया। अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की हिदायात आ जाने के बा'द भी लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया जैसे यहूदो नसारा ने अपनी किताबों में इख़्तिलाफ़ किया और आपस के ह़सद की वज्ह से किताबुल्लाह को भी मश्क़े सितम बनाने से बाज़ न आए। यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए ह़क़ की हिदायत फ़रमाई चुनान्चे यहूदो नसारा को जिन बातों में इख़्तिलाफ़ था उन में जो ह़क़ था **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों को वोह समझा दिया।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद न आई, पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए यहां तक कि कह उठा रसूल और उस के साथ के ईमान वाले कब आएगी **अल्लाह** की मदद सुन लो बेशक **अल्लाह** की मदद क़रीब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम्हारा येह गुमान है कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ह़ालां कि अभी तुम पर पहले लोगों जैसी ह़ालत न आई। उन्हें सख़्ती और शिद्दत पहुंची और उन्हें ज़ोर से हिला डाला गया यहां तक कि रसूल और उस के साथ ईमान वाले कह उठे : **अल्लाह** की मदद कब आएगी ? सुन लो ! बेशक **अल्लाह** की मदद क़रीब है।

﴾أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ﴿ : **क्या तुम्हारा येह गुमान है कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।** येह आयत ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं।[1] इस में उन्हें सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना हमेशा से ख़ासाने ख़ुदा का मा'मूल रहा है। अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत

[1] ......قرطبی، البقرة، تحت الآية: ٢١٥، ٢/ ٢٧، الجزء الثالث.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ानए का'बा के साए में अपनी चादरे मुबारक से तक्या लगाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे, हम ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते ? हमारी क्यूं मदद नहीं करते ? इर्शाद फ़रमाया : तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे लेकिन इन में से कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी ।[1]

﴿وَزُلْزِلُوْا : **और उन्हें ज़ोर से हिला डाला गया ।**﴾ साबिक़ा उम्मतों की तक्लीफ़ व शिद्दत इस इन्तिहा को पहुंच गई कि फ़रमां बरदार मोमिन भी मदद त़लब करने में जल्दी करने लगे और **अल्लाह** के रसूलों ने भी अपनी उम्मत के इसरार पर फ़रियाद की ह़ालां कि रसूल बड़े साबिर होते हैं और इन के अस्ह़ाब भी लेकिन बा वुजूद इन इन्तिहाई मुसीबतों के वोह लोग अपने दीन पर क़ाइम रहे और कोई मुसीबत उन के ह़ाल को मुतग़य्यर न कर सकी चुनान्चे उन की फ़रियाद पर बारगाहे इलाही से जवाब मिला कि सुन लो, बेशक **अल्लाह** तआ़ला की मदद क़रीब है, इस जवाब से उन्हें तसल्ली दी गई और येही तसल्ली हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को दी गई । इस आयत और तफ़्सीर में मुबल्लिग़ीन के लिये और नए मुसल्मान होने वालों के लिये और नए नए किसी नेकी के माह़ोल अपनाने वालों के लिये तसल्ली और बिशारत है कि वोह सब्रो इस्तिक़ामत के साथ अपनी तब्लीग़, दीन और नेकी पर चलते रहें ।

يَسْــَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें, तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है ।

1 ......بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ۲/۵۰۳، الحدیث: ۳۶۱۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आप से सुवाल करते हैं क्या ख़र्च करें ? तुम फ़रमाओ : जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह्ताजों और मुसाफ़िर के लिये है और तुम जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है ।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ : **आप से सुवाल करते हैं क्या ख़र्च करें ?**﴾ येह आयत ह़ज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे, उन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया था कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें ? इस आयत में उन्हें बता दिया गया ।[1] कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कसीर ख़र्च करो उस में सवाब है और ख़र्च करने की जगहें येह हैं या'नी वालिदैन, रिश्तेदार, यतीम, मिस्कीन और मुसाफ़िर । यहां दो मसाइल ज़ेह्न नशीन रखें :

(1)...... इस आयत में सदक़ए नाफ़िला का बयान है ।[2]

(2)...... मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं ।[3]

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर फ़र्ज़ हुवा ख़ुदा की राह में लड़ना और वोह तुम्हें ना गवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते ।

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢١٥، ١/١٥٢.

2 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ٢١٥، ١/٢٥٦.

3 ......رد المحتار، كتاب الزكاة، باب المصرف، ٣/٣٤٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया है ह़ालां कि वोह तुम्हें ना गवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें ना पसन्द हो ह़ालां कि वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए ह़ालां कि वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते।

﴾كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ﴿ : **तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया है।** जिहाद फ़र्ज़ है जब इस के शराइत़ पाए जाएं और अगर काफ़िर मुसल्मानों के मुल्क पर ह़म्ला कर दें तो जिहाद फ़र्ज़े ऐ़न हो जाता है वरना फ़र्ज़े किफ़ाया। फ़रमाया गया कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया अगर्चे येह तुम्हें त़ब्ई़ ए'तिबार से ना गवार है और तुम्हारे ऊपर शाक़ है लेकिन तुम्हें त़ब्ई़ त़ौर पर कोई चीज़ ना गवार होना इस बात की अ़लामत नहीं कि वोह चीज़ ना पसन्दीदा और नुक़्सान देह है जैसे कड़वी दवाई, इन्जेक्शन और ऑपरेशन त़ब्ई़ त़ौर पर ना पसन्द होते हैं लेकिन नुक़्सान देह नहीं बल्कि निहायत फ़ाएदा मन्द हैं। यूंही किसी चीज़ का तुम्हें पसन्द होना इस बात की दलील नहीं कि वोह अच्छी और मुफ़ीद है। बच्चे को पढ़ाई की जगह हर वक़्त खेलते रहना पसन्द होता है, शूगर के मरीज़ को मिठाई पसन्द हो तो इस का येह मत़लब नही कि येह चीज़ें उस के लिये मुफ़ीद भी हैं बल्कि नुक़्सान देह हैं। लिहाज़ा ऐ मुसल्मानो ! अच्छा या बुरा होने का मदार अपनी सोच पर न रखो बल्कि **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म पर रखो। **अल्लाह** तआ़ला ने जिस चीज़ का हुक्म दिया वोह बहर ह़ाल हमारे लिये बेहतर है और जिस से मन्अ़ फ़रमाया वोह बहर ह़ाल हमारे लिये बेहतर नहीं है। इसी से मिलता जुलता मज़्मून सूरए निसाअ की आयत **19** में भी है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ
اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ
حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ

www.dawateislami.net

دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से पूछते हैं माहे ह़राम में लड़ने का हुक्म तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है और **अल्लाह** की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उस के बसने वालों को निकाल देना **अल्लाह** के नज़्दीक येह गुनाह इस से भी बड़े हैं और इन का फ़साद क़त्ल से सख़्त तर है और हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आप से माहे ह़राम में जिहाद करने के बारे में सुवाल करते हैं, तुम फ़रमाओ : इस महीने में लड़ना बड़ा गुनाह है और **अल्लाह** की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उस के रहने वालों को वहां से निकाल देना **अल्लाह** के नज़्दीक इस से भी ज़ियादा बड़ा गुनाह है और फ़ितना क़त्ल से बड़ा जुर्म है और वोह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें और तुम में जो कोई अपने दीन से मुरतद हो जाए फिर काफ़िर ही मर जाए तो उन लोगों के तमाम आ'माल दुन्या व आख़िरत में बरबाद हो गए और वोह दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ﴾ : आप से माहे ह़राम में जिहाद करने के बारे में सुवाल करते हैं। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की सरकर्दगी में मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रवाना फ़रमाई थी जिस ने मुश्रिकीन से जिहाद किया। उन का ख़याल था कि लड़ाई का दिन जुमादल उख़्रा का आख़िरी दिन है मगर ह़क़ीक़त में चांद 29 तारीख़ को हो गया था और रजब की पहली तारीख़ शुरूअ़ हो गई थी। इस पर कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को शर्म दिलाई कि तुम ने माहे ह़राम में जंग की। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होने लगे तो इस पर येह

आयत नाज़िल हुई[1] कि माहे ह़राम में लड़ाई करना अगर्चे बहुत बड़ी बात है लेकिन मुशिरकों का शिर्क, मुसल्मानों को ईज़ाएं देना, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सताना यहां तक कि हिजरत पर मजबूर कर देना, लोगों को इस्लाम क़बूल करने से रोकना, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसल्मानों को मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से रोकना, दौराने नमाज़ त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देना येह माहे ह़राम में लड़ाई से बहुत बढ़ कर है। लिहाज़ा पहले अपने गिरेबान में झांक कर अपने करतूत देख लो फिर मुसल्मानों पर ए'तिराज़ करना। तुम्हारे येह अफ़्आ़ल मुसल्मानों के फ़े'ल से ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि कुफ़्र व ज़ुल्म तो किसी ह़ालत में जाइज़ नहीं होते जब कि लड़ाई तो बा'ज़ सूरतों में जाइज़ हो ही जाती है नीज़ मुसल्मानों ने जो माहे ह़राम में लड़ाई की तो वोह उन की ग़लत़ फ़हमी की वज्ह से थी कि चांद की तारीख़ उन पर मश्कूक हो गई लेकिन कुफ़्फ़ार का कुफ़्र और मुसल्मानों को ईज़ाएं तो कोई क़ाबिले शक फ़े'ल नहीं येह तो वाज़ेह़ त़ौर पर ज़ुल्म व सरकशी थी। याद रहे कि ह़ुरमत वाले महीनों में जंग की मुमानअ़त का ह़ुक्म सूरए तौबा आयत नम्बर **5** से मन्सूख़ है।

आयत "يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

(1)...... इस आयत से मा'लूम हुवा कि ख़ुद बड़े बड़े ऐबों में मुब्तला होना और दूसरों पर त़ा'न करना काफ़िरों का त़रीक़ा है। येह बीमारी हमारे हां भी आ़म है कि लोग सारी दुन्या की बुराइयां और ग़ीबतें बयान करते हैं और ख़ुद इस से बढ़ कर ऐबों की गन्दगी से आलूदा होते हैं। एक ह़दीसे पाक में भी इस बीमारी को बयान किया गया है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से किसी को अपने भाई की आंख में तिन्का तो नज़र आ जाता है लेकिन अपनी आंख में शहतीर नज़र नहीं आता।"[2]

(2)...... फ़ितना अंगेज़ी क़त्ल से बढ़ कर जुर्म है। बा'ज़ लोगों को फ़ितना व फ़साद का शौक़ होता है, आयत में तो फ़ितने से मुराद कुफ़्रो शिर्क है लेकिन इस से हट कर भी फ़ितना अंगेज़ी कोई मा'मूली जुर्म नहीं है।

(3)...... इस आयत से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की शान भी मा'लूम हुई कि कुफ़्फ़ार ने

1 ......قرطبی ، البقرة ، تحت الآية : ٢١٨، ٢/ ٢٣، الجزء الثالث.

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر و الاباحة، باب الغيبة، ذكر الاخبار عمّا يجب على المرء... الخ، ٥٠٦/٧، الحديث: ٥٧٣١.

www.dawateislami.net

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم पर ए'तिराज़ किया और **अल्लाह** तआला ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की तरफ़ से कुफ़्फ़ार को जवाब दिया।

﴿وَلَا یَزَالُوْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ : **और वोह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे।**﴾ इस आयत में ख़बर दी गई कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे और जहां तक उन से मुम्किन होगा वोह मुसल्मानों को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने की कोशिश करते रहेंगे चुनान्चे आज दुन्या में येही हो रहा है, कुफ़्फ़ार की हज़ारों तन्ज़ीमें मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम ममालिक में अपना दीन, अपना कल्चर, अपनी तहज़ीब फैलाने में मश्ग़ूल हैं। जहां अस्ल इस्लाम से फेर सकें वहां इस्लाम से फेरने की कोशिश करती हैं, जहां येह न हो सके वहां लोगों को क़ुरआन की मन मानी तावीलों में लगा देती हैं, ह़दीसों के इन्कार में लगा देती हैं, नित नए फ़ितनों में मुब्तला कर देती हैं। अगर ईमानिय्यात पर ह़म्ला न कर सकें तो अख़्लाक़िय्यात तबाह कर के ईमान कमज़ोर करने में लगी हुई हैं अल ग़रज़ आयत की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ है कि कुफ़्फ़ार तुम्हें हमेशा दीन से फेरने की कोशिशों में लगे रहेंगे।

﴿وَمَنْ یَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِیْنِهٖ : **और तुम में जो कोई अपने दीन से मुरतद हो जाए।**﴾ मुरतद होने से तमाम अ़मल बात़िल हो जाते हैं, आख़िरत में तो इस त़रह़ कि उन पर कोई अज्रो सवाब नहीं और दुन्या में इस त़रह़ कि शरीअ़त ह़ुकूमते इस्लामिया को मुरतद के क़त्ल का ह़ुक्म देती है, मर्द मुरतद हो जाए तो बीवी निकाह़ से निकल जाती है, मुरतद शख़्स अपने रिश्तेदारों की विरासत पाने का मुस्तह़िक़ नहीं रहता, मुरतद की ता'रीफ़ करना और उस से तअ़ल्लुक़ रखना जाइज़ नहीं होता। चूंकि मुरतद होने से तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं लिहाज़ा अगर कोई ह़ाजी मुरतद हो जाए फिर ईमान लाए तो वोह दोबारा ह़ज करे, पहला ह़ज ख़त्म हो चुका। इसी त़रह़ ज़मानए इरतिदाद में जो नेकियां कीं वोह क़बूल नहीं। जो ह़ालते इरतिदाद में मर गया वोह हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा जैसा कि आयत के आख़िर में "هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ" फ़रमाया गया है। **अल्लाह** तआ़ला हर मुसल्मान को ख़ातिमा बिलख़ैर नसीब करे। याद रखें कि मुरतद होना बहुत सख़्त जुर्म है, अफ़्सोस कि आज कल मुसल्मानों की अक्सरिय्यत दीन के बुन्यादी अ़क़ाइद से ला इल्म है, शादी व मर्ग और हंसी मज़ाक़ के मौक़अ़ पर कुफ़्रिय्या जुम्लों की भरमार है, गाने, फ़िल्में, ड्रामे ख़ुसूसन मिज़ाह़िया ड्रामे कुफ़्रिय्यात का बहुत बड़ा ज़रीआ़ हैं, इन चीज़ों से बचाने वाले उ़लूम का ह़ासिल करना फ़र्ज़ है।[1]

1...... इस सिल्सिले में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِۙ اُولٰٓىٕكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ(۲۱۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** के लिये अपने घरबार छोड़े और **अल्लाह** की राह में लड़े वोह रह्मते इलाही के उम्मीद वार हैं और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** के लिये अपने घरबार छोड़ दिये और **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोह रह्मते इलाही के उम्मीद वार हैं और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا : **बेशक वोह लोग जो ईमान लाए।**﴾ इस आयत में ईमान, हिजरत और जिहाद तीन बड़े आ'माल का ज़िक्र है और येह तीनों आ'माल बजा लाने वालों के बारे में एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ(۲۰) یُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ رِضْوَانٍ وَّ جَنّٰتٍ لَّهُمْ فِیْهَا نَعِیْمٌ مُّقِیْمٌۙ(۲۱) خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِیْمٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जिन्हों ने ईमान क़बूल किया और हिजरत की और अपने मालों और अपनी जानों के साथ **अल्लाह** की राह में जिहाद किया **अल्लाह** के नज़्दीक उन का बहुत बड़ा दरजा है और वोही लोग काम्याब होने वाले हैं। उन का रब उन्हें अपनी रह्मत और ख़ुशनूदी और जन्नतों की बिशारत देता है, उन के लिये उन बाग़ों में दाइमी ने'मतें हैं। वोह हमेशा हमेशा उन जन्नतों में रहेंगे बेशक **अल्लाह** के पास बहुत बड़ा अज्र है।

﴿اُولٰٓىٕكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ : **वोह रह्मते इलाही के उम्मीद वार हैं।**﴾ इस से मा'लूम हुवा कि अ़मल करने से **अल्लाह** तआला पर अज्र देना वाजिब नहीं हो जाता बल्कि सवाब देना मह्ज़ **अल्लाह** तआला का फ़ज़्ल है।

(1) ......توبہ: ۲۰-۲۲.

www.dawateislami.net

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا
يُنْفِقُوْنَ ۬ۙ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَتَفَكَّرُوْنَ ۙ﴿۲۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे इसी त़रह़ **अल्लाह** तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आप से शराब और जूए के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करते हैं। तुम फ़रमा दो : इन दोनों में कबीरा गुनाह है और लोगों के लिये कुछ दुन्यवी मनाफ़ेअ़ भी हैं और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से ज़ियादा बड़ा है। आप से सुवाल करते हैं कि (**अल्लाह** की राह में) क्या ख़र्च करें ? तुम फ़रमाओ : जो ज़ाइद बचे। इसी त़रह़ **अल्लाह** तुम से आयतें बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र करो।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ : **आप से शराब और जूए के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करते हैं।**﴾ याद रहे कि इस आयत में शराब को ह़राम क़रार नहीं दिया गया बल्कि हुरमत की आयात सूरए माइदह में बा'द में नाज़िल हुईं और **3** हिजरी में ग़ज़्वए अह़ज़ाब से चन्द रोज़ बा'द शराब ह़राम की गई।

शराब और जूए की मज़म्मत

इस आयत में शराब और जूए की मज़म्मत बयान की गई है कि जूए और शराब का गुनाह इस के नफ़्अ़ से ज़ियादा है, नफ़्अ़ तो येही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इस की ख़रीदो फ़रोख़्त से तिजारती फ़ाएदा होता है और जूए में येह फ़ाएदा है कि इस से कभी

www.dawateislami.net

मुफ़्त का माल हाथ आ जाता है लेकिन शराब और जूए की वज्ह से होने वाले गुनाहों और फ़सादात का क्या शुमार। शराब से अ़क्ल ज़ाइल हो जाती है, ग़ैरतो ह़मिय्यत का जनाज़ा निकल जाता है, मां, बहन, बेटी की तमीज़ ख़त्म हो जाती है, इ़बादत से दिल उक्ता जाता है, इ़बादत की लज़्ज़त दिल से निकल जाती है। जूए की वज्ह से लोगों से दुश्मनियां पैदा हो जाती हैं, आदमी सब की नज़र में ज़लीलो ख़्वार हो जाता है, जूएबाज़, सट्टेबाज़ के नाम से बदनाम होता है, कभी कभार अपना सब माल व अस्बाब जूए में हार देता है, ज़िन्दगी तबाहो बरबाद हो जाती है, मेह़नत से जी चुराना शुरूअ़ हो जाता है और मुफ़्त ख़ोरा बनने की आ़दत पड़ जाती है वग़ैरहा। एक रिवायत में है कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला को जा'फ़रे (त़य्यार) की चार ख़स्लतें पसन्द हैं। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जा'फ़रे त़य्यार رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से दरयाफ़्त फ़रमाया, उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि **एक ख़स्लत** तो येह है कि मैं ने कभी शराब नहीं पी, या'नी हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से पहले भी कभी शराब नहीं पी और इस की वज्ह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अ़क्ल ज़ाइल होती है और मैं चाहता था कि अ़क्ल और भी तेज़ हो। **दूसरी ख़स्लत** येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है न नफ़्अ़ दे सके न नुक़्सान। **तीसरी ख़स्लत** येह है कि मैं कभी ज़िना में मुब्तला न हुवा क्यूं कि मैं इस को बे ग़ैरती समझता था। **चौथी ख़स्लत** येह है कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था।(1)

سُبْحٰنَ الله ! क्या सलीमुल फ़ित़रत थे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़त़रा कूंएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूंगा और अगर दरिया में शराब का क़त़रा पड़ जाए फिर दरिया ख़ुश्क हो जाए और वहां घास पैदा हो तो मैं उस में अपने जानवरों को न चराऊंगा।(2)

سُبْحٰنَ الله, ! गुनाह से किस क़दर नफ़्रत है। **अल्लाह** तआ़ला हमें इन की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

जूए के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम

(1)...... जूआ खेलना ह़राम है।

1......تفسيرات احمديه، البقرة، تحت الآية:٢١٩، ص١٠١، ملتقطاً.

2......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٢١٩، ص١١٣.

www.dawateislami.net

(2)...... जूआ, हर ऐसा खेल है जिस में अपना कुल या बा'ज़ माल चले जाने का अन्देशा हो या मज़ीद मिल जाने की उम्मीद हो।

(3)...... शत्रन्ज, ताश, लुडो, केरम, बिल्यर्ड, क्रिकेट वग़ैरा हार जीत के खेल जिन पर बाज़ी लगाई जाए सब जूए में दाख़िल और ह़राम हैं। यूंही क्रिकेट वग़ैरा में मेच या एक एक ओवर या एक एक बॉल पर जो रक़म लगाई जाती है येह जूआ है, यूंही घरों या दफ़्तरों में छोटी मोटी बातों पर जो इस त़रह़ की शर्तें लगती हैं कि अगर मेरी बात दुरुस्त निकली तो तुम खाना खिलाओगे और अगर तुम्हारी बात सच निकली तो मैं खाना खिलाऊंगा येह सब जूए में दाख़िल हैं। यूंही लॉटरी वग़ैरा जूए में दाख़िल है। आज कल मोबाइल पर कम्पनी को मेसेज करने पर एक मख़्सूस रक़म कटती है और इस पर भी इन्आ़मात रखे जाते हैं येह सब जूए में दाख़िल हैं।

﴾وَ يَسْــٴَـلُوْنَكَ مَا ذَا يُنْفِقُوْنَ﴿ **: आप से सुवाल करते हैं कि क्या ख़र्च करें ?** तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को सदक़ा देने की रग़बत दिलाई तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : सदक़े की मिक़्दार इर्शाद फ़रमा दें कि कितना माल राहे ख़ुदा में दिया जाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] और फ़रमाया गया कि जितना तुम्हारी ह़ाजत से ज़ाइद हो। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ाजत से ज़ाइद माल ख़र्च करने का हुक्म दिया गया, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم अपने माल में से अपनी ज़रूरत की मिक़्दार ले कर बाक़ी सब राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ कर देते थे। येह हुक्म अगर बत़ौरे फ़र्ज़ के था तो ज़कात का हुक्म नाज़िल होने से मन्सूख़ हो गया और अगर नफ़्ली हुक्म था तो आज भी मुस्तह़ब त़ौर पर बाक़ी है।

فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ يَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ
وَ اِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢١٩، ١/١٥٩.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : दुन्या व आख़िरत के काम सोच कर करो और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर अपना उन का ख़र्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से, और **अल्लाह** चाहता तो तुम्हें मशक़्क़त में डालता, बेशक **अल्लाह** ज़बर दस्त हिक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : दुन्या और आख़िरत के कामों में (ग़ौरो फ़िक्र कर लिया करो) और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं। तुम फ़रमाओ : उन का भला करना बेहतर है और अगर उन के साथ अपना ख़र्चा मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और **अल्लाह** बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से जुदा ख़ूब जानता है और अगर **अल्लाह** चाहता तो तुम्हें मशक़्क़त में डाल देता। बेशक **अल्लाह** ज़बर दस्त हिक्मत वाला है।

﴿فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ : **दुन्या व आख़िरत के कामों में।**﴾ इस हिस्से का तअ़ल्लुक़ पिछली आयत के आख़िरी जुम्ले से है और इस का मा'ना येह बनेगा : ताकि तुम दुन्या व आख़िरत के मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र करो। या'नी जितना तुम्हारी दुन्यवी ज़रूरत के लिये काफ़ी हो वोह ले कर बाक़ी सब माल अपनी आख़िरत के नफ़्अ़ के लिये ख़ैरात कर दो। इस से जुदागाना भी दुन्या व आख़िरत के काम सोच समझ कर ही करने चाहिएं।

﴿وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى : **और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं।**﴾ जब येह आयत : [1]"اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا" नाज़िल हुई कि यतीमों का माल खाने वाला अपने पेट में जहन्नम की आग भरने वाला है तो लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उन का खाना पीना अ़लाहिदा कर दिया इस में येह सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिये पकाया जाता उस में से कुछ बच जाता और ख़राब हो जाता और किसी के काम न आता, इस में यतीमों का नुक़्सान होने लगा। येह सूरतें देख कर हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि अगर यतीम के माल की हिफ़ाज़त की निय्यत से उस का खाना उस के सर परस्त अपने खाने के साथ मिला लें तो इस का क्या हुक्म है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ाएदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई।[2]

लेकिन साथ ही तम्बीह फ़रमा दी कि तुम्हें यतीमों के फ़ाएदे के लिये माल मिलाने की इजाज़त तो दे दी गई है लेकिन कौन अच्छी निय्यत से यतीमों का माल मिलाता है और किस

1 ......النساء: ١٠.

2 ......ابو داوٗد، كتاب الوصايا، باب مخالطة اليتيم فى الطعام، ١٥٧/٣، الحديث: ٢٨٧١، تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ٢٢٠، ٤٠٤/٢.

www.dawateislami.net

की निय्यत में फ़साद होता है येह **अल्लाह** तआ़ला बेहतर जानता है। येह न हो कि ज़ाहिरन तो यतीमों का फ़ाएदा कर रहे हो और ह़क़ीक़त में उन का माल हड़प करने का इरादा हो। आयते मुबारका का येह हिस्सा "وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ" कि **अल्लाह** तआ़ला इस्लाह़ की निय्यत वाले और फ़साद की निय्यत वाले दोनों को जानता है, येह फ़रमान निहायत जामेअ़ है और ज़िन्दगी के हज़ारों शो'बों के लाखों मुआ़मलात में रहनुमाई के लिये काफ़ी है जहां एक ही चीज़ में अच्छी और बुरी दोनों निय्यतें हो सकती हैं वहां दूसरे लोग अगर्चे बुरी निय्यत को न जानते हों लेकिन **अल्लाह** तआ़ला तो जानता है।

यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़काम

(1)...... यतीम वोह ना बालिग़ बच्चा या बच्ची है जिस का बाप फ़ौत हो गया हो, अगर उस के पास माल हो और अपने किसी वली की परवरिश में हो उस के अह़काम इस आयत में मज़्कूर हैं कि वली ख़्वाह उस यतीम का माल अपने माल से मिला कर उस पर ख़र्च करे या अ़लाह़दा रख कर जिस में यतीम की बेहतरी हो वोह कर सकता है लेकिन मिलाना ख़राब निय्यत से नहीं होना चाहिये।

(2)...... अगर्चे इस आयत का नुज़ूल यतीमों की माली इस्लाह़ के बारे में हुवा मगर इस्लाह़ के लफ़्ज़ में सारी मस्लह़तें दाख़िल हैं। यतीमों के अख़्लाक़, आ'माल, तरबियत, ता'लीम सब की इस्लाह़ करनी चाहिये। यूं समझें कि यतीम सारी मुस्लिम क़ौम के लिये औलाद की त़रह़ हैं।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى یُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَیْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ
وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَ لَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَتّٰى یُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ
خَیْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓىٕكَ یَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَ اللّٰهُ
یَدْعُوْۤا اِلَى الْجَنَّةِ وَ الْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَ یُبَیِّنُ اٰیٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ ع ٢٧ ع٥ ‖

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह़ न करो जब तक मुसल्मान न हो जाएं और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका से अच्छी अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न लाएं और बेशक मुसल्मान ग़ुलाम मुश्रिक से अच्छा अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो, वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं और **अल्लाह** जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीह़त मानें ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुश्रिका औ़रतों से निकाह़ न करो जब तक मुसल्मान न हो जाएं और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका औ़रत से अच्छी है अगर्चे वोह तुम्हें पसन्द हो और (मुसल्मान औ़रतों को) मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न ले आएं और बेशक मुसल्मान ग़ुलाम मुश्रिक से अच्छा है अगर्चे वोह मुश्रिक तुम्हें पसन्द हो, वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं और **अल्लाह** अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़ बुलाता है और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें ।

﴾**وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ : और मुश्रिका औ़रतों से निकाह़ न करो ।**﴿ येह आयत ह़ज़रते मरसद ग़नवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में नाज़िल हुई, वोह एक बहादुर शख़्स़ थे । सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से किसी तदबीर के साथ मुसल्मानों को निकाल लाएं । वहां अ़नाक़ नामी एक मुश्रिका औ़रत थी जो ज़मानए जाहिलिय्यत में उन के साथ मह़ब्बत करती थी, वोह ह़सीन और मालदार थी जब उस को इन के आने की ख़बर हुई तो वोह आप के पास आई और अपनी त़रफ़ दा'वत दी । आप ने ख़ौफ़े इलाही की वज्ह से उस से ए'राज़ किया और फ़रमाया कि इस्लाम इस की इजाज़त नहीं देता तब उस ने निकाह़ की दरख़्वास्त की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह भी रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है । चुनान्चे फिर अपने काम से फ़ारिग़ हो कर जब आप नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो सूरते ह़ाल अ़र्ज़ कर के निकाह़ के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया । इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] और फ़रमाया गया कि मुश्रिका औ़रतों से निकाह़ की इजाज़त नहीं अगर्चे वोह तुम्हें पसन्द हों । अलबत्ता येह याद रहे कि अहले किताब या'नी यहूदी, ईसाई औ़रत से निकाह़ की इजाज़त है । इस की तफ़्सील सूरए माइदह आयत **5** में आएगी ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٢١، ١/١٦٠.

www.dawateislami.net

﴿وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ : और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका औ़रत से अच्छी है ।﴾
शाने नुज़ूल : एक रोज़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किसी ख़त़ा पर अपनी बांदी के त़मांचा मारा फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में ह़ाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की ईमानी ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया। अ़र्ज़ किया कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत और हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, अच्छी त़रह़ वुज़ू करती है और नमाज़ पढ़ती है। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह मोमिना है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने अ़र्ज़ किया : तो उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सच्चा नबी बना कर मब्ऊ़स फ़रमाया, मैं उस को आज़ाद कर के उस के साथ निकाह़ करूंगा, चुनान्चे आप ने ऐसा ही किया। इस पर लोगों ने त़ा'ना ज़नी की, कि तुम ने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह़ किया ह़ालां कि फ़ुलां मुश्रिका आज़ाद औ़रत तुम्हारे लिये ह़ाज़िर है, वोह ह़सीन भी है, मालदार भी है इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] कि मुसल्मान बांदी मुश्रिका औ़रत से बेहतर है ख़्वाह वोह मुश्रिका आज़ाद हो और हुस्नो जमाल की वज्ह से अच्छी मा'लूम होती हो।

﴿وَ لَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَتّٰی یُؤْمِنُوْا : **और मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न ले आएं।**﴾ येह औ़रत के सर परस्तों से ख़ित़ाब है कि अपनी मुसल्मान औ़रतों को मुश्रिकों के निकाह़ में न दो। मुसल्मान औ़रत का निकाह़ मुश्रिक व काफ़िर के साथ बात़िल व ह़राम है। मुश्रिक व काफ़िर लोग तो तुम्हें जहन्नम की आग की त़रफ़ बुलाते हैं जब कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें अपनी मग़्फ़िरत की त़रफ़ बुलाता है और तुम्हें नसीह़त फ़रमाने के लिये तुम पर अपने अह़काम नाज़िल फ़रमाता है। इस आयत में आज कल के मुसल्मानों के लिये बहुत वाज़ेह़ हुक्म मौजूद है। इन्तिहाई अफ़्सोस है कि क़ुरआन में इतनी सराह़त व वज़ाह़त से हुक्म आने के बा वुजूद मुसल्मान लड़कों में मुश्रिका लड़कियों के साथ और यूंही काफ़िर लड़कों और मुसल्मान लड़कियों में बाहम शादियों का रुज्ह़ान बढ़ता जा रहा है, ख़ास त़ौर पर उन अ़लाक़ों में जहां कुफ़्फ़ार व मुस्लिम इकट्ठे रहते हैं। मग़रिबी त़र्ज़े ज़िन्दगी नीज़ लड़कों और लड़कियों की मख़्लूत़ ता'लीम से जहां और तबाहियां मची हुई हैं और बे ह़याई का तूफ़ान उमड आया है वहीं बाहम ऐसी ह़राम शादियों के ज़रीए ज़िन्दगी भर की बदकारी के सिलसिले भी जारी व सारी हैं। इस तमाम सूरते ह़ाल का वबाल उन लड़कों लड़कियों पर भी है जो इस में मुलव्वस

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٢١، ١/١٦١.

www.dawateislami.net

हैं और उन के वालिदैन पर भी जो राज़ी ख़ुशी औलाद को इस जहन्नम में झोंकते हैं और उन हुक्मरानों और साहिबे इख़्तियार पर भी है जो ऐसी ता'लीम को रवाज देते हैं या बा वुजूदे कुदरत इस का इन्सिदाद करने की कोशिश नहीं करते और यूंही इस का वबाल उन नाम निहाद जाहिल दानिश्वरों, लिब्रल इज़्म के मरीज़ों और दीन दुश्मन क़लम कारों पर भी है जो इस की ताईद व हिमायत में वरक़ सियाह करते हैं।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِی الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰی يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक्म तुम फ़रमाओ वोह नापाकी है तो औरतों से अलग रहो हैज़ के दिनों और उन से नज़्दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ जहां से तुम्हें **अल्लाह** ने हुक्म दिया बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम से हैज़ के बारे में पूछते हैं तुम फ़रमाओ : वोह नापाकी है तो हैज़ के दिनों में औरतों से अलग रहो और उन के क़रीब न जाओ जब तक पाक न हो जाएं फिर जब ख़ूब पाक हो जाएं तो उन के पास वहां से जाओ जहां से तुम्हें **अल्लाह** ने हुक्म दिया है, बेशक **अल्लाह** बहुत तौबा करने वालों से महब्बत फ़रमाता है और ख़ूब साफ़ सुथरे रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

﴾وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ﴿ **: और तुम से हैज़ के बारे में पूछते हैं।**﴾ **शाने नुज़ूल :** अ़रब के लोग यहूदियों और मजूसियों की त़रह़ हैज़ वाली औ़रतों से बहुत नफ़रत करते थे, इन के साथ खाना पीना, एक मकान में रहना उन्हें गवारा न था बल्कि येह शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि इन की त़रफ़ देखना और इन से कलाम करना भी ह़राम समझते थे जब कि ईसाइयों का त़र्ज़े अ़मल इस के बिल्कुल बर अ़क्स था या'नी वोह इन दिनों में औ़रतों से मिलाप में बहुत ज़ियादा मुबालग़ा करते थे। मुसल्मानों ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हैज़ का हुक्म दरयाफ़्त

www.dawateislami.net

किया तो इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] और इफ़रातो तफ़रीत़ की राहें छोड़ कर ए'तिदाल की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि हैज़ की ह़ालत में औ़रतों से हम बिस्तरी करना ह़राम है। और चूंकि येह क़ुरआन की वाज़ेह़ आयत से साबित है लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में जिमाअ़ जाइज़ जानना कुफ़्र है और ह़राम समझ कर कर लिया तो सख़्त गुनहगार हुवा इस पर तौबा फ़र्ज़ है।[2]

यूंही नाफ़ से ले कर घुटने के नीचे तक की जगह से लज़्ज़त ह़ासिल करना मन्अ़ है।[3] बक़िय्या इन से गुफ़्त्गू करना, इन के साथ खाना पीना ह़त्ता कि इन का जूठा खाना भी जाइज़ है, गुनाह नहीं। इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि औ़रत के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ करना ह़राम है क्यूं कि वोह भी गन्दगी का मक़ाम है।

﴿فَإِذَا تَطَهَّرْنَ : **फिर जब ख़ूब पाक हो जाएं।**﴾ ख़ूब पाक होने से मुराद अय्यामे हैज़ ख़त्म होने के बा'द ग़ुस्ल कर लेना है।

हैज़ के चन्द अह़काम

(1)...... हैज़ की कम से कम मुद्दत तीन दिन और ज़ियादा से ज़ियादा दस दिन है।

(2)...... हैज़ के दिनों में औ़रत के लिये तिलावते क़ुरआन, नमाज़, रोज़ा, मस्जिद में दाख़िला, क़ुरआन को छूना और ख़ानए का'बा का त़वाफ़ ह़राम हो जाता है।

(3)...... ज़िक्रो दुरूद वग़ैरा में कोई ह़रज नहीं अलबत्ता इस के लिये वुज़ू कर लेना मुस्तह़ब है।

(4)...... अय्यामे हैज़ के रोज़ों की क़ज़ा औ़रत पर लाज़िम है जब कि नमाज़ें मुआ़फ़ हैं। मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **2** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

1 ......قرطبی، البقرة، تحت الآية: ۲۲۳، ۲/۶۴، الجزء الثالث.

2 ...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए दुवुम, निफ़ास का बयान, 1/382

3 ......رد المحتار، کتاب الطهارة، ۱/۵۳۴.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं, तो आओ अपनी खेती में जिस तरह़ चाहो और अपने भले का काम पहले करो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है और ऐ मह़बूब बिशारत दो ईमान वालों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो अपनी खेतियों में जिस तरह़ चाहो आओ और अपने फ़ाएदे का काम पहले करो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम उस से मिलने वाले हो और ऐ ह़बीब ! ईमान वालों को बिशारत दो।

﴿نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ : **तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं।**﴾ औ़रतों से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि वोह तुम्हारी खेतियां हैं या'नी औ़रतों की कुरबत से नस्ल ह़ासिल करने का इरादा करो, न कि सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश पूरी करने का। नीज़ औ़रत से हर तरह़ हम बिस्तरी जाइज़ है लेट कर, बैठ कर, खड़े खड़े, बशर्ते कि सोह़बत अगले मक़ाम में हो क्यूं कि येही रास्ता खेती या'नी औलाद का समरा ह़ासिल करने का है।

﴿وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ : **और अपने भले का काम पहले करो।**﴾ इस से मुराद है कि आ'माले सालिह़ा करो या जिमाअ़ से क़ब्ल बिस्मिल्लाह पढ़ो नीज़ बीवियों में मश्ग़ूल हो कर इ़बादात से ग़ाफ़िल न हो जाओ।

औलाद को शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखने की दुआ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम में से कोई अपनी बीवी के पास जाए तो कहे :

"بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا"

अल्लाह के नाम के साथ, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, हमें शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखना और उस को भी शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखना जो तू हमें अ़त़ा फ़रमाए।

पस (येह दुआ़ पढ़ने के बा'द सोह़बत करने से) जो बच्चा उन्हें मिला उसे शैत़ान नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा।"(1)

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا

1 ......بخاری، کتاب الوضوء، باب التسمیة علی کلّ حال وعند الوقاع، ۷۳/۱، الحدیث: ۱٤۱.

www.dawateislami.net

بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को अपनी क़समों का निशाना न बना लो कि एह्सान और परहेज़ गारी और लोगों में सुल्ह़ करने की क़सम कर लो और **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी क़समों की वज्ह से **अल्लाह** के नाम को एह्सान करने और परहेज़ गारी इख़्तियार करने और लोगों में सुल्ह़ कराने में आड़ न बना लो और **अल्लाह** सुनने वाला, जानने वाला है।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَیْمَانِكُمْ : और अपनी क़समों की वज्ह से अल्लाह के नाम को आड़ न बना लो। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़सम खाई थी कि मैं अपने बहनोई हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से न कलाम करूंगा न उन के घर जाऊंगा और न उन के मुख़ालिफ़ीन से उन की सुल्ह़ कराऊंगा। जब इस के मुतअ़ल्लिक़ उन से कहा जाता तो वोह कहते कि मैं क़सम खा चुका हूं इस लिये येह काम कर ही नहीं सकता। इस पर येह आयत नाज़िल हुई,(1) और नेक काम न करने की क़सम खाने से मन्अ़ कर दिया गया।

नेकी से बाज़ रहने की क़सम खाने वाले को क्या करना चाहिये

यहां एक अहम मस्अला याद रखें कि अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रहने की क़सम खा ले तो उस को चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वोह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी अम्र पर क़सम खा ली फिर मा'लूम हुवा कि ख़ैर और बेहतरी उस के ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को कर ले और क़सम का कफ़्फ़ारा दे।(2)

येही हुक्म सूरए नूर आयत नम्बर **22** में भी मज़्कूर है।

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ۲۲۴، ۱/۱۶۴.

2 ......مسلم، كتاب الايمان، باب ندب من حلف يمينًا... الخ، ص ۸۹۸، الحديث: ۱۲(۱۶۵۰).

www.dawateislami.net

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَیْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ یُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۲۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए हां उस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिल ने किये और **अल्लाह** बख़्शने वाला हिल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** उन क़समों में तुम्हारी गिरिफ़्त नहीं फ़रमाएगा जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए हां उस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन का तुम्हारे दिलों ने क़स्द किया हो और **अल्लाह** बहुत बख़्शने वाला, बड़ा हिल्म वाला है।

﴿لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَیْمَانِكُمْ﴾ **: और अल्लाह उन क़समों में तुम्हारी गिरिफ़्त नहीं फ़रमाएगा जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए।** क़सम तीन त़रह़ की होती है : (1) लग़्व। (2) ग़मूस। (3) मुन्अ़क़िदा।

(1)...... लग़्व येह है कि किसी चीज़ को अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खाई और दर ह़क़ीक़त वोह उस के ख़िलाफ़ हो येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं।

(2)...... ग़मूस येह है कि किसी गुज़री हुई चीज़ पर जान बूझ कर झूटी क़सम खाए, येह ह़राम है और आह़ादीस में इस पर सख़्त वई़दें हैं।

(3)...... मुन्अ़क़िदा येह है कि किसी आयिन्दा चीज़ पर क़सम खाए, इस क़सम को अगर तोड़े तो बा'ज़ सूरतों में गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होता है। सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "क़सम खाना जाइज़ है मगर जहां तक हो कमी बेहतर है और बात बात पर क़सम खानी न चाहिये और बा'ज़ लोगों ने क़सम को तक्या कलाम बना रखा है कि क़स्द व बे क़स्द ज़बान से जारी होती है और इस का भी ख़याल नहीं रखते कि बात सच्ची है या झूटी, येह सख़्त मा'यूब है[1]।"[2]

---

❶...... बहारे शरीअ़त, हिस्सए नुहुम, क़सम का बयान, 2/298

❷...... क़सम के मसाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "क़सम के बारे में सुवाल जवाब" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

لِلَّذِیۡنَ یُؤۡلُوۡنَ مِنۡ نِّسَآئِہِمۡ تَرَبُّصُ اَرۡبَعَۃِ اَشۡہُرٍ ۚ فَاِنۡ فَآءُوۡ فَاِنَّ اللّٰہَ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۲۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औ़रतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत है, पस अगर इस मुद्दत में फिर आए तो **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो अपनी बीवियों के पास न जाने की क़सम खा बैठें उन के लिये चार महीने की मोहलत है, पस अगर इस मुद्दत में वोह रुजूअ़ कर लें तो **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴾لِلَّذِیۡنَ یُؤۡلُوۡنَ مِنۡ نِّسَآئِہِمۡ : **और वोह अपनी बीवियों के पास न जाने की क़सम खा बैठें।**﴿ येह क़सम खाना कि मैं अपनी बीवी से चार महीने तक या कभी सोह़बत न करूंगा इसे ईला कहते हैं। इस का हुक्म येह है कि अगर क़सम तोड़ दे और चार माह के अन्दर सोह़बत कर ले तब तो उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा वाजिब है वरना चार माह के बा'द औ़रत को त़लाक़े बाइना पड़ जाएगी इस आयत में इसी का बयान है। ईला के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 8 से "ईला का बयान" मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

وَ اِنۡ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰہَ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर वोह त़लाक़ का पुख़्ता इरादा कर लें तो **अल्लाह** सुनने वाला, जानने वाला है।

﴾وَ اِنۡ عَزَمُوا الطَّلَاقَ : **और अगर वोह त़लाक़ का पुख़्ता इरादा कर लें।**﴿ ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का येह मा'मूल था कि अपनी औ़रतों से माल त़लब करते, अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो एक साल, दो साल, तीन साल या इस से ज़ियादा अ़र्सा उन के पास न जाने और सोह़बत तर्क करने की क़सम खा लेते और उन्हें परेशानी में छोड़ देते न तो वोह बेवा होतीं कि

www.dawateislami.net

कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं और न शौहर दार कि शौहर से कुछ सुकून ह़ासिल करतीं। इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत मुअ़य्यन फ़रमा दी कि अगर औ़रत से चार महीने या इस से ज़ाइद अ़र्से के लिये या ग़ैर मुअ़य्यन मुद्दत के लिये तर्के सोह़बत की क़सम खा ले जिस को ईला कहते हैं तो उस के लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है इस अ़र्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औ़रत को छोड़ना इस के लिये बेहतर है या रखना, अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ़ करे तो निकाह़ बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और अगर इस मुद्दत में रुजूअ़ न किया और क़सम न तोड़ी तो औ़रत निकाह़ से बाहर हो गई और उस पर त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई। येह हुक्म भी औ़रतों पर इस्लाम के एह़सानात में से एक एह़सान और हुक़ूक़े निस्वां की पासदारी की अ़लामत है।(1)

وَ الْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍؕ وَ لَا یَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ یَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِیْۤ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ یُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ وَ بُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِیْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْۤا اِصْلَاحًاؕ وَ لَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ۪ وَ لِلرِّجَالِ عَلَیْهِنَّ دَرَجَةٌؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ۠ ﴿۲۲۸﴾

ع ۲۸ ۱۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और त़लाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन ह़ैज़ तक और उन्हें ह़लाल नहीं कि छुपाएं वोह जो **अल्लाह** ने उन के पेट में पैदा किया अगर **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखती हैं और उन के शौहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का ह़क़ पहुंचता है अगर मिलाप चाहें और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शरअ़ के मुवाफ़िक़ और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

1...... त़लाक़ के मसाइल सीखने के लिये रिसाला "त़लाक़ के आसान मसाइल" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तलाक़ वाली औरतें अपनी जानों को तीन हैज़ तक रोके रखें और उन्हें हलाल नहीं कि उस को छुपाएं जो **अल्लाह** ने उन के पेट में पैदा किया है अगर **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखती हैं और उन के शौहर इस मुद्दत के अन्दर उन्हें फेर लेने का हक़ रखते हैं अगर वोह इस्लाह का इरादा रखते हों और औरतों के लिये भी मर्दों पर शरीअत के मुताबिक़ ऐसे ही हक़ है जैसा (उन का) औरतों पर है और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत हासिल है और **अल्लाह** ग़ालिब, हिक्मत वाला है।

﴾وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ﴿ : **और तलाक़ वाली औरतें अपनी जानों को तीन हैज़ तक रोके रखें।** इस आयत में मुतल्लक़ा औरतों की इद्दत का बयान है जिन औरतों को उन के शौहरों ने तलाक़ दी हो अगर वोह शौहर के पास न गई थीं और उन से ख़ल्वते सहीहा भी न हुई थी जब तो उन पर तलाक़ की इद्दत ही नहीं है जैसा कि सूरए अहज़ाब की आयत 49 में है और जिन औरतों को कमसिनी या बुढ़ापे की वज्ह से हैज़ न आता हो उन की इद्दत तीन महीने है और जो हामिला हों उन की इद्दत बच्चा जनना है जैसा कि इन दोनों की इद्दतों का बयान सूरए तलाक़ की आयत 4 में है और जिस का शौहर फ़ौत हो जाए अगर वोह हामिला हो तो उस की इद्दत बच्चा जनना है जैसा कि ऊपर बयान हुवा और अगर फ़ौत शुदा की बीवी हामिला न हो तो उस औरत की इद्दत 4 माह, 10 दिन है जैसा कि सूरए बक़रह आयत 234 में है। मज़्कूरा बाला औरतों के इलावा बाक़ी जो आज़ाद औरतें हैं यहां उन की इद्दत और तलाक़ का बयान है कि उन की इद्दत तीन हैज़ है।

﴾وَلَا یَحِلُّ لَهُنَّ﴿ : **और उन्हें हलाल नहीं।** जिस चीज़ का छुपाना हलाल नहीं वोह हम्ल और हैज़ का ख़ून है।(1)

इन का छुपाना इस लिये हराम है कि इन के छुपाने से रुजूअ करने और औलाद के बारे में जो शौहर का हक़ है वोह ज़ाएअ होगा।

﴾اِنْ كُنَّ یُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ﴿ : **अगर अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखती हैं।** यहां बतौरे ख़ास ईमान का तज़्किरा कर के येह समझाया है कि ईमान का तक़ाज़ा येह है कि **अल्लाह** तआला के हर हुक्म पर अमल किया जाए। लिहाज़ा हर नेक अमल को ईमान का तक़ाज़ा कह सकते हैं।

﴾وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِیْ ذٰلِكَ﴿ : **और उन के शौहर इस मुद्दत के अन्दर उन्हें फेर लेने का हक़**

1 ......جلالين، البقرة، تحت الآية: ٢٢٨، ص٣٤.

www.dawateislami.net

रखते हैं । शौहरों को रज्ई त़लाक़ में इ़द्दत के अन्दर रुजूअ़ का ह़क़ ह़ासिल होता है। आयत में "اَرَادُوْا" के लफ़्ज़ से येह भी मा'लूम हुवा कि त़लाक़े रज्ई में रुजूअ़ के लिये औ़रत की मरज़ी ज़रूरी नहीं सिर्फ़ मर्द का रुजूअ़ काफ़ी है, हां ज़ुल्म करने और औ़रत से अपने इन्तिक़ाम की आग बुझाने के लिये रुजूअ़ करना सख़्त बुरा है। रुजूअ़ इस्लाह़ की निय्यत से होना चाहिये। अफ़्सोस कि हमारे हां इस जहालत की भी कमी नहीं, बीवियों को ज़ुल्मो सितम और सुसराल से इन्तिक़ाम लेने का ज़रीआ़ बनाया जाता है ह़त्ता कि बा'ज़ अवक़ात तो शादी ही इस निय्यत से की जाती है और बा'ज़ अवक़ात रुजूअ़ इस निय्यत से किया जाता है। येह सब ज़मानए जाहिलिय्यत के मुशरिकों के अफ़्आ़ल हैं।

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ : और औ़रतों के लिये भी शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मर्दों पर ऐसे ही ह़क़ है जैसा औ़रतों पर है। या'नी जिस त़रह़ औ़रतों पर शौहरों के ह़ुक़ूक़ की अदाएगी वाजिब है इसी त़रह़ शौहरों पर औ़रतों के ह़ुक़ूक़ पूरे करना लाज़िम है। आयत की मुनासबत से यहां हम शौहर और बीवी के चन्द ह़ुक़ूक़ बयान करते हैं।

शौहर पर बीवी के ह़ुक़ूक़

शौहर पर बीवी के चन्द ह़ुक़ूक़ येह हैं : (1) ख़र्चा देना, (2) रिहाइश मुहय्या करना, (3) अच्छे त़रीक़े से गुज़ारा करना, (4) नेक बातों, ह़या और पर्दे की ता'लीम देते रहना, (5) इन की ख़िलाफ़ वरज़ी करने पर सख़्ती से मन्अ़ करना, (6) जब तक शरीअ़त मन्अ़ न करे हर जाइज़ बात में उस की दिलजोई करना, (7) उस की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ पर सब्र करना अगर्चे येह औ़रत का ह़क़ नहीं।

बीवी पर शौहर के ह़ुक़ूक़

बीवी पर शौहर के चन्द ह़ुक़ूक़ येह हैं : (1) इज़्दिवाजी तअ़ल्लुक़ात में मुत़्लक़न शौहर की इत़ाअ़त करना, (2) उस की इ़ज़्ज़त की सख़्ती से ह़िफ़ाज़त करना, (3) उस के माल की ह़िफ़ाज़त करना, (4) हर बात में उस की ख़ैर ख़्वाही करना, (5) हर वक़्त जाइज़ उमूर में उस की ख़ुशी चाहना, (6) उसे अपना सरदार जानना, (7) शौहर को नाम ले कर न पुकारना, (8) किसी से उस की बिला वज्ह शिकायत न करना, (9) और ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो वज्ह होने के बा वुजूद शिकायत न करना, (10) उस की इजाज़त के बिग़ैर आठवें दिन से पहले वालिदैन या एक साल से पहले दीगर महा़रिम के यहां न जाना, (11) वोह नाराज़ हो तो उस की बहुत

www.dawateislami.net

खुशामद कर के मनाना।(1)

﴿وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ﴾ : **और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है।** मर्द व औ़रत दोनों के एक दूसरे पर हुक़ूक़ हैं लेकिन मर्द को बहर ह़ाल औ़रत पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है और इस के हुक़ूक़ औ़रत से ज़ियादा हैं।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّاۤ اَنْ يَّخَافَاۤ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह त़लाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या निकोई के साथ छोड़ देना है और तुम्हें रवा नहीं कि जो कुछ औ़रतों को दिया उस में से कुछ वापस लो मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि **अल्लाह** की ह़दें क़ाइम न करेंगे फिर अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वोह दोनों ठीक इन्ही ह़दों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं उस में जो बदला दे कर औ़रत छुट्टी ले येह **अल्लाह** की ह़दें हैं इन से आगे न बढ़ो और जो **अल्लाह** की ह़दों से आगे बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : त़लाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या अच्छे त़रीक़े से छोड़ देना है और तुम्हारे लिये जाइज़ नहीं कि तुम ने जो कुछ औ़रतों को दिया हो उस में से कुछ वापस लो मगर इस सूरत में कि दोनों को अन्देशा हो कि वोह **अल्लाह** की ह़दें क़ाइम न रख सकेंगे तो अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि मियां बीवी **अल्लाह** की ह़दों को क़ाइम न कर सकेंगे तो उन पर उस (माली मुआ़वज़े) में कुछ गुनाह नहीं जो औ़रत बदले में दे कर छुटकारा ह़ासिल कर ले, येह

(1)...... फ़तावा रज़विय्या, 24/371 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

अल्लाह की ह़दें हैं, इन से आगे न बढ़ो और जो **अल्लाह** की ह़दों से आगे बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं ।

﴿اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ : **त़लाक़ दो बार तक है ।**﴾ येह आयत एक औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि उस के शौहर ने कहा है कि वोह उस को त़लाक़ देता रहेगा और रुजूअ़ करता रहेगा और हर मरतबा जब त़लाक़ की इ़द्दत गुज़रने के क़रीब होगी तो रुजूअ़ कर लेगा और फिर त़लाक़ दे देगा, इसी त़रह़ उ़म्र भर उस को क़ैद रखेगा इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।(1) और इर्शाद फ़रमा दिया कि त़लाक़े रज्ई दो बार तक है इस के बा'द त़लाक़ देने पर रुजूअ़ का ह़क़ नहीं । आयत का ख़ुलासा येह है कि मर्द को त़लाक़ देने का इख़्तियार दो बार तक है । अगर तीसरी त़लाक़ दी तो औ़रत शौहर पर ह़राम हो जाएगी और जब तक पहले शौहर की इ़द्दत गुज़ार कर किसी दूसरे से निकाह़ और हम बिस्तरी कर के इ़द्दत न गुज़ार ले तब तक पहले शौहर पर ह़लाल न होगी । लिहाज़ा एक त़लाक़ या दो त़लाक़ के बा'द रुजूअ़ कर के अच्छे त़रीक़े से उसे रख लो और या त़लाक़ दे कर उसे छोड़ दो ताकि औ़रत अपना कोई दूसरा इन्तिज़ाम कर सके । अच्छे त़रीक़े से रोकने से मुराद रुजूअ़ कर के रोक लेना है और अच्छे त़रीक़े से छोड़ देने से मुराद है कि त़लाक़ दे कर इ़द्दत ख़त्म होने दे कि इस त़रह़ एक त़लाक़ भी बाइना हो जाती है । शरीअ़त ने त़लाक़ देने और न देने की दोनों सूरतों में भलाई और ख़ैर ख़्वाही का फ़रमाया है । हमारे ज़माने में लोगों की एक बड़ी ता'दाद दोनों सूरतों में उलटा चलती है, त़लाक़ देने में भी ग़लत़ त़रीक़ा और बीवी को रखने में भी ग़लत़ त़रीक़ा । **अल्लाह** तआ़ला हिदायत अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

﴿وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ : **और तुम्हें ह़लाल नहीं ।**﴾ यहां ब वक़्ते त़लाक़ औ़रत से माल लेने का मस्अला बयान किया जा रहा है । इसी की दो सूरतें हैं पहली येह कि शौहर अपना दिया हुवा महर वापस ले और येह बत़ौरे ख़ुलअ़ न हो, येह सूरत तो सरासर ना जाइज़ व ह़राम है, येह मज़्मून सूरए निसाअ की आयत **20**, **21** में भी है, वहां फ़रमाया कि तुम बीवियों को ढेरों माल भी दे चुके हो तो त़लाक़ के वक़्त उस से लेने की इजाज़त नहीं । दूसरी सूरत येह है कि औ़रत मर्द से ख़ुलअ़ ले और ख़ुलअ़ में औ़रत माल अदा करे, इस सूरत की इजाज़त है और आयत में जो फ़रमाया कि औ़रत के फ़िदया देने में कोई ह़रज नहीं इस से येही सूरत मुराद है लेकिन इस सूरत में भी येह ह़ुक्म है कि अगर ज़ियादती मर्द की त़रफ़ से हो तो ख़ुलअ़ में माल लेना मकरूह है और

1 ......البحر المحيط، البقرة، تحت الآية: ٢٢٩، ٢/٢٠٢.

www.dawateislami.net

अगर ज़ियादती औ़रत की त़रफ़ से हो तो माल लेना दुरुस्त है लेकिन महर की मिक़्दार से ज़ियादा लेना फिर भी मकरूह है।[1]

ख़ुलअ़ के चन्द अह़काम

(1)...... बिला वज्ह औ़रत के लिये त़लाक़ का मुत़ालबा करना ह़राम है। ऐसी औ़रतें और वोह ह़ज़रात दर्जे ज़ैल **3** अह़ादीस से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो औ़रत को उस के शौहर के ख़िलाफ़ भड़काते हैं :

(1)...... ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो औ़रत अपने शौहर से बिला वज्ह त़लाक़ का मुत़ालबा करे तो उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है।"[2]

(2)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह शख़्स हम में से नहीं जो किसी औ़रत को उस के शौहर के ख़िलाफ़ भड़काए।"[3]

(3)...... ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इब्लीस अपना तख़्त पानी पर रखता है, फिर वोह अपने लश्कर रवाना करता है, उस के नज़्दीक सब से ज़ियादा मुक़र्रब वोह होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितना डालता है। उस के लश्कर में से एक आ कर कहता है : मैं ने ऐसा ऐसा किया है। वोह कहता है कि तुम ने कुछ नहीं किया। फिर उन में से एक आ कर कहता है : मैं ने एक शख़्स को इस ह़ाल में छोड़ा कि उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई करवा दी। इब्लीस उस को अपने क़रीब कर के कहता है : हां ! तुम ने काम किया है।"[4]

(2)...... ख़ुलअ़ का मा'ना : माल के बदले में निकाह़ ज़ाइल करने को ख़ुलअ़ कहते हैं। ख़ुलअ़ में शर्त़ है कि औ़रत इसे क़बूल करे।

(3)...... अगर मियां बीवी में ना इत्तिफ़ाक़ी रहती हो तो सब से पहले मियां बीवी के घर वाले उन में सुल्ह़ सफ़ाई की कोशिश करें जैसा कि सूरए निसाअ आयत 35 में है कि मर्द व औ़रत

1 ......فتاوی عالمگیری، کتاب الطلاق، الباب الثامن، الفصل الاول، ۱/۴۸۸.

2 ......ابو داود، کتاب الطلاق، باب فی الخلع، ۲/۳۹۰، الحدیث: ۲۲۲۶.

3 ......ابو داود، کتاب الطلاق، باب فیمن خبب امرأة علی زوجها، ۲/۳۶۹، الحدیث: ۲۱۷۵.

4 ......مسلم، کتاب صفة القیامة والجنة والنار، باب تحریش الشیطان وبعث سرایاه لفتنة الناس...الخ، ص ۱۵۱۱، الحدیث: ۶۷(۲۸۱۳).

www.dawateislami.net

दोनों की त़रफ़ से पन्च मुक़र्रर किया जाए जो उन के दरमियान सुल्ह़ सफ़ाई करवा दे लेकिन अगर इस के बा वुजूद आपस में न बने और येह अन्देशा हो कि अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी न कर सकेंगे तो ख़ुलअ़ में कोई मुज़ायक़ा नहीं और जब ख़ुलअ़ कर लें तो त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो जाएगी और जो माल तै किया हो औ़रत पर उस की अदाएगी लाज़िम हो जाती है।[1]

ख़ुलअ़ की आयत ह़ज़रते जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में नाज़िल हुई, उन्हों ने अपने शौहर ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शिकायत हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में की और किसी त़रह़ उन के पास रहने पर राज़ी न हुईं तब ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि मैं ने इन को एक बाग़ दिया है अगर येह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अ़लाह़दगी चाहती हैं तो वोह बाग़ मुझे वापस करें मैं इन को आज़ाद कर दूंगा। ह़ज़रते जमीला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस बात को मन्ज़ूर कर लिया चुनान्चे ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बाग़ ले लिया और उन्हें त़लाक़ दे दी।[2]

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَیْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِمَاۤ اَنْ یَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ ظَنَّاۤ اَنْ یُّقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ یُبَیِّنُهَا لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर तीसरी त़लाक़ उसे दी तो अब वोह औ़रत उसे ह़लाल न होगी जब तक दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे फिर वोह दूसरा अगर उसे त़लाक़ दे दे तो इन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं अगर समझते हों कि **अल्लाह** की ह़दें निबाहेंगे, और येह **अल्लाह** की ह़दें हैं जिन्हें बयान करता है दानिश मन्दों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर शौहर बीवी को (तीसरी) त़लाक़ दे दे तो अब वोह औ़रत उस के लिये ह़लाल न होगी जब तक दूसरे ख़ावन्द से निकाह़ न करे, फिर वोह दूसरा शौहर अगर

1 ......هدايه، كتاب الطلاق، باب الخلع، ١/٢٦١.
2 ......در منثور، البقرة، تحت الآية: ٢٢٩، ١/٦٧١.

www.dawateislami.net

उसे त़लाक़ दे दे तो इन दोनों पर एक दूसरे की त़रफ़ लौट आने में कुछ गुनाह नहीं अगर वोह येह समझें कि (अब) **अल्लाह** की ह़दों को क़ाइम रख लेंगे और येह **अल्लाह** की ह़दें हैं जिन्हें वोह दानिश मन्दों के लिये बयान करता है।

﴾فَاِنْ طَلَّقَهَا﴿ : **फिर अगर शौहर बीवी को (तीसरी) त़लाक़ दे दे।** तीन त़लाक़ों के बा'द औ़रत शौहर पर ह़ुरमते ग़लीज़ा के साथ ह़राम हो जाती है, अब न उस से रुजूअ़ हो सकता है और न दोबारा निकाह़ जब तक येह न हो कि औ़रत इ़द्दत गुज़ार कर किसी दूसरे मर्द से निकाह़ करे और वोह दूसरा शौहर सोह़बत के बा'द त़लाक़ दे या वोह फ़ौत हो जाए और औ़रत फिर उस दूसरे शौहर की इ़द्दत गुज़ारे।

तीन त़लाक़ों के बारे में एक अहम मस्अला

तीन त़लाक़ें तीन महीनों में दी जाएं या एक महीने में या एक दिन में या एक निशस्त में या एक जुम्ले में बहर सूरत तीनों वाक़ेअ़ हो जाती हैं और औ़रत मर्द पर ह़राम हो जाती है। तीन त़लाक़ों के बा'द बिग़ैर शरई़ त़रीक़े के मर्द व औ़रत का हम बिस्तरी वग़ैरा करना सरीह़ ह़राम व ना जाइज़ है और ऐसी सुल्ह़ की कोशिश करवाने वाले भी गुनाह में बराबर के शरीक हैं। तफ़्सील के लिये उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबों की त़रफ़ रुजूअ़ करें।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ۪ وَّ لَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ
ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰیٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَیْكُمْ وَ مَاۤ اَنْزَلَ عَلَیْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَ الْحِكْمَةِ یَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ
وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۲۳۱﴾ ع

الربع ۲۹

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द आ लगे तो उस वक़्त तक या भलाई के साथ रोक लो या निकोई के साथ छोड़ दो और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि ह़द से बढ़ो और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़्सान करता है और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा न बना लो और याद करो **अल्लाह** का एह़सान जो तुम पर है और वोह जो तुम पर किताब व ह़िक्मत उतारी तुम्हें नसीह़त देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और वोह अपनी (इ़द्दत की इख़्तितामी) मुद्दत (के क़रीब) तक पहुंच जाएं तो उस वक़्त उन्हें अच्छे त़रीक़े से रोक लो या अच्छे त़रीक़े से छोड़ दो और उन्हें नुक़्सान पहुंचाने के लिये न रोक रखो ताकि तुम (उन पर) ज़ियादती करो और जो ऐसा करे तो उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा मज़ाक़ न बना लो और अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान याद करो और उस ने तुम पर जो किताब और ह़िक्मत उतारी है (उसे याद करो) उस के ज़रीए़ वोह तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ जानने वाला है।

﴾وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ﴿ **: और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो।** येह आयत एक अन्सारी के बारे में नाज़िल हुई, उन्हों ने अपनी औ़रत को त़लाक़ दी थी और जब इ़द्दत ख़त्म होने के क़रीब होती थी तो रुजूअ़ कर लिया करते थे ताकि औ़रत क़ैद में पड़ी रहे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] जिस का ख़ुलासा है कि जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और वोह अपनी इ़द्दत की इख़्तितामी मुद्दत के क़रीब पहुंच जाएं तो उस वक़्त उन्हें अच्छे त़रीक़े से रोक लो या अच्छे त़रीक़े से छोड़ दो। तुम्हें रुजूअ़ का इख़्तियार तो दिया गया है लेकिन इस इख़्तियार को ज़ुल्मो ज़ियादती का ह़ीला न बनाओ कि उन्हें नुक़्सान पहुंचाने और ईज़ा देने की निय्यत से रुजूअ़ करते रहो। येह फ़े'ल सरासर **अल्लाह** तआ़ला की आयतों को ठठ्ठा मज़ाक़ बनाने के मुतरादिफ़ है कि जैसे मज़ाक़ में किसी चीज़ की परवाह नहीं की जाती इसी त़रह़ तुम **अल्लाह** तआ़ला की आयतों की परवाह नहीं करते और येह भी याद रखो कि जो इस त़रह़ करता है वोह अपनी जान पर ही ज़ुल्म करता है कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त कर के गुनहगार होता है। तुम्हें तो अपने ऊपर **अल्लाह** तआ़ला का एह़सान याद करना चाहिये कि उस ने तुम्हें इस्लाम की दौलत अ़त़ा की और सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती बनाया, तुम्हें तुम्हारी इ़बादात, मुआ़मलात और मुआ़शरत के त़रीक़े सिखाए, तुम्हें तो **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा कर्दा किताब

1 ......در منثور، البقرة، تحت الآية: ٢٣١، ١/٦٨٢.

www.dawateislami.net

और हिक्मत को याद करना चाहिये और **अल्लाह** तआ़ला की नसीह़त पर अ़मल करना चाहिये, ज़िन्दगी के तमाम मुआ़मलात में **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहना चाहिये । काएनात में तुम्हारे अपनी बीवियों पर ज़ुल्मो सितम और अह़कामे शरइय्या की मुख़ालफ़त को और कोई न भी जानता हो लेकिन **अल्लाह** तआ़ला तो सब कुछ जानने वाला है, उस की बारगाह में तो जवाब देना ही पड़ेगा । سُبْحٰنَ اللہ ! कितनी प्यारी नसीह़त है, कितना प्यारा बयान है । **अल्लाह** तआ़ला करे कि हमारे घरों के मुआ़मलात भी **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुत़ाबिक़ हो जाएं ।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ یَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَیْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِؕ ذٰلِكَ یُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ اَطْهَرُؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द पूरी हो जाए तो ऐ औ़रतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि अपने शौहरों से निकाह़ कर लें जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ा मन्द हो जाएं येह नसीह़त उसे दी जाती है जो तुम में से **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और पाकीज़ा है और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की (इ़द्दत की) मुद्दत पूरी हो जाए तो ऐ औ़रतों के वालियो ! उन्हें अपने शौहरों से निकाह़ करने से न रोको जब कि आपस में शरीअ़त के मुवाफ़िक़ रिज़ा मन्द हो जाएं । येह नसीह़त उसे दी जाती है जो तुम में से **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता हो । येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और पाकीज़ा काम है और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते ।

﴿وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ : और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो ।﴾ ह़ज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन का निकाह़ आ़सिम बिन अ़दी के साथ हुवा था उन्हों ने एक त़लाक़ दे

www.dawateislami.net

दी लेकिन इद्दत गुज़रने के बा'द फिर आ़सिम ने निकाह़ की दरख़्वास्त की तो ह़ज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मानेअ़ हुए उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई ।[1]

आयत का ख़ुलासा येह है कि जब किसी औ़रत की इद्दत गुज़र जाए और इद्दत के बा'द वोह औ़रत किसी से निकाह़ का इरादा करे ख़्वाह वोह कोई नया आदमी हो या वोही हो जिस ने त़लाक़ दी थी तो अगर वोह मर्द व औ़रत बाहम रिज़ा मन्द हैं तो औ़रत के सर परस्तों को बिला वज्ह मन्अ़ करने का ह़क़ नहीं । इस हुक्म की अहम्मिय्यत को वाज़ेह़ करने के लिये फ़रमाया कि येह हर उस आदमी को नसीह़त की जा रही है जो **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत पर ईमान रखता है । मज़ीद फ़रमाया कि इस हुक्म पर अ़मल करना तुम्हारे लिये ज़ियादा पाकीज़गी व त़हारत का बाइ़स है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात साबिक़ा तअ़ल्लुक़ात की वज्ह से औ़रतें ग़लत़ क़दम भी उठा लेती हैं जो बा'द में सब के लिये परेशानी का बाइ़स बनता है, इस लिये औ़रतों को मज़ीद निकाह़ से बिला वज्ह मन्अ़ न करो । हमारी ह़क़ीक़ी ह़िक्मतो मस्लह़त को तुम नहीं जानते, **अल्लाह** तआ़ला जानता है । येह याद रहे कि अगर औ़रत ग़ैर कुफ़ू में बिग़ैर इजाज़ते वली निकाह़ करे तो वहां औलिया का ह़क़ होता है । तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **7** में ''कुफ़ू का बयान'' मुत़ालआ़ करें ।

وَ الْوَالِدٰتُ یُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَیْنِ كَامِلَیْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ یُّتِمَّ
الرَّضَاعَةَ ؕ وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَ لَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ
بِوَلَدِهٖ ۗ وَ عَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ
مِّنْهُمَا وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِمَا ؕ وَ اِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْۤا
اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّاۤ اٰتَیْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۲۳۳﴾

1 ......بخاری ، کتاب النکاح، باب من قال لا نکاح الّا بولیّ، ۳/۴۴۲، الحدیث: ۵۱۳۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और माएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस उस के लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे और जिस का बच्चा है उस पर औ़रतों का खाना पहनना है ह़स्बे दस्तूर किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के मक़्दूर भर मां को ज़रर न दिया जाए उस के बच्चे से और न औलाद वाले को उस की औलाद से या मां ज़रर न दे अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को और जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो, और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं, (येह हुक्म) उस के लिये (है) जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे और बच्चे के बाप पर रवाज के मुत़ाबिक़ औ़रतों के खाने और पहनने की ज़िम्मेदारी है। किसी जान पर उतना ही बोझ रखा जाएगा जितनी उस की त़ाक़त हो। मां को उस की औलाद की वज्ह से तक्लीफ़ न दी जाए और न बाप को उस की औलाद की वज्ह से तक्लीफ़ दी जाए और जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही (हुक्म) है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा मन्दी और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि (दूसरी औ़रतों से) अपने बच्चों को दूध पिलवाओ तो भी तुम पर कोई मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो मुआ़वज़ा देना तुम ने मुक़र्रर किया हो वोह भलाई के साथ अदा कर दो और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ ﴿ **: और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं।** तृलाक़ के बयान के बा'द येह सुवाल त़ब्अ़न सामने आता है कि अगर त़लाक़ वाली औ़रत की गोद में शीर ख़्वार बच्चा हो तो इस की जुदाई के बा'द उस की परवरिश का क्या त़रीक़ा होगा इस लिये ह़िक्मत का तक़ाज़ा था कि बच्चे की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ मां बाप पर जो अह़काम हैं वोह इस मौक़अ़ पर बयान कर दिये जाएं लिहाज़ा यहां इन मसाइल का बयान हुवा। आयत का ख़ुलासा और इस की वज़ाह़त येह है कि माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं। दो साल मुकम्मल कराने का हुक्म उस के लिये है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे क्यूं कि दो साल के बा'द बच्चे को दूध पिलाना ना जाइज़ होता है अगर्चे अढ़ाई साल तक दूध

www.dawateislami.net

पिलाने से हुरमते रज़ाअ़त साबित हो जाती है और अगर वोह मियां बीवी बाहमी मश्वरे से किसी और से बच्चे को दूध पिलवाना चाहें तो इस में भी कोई ह़रज नहीं अलबत्ता इस सूरत में दूध पिलाने वाली औ़रत को इस की उजरत सह़ीह़ त़रीक़े से अदा की जाएगी। मां को उस की औलाद की वज्ह से तक्लीफ़ न दी जाए और न बाप को उस की औलाद से तक्लीफ़ दी जाए। मां को ज़रर देना येह है कि जिस सूरत में उस पर दूध पिलाना ज़रूरी नहीं उस में उसे दूध पिलाने पर मजबूर किया जाए और बाप को ज़रर देना येह है कि उस की त़ाक़त से ज़ियादा उस पर ज़िम्मेदारी डाली जाए। या आयत का येह मा'ना है कि न मां बच्चे को तक्लीफ़ दे और न बाप। मां का बच्चे को ज़रर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध न दे और उस की निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बा'द छोड़ दे और बाप का बच्चे को ज़रर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के ह़क़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़्सान पहुंचे। यहां येह भी ज़ेह्न में रखें कि दूध पिलाने के ह़वाले से जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस का भी येही हु़क्म है।

बच्चे को दूध पिलाने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम

(1)...... मां ख़्वाह मुत़ल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है बशर्ते़ कि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की क़ुदरत न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध क़बूल न करे अगर येह बातें न हों या'नी बच्चे की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़ूफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तह़ब है।[1]

(2)...... दूध पिलाने में दो साल की मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं। अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उस के लिये ख़त़रा न हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जाइज़ है।[2]

(3)...... बच्चे की परवरिश और उस को दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है इस के लिये वोह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो मुस्तह़ब है।

(4)...... शौहर अपनी बीवी को बच्चे के दूध पिलाने के लिये मजबूर नहीं कर सकता और न औ़रत शौहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत त़लब कर सकती है जब तक कि उस के निकाह़ या इद्दत में रहे।

---

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ٢٣٣، ١/٢٨٣.

2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٣٣، ١/١٧٣.

www.dawateislami.net

(5)...... अगर किसी शख़्स ने अपनी बीवी को त़लाक़ दी हो और इ़द्दत गुज़र चुकी हो तो वोह उस से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है।

(6)...... बच्चे के अख़राजात बाप के ज़िम्मे होंगे, न कि मां के ज़िम्मे।

आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि बच्चे का नसब बाप की त़रफ़ शुमार किया जाता है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने "مَوْلُوْدٌ" या'नी "बच्चे" को "لَهٗ" या'नी मुज़क्कर की ज़मीर की त़रफ़ मन्सूब कर के बयान फ़रमाया, लिहाज़ा अगर बाप सय्यिद हो और मां ग़ैर सय्यिद हो तो बच्चा सय्यिद है और अगर बाप ग़ैर सय्यिद और मां सय्यिदानी हो तो बच्चा ग़ैर सय्यिद ही शुमार होगा।

﴾وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ : **और जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही है।**﴿ या'नी अगर बाप फ़ौत हो गया हो तो जो ज़िम्मेदारियां बाप पर होती हैं वोह अब उस के क़ाइम मक़ाम पर होंगी।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें तो जब उन की इ़द्दत पूरी हो जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआख़ज़ा नहीं उस काम में जो औ़रतें अपने मुआ़मले में मुवाफ़िक़े शर्अ़ करें और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में से जो मर जाएं और बीवियां छोड़ें तो वोह बीवियां चार महीने और दस दिन अपने आप को रोके रहें तो जब वोह अपनी (इख़्तितामी) मुद्दत को पहुंच जाएं तो ऐ वालियो ! तुम पर उस काम में कोई ह़रज नहीं जो औ़रतें अपने मुआ़मले में शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कर लें और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

﴾وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ : **और तुम में से जो मर जाएं।**﴿ सूरए बक़रह आयत **228** की तफ़्सीर में मुत़ल्लक़ा औ़रतों की इ़द्दतों का बयान गुज़र चुका है। यहां आयत में फ़ौत शुदा आदमी की बीवी

www.dawateislami.net

की इद्दत का बयान है कि फ़ौत शुदा की बीवी की इद्दत **4** माह **10** दिन है। येह उस सूरत में है जब शौहर का इन्तिक़ाल चांद की पहली तारीख़ को हुवा हो वरना औ़रत **130** दिन पूरे करेगी।[1]

येह भी याद रहे कि येह इद्दत ग़ैर ह़ामिला की है, अगर औ़रत को ह़म्ल है तो इस की इद्दत हर सूरत में बच्चा जनना ही है।

इद्दत के 3 अहम मसाइल

(1)...... शौहर की वफ़ात की या त़लाक़े बाइन की इद्दत गुज़ारने वाली दौराने इद्दत न घर से बाहर निकल सकती और न बनाव सिंघार कर सकती है ख़्वाह ज़ेवर से करे या रंगीन व रेशमी कपड़ों से या ख़ुश्बू, तेल और मेहंदी वग़ैरा से। अगर कोई औ़रत इद्दत की पाबन्दियां पूरी न करे तो जो उसे रोकने पर क़ादिर है वोह उसे रोके, अगर नहीं रोकेगा तो वोह भी गुनाहगार होगा।
(2)...... जो औ़रत त़लाक़े रज्ई की इद्दत में हो उस को ज़ीनत और सिंगार करना मुस्तह़ब है।
(3)...... वफ़ात की इद्दत गुज़ारना बीवी पर मुत़्लक़न लाज़िम है ख़्वाह जवान हो या बूढ़ी या ना बालिग़ा, यूंही औ़रत की रुख़्सती हुई हो या न हुई हो। मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सा **8** का मुत़ालआ़ करें।

﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ فِیْمَا فَعَلْنَ فِیْۤ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ : **तो ऐ वालियो ! तुम पर उस काम में कोई ह़रज नहीं जो औ़रतें अपने मुआ़मले में शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कर लें।** इस से मा'लूम हुवा कि औ़रतों को अपने मुआ़मलात का फ़ैसला करने का इख़्तियार है और वोह ख़ुद भी अपना निकाह़ कर सकती हैं अलबत्ता मश्वरे से चलना बहर ह़ाल बेहतर है।

وَ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ فِیْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِیْۤ
اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَ لٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا
اِلَّاۤ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ۬ وَ لَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى یَبْلُغَ
الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ

1...... फ़तावा रज़विय्या, 13/294, 295

www.dawateislami.net

وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۲۳۵﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम पर गुनाह नहीं उस बात में जो पर्दा रख कर तुम औ़रतों के निकाह़ का पयाम दो या अपने दिल में छुपा रखो **अल्लाह** जानता है कि अब तुम उन की याद करोगे हां उन से ख़ुफ़्या वा'दा न कर रखो मगर येह कि उतनी ही बात कहो जो शर्अ़ में मा'रूफ़ है और निकाह़ की गिरह पक्की न करो जब तक लिखा हुवा हुक्म अपनी मीआ़द को न पहुंच ले और जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारे दिल की जानता है तो उस से डरो और जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला ह़िल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं जो इशारे किनाए से तुम औ़रतों को निकाह़ का पैग़ाम दो या अपने दिल में छुपा रखो। **अल्लाह** को मा'लूम है कि अब तुम उन का तज़्किरा करोगे लेकिन उन से ख़ुफ़्या वा'दा न कर रखो मगर येह कि शरीअ़त के मुताबिक़ कोई बात कह लो और अ़क़्दे निकाह़ को पुख़्ता न करना जब तक (इद्दत का) लिखा हुवा (हुक्म) अपनी (इख़्तितामी) मुद्दत को न पहुंच जाए और जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारे दिल की जानता है तो उस से डरो और जान लो कि **अल्लाह** बहुत बख़्शने वाला, ह़िल्म वाला है।

﴿وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ : **और तुम पर कोई गुनाह नहीं।**﴾ आयत में इद्दते वफ़ात गुज़ारने वाली औ़रत का हुक्म बयान किया जा रहा है कि ऐसी औ़रत से निकाह़ करना या निकाह़ का खुला पैग़ाम देना या निकाह़ का वा'दा कर लेना तो ह़राम है लेकिन पर्दे के साथ ख़्वाहिशे निकाह़ का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन येह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी त़रह़ न कहे।

अहम मस्अला : दौराने इद्दत निकाह़ ह़राम है और जो इसे ह़लाल समझे वोह काफ़िर है।(1)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾

1...... फ़तावा रज़विय्या, 11/266

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर कुछ मुत़ालबा नहीं अगर तुम औ़रतों को त़लाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई महर मुक़र्रर कर लिया हो और उन को कुछ बरत्ने को दो मक़्दूर वाले पर उस के लाइक़ और तंगदस्त पर उस के लाइक़ ह़स्बे दस्तूर कुछ बरत्ने की चीज़ येह वाजिब है भलाई वालों पर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम औ़रतों को त़लाक़ दे दो तो जब तक तुम ने उन को छुवा न हो या कोई महर न मुक़र्रर कर लिया हो तब तक तुम पर कुछ मुत़ालबा नहीं और उन को (एक जोड़ा) बरत्ने को दो। मालदार पर उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ और तंगदस्त पर उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ देना लाज़िम है। शरई दस्तूर के मुत़ाबिक़ उन्हें फ़ाएदा पहुंचाओ, येह भलाई करने वालों पर वाजिब है।

﴿مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ : **जब तक तुम ने उन्हें न छुवा हो।**﴾ आयत में महर के चन्द मसाइल का बयान है : जिस औ़रत का महर मुक़र्रर किये बिग़ैर निकाह़ कर दिया गया हो, अगर उस को हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दे दी तो कोई महर लाज़िम नहीं, हाथ लगाने से हम बिस्तरी करना मुराद है और ख़ल्वते सह़ीह़ा भी इसी के हुक्म में है। येह भी मा'लूम हुवा कि महर का ज़िक्र किये बिग़ैर भी निकाह़ दुरुस्त है मगर इस सूरत में अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा हो गई या दोनों में से कोई फ़ौत हो गया तो महरे मिस्ल देना वाजिब है बशर्ते कि निकाह़ के बा'द उन्हों ने आपस में कोई महर तै न कर लिया हो और अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा से पहले त़लाक़ हो गई तो तीन कपड़ों या'नी कुरता, शल्वार और दोपट्टे पर मुश्तमिल एक जोड़ा सूट देना वाजिब होता है, यहां आयत में इसी का बयान है और अगर जोड़े की जगह उस की क़ीमत दे दे तो येह भी हो सकता है। नीज़ जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो और उस को ख़ल्वते सह़ीह़ा से पहले त़लाक़ दे दी हो उस को तो जोड़ा देना वाजिब है और उस के सिवा हर मुत़ल्लक़ा के लिये मुस्तह़ब है।

﴿عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ : **मालदार पर उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ देना लाज़िम है।**﴾ अमीर व ग़रीब पर उन की हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ जोड़ा देने का हुक्म है या'नी अगर मर्द व औ़रत दोनों मालदार हों तो जोड़ा आ'ला दरजे का हो और अगर दोनों मोह़ताज हों तो जोड़ा मा'मूली दरजे का और एक मालदार और एक मोह़ताज तो जोड़ा दरमियाने दरजे का हो।[1]

1 ......عالمگیری، کتاب النکاح، الباب السابع، الفصل الثانی، ١/٣٠٤.

www.dawateislami.net

وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّاۤ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِؕ وَ اَنْ تَعْفُوْۤا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰىؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम ने औ़रतों को बे छूए त़लाक़ दे दी और उन के लिये कुछ मह्‌र मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औ़रतें कुछ छोड़ दें या वोह ज़ियादा दे जिस के हाथ में निकाह़ की गिरह है और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी से नज़्दीक तर है और आपस में एक दूसरे पर एह़सान को भुला न दो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम औ़रतों को उन्हें छूने से पहले त़लाक़ दे दो और तुम उन के लिये कुछ मह्‌र भी मुक़र्रर कर चुके हो तो जितना तुम ने मुक़र्रर किया था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औ़रतें कुछ मह्‌र मुआ़फ़ कर दें या वोह (शौहर) ज़ियादा दे दे जिस के हाथ में निकाह़ की गिरह है और ऐ मर्दो ! तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी के ज़ियादा नज़्दीक है और आपस में एक दूसरे पर एह़सान करना न भूलो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

﴿وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ﴾ **: और अगर तुम औ़रतों को उन्हें छूने से पहले त़लाक़ दे दो।** इस आयत में 6 चीज़ें बयान की गई हैं :

(1)...... अगर मह्‌र मुक़र्रर हो और औ़रत के क़रीब जाए बिग़ैर उसे त़लाक़ दे दी हो तो मुक़र्रर कर्दा मह्‌र का निस्फ़ या'नी आधा देना पड़ेगा, मसलन दस हज़ार मह्‌र था तो पांच हज़ार देना होगा।

(2)...... अगर औ़रत उस आधे में से भी कुछ मुआ़फ़ कर दे तो जाइज़ है।

(3)...... शौहर अपनी ख़ुशी से आधे से ज़ियादा दे दे तो भी जाइज़ है।

(4)...... शौहर का अपनी ख़ुशी से आधे से ज़ियादा देना तक़्वा व परहेज़ गारी के ज़ियादा

www.dawateislami.net

क़रीब है कि बीवी को त़लाक़ देने के बा वुजूद कोई ज़ियादती करने की बजाए एह़सान से पेश आ रहा है।

(5)...... **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म है कि अगर्चे मियां बीवी में जुदाई हो रही हो तब भी आपस में एह़सान करना न भूलो या'नी त़लाक़ के बा'द आपस में कीना व अ़दावत न हो, इस्लामी और क़राबत के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखा जाए। इस में हुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक़ की तरग़ीब है।

(6)...... आयत के आख़िर में येह भी फ़रमा दिया कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे आ'माल देख रहा है या'नी इस तसव्वुर व ए'तिक़ाद को हर वक़्त ज़ेह्न नशीन रखो ताकि तुम ज़ुल्मो ज़ियादती से बचो और फ़ज़्लो एह़सान की त़रफ़ माइल रहो।! سُبْحٰنَ اللہ, कितनी प्यारी ता'लीम है। त़लाक़ का मुआ़मला इतना शदीद होता है कि उ़मूमन दोनों फ़रीक़ जज़्बए इन्तिक़ाम में अन्धे होते हैं और एक दूसरे को जान से मार देने के ख़्वाहिश मन्द होते हैं लेकिन **अल्लाह** तआ़ला यहां पर भी आपस में हुस्ने सुलूक का हुक्म फ़रमा रहा है और इस में भी ख़ुसूसन मर्द को ज़ियादा ताकीद है क्यूं कि ज़ियादा ईज़ा आ़म त़ौर पर मर्द और उस के ख़ानदान की त़रफ़ से होती है।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰىۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِیْنَ ﴿۲۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : निगहबानी करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ की और खड़े हो **अल्लाह** के हु़ज़ूर अदब से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तमाम नमाज़ों की पाबन्दी करो और ख़ुसूसन दरमियानी नमाज़ की और **अल्लाह** के हु़ज़ूर अदब से खड़े हुवा करो।

﴿حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ : **तमाम नमाज़ों की पाबन्दी करो।**﴾ निकाह़ व त़लाक़ के मसाइल बयान करने के दौरान नमाज़ की ताकीद फ़रमा दी, गोया येह समझाना मक़्सूद है कि बन्दों के हुक़ूक़ अदा करते हुए ख़ालिक़ व मालिक के हुक़ूक़ से ग़ाफ़िल न हो जाना, पन्जगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवक़ात पर अरकान व शराइत़ के साथ अदा करते रहो क्यूं कि शरीअ़त के दीगर मुआ़मलात में हुक्मे इलाही पर अ़मल उसी सूरत में होगा जब दिल की इस्लाह़ होगी और दिल की इस्लाह़ नमाज़ की पाबन्दी से होती है। नीज़ फ़रमाया कि तमाम नमाज़ों की पाबन्दी व निगहबानी करो, इस निगहबानी में हमेशा नमाज़ पढ़ना, बा जमाअ़त पढ़ना, दुरुस्त

www.dawateislami.net

पढ़ना, सहीह़ वक़्त पर पढ़ना सब दाख़िल हैं। दरमियानी नमाज़ की बिल ख़ुसूस ताकीद की गई है, दरमियानी नमाज़ से मुराद अ़स्र की नमाज़ है जैसा कि बुख़ारी में है "नमाज़े वुस्त़ा" से मुराद अ़स्र की नमाज़ है।(1)

नमाज़े अ़स्र की ताकीद की ज़ाहिरी वज्ह येह समझ आती है कि एक तो इस वक़्त दिन और रात के फ़िरिश्ते जम्अ़ होते हैं।(2)

दूसरा येह कि इस वक़्त कारोबार की मसरूफ़िय्यत का वक़्त होता है तो इस ग़फ़्लत के वक़्त में नमाज़ की पाबन्दी करना ज़ियादा अहम है।

﴿وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِیْنَ﴾ : **और अल्लाह के हुज़ूर अदब से खड़े हुवा करो।** बारगाहे इलाही में खड़ा होने का त़रीक़ा येह है कि अदब से खड़ा हुवा जाए लिहाज़ा खड़े होने के ऐसे त़रीक़े मम्नूअ़ होंगे जिस में बे अदबी का पहलू नुमायां हो। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक येह है कि नमाज़ में क़ियाम फ़र्ज़ है। दूसरे येह कि नमाज़ में खाना पीना, बातचीत करना ह़राम है जैसा कि "قٰنِتِیْنَ" से मा'लूम हुवा। नमाज़ में गुफ़्त्गू करना इसी आयत से मन्सूख़ है।(3)

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर ख़ौफ़ में हो तो पियादा या सुवार जैसे बन पड़े फिर जब इत़्मीनान से हो तो **अल्लाह** की याद करो जैसा उस ने सिखाया जो तुम न जानते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर तुम ख़ौफ़ की ह़ालत में हो तो पैदल या सुवार (जैसे मुम्किन हो नमाज़ पढ़ लो) फिर जब ह़ालते इत़्मीनान में हो जाओ तो **अल्लाह** को याद करो जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न जानते थे।

---

1 ......بخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء علی المشرکین، ۲۱٦/٤، الحدیث:٦٣٩٦، ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة البقرة، ٤٦١/٤، الحدیث: ٢٩٩٤.

2 ......بخاری ، کتاب التوحید ، باب قول اللّٰہ تعالٰی : تعرج الملائکة و الروح الیه ، ٥٤٩/٤ ، الحدیث:٧٤٢٩،شرح السنه، کتاب الامارة والقضاء، باب تغلیظ الیمین، ٣٧٠/٥، تحت الحدیث: ٢٥١٠.

3 ......بخاری، کتاب العمل فی الصلاة، باب ما ینهی من الکلام فی الصلاة، ٤٠٥/١، الحدیث: ١٢٠٠.

www.dawateislami.net

﴿فَاِنْ خِفْتُمْ﴾ **: फिर अगर तुम ख़ौफ़ की ह़ालत में हो ।** यहां दुश्मन या दरिन्दे वग़ैरा के ख़ौफ़ की ह़ालत में नमाज़ का हुक्म और त़रीक़ा बयान किया गया है कि अगर ख़ौफ़ की ऐसी सूरत हो कि एक जगह ठहरना ना मुम्किन हो जाए तो पैदल चलते हुए या सुवारी पर जैसे मुम्किन हो नमाज़ पढ़ लो और उस नमाज़ को दोहराना भी न पड़ेगा और जिधर जा रहे हों उधर ही मुंह कर के नमाज़ पढ़ लें, क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करने की शर्त़ नहीं है और जब ह़ालते अम्न हो तो फिर मा'मूल के मुत़ाबिक़ नमाज़ पढ़ी जाए अलबत्ता अगर ख़ौफ़ की ऐसी ह़ालत हो कि उस में ठहरना मुम्किन हो जैसे जंग के मौक़अ़ पर दुश्मनों के ह़म्ले का डर भी है लेकिन किसी जगह ठहरे हुए भी हैं तो इस का बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा सूरए निसाअ आयत **102** में मज़्कूर है।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़ जाएं वोह अपनी औ़रतों के लिये वसिय्यत कर जाएं साल भर तक नान व नफ़्क़ा देने की बे निकाले फिर अगर वोह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर इस का मुआख़ज़ा नहीं जो उन्हों ने अपने मुआ़मले में मुनासिब त़ौर पर किया और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो तुम में मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वोह अपनी औ़रतों के लिये (उन्हें घरों से) निकाले बिग़ैर साल भर तक ख़र्चा देने की वसिय्यत कर जाएं फिर अगर वोह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर इस मुआ़मले में कोई गिरिफ़्त नहीं जो वोह अपने बारे में शरीअ़त के मुत़ाबिक़ करें और **अल्लाह** ज़बर दस्त, ह़िक्मत वाला है।

﴿وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ﴾ **: और जो तुम में मर जाएं ।** इब्तिदाए इस्लाम में बेवा की इ़द्दत एक साल थी और उस एक साल में वोह शौहर के यहां रह कर नान व नफ़्क़ा पाने की मुस्तह़िक़ होती थी, फिर एक साल की इ़द्दत तो सूरए बक़रह की आयत **234**

www.dawateislami.net

"يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا" से मन्सूख़ हुई जिस में बेवा की इद्दत चार माह, दस दिन मुक़र्रर फ़रमाई गई और साल भर का नफ़्क़ा सूरए निसाअ की आयत नम्बर **12** या'नी आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा जिस में औ़रत को शौहर की विरासत में हिस्सेदार मुक़र्रर कर दिया गया लिहाज़ा अब इस वसिय्यत का हुक्म बाक़ी न रहा।

وَ لِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِیْنَ ﴿۲۴۱﴾ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۲﴾ ع

ركوع ٧ ‏/ ١٥ ‏/ ٣١

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और त़लाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब त़ौर पर नान व नफ़्क़ा है, येह वाजिब है परहेज़ गारों पर। **अल्लाह** यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और त़लाक़ वाली औ़रतों के लिये भी शर्ई़ दस्तूर के मुत़ाबिक़ ख़र्चा है, येह परहेज़ गारों पर वाजिब है। **अल्लाह** इसी त़रह़ तुम्हारे लिये अपनी आयतें खोल कर बयान करता है ताकि तुम समझो।

﴿وَ لِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ : **और त़लाक़ वाली औ़रतों के लिये भी ख़र्चा है।**﴾ यहां आयत में येह बयान किया गया है कि त़लाक़ की इद्दत में शौहर पर औ़रत का नान नफ़्क़ा देना लाज़िम है।[1]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَ هُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْیَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब ! क्या तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٢٤٢، ص١٢٦.

www.dawateislami.net

दिया, बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हबीब ! क्या तुम ने उन लोगों को न देखा था जो मौत के डर से हज़ारों की ता'दाद में अपने घरों से निकले तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया : मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया, बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ﴾ **: ऐ हबीब ! क्या तुम ने उन लोगों को न देखा था जो अपने घरों से निकले।** बनी इसराईल की एक जमाअ़त थी जिस के अ़लाक़े में ताऊ़न फैल गया तो वोह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ कर भाग निकले और जंगल में जा पड़े। येह लोग हज़ारों की ता'दाद में थे, हुक्मे इलाही से सब वहीं मर गए, कुछ अ़र्से के बा'द हज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और वोह मुद्दतों ज़िन्दा रहे।(1)

मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचाई जा सकती

इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है, जो मौत मुक़द्दर है वोह ज़रूर पहुंचेगी। आदमी को चाहिये कि रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहे, यूंही मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ़्अ़ नहीं कर सकता लिहाज़ा दिल मज़बूत रखना चाहिये। सूरए आले इमरान आयत **168** और सूरए अहज़ाब आयत **16** में भी येह मज़्मून बयान किया गया है।

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ﴾ **: बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है।** इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है, कुछ लोगों पर तो कोई ख़ुसूसी फ़ज़्ल होता है जैसे मज़्कूरा बाला लोगों को दोबारा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा दी जब कि **अल्लाह** तआ़ला का उ़मूमी फ़ज़्लो करम तो पूरी काएनात के एक एक फ़र्द पर है। हर इन्सान दिन रात अपने ज़ाहिरो बातिन में **अल्लाह** तआ़ला के करोड़हा करोड़ एहसानात लिये चल रहा होता है लेकिन लोगों की अक्सरिय्यत **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम पर उस की शुक्र गुज़ार नहीं है।

(1) ......در منثور، البقرة، تحت الآية: ۲۴۳، ۱/۷۴۱.

www.dawateislami.net

وَ قَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और लड़ो **अल्लाह** की राह में और जान लो कि **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** की राह में लड़ो और जान लो कि **अल्लाह** सुनने वाला, जानने वाला है।

﴾وَ قَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴿ **: और अल्लाह की राह में लड़ो।** ज़िन्दगी की बे सबाती और मौत के बयान के बा'द समझाया जा रहा है कि जब ज़िन्दगी ऐसी ही ना पाएदार है और किसी भी सूरत मौत से फ़िरार मुम्किन नहीं तो जिहाद से मुंह फेर कर मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्यूं कि मौत से भागना काम नहीं आता।

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةًؕ وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ۪ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और **अल्लाह** तंगी और कशाइश करता है और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिर जाना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : है कोई जो **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दे तो **अल्लाह** उस के लिये उस क़र्ज़ को बहुत गुना बढ़ा दे और **अल्लाह** तंगी देता है और वुस्अ़त देता है और तुम उसी की त़रफ़ लौटाए जाओगे।

﴾مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا﴿ **: है कोई जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे।** राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया, येह **अल्लाह** तआ़ला का कमाल दरजे का लुत्फ़ो करम है क्यूं कि बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा, ह़क़ीक़ी मालिक वोह जब कि बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह बात दिल में बिठाना मक़्सूद है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान

www.dawateislami.net

रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं होता और वोह उस की वापसी का मुस्तहि़क़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस ख़र्च करने का बदला यक़ीनन पाएगा और वोह भी मा'मूली नहीं बल्कि कई गुना बढ़ा कर पाएगा। सात सो गुना भी हो सकता है और इस से लाखों गुना ज़ाइद भी जैसा कि सूरए बक़रह की आयत **261** में है। सदक़े से दुन्या में भी माल में बरकत होती है और आख़िरत में भी अज्रो सवाब मिलता है। दुन्या के अगर लाखों अमीर लोगों का सर्वे करें तो आप को मा'लूम होगा कि उन की अक्सरिय्यत सदक़ा व ख़ैरात ब कसरत करती है और लाखों ग़रीबों को देख लें कि उन की अक्सरिय्यत सदक़ा व ख़ैरात से दूर भागती है।

﴿وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ : **और अल्लाह तंगी देता है और वुस्अ़त देता है।**﴾ आयत के इस हि़स्से में राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई, चूंकि वस्वसा पैदा होता है कि माल ख़र्च करने से कम होता है तो इस शुब्हे का इज़ाला फ़रमा दिया कि **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये चाहे रोज़ी तंग कर दे और जिस के लिये चाहे वसीअ़ फ़रमा दे, तंगी व फ़राख़ी तो उस के क़ब्ज़े में है और वोह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुस्अ़त का वा'दा करता है तो राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मत डरो, जिस की राह में ख़र्च कर रहे हो वोह करीम है और उस के ख़ज़ाने भरे हुए हैं और जूदो बख़्शिश के ख़ज़ाने लुटाना उस करीम की शान है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रह़मान का दस्ते क़ुदरत भरा हुवा है, बेहृदो हि़साब रह़मतें और ने'मतें यूं बरसाने वाला है कि दिन रात (के अ़त़ा फ़रमाने) ने उस में कुछ कम न किया और देखो तो कि आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश से अब तक **अल्लाह** तआ़ला ने कितना ख़र्च कर दिया है लेकिन इस के बा वुजूद उस के दस्ते क़ुदरत में जो ख़ज़ाने हैं उस में कुछ कमी नहीं आई।''(1)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰىۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِیٍّ لَّهُمُ
ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ قَالَ هَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ كُتِبَ
عَلَیْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْاؕ قَالُوْا وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

وقف لازم

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المائدة، ۵/۳۴، الحدیث: ۳۰۵۶.

www.dawateislami.net

وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ اَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब क्या तुम ने न देखा बनी इसराईल के एक गुरौह को जो मूसा के बा'द हुवा जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिये खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें, नबी ने फ़रमाया क्या तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुवा कि हम **अल्लाह** की राह में न लड़ें ह़ालां कि हम निकाले गए हैं अपने वत़न और अपनी औलाद से तो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गए मगर उन में के थोड़े और **अल्लाह** ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! क्या तुम ने बनी इसराईल के एक गुरौह को न देखा जो मूसा के बा'द हुवा, जब उन्हों ने अपने एक नबी से कहा कि हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम **अल्लाह** की राह में लड़ें, उस नबी ने फ़रमाया : क्या ऐसा तो नहीं होगा कि अगर तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर तुम जिहाद न करो ? उन्हों ने कहा : हमें क्या हुवा कि हम **अल्लाह** की राह में न लड़ें ह़ालां कि हमें हमारे वत़न और हमारी औलाद से निकाल दिया गया है तो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उन में से थोड़े से लोगों के इ़लावा (बक़िय्या) ने मुंह फेर लिया और **अल्लाह** ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ﴾ **: ऐ ह़बीब ! क्या तुम ने बनी इसराईल के एक गुरौह को न देखा।** जिहाद का हुक्म देने के बा'द अब जिहाद का हिम्मतो ह़ौसला पैदा करने वाला एक वाक़िआ़ बहुत सी दिलचस्प तफ़्सीलात के साथ पेश किया जा रहा है। चुनान्चे बताया गया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द जब बनी इसराईल की ए'तिक़ादी और अ़मली ह़ालत निहायत ख़राब हो गई और उन्हों ने अ़हदे इलाही को फ़रामोश कर दिया, बुत परस्ती में मुब्तला हो गए और सरकशी और बद अफ़्आ़ली इन्तिहा को पहुंच गई तो उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत़ कर दी गई जिस को अ़मालिक़ा कहते हैं। जालूत एक निहायत जाबिर बादशाह था, उस की क़ौम के लोग मिस्र और फ़िलिस्त़ीन के दरमियान बह़्रे रूम के साह़िल पर रहते थे, इन्हों ने बनी इसराईल के शह्र छीन लिये, उन के लोग गिरिफ़्तार कर लिये और उन पर त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां कीं। उस ज़माने में बनी इसराईल में कोई नबी मौजूद न थे, ख़ानदाने नुबुव्वत में सिर्फ़

एक बीबी बाक़ी रही थीं जो ह़ामिला थीं, उन के हां बेटे की विलादत हुई जिन का नाम शमवील रखा गया, जब वोह बड़े हुए तो उन्हें तौरैत का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये बैतुल मुक़द्दस में एक बुज़ुर्ग आ़लिम के सिपुर्द किया गया। वोह आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ बड़ी शफ़्क़त करते और आप को अपना बेटा कहते। जब ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बुलूग़त की उ़म्र को पहुंचे तो एक रात आप उस आ़लिम के क़रीब आराम फ़रमा रहे थे कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी आ़लिम की आवाज़ में ''या शमवील'' कह कर पुकारा, आप आ़लिम के पास गए और फ़रमाया कि आप ने मुझे पुकारा है ? आ़लिम ने इस ख़याल से कि इन्कार करने से कहीं आप डर न जाएं येह कह दिया कि बेटा ! तुम सो जाओ, फिर दोबारा ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने इसी त़रह़ पुकारा और ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़लिम के पास गए। आ़लिम ने कहा कि बेटा ! अब अगर मैं तुम्हें फिर पुकारूं तो तुम जवाब न देना। चुनान्चे तीसरी मरतबा में ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ज़ाहिर हो गए और उन्हों ने बिशारत दी कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को नुबुव्वत का मन्सब अ़त़ा फ़रमाया है, लिहाज़ा आप अपनी क़ौम की त़रफ़ जाइये और अपने रब तआ़ला के अह़काम पहुंचाइये। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام क़ौम की त़रफ़ तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नबी मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इतनी जल्दी कैसे नबी बन गए, अच्छा अगर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर करें।(1)

जब क़ौम की ए'तिक़ादी और अ़मली ह़ालत ख़राब हो तो क्या होता है ?

इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि जब क़ौम की ए'तिक़ादी और अ़मली ह़ालत ख़राब हो जाती है तो उन पर ज़ालिमो जाबिर क़ौमों को मुसल्लत़ कर दिया जाता है। इस आयत को सामने रख कर पूरी दुन्या के मुस्लिम ममालिक की ए'तिक़ादी व अ़मली ह़ालत को देखा जाए तो ऊपर का नक़्शा बड़ा वाज़ेह़ त़ौर पर नज़र आएगा। क़ुरआन के इस त़रह़ के वाक़िआ़त बयान करने का मक़्सद सिर्फ़ तारीख़ी वाक़िआ़त बताना नहीं बल्कि इ़ब्रतो नसीह़त ह़ासिल करने की त़रफ़ लाना है।

﴿اِبْعَثْ لَنَا مَلِكًا : **हमारे लिये बादशाह मुक़र्रर कर दीजिये।**﴾ जब बनी इसराईल ने ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा कि आप हमारे लिये बादशाह मुक़र्रर कर दीजिये ताकि हम राहे ख़ुदा में जिहाद करें तो ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ऐसा न हो कि तुम

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٤٦، ١/١٨٦.

www.dawateislami.net

पर बादशाह मुक़र्रर किया जाए तो तुम जिहाद करने से इन्कार कर दो और मुंह फेरो। इस पर क़ौम ने जज़्बात में आ कर कहा कि येह कैसे हो सकता है कि हम जिहाद से मुंह फेरें जब कि क़ौमे जालूत ने हमारी क़ौम के लोगों को उन के वत़न से निकाला है, उन की औलाद को क़त्ल किया है, उन की नस्लों को तबाह किया है। येह सुन कर ह़ज़रते शमवील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की और **अल्लाह** तआ़ला ने इन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाते हुए उन के लिये एक बादशाह मुक़र्रर कर दिया और उन्हें जिहाद का हुक्म दिया लेकिन बा'द में वोही हुवा जिस का अन्देशा **अल्लाह** तआ़ला के नबी ने ज़ाहिर फ़रमाया था या'नी बनी इसराईल की एक बहुत मा'मूली ता'दाद या'नी अहले बद्र के बराबर सिर्फ़ तीन सो तेरह अफ़राद जिहाद के लिये तय्यार रहे और बक़िय्या सब ने मुंह फेर लिया।(1)

बुज़दिल क़ौमों का वत़ीरा

याद रखें कि ना'रे मारने में आगे आगे होना और अ़मली मैदान में पीठ दिखा देना बुज़दिल क़ौमों का वत़ीरा है और कामिल लोग गुफ़्तार के नहीं बल्कि किरदार के ग़ाज़ी होते हैं।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِی الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِیْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से उन के नबी ने फ़रमाया बेशक **अल्लाह** ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है बोले उसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी और हम उस से ज़ियादा सल्त़नत के मुस्तह़िक़ हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई फ़रमाया उसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया और उसे इ़ल्म और जिस्म की कुशादगी ज़ियादा दी और **अल्लाह** अपना मुल्क जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۲۴٦، ۱/۳۰۱-۳۰۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया है। वोह कहने लगे : उसे हमारे ऊपर कहां से बादशाही ह़ासिल हो गई ह़ालां कि हम उस से ज़ियादा सल्त़नत के मुस्तह़िक़ हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई। उस नबी ने फ़रमाया : उसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया है और उसे इ़ल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी है और **अल्लाह** जिस को चाहे अपना मुल्क दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है।

﴿وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ : **और उन से उन के नबी ने फ़रमाया।**﴾ बनी इसराईल ने चूंकि बादशाह मुक़र्रर करने की दरख़्वास्त दी थी चुनान्चे ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से एक अ़सा मिला और बताया गया कि जो शख़्स तुम्हारी क़ौम का बादशाह होगा उस का क़द इस अ़सा के बराबर होगा। चुनान्चे लोगों की पैमाइश करने पर त़ालूत का क़द उस अ़सा के बराबर निकला तो ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मैं तुम्हें हुक्मे इलाही से बनी इसराईल का बादशाह मुक़र्रर करता हूं और बनी इसराईल से फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है।[(1)]

बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा कि नुबुव्वत तो लावा बिन या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद में चली आती है और सल्त़नत यहूद बिन या'क़ूब की औलाद में जब कि त़ालूत इन दोनों ख़ानदानों में से नहीं है, नीज़ येह ग़रीब आदमी है, कोई मालो दौलत इस के पास है नहीं तो येह बादशाह कैसे हो सकता है ? इस से ज़ियादा तो बादशाहत के ह़क़दार हम हैं। इस मुआ़मले में येह बनी इसराईल की पहली ना फ़रमानी थी कि **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुक़ाबले में अपना क़ियास किया और बिला वज्ह की बह़्स की। उन्हें बताया गया कि सल्त़नत कोई विरासत नहीं कि किसी नस्ल और ख़ानदान के साथ ख़ास हो, इस का दारो मदार सिर्फ़ फ़ज़्ले इलाही पर है। त़ालूत को तुम पर **अल्लाह** तआ़ला ने बादशाह मुक़र्रर किया है। नीज़ वोह इ़ल्मो क़ुव्वत में तुम से बढ़ कर है और चूंकि इ़ल्म और क़ुव्वत सल्त़नत के लिये बड़े मुआ़विन होते हैं और त़ालूत उस ज़माने में तमाम बनी इसराईल से ज़ियादा इ़ल्म रखता था और सब से जसीम और तुवाना था इस लिये वोही बादशाहत का मुस्तह़िक़ है और **अल्लाह** तआ़ला जिसे चाहे अपना मुल्क दे।[(2)]

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ٢٤٧، ١/٣٠٣.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٤٧، ١/١٨٧.

www.dawateislami.net

ताूलूत को बादशाह बनाने के वाक़िए से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस वाक़िए से बहुत सी चीज़ें मा'लूम होती हैं :

(1)...... हुक्मे इलाही के मुक़ाबले में अपने अन्दाज़े, तख़्मीने क़ाइम करना ना जाइज़ है।

(2)...... इल्म माल से अफ़्ज़ल है।

(3)...... हुक्मरान होने का मे'यार मालो दौलत नहीं बल्कि इल्मो कुव्वत और क़ाबिलिय्यतो सलाहिय्यत है।

(4)...... बिग़ैर इस्तिह़क़ाक़ के नस्ल दर नस्ल बादशाहत ग़लत़ है, हर आदमी को उस की सलाहिय्यत पर परखा जाए। यहां जिसे बादशाह मुक़र्रर किया गया उसे क़द के तूल या'नी लम्बाई की वज्ह से त़ालूत का नाम दिया गया। येह बिन्यामीन बिन ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से थे।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ ع ۳۲ ۱۲
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۟ۧ ﴿۲۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से उन के नबी ने फ़रमाया उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़ हारून के तर्के की उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते, बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : उस की बादशाही की निशानी येह है कि तुम्हारे पास वोह ताबूत आ जाएगा जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़ हारून की छोड़ी हुई चीज़ों का बक़िय्या है, फ़िरिश्ते उसे उठाए हुए होंगे। बेशक इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो।

﴿اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖ : **बेशक उस की बादशाही की निशानी येह है।**﴾ बनी इसराईल ने चूंकि त़ालूत की बादशाहत पर कोई निशानी मांगी थी इस पर हुक्मे इलाही से ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया कि त़ालूत की बादशाही की निशानी येह है कि तुम्हारे पास तुम्हारा वोह मशहूरो मा'रूफ़ बा बरकत ताबूत आ जाएगा जिस से तुम्हें तस्कीन मिलती थी और जिस में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तबर्रुकात थे। येह ताबूत **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया था, इस में तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्वीरें थीं, उन के मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हु़ज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस घर की तस्वीर एक सुर्ख़ याकूत में थी जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ की ह़ालत में क़ियाम में हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्द गिर्द आप के सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم मौजूद हैं। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इन तमाम तस्वीरों को देखा, येह सन्दूक़ नस्ल दर नस्ल मुन्तक़िल होता हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तक पहुंचा, आप इस में तौरैत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी, चुनान्चे उस ताबूत में तौरैत की तख़्तियों के टुकड़े भी थे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़सा और आप के कपड़े और आप की ना'लैने शरीफ़ैन और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इ़मामा और उन का अ़सा और थोड़ा सा मन्न जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जंग के मवाक़ेअ़ पर इस सन्दूक़ को आगे रखते थे, इस से बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द येह ताबूत बनी इसराईल में चलता आया, जब उन्हें कोई मुश्किल दरपेश होती वोह इस ताबूत को सामने रख कर दुआ़एं करते और काम्याब होते, दुश्मनों के मुक़ाबले में इस की बरकत से फ़त्ह़ पाते। जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन की बद अ़मली बहुत बढ़ गई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर अ़मालिक़ा को मुसल्लत़ किया तो वोह इन से ताबूत छीन कर ले गए और उस को नजिस और गन्दे मक़ामात में रखा और उस की बे ह़ुरमती की और इन गुस्ताख़ियों की वज्ह से अ़मालिक़ा के लोग त़रह़ त़रह़ के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला हो गए, उन की पांच बस्तियां हलाक हो गईं और उन्हें यक़ीन हो गया कि ताबूत की तौहीन व बे अदबी ही इन की बरबादी का बाइ़स है चुनान्चे उन्हों ने ताबूत एक बैलगाड़ी पर रख कर बैलों को छोड़ दिया और फ़िरिश्ते उसे बनी इसराईल के सामने त़ालूत के पास लाए और चूंकि इस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिये त़ालूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था लिहाज़ा बनी इसराईल ने येह देख कर त़ालूत की बादशाही को तस्लीम कर लिया और बिला ताख़ीर जिहाद के लिये आमादा हो गए क्यूं कि ताबूत के आने से उन्हें अपनी फ़त्ह़ का

www.dawateislami.net

यक़ीन हो गया। त़ालूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़ार जवान मुन्तख़ब किये जिन में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी थे।[1]

त़ालूत के पास ताबूते सकीना आने वाले वाक़िए़ से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस वाक़िए़ से कई मसाइल मा'लूम हुए :

(1)...... बुज़ुर्गों के तबर्रुकात का ए'ज़ाज़ो एह़तिराम लाज़िम है, इन की बरकत से दुआएं क़बूल होती हैं और ह़ाजतें पूरी होती हैं।

(2)...... तबर्रुकात की ता'ज़ीम गुज़श्ता अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से चलती आ रही है। सूरए यूसुफ़ में भी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कुरते की बरकत से ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आंखों की रोशनी दुरुस्त होने का वाक़िआ़ मज़्कूर है।

(3)...... तबर्रुकात की बे अदबी व गुस्ताख़ी गुमराह लोगों का त़रीक़ा है और बरबादी का सबब है।

(4)...... जब तबर्रुकात की गुस्ताख़ी गुमराही और तबाही है तो जिन हस्तियों के तबर्रुकात हों उन की बे अदबी और गुस्ताख़ी किस क़दर संगीन और ख़त़रनाक होगी।

(5)...... **अल्लाह** तआ़ला के प्यारों से निस्बत रखने वाली हर चीज़ बा बरकत होती है जैसे ताबूत में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ना'लैने शरीफ़ैन या'नी पाउं में पहनने के जोड़े भी बरकत का ज़रीआ़ थे। याद रहे कि मज़्कूरा बाला ताबूत में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जो तस्वीरें थीं वोह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आई थीं।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ
شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْۤ اِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

1......جلالين، البقرة، تحت الآية: ۲۴۸، ص۳۸، جمل، البقرة، تحت الآية: ۲۴۸، ۱/۳۰۴، خازن، البقرة، تحت الآية: ۲۴۸، ۱/۱۸۷-۱۸۹، مدارك، البقرة، تحت الآية: ۲۴۸، ص۱۲۹، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

هُوَ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْیَوْمَ بِجَالُوْتَ وَ جُنُوْدِهٖؕ
قَالَ الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِیْلَةٍ غَلَبَتْ
فِئَةً كَثِیْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِؕ وَ اللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَ لَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ
وَ جُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَؕ ﴿۲۵۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब त़ालूत लश्करों को ले कर शह्र से जुदा हुवा बोला बेशक **अल्लाह** तुम्हें एक नह्र से आज़्माने वाला है तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं और जो न पिये वोह मेरा है मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले तो सब ने उस से पिया मगर थोड़ों ने फिर जब त़ालूत और उस के साथ के मुसल्मान नह्र के पार गए बोले हम में आज त़ाक़त नहीं जालूत और उस के लश्करों की बोले वोह जिन्हें **अल्लाह** से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़ियादा गुरौह पर **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह** साबिरों के साथ है। फिर जब सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे पाउं जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब त़ालूत लश्करों को ले कर शह्र से जुदा हुवा तो उस ने कहा : बेशक **अल्लाह** तुम्हें एक नह्र के ज़रीए़ आज़्माने वाला है तो जो उस नह्र से पानी पियेगा वोह मेरा नहीं है और जो न पियेगा वोह मेरा है सिवाए उस के जो एक चुल्लू अपने हाथ से भर ले तो उन में से थोड़े से लोगों के इ़लावा सब ने उस नह्र से पानी पी लिया फिर जब त़ालूत और उस के साथ वाले मुसल्मान नह्र से पार हो गए तो उन्हों ने कहा : हम में आज जालूत और उस के लश्करों के साथ मुक़ाबले की त़ाक़त नहीं है। (लेकिन) जो **अल्लाह** से मिलने का यक़ीन रखते थे उन्हों ने कहा : बहुत दफ़्आ़ छोटी जमाअ़त **अल्लाह** के हुक्म से बड़ी जमाअ़त पर ग़ालिब आई है और **अल्लाह** सब्र करने वालों के साथ है। फिर जब वोह जालूत और उस के लश्करों के सामने आए तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब ! हम पर सब्र डाल दे और हमें साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमा और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

www.dawateislami.net

﴿فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ﴾ **: फिर जब त़ालूत लश्करों को ले कर शहर से जुदा हुवा ।** अब जिस जिहाद का तज़्किरा चलता आ रहा है उस के वाक़िआत का बयान है। त़ालूत अपने लश्कर को ले कर बैतुल मुक़द्दस से रवाना हुवा चूंकि बनी इसराईल का येह सफ़रे जिहाद सख़्त गरमी में था, लिहाज़ा जब गरमी की वज्ह से उन मुजाहिदीन को सख़्त प्यास लगी तो त़ालूत ने उन्हें ख़बर दी कि अन्क़रीब एक नहर आएगी मगर येह तुम्हारे इम्तिह़ान का वक़्त है उस में से पानी न पीना, त़ालूत येह सब कुछ ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वह़ी की बिना पर कह रहे थे। चुनान्चे कहा कि उस नहर से पेट भर कर पानी न पीना क्यूं कि जो इस नहर से ज़ियादा पानी पियेगा वोह मेरी जमाअ़त में नहीं रहेगा क्यूं कि येह उन के लिये इम्तिह़ान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि शदीद प्यास के वक़्त जो हुक्म की ता'मील पर साबित क़दम रहेगा वोह आयिन्दा भी साबित क़दम रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़्लूब हो कर ना फ़रमानी करेगा वोह आयिन्दा की सख़्तियों को कैसे बरदाश्त करेगा। सिर्फ़ चुल्लू भर चन्द घूंट पी लेने की इजाज़त थी, सेर हो कर पीना मन्अ़ था। फिर जब वोह नहर आ गई तो लोगों की अक्सरिय्यत इम्तिह़ान में नाकाम हो गई और उन्हों ने जी भर कर पानी पिया, सिर्फ़ तीन सो तेरह अफ़राद साबित क़दम रहे, उन्हों ने सब्र किया और उन्हों ने एक चुल्लू पर गुज़ारा कर लिया, इस से उन के दिल और ईमान को क़ुव्वत ह़ासिल हुई और वोह सलामती से नहर से गुज़र गए जब कि जिन्हों ने ख़ूब पिया था उन के होंट सियाह हो गए, उन की प्यास और बढ़ गई और वोह बुज़दिल हो गए और जब उन्हों ने जालूत के लश्कर की कसरत व त़ाक़त को देखा तो कहने लगे कि आज तो हम इन जालूत और उस के लश्कर के साथ नहीं लड़ सकते, लेकिन इन लोगों के बर अ़क्स लिक़ाए रब्बानी और रिज़ाए इलाही के मुश्ताक़ बन्दों ने अ़र्ज़ की, कि ऐसा तो कितनी मरतबा हुवा कि छोटा गुरौह अपने से बड़े गुरौह पर **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ग़ालिब आ जाता है, **अल्लाह** तआ़ला तो सब्र करने वालों के साथ है। चुनान्चे फिर जब लश्कर आमने सामने आए तो लश्करे मोमिनीन के साबित क़दम मुजाहिदों ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि ऐ **अल्लाह**! हमें दुश्मन के मुक़ाबले में मैदाने जंग में सब्र की तौफ़ीक़ दे और हमें साबित क़दमी नसीब फ़रमा और काफ़िरों के मुक़ाबले में हमें अपनी ह़िमायतो नुसरत अ़त़ा फ़रमा।[1]

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٤٩، ١/١٨٩-١٩٠.

www.dawateislami.net

فَهَزَمُوهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۟ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ
لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हों ने उन को भगा दिया **अल्लाह** के हुक्म से, और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को और **अल्लाह** ने उसे सल्तनत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर **अल्लाह** सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन्हों ने **अल्लाह** के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और दावूद ने जालूत को क़त्ल कर दिया और **अल्लाह** ने उसे सल्तनत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखा दिया और अगर **अल्लाह** लोगों में एक के ज़रीए दूसरे को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर **अल्लाह** सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है।

﴿فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ : **तो उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया।**﴾ जब दोनों लश्कर मैदाने जंग में आमने सामने हुए तो जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबला करने वाला त़लब किया। वोह उस की क़ुव्वतो जसामत को देख कर घबरा गए क्यूं कि वोह बड़ा जाबिर, क़वी, शहज़ोर, अ़ज़ीमुल जुस्सा और क़दआवर था। त़ालूत ने अपने लश्कर में ए'लान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उस के निकाह़ में दे दूंगा और आधा मुल्क उसे दे दूंगा मगर किसी ने इस का जवाब न दिया। त़ालूत ने ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया कि बारगाहे इलाही में दुआ़ करें। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की तो बताया गया कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जालूत को क़त्ल करेंगे। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिद "ईशा" त़ालूत के लश्कर में थे और उन के साथ उन के तमाम फ़रज़न्द भी थे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन में सब से छोटे थे और बीमार थे, रंग ज़र्द था और बकरियां चराया करते थे। जब त़ालूत ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आप के निकाह़ में दे दूंगा और आधा मुल्क आप को पेश कर दूंगा

www.dawateislami.net

तो आप ने इस पेशकश को क़बूल फ़रमा लिया और जालूत की त़रफ़ रवाना हो गए। लड़ाई की सफ़ें बंध गईं और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने दस्ते मुबारक में गोफन या'नी पथ्थर फेंकने वाली रस्सी ले कर जालूत के सामने आ गए। जालूत के दिल में आप को देख कर दहशत पैदा हुई मगर उस ने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आप को अपनी क़ुव्वत से मरऊ़ब करना चाहा, आप ने अपनी उस रस्सी में पथ्थर रख कर मारा वोह उस की पेशानी तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे ला कर त़ालूत के सामने डाल दिया, तमाम बनी इसराईल बड़े ख़ुश हुए और त़ालूत ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़स्बे वा'दा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आप के साथ निकाह़ कर दिया। एक मुद्दत के बा'द त़ालूत ने वफ़ात पाई और तमाम मुल्क पर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत हुई।(1)

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुकूमत और ह़िक्मत या'नी नुबुव्वत दोनों अ़त़ा फ़रमा दिये और आप को जो चाहा सिखाया, इस में ज़िरह बनाना और जानवरों का कलाम समझना दोनों शामिल हैं जैसा कि सूरए अम्बिया आयत 79, 80 में है।

त़ालूत, जालूत और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए़ से ह़ासिल होने वाला दर्स

त़ालूत व जालूत और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पूरे वाक़िए़ में बहुत से दर्स हैं :

(1)....... साबित क़दमी कम लोगों ही को नसीब होती है क्यूं कि येह बहुत अ़ज़ीम ख़ूबी है।

(2)...... जिहाद से पहले आज़्माइश कर लेना बेहतर होता है। ऐन वक़्त पर कोई बुज़दिली दिखाए तो इस का नतीजा अच्छा नहीं होता। ह़ालते अम्न में फ़ौज की तरबियत और मेह़नतो मशक़्क़त इसी मक़्सद के लिये होती है।

(3)...... येह भी मा'लूम हुवा कि किसी बड़े इम्तिह़ान से पहले छोटे इम्तिह़ान में से गुज़र लेना चाहिये इस से दिल में क़ुव्वत पैदा होती है। गर्मियों में रोज़े रखना तक्लीफ़ देह है तो हलके गर्म मौसिम में रोज़े रखते रहना चाहिये ताकि मश्क़ हो जाए। बड़ी चीज़ों पर सब्र करना मुश्किल

1 ......جمل، البقرة، تحت الآية: ۲۵۱، ۱/ ۳۰۸-۳۰۹.

www.dawateislami.net

है तो छोटी छोटी चीज़ों पर सब्र का खुद को आ़दी बनाएं, सख़ावत करने से दिल रुकता हो तो रोज़ाना थोड़ा थोड़ा माल सदक़ा करते रहें। अल ग़रज़ येह क़ुरआन का एक उसूल है जो इ़ल्मे नफ़्सियात में भरपूर त़रीक़े से इस्ति'माल होता है, इस के ज़रीए अपने सेंकड़ों मा'मूलात पर क़ाबू पाया जा सकता है।

(4)...... मोमिन को अस्बाब मुहय्या करने चाहिएं लेकिन भरोसा अपने रब तआ़ला पर ही होना चाहिये।

﴿لَفَسَدَتِ الْاَرْضُ : **तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए।**﴾ यहां जिहाद की ह़िक्मत का बयान है कि जिहाद में हज़ारों मस्लह़तें हैं, अगर घास न काटी जाए तो खेत बरबाद हो जाए, अगर ऑपरेशन के ज़रीए फ़ासिद मवाद न निकाला जाए तो बदन बिगड़ जाए, अगर चोर डाकू न पकड़े जाएं तो अम्न बरबाद हो जाए। ऐसे ही जिहाद के ज़रीए मग़रूरों, बाग़ियों और सरकशों को दबाया न जाए तो अच्छे लोग जी न सकें। काएनात में **अल्लाह** तआ़ला की तक्वीनी ह़िक्मतें जारी व सारी हैं, इन को समझना हर एक के बस में नहीं।

تِلْكَ اٰیٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَیْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۲۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम ऐ मह़बूब ! तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और तुम बेशक रसूलों में हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह **अल्लाह** की आयतें हैं जो ऐ ह़बीब ! हम आप के सामने ह़क़ के साथ पढ़ते हैं और बेशक तुम रसूलों में से हो।

﴿تِلْكَ اٰیٰتُ اللّٰهِ : **येह अल्लाह की आयतें हैं।**﴾ गुमशुदा तारीख़ी ह़ालात और उ़लूमे ग़ैबिया का अ़त़ा होना हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की दलील है कि न तो आप ने इ़ल्मे तारीख़ ह़ासिल किया और न मुअर्रिख़ीन की सोह़बत में बैठे फिर भी ऐसे दुरुस्त ह़ालात बयान फ़रमाए। इस से मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सच्चे रसूल और साह़िबे वह़ी हैं।

www.dawateislami.net

تِلْكَ الرُّسُلُ

3

www.dawateislami.net

पारह नम्बर......3

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ
بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं और पाकीज़ा रूह़ से उस की मदद की और **अल्लाह** चाहता तो उन के बा'द वाले आपस में न लड़ते बा'द इस के कि उन के पास खुली निशानियां आ चुकीं लेकिन वोह तो मुख़्तलिफ़ हो गए उन में कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया और **अल्लाह** चाहता तो वोह न लड़ते मगर **अल्लाह** जो चाहे करे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह रसूल हैं हम ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई, इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्दी अ़ता फ़रमाई और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं और पाकीज़ा रूह़ से उस की मदद की और अगर **अल्लाह** चाहता तो उन के बा'द वाले आपस में न लड़ते जब कि उन के पास खुली निशानियां आ चुकीं थीं लेकिन उन्हों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया तो उन में कोई मोमिन रहा और कोई काफ़िर हो गया और अगर **अल्लाह** चाहता तो वोह न लड़ते मगर **अल्लाह** जो चाहता है करता है।

﴿**تِلْكَ الرُّسُلُ : येह रसूल हैं।**﴾ इस आयत में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़ज़्मतो शान का बयान है और याद रहे कि नबी होने में तो तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

बराबर हैं और क़ुरआन में जहां येह आता है कि हम इन में कोई फ़र्क़ नहीं करते इस से येही मुराद होता है कि अस्ले नुबुव्वत में इन के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं अलबत्ता इन के मरातिब जुदागाना हैं, ख़ुसाइसो कमालात में फ़र्क़ है, इन के दरजात मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ बा'ज़ से आ'ला हैं और हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से आ'ला हैं, येही इस आयत का मज़्मून है और इसी पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है।(1)

यहां आयत में बा'ज़ को बा'ज़ से अफ़्ज़ल फ़रमाया गया, इस से मा'लूम हुवा कि यूं नहीं कहना चाहिये कि बा'ज़ बा'ज़ से अदना हैं कि येह अदब के मुताबिक़ नहीं।

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल बयान करने में एहतियात

जब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बाहमी फ़ज़ाइल बयान किये जाएं तो सिर्फ़ वोह फ़ज़ाइल बयान करें जो क़ुरआने मजीद, अहादीसे मुबारका या औलिया व मुहक़्क़िक़ उ़लमा से साबित हों, अपनी त़रफ़ से घड़ कर कोई फ़ज़ीलत बयान न की जाए और उन फ़ज़ाइल को भी इस तरह बयान न किया जाए जिस से مَعَاذَ اللّٰہ किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام की तह़क़ीर का पहलू निकलता हो।

तीन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल

इस आयत में जुम्ला अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में से बतौरे ख़ास तीन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया गया। एक ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं जिन से **अल्लाह** तआ़ला ने कोहे तूर पर बिला वासित़ा कलाम फ़रमाया जब कि येही शरफ़ सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज में ह़ासिल हुवा। दूसरे नबी जिन का इस आयत में तज़्किरा है वोह ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं जिन्हें रोशन निशानियां अ़त़ा हुईं, जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरुस्त करना, मिट्टी से परिन्दा बनाना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरा, नीज़ रूहुल क़ुदुस या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام के ज़रीए आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ताईद की गई जो हमेशा आप के साथ रहते थे। तीसरी वोह हस्ती है जिन के बारे में फ़रमाया कि किसी को हम ने दरजों बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाई वोह हमारे आक़ा व मौला, मल्जा व मावा, ह़ुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं कि आप को कसीर

(1) ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۵۳، ۱/۱۹۳، مدارک، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۵۳، ص ۱۳۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

दरजात के साथ तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई, इस अ़क़ीदे पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है और येह अ़क़ीदा ब कसरत अह़ादीस से साबित है। इस आयत में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस रिफ़्अ़ते मर्तबा का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह़ न की गई इस से भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बुलन्दिये शान का इज़्हार मक़्सूद है कि ज़ाते वाला की येह शान है कि जब तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत का बयान किया जाए तो सिवाए ज़ाते अक़्दस के येह वस्फ़ किसी पर सादिक़ ही न आए और किसी और त़रफ़ गुमान ही न जाए, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वोह ख़साइसो कमालात जिन में आप तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर फ़ाइक़ो अफ़्ज़ल हैं और उन में आप का कोई शरीक नहीं, बे शुमार हैं क्यूं कि कुरआने करीम में येह इर्शाद हुवा है कि दरजों बुलन्द किया और इन दरजों का कोई शुमार कुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाया गया तो अब इन दरजों की कौन ह़द लगा सकता है? उन बे शुमार ख़साइस में से बा'ज़ का इज्माली और मुख़्तसर बयान येह है कि आप की रिसालत आ़म्मा है या'नी तमाम काएनात आप की उम्मत है, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ! हम ने आप को तमाम लोगों के लिये ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है।

दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया :

لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ताकि वोह तमाम जहान वालों को डर सुनाने वाला हो।

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इर्शाद हुवा : ''اُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلْقِ كَآفَّةً'' मैं (**अल्लाह** तआ़ला की) तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ (रसूल बना कर) भेजा गया हूं।(3)

नीज़ आप पर नुबुव्वत ख़त्म की गई, कुरआने पाक में आप को خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ फ़रमाया गया।(4)

ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : ''خُتِمَ بِیَ النَّبِیُّوْنَ'' मुझ पर नुबुव्वत ख़त्म कर दी गई।(5)

1 ......سبا: ۲۸.
2 ......فرقان: ۱.
3 ......مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، ص۲٦٦، الحديث: ٥(٥٢٣).
4 ......احزاب: ٤٠.
5 ......مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، ص۲٦٦، الحديث: ٥(٥٢٣).

www.dawateislami.net

नीज़ आप को तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए गए, आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़्ज़ल किया गया, हौज़े कौसर, मक़ामे महमूद, शफ़ाअ़ते कुब्रा आप को अ़ता हुई, शबे मे'राज ख़ास क़ुर्बे इलाही आप को मिला, इल्मी व अ़मली कमालात में आप को सब से आ'ला किया और इस के इलावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को अ़ता हुए।(1)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत अपनी किताब "**تَجَلِّيُ الْيَقِين بِاَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِين** (यक़ीन का इज़्हार इस बात के साथ कि हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम रसूलों के सरदार हैं)" में दस आयतों और एक सो हदीसों से साबित की है। येह फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में मौजूद है, इस का मुतालआ फ़रमाएं आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार ताजदारों का आक़ा हमारा नबी

﴾**وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ** : **और अगर अल्लाह चाहता**।﴿ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात के बा'द भी उन की उम्मतें ईमान व कुफ़्र में मुख़्तलिफ़ रहीं, येह न हुवा कि तमाम उम्मत मुतीओ फ़रमां बरदार हो जाती, येह **अल्लाह** तआला का निज़ामे हिक्मत है। अगर वोह चाहता तो कोई भी आपस में न लड़ता लेकिन **अल्लाह** तआला जो चाहता है करता है, उस के मुल्क में उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कोई कुछ नहीं कर सकता और येही ख़ुदा की शान है। हमें सिर्फ़ येह हुक्म है कि **अल्लाह** तआला के हुक्म पर सरे तस्लीम ख़म करें और जो उस ने फ़रमाया है उस के मुताबिक़ अ़मल करें।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۴﴾

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٢٥٣، ص ١٣٠-١٣١، جمل، البقرة، تحت الآية: ٢٥٣، ٣١٠/١، خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٥٣، ١٩٣/١-١٩٤، بيضاوى، البقرة، تحت الآية: ٢٥٣، ٥٤٩/١-٥٥٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न ख़रीद फ़रोख़्त है, न काफ़िरों के लिये दोस्ती, न शफ़ाअ़त और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से **अल्लाह** की राह में उस दिन के आने से पहले ख़र्च कर लो जिस में न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी और न काफ़िरों के लिये दोस्ती और न शफ़ाअ़त होगी और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

﴾أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَٰكُمْ﴿ : **हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से अल्लाह की राह में ख़र्च कर लो।** फ़िक्रे आख़िरत देते हुए इर्शाद फ़रमाया जा रहा है कि क़ियामत के आने से पहले पहले राहे ख़ुदा में **अल्लाह** तआ़ला का दिया हुवा माल ख़र्च कर लो। क़ियामत का दिन बड़ी हैबत वाला है, उस दिन माल किसी को भी फ़ाएदा न देगा और दुन्यवी दोस्तियां भी बेकार होंगी बल्कि बाप बेटे भी एक दूसरे से जान छुड़ा रहे होंगे और काफ़िरों को किसी की सिफ़ारिश काम न देगी और न दुन्यवी अन्दाज़ में कोई किसी की सिफ़ारिश कर सकेगा। सिर्फ़ इज़्ने इलाही से **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दे शफ़ाअ़त करेंगे जैसा कि अगली आयत या'नी आयतुल कुरसी में आ रहा है और माल का फ़ाएदा भी आख़िरत में उसी सूरत में है जब दुन्या में उसे नेक कामों में ख़र्च किया हो और दोस्तियों में से भी नेक लोगों की दोस्तियां काम आएंगी जैसा कि सूरए ज़ुख़रुफ़ में है :

اَلْاَخِلَّآءُ یَوْمَىٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِیْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : परहेज़ गारों के इलावा उस दिन गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे।

﴾وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ﴿ : **और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।** ज़ुल्म के मा'ना हैं किसी चीज़ को ग़लत़ जगह इस्ति'माल करना। काफ़िरों का ईमान की जगह कुफ़्र और त़ाअ़त की जगह मा'सियत और शुक्र की जगह नाशुक्री को इख़्तियार करना इन का ज़ुल्म है और चूंकि यहां ज़ुल्म का सब से बदतर दरजा मुराद है इसी लिये फ़रमाया कि काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ

(1) ......زخرف:٦٧.

www.dawateislami.net

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुरसी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं इन की निगहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ख़ुद ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में सब उसी का है। कौन है जो उस के हां उस की इजाज़त के बिग़ैर सिफ़ारिश करे ? वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है और लोग उस के इल्म में से उतना ही हासिल कर सकते हैं जितना वोह चाहे, उस की कुरसी आस्मान और ज़मीन को अपनी वुस्अ़त में लिये हुए है और इन की हिफ़ाज़त उसे थका नहीं सकती और वोही बुलन्द शान वाला, अ़ज़मत वाला है।

﴿اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ﴾ **: अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की उलूहिय्यत और उस की तौह़ीद का बयान है और इस आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला वाजिबुल वुजूद और आ़लम को ईजाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला है, उसे न नींद आती है और न ऊंघ क्यूं कि येह चीज़ें ऐ़ब हैं और **अल्लाह** तआ़ला नक़्स व ऐ़ब से पाक है। आस्मानों और ज़मीन में मौजूद हर चीज़ का वोही मालिक है और सारी काएनात में उसी का हुक्म चलता है तो जब सारा जहान उस की मिल्क है तो कौन उस का शरीक हो सकता है, मुश्रिकीन या तो सितारों और सूरज को पूजते हैं जो आस्मानों में हैं या दरियाओं,

www.dawateislami.net

पहाड़ों, पथ्थरों, दरख़्तों, जानवरों, आग वग़ैरा की पूजा करते हैं जो ज़मीन में हैं तो जब आस्मान व ज़मीन की हर चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की मिल्क है तो येह चीज़ें कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकती हैं और मुश्रिकीन जो येह गुमान करते हैं कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे तो वोह जान लें कि कुफ़्फ़ार के लिये कोई शफ़ाअ़त नहीं। **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर इजाज़त याफ़्तगान हज़रात के सिवा कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इजाज़त वाले हज़रात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, मलाएका عَلَيْهِمُ السَّلَام, औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم और मोमिनीन हैं। **अल्लाह** तआ़ला हर चीज़ का इ़ल्म रखता है ख़्वाह उस का तअ़ल्लुक़ लोगों से मा क़ब्ल का हो या मा बा'द का, उमूरे दुन्या का हो या उमूरे आख़िरत का। **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म से किसी को कुछ नहीं मिल सकता जब तक वोह न चाहे और वोह अ़त़ा न फ़रमाए। ज़ाती इ़ल्म उसी का है और उस के देने से किसी को अ़त़ाई इ़ल्म हो सकता है जैसे वोह अपनी मशिय्यत से लोगों को असरारे काएनात पर और अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ैब पर मुत्तलअ़ फ़रमाता है। **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत बे निहायत है।(1)

तम्बीह : इस आयत में इलाहिय्यात के आ'ला मसाइल का बयान है, जितना इस में ग़ौर करते जाएं **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत और उस के बारे में अ़क़ाइद उतना ही वाज़ेह़ होते जाएंगे।

आयतुल कुरसी के फ़ज़ाइल

इस आयत को आयतुल कुरसी कहते हैं, अह़ादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं, उन में से 4 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... आयतुल कुरसी कुरआने मजीद की सब से अ़ज़ीम आयत है।(2)

(2)...... जो सोते वक़्त आयतुल कुरसी पढ़े तो सुब्ह़ तक **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा और शैत़ान उस के क़रीब न आ सकेगा।(3)

(3, 4)...... नमाज़ों के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ने पर जन्नत की बिशारत है। रात को सोते वक़्त पढ़ने पर अपने और पड़ोसियों के घरों की ह़िफ़ाज़त की बिशारत है।(4)

---

(1) ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٥٥، ١٩٦/١.

(2) ......مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضل سورة الكهف وآية الكرسى، ص٤٠٥، الحديث: ٢٥٨(٨١٠).

(3) ......بخارى، كتاب فضائل القرآن، باب فضل سورة البقرة، ٤٠٥/٣، الحديث: ٥٠١٠.

(4) ......شعب الايمان، التاسع عشر من شعب الايمان، فصل فى فضائل السور والآيات، ٤٥٨/٢، الحديث: ٢٣٩٥.

www.dawateislami.net

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قف قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ یُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और **अल्लाह** पर ईमान लाए उस ने बड़ी मोह़कम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : दीन में कोई ज़बर दस्ती नहीं, बेशक हिदायत की राह गुमराही से ख़ूब जुदा हो गई है तो जो शैतान को न माने और **अल्लाह** पर ईमान लाए उस ने बड़ा मज़बूत सहारा थाम लिया जिस सहारे को कभी खुलना नहीं और **अल्लाह** सुनने वाला, जानने वाला है।

﴿لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ : **दीन में कोई ज़बर दस्ती नहीं।**﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि जो शैतान का इन्कार करे और **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाए तो उस ने बड़ा मज़बूत सहारा थाम लिया और येह टूटने वाला नहीं इल्ला येह कि बन्दा ख़ुद ही इसे छोड़ दे।

आयत "لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ" से मा'लूम होने वाले अह़काम

(1)...... सिफ़ाते इलाहिय्यह के बा'द "لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ" फ़रमाने में येह इशारा है कि अब अ़क़्ल मन्द आदमी के लिये क़बूले ह़क़ में ताख़ीर करने की कोई वज्ह बाक़ी नहीं रही। किसी काफ़िर को जब्रन मुसल्मान बनाना जाइज़ नहीं मगर मुसल्मान को जब्रन मुसल्मान रखना ज़रूरी है क्यूं कि येह दीने इस्लाम की तौहीन और दूसरों के लिये बग़ावत का रास्ता है जिसे बन्द करना ज़रूरी है, लिहाज़ा किसी मुसल्मान को मुरतद होने की इजाज़त नहीं दी जा सकती या तो वोह इस्लाम लाए या उसे क़त्ल किया जाएगा। **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल के मुरतद्दीन से फ़रमाया था :

فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ (1) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** अपने आप को क़त्ल के लिये पेश कर दो।

(1)......بقرہ: ٥٤.

www.dawateislami.net

(2)...... इस आयत में "कुफ़्र" का लफ़्ज़ लुग़वी मा'ना में है या'नी इन्कार करना। इस से मा'लूम हुवा कि ईमान के लिये ज़रूरी है काफ़िर पहले अपने कुफ़्र से तौबा करे और बेज़ार हो, इस के बा'द ईमान लाना सह़ीह़ होता है। अगर कोई मुरतद हो जाए तो वोह भी सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेने या मुसल्मानों वाला कोई दूसरा काम कर लेने से मुसल्मान न होगा जब तक अपने उस इरतिदाद से तौबा न करे।

(3)...... इस आयत में त़ाग़ूत से बचने का जो फ़रमाया गया है, इस से मा'लूम हुवा कि इस्लाम पर मज़बूत़ी से वोह ही क़ाइम रह सकता है जो बेदीनों की सोह़बत, उन की उल्फ़त, उन की किताबें देखने, उन के वा'ज़ सुनने से दूर रहे और जो अपने ईमान की रस्सी पर ख़ुद ही छुरियां चलाएगा उस की रस्सी का कटने से बचना मुश्किल है।

اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬ؕ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـٴُـهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۠(۲۵۷) ع

رکوع ۲ / ۳۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह वाली है मुसल्मानों का इन्हें अंधेरियों से नूर की त़रफ़ निकालता है और काफ़िरों के ह़िमायती शैत़ान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरियों की त़रफ़ निकालते हैं येही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह मुसल्मानों का वाली है इन्हें अंधेरों से नूर की त़रफ़ निकालता है और जो काफ़िर हैं उन के ह़िमायती शैत़ान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरों की त़रफ़ निकालते हैं। येही लोग दोज़ख़ वाले हैं, येह हमेशा उस में रहेंगे।

﴿اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: अल्लाह मुसल्मानों का वाली है।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला मोमिनों का दोस्त है कि इन्हें कुफ़्रो ज़लालत की तारीकियों से ईमान व हिदायत की रोशनी की त़रफ़ ले जाता है, इन्हें अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सालिह़ीन के त़रीक़े की त़रफ़ लाता है जब कि काफ़िरों का दोस्त शैत़ान है जो उन्हें फ़ित़्रते सह़ीह़ा की रोशनी

www.dawateislami.net

से कुफ़्र की तारीकियों की तरफ़ ले जाता है। हक़ का रास्ता एक है और बातिल के बहुत सारे रास्ते हैं, इस लिये यहां "नूर" को वाहिद और "ज़ुलुमात" को जम्अ़ ज़िक्र किया गया।

नूर की तरफ़ जाने का सब से बड़ा ज़रीआ

याद रहे कि मोमिनों के नूर की तरफ़ जाने का सब से बड़ा ज़रीआ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं चुनान्चे सूरए इब्राहीम आयत नम्बर **1** में **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : हम ने आप की तरफ़ किताब नाज़िल फ़रमाई "لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ" ताकि आप लोगों को तारीकियों से नूर की तरफ़ निकालें।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۚ﴿۲۵۸﴾ وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में इस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब से तू उस को पश्चिम से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हबीब ! क्या तुम ने उस को न देखा जिस ने इब्राहीम से उस के रब के बारे में इस बिना पर झगड़ा किया कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी है, जब इब्राहीम ने फ़रमाया : मेरा रब वोह है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है। उस ने कहा : मैं भी ज़िन्दगी देता हूं और मौत देता हूं। इब्राहीम ने फ़रमाया : तो **अल्लाह** सूरज को मशरिक़ से लाता है पस तू उसे मग़रिब से ले आ। तो उस काफ़िर के होश उड़ गए और **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

www.dawateislami.net

﴿حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ﴾ : **इब्राहीम से उस के रब के बारे में झगड़ा किया ।** गुज़श्ता आयत में नूर और तारीकी वालों का बयान हुवा था अब उन्हीं की मिसाल बयान की जा रही है। नूर वालों के पेश्वा सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام थे और तारीकी वालों का पेश्वा नमरूद था। नमरूद को **अल्लाह** तआला ने अ़ज़ीम सल्त़नत अ़त़ा फ़रमाई लेकिन उस ने इस पर शुक्रो त़ाअ़त की बजाए तकब्बुरो गुरूर और सरकशी का रास्ता इख़्तियार किया ह़त्ता कि अपनी रबूबिय्यत या'नी रब होने का दा'वा करने लगा। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला येही है।

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और नमरूद

जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आग में डाले जाने से पहले या बा'द उसे तौह़ीद की दा'वत दी तो वोह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिस की त़रफ़ तुम हमें बुलाते हो ? इस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जवाब दिया कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ वोह है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है या'नी अज्साम में मौत व ह़यात पैदा करता है। ख़ुदा न पहचानने वाले के लिये येह बेहतरीन रहनुमाई थी और इस में बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उस के वुजूद की गवाही है कि तू एक बेजान नुत़्फ़ा था जिसे उस करीम ने इन्सानी सूरत दी और ह़यात अ़त़ा फ़रमाई नीज़ मेरा ख़ुदा वोह है जो ज़िन्दगी के बा'द फिर ज़िन्दा अज्साम को मौत देता है। उस की क़ुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व ह़यात में मौजूद है लिहाज़ा उस ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के वुजूद से बे ख़बर रहना कमाल दरजे की जहालतो ह़माक़त और इन्तिहाई बद नसीबी है। येह दलील ऐसी ज़बर दस्त थी कि इस का जवाब नमरूद से बन न पड़ा और इस ख़याल से कि मज्मअ़ के सामने इस को ला जवाब और शरमिन्दा होना पड़ता है उस ने ख़्वाह म ख़्वाह की बह़्स शुरूअ़ कर दी चुनान्चे नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया उन में से एक को क़त्ल कर दिया और दूसरे को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता और मौत देता हूं या'नी किसी को गिरिफ़्तार कर के छोड़ देना उस को ज़िन्दा करना है, येह उस की निहायत अह़मक़ाना बात थी, कहां क़त्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व ह़यात पैदा करना ? क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आ़जिज़ रहना और बजाए इस के ज़िन्दा को छोड़ देने को "ज़िन्दा करना" कहना ही उस की ज़िल्लत के लिये काफ़ी था, अ़क़्लो शुऊ़र रखने वालों पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो दलील व हुज्जत ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ाइम फ़रमाई वोह हर शको शुबे को काट देने वाली है और इस का जवाब मुम्किन नहीं लेकिन चूंकि नमरूद ने

www.dawateislami.net

शर्म मिटाने के लिये कुछ न कुछ जवाब दे ही दिया था अगर्चे वोह सरासर बाति़ल था लिहाज़ा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व ह़यात का पैदा करना तो तेरी क़ुदरत में नहीं, ऐ रबूबिय्यत के झूटे दा'वेदार ! तू इस से आसान काम ही कर के दिखा और वोह येह कि एक मुतह़र्रिक जिस्म की ह़रकत को बदल दे या'नी सूरज जो मशरिक़ से तु़लूअ़ होता है उसे मग़रिब से तु़लूअ़ कर दे । येह सुन कर नमरूद हक्का बक्का रह गया और कोई जवाब न दे सका ।

अ़क़ाइद में मुनाज़रा करने का सुबूत

इस आयत से अ़क़ाइद में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है और येह सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है, अक्सर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम के मुन्किरीन से मुनाज़रा फ़रमाया, बल्कि खु़द हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी नजरान के ईसाइयों से मुनाज़रा किया, लिहाज़ा मुनाज़रा करना बुरा नहीं है बल्कि सुन्नते अम्बिया है अलबत्ता इस में जो तकब्बुरो सरकशी और ह़क़ को क़बूल न करने का पहलू दाखि़ल हो गया है वोह बुरा है और उ़लमाए किराम में से जिन्हों ने इस की मज़म्मत बयान की है वोह इसी सूरत से मुतअ़ल्लिक़ है चुनान्चे इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मश्हूर किताब ''एह़याउल उ़लूम'' में मुनाज़रे के बारे में इसी त़रह़ की चन्द अहम बातें समझाते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो मुनाज़रा ग़लबा ह़ासिल करने, दूसरों को ला जवाब कर देने, अपने फ़ज़्लो शरफ़ को ज़ाहिर करने, लोगों के सामने मुंह खोल खोल कर बातें करने, फ़ख़्रो तकब्बुर नीज़ दूसरों को ज़लील व रुस्वा करने की ग़रज़ से हो वोह **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक तमाम बुरी आ़दात का मम्बअ़ है और **अल्लाह** तआ़ला के दुश्मन शैता़न के नज़्दीक क़ाबिले ता'रीफ़ है । बाति़नी बुराइयों मसलन तकब्बुर, खु़द पसन्दी, ह़सद, बुग़्ज़, पाकबाज़ बनने और हु़ब्बे जाह वग़ैरा के साथ मुनाज़रे को वोही निस्बत है जो शराब को ज़ाहिरी बुराइयों मसलन ज़िना, इल्ज़ाम तराशी, क़त्ल और चोरी वग़ैरा के साथ है और जिस त़रह़ वोह शख़्स जिसे शराब नोशी और बे ह़याई के बाक़ी कामों का इख़्तियार दिया जाए तो वोह शराब नोशी को मा'मूली समझ कर इख़्तियार करता है, फिर वोह नशे की ह़ालत में बाक़ी बे ह़याइयों का भी मुर्तकिब हो जाता है इसी त़रह़ जिस आदमी पर दूसरों को नीचा दिखाने और मुनाज़रे में ग़ालिब आने की ख़्वाहिश ग़ालिब हो और वोह जाहो मर्तबे का त़ालिब हो तो मा'लूम होता है कि उस के दिल में तमाम ख़बासतें पोशीदा हैं और येह तमाम मज़्मूम अख़्लाक़ इस में हैजान पैदा करते हैं ।''(1)

1......احياء علوم الدين، كتاب العلم، بيان آفات المناظرة... الخ، ١/٦٩.

www.dawateislami.net

हर शख़्स मुनाज़रा न करे

याद रहे कि अ़क़ाइदो नज़रिय्यात, मा'मूलाते अहले सुन्नत और दीगर दीनी मसाइल में किसी से मुनाज़रा करना कोई इतना आसान काम नहीं कि जो चाहे, जब चाहे और जहां चाहे करना शुरूअ़ कर दे बल्कि इस के लिये बहुत ज़ियादा इल्म, मज़बूत़ ह़ाफ़िज़ा, महारत, तरबियत, ह़ाज़िर जवाबी और दीगर कई चीज़ों का होना ज़रूरी है जिन के बिग़ैर मुनाज़रा करना इन्तिहाई सख़्त जुरअत और अपनी गुमराही और उख़्रवी बरबादी से बे ख़ौफ़ी की अ़लामत है क्यूं कि ऐन मुम्किन है कि जिस से मुनाज़रा कर रहा है उस की कोई बात दिल में जम जाए और येह गुमराह हो जाए। लिहाज़ा इल्मे मुनाज़रा के माहिर उ़लमा के इलावा किसी को भी मुनाज़रे की इजाज़त नहीं। आज कल जो आ़म लोग एकआध किताब पढ़ कर दो चार तक़रीरें या मुनाज़रे सुन कर हर राह चलते से मुनाज़रा शुरूअ़ करने के दरपै हो जाते हैं येह त़र्ज़े अ़मल शरअ़न ना जाइज़ और इन्तिहाई ख़त़रनाक है। इस से बचना ज़रूरी है। अ़वाम को किसी भी सूरत मुनाज़रे और बह़सो मुबाह़से की इजाज़त नहीं। इन पर लाज़िम है कि अपने अ़क़ाइद को सह़ीह़ रखें और बह़स की जगह पर मुआ़मला उ़लमा के ह़वाले कर दें। फिर उ़लमा को भी हिदायत येह है कि किसी अहम मक़्सद व फ़ाएदे के बिग़ैर बिला ज़रूरत मुनाज़रे के मैदान में जाने से गुरेज़ करें जैसा कि आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो तमाम फ़ुनून का माहिर हो, तमाम पेच जानता हो, पूरी त़ाक़त रखता हो, तमाम हथियार पास हों उस को भी क्या ज़रूर कि ख़्वाह म ख़्वाह भेड़ियों के जंगल में जाए, हां अगर (उस माहिर आ़लिम को) ज़रूरत ही आ पड़े तो मजबूरी है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर तवक्कुल कर के इन हथियारों से काम ले।"(1)

اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ وَّ هِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَاۚ قَالَ اَنّٰى
یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَاۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗؕ
قَالَ كَمْ لَبِثْتَؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍؕ قَالَ بَلْ

(1)...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 434

www.dawateislami.net

لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ
وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ
كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝۲۵۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या उस की त़रह़ जो गुज़रा एक बस्ती पर और वोह ढई पड़ी थी अपनी छतों पर, बोला इसे क्यूंकर जिलाएगा **अल्लाह** इस की मौत के बा'द तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया, फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अ़र्ज़ की दिन भर ठहरा होउंगा या कुछ कम, फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों के वासिते़ निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं जब येह मुआ़मला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : या (क्या तुम ने) उस शख़्स को (न देखा) जिस का एक बस्ती पर गुज़र हुवा और वोह बस्ती अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी तो उस शख़्स ने कहा : **अल्लाह** इन्हें इन की मौत के बा'द कैसे ज़िन्दा करेगा ? तो **अल्लाह** ने उसे सो साल मौत की ह़ालत में रखा फिर उसे ज़िन्दा किया, (फिर उस शख़्स से) फ़रमाया : तुम यहां कितना अ़र्सा ठहरे हो ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम वक़्त ठहरा होउंगा। **अल्लाह** ने फ़रमाया : (नहीं) बल्कि तू यहां सो साल ठहरा है और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बदबूदार नहीं हुवा और अपने गधे को देख (जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह (सब) इस लिये (किया गया है) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी बना दें और इन हड्डियों को देख कि हम कैसे इन्हें उठाते (ज़िन्दा करते) हैं फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं तो जब येह मुआ़मला उस पर ज़ाहिर हो गया तो वोह बोल उठा : मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

﴿اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ﴾ **: या उस की त़रह़ जिस का गुज़र एक बस्ती पर हुवा ।** अक्सर मुफ़स्सिरीन के बक़ौल इस आयत में बयान किया गया वाक़िआ ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है और बस्ती से बैतुल मुक़द्दस मुराद है ।

ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ

जब बुख़्ते नस्सर बादशाह ने बैतुल मुक़द्दस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्लो ग़ारत गरी कर के तबाह कर डाला तो एक मरतबा ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वहां से गुज़र हुवा, आप के साथ एक बरतन खजूर और एक पियाला अंगूर का रस था और आप एक गधे पर सुवार थे, तमाम बस्ती में फिरे लेकिन किसी शख़्स को वहां न पाया, बस्ती की इमारतें गिरी हुई थीं, आप ने तअ़ज्जुब से कहा : "اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا **अल्लाह** तआ़ला इन्हें इन की मौत के बा'द कैसे ज़िन्दा करेगा ।" इस के बा'द आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी सुवारी के जानवर को वहां बांध दिया और ख़ुद आराम फ़रमाने लगे, इसी ह़ालत में आप की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया । येह सुब्ह़ के वक़्त का वाक़िआ है, इस से सत्तर बरस बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ईरान के बादशाहों में से एक बादशाह को ग़लबा दिया और वोह अपनी फ़ौजें ले कर बैतुल मुक़द्दस पहुंचा, इस को पहले से भी बेहतर त़रीक़े पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाक़ी रह गए थे वोह दोबारा यहां आ कर बैतुल मुक़द्दस और इस के गिर्दो नवाह़ में आबाद हो गए और इन की ता'दाद बढ़ती रही । इस पूरे अ़र्से में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दुन्या की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आप को न देख सका, जब आप की वफ़ात को सो साल गुज़र गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ज़िन्दा किया, पहले आंखों में जान आई, अभी तक तमाम जिस्म में जान न आई थी । बक़िय्या जिस्म आप के देखते देखते ज़िन्दा किया गया । येह वाक़िआ शाम के वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के क़रीब हुवा । **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : तुम यहां कितने दिन ठहरे ? आप ने अन्दाज़े से अ़र्ज़ किया कि एक दिन या इस से कुछ कम वक़्त । आप का ख़याल येह हुवा कि येह उसी दिन की शाम है जिस की सुब्ह़ को सोए थे । **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : तुम यहां एक सो साल ठहरे हो । अपने खाने और पानी या'नी खजूर और अंगूर के रस को देखो कि वैसा ही सह़ीह़ो सलामत बाक़ी है, उस में बू तक पैदा नहीं हुई और अपने गधे को देखो कि उस का क्या ह़ाल है, चुनान्चे आप ने देखा कि वोह मर चुका है, उस का बदन गल गया और आ'ज़ा बिखर गए हैं, सिर्फ़ सफ़ेद हड्डियां चमक रही थीं । आप की आंखों के सामने उस के आ'ज़ा जम्अ़ हुए, आ'ज़ा अपनी अपनी जगह पर आए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले फिर उस में रूह़ फूंकी गई और वोह उठ खड़ा हुवा और आवाज़

www.dawateislami.net

निकालने लगा। आप ने **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला हर शै पर क़ादिर है या'नी यक़ीन तो पहले ही था, अब ऐ़नुल यक़ीन ह़ासिल हो गया। फिर आप अपनी उस सुवारी पर सुवार हो कर अपने मह़ल्ले में तशरीफ़ लाए सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उ़म्र वोही चालीस साल की थी, कोई आप को न पहचानता था। अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे, एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिस के पाउं रह गए थे, वोह नाबीना हो गई थी, वोह आप के घर की बांदी थी और उस ने आप को देखा हुवा था, आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह उ़ज़ैर का मकान है ? उस ने कहा : हां, लेकिन उ़ज़ैर कहां, उन्हें तो ग़ाइब हुए सो साल गुज़र गए। येह कह कर वोह ख़ूब रोई। आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मैं उ़ज़ैर हूं, उस ने कहा, سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह कैसे हो सकता है ? आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे सो साल मौत की ह़ालत में रख कर फिर ज़िन्दा किया है। उस ने कहा, ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मुस्तजाबुद्दा'वात थे, जो दुआ़ करते क़बूल होती, आप दुआ़ कीजिये कि मेरी आंखें दोबारा देखना शुरूअ़ कर दें ताकि मैं अपनी आंखों से आप को देखूं। आप ने दुआ़ फ़रमाई और वोह औ़रत बीना हो गई। आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमाया, ख़ुदा के हुक्म से उठ। येह फ़रमाते ही उस के मा'ज़ूर पाउं दुरुस्त हो गए। उस ने आप को देख कर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूं कि आप बेशक ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं। वोह आप को बनी इसराईल के मह़ल्ले में ले गई, वहां एक मजलिस में आप के फ़रज़न्द थे जिन की उ़म्र एक सो अठ्ठारह साल की हो चुकी थी और आप के पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे। बुढ़िया ने मजलिस में पुकारा कि येह ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए हैं। अहले मजलिस ने उस औ़रत को झुटलाया। उस ने कहा, मुझे देखो, इन की दुआ़ से मेरी ह़ालत ठीक हो गई है। लोग उठे और आप के पास आए, आप के फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साह़िब के कन्धों के दरमियान सियाह बालों का एक हिलाल या'नी चांद था, जिस्मे मुबारक खोल कर दिखाया गया तो वोह मौजूद था, नीज़ उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्ख़ा बाक़ी न रहा था, कोई उस का जानने वाला मौजूद न था। आप ने तमाम तौरैत ज़बानी पढ़ दी। एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मा'लूम हुवा कि बुख़्ते नस्सर की सितम अंगेज़ियों के बा'द गिरिफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़्न कर दी थी उस का पता मुझे मा'लूम है उस पते पर जुस्तजू कर के तौरैत का वोह दफ़्न शुदा नुस्ख़ा निकाला गया और ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उस से मुक़ाबला किया गया तो एक ह़र्फ़ का फ़र्क़ न था।(1)

(1)......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٥٩، ١/٢٠٢-٢٠٣، جمل، البقرة، تحت الآية: ٢٥٩، ١/٣٢٥، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

منزل ۱

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰىؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْؕ قَالَ بَلٰى وَ لٰـكِنْ لِّیَطْمَىٕنَّ قَلْبِیْؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًاؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ۠(۲۶۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा, फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं, अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ हिला ले फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? **अल्लाह** ने फ़रमाया : क्या तुझे यक़ीन नहीं ? इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : यक़ीन क्यूं नहीं मगर येह (चाहता हूं) कि मेरे दिल को क़रार आ जाए। **अल्लाह** ने फ़रमाया : तो परिन्दों में से कोई चार परिन्दे पकड़ लो फिर उन्हें अपने साथ मानूस कर लो फिर उन सब का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें पुकारो तो वोह तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे और जान रखो कि **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है।

﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ : **और जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की।**﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुदरत पर दलालत करने वाला एक और वाक़िआ़ बयान किया जा रहा है, उस का ख़ुलासा दर्जे ज़ैल है :

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और चार परिन्दे

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा हुवा पड़ा था, समुन्दर का पानी चूंकि चढ़ता उतरता रहता है। चुनान्चे जब पानी चढ़ा तो मछलियों ने उस लाश को

www.dawateislami.net

खाया और जब पानी उतरा तो जंगल के दरिन्दों ने खाया और जब दरिन्दे चले गए तो परिन्दों ने खाया। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो आप को शौक़ हुवा कि आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएं कि मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा किये जाएंगे। चुनान्चे आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उन के अज्ज़ा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोटों से जम्अ़ फ़रमाएगा लेकिन मैं येह अ़जीब मन्ज़र देखने की आरज़ू रखता हूं। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपना ख़लील बनाया तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के इज़्न व इजाज़त से आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को येह बिशारत सुनाने आए। आप ने बिशारत सुन कर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द की और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि इस ख़िल्लत या'नी ख़लील बनाए जाने की निशानी क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया, दलील येह है कि **अल्लाह** तआ़ला आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा और आप के सुवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करेगा, तब आप ने येह दुआ़ की, कि ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस त़रह़ ज़िन्दा करता है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : क्या तुम्हें इस पर यक़ीन नहीं ? **अल्लाह** तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब वश्शहादह है, उसे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कमाले ईमानो यक़ीन का इ़ल्म है। इस के बा वुजूद येह सुवाल फ़रमाना कि "क्या तुझे यक़ीन नहीं ?" इस लिये है कि सामिईन को सुवाल का मक़्सद मा'लूम हो जाए और वोह जान लें कि येह सुवाल किसी शको शुबे की बिना पर न था। चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की, यक़ीन क्यूं नहीं ? लेकिन मैं चाहता हूं कि येह चीज़ आंखों से देखूं ताकि मेरे दिल को क़रार आ जाए और ख़लील बनाए जाने वाली सूरत पर मा'ना येह होंगे कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तू ने मुझे अपना ख़लील बनाया।(1)

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़्वाहिश पर हुक्मे ख़ुदावन्दी हुवा कि तुम चार परिन्दे ले लो और उन्हें अपने साथ ख़ूब मानूस कर लो फिर उन्हें ज़ब्ह़ कर के उन का क़ीमा आपस में मिला कर मुख़्तलिफ़ पहाड़ों पर रख दो और फिर उन्हें आवाज़ दो। उन में हर एक अपनी पहली वाली शक्लो सूरत में बन कर तुम्हारे पास आ जाएगा। चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चार परिन्दे लिये। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ वोह मोर, मुर्ग़, कबूतर और

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٦٠، ١/٢٠٣-٢٠٤.

www.dawateislami.net

कव्वा थे। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें ब हुक्मे इलाही ज़ब्ह़ किया, उन के पर उखाड़े और क़ीमा कर के उन के अज्ज़ा बाहम मिला दिये और उस मज्मूए़ के कई ह़िस्से कर के एक एक ह़िस्सा एक एक पहाड़ पर रख दिया और सब के सर अपने पास मह़फ़ूज़ रखे। फिर उन परिन्दों को आवाज़ दे कर बुलाया। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बुलाते ही हुक्मे इलाही से वोह अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर अपनी तरतीब से जम्अ़ हुए और परिन्दों की शक्ल बन कर अपने पाउं से दौड़ते आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और अपने अपने सरों से मिल कर बि ऐ़निही पहले की त़रह़ मुकम्मल हो गए, سُبْحٰنَ الله ।(1)

ह़ज़रते उ़ज़ैर और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त से ह़ासिल होने वाली मा'लूमात

ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त से कई चीज़ें मा'लूम होती हैं।

(1)...... **अल्लाह** तआ़ला अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़एं क़बूल फ़रमाता है।
(2)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ओं से मुर्दे भी ज़िन्दा होते हैं।
(3)...... **अल्लाह** तआ़ला अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़्वाहिशात को पूरा फ़रमाता है।
(4)...... जितना यक़ीन कामिल होता है उतना ही ईमान बढ़ जाता है।
(5)...... मुशाहदे से मा'रिफ़त में इज़ाफ़ा होता है।
(6)...... येह वाक़िआ़त **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुदरत की अ़ज़ीम दलीलें हैं।
(7)...... येह वाक़िआ़त मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की बहुत बड़ी दलील हैं।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾

1 ......تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۰، ۲/۲۲۸، الجزء الثالث.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें हर बाल में सो दाने और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन लोगों की मिसाल जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ है जिस ने सात बालियां उगाईं, हर बाली में सो दाने हैं और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है ।

﴿مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴾ **: उन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं ।** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वालों की फ़ज़ीलत एक मिसाल के ज़रीए़ बयान की जा रही है कि येह ऐसा है जैसे कोई आदमी ज़मीन में एक दाना बीज डालता है जिस से सात बालियां उगती हैं और हर बाली में सो दाने पैदा होते हैं । गोया एक दाना बीज के त़ौर पर डालने वाला सात सो गुना ज़ियादा ह़ासिल करता है, इसी त़रह़ जो शख़्स राहे ख़ुदा में ख़र्च करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे उस के इख़्लास के ए'तिबार से सात सो गुना ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और येह भी कोई ह़द नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने भरे हुए हैं और वोह करीम व जवाद है जिस के लिये चाहे उसे इस से भी ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमा दे चुनान्चे कई जगह पर इस से भी ज़ियादा नेकियों की बिशारत है जैसे पैदल ह़ज करने पर बा'ज़ रिवायतों की रू से हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां मिलती हैं ।[1]

नेकी की तमाम सूरतों में ख़र्च करना राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है

इस आयत में ख़र्च करने का मुत़्लक़न फ़रमाया गया है ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल, नेकी की तमाम सूरतों में ख़र्च करना शामिल है ख़्वाह वोह किसी ग़रीब को खाना खिलाना हो या किसी को कपड़े पहनाना, किसी ग़रीब को दवाई वग़ैरा ले कर देना हो या राशन दिलाना, किसी त़ालिबे इ़ल्म को किताब ख़रीद कर देना हो या कोई शिफ़ाख़ाना बनाना या फ़ौत शुदगान के ईसाले सवाब के लिये फ़ुक़रा व मसाकीन को तीजे, चालीसवें वग़ैरा पर खिला दिया जाए ।

﴿اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ﴾ **: दाने ने सात बालियां उगाईं ।** यहां फ़रमाया गया कि बीज के त़ौर पर डाले जाने वाले दाने ने बालियां उगाईं ह़ालां कि उगाने वाला ह़क़ीक़त में **अल्लाह** तआ़ला ही है, दाने की त़रफ़ इस की निस्बत मजाज़ी है ।

1 ......مسند البزار، مسند ابن عباس رضی اللّٰه عنهما، طاوس عن ابن عباس، ١١/٥٢، الحديث: ٤٧٤٥.

www.dawateislami.net

मजाज़ी निस्बत करना जाइज़ है

इस से मा'लूम हुवा कि मजाज़ी निस्बत करना जाइज़ है जब कि येह निस्बत करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को तसर्रुफ़ व इख़्तियार में मुस्तक़िल न समझे। इसी लिये येह कहना जाइज़ है कि येह दवा नाफ़ेअ़ है और येह मुज़िर है, येह दर्द की दाफ़ेअ़ है, मां बाप ने पाला, आ़लिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने ह़ाजत रवाई की वग़ैरा। इन सब में मजाज़ी निस्बत है और मुसल्मान के ए'तिक़ाद में फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला है बाक़ी सब वसाइल हैं।

नेक आ'माल में यक्सानियत के बा वुजूद सवाब में फ़र्क़ होता है

नीज़ येह भी याद रहे कि नेक आ'माल तो यक्सां होते हैं मगर सवाब में बा'ज़ अवक़ात बहुत फ़र्क़ होता है या तो इस लिये कि इख़्लास और हुस्ने निय्यत में फ़र्क़ होता है या ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत की वज्ह से थोड़ा अ़मल ज़ियादा सवाब का बाइ़स होता है जैसा कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना (**अल्लाह** तआ़ला की राह में) ख़र्च करे तो उस का सवाब मेरे किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के एक मुद (एक छोटी सी मिक़्दार) बल्कि आधा मुद ख़र्च करने के बराबर भी नहीं हो सकता।(1)

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی: لو کنت متخذًا خلیلاً، ۲/۵۲۲، الحدیث: ۳۶۷۳.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर अपने ख़र्च करने के बा'द न एह्सान जताते हैं और न तक्लीफ़ देते हैं उन का इन्आ़म उन के रब के पास है और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴾اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴿ **: वोह लोग जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं।** **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई, ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट ब मअ़ साज़ो सामान के पेश किये और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के तौ़र पर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, उन में से आधे अपने और अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और आधे राहे ख़ुदा में पेश कर दिये हैं। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे **अल्लाह** तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए।''(1)

﴾مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى﴿ **: न एह्सान जताएं और न तक्लीफ़ दें।** सदक़ा देने के बा'द एह्सान जतलाना और जिसे सदक़ा दिया उसे तक्लीफ़ देना ना जाइज़ व मम्नूअ़ है और इस से सदक़े का सवाब ज़ाएअ़ हो जाता है जैसा कि सूरए बक़रह आयत 264 में फ़रमाया कि एह्सान जतला कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात को बात़िल न करो। एह्सान जतलाना तो येह है कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और यूं उस का दिल मैला करें और तक्लीफ़ देना येह है कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था हम ने तेरी ख़बर गीरी की या और त़रह़ उस पर दबाव डालें।(2)

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَاۤ اَذًى ؕ وَ اللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿۲۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो और **अल्लाह** बे परवाह ह़िल्म वाला है।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٦٢، ١/٢٠٦.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٦٢، ١/٢٠٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अच्छी बात कहना और मुआफ़ कर देना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो और **अल्लाह** बे परवाह, हिल्म वाला है।

﴿قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَیْرٌ : **अच्छी बात कहना और मुआफ़ कर देना बेहतर है।**﴾ अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कही जाए और ख़ुश ख़ुलुक़ी के साथ जवाब दिया जाए जो उसे ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र किया जाए। साइल को कुछ न देने की सूरत में उस से अच्छी बात कहना और उस की ज़ियादती को मुआफ़ कर देना उस सदक़े से बेहतर है जिस के बा'द उसे आर दिलाई जाए या एहसान जताया जाए या किसी दूसरे तरीक़े से उसे कोई तक्लीफ़ पहुंचाई जाए।

﴿وَاللّٰهُ غَنِیٌّ : **और अल्लाह बे परवाह है।**﴾ आयत के आख़िर में **अल्लाह** तआला की दो सिफ़ात का बयान हुवा कि वोह बन्दों के सदक़ात से बे परवाह और गुनाहगारों को जल्द सज़ा न दे कर हिल्म फ़रमाने वाला है।(1)

अपने मा तहतों की ख़ताओं से दर गुज़र करें

इस आयत में भी हमें नसीहत है कि **अल्लाह** तआला ग़नी व बे परवाह हो कर भी हलीम है कि बन्दों के गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है और तुम तो सवाब के मोहताज हो लिहाज़ा तुम भी फ़ुक़रा व मसाकीन और अपने मा तहतों की ख़ताओं से दर गुज़र किया करो। हिल्म सुन्नते इलाहिय्यह भी है और सुन्नते मुस्तफ़विय्यह भी। سُبْحٰنَ اللّٰه ! कैसे पाकीज़ा अख़्लाक़ की कैसी नफ़ीस ता'लीम दीने इस्लाम में दी गई है। ज़ैल में मिस्कीनों और मा तहतों के बारे में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात मुलाहज़ा हों :

(1)...... हज़रते उम्मे बुजैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, एक मिस्कीन मेरे दरवाज़े पर आ कर खड़ा होता है और मेरे पास उस को देने के लिये कुछ नहीं होता (तो मैं क्या करूं)। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तेरे पास जले हुए खुर के सिवा कुछ न हो तो वोह ही उसे दे दे।"(2)

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٦٣، ١/٢٠٧.

2 ......ترمذی، كتاب الزكاة، باب ما جاء فی حق السائل، ٢/١٤٦، الحديث: ٦٦٥.

www.dawateislami.net

(2)...... ह़ज़रते अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि वोह अपने ग़ुलाम को मार रहे थे। ग़ुलाम ने कहा : मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं। उन्हों ने फिर उसे मारना शुरूअ़ कर दिया। ग़ुलाम ने कहा : मैं **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पनाह मांगता हूं। तो उन्हों ने उसे छोड़ दिया। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर इस से ज़ियादा क़ादिर है जितना तुम इस पर क़ादिर हो।'' ह़ज़रते अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर उन्हों ने उस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया।[(1)]

(3)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम में से कोई अपने ख़ादिम को मार रहा हो और वोह **अल्लाह** तआ़ला का वासित़ा दे तो उस से अपने हाथ उठा लो।''[(2)]

और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ख़िदमत गारों से कैसा सुलूक फ़रमाते थे इस की एक मिसाल मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जब ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई ख़ादिम नहीं रखा हुवा था (मेरे सौतेले वालिद) ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे ले कर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अनस समझदार लड़का है इस लिये येह आप की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ ह़ासिल करेगा। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने (दस साल तक) सफ़रो ह़ज़र में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने की सआ़दत ह़ासिल की, लेकिन जो काम मैं ने किया उस के बारे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी येह नहीं फ़रमाया कि तुम ने येह काम इस त़रह़ क्यूं किया ? और जो काम मैं ने न किया उस के बारे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी येह नहीं फ़रमाया कि तुम ने येह काम इस त़रह़ क्यूं नहीं किया ?''[(3)]

---

1 ......مسلم، کتاب الایمان والنذور، باب صحبة المماليك... الخ، ص٩٠٥، الحديث: ٣٦(١٦٥٩).

2 ......ترمذی، کتاب البرّ والصلة، باب ما جاء فی ادب الخادم، ٣٨٢/٣، الحديث: ١٩٥٧.

3 ......بخاری، کتاب الوصايا، باب استخدام اليتيم فی السفر والحضر... الخ، ٢٤٣/٢، الحديث: ٢٧٦٨.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًاؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْاؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ (۲۶۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान न लाए, तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चटान कि उस पर मिट्टी है अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे और **अल्लाह** काफ़िरों को राह नहीं देता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! एह़सान जता कर और तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदक़े बरबाद न कर दो उस शख़्स की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखलावे के लिये ख़र्च करता है और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान नहीं लाता तो उस की मिसाल ऐसी है जैसे एक चिक्ना पथ्थर हो जिस पर मिट्टी है तो उस पर ज़ोरदार बारिश पड़ी जिस ने उसे साफ़ पथ्थर कर छोड़ा, ऐसे लोग अपने कमाए हुए आ'माल से किसी चीज़ पर क़ुदरत न पाएंगे और **अल्लाह** काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।

﴿لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ : **अपने सदक़े बरबाद न कर दो।**﴾ इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐ ईमान वालो ! जिस पर ख़र्च करो उस पर एह़सान जतला कर और उसे तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदक़े का सवाब बरबाद न कर दो क्यूं कि जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ आदमी लोगों को दिखाने के लिये और अपनी वाह वाह करवाने के लिये माल ख़र्च करता है लेकिन उस का सवाब बरबाद हो जाता है इसी त़रह़ फ़क़ीर पर एह़सान जतलाने वाले और उसे तक्लीफ़ देने वाले का सवाब भी ज़ाएअ़ हो जाता है। इस की मिसाल यूं समझो कि जैसे एक चिक्ना पथ्थर हो जिस पर मिट्टी

पड़ी हुई हो, अगर उस पर ज़ोरदार बारिश हो जाए तो पथ्थर बिल्कुल साफ़ हो जाता है और उस पर मिट्टी का नामो निशान भी बाक़ी नहीं रहता। येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बात़िल होंगे क्यूं कि वोह रिज़ाए इलाही के लिये न थे या यूं कह लें कि मुनाफ़िक़ का दिल गोया पथ्थर की चटान है, उस की इ़बादात ख़ुसूसन सदक़ात और रिया की ख़ैरातें गोया वोह गर्दो ग़ुबार हैं जो चटान पर पड़ गईं, जिन में बीज की काश्त नहीं हो सकती, रब तआ़ला का इन सब को रद फ़रमा देना गोया वोह पानी है जो सब मिट्टी बहा कर ले गया और पथ्थर को वैसा ही कर गया। इस से मा'लूम होता है कि अगर सदक़ा ज़ाहिर करने से फ़क़ीर की बदनामी होती हो तो सदक़ा छुपा कर देना चाहिये कि किसी को ख़बर न हो। लिहाज़ा अगर किसी सफ़ेद पोश या मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी या आ़लिम या शैख़ को कुछ दिया जाए तो छुपा कर देना चाहिये। बा'ज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि अगर किसी को इ़ल्मे दीन सिखाया हो तो उस की जज़ा की भी बन्दे से उम्मीद न रखे और न उसे त़ा'ने दे क्यूं कि येह भी इ़ल्मी सदक़ा है।

आयत "لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से हमें येह बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... रियाकारी से आ'माल का सवाब बात़िल हो जाता है। इस के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये एह़याउल उ़लूम जिल्द **3** में से "रियाकारी का बयान" मुत़ालआ़ करें।[1]

(2)...... फ़क़ीर पर एह़सान जतलाना और उसे ईज़ा देना मम्नूअ़ है और येह भी सवाब को बात़िल कर देता है।

(3)...... काफ़िर का कोई अ़मल बारगाहे इलाही में मक़्बूल नहीं।

(4)...... जहां रियाकारी या इस त़रह़ की किसी दूसरी आफ़त का अन्देशा हो वहां छुपा कर माल ख़र्च किया जाए।

(5)...... ए'लानिया और पोशीदा दोनों त़रह़ सदक़ा देने की इजाज़त है जैसा कि सूरए बक़रह आयत **271** और **274** में सराह़त के साथ इस का बयान है, लेकिन अपनी क़ल्बी ह़ालत पर नज़र रख कर अ़मल किया जाए। अफ़्सोस कि हमारे हां रियाकारी, एह़सान जतलाना और ईज़ा देना तीनों बद आ'माल की भरमार है। मालदार पैसा ख़र्च करता है तो जब तक अपने नाम के बेनर न लगवा ले या अख़्बार में तस्वीर और ख़बर न छपवा ले उसे चैन नहीं आता, ख़ानदान

1...... अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتهم العاليه की किताब "नेकी की दा'वत" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का सफ़ह़ा 63 ता 106 का मुत़ालआ़ करना भी मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

में कोई किसी की मदद करता है तो ज़िन्दगी भर उसे दबाता रहता है, जब दिल करता है सब लोगों के सामने उसे रुस्वा कर देता है, जहां रिश्तेदार जम्अ़ होंगे वहीं अपने मदद करने का ए'लान करना शुरूअ़ कर देगा। **अल्लाह** तआ़ला ऐसों को हिदायत अ़ता फ़रमाए।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को उस बाग़ की सी है जो भूड़ पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो लोग अपने माल **अल्लाह** की ख़ुश्नूदी चाहने के लिये और अपने दिलों को साबित क़दम रखने के लिये ख़र्च करते हैं उन की मिसाल उस बाग़ की सी है जो किसी ऊंची ज़मीन पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश पड़ी तो वोह बाग़ दुगना फल लाया फिर अगर ज़ोरदार बारिश न पड़े तो हलकी सी फुवार ही काफ़ी है और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

﴿اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ : **जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं।**﴾ इस आयत में उन लोगों की मिसाल बयान की गई है जो ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही के हुसूल और अपने दिलों को इस्तिक़ामत देने के लिये इख़्लास के साथ अ़मल करते हैं कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित़्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा कम हो या ज़ियादा **अल्लाह** तआ़ला उस को बढ़ाता है। **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दिल की कैफ़िय्यत देखी जाती है न कि फ़क़त़ माल की मिक़्दार, जैसा कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे अ़मलों को देखता है।"(1)

1 ......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم وخذله... الخ، ص١٣٨٧، الحديث: ٣٤(٢٥٦٤).

www.dawateislami.net

اَیَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُۙ لَهٗ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِۙ وَ اَصَابَهُ الْكِبَرُ وَ لَهٗ ذُرِّیَّةٌ ضُعَفَآءُ ۚۖ
فَاَصَابَهَاۤ اِعْصَارٌ فِیْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ۠ (۲۶۶) ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा कि उस के पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये उस में हर क़िस्म के फलों से है और उसे बुढ़ापा आया और उस के नातुवां बच्चे हैं तो आया उस पर एक बगूला जिस में आग थी तो जल गया ऐसा ही बयान करता है **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम ध्यान लगाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम में कोई येह पसन्द करेगा कि उस के पास खजूर और अंगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नदियां बहती हों, उस के लिये उस में हर क़िस्म के फल हों और उसे बुढ़ापा आ जाए और ह़ाल येह हो कि उस के कमज़ोर व नातुवान बच्चे हों फिर उस पर एक बगूला आए जिस में आग हो तो सारा बाग़ जल जाए। **अल्लाह** तुम से इसी त़रह़ अपनी आयतें खोल कर बयान करता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र करो।

﴿اَیَوَدُّ اَحَدُكُمْ : **क्या तुम में कोई येह पसन्द करेगा।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम में कोई शख़्स येह पसन्द करेगा, मुराद येह है कि कोई येह पसन्द न करेगा क्यूं कि येह बात किसी आ़क़िल के लिये क़ाबिले क़बूल नहीं कि उस का बाग़ हो जिस में क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हों, फलों से लदा हुवा हो, वोह बाग़ फ़रह़त अंगेज़ व दिलकुशा भी हो और नाफ़ेअ़ और उ़म्दा भी, आदमी उसे अपने बुढ़ापे का सहारा समझता हो जो इन्सान की ह़ाजत का वक़्त होता है और आदमी कमाने के क़ाबिल नहीं रहता और उस बुढ़ापे में उस के छोटे छोटे बच्चे हों जो कमाने के क़ाबिल न हों और वोह परवरिश के मोह़ताज हों। अल ग़रज़ वोह वक़्त इन्तिहाई शदीद मोह़ताजी का होता है लेकिन इस बुढ़ापे और ह़ाजत के वक़्त शदीद क़िस्म की आंधी चले जिस में बगूले हों और उन बगूलों में आग हो और वोह आग आदमी के मुस्तक़्बिल के इस वाहि़द सहारे या'नी बाग़ को जला कर राख कर दे तो उस वक़्त आदमी के रन्जो ग़म और ह़स्रतो यास

www.dawateislami.net

का क्या आ़लम होगा ? **अल्लाहु अक्बर !** येही ह़ाल उस शख़्स का है जिस ने आ'माले ह़सना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रियाकारी की ग़रज़ से किये और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते ह़ाजत का वक़्त या'नी क़ियामत का दिन आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन आ'माल को ना मक़्बूल कर दे, उस वक़्त उस को कितना रन्ज और कितनी ह़सरत होगी। **अल्लाह** तआ़ला येह आयात इस लिये बयान फ़रमाता है ताकि ऐ लोगो ! तुम ग़ौरो फ़िक्र करो और समझो कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत ज़रूर आनी है तो उस आख़िरत के लिये अ़मल करो और अपने आ'माल में इख़्लास पैदा करो। **अल्लाहु अक्बर !** किस क़दर दिल दहला देने वाली मिसाल है। ऐ काश ! कि हम समझ जाएं और अपने तमाम आ'माल, नमाज़, ज़िक्रो दुरूद, तिलावत व ना'त ख़्वानी, ह़ज व उ़म्रह, ज़कात व सदक़ात वग़ैरा को रियाकारी की तबाहकारी से बचा लें और अपने आ'माल का मुह़ासबा करना शुरूअ़ कर दें।[1]

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह** बे परवाह सराहा गया है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अपनी पाक कमाइयों में से और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला है (**अल्लाह** की राह में) कुछ ख़र्च करो और ख़र्च करते हुए ख़ास नाक़िस माल (देने) का इरादा न करो ह़ालां कि (अगर वोही तुम्हें दिया जाए तो) तुम उसे चश्म पोशी किये बिग़ैर क़बूल नहीं करोगे और जान रखो कि **अल्लाह** बे परवाह, ह़म्द के लाइक़ है।

1...... रियाकारी और दीगर बातिनी अमराज़ के इलाज का ज़ेह्न पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं।

www.dawateislami.net

﴿اَنۡفِقُوۡا مِنۡ طَیِّبٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ﴾ : **अपनी पाक कमाइयों में से कुछ ख़र्च करो।** बा'ज़ लोग सदक़े में ख़राब माल दिया करते थे उन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला की राह में अपना कमाया हुवा पाकीज़ा और साफ़ सुथरा माल दिया करो नीज़ ज़मीन की पैदावार से भी राहे ख़ुदा में ख़र्च किया करो और **अल्लाह** तआ़ला की राह में नाक़िस, घटिया और रद्दी माल न दिया करो, जब तुम **अल्लाह** तआ़ला से अच्छी जज़ा चाहते हो तो उस की राह में माल भी आ'ला दरजे का दिया करो। ग़ौर करो कि जिस त़रह़ का घटिया माल तुम राहे ख़ुदा में देते हो अगर वोही माल तुम्हें दिया जाए तो क्या तुम क़बूल करोगे! पहले तो क़बूल ही न करोगे और अगर क़बूल कर भी लो तो कभी ख़ुशदिली से न लोगे बल्कि दिल में बुरा मनाते हुए लोगे तो जब अपने लिये अच्छा लेने का सोचते हो तो राहे ख़ुदा में ख़र्च किये जाने वाले के बारे में भी अच्छा ही सोचो। बहुत से लोग ख़ुद तो अच्छा इस्ति'माल करते हैं लेकिन जब राहे ख़ुदा में देना होता है तो ना क़ाबिले इस्ति'माल और घटिया क़िस्म का देते हैं। उन के लिये इस आयत में इ़ब्रत है। अगर कोई चीज़ फ़ी नफ़्सिही तो अच्छी है लेकिन आदमी को ख़ुद पसन्द नहीं तो उस के देने में कोई ह़रज नहीं अलबत्ता ह़रज वहां है जहां चीज़ अच्छी न होने की वज्ह से ना पसन्द हो।

आयत "اَنۡفِقُوۡا مِنۡ طَیِّبٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से कई मसाइल मा'लूम हुए :

(1)...... इस से कमाने की इजाज़त साबित होती है।

(2)...... आयत में नफ़्ली और फ़र्ज़ सदक़ात दोनों दाख़िल हो सकते हैं।

(3)...... अपनी कमाई से ख़ैरात करना बेहतर है क्यूं कि फ़रमाया अपनी कमाइयों से।

(4)...... माले ह़लाल से ख़ैरात किया जाए।

(5)...... सारा माल ख़ैरात न करे बल्कि कुछ अपने ख़र्च के लिये भी रखे जैसा कि "**مِمَّا**" "में से" के लफ़्ज़ से मा'लूम होता है।

(6)...... ज़मीन की पैदावार से भी राहे ख़ुदा में दिया जाए ख़्वाह वोह ग़ल्ले हों या फल नीज़ पैदावार कम हो या ज़ियादा बहर सूरत दिया जाए।

www.dawateislami.net

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैतान तुम्हें मोहताजी का अन्देशा दिलाता है ओर बे हयाई का हुक्म देता है और **अल्लाह** तुम से अपनी त़रफ़ से बख़्शिश और फ़ज़्ल का वा'दा फ़रमाता है और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है।

﴿اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ﴾ **: शैत़ान तुम्हें मोह़ताज हो जाने का अन्देशा दिलाता है।** बिग़ैर किसी दुन्यावी मफ़ाद के रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करने के फ़ज़ाइल के बयान के बा'द इस राह में पेश आने वाले सब से बड़े वस्वसे का बयान किया जा रहा है कि शैत़ान त़रह़ त़रह़ से वस्वसे दिलाता है कि अगर तुम ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो ख़ुद फ़क़ीरो नादार हो जाओगे लिहाज़ा ख़र्च न करो। येह शैत़ान की बहुत बड़ी चाल है कि **अल्लाह** तआ़ला की राह में ख़र्च करते वक़्त इस त़रह़ के अन्देशे दिलाता है ह़ालां कि जिन लोगों के दिलों में येह वस्वसा डाला जा रहा होता है वोही लोग शादी बियाह में जाइज़ व ना जाइज़ रुसूमात पर और आ़म ज़िन्दगी में बे दरेग़ ख़र्च कर रहे होते हैं, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि शैत़ान तो तुम्हें बुख़्ल व कन्जूसी की त़रफ़ बुलाता है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला तुम से वा'दा फ़रमाता है कि अगर तुम उस की राह में ख़र्च करोगे तो वोह तुम्हें अपने फ़ज़्ल और मग़्फ़िरत से नवाज़ेगा और येह भी याद रखो कि वोह पाक परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ बड़ी वुस्अ़त वाला है, वोह सदक़े से तुम्हारे माल को घटने न देगा बल्कि उस में और बरकत पैदा कर देगा।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हिक्मत देता है जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** जिसे चाहता है हिक्मत देता है और जिसे हिक्मत दी जाए तो बेशक उसे बहुत ज़ियादा भलाई मिल गई और अक़्ल वाले ही नसीहत मानते हैं।

﴿يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ : **अल्लाह जिसे चाहता है हिक्मत देता है।**﴾ हिक्मत से कुरआन, हदीस और फ़िक्ह का इल्म, तक़्वा और नुबुव्वत मुराद हो सकते हैं।[1]

क्यूं कि कुरआनो हदीस सरापा हिक्मत हैं और फ़िक्ह इसी सर चश्मए हिक्मतो हिदायत से फ़ैज़ याफ़्ता इल्म है और तक़्वा हिक्मत का तक़ाज़ा है जब कि नुबुव्वत सरासर हिक्मत है अलबत्ता येह बात क़त्ई है कि हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द अब किसी को नुबुव्वत नहीं मिलेगी।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम जो ख़र्च करो या मन्नत मानो **अल्लाह** को उस की ख़बर है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम जो ख़र्च करो या कोई नज़्र मानो **अल्लाह** उसे जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

﴿وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ : **और तुम जो ख़र्च करो।**﴾ यहां आयत में वा'दा और वईद दोनों बयान किये गए हैं क्यूं कि फ़रमाया गया कि तुम जो ख़र्च करो ख़्वाह नेकी में, ख़्वाह बदी में यूंही तुम जो नज़्र मानो, अच्छे काम की या गुनाह के काम की, उन तमाम चीज़ों को **अल्लाह** तआ़ला जानता है, तो अच्छे अ़मल, ख़र्च और नज़्र पर सवाब देगा जब कि गुनाह के अ़मल, ख़र्च और नज़्र पर सज़ा देगा।

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٢٦٩، ص١٣٩، خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٦٩، ٢١١/١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

नज़्र की ता'रीफ़ और इस के चन्द अह़काम

याद रहे कि उ़र्फ़ में हदिय्या और पेशकश को नज़्र कहते हैं जैसे किसी बड़े को कोई चीज़ पेश करें तो कहते हैं कि जनाब येह आप की नज़्र की। नज़्र की दो क़िस्में हैं :

(1)...... **नज़्रे शरई़।** शर्अ़ में नज़्र इबादत और क़ुरबते मक़्सूदा है इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र मानी तो वोह सह़ीह़ नहीं हुई। नज़्र ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को नज़्र के सर्फ़ करने की जगह मुक़र्रर करे मसलन किसी ने येह कहा या रब ! عَزَّوَجَلَّ, मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फ़ुलां मक़्सद पूरा कर दे कि फ़ुलां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फ़ुलां वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रुपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये फ़ुलां सामान मुहय्या करूंगा तो येह नज़्र जाइज़ है।[1]

शरई़ नज़्र सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही के लिये हो सकती है क्यूं कि इस के मा'ना हैं ग़ैर लाज़िम इबादत को लाज़िम कर लेना, हां इस नज़्र का मसरफ़ औलियाउल्लाह के ग़रीब मुजाविर भी हो सकते हैं जैसा कि ऊपर बयान हुवा।

(2)...... नज़्र की दूसरी क़िस्म या'नी लुग़वी नज़्र जिसे उ़र्फ़ी नज़्र भी कहते हैं जो नज़राना के मा'ना में है वोह मख़्लूक़ के लिये भी हो सकती है, जैसे बुज़ुर्गाने दीन के लिये नज़्रो नियाज़ की जाती है, मज़ारात पर चादर चढ़ाने की नज़्र मानी जाती है। इस त़रह़ की नज़्रों का पूरा करना ज़रूरी नहीं अलबत्ता बेहतर है। इस बारे में तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 20वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के रिसाले "سُبُلُ الْاَصْفِيَاءِ فِيْ حُكْمِ الذَّبْحِ لِلْاَوْلِيَاء (औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की त़रफ़ मन्सूब जानवरों के ज़ब्ह़ करने का जवाज़)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ يُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾

1 ......ردالمحتار، كتاب الصوم، مطلب فى النذر الذى يقع للاموات... الخ، ۳/۴۹۱.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम ए'लानिया ख़ैरात दोगे तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर तुम छुपा कर फ़क़ीरों को दो तो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और **अल्लाह** तुम से तुम्हारी कुछ बुराइयां मिटा देगा और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

﴾إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ﴿ **: अगर तुम ए'लानिया ख़ैरात दोगे।** सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास के साथ **अल्लाह** तआ़ला के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं। लेकिन सदक़ए फ़र्ज़ को ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल को छुपा कर और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़्हार भी अफ़्ज़ल है जैसे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज्मए आ़म में सदक़े की तरग़ीब देते और सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब के सामने सदक़ात पेश करते। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ और सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ए'लानिया सदक़ात में येही हिक्मत थी। सदक़ात की मज़ीद फ़ज़ीलत येह बयान फ़रमाई कि इस से गुनाहे सग़ीरा मुआ़फ़ हो जाते हैं। अहादीस में सदक़े के बे पनाह फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं, जैसे सदक़ा ग़ज़बे इलाही को बुझाता और बुरी मौत दूर करता है। गुनाह मिटाता है। बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है और बुरी क़ज़ा टाल देता है। सदक़ा देने से रोज़ी और मदद मिलती है। उ़म्र बढ़ती है। आफ़तें दूर होती हैं, नीज़ बला सदक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती।[(1)]

अक्सरो बेशतर आ'माल में येही क़ाइदा है कि वोह ख़ुफ़्या और ए'लानिया दोनों तरह जाइज़ हैं लेकिन रियाकारी के लिये ए'लानिया करना हराम है और दूसरों की तरग़ीब के लिये करना सवाब है। मशाइख़ व उ़लमा बहुत से आ'माल ए'लानिया इसी लिये करते हैं कि उन के मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को तरग़ीब हो।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ

❶...... फ़तावा रज़विय्या, 23/137, 140 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें राह देना तुम्हारे ज़िम्मे लाज़िम नहीं हां **अल्लाह** राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर **अल्लाह** की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोगों को हिदायत दे देना तुम पर लाज़िम नहीं, हां **अल्लाह** जिसे चाहता है हिदायत दे देता है और तुम जो अच्छी चीज़ ख़र्च करो तो वोह तुम्हारे लिये ही फ़ाएदा मन्द है और तुम **अल्लाह** की ख़ुशनूदी चाहने के लिये ही ख़र्च करो और जो माल तुम ख़र्च करोगे वोह तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई ज़ियादती नहीं की जाएगी ।

﴿لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ﴾ **: लोगों को हिदायत दे देना तुम पर लाज़िम नहीं ।** हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशीरो नज़ीर और दाई या'नी दा'वत देने वाले बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दा'वत देने से पूरा हो जाता है और इस से ज़ियादा जिद्दो जह्द आप पर लाज़िम नहीं । येह मज़्मून क़ुरआने पाक में ब कसरत बयान किया गया है ।

﴿وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ﴾ **: और तुम जो अच्छी चीज़ ख़र्च करो ।** इर्शाद फ़रमाया गया कि तुम जो ख़र्च करते हो उस का फ़ाएदा तुम्हें ही होगा कि दुन्या में माल में बरकत और आख़िरत में सवाब का ज़ख़ीरा होगा । लिहाज़ा जब इस में तुम्हारा ही फ़ाएदा है तो जिस पर ख़र्च करते हो उस पर एह्सान न जताओ बल्कि सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये ख़र्च करो और एक ज़र्रा बराबर दुन्यवी नफ़्अ़ हासिल करने की तमन्ना न करो, इख़्लास के साथ किये गए अ़मल का एक ज़र्रा भी ज़ाएअ़ नहीं होगा बल्कि बारगाहे इलाही से बराबर का सिला तो ज़रूर दिया जाएगा और फ़ज़्ले इलाही से वोह सिला सात सो गुना से ले कर करोड़ों गुना तक हो सकता है ।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا

www.dawateislami.net

فِی الْاَرْضِ٘ یَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِیَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِیْمٰهُمْۚ لَا یَسْــٴَـلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًاؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَیْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ۠ ﴿۲۷۳﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे ख़ुदा में रोके गए ज़मीन में चल नहीं सकते नादान उन्हें तवंगर समझे बचने के सबब तो उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो **अल्लाह** उसे जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन फ़क़ीरों के लिये जो **अल्लाह** के रास्ते में रोक दिये गए, वोह ज़मीन में चल फिर नहीं सकते। ना वाक़िफ़ उन्हें सुवाल करने से बचने की वज्ह से मालदार समझते हैं। तुम उन्हें उन की अ़लामत से पहचान लोगे। वोह लोगों से लिपट कर सुवाल नहीं करते और तुम जो ख़ैरात करो **अल्लाह** उसे जानता है।

﴿لِلْفُقَرَآءِ الَّذِیْنَ اُحْصِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴾ **: उन फ़क़ीरों के लिये जो अल्लाह के रास्ते में रोक दिये गए।** ﴾ गुज़श्ता आयात में सदक़ा देने की तरग़ीब दी गई यहां बताया गया कि उन का बेहतरीन मसरफ़ वोह फ़ुक़रा हैं जिन्हों ने अपनी जानों को जिहाद और त़ाअ़ते इलाही के लिये रोक रखा है। येह आयत अहले सुफ़्फ़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई। इन ह़ज़रात की ता'दाद चार सो के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हुए थे। यहां न इन का मकान था और न कुम्बा क़बीला और न इन ह़ज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इ़बादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना दिन में जिहाद के काम में रहना इन का शबो रोज़ का मा'मूल था।(1)

सदक़ात के बेहतरीन मसरफ़

इन्ही ह़ज़रात की सफ़ में वोह मशाइख़ व उ़लमा व त़लबा व मुबल्लिग़ीन व ख़ादिमीने

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٧٣، ١/٢١٣.

www.dawateislami.net

दीन दाख़िल हैं जो दीनी कामों में मश्ग़ूलिय्यत की वज्ह से कमाने की फ़ुरसत नहीं पाते। येह लोग अपनी इ़ज़्ज़तो वक़ार और मुरव्वत की वज्ह से लोगों से सुवाल भी नहीं कर पाते और अपने फ़क्र को छुपाने की भी कोशिश करते हैं जिस की वज्ह से लोग समझते हैं कि इन का गुज़ारा बहुत अच्छा हो रहा है लेकिन ह़क़ीक़ते ह़ाल इस के बर अ़क्स होती है। अगर कुछ ग़ौर से देखा जाए तो इन लोगों की ज़िन्दगी का मशक़्क़त से भरपूर होना बहुत सी अ़लामात व क़राइन से मा'लूम हो जाएगा। इन के मिज़ाज में तवाज़ोअ़ और इन्किसारी होगी, चेहरे पर ज़ो'फ़ के आसार होंगे और भूक से रंग ज़र्द होंगे। **दर्स :** हमारे हां दीन के इस त़रह़ के ख़ादिमों की कमी नहीं और इन की ग़ुरबत व मोह़ताजी के बा वुजूद इन्हें मालदार समझने वाले ना वाक़िफ़ों और जाहिलों की भी कमी नहीं। शायद हमारे ज़माने का सब से मज़्लूम त़बक़ा येही होता है। इस चीज़ का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि लोग अपने बच्चों को आ़लिम इस लिये नहीं बनाते कि येह खाएंगे कहां से ? जब इस बात का इ़ल्म है तो येह भी तो सोचना चाहिये कि जो उ़लमाओ ख़ादिमीने दीन मौजूद हैं वोह कैसे गुज़ारा कर रहे होंगे ? अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा की ह़ालत पर मज़्कूरा आयते मुबारका का नुज़ूल सिर्फ़ कोई तारीख़ी वाक़िआ़ बयान करने के लिये नहीं है बल्कि हमें समझाने, नसीह़त करने और तरग़ीब देने के लिये है। उ़लमा व मुबल्लिग़ीन की घरों की परेशानियां ख़त्म कर दें फिर देखें कि दीन का काम कैसी तेज़ी से होता है। समझने के लिये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के उन दस निकात को पढ़ लें जिन में बार बार उ़लमा की मआ़शी ह़ालत सुधारने का तज़्किरा करने के बा'द फ़रमाया : "मौलाना ! रुपिया होने की सूरत में अपनी क़ुव्वत फैलाने के इ़लावा गुमराहों की त़ाक़तें तोड़ना भी اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْعَزِيْز आसान होगा। मैं देख रहा हूं कि गुमराहों के बहुत से अफ़राद सिर्फ़ तनख़्वाहों के लालच से ज़ह्‌र उगल्ते फिरते हैं। उन में जिसे दस की जगह बारह दीजिये अब आप की सी कहेगा, या कम अज़ कम ब लुक़्मा दोख़्ता बह तो होगा। देखिये ह़दीस का इर्शाद कैसा सादिक़ है कि "आख़िर ज़माने में दीन का काम भी दिरहमो दीनार से चलेगा।"(1)

और क्यूं न सादिक़ हो कि सादिक़ो मस्दूक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम है, आ़लिमे मा कान व मा यकून صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर है।"(2)

1 ......معجم الكبير، ٢٧٩/٢٠، الحديث: ٦٦٠.

2...... फ़तावा रज़विय्या, 29/599, 600

www.dawateislami.net

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾

وقف منزل

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो रात में और दिन में, पोशीदा और ए'लानिया अपने माल ख़ैरात करते हैं उन के लिये उन का अज्र उन के रब के पास है। उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴾اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ﴿ **: वोह लोग जो अपने माल ख़ैरात करते हैं।** यहां उन लोगों का बयान है जो राहे खुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर ह़ाल में या'नी दिन रात, खुफ़्या ए'लानिया ख़र्च करते रहते हैं। येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई जब आप ने राहे खुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे। दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर।[(1)]

एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के ह़क़ में नाज़िल हुई, जब आप के पास फ़क़त़ चार दिरहम थे और कुछ न था, और आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया, एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा और एक को ज़ाहिर।[(2)]

आयते करीमा में रात के ख़र्च को दिन के ख़र्च से और खुफ़्या ख़र्च को ए'लानिया ख़र्च से पहले बयान फ़रमाया, इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़्ज़ल है। इन सब ख़र्च करने वालों के लिये बारगाहे इलाही से अज्रो सवाब और क़ियामत के दिन ग़म व ख़ौफ़ से नजात की बिशारत है।

---

1 ......صاوی، البقرة، تحت الآیة: ٢٧٤، ١/٢٣٢.

2 ......ابن عساکر، حرف الطاء فی آباء من اسمه علی، ٤٢/٣٥٨.

www.dawateislami.net

وقف لازم

اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ
الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَیْعُ مِثْلُ الرِّبٰواۘ
وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰواؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَؕ وَ اَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ
هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ(۲۷۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और **अल्लाह** ने ह़लाल किया बैअ़ और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो अब ऐसी ह़रकत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो लोग सूद खाते हैं वोह क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर उस शख़्स के खड़े होने की त़रह़ जिसे आसेब ने छू कर पागल बना दिया हो। येह सज़ा इस वज्ह से है कि उन्हों ने कहा : ख़रीदो फ़रोख़्त भी तो सूद ही की त़रह़ है हालां कि **अल्लाह** ने ख़रीदो फ़रोख़्त को ह़लाल किया और सूद को ह़राम किया तो जिस के पास उस के रब की त़रफ़ से नसीह़त आई फिर वोह बाज़ आ गया तो उस के लिये ह़लाल है वोह जो पहले गुज़र चुका और उस का मुआ़मला **अल्लाह** के सिपुर्द है और जो दोबारा ऐसी ह़रकत करेंगे तो वोह दोज़ख़ी हैं, वोह उस में मुद्दतों रहेंगे।

﴿اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا : **जो लोग सूद खाते हैं।**﴾ गुज़श्ता आयात में माल ख़र्च कर के रिज़ाए इलाही और जन्नत कमाने वालों का बयान था, अब इसी माल के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब और जहन्नम कमाने वालों का बयान है, चुनान्चे इन लोगों के एक बड़े त़ब्क़े या'नी सूदख़ोरों का बयान और अन्जाम इस आयत में बयान किया गया है।

www.dawateislami.net

सूद को ह़राम किये जाने की ह़िक्मतें

सूद को ह़राम फ़रमाने में बहुत सी ह़िक्मतें हैं, उन में से **बा'ज़** येह हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह माली मुआवज़े वाली चीज़ों में बिग़ैर किसी इवज़ के माल लिया जाता है और येह सरीह़ ना इन्साफ़ी है। सूद की ह़ुरमत में **दूसरी ह़िक्मत** येह है कि सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूदख़ोर को बे मेह़नत माल का ह़ासिल होना, तिजारत की मशक़्क़तों और ख़त़रों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआशरत को ज़रर पहुंचाती है। **तीसरी ह़िक्मत** येह है कि सूद के रवाज से बाहमी मह़ब्बत के सुलूक को नुक़्सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आ़दी हुवा तो वोह किसी को क़र्ज़े ह़सन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। **चौथी ह़िक्मत** येह है कि सूद से इन्सान की त़बीअ़त में दरिन्दों से ज़ियादा बे रह़मी पैदा होती है और सूदख़ोर अपने मक़्रूज़ की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। इस के इ़लावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़्सान हैं और शरीअ़त की सूद से मुमानअ़त ऐ़न ह़िक्मत है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद देने वाले, लेने वाले, इस के काग़ज़ात तय्यार करने वाले और इस के गवाहों पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया कि वोह सब गुनाह में बराबर हैं।[1]

सूदख़ोर क़ियामत में ऐसे मख़्बूतुल ह़वास होंगे और ऐसे गिरते पड़ते खड़े होंगे जैसे दुन्या में वोह शख़्स जिस पर भूत सुवार हो क्यूं कि सूदख़ोर दुन्या में लोगों के लिये भूत बना हुवा था। आज कल सूदी क़र्ज़ा लेने देने का इब्तिदाई अन्दाज़ तो बड़ा मुहज़्ज़ब होता है। अच्छे अच्छे नामों से और ख़ुशकुन तरग़ीबात से दिया जाता है लेकिन कुछ ही अ़र्से बा'द क़र्ज़ देने वालों की ख़ुश अख़्लाक़ी, मिलन सारी और चेहरे की मुस्कुराहट सब रुख़्सत हो जाती है और अस्ल चेहरा बे निक़ाब हो जाता है जो गालियां दे रहा होता है, ग़ुन्डे भेज रहा होता है, घर के बाहर खड़े हो कर ज़लीलो रुस्वा कर रहा होता है, दुकान, मकान, फ़ेक्टरी सब पर क़ब्ज़ा कर के फ़क़ीर व कंगाल और मोह़ताज व क़ल्लाश कर के बे घर और बे ज़र कर रहा होता है।

﴿اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا : **तिजारत सूद ही की त़रह़ है।**﴾ यहां सूदख़ोरों का वोह शुबा बयान किया जा रहा है जो ज़मानए इस्लाम से पहले से ले कर आज तक चला आ रहा है। वोह येह कि तिजारत और सूद में क्या फ़र्क़ है ? दोनों एक जैसे तो हैं। तिजारत में कोई सामान दे कर नफ़्अ़

1 ......مسلم، کتاب المساقاة والمزارعة، باب لعن آکل الربا ومؤکله، ص٨٦٢، الحديث: ١٠٦(١٥٩٨).

www.dawateislami.net

ह़ासिल किया जाता है और सूद में रक़म दे कर नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता है ह़ालां कि दोनों में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है। ग़ौर करें कि तिजारत करने से हुस्ने सुलूक में फ़र्क़ नहीं आता, आदमी सुस्त, काहिल और मशक़्क़त से जी चुराने वाला नहीं बनता, अपने माल को ख़त़रे पर पेश करता है, नफ़्अ़ व नुक़्सान दोनों की उम्मीद होती है, वोह दूसरे की बरबादी व मोह़ताजी का आरज़ू मन्द नहीं होता जब कि सूद वाला बे रह़्म हो जाता है, वोह मुफ़्त में किसी को रक़म देने का तसव्वुर नहीं करता, इन्सानी हमदर्दी उस से रुख़्सत हो जाती है, क़र्ज़ लेने वाला डूबे, मरे, तबाह हो येह बहर सूरत उसे निचोड़ने पर तुला रहता है। आख़िर येह सब फ़र्क़ क्या हैं ? तिजारत और सूद को एक जैसा कहने वाले को क्या येह फ़र्क़ नज़र नहीं आता ? इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि **अल्लाह** ने तिजारत को ह़लाल किया है और सूद को ह़राम किया है।

﴿فَانْتَهٰى : **तो जो रुक गया।**﴾ चूंकि सूद का लेन देन एक अ़र्से से चलता आ रहा था तो फ़रमाया गया कि जब हुक्मे इलाही नाज़िल हो गया तो अब इस पर अ़मल करते हुए जो आयिन्दा सूद लेने से बाज़ आ गया तो ह़ुरमत का हुक्म नाज़िल होने से पहले जो वोह लेता रहा उस पर उस की कोई गिरिफ़्त न होगी और उस की मुआ़फ़ी का मुआ़मला बल्कि हर अम्रो नही का मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला के ह़वाले है। और येह भी याद रखो कि जो ह़ुरमत का हुक्म उतरने के बा'द भी सूद खाएगा तो वोह जहन्नम का मुस्तह़िक़ है और अगर ह़लाल समझ कर खाया तो काफ़िर है, हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि किसी भी ह़रामे क़त़ई को ह़लाल जानने वाला काफ़िर है।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ
اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और **अल्लाह** को पसन्द नहीं आता कोई नाशुक्र बड़ा गुनहगार। बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग उन के रब के पास है, और न उन्हें कुछ अन्देशा हो, न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है और **अल्लाह** किसी नाशुक्रे, बड़े गुनहगार को पसन्द नहीं करता। बेशक वोह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का अज्र उन के रब के पास है और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴿يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا : अल्लाह सूद को मिटाता है।﴾ अल्लाह तआ़ला सूद को मिटाता है और सूदख़ोर को बरकत से मह़रूम करता है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला सूदख़ोर का न सदक़ा क़बूल करे, न ह़ज, न जिहाद, न रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक।[(1)]

अल्लाह तआ़ला सूद को मिटाता है जब कि सदक़ा व ख़ैरात को ज़ियादा करता है, दुन्या में उस में बरकत पैदा फ़रमाता है और आख़िरत में उस का अज्रो सवाब बढ़ाता है चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَاۤ اٰتَیْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो तुम **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हुए ज़कात देते हो तो वोही लोग (अपने माल) बढ़ाने वाले हैं।

और सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स खजूर बराबर ह़लाल कमाई से सदक़ा करे और **अल्लाह** ह़लाल ही को क़बूल फ़रमाता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस सदक़े को क़बूल फ़रमाता है फिर उसे उस के मालिक के लिये परवरिश करता है जैसे तुम में कोई अपने बछड़े की तरबियत करता है यहां तक कि वोह सदक़ा पहाड़ के बराबर हो जाता है।[(3)]

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ذَرُوْا مَا بَقِیَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۷۸﴾

1 ......تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۶، ۲/۲۷۴، الجزء الثالث.

2 ......روم: ۳۹. 3 ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الصدقۃ من کسب طیّب، ۱/۴۷۶، الحدیث: ۱۴۱۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम ईमान वाले हो तो **अल्लाह** से डरो और जो सूद बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो ।

﴿اِتَّقُوا اللّٰهَ﴾ **: अल्लाह से डरो ।** इस आयत में ईमान वाले कह कर मुख़ात़ब किया और ईमान के एक अहम तक़ाज़े या'नी तक़्वा का हुक्म दिया फिर तक़्वे की रूह़ या'नी ह़राम से बचने का फ़रमाया और ह़राम से बचने में एक कबीरा गुनाह सूद का तज़्किरा किया । चुनान्चे फ़रमाया गया कि अगर सूद के ह़राम होने से पहले मक़रूज़ पर सूद लाज़िम हो गया था और अब तक कुछ सूद ले लिया था और कुछ बाक़ी था कि येह सूद के ह़राम होने का हुक्म आ गया तो जो सूद इस से पहले लिया था वोह वापस न किया जाएगा लेकिन आयिन्दा बक़ाया सूद न लिया जाएगा । **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लेन देन करते थे और उन की काफ़ी भारी सूदी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं इस में हुक्म दिया गया कि सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने के बा'द साबिक़ा बक़िय्या सूद लेने की भी इजाज़त नहीं ।(1)

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल की त़रफ़ से लड़ाई का यक़ीन कर लो और अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारे लिये अपना अस्ल माल लेना जाइज़ है । न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ और न तुम्हें नुक़्सान हो ।

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٧٨، ١/٢١٧.

www.dawateislami.net

﴿فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ﴾ : **तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल की त़रफ़ से लड़ाई का यक़ीन कर लो ।** सूद की हुरमत का हुक्म नाज़िल हो चुका, इस के बा'द भी जो सूदी लेन देन जारी रखेगा वोह **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग का यक़ीन कर ले । येह शदीद तरीन वई़द है, किस की मजाल कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ाई का तसव्वुर भी करे चुनान्चे जिन अस्ह़ाब का सूदी मुआ़मला था उन्हों ने अपने सूदी मुत़ालबात छोड़ दिये और अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ाई की हमें क्या ताब । येह कह कर वोह ताइब हो गए ।[(1)]

लेकिन आज कल के नाम निहाद मुसल्मान दानिश्वरों का ह़ाल येह है कि वोह तौबा की बजाए आगे से ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला को ए'लाने जंग कर रहे हैं और सूद की अहम्मिय्यत व ज़रूरत पर किताबें, आर्टीकल, मज़ामीन और कॉलिम लिख कर वरक़ सियाह कर रहे हैं ।

दो गुनाहों पर ए'लाने जंग दिया गया

ख़याल रहे कि दो गुनाहों पर ए'लाने जंग दिया गया है । **(1)** सूद लेने पर जैसा कि यहां आयत में बयान हुवा । **(2)** **अल्लाह** तआ़ला के वली से अ़दावत रखने पर, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : ''जो मेरे किसी वली से अ़दावत रखे तो मैं ने उस से जंग का ए'लान कर दिया ।''[(2)]

﴿وَاِنْ تُبْتُمْ﴾ : **और अगर तुम तौबा करो ।** इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम तौबा करो तो जो तुम्हारा अस्ल दिया हुवा क़र्ज़ है वोह लेना तुम्हारे लिये जाइज़ है और उस का मुत़ालबा कर सकते हो । इस से मा'लूम हुवा कि सूद ह़राम होने से पहले जो सूद लिया गया वोह ह़लाल था, वोह रक़म अस्ले क़र्ज़ से न कटेगी बल्कि अब पूरा क़र्ज़ लेना जाइज़ होगा ।

﴿لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ﴾ : **न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ और न तुम्हें नुक़्सान हो ।** या'नी न तो मक़रूज़ से ज़ियादा ले कर उस पर तुम ज़ुल्म करो और न अस्ल क़र्ज़े की रक़म से मह़रूम हो कर ख़ुद मज़्लूम बनो ।

---

1 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٧٩، ٢١٢/١.

2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ٢٤٨/٤، الحديث: ٦٥٠٢.

www.dawateislami.net

ज़ुल्म को ख़त्म करने की कोशिश की जाए

येह आयत अगर्चे सूद के ह़वाले से है लेकिन ड़मूमी ज़िन्दगी में भी शरीअ़त और अ़क़्ल का तक़ाज़ा येह है कि न ज़ुल्म किया जाए और न ज़ुल्म बरदाश्त किया जाए या'नी ज़ुल्म को ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिये। ज़ुल्म को बरदाश्त करना ज़ालिम को मज़ीद जरी करता है। हां जहां अ़फ़्वो दर गुज़र की सूरत बनती हो वहां इसे इख़्तियार किया जाए। शरीअ़त का क़ाइदा है ''لَاضَرَرَوَلَا ضِرَار'' न नुक़्सान पहुंचाओ और न नुक़्सान बरदाश्त करो।[1]

وَاِنْ كَانَ ذُوْعُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर मक़रूज़ तंगदस्त हो तो उसे आसानी तक मोहलत दो और तुम्हारा क़र्ज़ को सदक़ा कर देना तुम्हारे लिये सब से बेहतर है अगर तुम जान लो।

﴿وَاِنْ كَانَ ذُوْعُسْرَةٍ : **और अगर मक़रूज़ तंगदस्त हो।**﴾ या'नी तुम्हारे क़र्ज़दारों में से अगर कोई तंगदस्ती की वज्ह से तुम्हारा क़र्ज़ अदा न कर सके तो उसे तंगदस्ती दूर होने तक मोहलत दो और तुम्हारा तंगदस्त पर अपना क़र्ज़ सदक़ा कर देना या'नी मुआ़फ़ कर देना तुम्हारे लिये सब से बेहतर है अगर तुम येह बात जान लो क्यूं कि इस त़रह़ करने से दुन्या में लोग तुम्हारी अच्छी ता'रीफ़ करेंगे और आख़िरत में तुम्हें अ़ज़ीम सवाब मिलेगा।[2]

क़र्ज़दार को मोहलत देने और क़र्ज़ा मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल

इस आयत से मा'लूम हुवा कि क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत

1 ......ابن ماجه، كتاب الاحكام، باب من بنى فى حقه ما يضرّ بجاره، ١٠٦/٣، الحديث: ٢٣٤٠.
2 ......خازن، البقرة، تحت الآية: ٢٨٠، ٢١٨/١.

www.dawateislami.net

देना या क़र्ज़ का कुछ हि़स्सा या पूरा क़र्ज़ा मुआफ़ कर देना अज्रे अ़ज़ीम का सबब है। अहा़दीस में भी इस के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुए हैं, चुनान्चे इस के 5 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स येह चाहता हो कि **अल्लाह** तआ़ला उस को क़ियामत के दिन की तक्लीफ़ों से नजात दे वोह किसी मुफ़्लिस को मोहलत दे या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे।"(1)

(2)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उसे अ़र्श के साए में रखेगा जब कि उस के सिवा कोई साया न होगा।"(2)

(3)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स पर रह़म करे जो बेचने और ख़रीदने और तक़ाज़ा करने में आसानी करे।"(3)

(4)...... ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुज़श्ता ज़माने में एक शख़्स की रूह़ क़ब्ज़ करने जब फ़िरिश्ता आया तो मरने वाले से सुवाल किया कि क्या तुझे अपना कोई अच्छा काम याद है ? उस ने कहा, मेरे इ़ल्म में कोई अच्छा काम नहीं है। उस से कहा गया : ग़ौर कर के बता। उस ने कहा : सिर्फ़ येह अ़मल था कि दुन्या में लोगों से तिजारत करता था और उन के साथ अच्छी त़रह़ पेश आता था, अगर मालदार भी मोहलत मांगता तो उसे मोहलत दे देता था और तंगदस्त से दर गुज़र करता या'नी मुआ़फ़ कर देता था। **अल्लाह** तआ़ला ने (फ़िरिश्ते से) फ़रमाया : तुम इस से दर गुज़र करो।"(4)

(5)...... और स़ह़ीह़ मुस्लिम की एक और रिवायत में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी बारगाह में ह़ाज़िर उस मुआ़फ़ करने वाले, मालदार पर आसानी करने और तंगदस्त को मोहलत देने वाले शख़्स से फ़रमाया : "मैं तुझ से ज़ियादा मुआ़फ़ करने का ह़क़दार हूं, ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे इस बन्दे से दर गुज़र करो।"(5)

---

1 ......مسلم، کتاب المساقاۃ والمزارعۃ، باب فضل انظار المعسر، ص٨٤٥، الحدیث: ٣٢ (١٥٦٣).

2 ......ترمذی، کتاب البیوع، باب ما جاء فی انظار المعسر... الخ، ٣/٥٢، الحدیث: ١٣١٠.

3 ......بخاری، کتاب البیوع، باب السھولۃ والسماحۃ فی الشراء والبیع، ٢/١٢، الحدیث: ٢٠٧٦.

4 ......مسند امام احمد، حدیث حذیفۃ بن الیمان، ٩/٩٨، الحدیث: ٢٣٤١٣، مسلم، کتاب المساقاۃ والمزارعۃ، باب فضل انظار المعسر، ص٨٤٣، الحدیث: ٢٦(١٥٦٠).

5 ......مسلم، کتاب المساقاۃ والمزارعۃ، باب فضل انظار المعسر، ص٨٤٤، الحدیث: ٢٩(١٥٦٠).

www.dawateislami.net

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और मजूसी क़र्ज़दार

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मन्कूल है कि एक मजूसी पर इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कुछ माल क़र्ज़ था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने क़र्ज़ की वुसूली के लिये उस मजूसी के घर की त़रफ़ गए। जब उस के घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो (इत्तिफ़ाक़ से) आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जूते पर नजासत लग गई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (नजासत छुड़ाने की ग़रज़ से) अपने जूते को झाड़ा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल की वज्ह से कुछ नजासत उड़ कर मजूसी की दीवार को लग गई। येह देख कर आप परेशान हो गए और फ़रमाया कि अगर मैं नजासत को ऐसे ही रहने दूं तो इस से उस मजूसी की दीवार ख़राब हो रही है और अगर मैं इसे साफ़ करता हूं तो दीवार की मिट्टी भी उखड़ेगी। इसी परेशानी के आ़लम में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरवाज़ा बजाया तो एक लौंडी बाहर निकली। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : अपने मालिक से कहो कि अबू ह़नीफ़ा दरवाज़े पर मौजूद है। वोह मजूसी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और उस ने येह गुमान किया कि आप अपने क़र्ज़ का मुत़ालबा करेंगे, इस लिये उस ने आते ही टाल मटोल करना शुरूअ़ कर दी। इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : मुझे यहां तो क़र्ज़ से भी बड़ा मुआ़मला दरपेश है, फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीवार पर नजासत लगने वाला वाक़िआ़ बताया और पूछा कि अब दीवार साफ़ करने की क्या सूरत है ? (येह सुन कर) उस मजूसी ने अ़र्ज़ की : मैं (दीवार की सफ़ाई करने की) इब्तिदा अपने आप को पाक करने से करता हूं और उस मजूसी ने उसी वक़्त इस्लाम क़बूल कर लिया।(1)

क़र्ज़ की अदाएगी के लिये दुआ़

ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि आप के पास एक मुकातब ग़ुलाम आया और अ़र्ज़ की : मैं अपनी किताबत (का माल) अदा करने से आ़जिज़ आ गया हूं, मेरी कुछ मदद फ़रमाइये। आप کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : क्या मैं तुझे वोह कलिमे न सिखा दूं जो मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिखाए थे (और उन कलिमात

(1) تفسیر کبیر، الفصل الرابع فی تفسیر قولہ: مالک یوم الدین، ۱/۲۰۴.

www.dawateislami.net

की बरकत येह है कि) अगर तुझ पर पहाड़ बराबर भी क़र्ज़ हो तो **अल्लाह** तआला तुझ से अदा करा दे। तुम येह पढ़ा करो : ''اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ'' या'नी ऐ **अल्लाह** ! मुझे अपने ह़लाल के ज़रीए अपने ह़राम से तू काफ़ी हो जा, और मुझे अपनी मेहरबानी से अपने सिवा से बे परवाह कर दे।(1)

وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع

ركوع ٣٨

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस दिन से डरो जिस में तुम **अल्लाह** की त़रफ़ लौटाए जाओगे फिर हर जान को उस की कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।

﴿وَاتَّقُوْا یَوْمًا : **और उस दिन से डरो।**﴾ इस आयत में क़ियामत के दिन से डराया जा रहा है कि उस दिन से डरो जिस में तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ लौटाया जाएगा और उस दिन लोगों को उन के आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, न बिला वज्ह उन की नेकियां घटाई जाएं और न बदियां बढ़ाई जाएंगी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत सब से आख़िरी आयत है जो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई, इस के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 21 रोज़ दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा रहे और इस के इ़लावा एक क़ौल येह है कि 9 रातें और एक क़ौल येह है कि 7 दिन दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा रहे।(2)

अलबत्ता इमाम शअ़बी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से येह रिवायत की है कि सब से आख़िरी आयत ''आयते रिबा'' नाज़िल हुई।(3)

1 ......ترمذی، احادیث شتی، ۱۱۰- باب، ۳۲۹/۵، الحدیث: ۳۵۷۴.

2 ......بیضاوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۸۱، ۵۷۷/۱، خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۸۱، ۲۱۹/۱، ملتقطاً.

3 ......خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۸۱، ۲۱۹/۱.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ
وَ لْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَ لَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَ لْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَ لْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ
وَ لَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْــٴًـا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ
ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ
وَ اسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّ امْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا
فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَ لَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَ لَا
تَسْــٴَـمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَ اَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا
تَكْتُبُوْهَا ؕ وَ اَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَ لَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّ لَا شَهِيْدٌ ۬ؕ
وَ اِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَ يُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ

www.dawateislami.net

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۲۸۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो तो उसे लिख लो और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला ठीक ठीक लिखे और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे **अल्लाह** ने सिखाया है तो उसे लिख देना चाहिये और जिस पर ह़क़ आता है वोह लिखाता जाए और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और ह़क़ में से कुछ रख न छोड़े फिर जिस पर ह़क़ आता है अगर बे अ़क़्ल या नातुवां हो या लिखा न सके तो उस का वली इन्साफ़ से लिखाए, और दो गवाह कर लो अपने मर्दों में से फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें ऐसे गवाह जिन को पसन्द करो कि कहीं उन में एक औ़रत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिलावे और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो या बड़ा उस की मीआ़द तक लिखत कर लो येह **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही ख़ूब ठीक रहेगी और येह इस से क़रीब है कि तुम्हें शुब्हा न पड़े मगर येह कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त हो तो उस के न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह कर लो और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए, न गवाह को (या, न लिखने वाला ज़रर दे न गवाह) और जो ऐसा करो तो येह तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है, और **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी क़र्ज़ का लेन देन करो तो उसे लिख लिया करो और तुम्हारे दरमियान किसी लिखने वाले को इन्साफ़ के साथ (मुआ़हदा) लिखना चाहिये और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे **अल्लाह** ने सिखाया है तो उसे लिख देना चाहिये और जिस शख़्स पर ह़क़ लाज़िम आता है वोह लिखाता जाए और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और उस ह़क़ में से कुछ कमी न करे फिर जिस पर ह़क़ आता है अगर वोह बे अ़क़्ल या कमज़ोर हो या लिखवा न सकता हो तो उस का वली इन्साफ़ के साथ लिखवा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह बना लो फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें उन गवाहों में से (मुन्तख़ब कर लो) जिन्हें तुम पसन्द करो ताकि (अगर) उन में से एक औ़रत भूले तो दूसरी उसे याद दिला दे, और जब गवाहों को बुलाया जाए तो वोह आने से इन्कार न करें और क़र्ज़ छोटा हो या बड़ा उसे उस की मुद्दत तक लिखने में उक्ताओ नहीं। येह **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही ख़ूब ठीक रहेगी और येह इस

www.dawateislami.net

से क़रीब है कि तुम (बा'द में) शक में न पड़ो (हर मुआ़हदा लिखा करो) मगर येह कि कोई हाथों हाथ सौदा हो जिस का तुम आपस में लेन देन करो तो उस के न लिखने में तुम पर कोई ह़रज नहीं और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह बना लिया करो और न किसी लिखने वाले को कोई नुक़्सान पहुंचाया जाए और न गवाह को (या न लिखने वाला कोई नुक़्सान पहुंचाए और न गवाह) और अगर तुम ऐसा करोगे तो येह तुम्हारी ना फ़रमानी होगी और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है और **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

﴿اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى﴾ : **जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी क़र्ज़ का लेन देन करो।** इस आयत में तिजारत और बाहमी लेन देन का अहम उसूल बयान किया गया है और मज्मूई तौर पर आयत में येह अह़काम दिये गए हैं :

(1)...... जब उधार का कोई मुआ़मला हो, ख़्वाह क़र्ज़ का लेन देन हो या ख़रीदो फ़रोख़्त का, रक़म पहले दी हो और माल बा'द में लेना है या माल उधार पर दे दिया और रक़म बा'द में वुसूल करनी है, यूंही दुकान या मकान किराए पर लेते हुए एडवान्स या किराए का मुआ़मला हो, इस त़रह़ की तमाम सूरतों में मुआ़हदा लिख लेना चाहिये। येह हुक्म वाजिब नहीं लेकिन इस पर अ़मल करना बहुत सी तकालीफ़ से बचाता है। हमारे ज़माने में तो इस हुक्म पर अ़मल करना इन्तिहाई अहम हो चुका है क्यूं कि दूसरों का माल दबा लेना, मुआ़हदों से मुकर जाना और कोई सुबूत न होने की सूरत में अस्ल रक़म के लाज़िम होने से इन्कार करना हर त़रफ़ आ़म हो चुका है। लिहाज़ा जो अपनी आ़फ़िय्यत चाहता है वोह इस हुक्म पर ज़रूर अ़मल कर ले वरना बा'द में सिर्फ़ पछताना ही नसीब होगा। इसी लिये आयत के दरमियान में फ़रमाया कि : ''और क़र्ज़ छोटा हो या बड़ा उसे उस की मुद्दत तक लिखने में उक्ताओ नहीं।''

(2)...... मुआ़हदा इन्साफ़ के साथ लिखना चाहिये, किसी क़िस्म की कोई कमी बेशी या हेरा फेरी न की जाए। अनपढ़ आदमी के साथ इस चीज़ का ज़ियादा अन्देशा होता है।

(3)...... अगर किसी को ख़ुद लिखना नहीं आता, बच्चा है, या इन्तिहाई बूढ़ा या नाबीना वग़ैरा तो दूसरे से लिखवा ले और जिसे लिखने का कहा जाए उसे लिखने से इन्कार नहीं करना चाहिये क्यूं कि येह लिखना लोगों की मदद करना है और लिखने वाले का इस में कोई नुक़्सान भी नहीं तो मुफ़्त का सवाब क्यूं छोड़े ?

(4)...... लिखने में येह चाहिये कि जिस पर अदाएगी लाज़िम आ रही है वोह लिखे या वोह लिखवाए।

www.dawateislami.net

(5)...... लेन देन का मुआ़हदा लिखने के बा'द इस पर गवाह भी बना लेने चाहिएं ताकि ब वक़्ते ज़रूरत काम आएं। गवाह दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतें होनी चाहिएं।

(6)...... गुज़श्ता अह़काम क़र्ज़ और उधार के ह़वाले से थे, अगर हाथों हाथ का मुआ़मला है या'नी रक़म दी और सौदा ले लिया तो इस में लिखने की ह़ाजत नहीं जैसे उ़मूमन दुकानों पर जा कर हम रक़म दे कर चीज़ ख़रीद लेते हैं और वहां लिखा नहीं जाता। हां अपने ह़िसाब किताब के लिये बिल वग़ैरा बना लेना मुनासिब है। यूंही कोई चीज़ वॉरन्टी पर होती है तो बिल बनवाया जाता है कि बा'द में उसी की बुन्याद पर वॉरन्टी इस्ति'माल होती है।

(7)...... आयत में लफ़्ज़ ''يُضَآرَّ'' आया है। अ़रबी के ए'तिबार से इसे मा'रूफ़ और मज्हूल दोनों मा'नों में लिया जा सकता है। एक सूरत या'नी मज्हूल के ए'तिबार से मा'ना होगा कि कातिबों और गवाहों को ज़रर या'नी नुक़्सान न पहुंचाया जाए। इस की सूरत येह हो सकती है कि कातिब और गवाह अपनी ज़रूरतों में मश्ग़ूल हों तो उन्हें उस वक़्त लिखने पर मजबूर किया जाए, उन से उन का काम छुड़वाया जाए या कातिब को लिखने का मुआ़वज़ा न दिया जाए या गवाह दूसरे शहर से आया हो और उसे सफ़र का ख़र्चा न दिया जाए। दूसरी सूरत या'नी मा'रूफ़ पढ़ने में मा'ना येह होगा कि कातिब और गवाह लेन देन करने वालों को नुक़्सान न पहुंचाएं। इस की सूरत येह होगी कि फ़ुरसत और फ़राग़त के बा वुजूद न आएं या लिखने में कोई गड़बड़ करें।

(8)...... आयत के इस ह़िस्से ''وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَایَعْتُمْ'' में ख़रीदो फ़रोख़्त करते हुए गवाह बना लेने का हुक्म है और येह हुक्म मुस्तह़ब है।

गवाही के अह़काम

यहां आयत में गवाह का मस्अला भी बयान किया गया है, इस की मुनासबत से गवाही के चन्द अह़काम बयान किये जाते हैं :

(1)...... गवाह के लिये आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ और मुसल्मान होना शर्त़ है। कुफ़्फ़ार की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़ार पर मक़्बूल है।

(2)...... तन्हा औ़रतों की गवाही मो'तबर नहीं ख़्वाह वोह चार ही क्यूं न हों मगर वोह मुआ़मलात जिन पर मर्द मुत्त़लअ़ नहीं हो सकते जैसा कि बच्चा जनना और औ़रतों के ख़ास मुआ़मलात इन में एक औ़रत की गवाही भी मक़्बूल है।

(3)...... हुदूद व क़िसास में औ़रतों की गवाही बिल्कुल मो'तबर नहीं सिर्फ़ मर्दों की शहादत

www.dawateislami.net

ज़रूरी है, इस के सिवा और मुआ़मलात में एक मर्द और दो औ़रतों की गवाही भी मक़्बूल है।[1]

गवाही देना फ़र्ज़ और छुपाना ना जाइज़ है

इस आयत में फ़रमाया गया कि "**जब गवाहों को बुलाया जाए तो वोह इन्कार न करें**" इस से मा'लूम हुवा कि गवाही देना फ़र्ज़ है, लिहाज़ा जब मुद्दई गवाहों को त़लब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जाइज़ नहीं। येह हुक्म हुदूद के सिवा और मुआ़मलात में है, हुदूद में गवाह को बताने और छुपाने दोनों का इख़्तियार है बल्कि छुपाना अफ़्ज़ल है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीस शरीफ़ में है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसल्मान की पर्दापोशी करे **अल्लाह** तबारक व तआ़ला दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।"[2]

लेकिन चोरी के मुआ़मले में माल लेने की गवाही देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी किया गया है उस का ह़क़ तलफ़ न हो, अलबत्ता गवाह इतनी एह़तियात़ कर सकता है कि चोरी का लफ़्ज़ न कहे और गवाही में येह कहने पर इक्तिफ़ा करे कि येह माल फ़ुलां शख़्स ने लिया।

رکوع ۳۹

وَ اِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّ لَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌؕ فَاِنْ
اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْیُؤَدِّ الَّذِی اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَ لْیَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗؕ
وَ لَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَؕ وَ مَنْ یَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗؕ وَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ۠ (۲۸۳) ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरव हो क़ब्ज़े में दिया हुवा और अगर तुम में एक को दूसरे पर इत़्मीनान हो तो वोह जिसे उस ने अमीन समझा था अपनी अमानत अदा करे और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और गवाही न छुपाओ

1 ......مدارك، البقرة، تحت الآية: ٢٨٢، ص١٤٤.

2 ......ابن ماجه، كتاب الحدود، باب الستر على المؤمن... الخ، ٢١٨/٣، الحديث: ٢٥٤٤.

www.dawateislami.net

और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों को जानता है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो (क़र्ज़ ख़्वाह के) क़ब्ज़े में गिरवी चीज़ हो और अगर तुम्हें एक दूसरे पर इत़्मीनान हो तो वोह (मक़रूज़) जिसे अमानत दार समझा गया था वोह अपनी अमानत अदा कर दे और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और गवाही न छुपाओ और जो गवाही छुपाएगा तो उस का दिल गुनहगार है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों को ख़ूब जानने वाला है ।

﴿وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ﴾ **: और अगर तुम सफ़र में हो ।** यहां गिरवी रखने का मस्अला बयान किया गया है कि अगर तुम ह़ालते सफ़र में हो और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आ जाए और तुम्हें कोई लिखने वाला न मिले या लिखने का मौक़अ़ न मिले कि ऊपर बयान किये गए हुक्म पर अ़मल हो सके तो मक़रूज़ क़र्ज़ ख़्वाह के क़ब्ज़े में कोई चीज़ रहन रखवा दे । हां अगर तुम्हें एक दूसरे पर ए'तिमाद हो और इस वज्ह से तुम कोई तह़रीर वग़ैरा न लिखो तो अब मक़रूज़ को चाहिये कि जब उसे अमानत दार समझा गया है तो वोह इस हुस्ने ज़न को पूरा करे और अपनी अमानत या'नी क़र्ज़ वक़्त पर अदा कर दे और इस अदाएगी में **अल्लाह** तआ़ला से डरे ।

रह्न के चन्द मसाइल

(1)...... क़र्ज़ वग़ैरा उधार के मुआ़मलात में रह्न रखने का हुक्म इस्तिह़बाबी है ।

(2)...... ह़ालते सफ़र में रह्न या'नी गिरवी रखना आयत से साबित हुवा और ग़ैर सफ़र की ह़ालत में ह़दीस से साबित है, जैसा कि सह़ीह़ बुख़ारी और सुनने तिरमिज़ी में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए त़य्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस साअ़ जव लिये थे ।[1]

(3)...... जिस चीज़ को गिरवी रखा जाए वोह क़र्ज़ ख़्वाह के क़ब्ज़े में देना ज़रूरी है । बिग़ैर क़ब्ज़ा के रह्न नहीं हो सकता ।[2]

रह्न के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 3 ह़िस्सा 17 से "रह्न का बयान" मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

1...... بخاری، کتاب البیوع، باب شراء النبی صلی اللہ علیہ وسلم بالنسیئة، ۲/۱۰، الحدیث: ۲۰۶۹، ترمذی، کتاب البیوع، باب ما جاء فی الرخصة فی الشراء الی الاجل، ۳/۸، الحدیث: ۱۲۱۹ .

2...... फ़तावा रज़विय्या, 25/247

www.dawateislami.net

सूरए बक़रह की आयत नम्बर 282 और 283 से मुतअ़ल्लिक़ अहम तम्बीह

इस रुकूअ़ की दोनों आयात पर ग़ौर करें और समझें कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमारे ख़ालिसतन दुन्यावी माली मुआ़मलात में भी हमें कितने वाज़ेह़ हुक्म इर्शाद फ़रमाए हैं। इस से मा'लूम हुवा कि हमारा दीन कामिल है कि इस में अ़क़ाइदो इ़बादात के साथ मुआ़मलात तक का भी बयान है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि हुक़ूक़ुल इ़बाद निहायत अहम हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने निहायत वज़ाह़त से इन का बयान फ़रमाया। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि शरीअ़त के अह़काम में बे पनाह ह़िक्मतें हैं और इन में हमारी बहुत ज़ियादा भलाई है, चुनान्चे इस आयत में जितना ग़ौर करें उतना ही वाज़ेह़ होगा कि कहां कहां और किस किस त़रह़ हमें इस हुक्म से फ़ाएदा हो सकता है। येह भी मा'लूम हुवा कि लिखना और ह़िसाब किताब का इ़ल्म सीखना बहुत मुफ़ीद है लिहाज़ा अगर कोई हुस्ने निय्यत से एकाउन्टिंग का इ़ल्म सीखता है तो मुस्तह़िक़्क़े अज्र है जब कि सूद वग़ैरा का ह़िसाब किताब रखने से एह़तिराज़ करे।

﴿وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ﴾ **: और गवाही न छुपाओ।** गवाही से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम ऊपर बयान हुए। यहां सराह़त से बयान फ़रमाया कि गवाही न छुपाओ क्यूं कि गवाही को छुपाना ह़राम और दिल के गुनाहगार होने की अ़लामत है क्यूं कि इस में साह़िबे ह़क़ के ह़क़ को ज़ाएअ़ करना पाया जाता है। गवाही छुपाना कबीरा गुनाह है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से एक ह़दीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** तआ़ला के साथ शरीक करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है।[1]

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से उस का ह़िसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

[1] ......شعب الايمان، الثامن من شعب الايمان، ١/٢٧١، الحديث: ٢٩١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब **अल्लाह** ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिल में है अगर तुम उसे ज़ाहिर करो या छुपाओ, **अल्लाह** तुम से उस का हिसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्श देगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

﴿وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ : **और जो कुछ तुम्हारे दिल में है अगर तुम उसे ज़ाहिर करो।**﴾ इन्सान के दिल में दो त़रह़ के ख़यालात आते हैं एक बत़ौरे वस्वसा के और एक बत़ौरे अ़ज़्मो इरादा के। वस्वसों से दिल को ख़ाली करना इन्सान की क़ुदरत में नहीं लेकिन आदमी इन्हें बुरा समझता है और इन पर अ़मल करने का इरादा नहीं करता, इन को ह़दीसे नफ़्स और वस्वसा कहते हैं, इस पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वस्वसे आते हैं, **अल्लाह** तआ़ला उन से तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वोह उन्हें अ़मल में न लाएं या उन्हें अपने कलाम में न लाएं।(1)

येह वस्वसे इस आयत में दाख़िल नहीं। दूसरे वोह ख़यालात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुआख़ज़ा होगा और उन्ही का बयान इस आयत में है कि अपने दिलों में मौजूद चीज़ को तुम ज़ाहिर करो या छुपाओ **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा उन पर मुह़ासबा फ़रमाएगा।

ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो बुरा ख़याल दिल में बे इख़्तियार और अचानक आ जाता है, उसे हाजिस कहते हैं, येह आनी फ़ानी होता है, आया और गया। येह पिछली उम्मतों पर भी मुआ़फ़ था और हमें भी मुआ़फ़ है लेकिन जो दिल में बाक़ी रह जाए वोह हम पर मुआ़फ़ है पिछली उम्मतों पर मुआ़फ़ न था। अगर उस (बुरे ख़याल) के साथ दिल में लज़्ज़त और ख़ुशी पैदा हो तो उसे "हम्म" कहते हैं, इस पर भी पकड़ नहीं और अगर साथ ही कर गुज़रने का पुख़्ता इरादा भी हो तो वोह अ़ज़्म है, इस की पकड़ है।"(2)

1 ......بخاری، کتاب العتق، باب الخطأوالنسیان فی العتاقة... الخ، ۲/۱۵۳، الحدیث: ۲۵۲۸.

2 ......اشعة اللمعات، کتاب الایمان، باب الوسوسة، الفصل الاول، ۱/۸۵-۸۶.

www.dawateislami.net

कुफ़्र और गुनाह के अ़ज़्म का शरई़ हुक्म

याद रहे कि कुफ़्र का अ़ज़्म करना कुफ़्र है।(1)

लिहाज़ा अगर किसी ने सो साल बा'द भी कुफ़्र करने का इरादा किया वोह इरादा करते ही काफ़िर हो जाएगा। और गुनाह में हुक्म येह है कि गुनाह का अ़ज़्म कर के अगर आदमी उस पर साबित रहे और उस का क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अ़मल में लाने के अस्बाब उस को मुयस्सर न आ सकें और मजबूरन वोह उस को न कर सके तो अक्सर उ़लमा के नज़्दीक उस से मुआख़ज़ा किया जाएगा। इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येही मौक़िफ़ है। इस की एक दलील येह आयत है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो लोग चाहते हैं कि मुसल्मानों में बे ह़याई की बात फैले उन के लिये दुन्या और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है।

नीज़ इस की दलील वोह ह़दीस है जिस में फ़रमाया गया कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वोह अ़मल में न आए जब भी उस पर इ़क़ाब किया जाता है।(3)

हां अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया फिर उस पर नादिम हुवा और इस्तिग़्फ़ार किया तो **अल्लाह** तआ़ला उस को मुआ़फ़ फ़रमाएगा।

शैत़ान की इन्सान दुश्मनी

याद रहे कि इन्सान के दिल में शैत़ान वस्वसे डालता है और बा'ज़ अवक़ात येह वस्वसे इतने ख़त़रनाक होते हैं कि इन्सान के लिये अपना दीनो ईमान बचाना मुश्किल हो जाता है जैसे शैत़ान कभी **अल्लाह** तआ़ला के बारे में, कभी तक़्दीर के बारे में, कभी ईमानिय्यात के बारे में, कभी इ़बादात के बारे में, कभी त़हारत व पाकीज़गी के मुआ़मलात के बारे में और कभी त़लाक़ के बारे में वस्वसे डालता रहता है।

1...... फ़तावा रज़विय्या, 15/293

2......نور:١٩.

3......درمنثور،البقرة،تحت الآية:٢٨٤، ٢/١٣١.

www.dawateislami.net

हज़्रते यह्या बिन मुआज़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''शैतान फ़ारिग़ है और तुम मश्ग़ूल व मसरूफ़ हो । शैतान तुम्हें देखता है मगर तुम उसे नहीं देख सकते । तुम शैतान को भूले बैठे हो मगर वोह तुम्हें बुराई में मुब्तला करने से नहीं भूला । तुम्हारा नफ़्स ख़ुद तुम्हारा दुश्मन व मुख़ालिफ़ है और शैतान का मददगार है, इस लिये शैतान और इस के हामियों से जंग करना और उन्हें मग़लूब करना बहुत ज़रूरी है वरना इस के फ़ितना व फ़साद और इस की हलाकत व बरबादी से बचना बहुत मुश्किल है ।''(1)

सरवरे दीं लीजे अपने नातुवानों की ख़बर   नफ़्सो शैतां सय्यिदा कब दबाते जाएंगे

آمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓىٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले, सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अर्ज़ की, कि हम ने सुना और माना तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : रसूल उस पर ईमान लाया जो उस के रब की तरफ़ से उस की तरफ़ नाज़िल किया गया और मुसल्मान भी । सब **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों पर येह कहते हुए ईमान लाए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और उन्हों ने अर्ज़ की : ऐ हमारे रब ! हम ने सुना और माना, (हम पर) तेरी मुआफ़ी हो और तेरी ही तरफ़ फिरना है ।

---

(1) ......منهاج العابدين، العقبة الثالثة، العائق الثالثة، ص٥٥.

www.dawateislami.net

﴾كُلٌّ اٰمَنَ﴿ : **सब ईमान लाए ।** उसूलो ज़रूरिय्याते ईमान के चार मर्तबे हैं :

(1)...... **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और उस की तमाम सिफ़ात पर ईमान लाना ।

(2)...... फ़िरिश्तों पर ईमान लाना और वोह येह है कि यक़ीन करे और माने कि वोह मौजूद हैं, मा'सूम हैं, पाक हैं, **अल्लाह** तआ़ला के और उस के रसूलों के दरमियान अह़काम व पैग़ाम के वासिते़ हैं ।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला की किताबों पर ईमान लाना और येह अ़क़ीदा रखना कि जो किताबें **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाईं और अपने रसूलों के पास वह़ी के ज़रीए़ भेजीं वोह बे शको शुबा सब ह़क़ और सच और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तग़्यीर, तब्दील और तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है और मोह़कम व मुतशाबह पर मुश्तमिल है ।

(4)...... रसूलों पर ईमान लाना और येह अ़क़ीदा रखना कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों की त़रफ़ भेजा, तमाम रसूल और नबी, **अल्लाह** तआ़ला की वह़ी के अमीन हैं, गुनाहों से पाक और मा'सूम हैं, सारी मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं, इन में बा'ज़ ह़ज़रात बा'ज़ से अफ़्ज़ल हैं अलबत्ता नबी होने में सब बराबर हैं और इस बात में हम इन के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं करेंगे । नीज़ हम **अल्लाह** तआ़ला के हर हुक्म को सुनेंगे, मानेंगे और उस की पैरवी करेंगे । याद रखें कि ईमान मुफ़स्सल की बुन्याद येही आयते मुबारका है ।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ
اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا
طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ٚ وَ اغْفِرْ لَنَا ٚ وَ ارْحَمْنَا ٚ اَنْتَ
مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ع ﴿۲۸۶﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर कर तू हमारा मौला है, तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह किसी जान पर उस की ताक़त के बराबर ही बोझ डालता है। किसी जान ने जो अच्छा कमाया वोह उसी के लिये है और किसी जान ने जो बुरा कमाया उस का वबाल उसी पर है। ऐ हमारे रब ! अगर हम भूलें या ख़ता करें तू हमारी गिरिफ़्त न फ़रमा, ऐ हमारे रब ! और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर रखा था, ऐ हमारे रब ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें ताक़त नहीं और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और हमें बख़्श दे और हम पर मेहरबानी फ़रमा, तू हमारा मालिक है पस काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ **: अल्लाह किसी जान पर उस की ताक़त के बराबर ही बोझ डालता है।** **अल्लाह** तआला किसी पर ताक़त से ज़ियादा बोझ नहीं डालता, लिहाज़ा ग़रीब पर ज़कात नहीं, नादार पर हज नहीं, बीमार पर नमाज़ में क़ियाम फ़र्ज़ नहीं, मा'ज़ूर पर जिहाद नहीं अल ग़रज़ इस तरह के बहुत से अहकाम मा'लूम किये जा सकते हैं।

﴿لَهَا مَا كَسَبَتْ﴾ **: किसी जान ने जो (नेक अमल) कमाया वोह उसी के लिये है।** आदमी के अच्छे अमल की जज़ा और उस के बुरे अमल की सज़ा उसी को मिलेगी। येह आयते मुबारका आख़िरत के सवाब व अज़ाब के बारे में है लेकिन उस के साथ इस तरह का मुआमला दुन्या में भी पेश आता रहता है कि हर आदमी अपनी मेहनत का फल पाता है, मेहनत वाले को उस की मेहनत का सिला मिलता है जब कि सुस्त व काहिल और कामचोर को उस की सुस्ती का अन्जाम देखना पड़ता है। लोगों से भलाई करने वाला भलाई पाता है और ज़ुल्म करने वाला ख़ुद भी ज़ियादती का शिकार हो जाता है।

www.dawateislami.net

﴾رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا﴿ : **ऐ हमारे रब ! हमारी गिरिफ़्त न फ़रमा ।** यहां से **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को एक अहम दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वोह इस त़रह़ अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करें । दुआ़ का मफ़्हूम तरजमे से वाज़ेह़ है । इस दुआ़ को ज़बानी याद कर लेना चाहिये । सूरए बक़रह की इन आख़िरी दो आयतों की बड़ी फ़ज़ीलत है । ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने सूरए बक़रह को इन दो आयतों पर ख़त्म फ़रमाया है जो मुझे उस के अ़र्श के ख़ज़ाने से अ़त़ा हुई लिहाज़ा इन्हें सीखो और अपनी औ़रतों को सिखाओ कि येह नमाज़ (या'नी नमाज़ में इन की क़िराअत की जाती है) और क़ुरआन व दुआ़ हैं ।"[1]

﴾كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا﴿ : **जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर रखा था ।** बनी इसराईल पर कई अह़काम हम से ज़ियादा सख़्त थे जैसे बा'ज़ गुनाहों की तौबा में ख़ुदकुशी करना, नापाक कपड़े का जलाना, गन्दी खाल काटना और ज़कात में चौथाई माल देना । उन के मुक़ाबले में हम पर निहायत आसानियां हैं ।[2]

लिहाज़ा ए'तिराफ़े ने'मत के तौर पर यहां दुआ़ में अ़र्ज़ किया जा रहा है कि ऐ हमारे रब ! और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर रखा था । याद रहे कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर येह करम नवाज़ियां ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में हैं जैसा कि सूरए आ'राफ़ आयत **157** में सराह़त के साथ मज़्कूर है ।

---

1 ......دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فضل اول سورة البقرة... الخ، ٢/٥٤٢، الحدیث: ٣٣٩٠.

2 ......خازن، البقرة، تحت الآیة: ٢٨٦، ١/٢٢٧.

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰن

सूरए आले इमरान का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

सूरए आले इमरान मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई है।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस में **20** रुकूअ़ और **200** आयतें हैं।

''आले इमरान'' नाम रखे जाने की वज्ह

आल का एक मा'ना ''औलाद'' है और इस सूरत के चौथे और पांचवें रुकूअ़ में आयत नम्बर **33** ता **54** में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वालिद इमरान की आल की सीरत और उन के फ़ज़ाइल का ज़िक्र है, इस मुनासबत से इस सूरत का नाम ''सूरए आले इमरान'' रखा गया है।

सूरए आले इमरान के फ़ज़ाइल

इस सूरत के मुख़्तलिफ़ फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से **3** फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते नवास बिन समआ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन क़ुरआने मजीद और इस पर अ़मल करने वालों को लाया जाएगा, उन के आगे सूरए बक़रह और सूरए आले इमरान होंगी।'' ह़ज़रते नवास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन सूरतों के लिये तीन मिसालें बयान फ़रमाईं जिन्हें मैं आज तक नहीं भूला, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह दोनों सूरतें ऐसी हैं जैसे दो बादल हों या दो ऐसे साएबान हों जिन के दरमियान रोशनी हो या सफ़ बांधे हुए दो परिन्दों की क़ितारें हों, येह दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेंगी।''[2]

---

1 ......خازن، ال عمران، ۱/۲۲۸.

2 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، ص۴۰۳، الحدیث: ۲۵۳(۸۰۵).

www.dawateislami.net

(2)...... हज़रते उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स रात में सूरए आले इमरान की आख़िरी आयतें पढ़ेगा तो उस के लिये पूरी रात इबादत करने का सवाब लिखा जाएगा।"[1]

(3)...... हज़रते मक्हूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन सूरए आले इमरान की तिलावत करता है तो रात तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़एं करते रहते हैं।"[2]

सूरए आले इमरान के मज़ामीन

इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में हज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की विलादत, इन की परवरिश, जिस जगह हज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से रिज़्क़ मिलता वहां खड़े हो कर हज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का औलाद के लिये दुआ़ करना, हज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की विलादत की बिशारत मिलना, और हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ातो वाक़िआ़त का बयान है। इस के इ़लावा इस सूरत में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

(1)...... **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआन की सदाक़त पर दलाइल दिये गए हैं।

(2)...... **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में मक़्बूल दीन सिर्फ़ इस्लाम है।

(3)...... हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शान के बारे में झगड़ने वाले, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत को झुटलाने वाले और क़ुरआने मजीद का इन्कार करने वाले नजरान के ईसाइयों से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की होने वाली गुफ़्तगू बयान की गई है।

(4)...... मीसाक़ के दिन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में अ़हद लेने का वाक़िआ़ बयान किया गया है।

(5)...... मक्कए मुकर्रमा और ख़ानए का'बा की फ़ज़ीलत और इस उम्मत के बाक़ी तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल होने का बयान है।

(6)...... यहूदियों पर ज़िल्लतो ख़्वारी मुसल्लत़ किये जाने का ज़िक्र है।

1 ......دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل ال عمران، ۲/۵۴۴، الحدیث: ۳۳۹۶.
2 ......دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل ال عمران، ۲/۵۴۴، الحدیث: ۳۳۹۷.

www.dawateislami.net

(7)...... जिहाद की फ़र्ज़िय्यत और सूद की हुरमत से मुतअ़ल्लिक़ शर्ई अह़काम और ज़कात न देने वालों की सज़ा के बारे में बयान किया गया है।

(8)...... ग़ज़्वए बद्र और ग़ज़्वए उहुद का तज़्किरा और इस से ह़ासिल होने वाली इ़ब्रतो नसीह़त का बयान है।

(9)...... उम्मत की ख़ैर ख़्वाही में माल ख़र्च करने, लोगों पर एह़सान करने और बुख़्ल न करने के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं।

(10)...... शहीदों के ज़िन्दा होने, उन्हें रिज़्क़ मिलने और उन का **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल ह़ासिल होने पर ख़ुश होने का बयान है।

(11)...... और इस सूरत के आख़िर में ज़मीनो आस्मान और इन में मौजूद अ़जाइबात और असरार में ग़ौरो फ़िक्र करने की दा'वत दी गई है, नीज़ जिहाद पर सब्र करने और इस्लामी सरह़दों की निगहबानी करने का हुक्म दिया गया है।

सूरए बक़रह के साथ मुनासबत

सूरए आले इमरान की अपने से मा क़ब्ल सूरत "बक़रह" के साथ कई त़रह़ से मुनासबत है, जैसे दोनों सूरतों के शुरूअ़ में क़ुरआने पाक के औसाफ़ बयान किये गए हैं। सूरए बक़रह में क़ुरआने पाक नाज़िल होने का इज्माली त़ौर पर ज़िक्र है और सूरए आले इमरान में क़ुरआने मजीद की आयात की तक़्सीम बयान की गई है। सूरए बक़रह में जिहाद का इज्माली त़ौर पर ज़िक्र है और सूरए आले इमरान में ग़ज़्वए उहुद का वाक़िआ़ तफ़्सील से बयान किया गया है। सूरए बक़रह में जिन शर्ई अह़काम को इज्माली त़ौर पर बयान किया गया है उन्हें सूरए आले इमरान में तफ़्सील के साथ बयान किया गया है। सूरए बक़रह में यहूदियों का ज़िक्र है सूरए आले इमरान में ईसाइयों का ज़िक्र किया गया है।(1)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

1 ......تناسق الدرر، سورة آل عمران، ص ٧٠-٧٣.

www.dawateislami.net

الٓمّٓ ﴿۱﴾ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ﴿۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : الٓمّٓ। **अल्लाह** वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं (वोह) खुद ज़िन्दा, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है।

﴾الٓمّٓ :﴿ इन हुरूफ़ को "हुरूफ़े मुक़त्तआ़त" कहते हैं, इन की मुराद **अल्लाह** तआ़ला ही बेहतर जानता है।

﴾اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ : **अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।**﴿ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत नजरान नामी अ़लाक़े के वफ़्द के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो साठ अफ़राद पर मुश्तमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन क़ौम के बड़े मुक़्तदा व पेश्वा आदमी थे। उन तीन में से एक "अबू ह़ारिसा बिन अ़ल्क़मा" था जो ईसाइयों के तमाम उ़लमा और पादरियों का पेश्वाए आ'ज़म था, ईसाई हुक्मरान भी उस की इ़ज़्ज़त करते थे। येह तमाम लोग उ़म्दा और क़ीमती लिबास पहन कर बड़ी शानो शौकत से सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुनाज़रा करने के इरादे से आए। जब येह मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुए तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा रहे थे। उन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आ गया और उन्हों ने भी मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही में मशरिक़ या'नी बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ मुंह कर के अपनी नमाज़ शुरूअ़ कर दी। नमाज़ के बा'द नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू शुरूअ़ की। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम इस्लाम ले आओ।" उन्हों ने जवाब दिया कि "हम आप से पहले इस्लाम ला चुके हैं।" सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारा इस्लाम का दा'वा ग़लत़ है और तुम्हारे इस्लाम के ग़लत़ होने का सबब येह है कि तुम कहते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की औलाद है, नीज़ तुम्हारा सलीब की पूजा करना भी इस्लाम से मानेअ़ है और तुम्हारा ख़िन्ज़ीर खाना भी इस्लाम की राह में रुकावट है।" इस के जवाब में उन्हों ने कहा कि "अगर ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام खुदा के बेटे न हों तो बताइये उन का बाप कौन है?" फिर वोह सब बोलने लगे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह या'नी मिलता जुलता होता है ?" उन्हों ने इक़रार किया । फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब عَزَّوَجَلَّ "حَيٌّ لَا يَمُوْتُ" है, उस के लिये मौत ना मुम्किन है और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर मौत आने वाली है ?" उन्हों ने इस का भी इक़रार किया । फिर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब عَزَّوَجَلَّ बन्दों का कारसाज़, उन की हक़ीक़ी हिफ़ाज़त करने वाला और रोज़ी देने वाला है ?" उन्हों ने कहा : जी हां । इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** भी ऐसे ही हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं ।" इस पर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि **अल्लाह** तआला पर आस्मान व ज़मीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं ?" उन्हों ने इक़रार किया । हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बताए बिग़ैर इस में से कुछ जानते हैं ?" उन्हों ने कहा : नहीं । रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** हम्ल में रहे और पैदा होने वालों की त़रह पैदा हुए और बच्चों की त़रह उन्हें ग़िज़ा दी गई और वोह खाते पीते थे और उन में भी बशरी तक़ाज़े थे ?" ईसाइयों ने इस का इक़रार किया । इस गुफ़्त्गू पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन तमाम चीज़ों के बा वुजूद फिर हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** कैसे ख़ुदा हो सकते हैं जैसा कि तुम्हारा गुमान है ?" इस पर वोह सब ख़ामोश रह गए और उन से कोई जवाब न बन सका । इस पर सूरए आले इमरान की शुरूअ़ से ले कर तक़रीबन अस्सी **80** आयतें नाज़िल हुईं ।(1)

इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि सह़ीह़ अ़क़ाइद को साबित करने और उन के दिफ़ाअ़ के लिये मुनाज़रा करना सुन्नत है ।

"ह़य्य" और "क़य्यूम" का मा'ना

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की दो सिफ़ात "**ह़य्य**" और "**क़य्यूम**" का बयान है । **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़ात में "**ह़य्य**" "दाइम व बाक़ी" के मा'ना में है, या'नी इस का मा'ना है कि "ऐसा हमेशा रहने वाला जिस की मौत मुम्किन न हो ।" जब कि "**क़य्यूम**" वोह है जो क़ाइम बिज़्ज़ात या'नी बिग़ैर किसी दूसरे की मोह़ताजी और तसर्रुफ़ के ख़ुद क़ाइम हो और मख़्लूक़ की दुन्या और आख़िरत की ज़िन्दगी की ह़ाजतों की तदबीर फ़रमाए ।

(1) ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۲، ۲۲۸/۱.

www.dawateislami.net

نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَ اَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ
وَ الْاِنْجِیْلَ ﴿۳﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ اَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने तुम पर येह सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील उतारी। लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर हुए उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** ग़ालिब बदला लेने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने तुम पर येह सच्ची किताब उतारी जो पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उस ने इस से पहले तौरात और इन्जील नाज़िल फ़रमाई। लोगों को हिदायत देती और (**अल्लाह** ने) ह़क़ व बातिल में फ़र्क़ उतारा। बेशक वोह लोग जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतों का इन्कार किया उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** ग़ालिब बदला लेने वाला है।

﴾مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ﴿ **: अपने से पहले की किताबों की तस्दीक़ करती है।** इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआने पाक के बा'द कोई किताब आने वाली नहीं और न कोई नया नबी तशरीफ़ लाने वाला है क्यूं कि क़ुरआने मजीद ने गुज़श्ता किताबों की तस्दीक़ की है, बा'द में न किसी किताब के आने का तज़्किरा किया और न इस की बिशारत दी जब कि क़ुरआने पाक को चूंकि तौरात व इन्जील के बा'द आना था इस लिये इन किताबों में क़ुरआन की बिशारत पहले से दे दी गई।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ ؕ ﴿۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आस्मान में।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं, न ज़मीन में और न ही आस्मान में।

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ﴾ **: बेशक अल्लाह पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं ।** आस्मान व ज़मीन की हर चीज़, हर वक़्त, तमाम तर तफ़्सीलात के साथ बिग़ैर किसी की ता'लीम व ख़बर के जानना **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़त है, येह वस्फ़ किसी बन्दे में नहीं, क्यूं कि मख़्लूक़ को जो इल्म है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बताने से है और वोह भी मुतनाही और क़ाबिले फ़ना है, या'नी उस की कोई न कोई इन्तिहा है और वोह ख़त्म भी हो सकता है, नीज़ वोह तब से है जब से **अल्लाह** तआ़ला ने बताया और तब तक है जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे । ऐसे इल्म को **इल्मे अ़ताई** कहते हैं, जैसे **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया :

وَ كَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम यूंही इब्राहीम को आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत दिखाते हैं ।

इस आयत में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام को मुशाहदए अर्ज़ो समा के ज़रीए इल्म अ़ता किये जाने का ज़िक्र है ।

هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही है जो माओं के पेटों में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरत बनाता है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं (वोह) ज़बर दस्त है, ह़िक्मत वाला है ।

﴿هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ﴾ **: वोही है जो माओं के पेटों में तुम्हारी सूरत बनाता है ।** एक बे क़द्र चीज़ को इन्सानी शक्ल में ढाल देना, उसे मर्द या औ़रत, गोरा या काला, ख़ूब सूरत या बद सूरत बनाना **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से है । मां के पेट में बच्चे की शक्ल बनाना, उस

1 ......انعام:٧٥.

www.dawateislami.net

में रूह़ फूंकना, उस की तक़्दीर लिखना येह सब कुछ फ़िरिश्ता करता है लेकिन फ़िरिश्ता चूंकि **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म और इख़्तियार से करता है लिहाज़ा फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है जो माओं के पेटों में तुम्हारी सूरतें बनाता है।'' चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से हर एक की ख़िल्क़त उस की मां के पेट में चालीस दिन तक जम्अ़ रखी जाती है, फिर वोह ख़ून के लोथड़े की सूरत हो जाता है, फिर गोश्त की बोटी की त़रह़ हो जाता है, फिर **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता भेजता है जिसे चार चीज़ों का हुक्म होता है, उस से कहा जाता कि इस का अ़मल, रिज़्क़, दुन्या में रहने की मुद्दत और बद बख़्त या सआ़दत मन्द होना लिखो। फिर उस में रूह़ फूंक दी जाती है।''(1)

هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑦

وقف لازم وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقف منزل

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम पर येह किताब उतारी इस की कुछ आयतें साफ़ मा'ना रखती हैं वोह किताब की अस्ल हैं और दूसरी वोह हैं जिन के मा'ना में इश्तिबाह है वोह जिन के दिलों में कजी है वोह इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते हैं गुमराही चाहने और उस का पहलू ढूंडने को और उस का ठीक पहलू **अल्लाह** ही को मा'लूम है और पुख़्ता इ़ल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब के पास से है और नसीहत नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले।

(1)......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکۃ، ۳۸۱/۲، الحدیث: ۳۲۰۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही है जिस ने तुम पर येह किताब उतारी इस की कुछ आयतें साफ़ मा'ना रखती हैं वोह किताब की अस्ल हैं और दूसरी वोह हैं जिन के मा'ना में इश्तिबाह है तो वोह लोग जिन के दिलों में टेढ़ापन है वोह (लोगों में) फ़ितना फैलाने की ग़रज़ से और उन आयात का (ग़लत़) मा'ना तलाश करने के लिये उन मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़ते हैं ह़ालां कि उन का सह़ीह़ मत़लब **अल्लाह** ही को मा'लूम है और पुख़्ता इ़ल्म वाले कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए, येह सब हमारे रब की त़रफ़ से है और अ़क़्ल वाले ही नसीह़त मानते हैं।

﴿اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ : **साफ़ मा'ना रखने वाली आयतें।**﴾ क़ुरआने पाक में दो त़रह़ की आयात हैं :

(1)...... मोह़कम : या'नी जिन के मआ़नी में कोई इश्तिबाह नहीं बल्कि क़ुरआन समझने की अहलिय्यत रखने वाले को आसानी से समझ आ जाते हैं।

(2)...... मुतशाबेह : या'नी वोह आयात जिन के ज़ाहिरी मा'ना या तो समझ ही नहीं आते जैसे हुरूफ़े मुक़त्तआ़त, या'नी बा'ज़ सूरतों के शुरूअ़ में आने वाले हुरूफ़ जैसे सूरए बक़रह के शुरूअ़ में "الٓمّٓ" है और या मुतशाबह वोह है जिस के ज़ाहिरी मा'ना समझ तो आते हैं लेकिन वोह मुराद नहीं होते जैसे **अल्लाह** तआ़ला के "یَدٌ" या'नी "हाथ" और "وَجْهٌ" या'नी "चेहरे" वाली आयात। इन के ज़ाहिरी मा'ना मा'लूम तो हैं लेकिन येह मुराद नहीं, जब कि इन के ह़क़ीक़ी मुरादी मा'ना में कई एह़तिमाल हो सकते हैं और इन में से कौन सा मा'ना **अल्लाह** तआ़ला की मुराद है येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है या वोह जिसे **अल्लाह** तआ़ला इस का इ़ल्म दे। पहली क़िस्म या'नी **मोह़कम** के बारे में फ़रमाया कि "येह किताब की अस्ल हैं।" या'नी अह़कामे शरइ़य्या में इन की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है और ह़लाल व ह़राम में इन्हीं पर अ़मल किया जाता है।

﴿اَلَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ : **वोह लोग जिन के दिलों में टेढ़ापन है।**﴾ यहां से दो गुरौहों का तज़्किरा है। **पहला गुरौह** गुमराह और बद मज़हब लोगों का है जो अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के पाबन्द हैं और मुतशाबेह आयात के ज़ाहिरी मा'ना लेते हैं जो कि सरीह़ गुमराही बल्कि बा'ज़ सूरतों में कुफ़्र होता है या ऐसे लोग मुतशाबेह आयात की ग़लत़ तावील करते हैं। **दूसरा गुरौह** सच्चे मोमिनों का है जो मुतशाबेह आयात के मआ़नी को समझे या न समझे लेकिन वोह येह अ़क़ीदा रखते हैं कि मोह़कम व मुतशाबेह सारे का सारा क़ुरआन हमारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और हम उस पर ईमान रखते हैं और जो मा'ना मुतशाबेह की मुराद हैं वोह ह़क़ हैं और उस का नाज़िल फ़रमाना ह़िक्मत है।

www.dawateislami.net

किसी को मुतशाबिहात का इ़ल्म अ़ता हुवा या नहीं

अल्लाह तआ़ला किसी को मुतशाबिहात का इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है या नहीं ? इस के बारे में मुह़क़्क़िक़ीन उ़लमा ने फ़रमाया है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान इस से अरफ़्अ़ो आ'ला है कि **अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी इस का इ़ल्म अ़ता न फ़रमाए बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم को भी इस का इ़ल्म मिलता है।

﴿وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ : **और इ़ल्म में पुख़्ता लोग ।**﴾ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि रासिख़ फ़िल इ़ल्म वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इ़ल्म की पैरवी करने वाला हो। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि रासिख़ फ़िल इ़ल्म वोह हैं जिन में येह चार सिफ़तें हों : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का तक़्वा, (2) लोगों के साथ तवाज़ोअ़, (3) दुन्या से ज़ोह्द, (4) नफ़्स से मुजाहदा।[1]

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते थे कि "मैं रासिख़ीन फ़िल इ़ल्म से हूं।" और ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी फ़रमाया कि "मैं उन में से हूं जो मुतशाबेह की तावील जानते हैं।"[2]

﴿اُولُوا الْاَلْبَابِ : **अ़क़्ल वाले ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि "अ़क़्ल वाले ही नसीह़त मानते हैं।" इस से मा'लूम हुवा कि अ़क़्ल बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और ख़ूबी है, अ़क़्ल के ज़रीए़ हिदायत व नसीह़त मिलती है। लेकिन येह याद रहे कि जिस अ़क़्ल से हिदायत न मिले वोह बद तरीन ह़माक़त है, जैसे त़ाक़त अच्छी चीज़ है लेकिन जो त़ाक़त ज़ुल्म के लिये इस्ति'माल हो वोह कमज़ोरी से भी बदतर है।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ⑧

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۷، ۱/۲۳۲.

2 ......تفسير قرطبى، ال عمران، تحت الآية: ۷، ۲/۱۵، الجزء الرابع.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़त़ा कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब तू ने हमें हिदायत अ़त़ा फ़रमाई है, इस के बा'द हमारे दिलों को टेढ़ा न कर और हमें अपने पास से रह़मत अ़त़ा फ़रमा, बेशक तू बड़ा अ़त़ा फ़रमाने वाला है।

﴾رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا : **ऐ हमारे रब ! हमारे दिलों को टेढ़ा न कर।**﴿ हिदायत मिलना बहुत बड़ी चीज़ है लेकिन इस का फ़ाएदा तभी है जब येह बाक़ी भी रहे। अगर सारी ज़िन्दगी कोई हिदायत पर रहे लेकिन मरते वक़्त हिदायत छिन जाए तो ऐसी हिदायत का कोई फ़ाएदा नहीं। ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْمِ**" आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।(1)

इसी लिये बड़े से बड़ा मोमिन भी अपने ख़ातिमे के बारे में ख़ौफ़ करता रहे और लम्ह़ा भर के लिये भी बुरे ख़ातिमे से बे ख़ौफ़ न हो। इस आयते मुबारका का ब कसरत पढ़ते रहना या'नी येह दुआ़ मांगते रहना भी ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये मुफ़ीद है।(2)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٩﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे बेशक तू सब लोगों को जम्अ़ करने वाला है उस दिन के लिये जिस में कोई शुब्हा नहीं बेशक **अल्लाह** का वा'दा नहीं बदलता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! बेशक तू सब लोगों को उस दिन जम्अ़ करने वाला है जिस में कोई शुबा नहीं, बेशक **अल्लाह** वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

---

1 ......بخاری، کتاب القدر، باب العمل بالخواتیم، ٤/٢٧٤، الحدیث: ٦٦٠٧.

2 ...... ख़ातिमा बिलख़ैर की फ़िक्र उजागर करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "बुरे ख़ातिमे के अस्बाब" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ﴾ : **बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता ।** अल्लाह तआ़ला झूट से पाक है लिहाज़ा वोह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं फ़रमाता । **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ झूट बोलने की निस्बत क़त़ई कुफ़्र है और येह कहना कि "झूट बोल सकता है" येह भी कुफ़्र है । तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या की 15वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की किताब "سُبْحٰنُ السُّبُّوْحِ عَنْ كِذْبِ عَیْبٍ مَقْبُوْحٍ (झूट जैसे बद तरीन ऐ़ब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाक होने का बयान)" और "دَامَانِ بَاغِ سُبْحٰنُ السُّبُّوْحِ (रिसाला **सुब्ह़ानुस्सुब्बूह़** के बाग़ का दामन)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَیْــٴًـاؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِۙ ⑩ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَۙ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْؕ وَ اللّٰهُ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ⑪

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो काफ़िर हुए उन के माल और उन की औलाद **अल्लाह** से उन्हें कुछ न बचा सकेंगे और वोही दोज़ख़ के ईंधन हैं । जैसे फ़िरऔ़न वालों और उन से अगलों का त़रीक़ा, उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो **अल्लाह** ने उन के गुनाहों पर उन को पकड़ा और **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक काफ़िरों के माल और उन की औलाद **अल्लाह** के अ़ज़ाब से उन्हें कुछ भी बचा न सकेंगे और वोही दोज़ख़ का ईंधन हैं । जैसा फ़िरऔ़न के मानने वालों और उन से पहले लोगों का त़रीक़ा था, उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो **अल्लाह** ने उन के गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और **अल्लाह** का अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है ।

www.dawateislami.net

﴿كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ﴾ **: जैसा फ़िरऔ़न के मानने वालों और उन से पहले लोगों का त़रीक़ा था ।** या'नी नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने के काफ़िरों का त़रीक़ा वैसा ही है जैसा फ़िरऔ़न के मानने वालों और उन से पहले लोगों का त़रीक़ा था कि उन्हों ने भी हमारी आयतों को झुटलाया और इन काफ़िरों ने भी हमारी आयात को झुटलाया, तो जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने उन के गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया इसी त़रह़ इन के गुनाहों पर इन की भी पकड़ फ़रमाएगा और **अल्लाह** तआ़ला की आयतों और उस के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाने वालों पर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है ।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَ تُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमा दो, काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़्लूब होगे और दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाओगे और वोह बहुत ही बुरा बिछोना ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इन काफ़िरों से कह दो कि अ़न्क़रीब तुम मग़्लूब हो जाओगे और दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाओगे और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है ।

﴿سَتُغْلَبُوْنَ﴾ **: अ़न्क़रीब तुम मग़्लूब हो जाओगे ।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब बद्र में कुफ़्फ़ार को रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शिकस्त दे कर मदीनए त़य्यिबा वापस तशरीफ़ लाए तो यहूदियों ने कहा कि ''क़ुरैश तो फ़ुनूने ह़र्ब (जंगी त़रीक़ों) से ना आशना हैं, (इसी लिये शिकस्त खा गए ।) अगर हम से मुक़ाबला हुवा तो मा'लूम हो जाएगा कि लड़ने वाले कैसे होते हैं ।'' इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई[1] और उन्हें येह ग़ैबी ख़बर दी गई कि ''वोह दुन्या में मग़्लूब होंगे, क़त्ल किये जाएंगे, गिरिफ़्तार किये जाएंगे और उन पर जिज़्या मुक़र्रर किया जाएगा और आख़िरत में दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाएंगे ।'' चुनान्चे ऐसा ही हुवा और कुछ ही अ़र्से में यहूदी क़त्ल भी हुए, गिरिफ़्तार भी किये गए और अहले ख़ैबर पर जिज़्या भी मुक़र्रर किया गया और क़ियामत के दिन उन्हें जहन्नम की त़रफ़ हांका जाएगा ।

1 ......در منثور، ال عمران، تحت الآية: ١٢، ٢/١٥٨.

www.dawateislami.net

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِیْ فِئَتَیْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ اُخْرٰی كَافِرَةٌ یَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَیْهِمْ رَاْیَ الْعَیْنِ ؕ وَ اللّٰهُ یُؤَیِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِی الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी दो गुरौहों में जो आपस में भिड़ पड़े एक जथ्था **अल्लाह** की राह में लड़ता और दूसरा काफ़िर कि उन्हें आंखों देखा अपने से दूना समझें और **अल्लाह** अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है बेशक इस में अक़्ल मन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारे लिये उन दो गुरौहों में बड़ी निशानी है जिन्हों ने आपस में जंग की। (उन में) एक गुरौह तो **अल्लाह** की राह में लड़ रहा था और दूसरा गुरौह काफ़िरों का था जो खुली आंखों से मुसल्मानों को ख़ुद से दुगना देख रहे थे और **अल्लाह** अपनी मदद के साथ जिस की चाहता है ताईद फ़रमाता है। बेशक इस में अक़्ल मन्दों के लिये बड़ी इब्रत है।

﴾قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ : **बेशक तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है।**﴿ येह आयत ग़ज़्वए बद्र के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई और इस में यहूदियों या तमाम काफ़िरों या मुसल्मानों या मज़्कूरा बाला सब को ख़िताब है क्यूं कि ग़ज़्वए बद्र में मुसल्मानों और काफ़िरों सब के लिये इब्रतो नसीहत थी। ग़ज़्वए बद्र **17** रमज़ान **2** हिजरी बरोज़ जुमुआ हुवा। इस में कुफ़्फ़ार तक़रीबन एक हज़ार थे और उन के साथ बहुत ज़ियादा सामाने जंग था जब कि मुसल्मान तीन सो तेरह **(313)** थे और इन में से भी अक्सर निहत्ते थे, मुसल्मानों के पास दो घोड़े, छे ज़िरहें, आठ तलवारें और सत्तर ऊंट थे।(1)

इस के बा वुजूद मुसल्मानों को कामिल फ़त्ह हुई और कुफ़्फ़ार को शिकस्ते फ़ाश, लिहाज़ा येह फ़त्ह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से बड़ी निशानी है।

﴾يَرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ : **वोह उन्हें ख़ुद से दुगना देख रहे थे।**﴿ जंगे बद्र में **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों की कई ए'तिबार से मदद फ़रमाई एक तो फ़िरिश्ते नाज़िल फ़रमाए, दूसरा येह हुवा

1 ......جمل، ال عمران، تحت الآية: ١٣، ١/٣٧٦.

www.dawateislami.net

कि पहले **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों की नज़रों में काफ़िरों को और काफ़िरों की नज़रों में मुसल्मानों को कम कर के दिखाया ताकि मुसल्मानों का ह़ौसला बढ़े और काफ़िर मुसल्मानों को क़लील देख कर लड़ाई के लिये आगे बढ़ें और मुसल्मानों से जंग शुरूअ़ करने में बुज़दिली का मुज़ाहरा न करें। येह लड़ाई शुरूअ़ होने से पहले हुवा फिर जब लड़ाई शुरूअ़ हो गई तो इस आयत में मज़्कूर वाक़िआ़ रूनुमा हुवा।(1)

कि उन्हों ने इन को दुगना देखा। इस जुम्ले के कई मा'ना किये गए हैं : (1) कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को ख़ुद से दुगना देखा या'नी मुसल्मानों की ता'दाद कुफ़्फ़ार को दो हज़ार नज़र आई। (2) कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को मुसल्मानों की ता'दाद से दुगना देखा या'नी मुसल्मानों की ता'दाद उन्हें **626** नज़र आई ह़ालां कि वोह **313** थे। (3) मुसल्मानों ने कुफ़्फ़ार को ख़ुद से दुगना देखा या'नी मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार की ता'दाद **626** नज़र आई ह़ालां कि वोह एक हज़ार थे।(2)

बहर सूरत येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ख़ुसूसी ताईद थी। इसी पर फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी मदद से जिस की चाहता है ताईद फ़रमाता है ख़्वाह उस की ता'दाद क़लील ही हो और सरो सामान की कितनी ही कमी हो।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ وَ الْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की मह़ब्बत औ़रतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी है और **अल्लाह** है जिस के पास अच्छा ठिकाना।

1 ......جمل على الجلالين، ال عمران، تحت الآية: ١٣، ٣٧٧/١.

2 ......تفسير كبير، ال عمران، تحت الآية: ١٣، ١٥٧/٣-١٥٨.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोगों के लिये उन की ख़्वाहिशात की महब्बत को आरास्ता कर दिया गया या'नी औरतों और बेटों और सोने चांदी के जम्अ किये हुए ढेरों और निशान लगाए गए घोड़ों और मवेशियों और खेतियों को (उन के लिये आरास्ता कर दिया गया।) येह सब दुन्यवी ज़िन्दगी का साज़ो सामान है और सिर्फ़ **अल्लाह** के पास अच्छा ठिकाना है।

﴿زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ﴾ : **लोगों के लिये उन की ख़्वाहिशात की महब्बत को आरास्ता कर दिया गया।** लोगों के लिये मन पसन्द चीज़ों की महब्बत को ख़ुशनुमा बना दिया गया, चुनान्चे औरतों, बेटों, माल व औलाद, सोना चांदी, कारोबार, बाग़ात, उम्दा सुवारियों और बेहतरीन मकानात की महब्बत लोगों के दिलों में रची हुई है और इस आरास्ता किये जाने और इन चीज़ों की महब्बत पैदा किये जाने का मक़्सद येह है कि ख़्वाहिश परस्तों और ख़ुदा परस्तों के दरमियान फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाए, चुनान्चे सूरए कहफ़, आयत **7** में सराहत से इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने ज़मीन पर मौजूद चीज़ों को इस लिये ज़ीनत बनाया ताकि हम लोगों को आज़्माएं कि उन में अमल के ए'तिबार से कौन अच्छा है।

चुनान्चे येह चीज़ें ऐसी मरग़ूब हुईं कि काफ़िर तो बिल्कुल ही आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गए और कुफ़्र में जा पड़े जब कि दूसरे लोग भी इन्ही चीज़ों की महब्बतों के असीर हो गए हालां कि येह तो दुन्यावी ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान है कि इस से कुछ अ़र्से नफ़्अ़ पहुंचता है फिर येह सामाने दुन्या फ़ना हो जाता है। इन्सान को चाहिये कि दुन्या के सामान को ऐसे काम में ख़र्च करे जिस में उस की आ़क़िबत की दुरुस्ती और आख़िरत की सआ़दत हो। येह तमाम चीज़ें अगर दुन्या के लिये रखी जाएं तो दुन्या हैं और अगर इताअ़ते इलाही में मददो मुआ़वनत के लिये रखी जाएं तो दीन बन जाती हैं जैसे बीवी, औलाद, माल, सुवारी, ज़मीन वग़ैरा तमाम चीज़ें अगर अपने दीन की हिफ़ाज़त और **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त में मुआ़वनत के लिये हों तो येही चीज़ें क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ हैं जैसे हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का माल दुन्या नहीं, दीन था। इस के साथ फ़रमाया कि दुन्या का सामान तो महज़ एक सामान ही है, रग़बतो महब्बत और हि़र्सो त़लब के क़ाबिल तो रिज़ाए इलाही का मक़ाम या'नी जन्नत है लिहाज़ा इस की रग़बत करनी चाहिये और इस के हुसूल की कोशिश करनी चाहिये। हमारे लिये इस आयत

1 ......الكهف:٧.

www.dawateislami.net

में बहुत आ'ला दर्स है। हम मुसल्मानों की अक्सरिय्यत भी इन्ही दुन्यावी चीज़ों की मह़ब्बत में मुब्तला है, अहले ख़ाना और औलाद की वज्ह से ह़राम कमाना, मालो दौलत को अपना मक़्सूदे अस्ली समझना, इसी के लिये दिन रात कोशिश करना, बैंक बैलेन्स बढ़ाना, अपने असासों में इज़ाफ़ा करना, बेहतरीन लिबास, उ़म्दा मकानात और शानदार गाड़ी ही तक़रीबन हर किसी का नस्बुल ऐन और मक़्सूदो मत़लूब है। इस आयते मुबारका को सामने रख कर हमें भी अपनी ज़िन्दगी पर कुछ ग़ौर करना चाहिये।(1)

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَیْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْؕ لِلَّذِیْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا وَ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِؕ وَ اللّٰهُ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِۚ ﴿۱۵﴾ اَلَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِۚ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज़ बता दूं परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और सुथरी बीबियां और **अल्लाह** की ख़ुशनूदी और **अल्लाह** बन्दों को देखता है। वोह जो कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआ़फ़ कर और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमाओ, क्या मैं तुम्हें इन चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूं ? (सुनो, वोह येह है कि) परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं उन में वोह हमेशा रहेंगे और (उन के लिये) पाकीज़ा बीवियां और **अल्लाह** की ख़ुशनूदी है और **अल्लाह** बन्दों को देख रहा है। वोह जो कहते हैं : ऐ हमारे रब ! हम ईमान लाए हैं, तो तू हमारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

1...... अपनी ज़िन्दगी क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात के मुत़ाबिक़ गुज़ारने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा ''नेक आ'माल'' नामी रिसाला पर अ़मल बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

﴿قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ : **तुम फ़रमाओ, क्या मैं तुम्हें इन चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूं ?**﴾ سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुन्या की ह़क़ीक़त बयान करने के बा'द कितने दिल नशीन और ह़सीन अन्दाज़ में जन्नत और रिज़ाए इलाही की त़रफ़ दा'वत दी जा रही है चुनान्चे इस फ़रमान का ख़ुलासा येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, दुन्या की ह़क़ीक़त और फ़नाइय्यत समझाने के बा'द तुम लोगों से फ़रमा दो कि क्या मैं तुम्हें औ़रतों, बेटों, माल व औलाद, सोना चांदी, कारोबार, बाग़ात, उ़म्दा सुवारियों और बेहतरीन मकानात से अच्छी, उ़म्दा और बेहतर चीज़ बता दूं ? सुनो, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब का घर या'नी जन्नत है जिस में दूध, शह्द, शराब की नहरें बह रही हैं, जिस में ऐसी पाकीज़ा बीवियां होंगी जो हर क़िस्म के ज़नाना अ़वारिज़ और हर ना पसन्द व क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक होंगी, और उस जन्नत में परहेज़ गारों को हमेशा रहना है और इन सब से बढ़ कर येह कि वहां **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और ख़ुशनूदी है जो सब से आ'ला ने'मत है। **दुआ़ :** ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, हमारे दिलों से दुन्या की मह़ब्बत निकाल कर अपनी मह़ब्बत डाल दे, दुन्या की ह़िर्स निकाल कर आख़िरत की त़लब दाख़िल कर दे।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब्र वाले और सच्चे और अदब वाले और राहे ख़ुदा में ख़र्च्ने वाले और पिछले पहरे मुआ़फ़ी मांगने वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सब्र करने वाले और सच्चे और फ़रमां बरदार और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले और रात के आख़िरी ह़िस्से में मग़्फ़िरत मांगने वाले (हैं)।

﴿اَلصّٰبِرِيْنَ : **सब्र करने वाले।**﴾ दुन्या के त़ालिबों का ज़िक्र करने के बा'द मौला عَزَّوَجَلَّ की त़लब रखने वाले मुत्तक़ीन का बयान किया गया था। यहां उन के कुछ औसाफ़ बयान किये जा रहे हैं :

(1)...... मुत्तक़ी लोग इ़बादतो रियाज़त के बा वुजूद अपनी इत़ाअ़त पर नाज़ नहीं करते बल्कि अपने मौला عَزَّوَجَلَّ से गुनाहों की मग़्फ़िरत और अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात का सुवाल करते हैं।

www.dawateislami.net

(2)...... मुत्तक़ी लोग ताअ़तों और मुसीबतों पर सब्र करते हैं नीज़ गुनाहों से बचने पर डटे रहते हैं।

(3)...... मुत्तक़ी लोगों के क़ौल, इरादे और निय्यतें सब सच्ची होती हैं।

(4)...... मुत्तक़ी लोग **अल्लाह** तआ़ला के सच्चे फ़रमां बरदार होते हैं।

(5)...... मुत्तक़ी लोग राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने वाले होते हैं।

(6)...... मुत्तक़ी लोग रातों को उठ उठ कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हैं, रब तआ़ला के हुज़ूर गिर्या व ज़ारी और मुनाजात करते हैं। याद रखें कि रात का आख़िरी पहर निहायत फ़ज़ीलत वाला है, येह वक़्त ख़ल्वत और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का है। ह़ज़रते लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया था कि "मुर्ग़ से कम न रहना कि वोह तो सह़री के वक़्त निदा करे और तुम सोते रहो।"(1)

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآىٕمًۢا بِالْقِسْطِؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُؕ(۱۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर, उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला।

﴿شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ : और अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।﴾

शाने नुज़ूल : मुल्के शाम के उ़लमा में से दो अफ़राद सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। जब उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा को देखा तो एक ने दूसरे से कहा कि "नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर की येही सिफ़त है जो इस शहर में पाई

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۶، ۱/۲۳۶.

www.dawateislami.net

जाती है।" फिर जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरते मुबारका और औसाफ़े करीमा को तौरात के मुताबिक़ देख कर फ़ौरन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचान लिया और अ़र्ज़ किया : क्या आप मुहम्मद हैं ? ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां।" उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : क्या आप अह़मद हैं ? सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से एक सुवाल करेंगे, अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुरुस्त जवाब दे दिया तो हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएंगे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सुवाल करो।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "किताबुल्लाह में सब से बड़ी शहादत कौन सी है ?" इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इसे सुन कर वोह दोनों शामी उ़लमा मुसल्मान हो गए।[1]

इस आयत में फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला और फ़िरिश्ते और अहले इ़ल्म या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने गवाही दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि अहले इ़ल्म बड़ी इ़ज़्ज़त वाले हैं कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपनी तौह़ीद का गवाह अपने साथ बनाया, लेकिन उ़लमाए दीन से मुराद उ़लमाए रब्बानी हैं या'नी सह़ीहुल अ़क़ीदा और सालिह़ीन उ़लमा। उ़लमाए रब्बानी वोह हैं जो ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाले हैं और लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाला बनाते हैं, जिन की सोह़बत से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कामिल मह़ब्बत नसीब होती है, जिस आ़लिम की सोह़बत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में कमी आए वोह आ़लिम नहीं, ज़ालिम है।

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

1 ......جمل، ال عمران، تحت الآية: ۱۸، ۱/۳۸۳.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है और फूट में न पड़े किताबी मगर बा'द इस के कि उन्हें इल्म आ चुका अपने दिलों की जलन से और जो **अल्लाह** की आयतों का मुन्किर हो तो बेशक **अल्लाह** जल्द हिसाब लेने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** के नज़्दीक दीन सिर्फ़ इस्लाम है और जिन्हें किताब दी गई उन्हों ने आपस में इख़्तिलाफ़ न किया मगर अपने पास इल्म आ जाने के बा'द, अपने बाहमी ह़सद की वज्ह से। और जो **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करे तो बेशक **अल्लाह** जल्द हिसाब लेने वाला है।

﴿اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ : **बेशक अल्लाह के नज़्दीक दीन सिर्फ़ इस्लाम है।**﴾ हर नबी का दीन इस्लाम ही था लिहाज़ा इस्लाम के सिवा कोई और दीन बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मक़्बूल नहीं लेकिन अब इस्लाम से मुराद वोह दीन है जो ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लाए, चूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआला ने तमाम लोगों के लिये रसूल बना कर मब्ऊ़स फ़रमाया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी बनाया, तो अब अगर कोई किसी दूसरे आस्मानी दीन की पैरवी करता भी हो लेकिन चूंकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस क़त़ई और ह़त्मी दीन और नबी को मुकम्मल त़ौर पर नहीं मान रहा लिहाज़ा उस का आस्मानी दीन पर अ़मल भी मरदूद है। यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार जो अपने दीन को अफ़्ज़ल व मक़्बूल कहते हैं इस आयत में उन के दा'वे को बात़िल फ़रमाया गया है।

﴿وَمَا اخْتَلَفَ : **और उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया।**﴾ येह आयत यहूदो नसारा के बारे में उतरी जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ा और सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ किया और येह इख़्तिलाफ़ भी इल्म के बा'द किया क्यूं कि वोह अपनी किताबों में सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख चुके थे और उन्हों ने पहचान लिया था कि येही वोह नबी हैं जिन की कुतुबे इलाहिय्यह में ख़बरें दी गई हैं, लेकिन इस के बा वुजूद उन्हों ने मानने से इन्कार किया और इस इन्कार व इख़्तिलाफ़ का सबब उन का ह़सद और दुन्यावी मनाफ़ेअ़ की त़मअ़ थी।

www.dawateislami.net

۱۰ ع ۲

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِیَ لِلّٰهِ وَ مَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَ قُلْ لِّلَّذِیْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ الْاُمِّیّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَ اِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ऐ मह़बूब अगर वोह तुम से हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुंह **अल्लाह** के हुज़ूर झुकाए हूं और जो मेरे पैरव हुए और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ क्या तुम ने गरदन रखी पस अगर वोह गरदन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो येही हुक्म पहुंचा देना है और **अल्लाह** बन्दों को देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर ऐ ह़बीब ! अगर वोह तुम से झगड़ा करें तो तुम फ़रमा दो : मैं तो अपना मुंह **अल्लाह** की बारगाह में झुकाए हुए हूं और मेरी पैरवी करने वाले भी। और ऐ ह़बीब ! अहले किताब और अनपढ़ों से फ़रमा दो कि क्या तुम (भी) इस्लाम क़बूल करते हो ? फिर अगर वोह इस्लाम क़बूल कर लें जब तो उन्हों ने भी सीधा रास्ता पा लिया और अगर येह मुंह फेरें तो तुम्हारे ऊपर तो सिर्फ़ हुक्म पहुंचा देना लाज़िम है और **अल्लाह** बन्दों को देख रहा है।

﴿فَاِنْ حَآجُّوْكَ : **फिर अगर वोह तुम से झगड़ा करें।**﴾ दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत बयान करने के बा'द फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अगर वोह तुम से तुम्हारे या इस्लाम के ह़क़ होने के बारे में झगड़ा करें तो तुम उन्हें फ़रमा दो कि तुम मानो या न मानो, मुझे इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, मैं और मेरे पैरव कार तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार व मुत़ीअ़ हैं। नीज़ उन अहले किताब या'नी यहूदियों, ईसाइयों और अनपढ़ों या'नी अनपढ़ अहले किताब और मुश्रिकों से मज़ीद येह भी फ़रमा दो कि क्या हमारी त़रह़ तुम भी इस्लाम क़बूल करते हो ? अगर येह इस्लाम क़बूल कर लें तब तो येह भी सीधी राह वाले हो जाएंगे लेकिन अगर येह इस्लाम क़बूल करने से मुंह फेरें तो तुम्हारी शान में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता और न तुम्हारे अज्रो सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ होती है क्यूं कि तुम्हारे ऊपर तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से सिर्फ़ इतनी ज़िम्मादारी है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म उन्हें पहुंचा दो। बक़िय्या उन का मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले कर दो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें और अपने सब बन्दों को देख रहा है।

www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ یَقْتُلُوْنَ النَّبِیّٖنَ بِغَیْرِ حَقٍّ ۙ وَّ یَقْتُلُوْنَ الَّذِیْنَ یَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर होते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी दो दर्दनाक अज़ाब की ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते हैं और नबियों को नाहक़ शहीद करते हैं और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बरी सुना दो ।

﴾ **اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ : बेशक वोह लोग जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं ।** ﴿ यहां बनी इसराईल के तीन जराइम का बयान किया गया है : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयात का इन्कार करना । (2) अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद करना । (3) इन्साफ़ का हुक्म देने वालों को क़त्ल करना । चुनान्चे बनी इसराईल ने एक मरतबा सुब्ह के वक़्त तेंतालीस नबियों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद किया फिर जब उन में से एक सो बारह आ़बिदों ने उठ कर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और बुराइयों से मन्अ़ किया तो उसी रोज़ शाम को उन्हें भी क़त्ल कर दिया ।[1]

इस आयत में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने के यहूदियों की मज़म्मत इस लिये है कि वोह अपने आबाओ अज्दाद के ऐसे बद तरीन फ़े'ल से राज़ी थे ।

اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ مَا لَهُمْ

1 ......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ٢١، ص ١٥٤.

www.dawateislami.net

مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं वोह जिन के आ'माल अकारत गए दुन्या व आख़िरत में और उन का कोई मददगार नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह लोग हैं जिन के आ'माल दुन्या व आख़िरत में बरबाद हो गए और उन का कोई मददगार नहीं।

﴿اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ : **येही वोह लोग हैं जिन के आ'माल बरबाद हो गए।**﴾ इस आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है और येह भी कि कुफ़्र से तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं क्यूं कि यहूदियों ने अपने अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद किया था जो सख़्त तरीन बे अदबी है और इस पर उन के आ'माल बरबाद कर दिये गए।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ ثُمَّ یَتَوَلّٰى فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ وَ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला किताबुल्लाह की त़रफ़ बुलाए जाते हैं कि वोह उन का फ़ैसला करे फिर उन में का एक गुरौह इस से रूगर्दां हो कर फिर जाता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया (कि जब उन्हें) **अल्लाह** की किताब की त़रफ़ बुलाया जाता है ताकि वोह उन का फ़ैसला कर दे तो फिर उन में से एक गुरौह बेरुख़ी करते हुए मुंह फेर लेता है।

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ : **क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया।**﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि यहूदियों को तौरैत शरीफ़ अ़त़ा की गई और उस के उ़लूम व अह़काम सिखाए गए। इसी तौरैत में ताजदारे रिसालत

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ व अह़वाल और दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का बयान भी था तो इस से लाज़िम आता था कि जब हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएं और बनी इसराईल को क़ुरआने करीम की त़रफ़ दा'वत दें तो वोह हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और उस के अह़काम की ता'मील करें लेकिन उन में से अक्सर ने ऐसा नहीं किया। आयत में किताबुल्लाह की त़रफ़ बुलाने का ज़िक्र है। जो तफ़्सीर ऊपर ज़िक्र की गई उस के मुत़ाबिक़ यहां "किताबुल्लाह" से मुराद "क़ुरआन" है और अगर "किताबुल्लाह" से मुराद "तौरैत" हो तो मा'ना यूं होंगे कि जब यहूदियों को तौरैत की त़रफ़ बुलाया जाता है ताकि वोह तौरैत ही उन के दरमियान नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और क़ुरआन की ह़क़्क़ानिय्यत का फ़ैसला कर दे तो वोह तौरैत से भी मुंह फेर लेते हैं।

﴿**وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ** : **और वोह मुंह फेरने वाले हैं।**﴾ इस आयत के शाने नुज़ूल में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से एक रिवायत येह आई है कि एक मरतबा रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जगह तशरीफ़ ले गए और वहां यहूदियों को इस्लाम की दा'वत दी। उन्हों ने कहा, ऐ मुह़म्मद! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप किस दीन पर हैं? फ़रमाया : मिल्लते इब्राहीम पर। वोह कहने लगे : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो यहूदी थे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तौरैत लाओ, अभी हमारे, तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो जाएगा।" वोह इस मुत़ालबे पर न ठहर सके और मुन्किर हो गए। इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से इस आयत के शाने नुज़ूल की दूसरी रिवायत येह है कि ख़ैबर के यहूदियों में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था। तौरैत में ऐसे गुनाह की सज़ा पथ्थर मार मार कर हलाक कर देना है लेकिन चूंकि येह लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे इस लिये उन्हों ने इन को संगसार करना गवारा न किया और इस मुआ़मले को इस उम्मीद पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाए कि शायद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم संगसार करने का हु़क्म न दें मगर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों के संगसार करने का हु़क्म दिया, इस पर यहूदी त़ैश में आ गए और कहने लगे कि "इस गुनाह की येह सज़ा नहीं है, आप ने ज़ुल्म किया है।" हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "फ़ैसले का दारो मदार तौरैत पर रख लो।" उन्हों ने कहा : येह इन्साफ़ की बात है। चुनान्चे तौरैत मंगवाई गई और यहूदियों के बड़े आ़लिम अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिय्या ने तौरैन पढ़नी शुरूअ़

1 ......در منثور، ال عمران، تحت الآية: ۲۳، ۲/۱۷۰.

www.dawateislami.net

की, जब रज्म की आयत आई जिस में संगसार करने का हुक्म था तो अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिय्या ने उस पर हाथ रख दिया और उस को छोड़ दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का हाथ हटा कर आयत पढ़ दी। यहूदी इस ह़रकत पर ज़लीलो रुस्वा हुए और वोह यहूदी मर्द व औ़रत जिन्हों ने ज़िना किया था हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से संगसार किये गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ۪ وَّ غَرَّهُمْ فِیْ دِیْنِهِمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ۝۲۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह जुरअत उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के दिनों और उन के दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूट ने जो बांधते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह जुरअत उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं : हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के चन्द दिन और उन्हें उन की (ऐसी ही) मन घड़त बातों ने उन के दीन के बारे में धोके में डाला हुवा है।

﴿ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا : **येह जुरअत उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं।**﴾ आयत में फ़रमाया गया कि यहूदियों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब और उस के अह़काम से मुंह फेरने की येह जुरअत इस लिये हुई कि उन्हों ने अपनी नजात व बख़्शिश के मन घड़त ख़यालात पाल रखे हैं जिन में से एक येह है कि येह कहते हैं : हमें जहन्नम की आग हरगिज़ न छूएगी मगर गिनती के चन्द दिन या'नी चालीस दिन या एक हफ़्ता फिर कुछ ग़म नहीं। या यहूदी कहते थे कि "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हैं।"(2) **अल्लाह** तआ़ला ने इस त़र्ज़े अ़मल पर फ़रमाया कि "उन की ऐसी ही मन घड़त बातों ने उन के दीन के बारे में उन्हें धोके में डाला हुवा है।"

अ़मल से मुंह फेर कर उम्मीद की दुन्या में घूमने का अन्जाम

हमारे लिये इस में दर्से इ़ब्रत है। ह़क़ीक़त येह है कि किसी भी क़ौम की तबाही उसी सूरत में होती है जब वोह अ़मल से मुंह फेर कर सिर्फ़ आरज़ू और उम्मीद की दुन्या में घूमती रहती है। जो शख़्स लाखों रुपै कमाने की तमन्ना रखता है लेकिन इस के लिये मेह़नत करने

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۲۳، ۱/۲۳۹.
2 ......المائدة: ۱۸.

www.dawateislami.net

को तय्यार नहीं वोह कभी एक रुपिया भी नहीं कमा सकता। जो क़ौम तरक़्क़ी करने की ख़्वाहिश मन्द हो लेकिन अपनी बद आ'मालियां, कामचोरियां और ख़ियानतें छोड़ने को तय्यार नहीं वोह कभी तरक़्क़ी की शाहराह पर क़दम नहीं रख सकती। यूंही जो लोग इत़ाअ़ते इलाही और इत्तिबाए़ रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब भी न आएं और अपनी निस्बतों पर फूलते फिरें वोह भी अह़मक़ों की दुन्या के बासी हैं और अफ़्सोस येह है कि हमारे हां ऐसों की कसरत है। हमारे वाइज़ीन, ख़ुत़बा और पीर साहिबान जो कुछ बयान फ़रमाते हैं सब के सामने है। ख़ौफ़े ख़ुदा, क़ब्र की तय्यारी, आख़िरत की फ़िक्र, बारगाहे इलाही की जवाब देही पर शायद ही कभी कलाम हो और रह़मत के मौज़ूअ़ पर इस क़दर बयान कि लोग जरी हो चुके हैं। और इस के नतीजे में क़ौम की अ़मली ह़ालत कहां पहुंची हुई है वोह कोई ढकी छुपी बात नहीं। इस ह़वाले से उम्मत के ह़कीम, इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ह़क़ीक़त शनास कलाम पढ़िये। आप ने कीमियाए सआ़दत में तह़रीर फ़रमाया है: (अगर) उ़लमा भी वा'ज़ो नसीह़त की बजाए बाज़ारी मुक़र्रिरीन का अन्दाज़ इख़्तियार कर लें, लग़्वियातो वाहियात, बेहूदा गोई और बेकार बातों से दिल बहलाना शुरूअ़ कर दें जो उ़मूमन देखा गया है तो लोग ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला हो जाएंगे कि कोई बात नहीं हम जो कुछ भी करते हैं रह़मते ख़ुदावन्दी हमारे शामिले ह़ाल रहेगी तो क़ौम का ह़ाल ग़ाफ़िलीन से बदतर हो जाएगा। ज़ाहिर है जब आ़म आदमी मजलिसे वा'ज़ में ऐसी ख़ुराफ़ात सुनेगा लाज़िमन वैसी ही सिफ़ात उस में पैदा होंगी, आख़िरत के ख़त़रात से डरना तो दर किनार, उस के दिल से आख़िरत का ख़याल भी निकल जाएगा, फिर उसे जो कुछ भी कहा जाए वोह येही कहता रहेगा: **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बड़ा रह़ीम व करीम है, मेरे गुनाहों से उस का क्या बिगड़ता है? और उस की जन्नत कोई तंगो तारीक मा'मूली सी कोठड़ी थोड़ी है बल्कि वोह तो ज़मीनो आस्मान से भी ज़ियादा वसीअ़ व कुशादा है वहां तो करोड़ों इन्सान ब आसानी समा जाएंगे तो मुझ जैसे गुनाहगार से **अल्लाह** तआ़ला का तंग आ जाना ख़ुदा की रह़मत से बई़द है। ऐसी ऐसी लग़्विय्यात उस के दिलो दिमाग़ पर मुसल्लत़ हो जाती हैं।(1)

ज़रा ग़ौर करें कि क्या इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान हमारे आज के मुआ़शरे पर सादिक़ नहीं आता।

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۟ وَ وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾

1 ...... کیمیائے سعادت، رکن سوم: مہلکات،اصل دھم، علاج غفلت و نادانی، ۲/۷۳۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिस में शक नहीं और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो कैसी ह़ालत होगी जब हम उन्हें उस दिन के लिये इकठ्ठा करेंगे जिस में कोई शक नहीं और हर जान को उस की पूरी कमाई दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

﴿فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ﴾ **: तो कैसी ह़ालत होगी जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे।** यहां मन घड़त उम्मीदों की सुवारी पर बैठ कर ख़याालात की दुन्या में सियाह़त करने वालों की बात हो रही है जो अ़क़ीदए सह़ीह़ा से ला तअ़ल्लुक़ और आ'माले सालिह़ा से दूर होने के बा वुजूद ख़्वाबो ख़याल में अपने आप को जन्नत के बुलन्दो बाला मह़ल्लात में क़ियाम पज़ीर समझते हैं उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उन लोगों की कैसी ह़ालत होगी जब हम उन्हें जम्अ़ करेंगे और जब उन्हें उन के आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ٘ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُؕ بِیَدِكَ الْخَیْرُؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ(۲۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : यूं अ़र्ज़ कर ऐ **अल्लाह** मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्त़नत दे और जिस से चाहे सल्त़नत छीन ले, और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : यूं अ़र्ज़ करो, ऐ **अल्लाह** ! मुल्क के मालिक ! तू जिसे चाहता है सल्त़नत अ़त़ा फ़रमाता है और जिस से चाहता है छीन लेता है और तू जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है, तमाम भलाई तेरे ही हाथ में है, बेशक तू हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है।

www.dawateislami.net

﴿قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ﴾ **: यूं अ़र्ज़ करो, ऐ अल्लाह ! मुल्क के मालिक !** फ़त्हे मक्का के वक़्त सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को ईरान व रूम की सल्त़नत की बिशारत दी कि येह मुसल्मानों के हाथ आएगी। इस पर यहूद व मुनाफ़िक़ीन को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और कहने लगे, कहां मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कहां फ़ारस व रूम के मुल्क ? येह तो बड़े ज़बर दस्त और निहायत मह़फ़ूज़ मुल्क हैं इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और आख़िर कार हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह वा'दा पूरा हो कर रहा।[1]

सल्त़नत व हुकूमत बल्कि काएनात का ज़र्रा ज़र्रा **अल्लाह** तआ़ला की मिल्क है जिसे चाहे अ़त़ा फ़रमाए। कितनी बड़ी बड़ी सल्त़नतें गुज़रीं जिन के ज़माने में कोई तसव्वुर भी न कर सकता था कि येह भी कभी फ़ना होंगी लेकिन **अल्लाह**, मालिकुल मुल्क की ज़बर दस्त कुव्वतो कुदरत का ऐसा ज़ुहूर हुवा कि आज उन के नामो निशान मिट गए। यूनान का सिकन्दरे आ'ज़म, इराक़ का नमरूद, ईरान का किस्रा व नौ शेरवां, ज़ह्ह़ाक, फ़रीदूं, जमशेद, मिस्र के फ़िरऔ़न, मंगूल नस्ल के चंगेज़ और हलाकू ख़ान बड़े बड़े नामवर हुक्मरान अब सिर्फ़ क़िस्से कहानियों में रह गए और बाक़ी है तो रब्बुल आ़लमीन का नाम और हुकूमत बाक़ी है और उसी को बक़ा है। यूंही इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत देना **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत में है। दूर दराज़ के गाउं, बस्तियों से, छोटे और ग़रीब ख़ानदानों से उठा कर तख़्ते हुकूमत पर बिठा देना, गुलामों को बादशाहत अ़त़ा कर देना **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत है और मुआ़शरे के मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन बल्कि दूसरों को इ़ज़्ज़तें और ख़ल्अ़तें बख़्शने वालों को ज़िल्लत व गुमनामी के अ़मीक़ गढ़ों में फेंक देना उसी अह़्कमुल ह़ाकिमीन मौला तआ़ला की कुदरत है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ٘ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ٘ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٢٦، ١/٢٤٠.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तू रात का हिस्सा दिन में डाले और दिन का हिस्सा रात में डाले और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले और जिसे चाहे बे गिनती दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तू रात का कुछ हिस्सा दिन में दाख़िल कर देता है और दिन का कुछ हिस्सा रात में दाख़िल कर देता है और तू मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है और जिसे चाहता है बे शुमार रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।

﴾تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ﴿ : **तू रात का कुछ हिस्सा दिन में दाख़िल कर देता है।** गर्मियों में रात छोटी और दिन बड़े कर देना, सर्दियों में दिन छोटे और रात लम्बी कर देना **अल्लाह** तआ़ला ही के निज़ाम की वज्ह से है। जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में इतना बड़ा निज़ाम है उस के लिये फ़ारस व रूम से मुल्क ले कर ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता कर देना क्या बईद है।

﴾وَتُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ﴿ : **और तू मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है।** मुर्दा से ज़िन्दा का निकालना यूं है जैसे ज़िन्दा इन्सान को बेजान नुत़्फ़े से और परिन्दे के ज़िन्दा बच्चे को बे रूह़ अन्डे से और ज़िन्दा दिल मोमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से। यूंही ज़िन्दा से मुर्दा निकालना इस त़रह़ जैसे कि ज़िन्दा इन्सान से बेजान नुत़्फ़ा और ज़िन्दा परिन्दे से बेजान अन्डा और ज़िन्दा दिल ईमानदार से मुर्दा दिल काफ़िर।

لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَ مَنْ
یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ
وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान काफ़िरों को अपना दोस्त न बना लें मुसल्मानों के सिवा और जो ऐसा करेगा उसे **अल्लाह** से कुछ अ़लाक़ा न रहा मगर येह कि तुम उन से कुछ डरो और **अल्लाह** तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और **अल्लाह** ही की त़रफ़ फिरना है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मुसल्मान मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं और जो कोई ऐसा करेगा तो उस का **अल्लाह** से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं मगर येह कि तुम्हें उन से कोई डर हो और **अल्लाह** तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और **अल्लाह** ही की त़रफ़ लौटना है।

﴿لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ﴾ **: मुसल्मान मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं।** हज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जंगे अह़ज़ाब के मौक़अ़ पर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरे साथ पांच सो यहूदी हैं जो मेरे ह़लीफ़ हैं, मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबले में उन से मदद ह़ासिल करूं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने की मुमानअ़त फ़रमाई गई।(1)

कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मह़ब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है, इन्हें राज़दार बनाना, इन से क़ल्बी तअ़ल्लुक़ रखना ना जाइज़ है। अलबत्ता अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है। यहां सिर्फ़ ज़ाहिरी मेल बरताव की इजाज़त दी गई है, येह नहीं कि ईमान छुपाने और झूट बोलने को अपना ईमान और अ़क़ीदा बना लिया जाए बल्कि बाति़ल के मुक़ाबले में डट जाना और अपनी जान तक की परवाह न करना अफ़्ज़ल व बेहतर होता है जैसे सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जान दे दी लेकिन ह़क़ को न छुपाया। आयत में कुफ़्फ़ार को दोस्त बनाने से मन्अ़ किया गया है इसी से इस बात का हुक्म भी समझा जा सकता है कि मुसल्मानों के मुक़ाबले में काफ़िरों से इत्तिह़ाद करना किस क़दर बुरा है।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾

1 ......جمل، ال عمران، تحت الآية: ٢٨، ١/٣٩٣.

www.dawateislami.net

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚۛ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो **अल्लाह** को सब मा'लूम है, और जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर **अल्लाह** का क़ाबू है। जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझ में और इस में दूर का फ़ासिला होता और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है, और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमा दो कि तुम अपने दिल की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो **अल्लाह** को सब मा'लूम है और वोह जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (याद करो) जिस दिन हर शख़्स अपने तमाम अच्छे और बुरे आ'माल अपने सामने मौजूद पाएगा तो तमन्ना करेगा कि काश इस के दरमियान और इस के आ'माल के दरमियान कोई दूर दराज़ की मसाफ़त (हाइल) हो जाए और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और **अल्लाह** बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।

﴾يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ﴿ **: जिस दिन हर शख़्स पाएगा।** सूरए आले इमरान की आयत नम्बर **29, 30** हर शख़्स की इस्लाह़ के लिये काफ़ी है। इस आयत पर जितना ज़ियादा ग़ौर करेंगे उतना ही दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होगा और गुनाहों से नफ़रत पैदा होगी। चुनान्चे फ़रमाया कि तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने दिल की बातें छुपाओ या ज़ाहिर करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब मा'लूम है। तुम्हारे दिलों का ईमान व निफ़ाक़, क़ुलूब की त़हारत व ख़बासत, अच्छे बुरे ख़यालात, नेक व बद इरादे, सही़ह़ व फ़ासिद मन्सूबे सारी दुन्या से छुप सकते हैं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़लिमुल ग़ैबे वश्शहादह के हु़ज़ूर सब ज़ाहिर है। वोह जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब जानता है। वोह तुम्हें फ़रमाता है कि तुम अपने दिल की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब मा'लूम है और उस दिन को याद रखो जिस दिन हर शख़्स

www.dawateislami.net

अपने तमाम अच्छे और बुरे आ'माल अपने सामने मौजूद पाएगा। ख़ल्वतों, जल्वतों में किये हुए आ'माल, पहाड़ों, समुन्दरों, ग़ारों, सह़राओं, जज़ीरों और काएनात के किसी भी कोने में किये गए आ'माल का एक एक ज़र्रा आदमी के सामने मौजूद होगा और उस वक़्त बुरे आ'माल वाला तमन्ना करेगा कि काश उस के दरमियान और उस के आ'माल के दरमियान कोई दूर दराज़ की मसाफ़त ह़ाइल हो जाए और किसी त़रह़ इन आ'माल से छुटकारा हो जाए मगर ऐसा न हो सकेगा। आयते मुबारका के ह़वाले से सलफ़ व सालिह़ीन के त़र्ज़े अ़मल की एक झलक देखने के लिये ज़ैल के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ फ़रमाएं :

उ़म्र और गुनाहों का ह़िसाब करने वाले बुज़ुर्ग

ह़ज़रते तौबह बिन सिम्मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने नफ़्स का मुह़ासबा करते हुए एक दिन ह़िसाब लगाया तो उन की उ़म्र 60 साल थी, दिनों का ह़िसाब किया तो वोह 21500 थे, उन्हों ने चीख़ मारी और फ़रमाया : हाए अफ़्सोस ! (अगर मैं ने रोज़ाना एक गुनाह किया हो तो) मैं ह़क़ीक़ी बादशाह से 21500 गुनाहों के साथ मुलाक़ात करूंगा और जब रोज़ाना 10,000 गुनाह हों तो क्या सूरते ह़ाल होगी ! येह सोच कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़श खा कर गिर पड़े और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।[1]

नींद से पाक रब तआ़ला हमें देख रहा है

एक शख़्स किसी औ़रत पर फ़रेफ़्ता हो गया। जब वोह औ़रत किसी काम से क़ाफ़िले के साथ सफ़र पर रवाना हुई तो येह आदमी भी उस के पीछे पीछे चल दिया। जब जंगल में पहुंच कर सब लोग सो गए तो इस आदमी ने उस औ़रत से अपना ह़ाले दिल बयान किया। औ़रत ने उस से पूछा : क्या सब लोग सो गए हैं ? येह दिल ही दिल में बहुत ख़ुश हुवा कि शायद येह औ़रत भी मेरी त़रफ़ माइल हो गई है, चुनान्चे वोह उठा और क़ाफ़िले के गिर्द घूम कर जाएज़ा लिया तो सब लोग सो रहे थे। वापस आ कर उस ने औ़रत को बताया कि हां ! सब लोग सो गए हैं। येह सुन कर वोह औ़रत कहने लगी : **अल्लाह** तआ़ला के बारे में तुम क्या कहते हो, क्या वोह भी इस वक़्त सो रहा है ? मर्द ने जवाब दिया : **अल्लाह** तआ़ला न सोता है, न उसे नींद आती है और न उसे ऊंघ आती है। औ़रत ने कहा : जो न कभी सोया और न सोएगा और वोह हमें भी देख रहा है अगर्चे लोग नहीं देख रहे तो हमें उस से ज़ियादा

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ و المحاسبۃ، بیان حقیقۃ المحاسبۃ بعد العمل، ۵/۱۳۹.

www.dawateislami.net

डरना चाहिये। येह बात सुन कर उस आदमी ने **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ के सबब उस औ़रत को छोड़ दिया और गुनाह के इरादे से बाज़ आ गया। जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा : ''مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' तो उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे गुनाह छोड़ देने और अपने ख़ौफ़ के सबब बख़्श दिया।(1)

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! अगर तुम **अल्लाह** से मह़ब्बत करते हो तो मेरे फ़रमां बरदार बन जाओ **अल्लाह** तुम से मह़ब्बत फ़रमाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ : **ऐ ह़बीब ! फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! अगर तुम अल्लाह से मह़ब्बत करते हो तो मेरे फ़रमां बरदार बन जाओ।**﴾ इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत का दा'वा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने वाला हो और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त इख़्तियार करे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरैश के पास तशरीफ़ लाए जिन्हों ने ख़ानए का'बा में बुत नस्ब किये थे और उन्हें सजा सजा कर उन को सज्दा कर रहे थे। ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ गुरौहे क़ुरैश ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम, तुम अपने आबाओ अज्दाद ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन से हट गए हो।'' क़ुरैश ने कहा : हम इन बुतों को

(1) ......مکاشفة القلوب، الباب الثانی فی الخوف من اللّٰه تعالٰی...الخ، ص۱۱.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में पूजते हैं ताकि येह हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़रीब करें। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।(1) और बताया गया कि मह़ब्बते इलाही का दा'वा हुज़ूर सय्यिदे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ और फ़रमां बरदारी के बिग़ैर क़ाबिले क़बूल नहीं। जो इस दा'वे का सुबूत देना चाहता है वोह हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी इख़्तियार करे और चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बुत परस्ती से मन्अ़ फ़रमाया है तो बुत परस्ती करने वाला सरकारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ना फ़रमान और मह़ब्बते इलाही के दा'वे में झूटा है। दूसरा क़ौल येह है कि मदीने के यहूदी कहा करते थे कि हम को हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने की ज़रूरत नहीं। हम तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेटे और उस के प्यारे हैं। तब येह आयत उतरी।(2)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि येही क़ौल क़वी है क्यूं कि सूरए आले इमरान मदनी है।

रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी ज़रूरी है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि हर शख़्स को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ और पैरवी करना ज़रूरी है। एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : ऐ लोगो ! मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं जिस के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही ज़िन्दा करता है और मारता है तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल पर जो नबी हैं, (किसी से) पढ़े हुए नहीं हैं, **अल्लाह** और उस की तमाम बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो ताकि तुम हिदायत पा लो।

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : हम यहूदियों की कुछ बातें सुनते हैं जो हमें भली लगती हैं क्या आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۳۱، ۱/۲۴۳.

2 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۳۱، ۱/۲۴۳.

3 ......اعراف: ۱۵۸.

www.dawateislami.net

इजाज़त देते हैं कि कुछ लिख भी लिया करें ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम यहूदियों और ईसाइयों की त़रह़ ह़ैरान हो ! मैं तुम्हारे पास रोशन और साफ़ शरीअ़त लाया और अगर आज ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी ज़िन्दा होते तो उन्हें मेरी इत्तिबाअ़ के बिग़ैर चारा न होता।"(1)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी के जज़्बे का अन्दाज़ा इन वाक़िआ़त से लगाया जा सकता है :

(1)...... ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़जरे अस्वद के पास आए और उसे बोसा दे कर फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है, न नफ़्अ़ पहुंचा सकता है न नुक़्सान। अगर मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते न देखा होता तो तुझे मैं हरगिज़ बोसा न देता।"(2)

और सुनने नसाई की रिवायत में है कि इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़जरे अस्वद को बोसा दिया।(3)

(2)...... ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार पानी मंगवाया और वुज़ू किया, फिर आप मुस्कुराने लगे और साथियों से फ़रमाया : "क्या तुम मुझ से उस चीज़ के बारे में पूछोगे नहीं जिस ने मुझे मुस्कुराया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ, आप किस चीज़ की वज्ह से मुस्कुराए थे ? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "एक बार हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस जगह के क़रीब ही वुज़ू फ़रमाया था और फ़राग़त के बा'द मुस्कुराए थे और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم से फ़रमाया था : "क्या तुम मुझ से पूछोगे नहीं कि किस चीज़ ने मुझे मुस्कुराया ?" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, किस चीज़ ने आप को मुस्कुराया ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा जब वुज़ू का पानी मंगवाए फिर अपना चेहरा धोए तो **अल्लाह** तआ़ला उस के चेहरे के गुनाह मिटा देता है, फिर अपनी कोहनियां धोए तो कोहनियों के, सर का मस्ह़ करे तो सर के और अपने क़दमों को धोए तो क़दमों के गुनाह मिटा देता है।" (तो मैं ने उन्ही की अदा को अदा किया है।)"(4)

1 ......شعب الایمان، الرابع من شعب الایمان، ذکر حدیث جمع القرآن، ۱/۱۹۹، الحدیث: ۱۷۶.

2 ......مسلم، کتاب الحج، باب استحباب تقبیل الحجر الاسود فی الطواف، ص۶۶۲، الحدیث: ۲۵۱(۱۲۷۰).

3 ......نسائی، کتاب مناسک الحج، تقبیل الحجر، ص۴۷۸، الحدیث: ۲۹۳۴.

4 ......مسند امام احمد، مسند عثمان بن عفان، ۱/۱۳۰، الحدیث: ۴۱۵.

www.dawateislami.net

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا एक जगह अपनी ऊंटनी को चक्कर लगवा रहे थे। लोगों ने उन से इस का सबब पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मैं (इस की ह़िक्मत) नहीं जानता, मगर इस जगह मैं ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा करते देखा था इस लिये मैं भी ऐसा कर रहा हूं।''(1)

قُلْ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि हुक्म मानो **अल्लाह** और रसूल का फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** को खुश नहीं आते काफ़िर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** और रसूल की फ़रमां बरदारी करो फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** काफ़िरों को पसन्द नहीं करता।

﴿اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ : **अल्लाह और रसूल की फ़रमां बरदारी करो।**﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब येह आयत ''قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ'' नाज़िल हुई तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने साथियों से कहा ''मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपनी इत़ाअ़त को **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त की त़रह़ क़रार दे रहे हैं और येह हुक्म कर रहे हैं कि हम इन से उसी त़रह़ मह़ब्बत करें जिस त़रह़ ईसाइयों ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से की।'' इस पर येह आयत नाज़िल हुई(2) और फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप इन से फ़रमा दें कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी इत़ाअ़त इस लिये वाजिब की, कि मैं उस की त़रफ़ से रसूल हूं और चूंकि **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम लोगों तक पहुंचाने का ज़रीआ़ उस के रसूल ही हैं इस लिये इन की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी लाज़िमी है। इस के बा'द भी अगर वोह इत़ाअ़त से मुंह फेरें तो उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत ह़ासिल न होगी और **अल्लाह** तआ़ला उन्हें सज़ा देगा।(3)

1 ......شفا شریف، الباب الاول: فرض الایمان بہ، فصل واما ماورد عن السلف فی اتباعہ، ص١٥، الجزء الثانی.

2 ......البحر المحیط، ال عمران، تحت الآیۃ: ٣٢، ٤٤٩/٢.

3 ......تفسیر کبیر، ال عمران، تحت الآیۃ: ٣٢، ١٩٨/٣، جلالین، ال عمران، تحت الآیۃ: ٣٢، ص٤٩، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की अहम्मिय्यत

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त ही मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की दलील है और इसी पर नजात का दारो मदार है। **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत का ह़ुसूल, अपनी ख़ुशनूदी और क़ुर्ब को ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ैर मशरूत़ इत़ाअ़त के साथ जोड़ दिया। अब किसी को रिज़ा व क़ुर्बे इलाही मिलेगा तो मह़बूबे रब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी के सदक़े मिलेगा वरना दुन्या जहां के सारे आ'माल जम्अ़ कर के ले आए, अगर उस में ह़क़ीक़ी इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद न होगी वोह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में यक़ीनन क़त़्अ़न मरदूद होगा।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी मगर जिस ने इन्कार किया।'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, इन्कार कौन करेगा ? इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मेरी इत़ाअ़त की वोह जन्नत में दाख़िल हुवा और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने इन्कार किया।''(1)

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक मेरी मिसाल और उस की जिस के साथ मुझे मब्ऊ़स फ़रमाया गया है उस शख़्स जैसी है जिस ने अपनी क़ौम के पास आ कर कहा : ऐ क़ौम ! मैं ने अपनी आंखों से एक फ़ौज देखी है, मैं तुम्हें वाज़ेह़ त़ौर पर उस से डराने वाला हूं लिहाज़ा अपने आप को बचा लो। चुनान्चे उस की क़ौम के एक गुरोह ने उस की बात मानी और रातों रात निकल कर पनाह गाह में जा छुपे और हलाकत से बच गए जब कि एक गुरोह ने उसे झुटलाया और सुब्ह़ तक अपने मक़ामात पर ही रहे, सुब्ह़ सवेरे लश्कर ने उन पर ह़म्ला कर दिया और उन्हें हलाक कर के ग़ारत गरी का बाज़ार गर्म किया। पस येह मिसाल है उस की जिस ने मेरी इत़ाअ़त की और जो मैं ले कर आया हूं उस की पैरवी की और उस शख़्स की मिसाल है जिस ने मेरी ना फ़रमानी की और जो ह़क़ मैं ले कर आया हूं उसे झुटलाया।''(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنّۃ، باب الاقتداء بسنن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ٤/٤٩٩، الحدیث: ٧٢٨٠.

2 ......بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنّۃ، باب الاقتداء بسنن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ٤/٥٠٠، الحدیث: ٧٢٨٣.

www.dawateislami.net

हज़रते मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सुन लो ! अन्क़रीब एक आदमी के पास मेरी ह़दीस पहुंचेगी और वोह अपनी मसहरी पर तक्या लगाए बैठा हुवा कहेगा : हमारे और तुम्हारे दरमियान **अल्लाह** तआ़ला की किताब (काफ़ी है) हम जो चीज़ उस में ह़लाल पाएंगे उसे ह़लाल समझेंगे और उसे ह़राम समझेंगे जिसे क़ुरआन में ह़राम पाएंगे । ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इसी त़रह़ ह़राम किया है जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किया है।"(1)

की मुह़म्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं   येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं

إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने चुन लिया आदम और नूह़ और इब्राहीम की आल और इमरान की आल को सारे जहान से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने आदम और नूह़ और इब्राहीम की औलाद और इमरान की औलाद को सारे जहान वालों पर चुन लिया।

﴿إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ : **बेशक अल्लाह ने आदम को चुन लिया।**﴾ यहूदियों ने कहा था कि हम हज़रते इब्राहीम, हज़रते इस्ह़ाक़ और हज़रते या'क़ूब عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बता दिया गया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने इन हज़रात को इस्लाम के साथ बरगुज़ीदा किया था और ऐ यहूदियो ! तुम इस्लाम पर नहीं हो तो तुम्हारा येह दा'वा ग़लत़ है।" इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के बरगुज़ीदा, चुने हुए, मुन्तख़ब बन्दों की अ़ज़मतो शान को बयान करना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है, जैसे यहां पर बरगुज़ीदा बन्दों का तज़्किरा हुवा और इस के आगे की आयतों में मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही का तफ़्सील से तज़्किरा हुवा।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿ۚ۳۴﴾

(1) ترمذی، کتاب العلم، باب ما نھی عنہ انّہ یقال عند حدیث رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۴/۳۰۲، الحدیث: ۲۶۷۳.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक नस्ल है एक दूसरे से और **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह एक नस्ल है जो एक दूसरे से है और **अल्लाह** सुनने वाला, जानने वाला है।

﴾ذُرِّیَّةً : **येह एक नस्ल है।**﴿ या'नी इन बरगुज़ीदा बन्दों में बाहम नस्ली तअ़ल्लुक़ात भी हैं और दीन के अन्दर येह हज़रात एक दूसरे के मुआ़विनो मददगार भी हैं।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब इमरान की बीबी ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (याद करो) जब इमरान की बीवी ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मैं तेरे लिये नज़्र मानती हूं कि मेरे पेट में जो औलाद है वोह ख़ास तेरे लिये आज़ाद (वक़्फ़) है तो तू मुझ से (येह) क़बूल कर ले बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है।

﴾اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ : **जब इमरान की बीवी ने अ़र्ज़ की।**﴿ इमरान दो हैं एक इमरान बिन यस्हुर बिन क़ाहिस बिन लावा बिन या'क़ूब येह तो हज़रते मूसा और हज़रते हारून عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिद हैं और दूसरे इमरान बिन मासान येह हज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा हज़रते मरयम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के वालिद हैं इन दोनों इमरानों के दरमियान एक हज़ार आठ सो बरस का फ़र्क़ है, यहां दूसरे इमरान मुराद हैं।(1)

इन की बीवी या'नी हज़रते मरयम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वालिदा का नाम हन्ना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है। यहां आयत में इन्ही का वाक़िआ़ बयान हो रहा है। कि उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ की थी कि ऐ **अल्लाह**! मैं तेरे लिये नज़्र मानती हूं कि मेरे पेट में जो औलाद

(1) ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۳۵، ۱/۲۴۳،جمل، ال عمران، تحت الآية: ۳۵، ۱/۴۰۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

है वोह ख़ास तेरे लिये वक़्फ़ है। तेरी इबादत के सिवा दुन्या का कोई काम उस के मुतअ़ल्लिक़ न हो और बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत उस के ज़िम्मे हो। उ़लमा ने वाकिआ़ इस त़रह़ ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों हम ज़ुल्फ़ थे। फ़ाकूज़ा की दुख़्तर ईशाअ़ ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ौजा थीं और येह ह़ज़रते यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदा हैं और इन की बहन ह़ज़रते ह़न्ना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी थीं और येह ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा हैं। एक ज़माने तक ह़ज़रते ह़न्ना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां औलाद नहीं हुई यहां तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई, येह सालिह़ीन का ख़ानदान था और येह सब लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे थे। एक रोज़ ह़ज़रते ह़न्ना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे भरा रही थी या'नी दाना खिला रही थी। येह देख कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुवा और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उस को बैतुल मुक़द्दस का ख़ादिम बनाऊंगी और इस ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर कर दूंगी। चुनान्चे जब वोह ह़ामिला हुईं और उन्हों ने येह नज़्र मान ली तो उन के शौहर ने फ़रमाया : येह तुम ने क्या किया, अगर लड़की होगी तो वोह इस क़ाबिल कहां होगी ? उस ज़माने में बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिये लड़कों को दिया जाता था और लड़कियां अपने मख़्सूस मुआ़मलात, ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वज्ह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं। इस लिये ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शदीद फ़िक्र लाह़िक़ हुई। ह़ज़रते ह़न्ना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की विलादत से पहले ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया था।(1)

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰىؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْؕ وَ لَیْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰىۚ وَ اِنِّیْ سَمَّیْتُهَا مَرْیَمَ وَ اِنِّیْۤ اُعِیْذُهَا بِكَ وَ ذُرِّیَّتَهَا مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ﴿۳۶﴾

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۳۵، ۱/۲٤٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उसे जना बोली ऐ रब मेरे येह तो मैं ने लड़की जनी और **अल्लाह** को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी, और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने इस का नाम मरयम रखा और मैं इसे और इस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब इमरान की बीवी ने बच्ची को जनम दिया तो उस ने कहा ऐ मेरे रब ! मैं ने तो लड़की को जनम दिया है हालां कि **अल्लाह** बेहतर जानता है जो उस ने जना और वोह लड़का (जिस की ख़्वाहिश थी) इस लड़की जैसा नहीं (जो उसे अता की गई) और (उस ने कहा कि) मैं ने इस बच्ची का नाम मरयम रखा और मैं इसे और इस की औलाद को शैतान मरदूद के शर से तेरी पनाह में देती हूं।

﴾**فَلَمَّا وَضَعَتْهَا : तो जब इमरान की बीवी ने बच्ची को जनम दिया।**﴿ चूंकि हज़रते इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पहले ही अपने ख़दशे का इज़्हार कर चुके थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत कि बेटे की बजाए बेटी की विलादत हुई इस पर हज़रते हन्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इज़्हारे अफ़्सोस के तौर पर येह कलिमा कहा। उन्हें हस्रतो ग़म इस वज्ह से हुवा कि चूंकि लड़की पैदा हुई है लिहाज़ा नज़्र पूरी नहीं हो सकेगी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह अ़र्ज़ करना मन्नत के पूरा न कर सकने पर अफ़्सोस की वज्ह से था, इस वज्ह से नहीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को लड़की पैदा होने का अफ़्सोस था क्यूं कि येह कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है। लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने जो लड़की अ़ता फ़रमाई थी उस के बारे में फ़रमाया कि कोई लड़का इस लड़की की त़रह़ नहीं हो सकता क्यूं कि येह तमाम जहान की औ़रतों से अफ़्ज़ल होगी, रूहुल्लाह, हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मां होंगी, येह रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ास अ़ता हैं। इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ औ़रतें बा'ज़ मर्दों से अफ़्ज़ल हो सकती हैं। ख़याल रहे कि हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने ज़माने में तमाम जहान की औ़रतों से अफ़्ज़ल थीं, येह नहीं कि इन का मर्तबा हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा, हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा और हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ से भी बढ़ कर हो। मरयम के मा'ना आ़बिदा और ख़ादिमा हैं।[1]

1 ......بغوی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۳۶، ۱/۲۲۷.

www.dawateislami.net

﴿وَاِنِّیْۤ اُعِیْذُهَا بِكَ﴾ **: और मैं इसे तेरी पनाह में देती हूं ।** हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की वालिदा ने हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا और इन की औलाद के लिये शैतान के शर से पनाह मांगी और **अल्लाह** तआला ने इस दुआ को क़बूल फ़रमाया । लिहाज़ा येह मक़्बूल अल्फ़ाज़ हैं, अपनी औलाद के लिये इन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ मांगते रहना चाहिये, اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ करम होगा ।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّ كَفَّلَهَا زَكَرِیَّا ؕ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَیْهَا زَكَرِیَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ
یٰمَرْیَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَرْزُقُ مَنْ
یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ۳۷

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उसे उस के रब ने अच्छी त़रह़ क़बूल किया और उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़करिय्या की निगहबानी में दिया जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते कहा ऐ मरयम येह तेरे पास कहां से आया, बोलीं वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उस के रब ने उसे अच्छी त़रह़ क़बूल किया और उसे ख़ूब परवान चढ़ाया और ज़करिय्या को उस का निगहबान बना दिया, जब कभी ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते तो उस के पास फल पाते । (ज़करिय्या ने) सुवाल किया, ऐ मरयम ! येह तुम्हारे पास कहां से आता है ? उन्हों ने जवाब दिया : येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहता है बे शुमार रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है ।

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ﴾ **: तो उस के रब ने उसे अच्छी त़रह़ क़बूल किया ।** **अल्लाह** तआला ने नज़्र में लड़के की जगह हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को क़बूल फ़रमा लिया और उन्हें अह़्सन अन्दाज़ में परवान चढ़ाया । हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا दूसरे बच्चों की ब निस्बत बहुत तेज़ी के साथ बढ़ती रहीं । हज़रते ह़न्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने विलादत के बा'द हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

www.dawateislami.net

को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मुक़द्दस के उ़लमा के सामने पेश कर दिया ताकि वोह उन्हें अपनी कफ़ालत में ले लें। इन उ़लमा को बहुत मुअ़ज़्ज़ शुमार किया जाता था, येह उ़लमा ह़ज़रते हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद में से थे और बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत पर मुक़र्रर थे। चूंकि ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी थीं जो उन उ़लमा में मुमताज़ थे और इन का ख़ानदान भी बनी इसराईल में बहुत आ'ला और साह़िबे इल्म ख़ानदान था इस लिये उन सब उ़लमा ने जिन की ता'दाद सत्ताईस थी ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को अपनी परवरिश में लेने में रग़बत ज़ाहिर की। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि मैं इन का सब से ज़ियादा ह़क़दार हूं क्यूं कि मेरे घर में इन की ख़ाला हैं, मुआ़मला इस पर ख़त्म हुवा कि कुरआ़ अन्दाज़ी की जाए चुनान्चे कुरआ़ ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही के नाम पर निकला और यूं ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कफ़ालत में चली गईं।(1)

﴿وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا﴾ : उन के पास नया फल पाते। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को बहुत अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास बे मौसिम के फल आते जो जन्नत से उतरते और ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने किसी औ़रत का दूध न पिया। जब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास जाते तो वहां बे मौसिम के फल पाते। एक मरतबा आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से सुवाल किया कि येह फल तुम्हारे पास कहां से आता है ? तो ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बचपन की उ़म्र में जवाब दिया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है। ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने येह कलाम उस वक़्त किया जब वोह पालने या'नी झूले में परवरिश पा रही थीं जैसा कि इन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इसी ह़ाल में कलाम फ़रमाया। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जब येह देखा तो ख़याल फ़रमाया, जो पाक ज़ात ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को बे वक़्त बे मौसिम और बिग़ैर ज़ाहिरी सबब के मेवा अ़ता फ़रमाने पर क़ादिर है वोह बेशक इस पर भी क़ादिर है कि मेरी बांझ बीवी को नई तन्दुरुस्ती दे दे और मुझे इस बुढ़ापे की उ़म्र में औलाद की उम्मीद ख़त्म हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अ़ता फ़रमा दे। इस ख़याल से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की जिस का अगली आयत में बयान है।(2)

1 ......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ٣٧، ص١٥٨.

2 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٣٧، ١/٢٤٦.

www.dawateislami.net

येह वाक़िआ़ मजी़द तफ़्सील के साथ सूरए मरयम आयत **2** ता **15** में मज़्कूर है। मज़्कूरा बाला आयत से औलिया رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْھِم की करामात भी साबित होती हैं कि **अल्लाह** तआ़ला उन के हाथों पर ख़वारिक़ या'नी ख़िलाफ़े आ़दत चीजे़ं ज़ाहिर फ़रमाता है।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِیَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : यहां पुकारा ज़करिय्या अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद बेशक तू ही है दुआ़ सुनने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वहीं ज़करिय्या ने अपने रब से दुआ़ मांगी, अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे अपनी बारगाह से पाकीज़ा औलाद अ़ता फ़रमा, बेशक तू ही दुआ़ सुनने वाला है।

﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِیَّا رَبَّهٗ : **वहीं ज़करिय्या ने अपने रब से दुआ़ मांगी।**﴾ हज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जब उस जगह पर **अल्लाह** तआ़ला की करम नवाज़ी देखी तो वहीं या'नी बैतुल मुक़द्दस की मेहराब में दरवाज़े बन्द कर के पाकीज़ा औलाद की दुआ़ मांगी।

आयत "هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِیَّا رَبَّهٗ" से मा'लूम होने वाले दुआ़ के आदाब

इस आयत से चन्द चीजे़ं मा'लूम हुईं :

(1)...... जिस जगह रह़मते इलाही का नुज़ूल हुवा हो वहां दुआ़ मांगनी चाहिये जैसे जिस मक़ाम पर ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को ग़ैब से रिज़्क़ मिलता था वहीं ह़ज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ मांगी। इसी वज्ह से ख़ानए का'बा और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस और मज़ाराते औलिया पर दुआ़ मांगने में ज़ियादा फ़ाएदा है कि येह मक़ामात रह़मते इलाही की बारिश बरसने के हैं।

(2)...... उ़लमाए किराम ने उस जगह को मक़्बूलिय्यत के मक़ामात से शुमार किया जहां किसी की दुआ़ क़बूल हुई हो। लिहाज़ा जहां औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْھِم का वुजूद हो या जहां वोह रहे हों वहां दुआ़ करनी चाहिये क्यूं कि औलिया رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْھِم ब कसरत दुआ़ करते हैं

www.dawateislami.net

और उन की दुआएं भी क़बूल होती हैं तो जहां वोह रहे होंगे वहां दुआएं ज़रूर क़बूल हुई होंगी।

(3)...... हज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पाकीज़ा औलाद की दुआ मांगी। मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ औलाद की दुआ नहीं करनी चाहिये कि औलाद तो ज़बर दस्त आज़्माइश भी बन सकती है। लिहाज़ा पाकीज़ा किरदारो अ़मल वाली औलाद की दुआ करनी चाहिये ताकि उस से दुन्या व आख़िरत का सुख मिले।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَهُوَ قَآىٕمٌ یُّصَلِّیْ فِی الْمِحْرَابِۙ اَنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُكَ
بِیَحْیٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ سَیِّدًا وَّ حَصُوْرًا وَّ نَبِیًّا مِّنَ
الصّٰلِحِیْنَ ﴿۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था बेशक **अल्लाह** आप को मुज़्दा देता है यह्या का जो **अल्लाह** की त़रफ़ के एक कलिमे की तस्दीक़ करेगा और सरदार और हमेशा के लिये औ़रतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो फ़िरिश्तों ने उसे पुकार कर कहा जब कि वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि बेशक **अल्लाह** आप को यह्या की ख़ुश ख़बरी देता है जो **अल्लाह** की त़रफ़ के एक कलिमे की तस्दीक़ करेगा और वोह सरदार होगा और हमेशा औ़रतों से बचने वाला और सालिहीन में से एक नबी होगा।

﴿**فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓىٕكَةُ : तो फ़िरिश्तों ने उसे पुकार कर कहा।**﴾ हज़रते ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बड़े आ़लिम थे, बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में कुरबानियां आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही पेश किया करते थे और मस्जिद शरीफ़ में आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इजाज़त के बिग़ैर कोई दाख़िल नहीं हो सकता था, जिस वक़्त मेह़राब में आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नमाज़ में मश्ग़ूल थे और बाहर आदमी दाख़िले की इजाज़त का इन्तिज़ार कर रहे थे, दरवाज़ा बन्द था, अचानक आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

ने एक सफ़ेद पोश जवान को देखा, वोह ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام थे, उन्हों ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फ़रज़न्द की बिशारत दी जो ''اَنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُكَ'' में बयान फ़रमाई गई।(1)

येह ग़ैब की ख़बर ह़ज़रते जिब्रईल और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दोनों को मा'लूम हो गई। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बिशारत मिली कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ऐसा बेटा अ़ता किया जाएगा जिस का नाम ''यह़्या'' होगा और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलिमे या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ करेगा। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को कलिमतुल्लाह इस लिये कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें कलिमए ''كُن'' फ़रमा कर बिग़ैर बाप के पैदा किया। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर सब से पहले ईमान लाने और इन की तस्दीक़ करने वाले ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से उ़म्र में छे माह बड़े थे। ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदा ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से मिलीं तो उन्हें अपने ह़ामिला होने पर मुत्तलअ़ किया, ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : मैं भी ह़ामिला हूं। ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदा ने कहा : ऐ मरयम ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا, मुझे यूं लगता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है।(2)

﴾سَیِّدًا : **सरदार**।﴿ आयते मुबारका में ह़ज़रते यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चार औसाफ़ बयान फ़रमाए :

(1)...... **مُصَدِّقٌ** : तस्दीक़ करने वाला। इस का बयान ऊपर गुज़रा।

(2)...... **سید** या'नी सरदार : सय्यिद उस रईस को कहते हैं जो मख़्दूम व मुत़ाअ़ हो या'नी लोग उस की ख़िदमतो इत़ाअ़त करें। ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मोमिनीन के सरदार और इ़ल्मो ह़िल्म और दीन में उन के रईस थे।

(3)...... **حَصُوْرًا** : औ़रतों से बचने वाला। ह़सूर वोह शख़्स होता है जो क़ुव्वत के बा वुजूद औ़रत से रग़्बत न करे।

(4)...... सालिह़ीन में से एक नबी।

قَالَ رَبِّ اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّ قَدْ بَلَغَنِیَ الْكِبَرُ وَ امْرَاَتِیْ عَاقِرٌ ؕ

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٣٩، ١/٢٤٦.

2 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٣٩، ١/٢٤٧.

www.dawateislami.net

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोला ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा और मेरी औ़रत बांझ फ़रमाया **अल्लाह** यूं ही करता है जो चाहे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब मेरे हां लड़का कैसे पैदा होगा ह़ालां कि मुझे बुढ़ापा पहुंच चुका है और मेरी बीवी भी बांझ है ? **अल्लाह** ने फ़रमाया : **अल्लाह** यूं ही जो चाहता है करता है।

﴿اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ : **मेरे हां लड़का कैसे पैदा होगा !**﴾ ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जब बेटे की बिशारत दी गई तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तअ़ज्जुब के तौर पर अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, मेरे हां लड़का कैसे पैदा होगा ह़ालां कि मैं बूढ़ा हो चुका हूं और मेरी बीवी भी बांझ है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यूं ही जो चाहता है करता है। उस वक़्त ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र एक सो बीस साल की हो चुकी थी और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ौजा की उ़म्र अठानवे साल थी। सुवाल से मक़्सूद येह था कि बेटा किस त़रह़ अ़त़ा होगा ? आया मेरी जवानी वापस लौटाई जाएगी और ज़ौजा का बांझ होना दूर किया जाएगा या हम दोनों अपने ह़ाल पर रहेंगे ? फ़रमाया गया कि बुढ़ापे में फ़रज़न्द अ़त़ा करना उस की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं लिहाज़ा इस बुढ़ापे की ह़ालत में फ़रज़न्द मिलेगा।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ
اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿۴۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये कोई निशानी कर दे फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर और कुछ दिन रहे और तड़के उस की पाकी बोल।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दे। **अल्लाह** ने फ़रमाया : तेरी निशानी येह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिर्फ़ इशारे से बातचीत कर सकोगे और अपने रब को कसरत से याद करो और सुब्हो शाम उस की तस्बीह़ करते रहो।

﴾قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً﴿ **: अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दे।** ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़म्ल ठहर जाने की सूरत में अ़लामत ज़ाहिर होने का अ़र्ज़ किया ताकि उस वक़्त और ज़ियादा शुक्र व इ़बादत में मसरूफ़ हो जाएं। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि तेरी निशानी येह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिर्फ़ इशारे से बातचीत कर सकोगे चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ौजा को ह़म्ल ठहरा तो आदमियों के साथ गुफ़्त्गू करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही और तस्बीह़ व ज़िक्र पर आप क़ादिर रहे और येह एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि जिस में आ'ज़ा सह़ीह़ो सालिम हों और ज़बान से तस्बीह़ो तक़्दीस के कलिमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ गुफ़्त्गू न हो सके और येह अ़लामत इस लिये मुक़र्रर की गई कि इस ने'मते अ़ज़ीमा के अदाए ह़क़ में ज़बान ज़िक्रो शुक्र के सिवा और किसी बात में मश्ग़ूल न हों। इस से मा'लूम हुवा कि सालेह़ फ़रज़न्द मिलने पर रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्रिय्या अदा करना चाहिये, अ़क़ीक़ा, सदक़ा, ख़ैरात, नवाफ़िल सब इसी ने'मत का शुक्रिय्या है और चूंकि हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रह़मतुल्लिल आ़लमीन और काएनात की सब से अ़ज़ीम तरीन ने'मत हैं इस लिये इस ने'मत का शुक्रिय्या हम मीलाद की सूरत में हमेशा अदा करते रहते हैं।

﴾وَسَبِّحْ بِالْعَشِیِّ وَالْاِبْكَارِ﴿ **: और सुब्हो शाम उस की तस्बीह़ करते रहो।** अगर्चे हर वक़्त तस्बीह़ो तहलील बेहतर है लेकिन सुब्ह़ शाम ख़ुसूसिय्यत से ज़ियादा बेहतर है कि इस वक़्त दिन रात के फ़िरिश्ते जम्अ़ होते हैं नीज़ आदमी की सुब्ह़ की इब्तिदा और इन्तिहा **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र पर होनी चाहिये।

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓىٕكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۲﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब फ़िरिश्तों ने कहा, ऐ मरयम बेशक **अल्लाह** ने तुझे चुन लिया और ख़ूब सुथरा किया और आज सारे जहां की औ़रतों से तुझे पसन्द किया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (याद करो) जब फ़िरिश्तों ने कहा, ऐ मरयम ! बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें चुन लिया है और तुम्हें ख़ूब पाकीज़ा कर दिया है और तुम्हें सारे जहान की औ़रतों पर मुन्तख़ब कर लिया है।

﴿اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ : **बेशक अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया है।**﴾ इस आयत में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शान का बयान है। **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें बहुत से फ़ज़ाइल के लिये मुन्तख़ब फ़रमा लिया मसलन : औ़रत होने के बा वुजूद बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिये इन्हें नज़्र में क़बूल फ़रमा लिया ह़ालां कि सिर्फ़ मर्दों को ही मुन्तख़ब किया जाता था। लिहाज़ा येह बात इन के सिवा किसी औ़रत को मुयस्सर न हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये जन्नती रिज़्क़ भेजा गया, ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इन का कफ़ील बनाया गया, नीज़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इन्हें येह फ़ज़ीलतें फ़िरिश्तों की ज़बान से सुनाई गईं। मज़ीद ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** तआ़ला ने गुनाहों से और मर्दों के इन पर क़ुदरत पाने से पाकीज़ा बनाया और इन्हें सारे जहान की औ़रतों पर फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई कि बिग़ैर बाप के बेटा दिया और मलाएका का कलाम सुनवाया।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मरयम अपने रब के हु़ज़ूर अदब से खड़ी हो और उस के लिये सज्दा कर और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ कर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ मरयम ! अपने रब की फ़रमां बरदारी करो और उस की बारगाह में सज्दा करो और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ करो।

﴿يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ : **ऐ मरयम ! अपने रब की फ़रमां बरदारी करो।**﴾ क़ुनूत का मा'ना फ़रमां बरदारी करना भी होता है और अदब से खड़ा होना भी। जब फ़िरिश्तों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आयत में मज़्कूर हु़क्म सुनाया तो ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इतना त़वील

www.dawateislami.net

क़ियाम किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के क़दमे मुबारक पर वरम आ गया और पाउं फट कर ख़ून जारी हो गया।(1)

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ اِلَیْكَؕ وَ مَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَیُّهُمْ یَكْفُلُ مَرْیَمَ۪ وَ مَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम ख़ुफ़्या तौर पर तुम्हें बताते हैं और तुम उन के पास न थे जब वोह अपनी क़लमों से क़ुरआ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम उन के पास न थे जब वोह झगड़ रहे थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम ख़ुफ़्या तौर पर तुम्हें बताते हैं और तुम उन के पास मौजूद न थे जब वोह अपनी क़लमों से क़ुरआ डालते थे कि उन में कौन मरयम की परवरिश करेगा और तुम उन के पास न थे जब वोह झगड़ रहे थे।

﴾**ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ : येह ग़ैब की ख़बरें हैं।**﴿ इस आयत में फ़रमाया गया कि हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वाक़िआ ग़ैब की ख़बरों में से है। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ैब के उ़लूम अ़ता फ़रमाए हैं। तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वाक़िआत जो क़ुरआन व ह़दीस में आए सब ग़ैब की ख़बरें हैं।

﴾**اِذْ یُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ : जब वोह अपनी क़लमों से क़ुरआ डाल रहे थे।**﴿ चूंकि बहुत से लोग हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की परवरिश के उम्मीदवार थे। इस लिये आपस में बह़सो मुबाह़सा के बा'द उन्हों ने क़ुरआ अन्दाज़ी पर फ़ैसला छोड़ दिया चुनान्चे जिन क़लमों से तौरात लिखा करते थे उन के ज़रीए क़ुरआ अन्दाज़ी की और तै येह पाया कि हर कोई अपना क़लम पानी में रखे, जिस का क़लम पानी के बहाव के उलटी त़रफ़ बहना शुरूअ़ कर दे वोह कफ़ालत

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۴۳، ۱/۲۴۹.

www.dawateislami.net

का ह़क़दार होगा। सब ने अपनी अपनी क़लम पानी में डाली तो ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क़लम उलटी त़रफ़ बहना शुरूअ़ हो गया इस त़रह़ ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कफ़ालत में आ गईं।[1]

क़ुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए फ़ैसला करना

इस से मा'लूम हुवा कि आ़म मुआ़मलात में क़ुरआ़ अन्दाज़ी से भी फ़ैसला किया जा सकता है जैसे ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र में साथ ले जाने के लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात के दरमियान क़ुरआ़ अन्दाज़ी फ़रमाया करते थे।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓىٕكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۙ اسْمُهُ الْمَسِیْحُ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ وَجِیْهًا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ۙ ﴿۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब फ़िरिश्तों ने मरयम से कहा, ऐ मरयम **अल्लाह** तुझे बिशारत देता है अपने पास से एक कलिमे की जिस का नाम है मसीह़ ईसा मरयम का बेटा रूदार होगा दुन्या और आख़िरत में और क़ुर्ब वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब फ़िरिश्तों ने मरयम से कहा, ऐ मरयम! **अल्लाह** तुझे अपनी त़रफ़ से एक ख़ास कलिमे की बिशारत देता है जिस का नाम मसीह़, ईसा बिन मरयम होगा। वोह दुन्या व आख़िरत में बड़ी इ़ज़्ज़त वाला होगा और **अल्लाह** के मुक़र्रब बन्दों में से होगा।

﴾اِنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُكِ﴿ : **बेशक अल्लाह तुझे बिशारत देता है।** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कलिमतुल्लाह इस लिये कहा जाता है कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्म शरीफ़ की पैदाइश कलिमा "كُنْ" से हुई, बाप और मां के नुत़्फ़े से न हुई। रब तआ़ला फ़रमाता है :

[1]......تفسير كبير، ال عمران، تحت الآية: ٤٤، ٣/٢١٩.

www.dawateislami.net

اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ईसा की मिसाल **अल्लाह** के नज़्दीक आदम की त़रह़ है। उसे मिट्टी से पैदा किया फिर उसे फ़रमाया "हो जा" तो वोह हो गया।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में फ़रमाया कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलिमा हैं, नामे मुबारक ईसा है, लक़ब मसीह़ है क्यूं कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मस कर के या'नी छू कर शिफ़ा देते थे, दुन्या व आख़िरत में इ़ज़्ज़तो वजाहत वाले हैं और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे हैं। इस आयत में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत बाप की बजाए मां की त़रफ़ की गई, इस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिग़ैर बाप सिर्फ़ के मां से पैदा हुए हैं क्यूं कि अगर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का कोई बाप होता तो यहां आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत मां की त़रफ़ न होती बल्कि बाप की त़रफ़ होती। जैसा कि क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया है कि

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآىٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोगों को उन के बापों की निस्बत से पुकारो, येह **अल्लाह** के नज़्दीक इन्साफ़ के ज़ियादा क़रीब है।

وَ یُكَلِّمُ النَّاسَ فِی الْمَهْدِ وَ كَهْلًا وَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों से बात करेगा पालने में और पक्की उ़म्र में और ख़ास़ों में होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोगों से झूले में और बड़ी उ़म्र में बात करेगा और ख़ास़ बन्दों में से होगा।

﴿وَ یُكَلِّمُ النَّاسَ فِی الْمَهْدِ : **और वोह लोगों से झूले में कलाम करेगा।**﴾ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तीन शानें यहां बयान हुई।

(1)...... बात करने की उ़म्र से पहले ही कलाम करेंगे चुनान्चे सूरए मरयम आयत **29** ता **33** में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का कलाम मज़्कूर है।

1 ......ال عمران:۵۹.
2 ......احزاب: ۵.

www.dawateislami.net

(2)...... पक्की उ़म्र में लोगों से कलाम फ़रमाएंगे और वोह यूं कि आस्मान से उतरने के बा'द आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام लोगों से कलाम फ़रमाएंगे। इस से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आस्मान से ज़मीन की त़रफ़ उतरेंगे जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे। लिहाज़ा जैसे आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बचपन में कलाम करना मो'जिज़ा है, ऐसे ही पक्की उ़म्र में इस त़रह़ कलाम करना मो'जिज़ा है।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला के ख़ास बन्दों में से हैं।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़ात

मज्मूई त़ौर पर सूरए आले इमरान की आयत नम्बर **45** और **46** में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बहुत सी सिफ़ात बयान हुई :

(1)...... कलिमतुल्लाह होना।

(2)...... मसीह़ होना।

(3)...... ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बेटा होना।

(4)...... बिग़ैर बाप के पैदा होना।

(5)...... दुन्या में इ़ज़्ज़त वाला होना कि कुरआन के ज़रीए़ सारे आ़लम में इन के नाम की धूम मचा दी गई। आख़िरत में ख़ुसूसी इ़ज़्ज़त वाला होना बहुत से त़रीक़ों से होगा, उन में से एक येह भी है कि क़ियामत में इन्ही के ज़रीए़ मख़्लूक़ को ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक रहनुमाई मिलेगी।

(6)...... बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में बहुत ज़ियादा कुर्ब़ो मन्ज़िलत रखने वाला होना वग़ैरा। मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ना'त ख़्वानी सुन्नते इलाहिय्यह है, **अल्लाह** तआ़ला इस की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّ لَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۷﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ न लगाया, फ़रमाया **अल्लाह** यूं ही पैदा करता है जो चाहे, जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही कहता है कि हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (मरयम ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरे हां बच्चा कैसे होगा ? मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ भी नहीं लगाया। **अल्लाह** ने फ़रमाया : **अल्लाह** यूं ही जो चाहता है पैदा करता है, जब वोह किसी काम का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो उसे सिर्फ़ इतना फ़रमाता है, "हो जा" तो वोह काम फ़ौरन हो जाता है।

﴿اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ : **मेरे हां बच्चा कहां से होगा ?**﴾ जब फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बेटे की बिशारत दी तो उन्हों ने ह़ैरत से अ़र्ज़ किया : **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, मेरे हां बच्चा कैसे होगा ? मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ भी नहीं लगाया और दस्तूर येह है कि बच्चा औ़रत व मर्द के मिलाप से होता है तो मुझे बच्चा किस त़रह़ अ़त़ा होगा, निकाह़ से या यूं ही बिग़ैर मर्द के ? जवाब मिला कि इसी ह़ालत में या'नी तुम कुंवारी ही रहोगी और फ़रज़न्द पैदा हो जाएगा, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बड़ी क़ुदरत वाला है और उस की शान येह है जब वोह किसी काम का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो उसे सिर्फ़ इतना फ़रमाता है, "हो जा" तो वोह काम फ़ौरन हो जाता है।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۴۸﴾ وَرَسُوْلًا
اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ
لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ
بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ

www.dawateislami.net

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** उसे सिखाएगा किताब और हिक्मत और तौरैत और इन्जील और रसूल होगा बनी इसराईल की त़रफ़ येह फ़रमाता हुवा कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परिन्द हो जाती है **अल्लाह** के हुक्म से और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** के हुक्म से और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़ कर रखते हो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** उसे किताब और हिक्मत और तौरैत और इन्जील सिखाएगा। और (वोह ईसा) बनी इसराईल की त़रफ़ रसूल होगा कि मैं तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं, वोह येह कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे जैसी एक शक्ल बनाता हूं फिर उस में फूंक मारूंगा तो वोह **अल्लाह** के हुक्म से फ़ौरन परिन्दा बन जाएगी और मैं पैदाइशी अन्धों को और कोढ़ के मरीज़ों को शिफ़ा देता हूं और मैं **अल्लाह** के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा करता हूं और तुम्हें ग़ैब की ख़बर देता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जम्अ़ करते हो, बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

﴿وَ رَسُوْلًا اِلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ﴾ **: और बनी इसराईल की त़रफ़ रसूल होगा।** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बनी इसराईल की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा और दलील के त़ौर पर उस ज़माने के ह़ालात के मुवाफ़िक़ बहुत से मो'जिज़ात अ़त़ा फ़रमाए। आयत से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सिर्फ़ बनी इसराईल के नबी थे। येही बात मौजूदा बाइबल में भी मौजूद है। आयत में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पांच मो'जिज़ात का बयान है : **(1)** मिट्टी से परिन्दे की सूरत बना कर फूंक मारना और उस से ह़क़ीक़ी परिन्दा बन जाना, **(2)** पैदाइशी अन्धों को आंखों का नूर अ़त़ा फ़रमा देना, **(3)** कोढ़ के मरीज़ों को शिफ़ायाब कर देना, **(4)** मुर्दों को ज़िन्दा कर देना, **(5)** ग़ैब की ख़बरें देना।

www.dawateislami.net

हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात की तफ़्सील

(1)...... **परिन्दे पैदा करना :** जब हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने नुबुव्वत का दा'वा किया और मो'जिज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की, कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक चमगादड़ पैदा करें। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई फिर उस में फूंक मारी तो वोह उड़ने लगी।(1)

चमगादड़ की ख़ुसूसिय्यत येह है कि वोह उड़ने वाले जानवरों में बहुत अ़जीब है और क़ुदरत पर दलालत करने में दूसरों से बढ़ कर है क्यूं कि वोह बिग़ैर परों के उड़ती है और दांत रखती है और हंसती है और उस की मादा के छाती होती है और वोह बच्चा जनती है हालां कि उड़ने वाले जानवरों में येह बातें नहीं हैं।(2)

(2)...... **कोढ़ियों को शिफ़ायाब करना ।** हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस मरीज़ को भी शिफ़ा देते जिस का बरस बदन में फैल गया हो और अतिब्बा उस के इलाज से आ़जिज़ हों चूंकि हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में तिब का इल्म इन्तिहाई उ़रूज पर था और तिब के माहिरीन इलाज के मुआ़मले में इन्तिहाई महारत रखते थे इस लिये उन को इसी क़िस्म के मो'जिज़े दिखाए गए ताकि मा'लूम हो कि तिब के त़रीक़े से जिस का इलाज मुम्किन नहीं है उस को तन्दुरुस्त कर देना यक़ीनन मो'जिज़ा और नबी की नुबुव्वत की दलील है। हज़्रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि अक्सर हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास एक एक दिन में पचास पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तिमाअ़ हो जाता था, उन में जो चल सकता था वोह हाज़िरे ख़िदमत होता था और जिसे चलने की त़ाक़त न होती उस के पास ख़ुद हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले जाते और दुआ़ फ़रमा कर उस को तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त़ कर लेते।(3)

(3)...... **मुर्दों को ज़िन्दा करना ।** हज़्रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हज़्रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया, **एक आ़ज़र** जिस को आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ मुख़्लिसाना महब्बत थी, जब उस की हालत नाज़ुक हुई तो उस की बहन ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इत्तिलाअ़ दी मगर वोह आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से तीन रोज़ की मसाफ़त के फ़ासिले पर था। जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन रोज़ में वहां पहुंचे तो मा'लूम

---

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٤٩، ١/٢٥١.
2 ......جمل، ال عمران، تحت الآية: ٤٩، ١/٤١٨.
3 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٤٩، ١/٢٥١.

www.dawateislami.net

हुवा कि उस के इन्तिक़ाल को तीन रोज़ हो चुके हैं। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस की बहन से फ़रमाया, हमें उस की क़ब्र पर ले चल। वोह ले गई, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ फ़रमाई जिस से आ़ज़र हुक्मे इलाही से ज़िन्दा हो कर क़ब्र से बाहर आ गया और मुद्दत तक ज़िन्दा रहा और उस के हां औलाद हुई। **दूसरा एक बुढ़िया का लड़का था** जिस का जनाज़ा हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने जा रहा था, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई वोह ज़िन्दा हो कर जनाज़ा उठाने वालों के कन्धों से उतर पड़ा और कपड़े पहने, घर आ गया, फिर ज़िन्दा रहा और उस के हां औलाद भी हुई। **तीसरी एक लड़की थी** जो शाम के वक़्त मरी और **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उस को ज़िन्दा किया। **चौथे साम बिन नूह़ थे** जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे। लोगों ने ख़्वाहिश की, कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इन को ज़िन्दा करें। चुनान्चे आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन की निशान देही से क़ब्र पर पहुंचे और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ की। साम ने सुना कि कोई कहने वाला कहता है। ''اَجِبْ رُوْحَ اللّٰه'' या'नी ''हज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बात सुन'' येह सुनते ही वोह मरऊ़ब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुवा कि क़ियामत क़ाइम हो गई, इस की दहशत से उन के सर के आधे बाल सफ़ेद हो गए फिर वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरख़्वास्त की, कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तक्लीफ़ न हो, इस के बिग़ैर उन्हें वापस किया जाए चुनान्चे उसी वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो गया।(1)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिसे ज़िन्दा फ़रमाते उसे ''بِاِذْنِ اللّٰهِ'' या'नी ''**अल्लाह** के हुक्म से'' फ़रमाते। इस फ़रमान में उन ईसाइयों का रद है जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उलूहिय्यत या'नी ख़ुदा होने के क़ाइल थे।

(4)...... ग़ैब की ख़बरें देना। जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो बा'ज़ लोगों ने कहा कि येह तो जादू है और कोई मो'जिज़ा दिखाइये, तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जम्अ़ कर रखते हो मैं उस की तुम्हें ख़बर देता हूं और हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक पर येह मो'जिज़ा भी ज़ाहिर हुवा आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आदमी को बता देते थे जो वोह कल खा चुका और जो आज खाएगा

(1)......تفسير قرطبی، ال عمران، تحت الآية: ٤٩، ٢ /٧٤، الجزء الرابع، جمل، ال عمران، تحت الآية: ٤٩، ١ /٤١٩-٤٢٠،ملتقطاً.

www.dawateislami.net

और जो अगले वक़्त के लिये तय्यार कर रखा होता। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास बहुत से बच्चे जम्अ़ हो जाते थे, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फुलां चीज़ तय्यार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने फुलां फुलां चीज़ खाई है, फुलां चीज़ तुम्हारे लिये बचा कर रखी है, बच्चे घर जाते और घर वालों से वोह चीज़ मांगते। घर वाले वोह चीज़ देते और उन से कहते कि तुम्हें किस ने बताया? बच्चे कहते: ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने, तो लोगों ने अपने बच्चों को आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास आने से रोका और कहा कि वोह जादूगर हैं, उन के पास न बैठो और एक मकान में सब बच्चों को जम्अ़ कर दिया। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा: वोह यहां नहीं हैं। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि फिर इस मकान में कौन है? उन्हों ने कहा: सुअर हैं। फ़रमाया, ऐसा ही होगा। अब जो दरवाज़ा खोला तो सब सुअर ही सुअर थे।[(1)]

सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 49 से मा'लूम होने वाले अ़क़ाइद व मसाइल

इस आयते मुबारका से बहुत से अ़क़ाइद व मसाइल मा'लूम होते हैं:

(1)...... ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात अ़ता हुए।

(2)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मो'जिज़ात अ़ता होते हैं।

(3)...... बहुत से मो'जिज़ात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इख़्तियार से ज़ाहिर होते हैं। येह नहीं कह सकते कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन मो'जिज़ात में कोई इख़्तियार नहीं होता।

(4)...... मो'जिज़ात बहुत सी क़िस्मों के हो सकते हैं ह़त्ता कि मुर्दों को ज़िन्दा करने का भी मो'जिज़ा होता है।

(5)...... **अल्लाह** तआ़ला अपने प्यारों को इख़्तियारात और क़ुदरतें अ़ता फ़रमाता है।

(6)...... मह़बूबाने ख़ुदा लोगों की ह़ाजत रवाई पर क़ुदरत रखते हैं और उन की मुश्किल कुशाई फ़रमाते हैं।

(7)...... मह़बूबाने ख़ुदा आ़म आ़दत से हट कर मुश्किल कुशाई करते हैं।

(8)...... मह़बूबाने ख़ुदा की क़ुदरतें आ़म मख़्लूक़ की क़ुदरतों से बढ़ कर और बालातर होती हैं।

---

(1)......تفسیر قرطبی،اٰل عمران،تحت الآیۃ:٤٩، ٢/٧٤، الجزء الرابع، جمل،اٰل عمران،تحت الآیۃ:٤٩، ١/٤٢٠،ملتقطاً.

www.dawateislami.net

(9)...... महबूबाने ख़ुदा शिफ़ा भी बख़्शते हैं।

(10)...... **अल्लाह** तआला अपने प्यारों की दुआएं क़बूल फ़रमाता है। इसी लिये बतौरे ख़ास औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہم और महबूबाने ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ की जाती है कि आप **अल्लाह** तआला की बारगाह में हमारी सिफ़ारिश फ़रमा दें और हमारे लिये दुआ कर दें।

(11)...... महबूबाने ख़ुदा के तमाम इख़्तियारात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अता और इजाज़त से होते हैं।

(12)...... महबूबाने ख़ुदा के इख़्तियारात का इन्कार करना सीधा कुरआन का इन्कार करना है।

(13)...... महबूबाने ख़ुदा के लिये कुदरतो इख़्तियार मानना शिर्क नहीं वरना مَعَاذَاللّٰہ कुरआने पाक की ता'लीमात को क्या कहेंगे ?

(14)...... शिफ़ा देने, मुश्किलात दूर करने वग़ैरा के अल्फ़ाज़ **अल्लाह** तआला के इलावा किसी और के लिये इस्ति'माल करना शिर्क नहीं लिहाज़ा येह कहना जाइज़ है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुश्किल कुशा और दाफ़िउल बला हैं, या, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे औलाद देते हैं क्यूं कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि मैं मुर्दे ज़िन्दा करता हूं, मैं ला इलाज बीमारों को अच्छा करता हूं, मैं ग़ैबी ख़बरें देता हूं, हालां कि येह तमाम काम रब عَزَّوَجَلَّ के हैं।

(15)...... महबूबाने ख़ुदा ग़ैब की ख़बरें जानते हैं जैसे हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام घरों में रखी हुई चीज़ों को भी जानते थे।

(16)...... महबूबाने ख़ुदा के लिये उलूमे ग़ैबिया मानना तौहीद के मुनाफ़ी नहीं बल्कि **अल्लाह** तआला की अता का इन्कार करना तौहीद के मुनाफ़ी है। इस आयत में जितना ग़ौर करते जाएं उतना ज़ियादा अक़ाइदे अहले सुन्नत वाज़ेह होते जाएंगे।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۵۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तस्दीक़ करता आया हूं अपने से पहली किताब तौरैत की और इस लिये कि हलाल करूं तुम्हारे लिये कुछ वोह चीज़ें जो तुम पर हराम थीं और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूं, तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुझ से पहले जो तौरैत किताब है उस की तस्दीक़ करने वाला बन कर आया हूं और इस लिये कि तुम्हारे लिये कुछ वोह चीज़ें ह़लाल कर दूं जो तुम पर ह़राम की गई थीं और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं तो **अल्लाह** से डरो और मेरी इत़ाअ़त करो।

﴾وَمُصَدِّقًا : **और तस्दीक़ करने वाला।**﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तौरैत के किताबुल्लाह और ह़क़ होने की तस्दीक़ के लिये भी तशरीफ़ लाए थे और इस के बा'ज़ अह़काम को मन्सूख़ फ़रमाने भी चुनान्चे बा'ज़ वोह चीज़ें जो शरीअ़ते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़राम थीं जैसे ऊंट का गोश्त और कुछ परिन्दे तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन्हें ह़लाल फ़रमा दिया। आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इज़्ने ख़ुदावन्दी से ह़लाल व ह़राम फ़रमाने के मुख़्तार हैं क्यूं कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि मैं ह़लाल करता हूं। ह़लाल व ह़राम करने की निस्बत अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तरफ़ और भी कई जगहों पर की गई है चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में सूरए आ'राफ़ आयत **157** में येही निस्बत मौजूद है। इस की मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की किताब ''اَلْاَمْنُ وَالْعُلٰی لِنَاعِتِی الْمُصْطَفٰی بِدَافِعِ الْبَلَاءِ (मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दाफ़िउ़ल बला या'नी बलाएं दूर करने वाला कहने वालों के लिये इन्आ़मात)'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۵۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मेरा तुम्हारा सब का रब **अल्लाह** है तो उसी को पूजो, येह है सीधा रास्ता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** मेरा और तुम्हारा सब का रब है तो उसी की इ़बादत करो। येही सीधा रास्ता है।

﴾اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ : **बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा सब का रब है।**﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह फ़रमाना अपनी अ़ब्दिय्यत या'नी बन्दा होने का इक़रार और अपनी रबूबिय्यत या'नी रब होने का इन्कार है इस में ईसाइयों का रद है। गोया फ़रमाया कि मैं इतनी

www.dawateislami.net

कुदरतों और इल्म के बा वुजूद भी ख़ुदा नहीं बल्कि ख़ुदा का बन्दा हूं। इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया व औलिया के मो'जिज़ात या करामात मानना शिर्क नहीं और इस से येह लाज़िम नहीं आता कि हम ने इन्हें रब मान लिया। इस से मुसल्मानों को मुश्रिक कहने वालों को इब्रत पकड़नी चाहिये।

فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِؕ
قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِۚ وَ اشْهَدْ بِاَنَّا
مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब ईसा ने उन से कुफ़्र पाया बोला कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** की त़रफ़, ह़वारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम **अल्लाह** पर ईमान लाए, और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसल्मान हैं। ऐ रब हमारे हम उस पर ईमान लाए जो तू ने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें ह़क़ पर गवाही देने वालों में लिख ले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब ईसा ने उन (बनी इसराईल) से कुफ़्र पाया तो फ़रमाया : **अल्लाह** की त़रफ़ हो कर कौन मेरा मददगार होता है ? मुख़्लिस साथियों ने कहा : हम **अल्लाह** के दीन के मददगार हैं। हम **अल्लाह** पर ईमान लाए हैं और आप इस पर गवाह हो जाएं कि हम यक़ीनन मुसल्मान हैं। ऐ हमारे रब ! हम उस किताब पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल फ़रमाई और हम ने रसूल की इत्तिबाअ़ की पस हमें गवाही देने वालों में से लिख दे।

﴿فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ : **फिर जब ईसा ने उन से कुफ़्र पाया।**﴾ या'नी जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि यहूदी अपने कुफ़्र पर क़ाइम हैं और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी रोशन आयात और मो'जिज़ात से भी इन पर कोई असर नहीं हुवा और इस का सबब येह था कि उन्हों ने पहचान लिया था कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही वोह मसीह़ हैं जिन की तौरैत में बिशारत दी गई है और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इन के दीन को मन्सूख़ करेंगे,

www.dawateislami.net

तो जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दा'वत का इज़्हार फ़रमाया तो येह उन पर बहुत शाक़ गुज़रा और वोह आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ईज़ा और क़त्ल के दरपै हुए और उन्हों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ कुफ़्र किया। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस वक़्त फ़रमाया कि कौन है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ हो कर मेरा मददगार बने। इस पर ह़वारियों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मदद का वा'दा किया।[1]

ह़वारी वोह मुख़्लिसीन हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दीन के मददगार थे और आप पर अव्वल ईमान लाए, येह बारह अश्ख़ास थे। इस से मा'लूम हुवा कि ब वक़्ते मुसीबत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों से मदद मांगना सुन्नते पैग़म्बर है। ह़वारियों ने कहा कि हम ईमान लाए और फिर कहा कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हमारे मुसल्मान होने पर गवाह बन जाएं। इस से मा'लूम हुवा कि ईमान व इस्लाम एक ही हैं और येह भी मा'लूम होता है कि पहले अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दीन इस्लाम था, यहूदिय्यत व नसरानिय्यत नहीं। इसी लिये ईमान लाने वालों ने अपने आप को मुसल्मान कहा, ईसाई नहीं।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ ع الثلث ٥ ١٣ ٣

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िरों ने मक्र किया और **अल्लाह** ने उन के हलाक की ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और **अल्लाह** सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और काफ़िरों ने ख़ुफ़्या मन्सूबा बनाया और **अल्लाह** ने ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और **अल्लाह** सब से बेहतर ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाने वाला है।

﴿وَمَكَرُوْا﴾ : **और उन्हों ने ख़ुफ़्या मन्सूबा बनाया।** या'नी बनी इसराईल के यहूदियों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ मक्र किया कि धोके के साथ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक शख़्स को इस काम पर मुक़र्रर कर दिया। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के मक्र का येह बदला दिया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आस्मान पर उठा लिया और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शबाहत उस शख़्स पर डाल दी जो उन के क़त्ल के लिये आमादा हुवा था चुनान्चे यहूदियों ने उस को इसी शुबे पर क़त्ल कर दिया।[2]

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٥٢، ١/ ٢٥٣.
2 ......صاوی، ال عمران، تحت الآية: ٥٤، ١/ ٢٧٦.

www.dawateislami.net

लफ़्ज़ "मक्र" के मा'ना

लफ़्ज़ मक्र लुग़ते अ़रब में सत्र या'नी पोशीदगी के मा'ना में है इसी लिये ख़ुफ़्या तदबीर को भी मक्र कहते हैं और वोह तदबीर अगर अच्छे मक़्सद के लिये हो तो महमूद और किसी क़बीह ग़रज़ के लिये हो तो मज़्मूम होती है मगर उर्दू ज़बान में येह लफ़्ज़ फ़रेब के मा'ना में मुस्ता'मल होता है इस लिये हरगिज़ शाने इलाही में न कहा जाएगा और अब चूंकि अ़रबी में भी धोके के मा'ना में मा'रूफ़ हो गया है इस लिये अ़रबी में भी शाने इलाही में इस का इत्लाक़ जाइज़ नहीं आयत में जहां कहीं मज़्कूर हुवा है वहां वोह ख़ुफ़्या तदबीर के मा'ना में है।

إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى إِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : याद करो जब **अल्लाह** ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे पैरवों को क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो जब **अल्लाह** ने फ़रमाया : ऐ ईसा ! मैं तुम्हें पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से नजात अ़ता करूंगा और तेरी पैरवी करने वालों को क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे तो जिन बातों में तुम झगड़ते थे उन बातों का मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूंगा।

www.dawateislami.net

﴿اِذْقَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسٰۤی : **जब अल्लाह ने फ़रमाया : ऐ ईसा ।**﴾ इस आयते मुबारका में ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को चार बातें फ़रमाई गईं : **(1)** तवफ़्फ़ा या'नी पूरी उ़म्र को पहुंचाना, **(2)** अपनी त़रफ़ उठा लेना, **(3)** काफ़िरों से नजात देना, **(4)** ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पैरव कारों को ग़लबा देना । अब हम इन को ज़रा तफ़्सील से बयान करते हैं ।

पहली बात तवफ़्फ़ा है । मिर्ज़ाइयों ने आयते पाक के इन अल्फ़ाज़ को बुन्याद बना कर यहूदो नसारा की पैरवी में ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात का दा'वा किया और येह सरासर ग़लत़ है क्यूं कि पहली बात तो येह है कि तवफ़्फ़ा का ह़क़ीक़ी मा'ना है "पूरा करना" जैसे क़ुरआने पाक में है :

وَ اِبْرٰهِیْمَ الَّذِیْ وَفّٰۤی (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इब्राहीम जो पूरे अह़काम बजा लाया ।

और येह मौत के मा'ना में भी इस्ति'माल होता है, लेकिन येह इस का मजाज़ी मा'ना है और जब तक कोई वाज़ेह़ क़रीना मौजूद न हो उस वक़्त तक लफ़्ज़ का ह़क़ीक़ी मा'ना छोड़ कर मजाज़ी मा'ना मुराद नहीं लिया जा सकता, और यहां कोई ऐसा क़रीना मौजूद नहीं कि तवफ़्फ़ा का मा'ना मौत किया जाए बल्कि इस का ह़क़ीक़ी मा'ना मुराद लेने पर वाज़ेह़ क़राइन भी मौजूद हैं और वोह क़राइन अह़ादीसे मुबारका हैं जिन में येह बयान है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़िन्दा आस्मान पर उठाए गए और क़ुर्बे क़ियामत में वापस तशरीफ़ लाएंगे । लिहाज़ा इस आयत से ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात साबित नहीं होती । दूसरे नम्बर पर बिल्फ़र्ज़ अगर तवफ़्फ़ा का मा'ना "वफ़ात देना" ही है तो इस से येह कहां साबित हुवा कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वफ़ात पा चुके हैं । सिर्फ़ येह फ़रमाया है कि "ऐ ईसा ! मैं तुझे वफ़ात दूंगा ।" तो येह बात तो हम भी मानते हैं कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी वफ़ात पाएंगे, येह मा'ना नहीं है कि हम ने तुझे फ़ौत कर दिया । अब येह बात कि आयत में तवफ़्फ़ा या'नी वफ़ात देने का पहले तज़्किरा है और उठाए जाने का बा'द में और चूंकि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उठाए जा चुके हैं लिहाज़ा इन की वफ़ात भी पहले साबित हो गई तो इस का जवाब येह है कि आयत में "مُتَوَفِّیْكَ" और "رَافِعُكَ" के दरमियान में "वाव" है और अ़रबी ज़बान में "वाव" तरतीब के लिये नहीं आती कि जिस का मत़लब येह निकले कि वफ़ात पहले हुई और

1 ......النجم:۳۷.

www.dawateislami.net

उठाया जाना बा'द में, जैसे कुरआने पाक में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया गया :

وَاسْجُدِیْ وَارْكَعِیْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सज्दा और रुकूअ़ कर।

यहां सज्दे का पहले तज़्किरा है और रुकूअ़ का बा'द में, तो क्या इस का येह मत़लब है कि ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रुकूअ़ बा'द में करती थीं और सज्दा पहले, हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा जैसे यहां ''वाव'' का आना तरतीब के लिये नहीं है ऐसे ही मज़्कूरा बाला आयत में ''वाव'' तरतीब के लिये नहीं है।

दूसरी बात ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का उठाया जाना है। फ़रमाया गया कि हम तुम्हें बिग़ैर मौत के उठा कर आस्मान पर इ़ज़्ज़त की जगह और फ़िरिश्तों की जाए क़रार में पहुंचा देंगे। रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा हो कर नाज़िल होंगे, सलीब तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीरों को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह़ फ़रमाएंगे, औलाद होगी और फिर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का विसाल होगा। वोह उम्मत कैसे हलाक हो जिस का अव्वल मैं हूं और आख़िर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और वस्त़ में मेरे अहले बैत में से ह़ज़रते महदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ।(2)

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मनारए शर्क़ी दिमश्क़ पर नाज़िल होंगे।(3)

येह भी ह़दीस में है कि ''हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरे में मदफ़ून होंगे।''(4)

तीसरी बात कि कुफ़्फ़ार से नजात दिलाऊंगा। इस त़रह़ कि कुफ़्फ़ार के नरग़े से तुम्हें बचा लूंगा और वोह तुम्हें सूली न दे सकेंगे।

चौथी बात कि मानने वालों को मुन्किरों पर ग़लबा देना। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मानने वालों से मुराद है ''इन को सह़ीह़ त़ौर पर मानने वाले'' और सह़ीह़ मानने वाले यक़ीनन सिर्फ़ मुसल्मान हैं क्यूं कि यहूदी तो वैसे ही ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दुश्मन हैं और

---

1 ......ال عمران:٤٣.

2 ......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ٥٥، ص١٦٣، ابن عساكر، ذكر من اسمه عيسىٰ، عيسى بن مريم، ٥٢٢/٤٧.

3 ......مسلم، كتاب الفتن واشراط الساعة، باب ذكر الدجال وصفته وما معه، ص١٥٦٨، الحديث: ١١٠(٢٩٣٧).

4 ......الوفاء باحوال المصطفى، ابواب بعثه و حشره و ما يجرى له صلى الله عليه وسلم، الباب الثانى فى حشر عيسى بن مريم مع نبينا، ص٣٢٥، الجزء الثانى.

www.dawateislami.net

ईसाई इन्हें ख़ुदा मानते हैं तो येह ''मानना'' तो बद तरीन क़िस्म का ''न मानना'' है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाएं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को मा'बूद न मानो और येह कहें : नहीं, हम तो आप को भी मा'बूद मानेंगे।

فَاَمَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِیْدًا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۷﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَیْكَ مِنَ الْاٰیٰتِ وَ الذِّكْرِ الْحَكِیْمِ ﴿۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो काफ़िर हुए मैं उन्हें दुन्या व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब करूंगा और उन का कोई मददगार न होगा। और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये **अल्लाह** उन का नेग उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम **अल्लाह** को नहीं भाते। येह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ आयतें और ह़िक्मत वाली नसीह़त।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : पस जो लोग काफ़िर हैं तो मैं उन्हें दुन्या व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब दूंगा और उन का कोई मददगार न होगा। और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये तो **अल्लाह** उन्हें उन का पूरा पूरा अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और **अल्लाह** ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। येह जो हम तुम्हारे सामने पढ़ते हैं कुछ निशानियां हैं और ह़िक्मत वाली नसीह़त है।

﴾فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِیْدًا﴿ : **तो मैं उन्हें सख़्त अ़ज़ाब दूंगा।** काफ़िर **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से दुन्या व आख़िरत में सज़ा के मुस्तह़िक़ हैं। दुन्या में सज़ा तो क़त्ल, क़ैद और जिज़्या लाज़िम होना है और आख़िरत का अ़ज़ाब दोज़ख़ है।

اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۵۹﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईसा की कहावत **अल्लाह** के नज़्दीक आदम की त़रह़ है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ईसा की मिसाल **अल्लाह** के नज़्दीक आदम की त़रह़ है जिसे **अल्लाह** ने मिट्टी से बनाया फिर उसे फ़रमाया : "हो जा" तो वोह फ़ौरन हो गया।

﴿اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰی : **बेशक ईसा की मिसाल।**﴾ अ़लाक़ए नजरान के ईसाइयों का एक वफ़्द सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और वोह लोग ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहने लगे कि "आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुमान करते हैं कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं ?" फ़रमाया : "हां, उस के बन्दे और उस के रसूल और उस का कलिमा हैं जो उस ने कुंवारी पाक मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़त़ा फ़रमाया।" ईसाई येह सुन कर बहुत ग़ुस्से में आए और कहने लगे : ऐ मुह़म्मद ! क्या तुम ने कभी बे बाप का इन्सान देखा है ? इस से उन का मत़लब येह था कि वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बेटे हैं। (مَعَاذَ اللہ) इस पर येह आयत नाज़िल हुई और येह बताया गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो सिर्फ़ बिग़ैर बाप के पैदा हुए जब कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो मां और बाप दोनों के बिग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए तो जब उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मख़्लूक़ और बन्दा मानते हो तो ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मख़्लूक़ व बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है ?(1)

लिहाज़ा जैसे ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बिग़ैर नुत़्फ़े के बने, ऐसे ही ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام। तो जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुदा के बेटे न हुए तो ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बेटे कैसे हो सकते हैं ? इस से येह भी मा'लूम हो गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बिग़ैर बाप के पैदा हुए।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِیْنَ ۝۶۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो शक वालों में न होना।

1 ......خازن، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۵۹، ۱/۲۵۷، تفسیر قرطبی، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۵۹، ۲/۷۹-۸۰، الجزء الرابع، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ सुनने वाले ! ह़क़ तेरे रब की त़रफ़ से है पस तुम शक करने वालों में से न होना ।

﴾اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ : **ह़क़ तेरे रब की त़रफ़ से है ।**﴿ आयत का मा'ना येह भी हो सकता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह जो वाक़िआ़ बयान हुवा येह ह़क़ है और तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है लिहाज़ा इस में शक न करो और येह भी हो सकता है कि हर ह़क़ तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है लिहाज़ा इस में शक न करो और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ़ भी उसी ह़क़ में से है जो तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है लिहाज़ा इस में भी शक न करो ।

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ اَبْنَآءَكُمْ وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ۫ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِیْنَ ﴿۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ऐ मह़बूब जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत डालें ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर ऐ ह़बीब ! तुम्हारे पास इल्म आ जाने के बा'द जो तुम से ईसा के बारे में झगड़ा करें तो तुम उन से फ़रमा दो : आओ हम अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को (मुक़ाबले में) बुला लेते हैं फिर मुबाहला करते हैं और झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत डालते हैं ।

﴾فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ : **जो तुम से ईसा के बारे में झगड़ा करें ।**﴿ यहां मुबाहले का ज़िक्र हो रहा है इस का मा'ना समझ लें, मुबाहले का उ़मूमी मफ़्हूम येह है कि दो मद्दे मुक़ाबिल अफ़राद आपस में यूं दुआ़ करें कि अगर तुम ह़क़ पर और मैं बात़िल हूं तो **अल्लाह** तआ़ला मुझे हलाक

www.dawateislami.net

करे और अगर मैं ह़क़ पर और तुम बाति़ल पर हो तो **अल्लाह** तआ़ला तुझे हलाक करे। फिर येही बात दूसरा फ़रीक़ भी कहे। अब वाक़िआ़ पढ़िये : जब सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नजरान के ईसाइयों को येह आयत पढ़ कर सुनाई और मुबाहले की दा'वत दी तो कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें, कल आप को जवाब देंगे। जब वोह जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े आ़लिम और साहि़बे राय शख़्स आ़क़िब से कहा कि "ऐ अ़ब्दुल मसीह़! मुबाहला करने के बारे में आप की क्या राय है?" उस ने कहा : ऐ नसारा की जमाअ़त! तुम पहचान चुके हो कि मुह़म्मद नबिय्ये मुरसल तो ज़रूर हैं। अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानिय्यत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और घरों को लौट चलो। येह मश्वरा होने के बा'द वोह रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गोद में तो इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं और दस्ते मुबारक में इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ है और ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हैं और ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन सब से फ़रमा रहे हैं कि "जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना।" नजरान के सब से बड़े ईसाई पादरी ने जब इन ह़ज़रात को देखा तो कहने लगा : ऐ जमाअ़ते नसारा! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पहाड़ को हटा देने की दुआ़ करें तो **अल्लाह** तआ़ला पहाड़ को जगह से हटा दे, इन से मुबाहला न करना वरना हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा। येह सुन कर नसारा ने सरकारे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि "मुबाहले की तो हमारी राय नहीं है।" आख़िर कार उन्हों ने जिज़्या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहले के लिये तय्यार न हुए।(1)

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है, नजरान वालों पर अ़ज़ाब क़रीब आ ही चुका था। अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दरों और सुवरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता और नजरान और वहां के रहने वाले परिन्दे तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अ़र्से में तमाम नसारा हलाक हो जाते।"(2)

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٦١، ١/٢٥٨.
2 ......ابو سعود، ال عمران، تحت الآية: ٦١، ١/٣٧٣.

www.dawateislami.net

मुबाहला किस में होना चाहिये

इस से दो मस्अले मा'लूम हुए **एक** येह कि मुनाज़रे से ऊपर दरजा मुबाहले का है या'नी मुख़ालिफ़े दीन के साथ बद दुआ करनी। **दूसरे** येह कि मुबाहला दीन के यक़ीनी मसाइल में होना चाहिये न कि ग़ैर यक़ीनी मसाइल में लिहाज़ा इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर तो मुबाहला हो सकता है। ह़नफ़ी शाफ़ेई इख़्तिलाफ़ी मसाइल में नहीं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۲﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۳﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येही बेशक सच्चा बयान है और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक **अल्लाह** ही ग़ालिब है ह़िक्मत वाला। फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** फ़सादियों को जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक येही सच्चा बयान है और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक **अल्लाह** ही ग़ालिब है ह़िक्मत वाला है। फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** फ़साद करने वालों को जानता है।

﴿اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ﴾ **: बेशक येही सच्चा बयान है।** या'नी येह कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और उस के रसूल हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। इस में नसारा का भी रद है और तमाम मुश्रिकीन का भी।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ, ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की त़रफ़ आओ जो हम में तुम में यक्सां है येह कि इ़बादत न करें मगर ख़ुदा की और उस का शरीक किसी को न करें और हम में कोई एक दूसरे को रब न बना ले **अल्लाह** के सिवा फिर अगर वोह न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम मुसल्मान हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो, ऐ अहले किताब ! ऐसे कलिमे की त़रफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है वोह येह कि हम **अल्लाह** के सिवा किसी की इ़बादत न करें और किसी को उस का शरीक न ठहराएं और हम में कोई एक **अल्लाह** के सिवा किसी दूसरे को रब न बनाए फिर (भी) अगर वोह मुंह फेरें तो ऐ मुसल्मानो ! तुम कह दो : ''तुम गवाह रहो कि हम सच्चे मुसल्मान हैं।''

﴿قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **तुम फ़रमाओ, ऐ अहले किताब !**﴾ अहले किताब को तीन चीज़ों की त़रफ़ दा'वत दी **पहली** येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हम किसी की इ़बादत न करें और येह वोह चीज़ है जिस में क़ुरआन, तौरैत और इन्जील सब मुत्तफ़िक़ हैं और इन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं। **दूसरी** येह कि हम किसी को **अल्लाह** तआ़ला का शरीक न ठहराएं न ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को और न ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न और किसी को और येह बात यक़ीनन पहली बात मानने के मुतरादिफ़ है। **तीसरी** बात येह कि हम में से कोई किसी को अपना रब न बनाए जैसे यहूदो नसारा ने अपने उ़लमा और पादरियों को बना रखा था कि उन के अह़काम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के बराबर समझते।

इख़्तिलाफ़ ख़त्म करने का उ़म्दा त़रीक़ा

इस आयत में इख़्तिलाफ़ ख़त्म करने का एक उ़म्दा त़रीक़ा बयान किया है कि जो मुश्तरिका और मुत्तफ़िक़ा चीज़ें हैं उन्हें तै कर लिया जाए ताकि इख़्तिलाफ़ी उमूर मुमताज़ हो जाएं और उन की ता'दाद कम हो जाए और बह़स सिर्फ़ उन्ही पर मुन्ह़सिर रहे। वरना होता येह है कि जब बह़स की जाती है तो कभी इख़्तिलाफ़ी मौज़ूअ़ ज़ेरे बह़स आता है और कभी इत्तिफ़ाक़ी पर बह़स शुरूअ़ हो जाती है।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ
وَالْاِنْجِیْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۵﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो तौरैत व इन्जील तो न उतरी मगर उन के बा'द तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो ? ह़ालां कि तौरैत और इन्जील तो उतरी ही उन के बा'द है। तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं ?

﴿لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ : **तुम इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो ?**﴾ नजरान के ईसाइयों और यहूदियों के उ़लमा में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा हुवा। यहूदी कहते थे कि आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام यहूदी थे लिहाज़ा हमारा दीन बड़ा है। ईसाई कहते थे, आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ईसाई थे लिहाज़ा हमारा दीन बड़ा है। आख़िर कार इन दोनों ने सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना ह़ाकिम बनाया, इस पर आयत उतरी,[1] जिस में इन बे वुक़ूफ़ों की इन्तिहाई जहालत ज़ाहिर फ़रमाई गई कि यहूदिय्यत ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और नसरानिय्यत ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जारी हुई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इन दोनों बुज़ुर्गों से कई सो साल पहले हुए हैं तो वोह यहूदी या ईसाई कैसे हो सकते हैं ? चुनान्चे फ़रमाया : ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में क्यूं झगड़ते हो कि वोह यहूदी या ईसाई थे ? ह़ालां कि तौरैत और इन्जील तो उतरी ही उन के बा'द है। तो क्या तुम्हें इतनी भी अ़क्ल नहीं ? कि कई सो साल पहले वाला शख़्स बा'द वाले गुरोह में शामिल नहीं हो सकता।

बुज़ुर्गों पर होने वाले ए'तिराज़ात को दूर करना अल्लाह तआ़ला की सुन्नत है

इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों से लोगों के इल्ज़ाम दूर करना सुन्नते इलाहिय्यह है, इन की अ़ज़मत की ह़िमायत करना मह़बूब चीज़ है। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते सुलैमान और दीगर बहुत से अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर होने वाले ए'तिराज़ात को दूर फ़रमाया है।

इ़ल्मे तारीख़ की अहम्मिय्यत

इस आयते मुबारका से इ़ल्मे तारीख़ की अहम्मिय्यत भी वाज़ेह़ होती है कि यहां तारीख़ पर ही ह़क़ीक़त का मदार है। फ़ी ज़माना इ़ल्मे तारीख़ की वैसे भी बहुत ज़रूरत है क्यूं कि हमारे

[1] ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٦٥، ١/ ٢٦٠.

www.dawateislami.net

ज़माने के बहुत से गुमराह लोग तारीख़ को मस्ख़ कर के ही लोगों को गुमराह कर रहे हैं। यूंही इल्मे अस्माउर्रिजाल ह़क़ीक़तन तारीख़ पर ही दारो मदार रखता है नीज़ क़ौमों के उ़रूजो ज़वाल और इस के अस्बाब तारीख़ ही से मा'लूम होते हैं। अलबत्ता अपने त़ौर पर हर एक को तारीख़ पढ़ने की इजाज़त नहीं क्यूं कि मौजूदा तारीख़ में बहुत सी गुमराह कुन बातें शामिल हैं। बे इल्म आदमी पढ़ेगा तो मारा जाएगा। किसी मुस्तनद आ़लिम की रहनुमाई में तारीख़ पढ़नी चाहिये।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِیْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْمَا لَیْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّ لَا نَصْرَانِیًّا وَّ لٰكِنْ كَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًاؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुनते हो येह जो तुम हो उस में झगड़े जिस का तुम्हें इ़ल्म था तो उस में मुझ से क्यूं झगड़ते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म ही नहीं और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी थे न नसरानी बल्कि हर बात़िल से जुदा मुसल्मान थे और मुश्रिकों से न थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सुन लो : तुम वोही लोग हो जो पहले उस मुआ़मले में झगड़ते थे जिस का तुम्हें इ़ल्म था तो (अब) उस में क्यूं झगड़ते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म ही नहीं ? और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी थे और न ईसाई बल्कि वोह हर बात़िल से जुदा रहने वाले मुसल्मान थे और मुश्रिकों में से न थे।

﴿هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ : **सुन लो : तुम वोही लोग हो**।﴾ इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि येह तुम ही हो कि तुम्हारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त का बयान मौजूद है इस के बा वुजूद तुम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाए और तुम ने इस में

www.dawateislami.net

झगड़ा किया तो जब मा'लूम बातों में तुम झगड़ा करते हो तो उन बातों में क्यूं झगड़ते हो जिन का तुम्हें इल्म ही नहीं, या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को यहूदी या नसरानी कहते हो ह़ालां कि तुम्हें इस का इल्म ही नहीं है और ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि किसी यहूदी या नसरानी या मुशरिक का अपने आप को ह़ज़रत इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का पैरव कार कहना दुरुस्त नहीं क्यूं कि वोह न यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक बल्कि हर बात़िल से जुदा, ख़ालिसतन **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार मुसल्मान बन्दे थे।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا ط وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरव हुए और येह नबी और ईमान वाले और ईमान वालों का वाली **अल्लाह** है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक सब लोगों से ज़ियादा इब्राहीम के ह़क़दार वोह हैं जो उन की इत्तिबाअ़ करने वाले हैं और येह नबी और ईमान वाले और **अल्लाह** ईमान वालों का मददगार है।

﴿إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ : **बेशक सब लोगों से ज़ियादा इब्राहीम के ह़क़दार वोह हैं।**﴾ ऊपर की आयात में बयान हुवा कि किसी यहूदी या नसरानी या मुशरिक का अपने आप को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का पैरव कार कहना दुरुस्त नहीं क्यूं कि वोह न यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक बल्कि हर बात़िल से जुदा, ख़ालिसतन **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार मुसल्मान बन्दे थे। इस के बा'द फ़रमाया कि लोगों में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सब से ज़ियादा क़रीब वोह लोग हैं जो उन के ज़मानए नुबुव्वत में उन पर ईमान लाए और उन की शरीअ़त पर अ़मल पैरा रहे और फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब येह नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के उम्मती हैं।

आयत "إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से 3 मस्अले मा'लूम हुए :

www.dawateislami.net

(1)...... नबी से कुर्ब उन की इत़ाअ़त से ह़ासिल होता है न कि मह़ज़ इन की औलाद होने से, चुनान्चे किन्आ़न ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से क़रीब न हो सका क्यूं कि वोह काफ़िर था।

(2)...... मुसल्मान ही सच्चे इब्राहीमी हैं चुनान्चे इसी लिये तमाम इब्राहीमी सुन्नतें इस्लाम में मौजूद हैं जैसे : ह़ज, क़ुरबानी, ख़तना, दाढ़ी वग़ैरा। येह सब इब्राहीमी सुन्नतें हैं और इन यहूदो नसारा के दीन में नहीं हैं तो सिर्फ़ मुसल्मान इब्राहीमी हुए।

(3)...... बुज़ुर्गों की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला की आ'ला ने'मत है। जैसे यहां आयत में ह़क़्क़ानिय्यत की अ़लामत ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सह़ीह़ निस्बत व तअ़ल्लुक़ को बयान फ़रमाया है।

وَدَّتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ یُضِلُّوْنَكُمْؕ وَ مَا یُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۶۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : किताबियों का एक गुरौह दिल से चाहता है कि किसी त़रह़ तुम्हें गुमराह कर दें और वोह अपने ही आप को गुमराह करते हैं और उन्हें शुऊ़र नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : किताबियों का एक गुरौह दिल से चाहता है कि किसी त़रह़ तुम्हें गुमराह कर दें और वोह सिर्फ़ ख़ुद को गुमराह कर रहे हैं और उन्हें शुऊ़र नहीं।

﴾وَدَّتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ : **किताबियों का एक गुरौह दिल से चाहता है।**﴿ येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन को यहूदी अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदिय्यत की दा'वत देते थे, इस में बताया गया कि येह उन की हवस ख़ाम है, वोह इन को गुमराह न कर सकेंगे।[1]

इस में मज़्कूरा बाला सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की अ़ज़मतो शान भी वाज़ेह़ होती है। अलबत्ता येह याद रहे कि कुफ़्फ़ार के गुरौह मुसल्मानों को अपने दीन में दाख़िल करने के लिये कोशिशें हमेशा करते रहेंगे। चुनान्चे वक़्तन फ़ वक़्तन कुफ़्रो इरतिदाद की तह़रीकें चलती रहती

1...... تفسیر قرطبی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۶۹، ۲/۸۴، الجزء الرابع.

www.dawateislami.net

हैं और अब तो फ़िल्मों, ड्रामों, मिज़ाहिया प्रोग्रामों और ख़ुसूसन गानों ने तो तबाही मचा रखी है। **अल्लाह** तआ़ला हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए।[1]

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ اَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۷۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताबियो **अल्लाह** की आयतों से क्यूं कुफ़्र करते हो ह़ालां कि तुम ख़ुद गवाह हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ किताबियो ! **अल्लाह** की आयतों के साथ क्यूं कुफ़्र करते हो ह़ालां कि तुम ख़ुद गवाह हो।

﴿لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ : **अल्लाह की आयतों के साथ क्यूं कुफ़्र करते हो ?**﴾ अहले किताब से फ़रमाया गया कि ऐ किताबियो ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयतों के साथ क्यूं कुफ़्र करते हो ह़ालां कि तुम ख़ुद अपनी किताबों तौरैत व इन्जील से पढ़ कर क़ुरआन और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़्क़ानिय्यत के गवाह हो और तुम्हारी किताबों में सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मौजूद है और तुम जानते हो कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं और उन का दीन सच्चा दीन है।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع

رکوع ۱۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताबियो ह़क़ में बात़िल क्यूं मिलाते हो और ह़क़ क्यूं छुपाते हो ह़ालां कि तुम्हें ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ किताबियो ! ह़क़ को बात़िल के साथ क्यूं मिलाते हो और ह़क़ क्यूं छुपाते हो ह़ालां कि तुम जानते हो।

1...... फ़िल्मों ड्रामों और गानों की तबाह कारियां जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल ''टीवी की तबाह कारियां'' और ''गाने बाजे के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

﴿لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ : **हक़ को बातिल के साथ क्यूं मिलाते हो ?**﴾ फ़रमाया कि ऐ किताबियो ! अपनी किताबों में तह़रीफ़ व तब्दील कर के ह़क़ को बातिल के साथ क्यूं मिलाते हो ? और ज़ाती मफ़ादात के लिये ह़क़ क्यूं छुपाते हो ? ह़ालां कि तुम जानते हो कि येह नबी ह़क़ हैं और तुम ग़लती पर हो ।

وَقَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَ اكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۷۲﴾ۚۖ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और किताबियों का एक गुरौह बोला वोह जो ईमान वालों पर उतरा सुब्ह़ को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुन्किर हो जाओ शायद वोह फिर जाएं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और किताबियों के एक गुरौह ने कहा : जो ईमान वालों पर नाज़िल हुवा है सुब्ह़ को उस पर ईमान लाओ और शाम को इन्कार कर दो । हो सकता है (कि इस त़रह़ मुसल्मान भी इस्लाम से) फिर जाएं ।

﴿وَقَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ : **और किताबियों के एक गुरौह ने कहा ।**﴾ यहूदी इस्लाम की मुख़ालफ़त में रात दिन नई नई साज़िशें किया करते थे । ख़ैबर के बारह यहूदी उ़लमा ने आपस में मश्वरा कर के येह साज़िश तय्यार की, कि इन की एक जमाअ़त सुब्ह़ के वक़्त इस्लाम ले आए और शाम को मुरतद हो जाए और लोगों से कहे कि हम ने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुवा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह नबी नहीं हैं जिन की हमारी किताबों में ख़बर है ताकि इस ह़रकत से मुसल्मानों को अपने दीन में शुबा पैदा हो जाए और येह अपने दीन से फिर जाएं ।(1)

लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन का येह राज़ फ़ाश कर दिया और उन का येह मक्र न चल सका और मुसल्मान पहले से ख़बरदार हो गए । इस बात से बा ख़बर रहना चाहिये कि काफ़िरों की त़रफ़ से साज़िशों का सिल्सिला हमेशा जारी रहेगा । आज भी ऐसी साज़िशें पकड़ी जाती हैं कि झूटी फ़िल्मों, झूटी रिपोर्टों और झूटी तस्वीरों के

1 ......خازن، آل عمران، تحت الآية: ۷۲، ۱/۲۶۲-۲۶۳.

www.dawateislami.net

ज़रीए़ लोगों को इस्लाम से मुतनफ़्फ़िर किया जाता है। इस वक़्त कुफ़्फ़ार मीडिया को इस मक़्सद के लिये बत़ौरे ख़ास़ इस्ति'माल कर रहे हैं।

وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ ۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ۚۙ﴿۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यक़ीन न लाओ मगर उस का जो तुम्हारे दीन का पैरव है तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** ही की हिदायत हिदायत है (यक़ीन काहे का न लाओ) इस का कि किसी को मिले जैसा तुम्हें मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके तुम्हारे रब के पास, तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो **अल्लाह** ही के हाथ है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (मज़ीद आपस में कहा कि) सिर्फ़ उसी का यक़ीन करो जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि हिदायत तो सिर्फ़ **अल्लाह** ही की हिदायत है। (और येह साज़िशी आपस में कहते हैं कि इस का भी यक़ीन न करो) कि किसी और को भी वैसा मिल सकता है जो तुम्हें दिया गया या कोई तुम्हारे रब के पास तुम्हारे ऊपर ग़ालिब आ सकता है। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो यक़ीनन **अल्लाह** ही के हाथ में है वोह जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमा देता है और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है।

﴾وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ﴿ **: और सिर्फ़ उसी का यक़ीन करो जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो।** यहूदी एक तो आपस में साज़िशें बनाते रहते थे और दूसरा एक दूसरे से कहते कि सिर्फ़ उसी का यक़ीन करो जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो और इस बात पर हरगिज़ यक़ीन न करो कि किसी और को भी वैसी हिदायत, दीन, किताब व ह़िक्मत और शराफ़तो फ़ज़ीलत मिल सकती है जो तुम्हें मिली हुई है। यहूदियों के कहने का मक़्सद येह था कि नुबुव्वत सिर्फ़ बनी इसराईल को मिली है, इन के सिवा किसी और क़बीले को नहीं मिली और चूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बनी इसराईल से नहीं बल्कि बनी इस्माईल में से हैं लिहाज़ा येह नबी नहीं हैं। यहूदी इस बहाने से लोगों को इस्लाम से रोकते थे। यूंही उन के उ़लमा का कहना था कि तुम ज़बान से इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का इक़रार कर लेना मगर

www.dawateislami.net

दिल से न करना। यहूदियों के येह दा'वे सरासर झूटे थे कि नुबुव्वत इन के इलावा किसी और को नहीं मिल सकती क्यूं कि इस बात का ज़िक्र किसी आस्मानी किताब में नहीं था। नीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के हाथ में है वोह जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमा देता है, या'नी वोह जिसे चाहता है नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है, तो जिस चीज़ में **अल्लाह** तआ़ला ने क़ैद न लगाई तुम लगाने वाले कौन होते हो ? नुबुव्वत मेरा फ़ज़्ल है जिसे चाहूं अ़त़ा करूं, मैं ने इस को बनी इसराईल के लिये ख़ास न फ़रमाया। इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि नुबुव्वत आ'माल से नहीं मिलती, येह मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह अपनी रह़मत के साथ जिसे चाहता है ख़ास फ़रमा लेता है और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

﴾يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ﴿ : **वोह अपनी रह़मत के साथ जिसे चाहता है ख़ास फ़रमा लेता है।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला नुबुव्वत व रिसालत के साथ जिसे चाहे ख़ास फ़रमा लेता है और नुबुव्वत जिस किसी को मिलती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से मिलती है इस में ज़ाती इस्तिह़क़ाक़ का दख़्ल नहीं। हां अब **अल्लाह** तआ़ला ने चूंकि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द कर दिया तो अब किसी को नुबुव्वत न मिलेगी।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآىِٕمًا ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और किताबियों में कोई वोह है कि अगर तू उस के पास एक ढेर अमानत रखे तो वोह तुझे अदा कर देगा और उन में कोई वोह है कि अगर एक अशरफ़ी उस के पास अमानत रखे तो वोह तुझे फेर कर न देगा मगर जब तक तू उस के सर पर खड़ा रहे येह इस लिये कि वोह कहते हैं कि अनपढ़ों के मुआ़मले में हम पर कोई मुआख़ज़ा नहीं और **अल्लाह** पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अहले किताब में कोई तो वोह है कि अगर तुम उस के पास एक ढेर भी अमानत रख दो तो वोह तुम्हें (पूरा पूरा) अदा कर देगा और उन्ही में से कोई वोह है कि अगर तुम उस के पास एक दीनार भी अमानत रख दो तो जब तक तुम उस के सर पर खड़े नहीं रहोगे वोह तुम्हें अदा नहीं करेगा। (उन की) येह बद दियानती इस वज्ह से है कि वोह कहते हैं कि अनपढ़ों के मुआ़मले में हम से कोई पूछगछ नहीं होगी और येह **अल्लाह** पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं।

﴿وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ﴾ **: और अहले किताब में कोई तो वोह है।﴿** येह आयत अहले किताब के बारे में नाज़िल हुई और इस में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि इन में दो क़िस्म के लोग हैं : अमानत दार और बद दियानत। बा'ज़ तो ऐसे हैं कि उन के पास ढेरों ढेर माल भी अमानत के तौ़र पर रख दिया जाए तो वोह बिग़ैर किसी कमी बेशी के वक़्त पर अदा कर देंगे जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जिन के पास एक क़ुरैशी ने बारह सो ऊक़िया या'नी तक़रीबन 147 किलो सोना अमानत रखा था, आप ने उस को वैसा ही अदा किया और बा'ज़ अहले किताब इतने बद दियानत हैं कि थोड़े से माल पर भी उन की निय्यत बिगड़ जाती है। जैसे कि फ़न्ह़ास बिन आ़ज़ूरा नामी यहूदी जिस के पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी लेकिन वोह वापसी के वक़्त इस से भी मुकर गया।(1)

तो इन दोनों क़िस्म के लोगों के बारे में फ़रमाया कि अहले किताब में कोई तो वोह है कि अगर तुम उस के पास एक ढेर भी अमानत रख दो तो वोह तुम्हें पूरा पूरा वापस अदा कर देगा और उन्ही में से कोई वोह है कि अगर तुम उस के पास एक दीनार भी अमानत रख दो तो जब तक तुम उस के सर पर खड़े नहीं रहोगे और बार बार तक़ाज़ा नहीं करते रहोगे वोह

1 ......بیضاوی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۷۵، ۲/۵٤.

www.dawateislami.net

तुम्हें अदा नहीं करेगा गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से नहीं बल्कि लोगों के डर से और बार बार के तक़ाज़े पर ही अमानत अदा करेगा और ऐसी अमानत दारी क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं जो बुलन्द अख़्लाक़ी और ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से न हो बल्कि लोगों के डर से हो। यहूदी इस त़रह़ बद दियानती की ह़रकतें करते और अपने नफ़्स को इस ह़ीले बहाने से राज़ी करते कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़्म कर जाने का हुक्म दिया है ह़ालां कि येह ख़ूब जानते हैं कि इन की किताबों में कोई ऐसा हुक्म नहीं और इन की येह बात **अल्लाह** तआ़ला पर बोहतान है। इस से मा'लूम हुवा कि धोके और ज़ुल्म के त़ौर पर किसी का माल दबा लेना ह़राम है अगर्चे वोह किसी दूसरे मज़्हब का हो। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत की रात ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उन लोगों की अमानतों की अदाएगी की ज़िम्मेदारी दे कर गए जो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल का इरादा कर रहे थे और जिन से तंग आ कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर रहे थे। سُبْحٰنَ اللّٰه।(1)

ऐ काश कि हमारे मुसलमान भाई ग़ौर फ़रमाएं कि वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल पैरा हैं या यहूदियों के त़रीक़े पर ? इस वक़्त उ़मूमी त़ौर पर मुसलमान दुन्या में नेकनाम नहीं हैं।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हां क्यूं नहीं जिस ने अपना अ़ह्द पूरा किया और परहेज़ गारी की और बेशक परहेज़ गार **अल्लाह** को ख़ुश आते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्यूं नहीं, जो अपना वा'दा पूरा करे और परहेज़ गारी इख़्तियार करे तो बेशक **अल्लाह** परहेज़ गारों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

﴿**بَلٰى : क्यूं नहीं।**﴾ यहूदियों की बात कि ''दूसरे मज़्हब वालों से बद दियानती करने पर उन से कोई पूछगछ नहीं होगी'' बयान की गई। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपना क़ानून बयान फ़रमा दिया कि दूसरों से बद दियानती करने पर पूछगछ क्यूं नहीं होगी ? वा'दा पूरा

1 ......السيرة النبويه لابن هشام، هجرة الرسول صلى الله عليه وسلم، ص١٩٢-١٩٣.

www.dawateislami.net

करना और अमानत का अदा करना दोनों चीज़ें परहेज़ गारी के साथ तअ़ल्लुक़ रखती हैं और परहेज़ गारी **अल्लाह** तआ़ला को निहायत महबूब है तो जो **अल्लाह** तआ़ला की पसन्द पर चलेगा वोह **अल्लाह** तआ़ला का महबूब बनेगा और जो **अल्लाह** तआ़ला की पसन्द की मुख़ालफ़त करेगा उस पर ज़रूर मुआख़ज़ा किया जाएगा। इस से मा'लूम हुवा कि जो किसी से वा'दा किया जाए उसे ज़रूर पूरा किया जाए ख़्वाह रब عَزَّوَجَلَّ से किया हो या आ़म इन्सानों से या नबी से या अपने पीर से या ब वक़्ते निकाह बीवी से या किसी और अ़ज़ीज़ से।

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** के अ़हद और अपनी क़समों के बदले ज़लील दाम लेते हैं आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात करे न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो **अल्लाह** के वा'दे और अपनी क़समों के बदले थोड़ी सी क़ीमत लेते हैं, इन लोगों के लिये आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और **अल्लाह** क़ियामत के दिन न तो उन से कलाम फ़रमाएगा और न उन की त़रफ़ नज़र करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

﴿ **ثَمَنًا قَلِيلًا : थोड़ी सी क़ीमत।** ﴾ येह आयत यहूदियों के उ़लमा और उन के कुछ सरदारों मसलन अबू राफ़ेअ़, का'ब बिन अशरफ़ और हुय्य बिन अख़्त़ब वग़ैरा के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला का वोह अ़हद छुपाया था जो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ उन से तौरैत में लिया गया था, उन्हों ने इस को बदल दिया और बजाए इस के अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूटी क़सम

www.dawateislami.net

खाई कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और मालो दौलत ह़ासिल करने के लिये किया। उन के लिये शदीद वईद बयान की गई कि जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वा'दे और अपनी क़समों के बदले थोड़ी सी क़ीमत लेते हैं, इन लोगों के लिये आख़िरत में कुछ ह़िस्सा नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न तो उन से कलाम फ़रमाएगा और न उन की त़रफ़ रह़मत की नज़र करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

झूट बोल कर माल ह़ासिल करने की वईद

इस वईद में झूटी क़सम खा कर माल ले लेने वाले, रिश्वत ले कर झूटी गवाही देने वाले या रिश्वत ले कर झूटे फ़ैसले करने वाले या झूटी वकालत करने वाले सब ही दाख़िल हैं।

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है, सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला न उन से कलाम फ़रमाएगा और न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करेगा और न उन्हें गुनाहों से पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। इस के बा'द नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयत को तीन मरतबा पढ़ा, इस पर ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि वोह लोग बहुत नुक़्सान में रहे। **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, वोह कौन लोग हैं ? ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तहबन्द को टख़्नों से नीचे लटकाने वाला (या'नी तकब्बुर के त़ौर पर) और एह़सान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूटी क़सम से रवाज देने वाला।[1]

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान का ह़क़ मारने के लिये क़सम खाए **अल्लाह** तआ़ला उस पर जन्नत ह़राम कर देता है और दोज़ख़ लाज़िम कर देता है। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अगर्चे थोड़ी सी चीज़ हो ? फ़रमाया : अगर्चे पीलू की शाख़ ही क्यूं न हो।[2]

1 ......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار... الخ، ص٦٧، الحدیث: ١٧١(١٠٦).

2 ......مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم... الخ، ص٨٢، الحدیث: ٢١٨(١٣٧).

www.dawateislami.net

وَ اِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِیْقًا یَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ
وَ مَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِۚ-وَ یَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ مَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِۚ
وَ یَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ(۷۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में कुछ वोह हैं जो ज़बान फेर कर किताब में मेल करते हैं कि तुम समझो येह भी किताब में है और वोह किताब में नहीं, और कहते हैं येह **अल्लाह** के पास से है और वोह **अल्लाह** के पास से नहीं, और **अल्लाह** पर दीदा व दानिस्ता झूट बांधते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यक़ीनन इन अहले किताब में से कुछ वोह हैं जो ज़बान को मरोड़ कर किताब पढ़ते हैं ताकि तुम समझो कि येह भी किताब का ह़िस्सा है ह़ालां कि वोह किताब का ह़िस्सा नहीं है और येह लोग कहते हैं : येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है ह़ालां कि वोह हरगिज़ **अल्लाह** की त़रफ़ से नहीं है और येह लोग जान बूझ कर **अल्लाह** पर झूट बांधते हैं।

﴾وَ اِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِیْقًا﴿ : **और यक़ीनन इन अहले किताब में से कुछ वोह हैं।** यहूदियों के बारे में फ़रमाया कि वोह तौरैत पढ़ते हुए गड़बड़ करते हैं और अपनी त़रफ़ से कुछ मफ़्हूम मिला कर इस अन्दाज़ में पढ़ते हैं कि लोग समझें कि येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है ह़ालां कि वोह किताबुल्लाह का ह़िस्सा नहीं होता। येह तअस्सुर देने के साथ बा'ज़ अवक़ात सराह़त भी कर देते हैं कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है ह़ालां कि येह सरीह़ झूट होता है। आज कल भी ऐसे लोग देखे हैं जो तौह़ीद की आयतें पढ़ कर अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم की शान का इन्कार करते हैं और येह तअस्सुर देते हैं कि येह शाने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इन्कार भी क़ुरआन में है ह़ालां कि येह सरीह़ झूट है। यूंही बहुत से लोगों को सूद, पर्दे, इस्लामी सज़ाओं और दीगर कई चीज़ों के बारे में कलाम करते सुना है वोह भी क़ुरआन पढ़ते हैं और दरमियान में अस्ल इस्लामी अह़काम में रद्दो बदल करते हुए अपनी बात इस अन्दाज़ में शामिल करते हैं कि सुनने वाला समझे कि शायद येह भी क़ुरआन में ही है ह़ालां कि येह वाज़ेह़ त़ौर पर धोका और फ़रेब होता है।

www.dawateislami.net

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ یُّؤْتِیَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ثُمَّ یَقُوْلَ
لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّیْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِیّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۙ(۷۹) وَ لَا یَاْمُرَكُمْ
اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓىٕكَةَ وَ النَّبِیّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَیَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ۠ ع (۸۰)

ع ٨

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : किसी आदमी का येह हक़ नहीं कि **अल्लाह** उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे फिर वोह लोगों से कहे कि **अल्लाह** को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ हां येह कहेगा कि **अल्लाह** वाले हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो। और न तुम्हें येह हुक्म देगा कि फ़िरिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा लो क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बा'द इस के कि तुम मुसल्मान हो लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : किसी आदमी को येह हक़ हासिल नहीं कि **अल्लाह** उसे किताब व हिक्मत और नुबुव्वत अ़ता करे फिर वोह लोगों से कहे कि **अल्लाह** को छोड़ कर मेरी इबादत करने वाले बन जाओ बल्कि वोह येह कहेगा कि **अल्लाह** वाले हो जाओ क्यूं कि तुम किताब की ता'लीम देते हो और इस लिये कि तुम ख़ुद भी इसे पढ़ते हो। और न तुम्हें येह हुक्म देगा कि फ़िरिश्तों और नबियों को रब बना लो, क्या वोह तुम्हें तुम्हारे मुसल्मान होने के बा'द कुफ़्र का हुक्म देगा ?

﴾**مَا كَانَ لِبَشَرٍ : किसी आदमी को येह हक़ नहीं।**﴿ यहां अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान का बयान और इन पर होने वाले ए'तिराज़ का जवाब है जैसा कि आयत के शाने नुज़ूल से वाज़ेह है। फ़रमाया गया कि किसी आदमी को येह हक़ हासिल नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला उसे कमाले इल्मो अ़मल अ़ता फ़रमाए और उसे गुनाहों से मा'सूम बनाए और वोह फिर लोगों को अपनी इबादत की दा'वत दे। येह अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ना मुम्किन है और इन की तरफ़ ऐसी

www.dawateislami.net

निस्बत बोहतान है। अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो **अल्लाह** तआ़ला की इबादत और रब्बानी या'नी **अल्लाह** वाले बनने की त़रफ़ दा'वत देते हैं। इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में एक क़ौल येह है कि नजरान के ईसाइयों ने कहा कि "हमें ह़ज़रते ईसा عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें।" तो इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस क़ौल की तक्ज़ीब की और बताया कि अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शान से ऐसा कहना मुम्किन ही नहीं।(1)

जब कि दूसरा क़ौल येह है कि अबू राफ़ेअ़ यहूदी और एक ईसाई ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा : ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप चाहते हैं कि हम आप की इबादत करें और आप को रब मानें। हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म करूं। न मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस का हुक्म दिया और न मुझे इस लिये भेजा है।(2)

आयत में रब्बानी का लफ़्ज़ मज़्कूर है। रब्बानी के मा'ना निहायत दीनदार, आ़लिमे बा अ़मल और फ़क़ीह के हैं।(3)

इस से साबित हुवा कि इल्म व ता'लीम का समरा येह होना चाहिये कि आदमी **अल्लाह** वाला हो जाए, जिसे इल्म से येह फ़ाएदा न हो उस का इल्म ज़ाएअ़ और बेकार है।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَاۤ اٰتَیْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِیْؕ قَالُوْۤا اَقْرَرْنَاؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَ اَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۸۱﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۷۹، ۱/۲٦٦.
2 ......بيضاوی،ال عمران،تحت الآية:۷۹،۲/٥٦.
3 ......تفسيرقرطبی،ال عمران،تحت الآية:۷۹،۲/۹۳،الجزء الرابع.

www.dawateislami.net

فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۸۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने पैग़म्बरों से उन का अ़हद लिया जो मैं तुम को किताब और हिक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना फ़रमाया क्यूं तुम ने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सब ने अ़र्ज़ की हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं। तो जो कोई इस के बा'द फिरे तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब **अल्लाह** ने नबियों से वा'दा लिया कि मैं तुम्हें किताब और हिक्मत अ़ता करूंगा फिर तुम्हारे पास वोह अ़ज़मत वाला रसूल तशरीफ़ लाएगा जो तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला होगा तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना। (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : (ऐ अम्बिया !) क्या तुम ने (इस हुक्म का) इक़रार कर लिया और इस (इक़रार) पर मेरा भारी ज़िम्मा ले लिया ? सब ने अ़र्ज़ की, "हम ने इक़रार कर लिया" (**अल्लाह** ने) फ़रमाया, "तो (अब) एक दूसरे पर (भी) गवाह बन जाओ और मैं ख़ुद (भी) तुम्हारे साथ गवाहों में से हूं। फिर जो कोई इस इक़रार के बा'द रूगर्दानी करेगा तो वोही लोग ना फ़रमान होंगे।

﴿وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ : **और याद करो जब अल्लाह ने नबियों से वा'दा लिया।**﴾ हज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन के बा'द जिस किसी को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई, उन से सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ अ़हद लिया और उन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौमों से अ़हद लिया कि अगर उन की ह़यात में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मब्ऊ़स हों तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मददो नुसरत करें।[(1)]

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۸۱، ۱/۲۶۷-۲۶۸.

www.dawateislami.net

अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान

इस से साबित हुवा कि हमारे आक़ा व मौला, ह़बीबे ख़ुदा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़ल हैं। इस आयते मुबारका में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ज़ीम फ़ज़ाइल बयान हुए हैं। उ़लमाए किराम ने इस आयत की तफ़्सीर में पूरी पूरी किताबें तस्नीफ़ की हैं और इस से अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे शुमार निकात ह़ासिल किये हैं। चन्द एक निकात येह हैं :

(1)...... ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में **अल्लाह** तआ़ला ने येह मह़फ़िल क़ाइम फ़रमाई।

(2)...... ख़ुद अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बयान किया।

(3)...... अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामिईन के लिये काएनात के मुक़द्दस तरीन अफ़राद अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुन्तख़ब फ़रमाया।

(4)...... काएनात वुजूद में आने से पहले ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र जारी हुवा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मत का बयान हुवा।

(5)...... आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम नबियों का नबी बनाया कि तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बत़ौरे ख़ास आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने और मदद करने का हुक्म दिया।

(6)...... अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़रमाने के बा'द बा क़ाइदा इस का इक़्रार लिया ह़ालां कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام किसी हुक्मे इलाही से इन्कार नहीं करते।

(7)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस इक़्रार का बा क़ाइदा ए'लान किया।

(8)...... इक़्रार के बा'द अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को एक दूसरे पर गवाह बनाया।

(9)...... **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया कि तुम्हारे इस इक़्रार पर मैं ख़ुद भी गवाह हूं।

(10)...... अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इक़्रार करने के बा'द फिर जाना मुतसव्वर नहीं लेकिन फिर भी फ़रमाया कि इस इक़्रार के बा'द जो फिरे वोह ना फ़रमानों में शुमार होगा। इस आयते मुबारका पर इन्तिहाई नफ़ीस कलाम पढ़ने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तस्नीफ़ ''تَجَلِّيُ الْيَقِين بِاَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِين (यक़ीन का इज़्हार इस बात के साथ कि हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम रसूलों के सरदार हैं)'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

اَفَغَیْرَ دِیْنِ اللّٰهِ یَبْغُوْنَ وَ لَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ اِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या **अल्लाह** के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं और उसी के हुज़ूर गरदन रखे हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से और मजबूरी से और उसी की त़रफ़ फिरेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या लोग **अल्लाह** के दीन के इ़लावा कोई और दीन चाहते हैं ह़ालां कि आस्मानों और ज़मीनों में जो कोई भी है वोह सब ख़ुशी से या मजबूरी से उसी की बारगाह में गरदन झुकाए हुए हैं और सब को उसी की त़रफ़ लौटाया जाएगा।

﴿اَفَغَیْرَ دِیْنِ اللّٰهِ یَبْغُوْنَ : **क्या अल्लाह के दीन के इ़लावा दीन चाहते हैं।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि क्या लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के इ़लावा कोई और दीन चाहते हैं ह़ालां कि आस्मानों और ज़मीनों में जो कोई भी है फ़िरिश्ते, इन्सान और जिन्नात वोह सब के सब ख़ुशी से या मजबूरी से उसी की बारगाह में झुके हुए हैं। फ़िरिश्ते तो यूं ख़ुशी से फ़रमां बरदार हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें पैदा ही मा'सूमिय्यत पर किया है और मुसल्मान जिन्न और इन्सान इस त़रह़ कि दलाइल में नज़र कर के और इन्साफ़ इख़्तियार कर के फ़रमां बरदार हैं और येह इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी मुफ़ीद भी है जब कि काफ़िर किसी ख़ौफ़ या मौत के वक़्त अ़ज़ाब देख लेने के वक़्त गरदन झुका देता है लेकिन उस वक़्त का ईमान क़ियामत में नफ़्अ़ न देगा।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ وَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى وَ عِیْسٰى وَ النَّبِیُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ۪ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ۫ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۸۴﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : यूं कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और उन के बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा और अम्बिया को उन के रब से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी के ह़ुज़ूर गरदन झुकाए हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम यूं कहो कि हम **अल्लाह** पर और जो हमारे ऊपर नाज़िल किया गया है उस पर और जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और उन की औलाद पर नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं और जो मूसा और ईसा और नबियों को उन के रब की त़रफ़ से दिया गया (उस पर भी ईमान लाते हैं। नीज़) हम ईमान लाने में उन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी की बारगाह में गरदन झुकाए हुए हैं।

﴾قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ﴿ **: और तुम यूं कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाते हैं।** यहूदियों और ईसाइयों ने तो येह किया कि कुछ नबियों और किताबों पर ईमान लाए और कुछ पर नहीं। उन के मुक़ाबले में मुसल्मानों से फ़रमाया जा रहा है कि ''तुम सब नबियों और सब किताबों पर ईमान लाओ ख़्वाह वोह इब्राहीमी सह़ीफ़े हों या ह़ज़रते मूसा व ईसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की किताबें या दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े।'' हमें सब को मानने का हुक्म है अलबत्ता हमारा अ़मल सिर्फ़ क़ुरआन पर होगा और हमारी इत़ाअ़त व इत्तिबाअ़ सिर्फ़ ह़ुज़ूरे पुरनूर, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की होगी।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़ुबूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों से है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो कोई इस्लाम के इ़लावा कोई और दीन चाहेगा तो वोह उस से हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा।

www.dawateislami.net

﴿وَمَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا﴾ **: और जो कोई इस्लाम के इलावा कोई और दीन चाहेगा ।** **अल्लाह** तआ़ला ने वाजे़ह़ त़ौर क़ुरआने पाक में कई जगह फ़रमा दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा दीन सिर्फ़ इस्लाम है और इस्लाम के इ़लावा कोई दीन **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में इस ज़माने में मो'तबर नहीं। इस्लाम के इ़लावा कोई किसी दीन की अख़्लाक़ी बातों पर जितना चाहे अ़मल कर ले जब तक मुकम्मल त़ौर पर बत़ौरे अ़क़ीदा इस्लाम को इख़्तियार नहीं करेगा उस का कोई अ़मल बारगाहे इलाही में मक़्बूल नहीं और अब इस्लाम से मुराद वोह दीन है जिसे ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ले कर आए।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْۤا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्यूंकर **अल्लाह** ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान ला कर काफ़िर हो गए और गवाही दे चुके थे कि रसूल सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आ चुकी थीं और **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह ऐसी क़ौम को कैसे हिदायत देगा जिन्हों ने ईमान के बा'द कुफ़्र को इख़्तियार किया और वोह इस बात की गवाही दे चुके थे कि (येह) रसूल सच्चा है और उन लोगों के पास रोशन निशानियां भी आ चुकी थीं और **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

﴿كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ﴾ **: अल्लाह ऐसी क़ौम को कैसे हिदायत देगा जिन्हों ने ईमान के बा'द कुफ़्र को इख़्तियार किया ।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत उन यहूदी और ईसाई उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले लोगों को ख़ुश ख़बरियां देते थे, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल से दुआ़एं करते थे लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के बा'द अपने मफ़ादात और ह़सद की वज्ह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़ालिफ़ हो गए।[1]

[1] ......خازن، آل عمران، تحت الآية: ٨٦، ١/ ٢٧٠.

www.dawateislami.net

उन के बारे में फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ऐसी क़ौम को क्यूं हिदायत देगा जिन्हों ने ईमान के बा'द कुफ़्र को इख़्तियार किया हालां कि पहले वोह इस बात की गवाही दे चुके थे कि येह रसूल सच्चा है। मुराद येह है कि **अल्लाह** तआला ऐसी क़ौम को कैसे ईमान की तौफ़ीक़ दे जो जान पहचान कर मुन्किर हो गई हो या'नी ऐसों को हिदायत नहीं मिलती। इस से मा'लूम हुवा कि जान बूझ कर हक़ का इन्कार करने की बहुत नुहूसत है नीज़ मा'लूम हुवा कि ह़सद निहायत ख़बीस बीमारी है कि इस की वज्ह से आदमी जानते बूझते इन्कार कर देता है और येह ह़सद बा'ज़ अवक़ात कुफ़्र तक पहुंचा देता है।

اُولٰٓىٕكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَیْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ﴿۸۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ لَا یُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ یُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन का बदला येह है कि उन पर ला'नत है **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की। हमेशा उस में रहें न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए। मगर जिन्हों ने इस के बा'द तौबा की और आपा संभाला तो ज़रूर **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह लोग हैं जिन का बदला येह है कि उन पर **अल्लाह** की और फ़िरिश्तों की और इन्सानों सब की ला'नत है। हमेशा उस में रहेंगे, न उन से अ़ज़ाब हलका होगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने कुफ़्र के बा'द तौबा कर ली और अपनी इस्लाह़ कर ली तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ : **मगर जिन्हों ने कुफ़्र के बा'द तौबा कर ली।**﴾ ह़ारिस बिन सुवैद अन्सारी को कुफ़्फ़ार के साथ जा मिलने के बा'द नदामत हुई तो उन्हों ने अपनी क़ौम के

www.dawateislami.net

पास पैग़ाम भेजा कि सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करें कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई, तब वोह मदीनए मुनव्वरह में ताइब हो कर हाज़िर हुए और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई ।(1)

याद रहे कि तौबा हर गुनाह से मक़्बूल है ह़त्ता कि इरतिदाद से भी तौबा क़बूल है ।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِیْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ईमान ला कर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी और वोही हैं बहके हुए ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए फिर कुफ़्र में और बढ़ गए तो उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न की जाएगी और येही लोग गुमराह हैं ।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِیْمَانِهِمْ : **बेशक वोह लोग जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए ।**﴾ येह आयत उन यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने के बा'द ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इन्जील के साथ कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र में और बढ़े और सय्यिदुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और कुरआन के साथ कुफ़्र किया । और एक क़ौल येह है कि येह आयत यहूदो नसारा के बारे में नाज़िल हुई जो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत से पहले तो अपनी किताबों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर के बा'द काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और शदीद हो गए ।(2)

1 ......در منثور، ال عمران، تحت الآية: ٨٩، ٢/٢٥٧.

2 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٩٠، ١/٢٧٠.

www.dawateislami.net

ईमान व कुफ़्र में शिद्दत की कैफ़िय्यत के ए'तिबार से कमी ज़ियादती होती है, जैसे क़ुरआने पाक में ब कसरत ईमान में इज़ाफ़ा होने की आयात हैं, इसी त़रह़ कुफ़्र में शिद्दत की आयात भी हैं। येह आयात इस मा'ना में है कि किसी का ईमान ज़ियादा क़वी और मज़बूत़ होता है जब कि किसी का ईमान कमज़ोर होता है यूंही किसी का कुफ़्र ज़ियादा शदीद होता है और किसी का कम शिद्दत वाला होता है। आयत में फ़रमाया कि "जो कुफ़्र करे और उस में बढ़ता जाए उस की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी" इस का या तो येह मा'ना है कि उन की मुआफ़ी नहीं, क्यूं कि येह तौबा ही नहीं करते या येह मा'ना है कि उन की तौबा मक़्बूल नहीं, क्यूं कि उन की तौबा दिल से नहीं बल्कि मुनाफ़िक़ाना होती है, दिल में कुफ़्र भरा होता है और ज़बान से तौबा कर रहे होते हैं ऐसी तौबा हरगिज़ क़बूल नहीं। अलबत्ता जो तौबा दिल से की जाए वोह ज़रूर मक़्बूल है।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّ لَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ وَّ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۹۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा अगर्चे अपनी ख़लासी को दे, उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन का कोई यार नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मर गए उन में से कोई अगर्चे अपनी जान छुड़ाने के बदले में पूरी ज़मीन के बराबर सोना भी दे तो हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा। उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन का कोई मददगार नहीं होगा।

www.dawateislami.net

﴿وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ﴾ **: और काफ़िर ही मरे ।** आख़िरत की नजात ईमान पर ख़ातिमे पर है। कुफ़्र पर मरने वाला ज़मीन भर सोना भी अपने फ़िदये में दे दे तब भी उस की नजात नहीं हो सकती। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि नजात का दारो मदार ईमान पर ख़ातिमा होने पर है। अगर कोई शख़्स तमाम उम्र मोमिन रहा और मरते वक़्त काफ़िर हो गया तो इस आयत में शामिल है और अगर कोई शख़्स सारी उम्र काफ़िर रहा लेकिन मरते वक़्त मोमिन हो कर मरा तो वोह इस आयत से ख़ारिज है। इसी लिये सालिहीन सब से ज़ियादा फ़िक्र ईमान पर ख़ातिमे ही की करते थे और **अल्लाह** तआला की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते थे। चुनान्चे हज़रते यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास हाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सारी रात रोते रहे। मैं ने दरयाफ़्त किया : क्या आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ? तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक तिन्का उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो **अल्लाह** तआला की बारगाह में इस तिन्के से भी कम हैसिय्यत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए।[1]

फ़िक्रे मआश बद बला हौले मआद जांगुज़ा   लाखों बला में फंसने को रूह बदन में आई क्यूं

1 ......منهاج العابدين، العقبة الخامسة، اصول سلوك طريق الخوف والرجاء، الاصل الثالث، ص١٦٩.

www.dawateislami.net

مآخذومراجع

❀	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	❀ ❀ ❀ ❀ ❀
نمبرشمار	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعات
1	کنز الإيمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا اکیڈمی، ہند
2	کنز العرفان	شیخ الحدیث والتفسیر ابوالصالح مفتی محمد قاسم قادری	مکتبۃ المدینہ

کتب التفسیر وعلوم القرآن

نمبرشمار	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعات
1	تفسیرِطبری	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	احکامُ القرآن	امام ابوبکر احمد بن علی رازی جصاص، متوفی ۳۷۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
3	تفسیرِسمرقندی	ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی، متوفی ۳۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۳ھ
4	تفسیرِبغوی	امام ابومحمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	تفسیرِکبیر	امام فخرالدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	تفسیرِقرطبی	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	تفسیرِبیضاوی	امام ناصرالدین عبداللہ بن ابوعمر بن محمد شیرازی بیضاوی، متوفی ۶۸۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	تفسیرِمدارک	امام عبداللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
9	تفسیرِخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ
10	البحرُالمحیط	ابوحیان محمد بن یوسف اندلسی، متوفی ۷۴۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
11	تفسیرِجلالین	امام جلال الدین محلی، متوفی ۸۶۴ھ وامام جلال الدین سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ
12	تفسیرِدُرمنثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
13	الإتقان فی علوم القرآن	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ

www.dawateislami.net

14	تناسق الدرر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
15	تفسیرِ ابو سعود	علامہ ابو سعود محمد بن مصطفٰی عمادی، متوفی ۹۸۲ھ	دارالفکر، بیروت
16	عنايةُ القاضی	شہاب الدین احمد بن محمد خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دارصادر، بیروت
17	تفسیراتِ احمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ	
18	روحُ البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۰۵ھ
19	تفسیرِ جمل	علامہ شیخ سلیمان جمل، متوفی ۱۲۰۴ھ	باب المدینہ
20	تفسیرِ عزیزی (مترجم)	شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، متوفی ۱۲۳۹ھ	ایچ ایم سعید کمپنی
21	تفسیرِ صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
22	روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
23	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
24	تفسیرِ منیر	وہبہ بن مصطفٰی زحیلی	

کتب الحدیث و متعلقاته

1	مؤطا امام مالك	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	مصنف ابن ابی شیبه	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
3	مسندِ امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
4	دارمی	امام حافظ عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دارالکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ
5	بخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
6	مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
7	ابنِ ماجه	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	ابوداؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
9	ترمذی	امام ابوعیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

10	مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱۴۲۴ھ
11	سنن نسائی	امام ابوعبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
12	معجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
13	معجم الأوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
14	مستدرك	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
15	حلية الأولياء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
16	شعب الإيمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
17	تاريخ بغداد	حافظ ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
18	فردوس الأخبار	ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
19	شرح السنة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
20	ابن عساكر	ابوقاسم علی بن حسن شافعی، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
21	رياض الصالحين	ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی دمشقی، متوفی ۶۷۶ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۰ھ
22	الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
23	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
24	جامع صغير	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
25	كنز العمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
26	كشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ

كتب شروح الحديث

1	عمدة القارى	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

2	ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
3	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
4	اشعة اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	
5	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ

کتب العقائد

1	شرح المقاصد	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی، متوفی ۷۹۳ھ	عالم الکتب، بیروت ۱۴۱۹ھ
2	انباء الحی	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مؤسسۃ رضا، ۱۴۲۳ھ

کتب الفقه

1	ھدایه	برہان الدین علی بن ابی بکر مرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
2	در مختار	علاء الدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
3	عالمگیری	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
4	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن
6	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ

کتب التصوف

1	رسائل ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
2	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
3	کیمیاء سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
4	منهاج العابدين	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	مؤسسۃ السیروان، بیروت ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

5	مکاشفة القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
6	ذم الھوی	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	
7	تذکرة الاولیاء	شیخ فریدالدین عطار، متوفی ٦٢٧ھ	انتشارات گنجینہ ۱۳۷۹ھ
8	مختصرمنھاج القاصدین	احمد بن محمد بن عبدالرحمٰن بن قدامہ مقدسی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالخیر، بیروت ۱۴۱۸ھ
9	تنبیه المغترین	عبدالوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
10	الزواجرعن اقتراف الکبائر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ

کتب السیرة

1	السیرة النبویة لابن هشام	ابومحمد عبدالملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
2	دلائل النبوة للبیهقی	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
3	الشفا	قاضی ابوالفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
4	الوفاء باحوال المصطفٰی	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	المکتبة العصریة، بیروت ۱۴۳۲ھ
5	الخصائص الکبری	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
6	وفاء الوفاء	نورالدین علی بن احمد سمہودی، متوفی ۹۱۱ھ	داراحیاء التراث، بیروت
7	مدارج النبوة	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
8	شرح الزرقانی	محمد بن عبدالباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ

الکتب المتفرقة

1	عیون الحکایات	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
2	ملفوظات اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت علامہ محمد مصطفٰی رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبة المدینہ

لغت

1	مفردات امام راغب	علامہ راغب اصفہانی متوفی فی حدود ۴۲۵ھ	دارالقلم، دمشق ۱۴۱٦ھ

www.dawateislami.net

ज़िम्नी फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा
अ़क़ाइदो नज़रिय्यात और मा'मूलाते अहले सुन्नत	
अल्लाह तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करने की बरकत	51
अल्लाह तआ़ला की अ़त़ा से बन्दों का मदद करना **अल्लाह** तआ़ला ही का मदद करना होता है	53
हु़रूफ़े मुक़त़्तआ़त का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और को ह़ासिल है या नहीं ?	64
ईमान और ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें	69
कुफ़्र की ता'रीफ़ और अज़ली काफ़िरों को तब्लीग़ करने का हुक्म देने की वज्ह	76
बा'ज़ काफ़िर ईमान से मह़रूम क्यूं रहे ?	78
नजात वाले कौन लोग हैं ?	84
फ़िरिश्तों से मश्वरे के अन्दाज़ में कलाम करने का सबब	105
फ़िरिश्ते क्या हैं ?	106
अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं	108
अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इ़स्मत का बयान	116
बारगाहे इलाही के मक़्बूल बन्दों के वसीले से दुआ़ मांगना जाइज़ है	119
अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर होने वाले इन्आ़म की यादगार क़ाइम करना सुन्नत है	137
अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मदद त़लब करने का सुबूत	147
ग़ैरे ख़ुदा का मदद करना शिर्क नहीं	178
मख़्लूक़ की ह़ाजत रवाई का वसीला	182
अल्लाह तआ़ला की ह़लाल की हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना कैसा है ?	304
फ़िरिश्तों की इ़स्मत का बयान	200
ग़ैरे ख़ुदा से मदद त़लब करना शिर्क नहीं	280
ईमान की तफ़्सील	318
किसी को मुतशाबहात का इ़ल्म अ़त़ा हुवा या नहीं ?	503
अम्बिया, सह़ाबा और औलिया की शान	00 21
सह़ाबए किराम की बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	84
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुपाने वाले ग़ौर करें	124
अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अ़ज़मत	142
अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से निस्बत की बरकत	231
नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही क़त़्ई व ह़त्मी है	255
अस्लुल उसूल चीज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी है	256
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद	259
नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ सिखाते हैं	274
नेक लोगों से निस्बत की बरकत	291
अ़ज़मत वाली चीज़ से निस्बत की बरकत	335
तीन अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल	434
अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल बयान करने में एह़तियात़	434

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
नूर की त़रफ़ जाने का सब से बड़ा ज़रीआ़	442
दो गुनाहों पर ए'लाने जंग दिया गया	476
रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी ज़रूरी है	528
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की अहम्मिय्यत	531
ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़ात	547
बुज़ुर्गों पर होने वाले ए'तिराज़ात को दूर करना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है	566
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान	582

मो'जिज़ात

उ़न्वान	सफ़ह़ा
उंगलियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर	147
ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात की तफ़्सील	550

फ़वाइदे तफ़्सीरिया

उ़न्वान	सफ़ह़ा
तफ़्सीरे कुरआन की तारीख़	26
तफ़्सीर और तावील की ता'रीफ़	31
तफ़्सीर और तावील का शरई हुक्म	31
मुफ़स्सिर के लिये ज़रूरी उ़लूम	32
तफ़्सीर के दरजात	33
कुरआने मजीद का अस्ली माख़ज़	34
तफ़्सीर की ज़रूरत व अहम्मिय्यत	35

कुरआने मजीद की अ़ज़मत और इस के हुक़ूक़ व आदाब

उ़न्वान	सफ़ह़ा
कुरआने अ़ज़ीम की अ़ज़मत	11
कुरआने पाक के आदाब	18
तिलावते कुरआन के आदाब	22
ए'जाज़े कुरआन की वुजूहात	95
कुरआने मजीद पर ईमान लाने का मत़लब	188
कुरआने मजीद के हुक़ूक़	226
तिलावते कुरआन के ज़ाहिरी आदाब	226
तिलावते कुरआन के बात़िनी आदाब	226
इस्मे आ'ज़म वाली आयात	297

शरई अह़काम और मसाइल

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सूरए फ़ातिह़ा से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल	42
"बिस्मिल्लाह" से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई मसाइल	44
ह़म्द से मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म	46
किसी को रह़मान और रह़ीम कहने के बारे में शरई हुक्म	49
ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़ "या मुह़म्मद" से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी वज़ाह़त	51
आयत "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" से मुतअ़ल्लिक़ शरई मस्अला	59
आमीन से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल	59
अल्लाह तआ़ला की किताबों वग़ैरा पर ईमान लाने का शरई हुक्म	73
सह़ाबए किराम और उ़लमाए दीन का मज़ाक़ उड़ाने का शरई हुक्म	88
एक अहम क़ाइदा	103
सज्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम	112
एक अहम मस्अला	115
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ालिम कहने वाले का हुक्म	116
ह़ीला करने का हुक्म	155
ईमानी कुव्वत मा'लूम करने का त़रीक़ा	188
नस्ख़ के चन्द अह़काम	206
सह़ीह़ मक़्सद के बिग़ैर सुवाल करना मन्अ़ है	209
इस्तिक़्बाले क़िब्ला से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल	261
शहीद के अह़काम	283

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा
ला'नत करने से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल	295
ह़लाल व त़य्यिब रिज़्क़ से क्या मुराद है ?	304
शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की पैरवी करना कैसा ?	308
अल्लाह तआ़ला की ह़राम कर्दा चार चीज़ों की तफ़्सील	310
क़िसास से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल	325
वसिय्यत के अह़काम	327
रोज़े की रुख़्सत के चन्द अहम मसाइल	332
सौमे विसाल का हुक्म	341
ए'तिकाफ़ के चन्द मसाइल	343
मुमानअ़त के बिग़ैर किसी चीज़ को ना जाइज़ समझना कैसा ?	346
ह़ज व उ़म्रह के चन्द अह़काम	354
इस्लामी अह़काम सब के लिये बराबर हैं	361
जूए के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम	384
यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़काम	387
ह़ैज़ के चन्द अह़काम	391
नेकी से बाज़ रहने की क़सम खाने वाले को क्या करना चाहिये ?	393
ख़ुलअ़ के चन्द अह़काम	401
तीन त़लाक़ों के बारे में एक अहम मस्अला	403
बच्चे को दूध पिलाने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	408
इ़द्दत के 3 अहम मसाइल	410
अ़क़ाइद में मुनाज़रा करने का सुबूत	444
नेकी की तमाम सूरतों में ख़र्च करना राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है	452
मजाज़ी निस्बत करना जाइज़ है	453
नज़्र के चन्द अह़काम	465
सदक़ात के बेहतरीन मसरफ़	468
गवाही के अह़काम	484
गवाही देना फ़र्ज़ और छुपाना ना जाइज़ है	485
रह्न के चन्द मसाइल	486
सूरए बक़रह की आयत नम्बर 282 और 283 से मुतअ़ल्लिक़ अहम तम्बीह	487
कुफ़्र और गुनाह के अ़ज़्म का शरई हुक्म	489
क़ुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ फ़ैसला करना	545
मुबाहला किस में होना चाहिये ?	564
मआ़नी, ता'रीफ़ात और अक़्साम	
ह़म्द और शुक्र की ता'रीफ़	45
इ़बादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़	50
सिराते़ मुस्तक़ीम का मा'ना	55
तक़्वा का मा'ना	66
तक़्वा के मरातिब	67
इ़बादत की ता'रीफ़	92
तौबा का मफ़्हूम और इस के अरकान	119
जादू की ता'रीफ़ और इस की मज़म्मत	200
ज़िक्र की अक़्साम	275
शुक्र की ता'रीफ़	277
सब्र की ता'रीफ़	279
सब्र की अक़्साम	279
शहीद की ता'रीफ़	283
ह़ज की ता'रीफ़	354
नज़्र की ता'रीफ़	465
"ह़य्य" और "क़य्यूम" का मा'ना	498
लफ़्ज़ "मक्र" के मा'ना	557
फ़ज़ाइलो सवाब और वई़दें	
क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल	15
क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करने और पढ़ाने के फ़ज़ाइल	19

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
कुरआने मजीद हिफ़्ज़ करने के फ़ज़ाइल	21
सूरए फ़ातिहा के फ़ज़ाइल	40
अल्लाह तआला की ह़म्दो सना करने के फ़ज़ाइल	46
सूरए बक़रह के फ़ज़ाइल	60
तक़्वे के फ़ज़ाइल	66
नमाज़ क़ाइम करने के फ़ज़ाइल और न करने की वईदें	70
झूट बोलने की वईद और न बोलने का सवाब	82
इ़ल्म के फ़ज़ाइल	107
बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल	126
त़ाऊ़न के बारे में 3 अह़ादीस	145
ज़िक्र के फ़ज़ाइल	275
शुक्र के फ़ज़ाइल और नाशुक्री की मज़म्मत	277
सब्र के फ़ज़ाइल	280
शुहदा के फ़ज़ाइल	282
''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ने के फ़ज़ाइल	286
दीनी मसाइल छुपाने की वईदें	293
रिज़्क़े ह़लाल के फ़ज़ाइल और ह़राम रिज़्क़ की मज़म्मत	304
माल के मुस्तह़िक़ अफ़्राद और उन्हें माल देने के फ़ज़ाइल का बयान	319
ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल	341
शराब और जूए की मज़म्मत	383
आयतुल कुरसी के फ़ज़ाइल	439
नेक आ'माल में यक्सानिय्यत के बा वुजूद सवाब में फ़र्क़ होता है	453
क़र्ज़दार को मोहलत देने और क़र्ज़ा मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल	477
सूरए आले इमरान के फ़ज़ाइल	494
झूट बोल कर माल ह़ासिल करने की वईद	577

उन्वान	सफ़्हा
बात़िनी अमराज़	
तकब्बुर की मज़म्मत	113
ह़सद ईमान के लिये तबाह कुन है	183
मुनाफ़क़त की अ़लामत	256
ह़सद इन्सान को ह़क़ से अन्धा कर देता है	263
दर्स व निकात	
आयत ''اِیَّاكَ نَعْبُدُ'' से मा'लूम होने वाली अहम बातें	50
आयत ''اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ'' से मा'लूम होने वाले अह़काम	56
आयत ''صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल	58
गाय ज़ब्ह़ करने वाले वाक़िए़ से मा'लूम होने वाले मसाइल	159
आयत ''وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا'' से मा'लूम होने वाले अह़काम	185
आयत ''یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا'' से मा'लूम होने वाले अह़काम	204
आयत ''وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल	236
आयत ''یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल	380
त़ालूत को बादशाह बनाने के वाक़िए़ से मा'लूम होने वाले मसाइल	425
त़ालूत के पास ताबूते सकीना आने वाले वाक़िए़ से मा'लूम होने वाले मसाइल	427
त़ालूत, जालूत और ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام के वाक़िए़ से ह़ासिल होने वाला दर्स	431
आयत ''لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ'' से मा'लूम होने वाले अह़काम	440

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ह़ज़रते उ़ज़ैर और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त से ह़ासिल होने वाली मा'लूमात	451
आयत "لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى" से मा'लूम होने वाले अह़काम	458
आयत "اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	462
आयत "هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ" से मा'लूम होने वाले दुआ़ के आदाब	538
सूरए आले इ़मरान की आयत नम्बर 49 से मा'लूम होने वाले अ़क़ाइद व मसाइल	552
आयत "اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	568

इस्लाह़ी मज़ामीन

उ़न्वान	सफ़ह़ा
अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये	47
हिदायत ह़ासिल करने के ज़राएअ़	56
माल ख़र्च करने में मियाना रवी से काम लिया जाए	72
अस्ल काम्याबी हर मुसल्मान को ह़ासिल है	75
ज़ाहिरो बात़िन का तज़ाद बहुत बड़ा ऐ़ब है	80
रूह़ानी ज़िन्दगी के ख़त़रनाक अमराज़	81
बेदीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहा जाए	86
उ़रूजो ज़वाल और इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत का फ़ल्सफ़ा	121
नेकी और बुराई की इब्तिदा करने वाले के बारे में एक उसूल	123
क़ौलो फ़े'ल के तज़ाद का नुक़्सान	128
बे अ़मल भी नेकी की दा'वत दे	129
शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला कैसा है ?	133
बनी इसराईल पर **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल	140
बड़ों से निस्बत रखने वाले को क्या करना चाहिये ?	150
बनी इसराईल की ज़िल्लतो ग़ुरबत से मुसल्मान भी नसीह़त ह़ासिल करें	151
अह़कामे क़ुरआन पर अ़मल की तरग़ीब	153
दिल की सख़्ती का अन्जाम	163
आ़लिम का बिगड़ना ज़ियादा तबाह कुन है	164
बनी इसराईल की बद अ़हदी को सामने रख कर मुसल्मान भी अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें	172
दुन्यवी ज़िन्दगी के ह़रीस कौन ?	192
क़ुरआने मजीद से मुतअ़ल्लिक़ मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	197
मन पसन्द ह़ुक्म का मुत़ालबा करना यहूदियों का त़रीक़ा है	209
क़ुरआन पढ़ कर अ़मल न करने वाले मुसल्मानों को तम्बीह	216
मस्जिद ता'मीर करना आ'ला इ़बादत है	234
औलाद को सह़ीह़ अ़क़ाइद और नेक आ'माल की वसिय्यत करनी चाहिये	239
दीनी मसाइल पर बे जा ए'तिराज़ात करने वाले बे वुक़ूफ़ हैं	251
ज़बान की एह़तियात़ न करने का नुक़्सान	254
नमाज़ की अहम्मिय्यत	257
आ़लिम का गुनाह ज़ियादा ख़त़रनाक है	264
आ़लिम का जाहिलों की ख़ुशामद करना तबाही का बाइ़स है ?	265
मुक़ाबला किस चीज़ में करना चाहिये ?	268
अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिये	271
अल्लाह तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत	273
आज़्माइशें और सब्र	284
मुसीबत पर सब्र के आदाब	288
बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	294

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा
साइन्सी उ़लूम भी **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त का ज़रीआ़ बनते हैं	299
नेक आ'माल की ह़सरत करने वाले लोग	302
शैत़ान का काम क्या है ?	306
राहे ख़ुदा में कैसा माल देना चाहिये ?	322
बदला लेने से मुतअ़ल्लिक़ दीने इस्लाम की ह़सीन ता'लीम	351
दुन्या की बेहतरी त़लब करने का हुक्म	363
ईमानी कमज़ोरी की अ़लामत	370
मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचाई जा सकती	418
जब क़ौम की ए'तिक़ादी और अ़मली ह़ालत ख़राब हो तो क्या होता है ?	422
बुज़दिल क़ौमों का वत़ीरा	423
अपने मा तह़तों की ख़त़ाओं से दर गुज़र करें	455
ज़ुल्म को ख़त्म करने की कोशिश की जाए	477
शैत़ान की इन्सान दुश्मनी	489
अ़मल से मुंह फेर कर उम्मीद की दुन्या में घूमने का अन्जाम	519
नींद से पाक रब तआ़ला हमें देख रहा है	526
इख़्तिलाफ़ ख़त्म करने का उ़म्दा त़रीक़ा	565

हुक़ूक़ुल इ़बाद

उन्वान	सफ़हा
इस्लाम में हुक़ूक़ुल इ़बाद की अहम्मिय्यत	171
शौहर पर बीवी के हुक़ूक़	398
बीवी पर शौहर के हुक़ूक़	398

दुआ़एं

उन्वान	सफ़हा
औलाद को शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखने की दुआ़	392
क़र्ज़ की अदाएगी के लिये दुआ़	479

ह़िक्मतें, मक़ासिद और त़िब्बी फ़वाइद

उन्वान	सफ़हा
क़ुरआने ह़कीम के मक़ासिद	17
मुरतद की सज़ा क़त्ल क्यूं है ?	140
रोज़े का मक़्सद	330
रोज़े के त़िब्बी फ़वाइद	333
सूद को ह़राम किये जाने की ह़िक्मतें	472

मा'लूमात

उन्वान	सफ़हा
जम्ए क़ुरआन का तारीख़ी पस मन्ज़र	24
ख़ानए का'बा और बैतुल मुक़द्दस किन ज़मानों में क़िब्ला बने	251
रोज़ा बहुत क़दीम इ़बादत है	330
इ़ल्मे तारीख़ की अहम्मिय्यत	566

तआ़रुफ़ और ह़िकायात

उन्वान	सफ़हा
क़ुरआने मजीद का मुख़्तसर तआ़रुफ़	10
सूरए फ़ातिह़ा का तआ़रुफ़	39
इमामे आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का मुनाज़रा	42
सूरए बक़रह का तआ़रुफ़	60
ह़ज़रते आदम علیہ الصلوۃ والسلام और इब्लीस के वाक़िए का ख़ुलासा	114
फ़िरऔ़न का मुख़्तसर तआ़रुफ़	135
रोज़े की बरकत से शिफ़ा मिली	334
ह़ज़रते इब्राहीम علیہ الصلوۃ والسلام और नमरूद	443
ह़ज़रते उ़ज़ैर علیہ الصلوۃ والسلام का वाक़िआ़	447
ह़ज़रते इब्राहीम علیہ الصلوۃ والسلام और चार परिन्दे	449
इमामे आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और मजूसी क़र्ज़दार	479
सूरए आले इ़मरान का तआ़रुफ़	494
उ़म्र और गुनाहों का ह़िसाब करने वाले बुज़ुर्ग	526

www.dawateislami.net